सचित्र निरयावलिका एवं विपाक सूत्र

—श्री अमर मुनि—

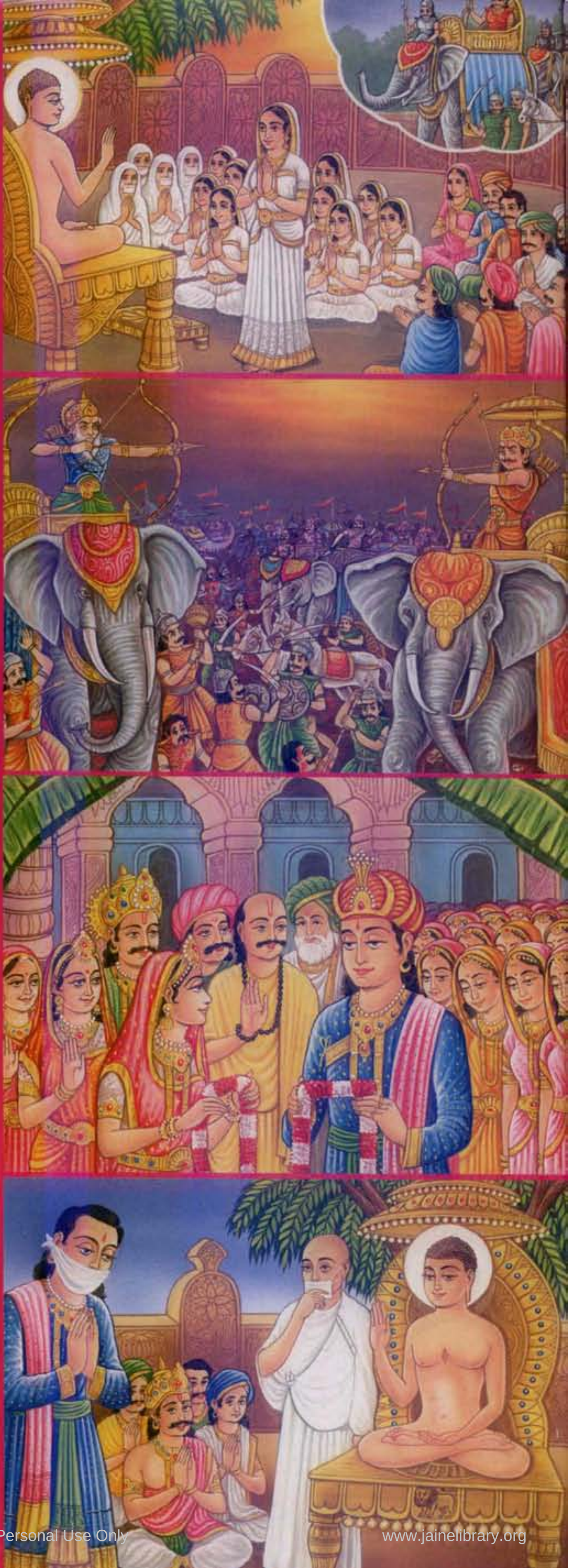

ILLUSTRATED NIRAYAVALIKA AND VIPAAK SUTRA

Shri Amar Muni

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

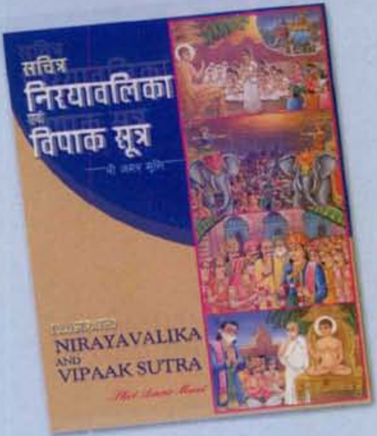

इस पुस्तक में अष्टम उपांग निरयावलिका (पाँच) तथा ग्यारहवाँ अंग विपाक सूत्र दोनों मिलकर छह आगम संकलित हैं।

निरयावलिका प्रथम उपांग में सम्राट् कूणिक के महा शिलाकंटक व रथमूसल संग्राम का वर्णन है। आगे के अध्ययनों में भगवान महावीर, भगवान पार्श्वनाथ तथा अर्हत् अरिष्टनेमि के शासन में हुए श्रमण-श्रमणियों की साधना आदि का कथन है।

विपाक सूत्र, विषय वस्तु व वर्णन शैली से अन्य आगमों से कुछ भिन्न व विशेष महत्त्व रखता है। इसके प्रथम श्रुतस्कंध में हिंसा, अनीति, दुराचार, माँसाहार आदि के अत्यन्त कष्टकारी कर्मफलों का हृदय द्रावक वर्णन है। दूसरे श्रुतस्कंध में सुपात्रदान व त्याग, तपमय साधक जीवन व उसके शुभ फलों का कथन है।

This book contains **Nirayavalika,** the eighth *Upanga* (having five *Agams*) and **Vipaak Sutra,** the eleventh *Anga*. This makes it a compilation of six *Agams*.

The first chapter of **Nirayavalika** contains the story of the *Mahashilakantak* and *Rathamusal* battles fought by Emperor Kunik. The following chapters contain the details about the austerities and other spiritual practices done by *Shramans* and *Shramanis* belonging to the period of influence of Bhagavan Mahavir, Bhagavan Prashva Nath and Bhagavan Arishtanemi.

In terms of its theme and style **Vipaak Sutra** is slightly different than other *Agams* and has special significance. Its first part, contains heart-rending description of bitter fruits of bad karmas acquired through violence, immorality, corruption, meat-eating and other such evil deeds. The second part, contains the description of charity to the deserving, detachment, austere spiritual life and the resulting good fruits.

Rs. 600.00 ONLY

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सचित्र

निरयावलिका तथा विपाक सूत्र

मूल पाठ, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद, विवेचन तथा रंगीन चित्रों सहित

❖ प्रधान सम्पादक ❖

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य

उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

❖ सह-सम्पादक ❖

श्रीचन्द सुराना 'सरस'

पद्म प्रकाशन

पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तर भारतीय प्रवर्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. की दीक्षा हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में सचित्र आगममाला का चौदहवाँ पुष्प

- सचित्र निरयावलिका तथा विपाक सूत्र

- **प्रधान सम्पादक**
  उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

- **सह-सम्पादक**
  श्रीचन्द सुराना 'सरस'

- **अंग्रेजी अनुवादक**
  सुरेन्द्र बोथरा, जयपुर

- **संशोधन**
  राजकुमार जी जैन, दिल्ली

- **प्रथमावृत्ति**
  वि. सं. २०५९, चैत्र
  ईस्वी सन् २००३, अप्रैल

- **चित्रांकन**
  डॉ. त्रिलोक शर्मा

- **प्रकाशक एवं प्राप्ति-स्थान**
  पद्म प्रकाशन
  पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

- **मुद्रण-व्यवस्था**
  संजय सुराना
  श्री दिवाकर प्रकाशन
  ए-७, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड, आगरा-२८२ ००२
  दूरभाष : (०५६२) २१५११६५

- **मूल्य**
  छह सौ रुपया मात्र (६००/- रुपये)

© सर्वाधिकार : पद्म प्रकाशन, दिल्ली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ILLUSTRATED

NIRAYAVALIKA & VIPAAK SUTRA

Original Text with Hindi and English Translations, Elaboration and Multicoloured Illustrations

❖EDITOR-IN-CHIEF ❖

Up-pravartak Shri Amar Muni

(The Disciple of Uttar Bharatiya Pravartak Bhandari Shri Padma Chandra ji M.)

❖ASSOCIATE-EDITOR ❖

Srichand Surana 'Saras'

PADMA PRAKASHAN

PADMA DHAM, NARELA MANDI, DELHI-110 040

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ON THE OCCASION OF DIAMOND JUBILLE OF THE INITIATION OF UTTAR BHARATIYA PRAVARTAK GURUDEV BHANDARI SHRI PADMA CHANDRA JI M. THE FOURTEENTH NUMBER OF THE ILLUSTRATED AGAM SERIES

- ILLUSTRATED NIRAYAVALIKA & VIPAAK SUTRA

- *Editor-in-Chief*
  Up-pravartak Shri Amar Muni

- *Associate-Editor*
  Srichand Surana 'Saras'

- *English Translator*
  Surendra Bothara, Jaipur

- *Copy Editing*
  Raj Kumar Jain, Delhi

- *First Edition*
  Chaitra, 2059 V.
  April, 2003 A.D.

- *Illustrator*
  Dr. Trilok Sharma

- *Publisher and Distributor*
  Padma Prakashan
  Padma Dham, Narela Mandi, Delhi-110 040

- *Printer*
  Sanjay Surana
  Shree Diwakar Prakashan
  A-7, Awagarh House, M.G. Road, Agra-282 002
  Phone : (0562) 2151165

- *Price*
  Six Hundred Rupees only (Rs. 600/-)

© *Copyright* : Padma Prakashan, Delhi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रुत-ज्ञान रत्नाकर
श्रमण संघ के प्रथम
पट्टधर आचार्य सम्राट
श्री आत्माराम जी महाराज
की
अमर स्मृति
में
सविनय

समर्पित

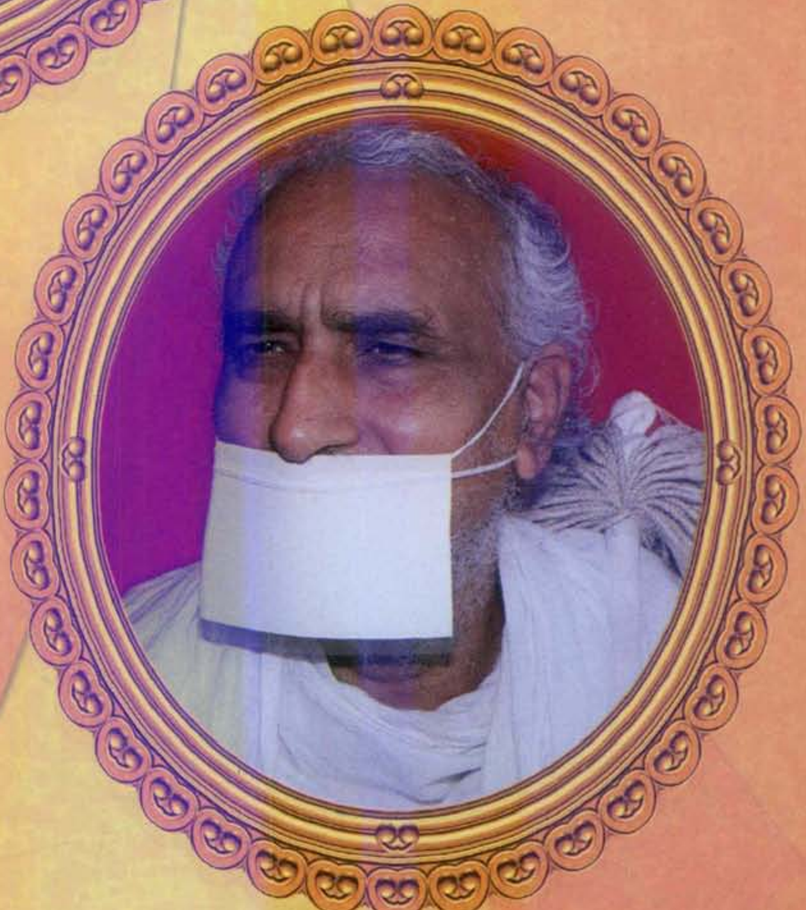

आपश्री का
प्रशिष्यानुशिष्य
विनम्र सेवक
अमर मुनि
(उप प्रवर्त्तक)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रुत सेवा में उदार सहयोग दाता

श्री अग्रसेन जी सुन्दरी देवी जैन
विवेक विहार, दिल्ली

श्री जय भगवानजी विद्यादेवी जैन
योजना विहार, दिल्ली

श्री सुभाषचन्द शशि जैन
विवेक विहार, दिल्ली

श्री सुशीलकुमार कौशल्यादेवी जैन
योजना विहार, दिल्ली

स्व. श्री नेमचन्द जैन
रोहिणी, दिल्ली

श्री राजपाल जैन
सोनीपत

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

श्रुत सेवा में उदार सहयोग दाता

डा. मोजीराम जी जैन श्रीमती पुष्पा जैन
सैनिक फार्म, दिल्ली

श्री पंकज जैन श्रीमती संगीता जैन
सैनिक फार्म, दिल्ली

श्री दिनेश जैन श्रीमती नीति जैन
सैनिक फार्म, दिल्ली

श्री राजकुमार जैन
गोविन्दगढ़ मण्डी

श्री बोधराज सन्तोष रानी जैन
घरौंडा मण्डी

श्रुत सेवा में उदार सहयोग दाता

श्री पन्नालाल जी मालादेवी जैन
पश्चिम विहार

श्री भारतभूषण एडवोकेट श्रीमती जय श्री जैन
भिवानी

इन्जी. सी. पी. जैन डॉ. वीणा जैन
पश्चिम विहार, दिल्ली

श्री शान्तिलाल जी कोठारी मीना कोठारी
पश्चिम विहार, दिल्ली

श्री रतन जैन
पीतमपुरा, दिल्ली

Jain Education International www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

हमें अत्यधिक प्रसन्नता है कि सदा की भाँति इस वर्ष भी हम अपनी सचित्र आगम माला में एक ही साथ दो भागों का प्रकाशन कर रहे हैं। जिनमें कुल सात आगम सम्मिलित हैं। औपपातिक सूत्र के अन्त में हमने अनुयोगद्वार की भाँति अंग्रेजी में पारिभाषिक शब्द कोष दिया है, जिससे आगम पढ़ने वालों को आगमिक शब्दों को समझने में बड़ी सुविधा व सरलता हो गई है। विदेश में रहने वाले तथा अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले सज्जनों ने इस शैली को विशेष पसन्द किया है और सराहा है। इसकी उपयोगिता का आज पता नहीं चलता, परन्तु भविष्य में जब अनेक आगम इस प्रकार पारिभाषिक शब्दों के साथ प्रकट हो जायेंगे तो निस्संदेह अपने आप आगमों का अंग्रेजी भाषा में एक विशिष्ट शब्द–कोष तैयार हो जायेगा। आज अंग्रेजी शब्द–कोषों में जिन जैन शब्दों का कोई अर्थ व परिभाषा उपलब्ध नहीं है भविष्य में वे शब्द अंग्रेजी शब्द कोषों में सम्मिलित हो जायेंगे तो भारतीय भाषा की समृद्धि और जैन दर्शन के ज्ञान की अभिवृद्धि का एक सहज कार्य सम्पन्न हो जायेगा।

हमारे कार्य में सहयोग देने वाले सभी सज्जनों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए हम पुनः अपने प्रेरणास्रोत स्व. गुरुदेव उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. तथा उनके सुयोग्य शिष्य आगम मर्मज्ञ उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म. के प्रति अपना कोटि–कोटि आभार प्रकट करते हैं।

महेन्द्रकुमार जैन
अध्यक्ष
पद्म प्रकाशन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

PUBLISHER'S NOTE

We are very pleased that as before we are releasing two books of our Illustrated Agam Series simultaneously. These books include seven *Agams*. In *Aupapatik* Sutra we appended English glossary of technical terms. This has made the understanding of *Agamic* terms for our readers very easy and convenient. Foreign and Indian readers using English medium have specially liked and appreciated this style. It is too early to appreciate the usefulness of this. However, when many *Agams* appear with such glossaries a unique English dictionary will be ready. In due course those Jain technical terms which do not appear in English to English and English to Indian languages dictionaries will be included in their new editions. Without any strenuous effort, this would be a stride in the direction of accomplishing the missions of spread of the knowledge of Jain philosophy and enriching Indian languages.

We express our earnest gratitude for all those who have been extending their helping hand in our mission. At the same time we once again express our unending indebtedness for our sources of inspiration—Uttar Bharatiya Pravartak (late) Bhandari Shri Padmachandra ji Maharaj and his able disciple Up-pravartak Shri Amar Muni ji M.

Mahendra Kumar Jain
PRESIDENT
Padma Prakashan

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वकथ्य : प्रस्तावना

सचित्र आगम प्रकाशन की शृंखला में इस पुस्तक में छह आगम एक साथ लिए हैं। निरयावलिका आदि में पाँच उपांग तथा ग्यारहवाँ अंग शास्त्र विपाकसूत्र। इन सभी आगमों में कथानुयोग का विषय है। चरित्र प्रधान होने से इनका प्रतिपाद्य सरल, सहजगम्य है। दूसरी बात, सभी आगम परिमाण की दृष्टि से छोटे हैं। अतः सभी को यहाँ एक ही जिल्द में रखा गया है।

आगमों के अंग बाह्य या उपांग विभाग में निरयावलिका आदि पाँच उपांगों की गणना है। पाँचों उपांगों का क्रमशः नाम है (१) निरयावलिका, (२) कल्पावतंसिका , (३) पुष्पिका, (४) पुष्पचूलिका तथा (५) वण्हिदसा। इन्हें पाँच वर्ग भी कहते हैं।

कालक्रम के अनुसार विचार करें तो प्रथम व द्वितीय उपांग (वर्ग) का सीधा सम्बन्ध भगवान महावीर के शासनकाल से है। प्रथम वर्ग निरयावलिका में चम्पापति राजा कूणिक तथा उसके कालकुमार आदि दस भाईयों का वैशालीपति महाराज चेटक के साथ हुए दो महायुद्धों का बहुत रोमांचक वर्णन है। कूणिक अपने पिता राजा श्रेणिक के विशाल साम्राज्य का स्वयंभू स्वामी बनने के लिए कालकुमार आदि दस भाईयों के साथ मिलकर षड्यंत्र रचता है। श्रेणिक को कारागार में बंद करके स्वयं मगध के राजसिंहासन पर बैठता है, तथा राज्य के छोटे-छोटे भाग अन्य भाईयों में बाँट देता है। चेलना का आत्मज वेहल्लकुमार चम्पा में कूणिक के साथ ही रहता है। उसको राजा श्रेणिक ने अपनी मृत्यु से पहले ही सेचनक गंधहस्ती तथा बंकचूल हार दे दिया था। यह दोनों ही वस्तुएँ मगध की अत्यधिक मूल्यवान सम्पदा थी। कूणिक इन दोनों वस्तुओं को वेहल्लकुमार से माँगता है। वेहल्लकुमार नहीं देता। साथ ही वह डर जाता है कि हो सकता है, राजा कूणिक ये वस्तुएँ मुझसे छीन लेवें। इसलिए वह अपने परिवार सहित दोनों मूल्यवान वस्तुओं को लेकर अपने नाना राजा चेटक की शरण में वैशाली चला जाता है। कूणिक इन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए युद्ध पर उतारू हो जाता है। एक तरफ वैशाली गणराज्य के अध्यक्ष राजा चेटक आदि अन्य गणराजा हैं। दूसरी तरफ कूणिक व उसके भाई व अन्य समर्थक राजा। दोनों वस्तुओं के लिए महाभयंकर युद्ध होता है। कहा जा सकता है भारत वर्ष के इतिहास में रामायण व महाभारत के दो महायुद्धों के पश्चात् यह सबसे भयानक महायुद्ध था। इस में कूणिक के दसों भाई मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। तब कूणिक महाशिलाकंटक व रथ-मूसल संग्राम की रचना करता है और अन्त में देव नगरी जैसी रमणीय वैशाली का विध्वंस कर डालता है। नर संहार की दृष्टि से यह महायुद्ध अत्यन्त भीषण कहा जा सकता है। प्रथम वर्ग में इन दसों भाइयों के इस महायुद्ध का वर्णन है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस घटना क्रम से सम्बन्धित अन्य अनेक आवश्यक प्रसंग जो मूल सूत्र में नहीं है। प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार उनका वर्णन आचार्यश्री आत्माराम जी म. ने हिन्दी टीका में तथा आचार्य श्री घासीलाल जी म. ने संस्कृत टीका में किया है। हमने सम्बन्धित सम्पूर्ण प्रसंग को परिशिष्ट में वहीं पर दे दिया है जिससे पाठकों को पढ़ने में सुविधा रहेगी।

द्वितीय वर्ग कल्पावतंसिका में श्रेणिकपुत्र काल कुमार आदि के दस पुत्रों का वर्णन है। जिन्होंने इस महायुद्ध में अपने पिताओं की असामयिक मृत्यु देखी, सुनी। वे सभी राजकुमार राज्य-लोभ के इस कटु परिणाम से द्रवित होते हैं, हिंसा एवं आरम्भ के दुःखकारी भयंकर कटु फल सुनकर संसार से विरक्त होकर भगवान महावीर के पास दीक्षा लेकर आत्म-कल्याण करते हैं।

तृतीय वर्ग का नाम है पुष्पिका। इस वर्ग में भी दस अध्ययन हैं। चन्द्र, सूर्य, शुक्र आदि ज्योतिषी देव तथा बहुपुत्रिका देवी आदि भगवान के समवसरण में आकर अपनी दिव्य देव ऋद्धि का प्रदर्शन करते हैं तब गणधर गौतम स्वामी उनके पूर्व भवों की पृच्छा करते हैं। भगवान महावीर पुरुषादानी पार्श्वनाथ के युग की इन घटनाओं का कथन करते हैं।

द्वितीय वर्ग के दसों पात्र आराधक बने हैं। जबकि तृतीय वर्ग के पात्र संयम लेकर भी संयम में दोष लगाकर आलोचना-प्रतिक्रमण नहीं करने के कारण विराधक बनकर देवगति में गये हैं। इससे यह सूचित होता है कि साधक को जीवन के अन्तिम समय में सरलमन से अपने जीवन का अन्तर्निरीक्षण करना चाहिए तथा समाधि मरण के लिए आलोयणा-प्रतिक्रमण अवश्य ही कर लेना चाहिए। आलोयणा-प्रतिक्रमण किये बिना मृत्यु प्राप्त करने वाला सद्‌गति को प्राप्त नहीं होता।

पुष्पचूला नामक चतुर्थ वर्ग में भी भगवान पार्श्वनाथ के शासन काल में हुई दस साध्वियों का जीवन वृत्त है, जिसका वर्णन भगवान महावीर अपने श्रीमुख से फरमाते हैं-श्री, ह्री, धृति, लक्ष्मी, बुद्धि, आदि ये देवियाँ एक-एक विशिष्ट शक्ति की अधिष्ठात्री हैं जिन्होंने पूर्व जीवन में साध्वी जीवन ग्रहण कर साधना में दोष लगाने के कारण विराधक दशा प्राप्त की।

पाँचवें वर्ग का नाम वण्हिदसा है। इसकी घटनाएँ भगवान अरिष्टनेमि के समय की है। इसके १२ अध्ययन हैं। इस प्रकार पाँच वर्गों के कुल ५२ अध्ययन हैं जिनमें ५२ आत्माओं का वर्णन है।

निरयावलिका पर आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी म. ने विस्तृत हिन्दी टीका लिखी है। हमने मूल पाठ आगम प्रकाशन समिति ब्यावर से प्रकाशित प्रति का लिया है तथा अर्थ एवं विवेचन में आचार्यश्री की टीका तथा आचार्य श्री घासीलाल जी म. की टीका का सहयोग लिया है।

इस जिल्द में दूसरा आगम **विपाक सूत्र** है। विपाक सूत्र के दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कंध-दुःखविपाक है। दूसरा सुखविपाक। नाम से ही यह पता चलता है कि दुःखविपाक में दुःखों का वर्णन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है, तो सुखविपाक में सुखों का। दोनों श्रुतस्कंधों के दस–दस अध्ययन हैं। कुल बीस अध्ययनों में यह आगम गुम्फित है।

दुःख विपाक सूत्र का वर्णन हृदय को झकझोरने वाला है। हिंसा, अन्याय, अनीति, व्यभिचार आदि क्रूर कर्मों के परिणाम कितने दुःखदायी और जन्म–जन्मान्तर तक कष्ट देने वाले हैं, यह इससे प्रकट होता है। इस श्रुतस्कंध के दसों अध्ययन एक से बढ़कर एक आँखें खोलने वाले एवं दिल को दहलाने वाले हैं।

विपाक सूत्र की एक खास बात यह है कि इसके अनुशीलन से उस प्राचीन युग की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक संरचना और व्यवस्था का एक जीवंत चित्र भी सामने उपस्थित होता है। उस समय में भी कितने प्रकार के अपराध होते थे। उनकी दण्ड व्यवस्था कैसी थी, यह भी पता चलता है। दूसरे अध्ययन के उज्झितक का गोत्रास के पूर्वभव का वर्णन तो बहुत ही मनोवैज्ञानिक तथ्य प्रस्तुत करता है। एक गोघात करने वाले हिंसक प्राणी–जीव का क्रन्दन व चीत्कार सुनकर नगर के दूर–दूर क्षेत्रों में रहने वाली गायें आदि पशु भय के मारे इधर–उधर भागने लगते हैं। उसकी ध्वनि में भी हिंसा व क्रूरता के वे अशुभ पुद्गल परमाणु मिश्रित थे कि वह सीधा उन सम्बन्धित जीवों के मन में उद्वेग व आतंक पैदा कर देता था। हिंसक की कलुषित भावनाओं से भरी वाणी भी कितनी भयोत्पादक होती है, यह तथ्य आज के सन्दर्भ में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। इसी प्रकार हिंसक जीव जब माता के गर्भ में आता है, तो उसके प्रभाव से माता की मनोभावना कितनी बदल जाती है, यह बात भी इसमें अनेक बार आती है। एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि जिस जीव ने पूर्व जन्म में किसी की विशेष प्रकार से हत्या की है तो वह उसी प्रकार की हत्या का शिकार होकर रोता–तड़फता उन दुष्कर्मों को भोगता है। कर्मविज्ञान की दृष्टि से यह कृत्यानुबंधी विपाक मनन करने योग्य है। साथ ही मनोविज्ञान का सूक्ष्म प्रभाव इसमें स्पष्ट होता है।

विपाक श्रुत का वर्णन, भाषा शैली की दृष्टि से भी बड़ा महत्त्वपूर्ण, सूक्ष्म मनोविश्लेषक है। जैसे किसी के मन में दुःसंकल्प या सत्संकल्प जागृत होता है तो उसके लिए **अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगय संकप्पे**–आदि विशेषण उसके मन के भीतर उठने वाली सूक्ष्म चिन्तन तरंगों की तीव्र, तीव्रतर स्थिति को प्रकट करने वाले थर्मामीटर का काम करते हैं। इस प्रकार के अनेक पाठ हैं, जिनमें एक साथ चार–पाँच विशेषणों द्वारा उसके भावों के उतार–चढ़ाव तथा सूक्ष्म कम्पनों को व्यक्त करने का प्रयत्न हुआ है। भाषाशास्त्र की दृष्टि से इन शब्दों में छिपे भाव बहुत ही अर्थ पूर्ण हैं। आचार्य श्री आत्माराम जी म. ने अपनी टीका में एक शब्द के साथ आने वाले इस प्रकार के चार–पाँच विशेषणों में निहित सूक्ष्म भावात्मक अन्तर को स्पष्ट करके शब्द–शास्त्र की दृष्टि से अनेक नये तथ्य प्रकट किये हैं जो बड़े ज्ञानवर्द्धक और मनन करने योग्य हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुःखविपाक के सभी दस अध्ययनों में भिन्न–भिन्न प्रकार के दुष्कर्मों के भिन्न–भिन्न कटु पाप फल बताये हैं, किन्तु सुखविपाक में मुख्य रूप में सुपात्र दान का ही महत्त्व सभी अध्ययनों में व्यक्त होता है। शुद्ध–पवित्र आचारवंत को शुद्ध भावों से दिया सुपात्र दान आगामी जन्मों से सुख–वैभव–श्री–समृद्धि का कारण बना है यह तथ्य सभी दस अध्ययनों का सार है।

इस प्रकार विपाक सूत्र का अध्ययन अनेक दृष्टियों से नये–नये तथ्य उजागर करने वाला है। मैंने पहले भी विपाक श्रुत पढ़ा था, परन्तु इस बार जब विवेचन की दृष्टि से उन शब्दों की गहराई में उतरा तो अनेक विशिष्ट नये–नये भाव प्रकट हुए जो आगमों की भाषात्मक गहराई को सूचित करते हैं। मेरा तो सुझाव है, **शोध करने वाले शोधार्थी साधु–साध्वियों को इन आगमों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। कर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, समाज शास्त्र, भाषा शास्त्र की दृष्टि से बहुत ही नये तथ्य उन्हें प्राप्त होंगे।** विपाकश्रुत पढ़ते समय आचार्यश्री आत्माराम जी म. की टीका अवश्य ही सामने रखनी चाहिए। मैंने अनेक स्थानों पर आचार्यश्री द्वारा किये गये शब्द–शास्त्रीय विश्लेषण को रेखांकित किया है, अगर पूरे आगम पर उनकी विशेष शब्दों की व्याख्या को स्पष्ट किया जाये तो आगम का कलेवर तो बढ़ जायेगा परन्तु आगम अभ्यासियों के लिए यह एक आगम मार्गदर्शिका बन जायेगी। अस्तु ....

परम पूज्य स्व. गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. की असीम कृपा से मुझे श्रुत–सेवा के इस कार्य में आनन्द आ रहा है, साथ ही मैं अपने ध्येय में सफल हो रहा हूँ इसका सन्तोष है। अनेक साधु–साध्वीजनों व गुरु भक्तों का सहयोग मिल रहा है, मिलता रहेगा, इसी विश्वास के साथ।

अन्य सूत्रों के सम्पादन की तरह इस सूत्र के सम्पादन आदि कार्यों में श्रीचन्द जी सुराना, श्री सुरेन्द्र कुमार जी बोथरा तथा सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन का हार्दिक सहयोग रहा है। मैं उनके सहयोग के प्रति कृतज्ञ हूँ।

—उपप्रवर्त्तक अमर मुनि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

FROM THE EDITOR'S PEN

In this book of the Illustrated Agam Series we have included six *Agams* (the authentic scriptures that describe and discuss the philosophy and codes of conduct of Jain tradition) simultaneously. *Niryavalika* contains five *Upangas* (the auxiliary explanatory works to the twelve *Angas*) and *Vipaak Shrut* is the eleventh *Anga* (The name given to the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts. This consists of twelve treatises or *Angas*, eleven of which are extant according to the Shvetambar tradition). All these *Agams* are narrative works falling in the classification *Kathanuyoga* (stories). As they predominantly contain numerous biographical stories their content is simple and easily understandable. Another thing, all these *Agams* are small in volume. That is why they all have been included in one book.

The five texts forming *Niryavalika* (etc.) are counted among the *Anga Bahya* (explanatory works other than the said twelves *Angas*) or *Upanga* (Auxiliary *Angas*) group of *Agams*. The name of these texts are—(1) *Niryavaliyao* (*Niryavalika*), (2) *Kappavadinsiya* (*Kalpavatansika*), (3) *Pupphiya* (*Pushpika*), (4) *Pupphachuliya* (*Pushp-chulika*), and (5) *Vanhidasa* (*Vrishnidasha*). These are also called five *Vargas* (sections).

In terms of periodicity the first and second *Upangas* (*Vargas*) are directly associated with the period of influence (*shaasan*) of Bhagavan Mahavir. *Niryavalika*, the first *Varga*, contains the thrilling description of King Kunik of Champa, his ten brothers including Kaal Kumar and the two great battles they fought with King Chetak of Vaishali. Kunik hatches a conspiracy with his ten brothers including Kaal Kumar in order to become the sovereign ruler of the great empire of his father King Shrenik. He imprisons Shrenik and ascends the throne of Magadh himself, distributing some small portions of the state among his brothers. Queen Chelana's son Vehalla Kumar also lives with Kunik in Champa. Before his death King Shrenik had given him Sechanak Elephant and Vankachula necklace. These two things formed the most valuable possessions of the Magadh empire. Kunik

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

demands these two things from Vehalla Kumar who refuses to part with them. However, he is afraid of Kunik forcibly taking these things from him. Therefore he leaves with these things and takes refuge with his maternal grandfather Chetak in Vaishali. In order to get these two things Kunik prepares for a war. On one side is the president of the Vaishali republic with presidents of other republics and on the other is Kunik, his brothers, and other supporting rulers. A fierce battle ensues for the said two valuables. It would not be far fetched to state that after the Ramayana and Mahabharat wars, this was the third fiercest war in Indian history. All the ten brothers of king Kunik parish in this war. Then Kunik prepares for *Mahashilakantak* and *Rath-musal* battles. In the end he destroys the divinely beautiful city of Vaishali. In terms of man slaughter this great war could be termed as extremely fierce. The first *Varga* contains the description of this great war by these ten brothers.

Many important incidents connected with this story are not included in the original text. The Hindi Tika by Acharya Shri Atmaram ji M. and the Sanskrit Tika by Acharya Shri Ghasilal ji M. contains all this information collected from ancient scriptures. For convenience of our readers we have included the complete story in brief as appendix at the end of the first *Varga*.

The second *Varga, Kalpavatansika,* contains the stories of the ten sons of king Shrenik's ten sons including Kaal Kumar. They saw and heard about the untimely death of their fathers in the aforesaid great war. All these princes were moved by this bitter consequence of greed for a kingdom. Inspired by the resulting detachment they get initiated by Bhagavan Mahavir and pursue the spiritual path.

The third *Varga* is titled Pushpika. This section also has ten chapters. Chandra, Surya, Shukra and other stellar gods as also Bahuputrika and other goddesses descend into *Bhagavan's Samavasaran* and display their divine opulence. Ganadhar Gautam Swami asks about their past births. In reply Bhagavan Mahavir narrates these incidents of the period of influence of Purushadaniya Bhagavan Parshva Naath.

All the ten protagonists of the second section became true spiritual aspirants, whereas those of the third section became errants by

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

transgressing the codes after getting initiated. They failed to undergo the essential process of critical review (*pratikraman*) at the last moment of their life and reincarnated as gods. This indicates that a spiritual aspirant should essentially undergo the process of introspection and critical review of all activities of his life prior to proceeding for meditational death. Failing to do so leads to ignoble rebirth.

The fourth section, *Pushpachula*, also contains stories of ten *sadhvis* (female ascetics) of the period of influence of Bhagavan Parshva Naath. These stories are also narrated by Bhagavan Mahavir. Each of the ten goddesses including Shri, Hri, Dhriti, Lakshmi, and Buddhi are guardians of one special power. In their past births they also got initiated but became errants due to faulty observation of ascetic codes.

The fifth section is titled *Vahnidasa*. It has ten chapters. These stories are of Bhagavan Arishtanemi's period. Thus the five sections contain a total of fifty two stories describing fifty two souls.

Acharya Samrat Shri Atmaram ji M. has written a detailed Hindi commentary (*Tika*) on *Niryavalika*. We have taken the original text from the edition published by Agam Prakashan Samiti, Beawar. The *Tikas* by Acharya Shri Atmaram ji M. and Acharya Shri Ghasilal ji M. have been used as the basic reference works for translation and elaboration.

The second *Agam* in this book is *Vipaak Shrut*. It has two *shrutskandhs* (sections). First section is *Duhkha-vipaak* and the second section is *Sukha-vipaak*. As the titles suggest, *Duhkha-vipaak* contains description of *Duhkha* (miseries) and *Sukha-vipaak* that of *Sukha* (happiness). The two sections have ten chapters each. This *Agam* is made up of twenty chapters.

The descriptions contained in *Duhkha-vipaak* are heart-rending. It reveals how horrifying are the consequences of cruel deeds including violence, injustice, immorality, and debauchery. Moreover, the process of suffering these painful consequences extends to many future births. Each one of these ten stories is more revealing and awe inspiring than the other.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Another unique quality of the contents of *Vipaak Shrut* is that it presents a vivid picture of social, political and economic structures and systems of that remote period. How many kinds of criminal activities were prevalent then and what punitive system was designed to counter that. The story of the past birth of Ujjhitak as Gotras eloquently states an important psychological fact. Hearing the wailing and shrieks of a violent being, a killer of cows, cattle even in faraway parts of the city run helter-skelter with fear. The sound of that cruel being was saturated with malignant ultimate particles (*paramanus*) of violence and cruelty. This directly infused agitation and terror in the minds of the cattle. How awesome is the voice influenced by the evil feelings of a violent person is a fact all the more relevant in context of modern times. In the same way, when a violent soul is conceived as a child by a mother, it influences the feelings of the mother. This idea is also stated many a times in these stories. Another important concept is that the specific process adopted by a being to kill another one during his past birth is inflicted upon him during this birth and he miserably suffers the agony. This concept of 'action based fruition' (*krityanubandhi vipaak*) is worth pondering in context of the science of *karma*.

The narrative of *Vipaak Shrut* is valuable in context of its language and style because it deals with subtle psychological analysis. For example the adjectives *Ajjhatthiye, Kappiye, Chintiye, Patthiye, Manogaye,* and *Sankappe* are used for a good or bad thought emerging and crystallizing in one's mind. Like a thermometer, they reveal the progressive intensity of the subtle thought waves from mild to intense. There are many such passages where such four-five adjectives have been used in an effort to convey the minute vibrations and subtle rise and fall of intensity of thoughts. Acharya Shri Atmaram ji M. has explained the subtle psychological connotations of such groups of adjectives, thereby bringing to light some new concepts of semantics, which are informative as well as worth pondering.

In all the ten chapters of *Duhkha-vipaak* different kinds of evil activities and their bitter consequences are included. But in *Sukha-vipaak* mainly the importance of donation to the deserving has been

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

narrated. The central theme of all the ten chapters is that pure donation with pious feelings to a pious follower of the ascetic code bears fruits of happiness, grandeur, prosperity and spirituality in the future reincarnations.

Thus the study of *Vipaak Shrut* from various angles reveals many new facts and information. I had studied *Vipaak Shrut* earlier also but this time when I studied the terms in greater depth to facilitate elaboration, many new concepts came to fore. This indicates the linguistic depth of these *Agams*. It is my suggestion that **the research scholars and ascetics should focus their attention on these *Agams*. They will come across many unknown facts in the fields of *Karmic* science, ethics, sociology, semantics and linguistics.** While studying *Vipaak Shrut* the *Tika* by Acharya Shri Atmaram ji M. should be referred to frequently. I have quoted his semantic analysis at many places. Although it would make the *Agams* voluminous if all his explanations on *Agamic* technical terms are included, however, it would certainly make the best guide-books on *Agams* for those who study these texts. So...

With the blessings of Param Pujya Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji Maharaj I am enjoying this work of *Shrut Seva* (service of scriptures). I am contented that my steps have been successful. I am confident that, as in the past, I will continue to get cooperation of many *sadhus, sadhvis,* and devotees of the guru.

As before, Shrichand ji Surana, Shri Surendra Kumar ji Bothara, and Sushravak Shri Raj Kumar ji Jain have sincerely cooperated in the editing and other related activities in the publication of this *Sutra*. I am indebted to them for their cooperation.

—Up-pravartak Amar Muni

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका

CONTENTS

निरयावलिका सूत्र
NIRAYAVALIKA SUTRA

प्रथम अध्ययन		First Chapter	
उपोद्घात	३	Introduction	4
राजगृह वर्णन	५	Description of Rajagriha	5
आर्य सुधर्मा स्वामी का आगमन	५	Arrival of Arya Sudharna Swami	6
जम्बू अनगार की जिज्ञासा	६	Curiosity of Ascetic Jambu	7
प्रथम अध्ययन की विषय-वस्तु	८	The Theme of the first Chapter	8
रथ-मूसल संग्राम में प्रवृत्ति	१०	Joining the *Rath-Musal* War	10
कालीदेवी की चिन्ता	१०	Kaali Devi's apprehension	11
चिन्ता-निवारण हेतु भगवान के समीप गमन	११	Visiting Bhagavan Mahavir	12
काली की जिज्ञासा का समाधान	१३	Answers of Kaali's questions	14
काली रानी को पुत्र-शोक	१५	Grief of Queen Kaali	15
कालकुमार के विषय में गौतम की जिज्ञासा	१६	Gautam's curiosity about Kaal Kumar	16
पूर्व वृत्तान्त	१७	Telling the past	18
चेलना का दोहद	१९	Chelana's *Dohad*	20
श्रेणिक का आश्वासन	२२	Assurance by Shrenik	23
अभयकुमार का आगमन : दोहद-पूर्ति का उपाय	२३	Arrival of Abhaya Kumar : The solution	24
चेलनादेवी की आशंका व आत्म-ग्लानि	२८	Apprehension and remorse of Queen Chelana	28
बालक का जन्म : एकान्त में फेंकना	२९	Birth of the child : Throwing it away	29
श्रेणिक द्वारा भर्त्सना	२९	Scolding by King Shrenik	30
कूणिक का कुचक्र	३२	Kunik's conspiracy	33
कालकुमार आदि द्वारा स्वीकृति	३४	Acceptance by the princes	34
कूणिक का माता के चरण वंदनार्थ गमन	३४	Homage at the feet of the mother	35
चेलना रानी द्वारा भ्रान्तिनिवारण	३५	Queen Chelana removes misunderstanding	36
श्रेणिक का अन्तर्द्वन्द्व	३७	Shreniks inner conflict	38
कूणिक का पश्चात्ताप	३८	Kunik's repentance	39
वेहल्लकुमार की गज-क्रीड़ा	४०	Elephant play of Prince Vehala	41
पद्मावती की ईर्ष्या	४२	Padmavati's jealousy	43
वेहल्लकुमार का मनोमंथन	४३	Prince Vehalla's deliberation	44

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूणिक राजा की प्रतिक्रिया	४५	King Kunik's reaction	46
चेटक राजा का उत्तर	४७	King Chetak's reply	48
कूणिक राजा की चेतावनी	५१	King Kunik's warning	52
युद्ध की तैयारी	५२	War preparations	53
काल आदि दस कुमारों की युद्धार्थ सज्जा	५३	Ten Princes prepare for war	54
कूणिक की युद्ध-सज्जा	५४	Kunik's preparations for war	55
गण-राजाओं के साथ चेटक का परामर्श	५६	Chetak's consultations with heads of republics	56
चेटक राजा का युद्ध-क्षेत्र में आगमन	५८	King Chetak in the arena of war	59
युद्धार्थ व्यूह-रचना	५९	Battle formation	60
उपसंहार	६७	Conclusion	67
कूणिक अजातशत्रु से सम्बन्धित विशेष तथ्य	६८	Important facts regarding Kunik Ajatashatru	71
द्वितीय अध्ययन		**Second Chapter**	**75**
तृतीय से दशम अध्ययन		**Third to Tenth Chapter**	**77**
द्वितीय वर्ग : कल्पावतंसिका		**Second Section : Kalpavatansika**	
प्रथम अध्ययन		**First Chapter**	
उपोद्‌घात	७८	Introduction	79
पद्मावती का स्वप्न-दर्शन	८१	Dream of Padmavati	82
पद्म अनगार की साधना	८२	Spritual practices of ascetic Padma	84
द्वितीय अध्ययन		**Second Chapter**	**85**
तृतीय से दशम अध्ययन		**Third to Tenth Chapter**	**77**
तृतीय वर्ग : पुष्पिका		**Third Section : Pushpika**	
प्रथम अध्ययन : चन्द्र		**First Chapter : Chandra**	
उपोद्‌घात	९०	Introduction	91
चन्द्रविमान में ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र	९३	King of gods Chandra in Chandra Viman	94
श्रावस्ती नगरी का अंगति गाथापति (चन्द्र देव का पूर्व भव)	९६	Angati Gathapati of Shravasti City (Earlier birth of Chandra)	96
अर्हत् पार्श्व का पदार्पण	९७	Arrival of Arhat parshva	97
अंगति अनगार का उपपात	९८	Upapat of Angati Anagar	98
चन्द्रदेव का आगामी जन्म	९९	The Future birth of Chandra God	99
द्वितीय अध्ययन : सूर्य		**Second Chapter : Surya**	
सूर्य का समवरसण में आगमन	१००	Arrival of Surya in Samava Saran	100

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीय अध्ययन : शुक्र		**Third Chapter : Shukra**	
शुक्र महाग्रह का पूर्वभव	१०३	Earlier birth of Shukra Mahagraha	103
सोमिल ने गृहत्याग का विचार किया	१०७	Somil thinks of renouncing home	108
सोमिल की दिशाप्रोक्षिक साधना	११३	Somil's *Dishaprokshik* practice	115
सोमिल का नया संकल्प	११६	Somil's new resolve	118
देव द्वारा प्रतिबोध	१२०	The Divine advise	102
सोमिल द्वारा पुनः श्रावकधर्मग्रहण	१२५	Somil accepts *Shravak Dharma* again	126
सोमिल की शुक्र महाग्रह में उत्पत्ति	१२६	Somil's reincarnation in Shukra great planet	127
चतुर्थ अध्ययन : बहुपुत्रिका देवी		**Fourth Chapter : Bahuputrika Devi**	
उपोद्‌घात : प्रस्तुत अध्ययन का सन्देश	१२९	Introduction : The message of this chapter	129
बहुपुत्रिका देवी	१३०	Bahuputrika Devi	131
गौतम की जिज्ञासा	१३३	Gautam's curioisity	133
सुभद्रा सार्थवाही की चिन्ता	१३४	The worry of Subhadra Sarthavahi	134
सुव्रता आर्या का आगमन	१३५	Arrival of Suvrata Aryaa	135
सुभद्रा की जिज्ञासा	१३५	Subhadra's Question	136
आर्याओं का उत्तर	१३७	The Reply of Aryikas	137
सुभद्रा का श्रमणोपासिका व्रत ग्रहण	१३७	Subhadra takes the vow of *Shramanopasika*	138
सुभद्रा का दीक्षा-संकल्प	१३८	Subhadra's resolve to get initiated	139
दीक्षा-महोत्सव	१४०	Initiation ceremony	141
सुभद्रा आर्या का सन्तान-अनुराग	१४३	Subhadra Aryaa's attachment for offsprings	144
सुभद्रा का पृथक् आवास	१४४	Independent House of Subhadra	145
बहुपुत्रिका देवी रूप में उत्पत्ति	१४७	Reincarnation as Bahuputrika Devi	149
गौतम की पुनः जिज्ञासा	१४८	Gautam asks again	148
बहुपुत्रिका देवी का आगामी भव	१४९	The future birth of Bahuputrika Devi	149
सोमा की युवावस्था	१४९	The youth of Soma	150
सोमा द्वारा बत्तीस सन्तान को जन्म	१५०	Soma gives birth to thirty two children	151
सोमा का विचार	१५२	Soma's thought	152
सुव्रता आर्या का आगमन	१५३	Arrival of Suvrata Aryaa	154
सोमा का श्रावकधर्म ग्रहण	१५४	Soma takes the vow of *Shramanopasika*	155
सोमा का राष्ट्रकूट से दीक्षा के लिए पूछना	१५५	Soma seeks permission from Rashtrakoot	157

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमा की प्रव्रज्या	१५७	Initiation of Soma	158
पंचम अध्ययन : पूर्णभद्र देव		**Fifth Chapter : Purnabhadra Dev**	
पूर्णभद्र देव का नाट्य-प्रदर्शन	१६१	Dance performance by Purnabhadra god	162
षष्ठ अध्ययन : मणिभद्र देव		**Sixth Chapter : Manibhadra Dev**	
७ से १० अध्ययन : मणिभद्र देव		**Seventh to Tenth Chapter : Manibhadra Dev**	
चतुर्थ वर्ग : पुष्पचूलिका		**Fourth Section : Pushpachulika**	
प्रथम अध्ययन : श्री देवी		**First Chapter : Shri Devi**	
उपोद्‌घात	१६८	Introduction	169
भूता का दर्शनार्थ गमन	१७२	Bhoota goes to pay homage	173
भूता का प्रव्रज्या-ग्रहण	१७४	Initiation of Bhoota	176
शरीर-बकुशिका	१७७	Sharir-Bakushika	178
भूता का अवसान और सिद्धि-गमन	१७८	Death and liberation of Bhoota	179
अध्ययन २ से १०		**Second to Tenth Chapter**	**180**
पंचम वर्ग : वह्निदशा		**Fifth Section : Vrishnidasha**	
प्रथम अध्ययन		**First Chapter**	
उपोद्‌घात	१८१	Introduction	182
द्वारिका नगरी	१८४	Dvarika city	184
रैवतक पर्वत	१८४	Raivatak Mountain	185
नन्दनवन उद्यान, सुरप्रिय यक्षायतन	१८५	Nandanavan Garden and Surapriya Temple	186
द्वारिका नगरी में कृष्ण वासुदेव, बलदेव आदि	१८६	Krishna Vasudev and Baldev	187
अर्हत् अरिष्टनेमि का आगमन	१८७	Arrival of Arhat Arishtanemi	188
कृष्ण वासुदेव का दर्शनार्थ गमन	१८८	Krishna Vasudev goes to pay homage	189
निषधकुमार का दर्शनार्थ गमन	१९०	Prince Nishadh goes to pay homage	190
वरदत्त अनगार की जिज्ञासा	१९०	Curiosity of Varadatt Anagar	191
निषधकुमार का मनोरथ	१९५	Prince Nishadh's wish	195
निषधकुमार की दीक्षा : देवलोकोत्पत्ति	१९५	Initiation and incarnation in divine dimension	196
निषध का मुक्तिगमन	१९८	Liberation of Nishadh	199
ग्रन्थ की अन्तिम प्रशस्ति	२००	Concluding verse	200

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विपाक सूत्र
VIPAAK SUTRA

प्रथम श्रुतस्कन्ध : प्रथम अध्ययन		First Shrutskandh : First Chapter	
उपोद्घात	२०३	Introduction	204
उत्क्षेप (प्रस्तावना)	२०५	Foreword	205
सुधर्मास्वामी का आगमन	२०५	Arrival of Sudharma Swami	206
जम्बू अणगार की जिज्ञासा	२०६	Curiosity of ascetic Jambu	206
सुधर्मा स्वामी का समाधान	२०७	Reply by Sudharma Swami	207
प्रथम अध्ययन	२०८	**First Chapter**	**209**
जन्मांध मृगापुत्र	२१०	Congenital blind Mrigaputra	210
जाति अंध पुरुष का समवसरण में आगमन	२११	Arrival of a blind person in Samavasaran	211
गौतम की जिज्ञासा	२१३	Gautam's curiosity	214
मृगादेवी के घर पर गौतम	२१५	Gautam at the house of Mriga Devi	215
मृगापुत्र की बीभत्स अवस्था	२१७	Repugnant condition of Mrigaputra	218
मृगापुत्र-विषयक जिज्ञासा	२१९	Inquiry about Mrigaputra	220
मृगापुत्र का पूर्वभव	२२१	Previous birth of Mrigaputra	221
एकादि का अत्याचार	२२१	Torments by Ekadi	222
एकादि को भयंकर रोग	२२३	Ekadi Suffers from chronic ailments	224
एकादि की मृत्यु : मृगापुत्र का वर्तमान भव	२२७	Death of Ekadi and rebirth as Mrigaputra	227
माता को तीव्र वेदना	२२८	Acute pain to the mother	228
गर्भ गलाने के उपाय	२२८	Means of abortion	229
मृगापुत्र का भविष्य	२३२	Future of Mrigaputra	232

प्रथम श्रुतस्कन्ध : द्वितीय अध्ययन		First Shrutskandh : Second Chapter	
उपोद्घात	२३९	Introduction	239
उत्क्षेप (प्रस्तावना)	२४०	Foreword	240
कामध्वजा गणिका	२४१	Kamadhvaja courtesan	241
उज्झितक-परिचय	२४३	Introduction of Ujjhitak	243
उज्झितक की दुर्दशा	२४४	Miserable Condition of Ujjhitak	245
गौतम की जिज्ञासा	२४७	Gautam's curiosity	248
पूर्वभव-विवरण	२४८	Previous birth of Mrigaputra	248
उत्पला को दोहद	२४९	Utpalaa's Dohad	250
भीम द्वारा पशुओं की हिंसा	२५१	Killing of animals by Bheem	252

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्पला द्वारा पुत्र जन्म	२५३	Birth of a son	253
भीम की मृत्यु	२५४	Death of Bheem	254
उज्झितक का जन्म	२५६	Birth of Ujjhitak	256
विजय मित्र की मृत्यु	२५८	Death of Vijayamitra	258
उज्झितक का भविष्य	२६४	The future of Ujjhitak	265
प्रथम श्रुतस्कन्ध : तृतीय अध्ययन		**First Shrutskandh : Third Chapter**	
उपोद्घात	२६८	Introduction	268
उत्क्षेप	२६९	Foreword	269
शालाटवी चोरपल्ली	२६९	Shalatavi hideout	270
चोरसेनापति विजय	२७०	Bandit leader Vijaya	270
विजय का पुत्र अभग्नसेन	२७३	Abhagnasen : The son of bandit Vijaya	273
भगवान महावीर का आगमन	२७३	Arrival of Bhagavan Mahavir	273
गौतम की जिज्ञासा	२७५	Gautam's curiosity	276
अभग्नसेन का पूर्वभव	२७६	Previous birth of Abhagnasen	276
अभग्नसेन का वर्तमान भव	२७८	The present birth of Abhagnasen	278
स्कन्दश्री को दोहद	२७८	Skandashris *dohad*	279
अभग्नसेन का जन्म	२८२	Birth of Abhagnasen	282
पीड़ित प्रजा की पुकार	२८४	The Call of the tormented people	285
दण्डनायक को आदेश	२८५	Order to the Police Chief	286
गुप्तचरों ने खबर दी	२८६	Spies give news	287
युद्ध में दण्ड नायक की पराजय	२८९	Defeat of the Police Chief	290
महाबल राजा की कूटनीतिक चाल	२९१	King Mahabals treachery	292
अभग्नसेन का भविष्य	२९८	Future of Abhagnasen	299
प्रथम श्रुतस्कन्ध : चतुर्थ अध्ययन		**First Shrutskandh : Fourth Chapter**	
उपोद्घात	३००	Introduction	300
जम्बूस्वामी की जिज्ञासा	३०१	Curiosity of Jambu Swami	301
साहंजनी नगरी	३०१	Sahanjani city	302
शकट के पूर्वभव का वृत्तान्त	३०३	Past birth of Shakat	303
हिंसाकर्मी छन्निक	३०४	Chhannik in occupation of violence	305
शकट का वर्तमान भव	३०६	This birth of Shakat	307
शकट का भविष्य	३१०	The future of Shakat	310
शकट कुमार का भव	३११	The birth as Shakat Kumar	312

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम श्रुतस्कन्ध : पंचम अध्ययन		First Shrutskandh : Fifth Chapter	
उपोद्घात	३१३	Introduction	313
प्रस्तावना : जम्बू स्वामी की जिज्ञासा	३१४	Foreword : Curiosity of Jambu Swami	314
पूर्वभव	३१६	Previous birth	316
राजा द्वारा शान्ति होम	३१६	Peace-Offerings by the king	317
हिंसा कर्म का दुष्परिणाम	३१८	Bad fruits of violence	318
वर्तमान भव	३१८	This birth	319
बृहस्पतिदत्त का भविष्य	३२१	The future of shakat	322

प्रथम श्रुतस्कन्ध : षष्ट अध्ययन		First Shrutskandh : Sixth Chapter	
उपोद्घात	३२३	Introduction	324
प्रस्तावना	३२५	Foreword	325
गौतम स्वामी का प्रश्न	३२६	Gautam Swami's curiosity	327
नन्दिवर्द्धन का पूर्वभव	३२८	Previous birth of Nandivardhan	328
चारकपाल का घोर अत्याचार	३२८	Excessive tyranny of the jailer	330
अत्याचार का दुष्परिणाम	३३४	Bitter fruits of tyranny	334
पितृवध का दुःसंकल्प	३३५	Evil idea of killing his father	336
षड्यंत्र विफल : घोर कदर्थना	३३६	Conspiracy fails : Grave consequences	337
नन्दिषेण का भविष्य	३३७	The future of Nandishen	338

प्रथम श्रुतस्कन्ध : सप्तम अध्ययन		First Shrutskandh : Seventh Chapter	
उपोद्घात	३३९	Introduction	339
प्रस्तावना	३४०	Foreword	340
उम्बरदत्त की दुर्दशा	३४१	The misery of Umbardatt	342
पूर्वभव सम्बन्धी पृच्छा	३४३	Curiosity about the past birth	344
पूर्वभव : धन्वन्तरि वैद्य	३४५	Past birth : Dhanvantari Vaidya	345
सन्तान प्राप्ति के लिए यक्ष-पूजा	३४८	Yaksh worship for offspring	350
दोहद संपूर्ति	३५४	Fulfillment of pregnancy-desire	354
पुत्र जन्म	३५५	Birth of a son	555
उम्बरदत्त की दुर्दशा	३५५	Umbardatt's misery	356
उम्बरदत्त का भविष्य	३५७	Umbaradatta's future	357

प्रथम श्रुतस्कन्ध : अष्टम अध्ययन		First Shrutskandh : Eighth Chapter	
उपोद्घात	३५९	Introduction	359
प्रस्तावना	३६०	Foreword	360
शौरिकदत्त का वर्त्तमान भव	३६०	This life of Shaurikadatt	361
पूर्वभव-कथा : श्रीयक रसोइया	३६२	Previous birth : Shriyak cook	362

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शौरिकदत्त का जन्म	३६५	Birth of Shaurikadatt	365
शौरिकदत्त का हिंसक व्यवसाय	३६६	The Violent profession of Shaurikadatt	367
क्रूर कर्मों का कठोर दण्ड	३६७	Harsh punishment for evil deeds	368
शौरिकदत्त का भविष्य	३६९	The future of Shaurikadatt	370
प्रथम श्रुतस्कन्ध : नवम अध्ययन		**First Shrutskandh : Ninth Chapter**	
उपोद्घात	३७१	Introduction	371
प्रस्तावना	३७२	Foreword	372
शूली पर चढ़ी स्त्री	३७३	Woman in gallows	373
पूर्वभव	३७४	Past birth	374
सपत्नियों का षड्यंत्र	३७५	Conspiracy by co-wives	375
श्यामादेवी द्वारा राजा को सूचना	३७७	Shyama Devi informs the king	378
कूटाकारशाला का दहन	३८०	Kootakarashala set afire	380
देवदत्ता का जन्म	३८१	Birth of Devadatta	381
देवदत्ता का विवाह	३८६	Devadatta's marriage	387
राजा की मातृ भक्ति	३८९	Devotion for mother	389
देवदत्ता का षड्यंत्र	३९१	Devadatta's conspiracy	391
देवदत्ता का भविष्य	३९३	Devadatta's future	394
प्रथम श्रुतस्कन्ध : दशम अध्ययन		**First Shrutskandh : Tenth Chapter**	
उपोद्घात	३९५	Introduction	395
प्रस्तावना	३९६	Foreword	396
अंजू का वर्तमान भव	३९७	Present birth of Anju	397
अंजू का पूर्वभव : पृथ्वीश्री गणिका	३९७	Past birth of Anju : Prithvishri Courtesan	398
वर्त्तमान भव	३९८	Present life	399
भविष्य वृत्तान्त	४०१	Anju's future	402
उपसंहार	४०३	Conclusion	403
द्वितीय श्रुतस्कन्ध : सुखविपाक		**Second Chapter : Sukha-vipaak**	
सुबाहुकुमार : प्रथम अध्ययन		**Subahu Kumar : First Chapter**	
उपोद्घात	४०५	Introduction	406
प्रस्तावना	४०७	Foreword	407
सुबाहु का गृहस्थजीवन	४०९	Family life of Subahu	410
सुबाहु का धर्म-श्रवण	४१०	Subahu attends discourse	410
गृहस्थधर्म का स्वीकार	४११	Accepting the householders code	411

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गौतम की सुबाहु–विषयक जिज्ञासा	४१२	Gautam's curiosity about Subahu	413
सुबाहुकुमार का पूर्वभव	४१६	Past birth of Subahu Kumar	416
सुबाहुकुमार की धर्म आराधना	४२२	Subahu Kumar's spiritual Practices	423
शुभ भावना	४२३	Pious feelings	424
भगवान का पदार्पण	४२५	Arrival of Bhagavan	425
भविष्य वर्णन	४२७	Future Description	427
उपसंहार	४२८	Conclusion	428
द्वितीय अध्ययन		**Second Chapter**	
भद्रनन्दी कुमार	४२९	Bhadranandi Kumar	429
तृतीय अध्ययन		**Third Chapter**	
सुजातकुमार	४३१	Sujat Kumar	431
चतुर्थ अध्ययन		**Fourth Chapter**	
सुवासवकुमार	४३३	Suvasav Kumar	433
पंचम अध्ययन		**Fifth Chapter**	
जिनदास	४३५	Jinadas	435
षष्ठ अध्ययन		**Sixth Chapter**	
धनपति	४३७	Dhanapati	437
सप्तम अध्ययन		**Seventh Chapter**	
महाबल	४३९	Mahabal	439
अष्टम अध्ययन		**Eighth Chapter**	
भद्रनन्दी	४४१	Bhadranandi	441
नवम अध्ययन		**Ninth Chapter**	
महाचन्द्र	४४३	Mahachandra	443
दशम अध्ययन		**Tenth Chapter**	
वरदत्त	४४५	Varadatt	445
उपसंहार	४४७	Conclusion	447
परिशिष्ट १ : आगमों का अनाध्याय काल	४५१	**Appendix I :** Inappropriate time for study of Agams	554
		Appendix II : Technical Terms of Narayavalika	
		Appendix III : Technical Terms of Vipaak Sutra	466

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टम उपाङ्ग

निरयावलिका सूत्र

The Eighth Upanga

NIRAYAVALIKA SUTRA

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टम उपाङ्ग
निरयावलिका सूत्र

उपोद्घात

'निरयावलिकासूत्र' के नाम से पाँच उपांगों का एक समूह है, जिसे **'उपांग श्रुतस्कंध'** या वर्ग कहा जाता है। इस उपांग वर्ग में पाँच आगमों का समूह है-(१) कप्पिया (निरयावलिका), (२) कप्पवडिंसिया, (३) पुप्फिया, (४) पुप्फचूलिया, (५) वण्हिदसा। इनके सम्बन्ध में प्रस्तावना में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है। इसमें प्रथम तो अष्टम अंग अन्तकृद्दशासूत्र का उपांग निरयावलिका है। आगे के उपांग भी एक-एक अंग के उपांग हैं। प्रथम उपांग-निरयावलिका का दूसरा नाम 'कप्पिया' भी है। इसमें नरक में जाने वाले दस प्रमुख पात्रों का वर्णन होने से इसका नाम निरयावलिका (नरकावलिका) अधिक प्रसिद्ध हो गया।

इस उपांग के दस अध्ययन हैं। इस उपांग का कथानक भगवान महावीर युग के प्रसिद्ध मगध सम्राट् श्रेणिक के कालकुमार आदि दस पुत्रों से सम्बन्धित है। श्रेणिक, कोणिक तथा कालकुमार आदि का वर्णन एवं उनके रथ-मूसल-संग्राम आदि की सम्पूर्ण कथा परिशिष्ट १ में दी गई है। पाठक उसे पढ़ लें। वह इस वर्णन को समझने में सहायक होगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ASHTAM UPANGA

NIRAYAVALIKA SUTRA

INTRODUCTION

This work bearing the title *Nirayavalika Sutra* is in fact an anthology of five *Upangas* (the auxiliary explanatory works to the twelve *Angas* or the main corpus of the Jain canonical texts) which is called *Upanga Shrutskandh* or *Varg*. The names of these *Upangas* are (1) *Kappiya* (*Kalpik*) also known as *Nirayavalika* (*Narakavalika*), (2) *Kappavadinsiya* (*Kalpavatansika*), (3) *Pupphiya* (*Pushpika*), (4) *Pupphachuliya* (*Pushp-chulika*), and (5) *Vanhidasa* (*Vrishnidasha*). They have already been discussed in detail in the preface. First of these is *Nirayavalika*, the *Upanga* of the eighth *Anga*, *Antakriddasha Sutra*. The following *Upangas* are also connected with one *Anga* each. The first *Upanga*, *Nirayavalika* is also known as *Kappiya*. As it contains description of ten prominent characters destined to be born in infernal worlds (*narak*) it became more popular as *Nirayavalika* (*Narakavalika*).

This *Upanga* has ten chapters. The story is about ten sons (including Kaal Kumar), of Emperor Shrenik, the famous sovereign of the Magadh empire and a contemporary of Bhagavan Mahavir. The detailed story of Shrenik, Kunik, Kaal Kumar, and others and the famous *Rath-musal* battle has been included as appendix-1. A study of it will be helpful in understanding this work.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजगृह वर्णन

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था, रिद्धित्थिमिय समिद्धे गुणसिलए चेइए, वण्णओ.। असोगवरपायवे पुढविसिलापट्टए।

१. उस काल (–चौथे आरे में), उस समय (–जब भगवान महावीर विद्यमान थे) राजगृह नगर था। वह धन–धान्य, वैभव, ऋद्धि, समृद्धि से युक्त था। वहाँ उत्तर–पूर्व ईशानकोण की दिशा में, गुणशिलक चैत्य था, उस चैत्य में विशालकाय अशोक वृक्ष के नीचे पृथ्वीशिला पट्टक रखा था। *[इन सबका वर्णन औपपातिकसूत्र, सूत्र १ से १० के अनुसार समझ लेना चाहिए।]*

DESCRIPTION OF RAJAGRIHA

1. During that period of time (in the fourth epoch of the time cycle when Bhagavan Mahavir was living) there was a city called Rajagriha. It was endowed with prosperity, agricultural wealth, glory, prosperity, and grandeur. On its north-east direction was *Gunasheelak Chaitya* where there was a large slab of rock placed under a huge Ashoka tree. *[detailed description should be read as in Aupapatik Sutra, aphorisms 1-10].*

विवेचन–औपपातिकसूत्र में चम्पानगरी का वर्णन तथा वहाँ स्थित वनखण्ड, अशोक वृक्ष तथा पृथ्वीशिलापट्टक आदि का वर्णन बहुत ही विस्तारपूर्वक किया गया है। यहाँ पर उसी अनुसार राजगृह नगर का एवं गुणशिलक चैत्य आदि का वर्णन समझ लेना चाहिए।

Elaboration—*Aupapatik Sutra* contains a beautiful and comprehensive description of Champa city, the garden outside the city, Ashoka tree, slab of rock, etc. Here the description about Rajagriha city and its surroundings should be taken to be the same.

आर्य सुधर्मा स्वामी का आगमन

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं अणगारे जाइसंपन्ने जहा केसी (जाव) पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जेणेव रायगिहे नयरे (जाव) जहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं (तवसा अप्पाणं भावेमाणे) जाव विहरइ। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया।

२. उस काल, उस समय में श्रमण भगवान महावीर के शिष्य आर्य सुधर्मा अनगार थे जो केशीकुमार श्रमण की भाँति जाति–सम्पन्न आदि गुणयुक्त थे। वे पाँच सौ अनगारों के साथ एक गाँव से दूसरे गाँव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रम से चलते हुए जहाँ राजगृह नगर था वहाँ पधारे यावत् श्रमण मर्यादा के अनुरूप मुनिजनों के योग्य आवास की आज्ञा लेकर संयम और तप के द्वारा आत्मा को भावित करते हुए विचरते थे। उनको वन्दना करने जनसमूह (परिषद्) का आना हुआ और सुधर्मा स्वामी ने धर्मोपदेश दिया। उपदेश सुनकर परिषद् वापस चली गई। (यह सभी वर्णन रायपसेणियसूत्रगत केशीकुमार श्रमण के वर्णन अनुसार समझें। *[देखें–रायपसेणियसूत्र, सूत्र २१३]*

ARRIVAL OF ARYA SUDHARMA SWAMI

2. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir's disciple Arya Sudharma *Anagar* was living. He belonged to a prominent family and caste and had other attributes like Keshi Kumar Shraman. Wandering comfortably from one village to another, along with his five hundred disciples, he arrived in the town of Rajagriha... and so on up to... after seeking formal permission he camped there enkindling his soul with spiritual activities related to inner discipline and austerities. Throngs of people visited (his place of stay). Sudharma Swami gave a discourse and the masses returned home. (details should be read as in *Rayapaseniya Sutra* in context of Keshi Kumar Shraman) *(Rayapaseniya Sutra, 213)*

विवेचन–'गामाणुगामं' व 'सुहंसुहेणं' पदों की व्याख्या करते हुए आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने लिखा है टीकाकार के अनुसार इन पदों का अभिप्राय यह है कि जिस गाँव से चलते थे, उस ग्राम से दूसरे ग्राम तक बीच में जो भी छोटे–छोटे गाँव आते थे उनमें भी उपदेश देते हुए, शरीर व संयम में कोई बाधा नहीं पहुँचे इस तरह सुखपूर्वक विहार करते थे।

Elaboration—Explaining the terms *'gamanugamam'* and *'suhamsuhenam'* Acharya Shri Atmaram ji Maharaj mentions that according to the commentator (*Tika*) when he moved from one specific village or city to another, he preached for the benefit of masses in all the small villages on the way. He moved comfortably so as to avoid any inconvenience to his body and disturbance in his practices.

जम्बू अनगार की जिज्ञासा

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी जंबू नामं अणगारे समचउरंस–संठाणसंठिए, जाव. संखित्त–विउलतेउलेस्से अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अदूरसामंते उड्ढं जाणू जाव विहरइ।

तए णं से भगवं जंबू जायसड्ढे जाव. पज्जुवासमाणे एवं वयासि–उवंगाणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं एवं उवंगाणं पंचवग्गा पण्णत्ता, तं जहा–१. निरयावलियाओ, २. कप्पवडिंसियाओ, ३. पुप्फियाओ, ४. पुप्फचूलियाओ, ५. वण्हिदसाओ।

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पंच वग्गा पण्णत्ता तं जहा–निरयावलियाओ जाव वण्हिदसाओ, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं निरयावलियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

३. उस समय आर्य सुधर्मा अनगार के शिष्य जम्बू नाम के अनगार थे, जिनका शरीर समचतुरस्र–संस्थान से युक्त था तथा वे विपुल तेजोलेश्या को अपने भीतर समाहित किये हुए तेजोदीप्त थे। आर्य सुधर्मा अनगार के समक्ष कुछ ही दूर पर भगवान जम्बू मर्यादापूर्वक भूमि पर स्थित हो, एक घुटना ऊँचा किये उत्तान आसनपूर्वक एकाग्र होकर बैठे थे।

उस समय जम्बू स्वामी के मन में श्रद्धायुक्त जिज्ञासा उत्पन्न हुई। सुधर्मा स्वामी को विनयपूर्वक वन्दना करके पूछा–"हे भंते ! श्रमण भगवान महावीर, जो मोक्ष को प्राप्त हो चुके हैं, उन्होंने उपांगों का क्या अर्थ (वर्णन) कहा है ?"

सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–"आयुष्मान् जंबू ! उन श्रमण भगवान महावीर ने उपांगों के पाँच वर्ग इस प्रकार कहे हैं–(१) निरयावलिका, (२) कल्पावतंसिका, (३) पुष्पिका, (४) पुष्पचूलिका, (५) वृष्णिदशा।

हे भंते ! मोक्ष को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने उपांगों के पाँच वर्ग कहे हैं, जैसे कि निरयावलिका यावत् वृष्णिदशा; तो हे भंते ! प्रथम वर्ग के उपांग निरयावलिका के कितने अध्ययन प्रतिपादित किये हैं ?

CURIOSITY OF ASCETIC JAMBU

3. During that period of time Arya Sudharma Anagar had an ascetic disciple named Jambu Anagar. The structure of his body conformed to *samachaturasra samsthan* (the anatomical structure of a human being where parallel lines drawn from the extremities of a body sitting cross-legged form a square and where all the parts of body above and below the navel are of standard dimensions. The dimensions increase and decrease proportionately). He was endowed with *vipul tejoleshya* (great radiant energy), which gave him a highly radiant appearance. He sat before Arya Sudharma Anagar at a suitable place not very far, in a proper posture suitable for meditation, and with rapt attention.

A curiosity sparked in the mind of ascetic Jambu Swami. He modestly bowed before Sudharma Swami and respectfully put forth his question—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the *Upangas* given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained the eternal abode of the *Siddha*-state ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Sudharma Swami replied, "Long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has preached the five sections of *Upangas* as follows—(1) *Niryavalika*, (2) *Kalpavatansika*, (3) *Pushpika*, (4) *Pushp-chulika*, and (5) *Vrishnidasha*."

"*Bhante* ! If there are five sections of *Upangas, Niryavalika*... and so on up to... *Vrishnidasha* as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained the eternal abode of the *Siddha*-state, how many chapters are there in the first section of the *Upangas, Niryavalika,* as narrated by Shraman Bhagavan Mahavir ?"

प्रथम अध्ययन की विषय–वस्तु

४. एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

काले सुकाले महाकाले कण्हे सुकण्हे।
तहा महाकण्हे वीरकण्हे य बोद्धव्वे।
रामकण्हे, तहेव य पिउसेणकण्हे नवमे।
दसमं महासेणकण्हे उ।

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

४. उत्तर में सुधर्मा स्वामी ने कहा–"हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने उपांगों के प्रथम वर्ग निरयावलिका के दस अध्ययन प्रतिपादित किये हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं–(१) काल, (२) सुकाल, (३) महाकाल, (४) कृष्ण, (५) सुकृष्ण, (६) महाकृष्ण, (७) वीरकृष्ण, (८) रामकृष्ण, (९) पितृसेनकृष्ण और (१०) महासेनकृष्ण।" (प्रत्येक अध्ययन प्रत्येक कुमार के नाम पर कथन किया गया है।)

"हे भगवन् ! यदि मोक्ष को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने उपांगों के प्रथम वर्ग निरयावलिकासूत्र के दस अध्ययन प्रतिपादित किये हैं, तो पहले अध्ययन निरयावलिकासूत्र का भगवान महावीर ने क्या अर्थ प्रतिपादन किया है ?"

THE THEME OF THE FIRST CHAPTER

4. Sudharma Swami replied "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has stated ten chapters of *Niryavalika*, the first section of the *Upangas*. They are—(1) Kaal, (2) Sukaal, (3) Mahakaal, (4) Krishna, (5) Sukrishna, (6) Mahakrishna, (7) Virakrishna, (8) Ramakrishna, (9) Pitrasen-krishna, and (10) Mahasen-krishna. (Each title bears the name of a prince.)

Bhante ! If there are ten chapters in *Niryavalika*, the first section of the *Upangas*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir who has attained the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

eternal abode of the *Siddha*-state, what is the text and meaning of the first chapter of *Niryavalika*, the first section of the *Upangas*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir ?"

५. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपा नामं नयरी होत्था, रिद्ध.। पुण्णभद्दे चेइए।

तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कूणिए नामं राया होत्था, महया.।

तस्स णं कूणियस्स रन्नो पउमावई नामं देवी होत्था, सोमाल जाव विहरइ।

तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था, सोमाल. जाव सुरूवा।

तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था, सोमाल. जाव सुरूवे।

५. उत्तर में श्री सुधर्मा स्वामी ने कहा-"जम्बू ! उस काल, उस समय में इसी जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारतवर्ष में चम्पा नाम की नगरी थी जो विशाल भवनादि से युक्त, स्व चक्र-पर चक्र के भयों से रहित, धन-धान्य से परिपूर्ण थी। इस नगरी के बाहर ईशानकोण में पूर्णभद्र नाम का एक उद्यान था, उस उद्यान में पूर्णभद्र यक्ष का प्राचीन आयतन अर्थात् पूर्णभद्र यक्ष का मन्दिर था। *[पूर्णभद्र चैत्य का वर्णन औपपातिकसूत्र, सूत्र २ के अनुसार समझें।]*

उस चम्पा नगरी में श्रेणिक राजा का पुत्र, चेलनादेवी का आत्मज कूणिक (क्रूणिक) नाम का एक महान् महिमाशाली राजा था। *[कूणिक का वर्णन औपपातिकसूत्र, सूत्र ११ के अनुसार समझें।]*

कूणिक राजा की रानी पद्मावतीदेवी थी, जो अत्यन्त सुकुमार, सुरूपवान, कूणिक को अत्यन्त प्रिय यावत् सुखभोग में समय व्यतीत कर रही थी।

चम्पा नगरी में राजा श्रेणिक की पत्नी, कूणिक राजा की छोटी माता (विमाता) कालीदेवी थी, जो सुकुमार अंग-प्रत्यंगों वाली और सुरूपवती थी।

उस कालीदेवी के पुत्र का नाम कालकुमार था। वह भी सुकुमार और सौन्दर्य-सम्पन्न था। *(टीकाकार ने कालकुमार का वर्णन ज्ञातासूत्र में मेघकुमार के वर्णन के समान जानने की सूचना दी है।)*

5. Sudharma Swami replied "Jambu ! During that period of time there was a city called Champa in Bharatavarsh area in this continent called Jambudveep. It was full of large mansions (etc.), was free of fears from within and outside, and was rich in wealth and grains. Outside this city in the north-east direction (*Ishan Kone*) was a garden called Purnabhadra. In this garden there was an ancient temple of Purnabhadra Yaksha. *[the description of the Purnabhadra Chaitya should be read from Aupapatik Sutra, aphorism-2]*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

That Champa city was ruled by a great and glorious king named Kunik, the son of King Shrenik and Queen Chelana. *[description of King Kunik should be read from Aupapatik Sutra, aphorism-11]*

The consort of King Kunik was queen Padmavati Devi, who was extremely delicate and beautiful. She was much adored by Kunik (... and so on up to...) and enjoyed life.

Also in Champa city lived Kaali Devi, wife of King Shrenik and a step mother of King Kunik. She too had delicate limbs and was very beautiful.

Kaali Devi had a son named Kaal Kumar. He was also delicate and handsome. [The commentator (*Tika*) advises to consider the description of Kaal Kumar to be same as that of Megh Kumar in *Jnata Sutra*]

रथ–मूसल संग्राम में प्रवृत्ति

६. तए णं से काले कुमारे अन्नया कयाइ तिहिं दंतिसहस्सेहिं तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं आससहस्सेहिं तिहिं मणुयकोडीहिं गरुलवूहे। एक्कारसमेणं खंडेणं कूणिएणं रण्णा सद्धिं रहमुसलं संगामं ओयाए।

६. तदनन्तर किसी समय वह कालकुमार तीन हजार हाथियों, तीन हजार रथों, तीन हजार अश्वों और तीन करोड़ मनुष्यों (सैनिकों) को साथ लेकर राज्य के ग्यारहवें भाग के भागीदार राजा कूणिक के साथ मिलकर (चेटक राजा के विरुद्ध) गरुड़ व्यूह के आकार वाले रथ–मूसल संग्राम में सम्मिलित हुआ। *[रथ–मूसल संग्राम का विस्तृत वर्णन परिशिष्ट में देखें।]*

JOINING THE RATH-MUSAL WAR

6. At some later period Kaal Kumar with his strong army consisting of three thousand elephants, three thousand chariots, three thousand horses and thirty million soldiers joined King Kunik, the owner of the eleventh part of the empire, in the *Rath-musal* battle in *Garud Vyuha* (eagle shaped battle formation) (fought against King Chetak). *[for detailed description of Rath-musal battle see appendix]*

कालीदेवी की चिन्ता

७. तए णं तीसे कालीए देवीए अन्नया कयाइ कुडुंब जागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था। "एवं खलु ममं पुत्ते कालकुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं (जाव) ओयाए। से मन्ने किं जइस्सइ नो जइस्सइ ? जीविस्सइ नो जीविस्सइ ? पराजिणिस्सइ नो पराजिणिस्सइ ? काले णं कुमारे अहं जीवमाणं पासिज्जा ?" ओहयमण. (जाव) झियाइ।

७. तब एक बार अपने कुटुम्ब–परिवार की परिस्थिति पर विचार करते हुए उस कालीदेवी के हृदय में इस प्रकार के संकल्प–विकल्पात्मक विचार उत्पन्न हुए–'मेरा पुत्र कालकुमार तीन हजार हाथियों आदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को लेकर यावत् रथ-मूसल संग्राम में गया है, तो क्या वह विजयी होगा या नहीं? क्या वह जीवित रहेगा अथवा नहीं रहेगा? क्या मैं कालकुमार को जीवित देख पाऊँगी?' इस प्रकार के विचारों से वह उदास होकर आर्त्तध्यान (चिन्ता) करने लगी।

KAALI DEVI'S APPREHENSION

7. One day while thinking about the condition of her family, Kaali Devi was plagued by an apprehension—"My son, Kaal Kumar has gone with his three thousand horses... and so on up to... in the *Rath-musal* battle. Will he win or not ? Will he live or not ? Will I be able to see Kaal Kumar alive or not ?" With these thoughts she became dejected and started worrying.

चिन्ता-निवारण हेतु भगवान के समीप गमन

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए। परिसा निग्गया।

तए णं तीसे कालीए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था-'एवं खलु, समणे भगवं पुव्वाणुपुव्विं (जाव) विहरइ। तं महाफलं खलु तहारूवाणं (जाव) विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए। तं गच्छामि णं समणं (जाव) पज्जुवासामि, इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामि।'

त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह।"

उवट्ठवित्ता (जाव) पच्चप्पिणंति।

तए णं सा काली देवी ण्हाया कयबलिकम्मा (जाव) अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव महत्तरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ, दुरूहित्ता नियगपरियालसंपरिवुडा चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए (जाव) धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेइत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता बहूहिं जाव खुज्जाहिं. विंदपरिक्खित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ। ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासइ।

८. उस समय श्रमण भगवान महावीर का चम्पा नगरी में समवसरण हुआ। भगवान को वन्दना-नमस्कार करने एवं धर्मोपदेश सुनने के लिए जन-समूह एकत्र होकर आया।

तब कालीदेवी भी इस समाचार को जानकर हर्षित हुई और उसके अन्तर्हृदय में इस प्रकार का संकल्प उत्पन्न हुआ-'पूर्वानुपूर्वी क्रम से विहार करते श्रमण भगवान महावीर चम्पा नगरी में पधारे हैं। उनका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगमन निश्चय ही शुभ फलदायक है। ऐसे श्रमण भगवन्तों का नाम सुनना ही महान् फलदायी है तो उनके समीप जाकर उनको वन्दना-नमस्कार करना तथा उनकी पर्युपासना करने के फल के विषय में तो कहना ही क्या है ? उनके पास से श्रुत (शास्त्र) के विपुल अर्थ को ग्रहण करने की महिमा तो अपार है। अतः मैं श्रमण भगवान के दर्शनार्थ जाऊँ। उनकी पर्युपासना करूँ और अपने पुत्र के सम्बन्ध में प्रश्न पूछूँ।'

काली रानी ने ऐसा विचार किया। विचार करके अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर आज्ञा दी- ''देवानुप्रियो ! शीघ्र ही धार्मिक कार्यों में प्रयोग किये जाने वाले अश्व-सारथी आदि से युक्त श्रेष्ठ रथ को तैयार करके लाओ।''

कौटुम्बिक पुरुषों ने रथ तैयार कर उपस्थित किया तथा आज्ञानुरूप कार्य हो जाने की सूचना दी।

वह कालीदेवी स्नान एवं बलिकर्म (शरीर पर सुगन्धित तेल आदि लगाकर) करके मूल्य में अधिक, एवं भार में हल्के ऐसे श्रेष्ठ आभूषणों से विभूषित हो अनेक देशों से आई हुई कुब्जा दासियों यावत् महत्तरकवृन्द (अन्तःपुर की रक्षिकाओं) को साथ लेकर अन्तःपुर से निकली यावत् उस धार्मिक रथ में आरूढ़ हुई तथा अपने परिजनों एवं परिवार से घिरी हुई चम्पा नगरी के बीचोंबीच होकर जहाँ पूर्णभद्र उद्यान था वहाँ धार्मिक श्रेष्ठ रथ को रुकवाया। फिर उस रथ से नीचे उतरी और उतरकर बहुत-सी कुब्जा आदि दासियों एवं महत्तरकवृन्द से घिरी हुई जहाँ श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे, वहाँ पहुँची। फिर तीन बार प्रदक्षिणा करके वन्दना-नमस्कार किया; वहीं ठहरकर सपरिवार भगवान की देशना सुनने के लिए उत्सुक होकर नमस्कार करती हुई, अंजलि जोड़कर विनयपूर्वक पर्युपासना करने लगी।

VISITING BHAGAVAN MAHAVIR

8. Around that time Shraman Bhagavan Mahavir's *samavasaran* (divine assembly) was held in Champa city. Throngs of people came there to pay homage and attend the discourse.

Kaali Devi was happy to get this news. She thought—"Wandering from one place to another Shraman Bhagavan Mahavir has arrived in Champa city. His arrival is certainly a good omen. What to say of the benefits of going near him and paying homage, mere hearing of his name is highly bountiful. Unlimited is the importance of learning the elaborate meaning of the canon from him. Therefore, I will go to behold him, worship him and enquire of him about my son ?"

With these thoughts Queen Kaali called her attendants and gave instructions—"Beloved of gods ! Bring at once the best of the chariots reserved for religious ventures duly ready and equipped with horse, driver, and other things."

The attendants prepared the chariot and brought it. They informed the queen of concluding the assignment given to them.

Kaali Devi took her bath and performed other daily chores (like applying perfumed oils on the body, etc.). After that she adorned herself

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

with costly, light weight and exclusive ornaments. She then came out of the palace accompanied by a large contingent of maids from many countries including hunchbacks (*kubja*), ... and so on up to... female-guards of inner quarters. Coming out of the palace she boarded that religious chariot and, surrounded by members of her family and friends, passing through Champa city arrived at Purnabhadra Chaitya. There she stopped the carriage and alighted from it. Surrounded by numerous maids (as mentioned) she approached the spot where Bhagavan Mahavir was seated. After this the queen went around *Bhagavan* three times and paid homage and obeisance. Now she stopped there and joining her palms commenced the worship with reverence and eagerness in order to listen to *Bhagavan's* discourse.

काली की जिज्ञासा का समाधान

९. तए णं समणे भगवं (जाव) कालीए देवीए तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मकहा भाणियव्वा (जाव) समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणा आणाए आराहए भवइ।

तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ हियया समणं भगवं तिक्खुत्तो, एवं वयासी—"एवं खलु, भंते ! मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं (जाव) रहमुसलं संगामं ओयाए। से णं भंते ! कि जइस्सइ ? नो जइस्सइ ? (जाव) काले णं कुमारे अहं जीवमाणं पासिज्जा ?

"काली !" इ समणे भगवं कालिं देविं एवं वयासी—"एवं खलु काली; तव पुत्ते काले कुमारे, तिहिं दंतिसहस्सेहिं (जाव) कूणिएणं रन्ना सद्धिं रह—मुसलं संगामं संगामेमाणिए हयमहिय—पवरवीर—घाइयणिवडियचिंधज्झयपडागे निरालोयाओ दिसाओ करेमाणे चेडगस्स रन्नो सपक्खं सपडिदिसिं रहेण पडिरहं हव्वमागए।

तए णं से चेडए राया कालं कुमारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते (जाव) मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता वइसाहं ठाणं ठाइ, ठाइत्ता आययकण्णाययं उसुं करेइ, करेत्ता कालं कुमारं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ। तं कालगए णं काली ! काले कुमारे, नो चेव णं तुमं कालं कुमारं जीवमाणं पासिहिसि।"

९. तत्पश्चात् श्रमण भगवान महावीर ने उस कालीदेवी सहित उपस्थित विशाल जन-परिषद् को धर्मदेशना सुनाई। *(यहाँ औपपातिकसूत्र के अनुसार धर्मदेशना का वर्णन करना चाहिए।)* श्रमणोपासक और श्रमणोपासिका धर्म में स्थिर होकर आज्ञा के आराधक होते हैं।

श्रमण भगवान महावीर के श्रीमुख से धर्मश्रवण कर और उसे हृदय में अवधारित कर काली रानी हर्षित, संतुष्ट यावत् विकसित हृदय हुई। फिर श्रमण भगवान को तीन बार वन्दन-नमस्कार कर इस प्रकार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न किया–"भंते ! मेरा पुत्र कालकुमार तीन हजार हाथियों आदि के साथ रथ-मूसल संग्राम में गया हुआ है, तो हे भगवन् ! क्या वह विजयी होगा अथवा नहीं ? यावत् क्या मैं कालकुमार को जीवित देख सकूँगी ?"

प्रत्युत्तर में भगवान ने कहा–"हे काली ! तुम्हारा पुत्र कालकुमार तीन हजार हाथी आदि लेकर कूणिक राजा के साथ रथ-मूसल संग्राम में युद्ध करते हुए अनेक सुभटों को आहत, मर्दित करते हुए, उनकी घात करते हुए और उनकी संकेतसूचक ध्वजा-पताकाओं को भूमि पर गिराते हुए, दिशा-विदिशाओं को अंधकारमय करते हुए, रथ से रथ को टकराते हुए चेटक राजा के रथ के सन्मुख आया।

तब चेटक राजा ने कालकुमार को आते हुए देखा, देखकर क्रोध में आविष्ट हो दाँत व होठों को मिसमिसाते हुए, धनुष को ऊँचा उठाया, धनुष पर बाण चढ़ाया, चढ़ाकर धनुष को कान तक खींचा और खींचकर एक ही प्रहार में उसे आहत कर दिया। बाण लगने से वह टूटे पर्वत-शिखर की भाँति भूमि पर गिरकर निष्प्राण हो गया। इसलिए हे काली ! वह कालकुमार मरण को प्राप्त हो गया है। अब तुम कालकुमार को जीवित नहीं देख सकोगी।"

ANSWERS OF KAALI'S QUESTIONS

9. After that Shraman Bhagavan Mahavir gave his discourse to the large congregation along with Kaali Devi. (This should be followed by the reading of the description of the discourse as in *Aupapatik Sutra*). The *Shramanopasaks* and *Shramanopasikas* are firm in religious codes and are followers of the word of the *Jina*.

Queen Kaali was happy, contented and delighted to listen to the sermon of Shraman Bhagavan Mahavir. She then paid homage and obeisance to Shraman Bhagavan three times and put forth her question—"*Bhante* ! My son, Kaal Kumar, has gone with his three thousand horses... and so on up to... in the *Rath-musal* battle. Will he win or not ?... and so on up to... Will I be able to see Kaal Kumar alive ?"

Bhagavan said in reply—"O Kaali ! Your son, Kaal Kumar, along with three thousand elephants (etc.) joined King Kunik in the *Rath-musal* battle. While fighting, wounding, trampling, and killing many soldiers and felling their banners and colours, darkening the sky in all directions and smashing chariot with chariot he came across King Chetak.

"When King Chetak saw Kaal Kumar approaching him, he was infuriated. Gnashing his teeth and pressing his lips, King Chetak raised his bow, loaded an arrow and drew the string to his ears. In just one shot he fatally wounded Kaal Kumar. Pierced with the arrow, Kaal Kumar fell on the ground like a broken peak of a hill and died on the spot. Therefore, O Kaali ! Kaal Kumar has met his death. You cannot see him alive now."

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

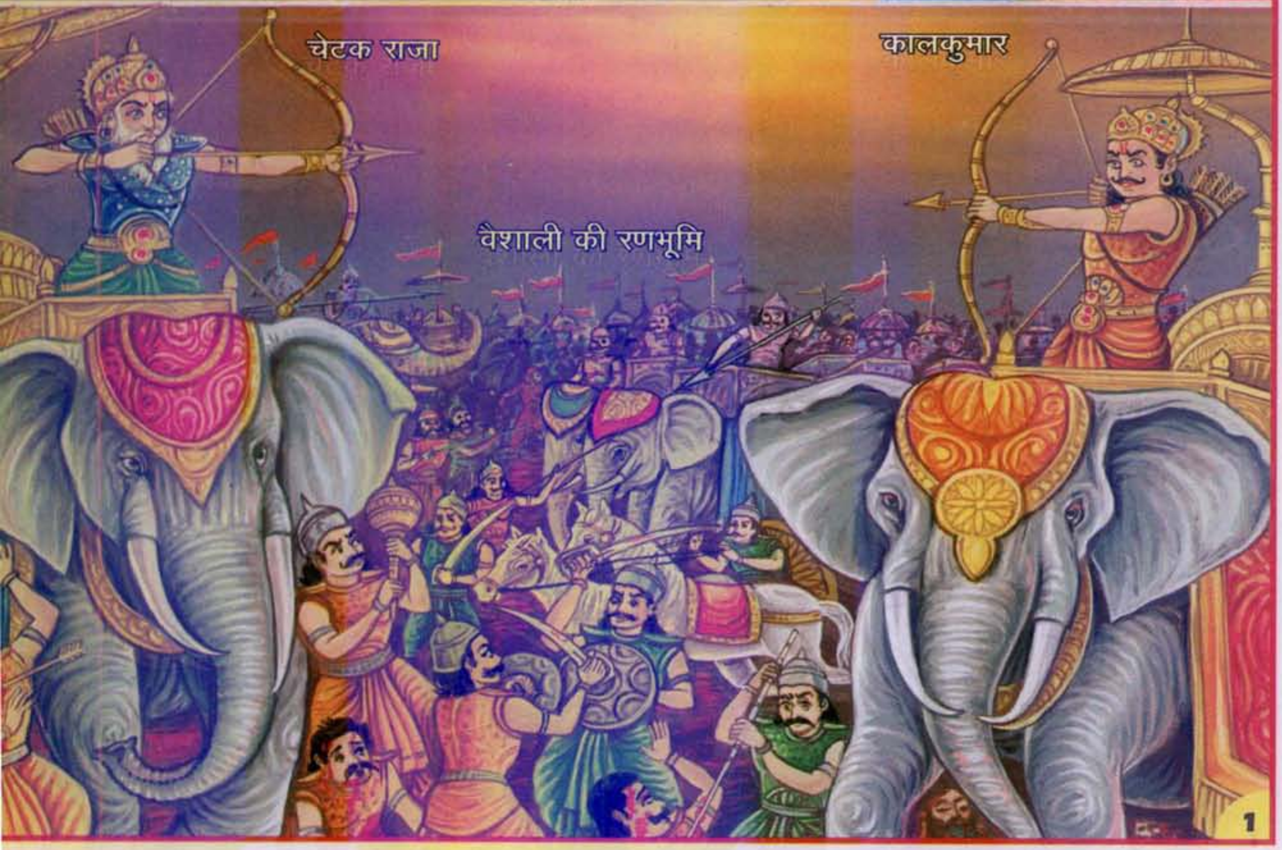

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-१

Illustration No. 1

काली रानी का प्रश्न

दृश्य–१

चम्पानगरी में पधारने पर श्रेणिक राजा की दसों रानियों ने भगवान महावीर की देशना सुनी। पश्चात् काली रानी पूछती है–भंते ! मेरा पुत्र कालकुमार चेटक राजा के साथ युद्ध करने गया है। क्या मैं उसको जीवित देख सकूँगी ?

दृश्य–२

उत्तर में भगवान बताते हैं–हे काली ! तुम्हारा पुत्र युद्ध भूमि में चेटक राजा के साथ घनघोर युद्ध करता हुआ उसके बाण द्वारा आहत होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया है।

–वर्ग १, अ. १, सूत्र ९

QUEEN KAALI'S QUESTION

SCENE-1

All the ten queens of king Shrenik listened to the sermon of Bhagavan Mahavir when he arrived at Champa city. Then Queen Kaali asked—*"Bhante* ! My son, Kaal Kumar, has gone to fight a battle with king Chetak. Will I be able to see him alive ?"

SCENE-2

Bhagavan replied—"O Kaali ! Fighting a fierce battle with king Chetak, your son was injured by his arrow and has died.

—Sec. I, Ch. 1, Sutra : 9

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने यहाँ स्वयं ही प्रश्न उपस्थित किया है कि साधु को ऐसी अप्रिय प्रज्ञापनी भाषा बोलना वर्जित है, तब फिर भगवान ने यह कथन क्यों किया ? इसका समाधान करते हुए आचार्यश्री लिखते हैं–"यह आगम–विहारी सर्वज्ञ का कथन है, सर्वज्ञ उस भाषा के परिणाम आदि को भली प्रकार जानते हैं, उन्होंने जाना कि यह घटना ही कालीदेवी के वैराग्य का कारण बनेगी और वह दीक्षा लेकर आत्म–कल्याण करेगी। अतः इसमें कोई दोषापत्ति नहीं है।

Elaboration—At this point Acharya Shri Atmaram ji M. has raised a question. The use of such hurtful language and expression is forbidden. Why then *Bhagavan* uttered such words ? He himself provides an explanation—"This is a statement by an *Agam*-knowing omniscient who is well aware of the consequences of such language and expression. He knew that this incident was going to be the cause of Kaali Devi's detachment and would inspire her to get initiated to pursue spiritual beatitude. Thus it does not involve any transgression.

काली रानी को पुत्र–शोक

१०. तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म महया पुत्तसोएणं अप्फुन्ना समाणी परसुनियत्ता विव चम्पगलया धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिया।

तए णं सा काली देवी मुहुत्तंतरेण आसत्था समाणी उट्ठाए उट्ठित्ता समणं भगवं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"एवमेयं भंते, तहमेयं भंते, अवितहमेयं भंते, असंदिद्धमेयं भंते, सच्चे णं भंते ! एसमट्ठे. जहेयं तुब्भे वयह" त्ति कट्टु समणं भगवं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ दुरूहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भया तामेव दिसिं पडिगया।

१०. श्रमण भगवान महावीर के मुख से यह वृत्तान्त सुना तो वह कालीदेवी घोर पुत्र–शोक से उद्विग्न हो गई। कुल्हाड़ी से कटी हुई चम्पकलता के समान पछाड़ खाकर धड़ाम से उसका सम्पूर्ण शरीर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

कुछ समय के पश्चात् (दासियों आदि द्वारा उपचार करने पर) जब कालीदेवी कुछ आश्वस्त–स्वस्थ–सी हुई, तब खड़ी हुई और खड़ी होकर उसने भगवान को वन्दन–नमस्कार किया। वन्दना–नमस्कार करके इस प्रकार कहा–"भगवन् ! आप जैसा कहते हैं वह इसी प्रकार है, भगवन् ! ऐसा ही है, भगवन् ! आपका कथन बिलकुल सत्य है, भगवन् ! आपका वचन असंदिग्ध है, सत्य है। यह बात ऐसी ही है, जैसी आपने बतलाई है।" ऐसा कहकर उसने श्रमण भगवान को पुनः वन्दना–नमस्कार किया। वंदन–नमस्कार करके उसी धार्मिक रथ पर आरूढ़ होकर, जिस दिशा से आई थी वापस उसी दिशा में चली गई।

GRIEF OF QUEEN KAALI

10. Hearing about this incident from Shraman Bhagavan Mahavir, Kaali Devi was struck with the grief of loss of her son. She fell and her whole body struck the ground like a *Champak* creeper cut with an axe.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

After some time (on being nursed by her maids) when she regained her composure, she got up and paid homage to *Bhagavan*. After paying homage she uttered—"*Bhante* ! It is, indeed, so ! So is the reality, *Bhagavan* !, *Prabho* ! It is the truth !, *Bhagavan* ! It is beyond any doubt, *Bhante* ! It is exactly as you say !" With these words she once again paid homage and obeisance to *Bhagavan*. After that she rode her religious chariot and went in the direction she had come from.

कालकुमार के विषय में गौतम की जिज्ञासा

११. (क) "भंते" त्ति भगवं गोयमे (जाव) वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"काले णं भंते ! कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव रह–मुसलं संगामं संगामेमाणे चेडएणं रन्ना एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने ?"

"गोयमा" इ समणे भगवं गोयमं एवं वयासी–"एवं खलु, गोयमा ! काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरगे दससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।"

"काले णं भंते ! कुमारे केरिसएहिं आरंभेहिं केरिसएहिं समारंभेहिं केरिसएहिं आरंभ–समारंभेहिं केरिसएहिं भोगेहिं, केरिसएहिं संभोगेहिं, केरिसएहिं भोगसंभोगेहिं केरिसएण वा असुभकडकम्मपब्भारेणं कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए जाव नेरइयत्ताए उववन्ने ?"

११. (क) उस समय भगवान गौतम श्रमण भगवान महावीर के समीप आये और "भंते !" इस प्रकार सम्बोधन करते हुए उन्होंने वन्दना–नमस्कार किया। वन्दना–नमस्कार करके अपनी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए इस प्रकार निवेदन किया–"भगवन् ! तीन हजार हाथियों आदि सेना के साथ जो कालकुमार रथ–मूसल संग्राम करते हुए चेटक राजा के बाण के एक ही प्रहार से रक्तरंजित हो, निष्प्राण होकर मृत्यु को प्राप्त हुआ है, वह मृत्यु प्राप्त कर कहाँ गया है ? कहाँ उत्पन्न हुआ है ?"

भगवान ने गौतम स्वामी से कहा–"गौतम ! तीन हजार हाथियों आदि की सेना के साथ युद्ध में प्रवृत्त वह कालकुमार जीवनरहित होकर काल करके चौथी पंकप्रभा पृथ्वी के हेमाभ नरक में दस सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में नारक रूप में उत्पन्न हुआ है।"

गौतम ने पुनः पूछा–"भंते ! किस प्रकार के भोगों–(शब्दादि विषयों का सेवन), संभोगों–(तीव्र आसक्तिपूर्वक विषय-सेवन), भोग–संभोगों को भोगने से, कैसे–कैसे आरम्भों और आरम्भ–समारम्भों के करने से तथा कैसे अशुभ कर्मों के भार से मरण समय में मरण प्राप्त करके वह कालकुमार चौथी पंकप्रभा पृथ्वी में नैरयिक रूप से उत्पन्न हुआ है ?"

GAUTAM'S CURIOSITY ABOUT KAAL KUMAR

11. (a) At that time Bhagavan Gautam approached Shraman Bhagavan Mahavir and addressing him as '*Bhante* !', paid his homage and obeisance.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

After greeting thus and conveying his curiosity he said—"*Bhante* ! While fighting the *Rath-musal* battle along with three thousand elephants (etc.), Kaal Kumar has met his death after being fatally wounded and getting drenched in blood by just one shot of arrow by King Chetak. Where has he gone after death ? Where has he reincarnated ?"

Bhagavan replied to Gautam Swami—"Gautam ! Going to war with three thousand elephants, that Kaal Kumar has reincarnated after his death in the *Hemabh Narak* (name of a specific area in the infernal world) of the *Pankaprabha Prithvi* (the fourth hell) as a *naarak* (infernal being) among *nairayiks* (infernal beings) with a life span of ten *Sagaropam* (a metaphoric unit of time)."

Gautam asked further—"*Bhante* ! After indulging in what activities (related to sense organs of hearing etc.), enjoyments (related to intense infatuation), and activities-enjoyments; after committing what violence, sinful deeds, and violence-sins; and under the weight of what bad *karmas* at the time of death; Kaal Kumar, after death, has incarnated as a *nairayik* in the *Pankaprabha Prithvi* (the fourth hell) ?

पूर्व वृत्तान्त

११. (ख) एवं खलु, गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणि नामं राया होत्था, महया। तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदा नामं देवी होत्था, सोमाला. (जाव) विहरइ। तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था, सोमाले. (जाव) सुरूवे, सामदामभेयदण्ड. जहा चित्ता, (जाव) रज्जधुराए चिंतए यावि होत्था।

तस्स णं सेणियस्स रन्नो चेल्लणा नाम देवी होत्था, सोमाला. (जाव) विहरइ।

तए णं सा चेल्लणा देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसयंसि वासघरंसि जाव सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा, जहा पभावई, (जाव) सुमिणपाढगा पडिविसज्जिया, (जाव) चेल्लणा से वयणं पडिच्छित्ता जेणेव सए भवणे तेणेव अणुपविट्ठा।

११. (ख) (गौतम स्वामी के उक्त प्रश्न के उत्तर में भगवान ने रथ-मूसल संग्राम के कारणों पर प्रकाश डालते हुए बताया।)

गौतम ! उसका कारण इस प्रकार है-उस काल और उस समय में (जब यह घटना हुई) राजगृह नामक नगर था। वह वैभव से सम्पन्न, शत्रुओं के भय से रहित और धन-धान्यादि की समृद्धि से युक्त था। उस राजगृह नगर में हिमवान् शिखर के सदृश महान् प्रतापी श्रेणिक राजा राज्य करता था। श्रेणिक राजा की अत्यन्त सुन्दर व सुकुमाल नन्दा नाम की रानी थी, जो सब प्रकार के सुखों का उपभोग करती हुई समय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यतीत करती थी। उस श्रेणिक राजा का पुत्र एवं नन्दा रानी का आत्मज अभय नामक राजकुमार था, जो सुकुमाल, सुरूप तथा साम, दाम, भेद और दण्ड की राजनीति में चित्त सारथि के समान निष्णात यावत् राज्यधुरा का वाहक-शासन का हितचिन्तक, चतुर संचालक था।

श्रेणिक राजा की चेलना नाम की एक दूसरी रानी थी। वह सुकुमाल हाथ-पैर वाली थी इत्यादि सांसारिक सुखों का भोग करती सुखपूर्वक रहती थी।

किसी समय चेलना रानी, शयनगृह में चिन्ता आदि से मुक्त हुई सुख-शय्या पर सोई थी। उस समय चेलनादेवी प्रभावतीदेवी के समान स्वप्न में सिंह को देखकर जाग्रत हुई। पश्चात् स्वप्न-पाठकों को आमंत्रित करके राजा ने उसका फल पूछा। स्वप्न-पाठकों ने स्वप्न का फल बताया। फिर उनको सम्मानपूर्वक विदा किया। पश्चात् चेलनादेवी उन स्वप्न-पाठकों के वचनों को सहर्ष स्वीकार करके अपने निवास-भवन के अन्दर चली गई। (यह चेलना रानी के गर्भवती होने की सूचना है।)

TELLING THE PAST

11. (b) (In reply to this question of Gautam Swami, *Bhagavan* explained the causes of the *Rath-musal* battle.)

Gautam ! The reason for that is as follows—

During that period of time (when this incident occured) there was a city called Rajagriha. It was endowed with wealth, grains, glory, prosperity, and grandeur. In that Rajagriha city ruled King Shrenik who was as majestic as the peak of the Himavan mountain (the Himalayas). The consort of King Shrenik was queen Nanda, who was extremely delicate and beautiful (... and so on up to...) and enjoyed life. The son of king Shrenik and queen Nanda was prince Abhaya Kumar. He was delicate and handsome. He was as accomplished as the renowned Chitt Charioteer in the four prongs of politics, namely *saam* (incantation), *daam* (bribery), *bhed*, (guile), and *dand* (threat)... and so on up to... He held the reigns of the state and was its well-wisher and astute governor.

King Shrenik had another queen named Chelana. She was extremely delicate and beautiful (... and so on up to...) and enjoyed life.

Once, free of all worries, queen Chelana was sleeping in a comfortable bed in her bedroom. Some time during the night queen Chelana, like queen Prabhavati, saw a lion in her dream and woke up. Later, the king called dream interpreters and asked for the meaning of the dream. After they told the meaning of the dream they were greated with due honour. Accepting the words of the augurs happily, Queen Chelana returned to her quarters. (This conveys that Queen Chelana had become pregnant.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–श्रेणिक राजा के साथ नंदा का विवाह, अभयकुमार का जन्म तथा मंत्रीपद आदि का समस्त वर्णन परिशिष्ट में दिया गया है। चित्त सारथि का वर्णन रायपसेणियसूत्र, सूत्र २०६ पर देखना चाहिए। **जहा पभावई**–प्रभावतीदेवी के समान सिंह–स्वप्न देखना व अन्य वर्णन महाबलकुमार के वर्णन भगवतीसूत्र, शतक ११, उद्देशक ११ के समान यहाँ समझने की सूचना है। यहाँ कालकुमार के नरक–गमन के मुख्य रूप में तीन कारण सूचित किये हैं–(१) भोगों की तीव्र आसक्ति, (२) महारंभ, महापरिग्रह का सेवन एवं (३) अशुभ पापाचरण।

Elaboration—Detailed description of the marriage of King Shrenik with Nanda, birth of Abhaya Kumar, his appointment as a minister and other incidents are included in the appendix. Details about Chitt Charioteer are available in *Rayapaseniya Sutra*, aphorism-206. The dream sequence of seeing a lion and other information is like the story of Mahabal Kumar in *Bhagavati Sutra*, Shatak 11, Uddeshak 11. Here mainly three reasons have been given for Kaal Kumar's passage to hell—extreme infatuation for mundane pleasures, deep involvement in extreme sins, extreme covetousness, including evil conduct.

चेलना का दोहद

१२. (क) तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइ तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए–"धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, (जाव) जम्मजीवियफले जाओ णं सेणियस्स रन्नो उयरवली–मंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च (जाव) पसन्नं च आसाएमाणीओ जाव विसाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ परिभाएमाणीओ दोहलं पविणेन्ति।"

तए णं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीण–विमण–वयणा पंडुइयमुही ओमंथिय–नयण–वयणकमला जहोचियं पुप्फवत्थ–गंधमल्लालंकारं अपरिभुंजमाणी करतलमलियव्व कमलमाला ओहयमणसंकप्पा (जाव) झियाइ।

१२. (क) तत्पश्चात् गर्भ के तीन मास पूरे होने पर चेलनादेवी को इस प्रकार का दोहद–(गर्भवती माता का मनोरथ) उत्पन्न हुआ–"सचमुच वे माताएँ धन्य हैं, पुण्यशालिनी हैं, उन्होंने जीवन का सुफल प्राप्त किया है जो अपने पति (राजा श्रेणिक) के उदर माँस को शूलों पर सेककर, तलकर, भूनकर तथा सुरा (शराब), मधु, मेरक, मद्य, सीधु और प्रसन्ना नामक मदिराओं का आस्वादन तथा उपभोग करती हुई और अपनी सहेलियों को आपस में बाँटकर खाती हुई अपने दोहद को पूर्ण करती हैं।

किन्तु इस अयोग्य एवं अनिष्ट दोहद के पूर्ण न होने के कारण चेलनादेवी (मानसिक संताप के कारण) सूखी–सी हो गई, भूख से पीड़ित–सी हो गई, दुर्बल हो गई, रुग्ण और वृद्ध जैसे शरीर वाली हो गई, निस्तेज और दीन, उदास जैसी हो गई, उसका मुख–कमल फीका पड़ गया। आँखें और मुख नीचा किये रहने लगीं। यथोचित पुष्प, वस्त्र, गन्ध, माला और आभूषण का उपभोग नहीं करती हुई, हथेलियों से मसली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुई कमलों की माला जैसी मुरझाई हुई, मनोरथ पूर्ण न होने से आहत–सी, चिन्ता–शोक–सागर में डूबी हुई–सी, हथेली पर मुख को टिकाकर आर्त्तध्यान में डूबी रहने लगी।

CHELANA'S DOHAD

12. (a) On completion of three months of pregnancy Queen Chelana had a *dohad* (desire of a pregnant mother)—"Blessed, fortunate, and contented are those mothers who brown, fry, and roast on stick the meat from the belly of their husbands (Shrenik in this case) and enjoy tasting and eating and sharing with their friends with a variety of wines, namely *sura, madhu, merak, madya, seedhu,* and *prasanna*. And thus fulfill their dohad (desires of a pregnant mother)."

As this base and hurtful *dohad* (desires of a pregnant mother) could not be fulfilled, Queen Chelana was in a state of mental agony. She became anaemic, emaciated, and weak like a famished person. Signs of aging appeared on her body. She lost the natural freshness and glow, and the healthy pink of her face was replaced by a sick gloom. In this sad state she sat gazing at the earth. She became apathetic to any and all sorts of cosmetics and adornments including flowers, perfumes, garlands, and ornaments. Her face and body lost the natural freshness and glow, like a crushed garland of Champa flowers. Hurt due to her unfulfilled desire, she plunged into the sea of grief and misery. Sitting with chin placed in her palm she was overwhelmed by deep melancholy.

१२. (ख) तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अंगपडियारियाओ चेल्लणं देविं सुक्कं भुक्खं (जाव) झियायमाणिं पासंति पासित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सेणियं रायं एवं वयासी–''एवं खलु सामी ! चेल्लणा देवी, न याणमो केणइ कारणेणं सुक्का भुक्खा जाव झियाइ।''

तए णं सेणिए राया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता चेल्लणं देविं सुक्कं भुक्खं (जाव) झियायमाणिं पासित्ता एवं वयासी–''किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! सुक्का भुक्खा जाव झियासि ?''

तए णं सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रन्नो एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणाइ, तुसिणिया संचिट्ठइ।

तए णं से सेणिए राया चेल्लणं देविं दोच्चं पि तच्चंपि एवं वयासी–''किं णं अहं देवाणुप्पिए एयमट्ठं नो अरिहे सवणयाए, जं णं तुमं एयमट्ठं रहस्सीकरेसि ?''

१२. (ख) तब चेलनादेवी की अंगपरिचारिकाओं (सेवा में नियुक्त दासियों) ने चेलनादेवी को सूखी–सी, भूख से ग्रस्त–सी यावत् चिन्तालीन देखा। देखकर वे श्रेणिक राजा के पास पहुँचीं। दोनों हाथ जोड़कर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अंजलि करके श्रेणिक राजा से इस प्रकार निवेदन किया–"स्वामिन् ! न मालूम किस कारण से महारानी चेलनादेवी क्षीण काय–मलिन–मुख जैसी होकर यावत् आर्त्तध्यान में डूबी रहती हैं।"

श्रेणिक राजा उन अंग–परिचारिकाओं की इस बात को सुनकर और समझकर आश्चर्यचकित हुआ, फिर आकुल–व्याकुल होता हुआ, जहाँ चेलनादेवी थी, वहाँ आया। चेलनादेवी को सूखी–सी, भूख से पीड़ित जैसी, चिन्ता, शोक में डूबी हुई देखकर इस प्रकार बोला–"देवानुप्रिये ! तुम क्यों क्षीण शरीर, भूखी–सी यावत् चिन्ताग्रस्त हो रही हो ?"

किन्तु चेलनादेवी ने श्रेणिक राजा के इस प्रश्न को सुना–अनुसना कर दिया, आदर नहीं दिया और वह चुपचाप बैठी रही।

तब श्रेणिक राजा ने पुनः दूसरी बार और फिर तीसरी बार भी यही प्रश्न चेलनादेवी से पूछा और कहा–"देवानुप्रिये ! क्या मैं तुम्हारे मन के दुःख को सुनने योग्य नहीं हूँ जो तुम मुझसे छिपा रही हो ?"

12. (b) Observing the dull, emaciated, and gloomy appearance of Queen Chelana her personal maids and attendants went to King Shrenik. Formally greeting him by placing their joined palms on their foreheads they said, "Sire ! For some unknown reason today Queen Chelana is in an emaciated state of body and a gloomy state of mind."

Hearing this news from the maids King Shrenik was surprised. He became disturbed and worried. He immediately rushed to Queen Chelana. Seeing Queen Chelana in her emaciated state of body and gloomy state of mind, he asked, "O beloved of gods ! Why have you become so weak and sad ?

Queen Chelana remained silent giving no heed to the inquiry by the king.

King Shrenik repeated the question again but in vain. Third time also the king asked the same question adding—"O beloved of gods ! Am I not fit to be your confidant ? Is it the reason why you are not revealing the cause of your sorrow to me ?"

१२. (ग) तए णं सा चेल्लणा देवी सेणिएणं रन्ना दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ता समाणी सेणियं रायं एवं वयासी–"नत्थि णं सामी ! से केइ अट्ठे, जस्स णं तुब्भे अणरिहे सवणयाए, नो चेव णं इमस्स अट्ठस्स सवणयाए। एवं खलु सामी ! ममं तस्स ओरालस्स (जाव) महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए 'धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, जाओ णं तुब्भं उयरवलि–मंसेहिं सोल्लहएहिं य (जाव) दोहलं विणेंति।' तए णं अहं, सामी ! तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा जाव झियामि।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. (ग) इस तरह राजा श्रेणिक द्वारा दूसरी बार, तीसरी बार पूछने पर चेलनादेवी ने इस प्रकार कहा–"स्वामिन् ! ऐसी तो कोई भी बात नहीं है, जिसे आप सुनने के योग्य न हों और न इस बात को सुनने के लिए ही आप अयोग्य हैं। परन्तु यह बात आपके सुनने योग्य नहीं है क्योंकि स्वामिन् ! सिंह का महास्वप्न देखने के तीन मास पूर्ण होने पर मुझे इस प्रकार का यह दोहद उत्पन्न हुआ है कि 'वे माताएँ धन्य हैं जो अपने पति (आप) के उदर माँस को शूलों पर सेककर यावत् माँस तथा मदिरा का सेवन करती हुई अपने दोहद को पूर्ण करती हैं।' किन्तु स्वामिन् ! उस दोहद को पूर्ण न कर सकने के कारण मैं सूखती जा रही हूँ, भूखी रह रही हूँ यावत् चिन्तित हो रही हूँ।"

12. (c) After being asked twice and thrice by King Shrenik, Queen Chelana broke her silence—"My Lord ! There is nothing that you are not fit to hear. Even this one you are not unfit to hear. In fact, it is this one that is not worth your attention. This is because, my lord ! almost three months after I saw the great dream, I got this *dohad* (desires of a pregnant mother)—'Blessed, fortunate, and contented are those mothers who brown, fry, and roast on stick the meat from the belly of their husbands... and so on up to... eating with a variety of wines. And thus fulfill their *dohad* (desires of a pregnant mother).' As this *dohad* (desires of a pregnant mother) cannot be fulfilled I am getting emaciated, famished and gloomy."

विवेचन–इस सूत्र का विवेचन करते हुए आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज लिखते हैं–"इस घटना से अनेक प्रेरक व आदर्श बातें सूचित होती हैं–(१) पत्नी के प्रति पति का कर्त्तव्य, (२) पति–पत्नी के बीच कैसी भी बात हो, दुराव–छिपाव नहीं रहना चाहिए, (३) इससे यह भी ध्वनित होता है कि रानी चेलना माँस–भक्षण आदि कतई नहीं करना चाहती थी, परन्तु गर्भ के प्रभाव से उसके मन में जो घृणित इच्छा उत्पन्न हुई उससे वह लज्जित तथा दुःखित थी।"

Elaboration—Elaborating this aphorism Acharya Shri Atmaram ji M. writes—"This incident presents several inspiring and ideal things—(1) Duties of a wife towards her husband. (2) Irrespective of the kind of issue, there should be no mistrust or secrets between husband and wife. (3) This also indicates that Queen Chelana was averse to meat eating and was ashamed and sorry for her detestable craving caused by her state of pregnancy.

श्रेणिक का आश्वासन

१३. तए णं से सेणिए राया चेल्लणं देविं एवं वयासी–"मा णं तुमं, देवाणुप्पिए ! आहय (जाव) झियाहि। अहं णं तहा जइस्सामि जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ" त्ति कट्टु चेल्लणं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं मिय–महुर–सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं समासासेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-२

Illustration No. 2

चिन्ताग्रस्त चेलना

दृश्य–१

गर्भ के तीसरे महीने रानी चेलना को एक अनिष्टकारी दोहद उत्पन्न हुआ कि–"मैं अपने पति के उदर का माँस तल–भून कर खाऊँ और अनेक प्रकार की मदिरा पीकर इच्छा पूर्ति करूँ।"

इस अनिष्ट–दोहद पर विचार करके तथा पूर्ण नहीं होने से वह उदास–सी रहने लगी। धीरे–धीरे दुर्बल हो गई। रानी को चिन्ता–शोक में डूबी देखकर दासी उसे बार–बार पूछती है, परन्तु रानी मुँह से कुछ नहीं बताती।

दृश्य–२

दासी ने राजा श्रेणिक से विनती की–"महाराज ! पता नहीं क्या बात है, आजकल महारानी बहुत ही दुःखी, उदास व शोक में डूबी–सी रहती है।" दासी की बात सुनते ही राजा श्रेणिक चिन्तातुर हो गये। सोचते हैं–ऐसी क्या बात है, रानी को क्या कष्ट है ?

दृश्य–३

राजा शीघ्र ही महलों में आया। रानी से बार–बार पूछने पर भी वह उदास बैठी आँसू बहाती रही, परन्तु बोली नहीं ! राजा ने अपनी सौगन्ध दी–'महारानी, जो भी दुःख है, मुझे कहो ...... !

दृश्य–४

आँसू बहाती रानी कहती है–'जिस दिन मैंने सिंह का स्वप्न देखा, शिशु गर्भ में आया, उसके तीन माह पश्चात् ऐसा अनिष्टकारी दोहद उत्पन्न हुआ है, जिसे न तो मैं अपने मुँह से कुछ कह सकती हूँ और न ही पूर्ण करने का कोई उपाय सूझता है ?

–वर्ग १, अ. १, सूत्र १२

WORRIED CHELANA

SCENE-1

On completion of three months of pregnancy Queen Chelana had a *dohad*—"I should fry and roast meat from the belly of my husband and enjoy a variety of wines. And thus fulfill my *dohad*."

As this ominous *dohad* could not be fulfilled, she was in a state of mental agony. She became weak. Observing the gloomy appearance of the queen, her personal maid asks for the cause again and again. But the queen does not answer.

SCENE-2

The maid informs king Shrenik—"Sire ! For some unknown reason Queen Chelana is in very sad and gloomy today." Hearing this news from the maid King Shrenik was disturbed. He thought—"What is the matter, what ails the queen ?"

SCENE-3

He rushed into the palace. Even on being asked repeatedly the queen remained silent and continued to shed tears. The king emphatically implored—"Queen ! Please tell me whatever ails you..."

SCENE-4

With flowing tears the queen said—"Almost three months after I saw a lion in my dream and was pregnant, I had such horrible *dohad*. I neither find words to express it nor means to fulfill it."

—Sec. I, Ch. 1, Sutra : 12

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समासासित्ता चेल्लणाए देवीए अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव सीहासणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं आएहिं उवाएहि य, उप्पत्तियाए य वेणइयाए य कम्मियाए य पारिणामियाए य परिणामेमाणे परिणामेमाणे तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा ठिइं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे (जाव) झियाइ।

१३. तब श्रेणिक राजा ने चेलनादेवी की उक्त बात सुनकर आश्वासन देते हुए कहा–"देवानुप्रिये ! तुम अपने मन को मारकर चिंता मत करो। निश्चित ही मैं कोई ऐसा प्रयत्न (उपाय) करूँगा जिससे तुम्हारे दोहद की पूर्ति हो सकेगी।" ऐसा कहकर चेलनादेवी को इष्ट पूर्ति करने वाली (इच्छानुरूप), प्रिय-प्यारी, मन को भाने वाली, मन के अनुकूल, उदार भावनाओं से युक्त कल्याणप्रद (सुखदायी), धन्य कहने योग्य मंगलकारी, मृदु-मधुर आशा जगाने वाली वाणी से आश्वस्त किया।

तत्पश्चात् वह चेलनादेवी के पास से वापस लौटा। अन्तःपुर से बाहर जहाँ बाह्य सभाभवन था, उसमें जहाँ सिंहासन रखा था, वहाँ आया। आकर पूर्व की ओर मुख करके उस उत्तम सिंहासन पर बैठ गया। इस दोहद की संपूर्ति के लिए अनेक प्रकार के साधनों व उपायों से औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी और पारिणामिकी–इन चार प्रकार की बुद्धियों से अनेकविध विचार करते हुए किसी भी प्रकार के साधन, प्रयोग व व्यवस्था आदि न सूझने पर मन में दुःखी होता हुआ उत्साहहीन एवं चिन्ताग्रस्त हो गया।

ASSURANCE BY SHRENIK

13. Hearing the aforesaid words from Queen Chelana, King Shrenik gave her assurance—"Beloved of gods ! Don't torture yourself by suppressing your desire. Rest assured that I will find a way to fulfill your *dohad* (desires of a pregnant mother)." Thus he assured Queen Chelana in sympathetic, adorable, appealing, generous, beatific, commendable, pleasing, and inspiring voice and words.

After that he left Queen Chelana. Leaving his palace, he entered the assembly hall and sat on his throne facing east. He started contemplating about the possible ways and means to fulfill this *dohad* (desires of a pregnant mother). He applied his four types of wisdom (*autpattiki* or instantaneous one; *vainayiki* or acquired with modesty; *kaarmiki* or one gained through experience; and *paarinamiki* or enriched through imagination, logic, and age) and considered a variety of ways to achieve the desired goal. When he could not come up with any means, methods, or arrangements for some solution in spite of all his efforts, he became frustrated and worried.

अभयकुमार का आगमन : दोहद-पूर्ति का उपाय

१४. (क) इमं च णं अभए कुमारे ण्हाए (जाव) सरीरे; सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छइ। सेणियं रायं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओहय. (जाव) झियायमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–''अन्नया णं, ताओ ! तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ (जाव) हियया भवह, कि णं, ताओ ! अज्ज तुब्भे ओहय. (जाव) झियाह ? तं जइ णं अहं, ताओ एयमट्ठस्स अरिहे सवणयाए, तो णं तुब्भे ममं एयमट्ठं जहाभूयमवितहं असंदिद्धं परिकहेह, जा णं अहं तस्स अट्ठस्स अंतगमणं करेमि।''

तए णं से सेणिए राया अभयं कुमारं एवं वयासी–''नत्थि णं, पुत्ता ! से केइ अट्ठे, जस्स णं तुमं अणरिहे सवणयाए। एवं खलु, पुत्ता ! तव चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स ओरालस्स (जाव) महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं, (जाव) जाओ णं मम उयरवलीमंसेहि सोल्लेहि य (जाव) दोहलं विणेंति।

तए णं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का (जाव) झियाइ।

तए णं अहं पुत्ता ! तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं आएहिं य (जाव) ठिइं वा अविंदमाणे ओहय. (जाव) झियामि।''

१४. (क) उस समय अभयकुमार स्नान करके, शरीर पर सुन्दर वस्त्र-आभूषण धारण करके अपने आवासगृह से बाहर निकला। निकलकर जहाँ बाह्य उपस्थानशाला (राजसभा) थी और उसमें जहाँ श्रेणिक राजा था, वहाँ आया। उसने श्रेणिक राजा को चिन्ताग्रस्त जैसा देखा, यह देखकर बोला–''तात ! पहले जब कभी आप मुझे आता हुआ देखते थे तो हर्षित एवं प्रसन्न हो जाते थे। किन्तु आज ऐसी क्या बात है जो आप उदास यावत् चिन्ता में डूबे हुए हैं ? तात ! यदि आप मुझे चिन्ता का कारण बताने व सुनाने के योग्य समझते हों तो, वह कारण यथार्थ रूप में बिना किसी संकोच-संदेह के कहिए, जिससे मैं उस कारण के अन्त तक उसका समाधान करने का उपाय कर सकूँ।''

तब श्रेणिक राजा ने अभयकुमार से कहा–''पुत्र ! ऐसी तो कोई बात नहीं है जो तुम्हारे सुनने योग्य नहीं हो, किन्तु बात यह है पुत्र ! तुम्हारी विमाता चेलनादेवी को उस महान् सिंह-स्वप्न को देखे तीन मास बीतने पर ऐसा दोहद उत्पन्न हुआ है कि 'जो माताएँ मेरे (अपने पति के) हृदय के माँस को सलाइयों पर सेककर, तल-भूनकर उस माँस से अपने दोहद को पूर्ण करती हैं वे धन्य हैं, आदि।'

परन्तु चेलनादेवी उस दोहद के पूर्ण न हो सकने के कारण क्षीण होती हुई चिन्तित रहती हैं। इसलिए पुत्र ! उस दोहद की सम्पूर्ति के निमित्त साधनों, उपायों व व्यवस्था को समझ नहीं सकने के कारण मैं उत्साहहीन होकर चिन्तित हो रहा हूँ।''

ARRIVAL OF ABHAYA KUMAR : THE SOLUTION

14. (a) At that time Abhaya Kumar, getting ready after taking his bath and donning a beautiful dress and ornaments, left his palace. He came to the outer court (the assembly) where King Shrenik was sitting. When he found the king despondent he inquired—"Father ! In the past when you saw me coming you used to receive me affectionately (etc.). But what is the matter that you are sad and worried today ? Father ! If you find me worthy

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

of knowing the cause of your worry, please tell me. Without any hesitation, doubt, or reservation kindly reveal the truth candidly so that I may seek the final solution to your problem."

King Shrenik replied—"Son ! There is nothing that cannot be told to you. Three months have passed since your step-mother, Queen Chelana saw that lion in her dream. She now has a *dohad* (desires of a pregnant mother)—'Blessed, fortunate, and contented are those mothers who brown, fry, and roast on stick the meat from the belly of their husbands. (etc.)'

"As this *dohad* (desires of a pregnant mother) cannot be fulfilled, Queen Chelana is getting weak and worried. Son ! That is why, being unable to find ways and means to fulfill that *dohad* (desires of a pregnant mother), I am disconcerted and worried."

१४. (ख) तए णं से अभए कुमारे सेणियं रायं एवं वयासी–''मा णं, ताओ तुब्भे ओहय. (जाव) झियाह, अहं णं, तहा जत्तिहामि, जहा णं मम चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ'' त्ति कट्टु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं (जाव) वग्गूहिं समासासेइ।

समासासित्ता जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अब्भिन्तरए रहस्सियए ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–''गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! सूणाओ अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च गिण्हह।''

तए णं ते ठाणिज्जा पुरिसा अभएण कुमारेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ (जाव) पडिसुणेत्ता अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिणिक्खमंति। जेणेव सूणा तेणेव उवागच्छंति, अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च गिण्हन्ति, गिण्हित्ता जेणेव अभए कुमारे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल. तं अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च उवणेंति।

१४. (ख) श्रेणिक राजा के मनोभावों को सुनने के बाद अभयकुमार ने इस भाँति कहा–''तात ! आप निरुत्साह यावत् चिन्तित न हों, मैं ऐसा कोई उपाय करूँगा कि जिससे मेरी छोटी माता चेलनादेवी के दोहद की संपूर्ति हो सकेगी।'' इस प्रकार श्रेणिक राजा को प्रिय लगने वाली वाणी से सान्त्वना दी–आश्वस्त किया।

श्रेणिक राजा को आश्वस्त करने के पश्चात् अभयकुमार अपने आवास पर आया। आकर गुप्त रहस्यों के जानकार अपने अत्यन्त विश्वस्त सम्मान योग्य सेवकों को बुलाया और उनसे इस प्रकार कहा–''देवानुप्रियो ! तुम सूनागार–(वध–स्थान या कत्लखाना) में जाकर गीला–ताजा माँस, रुधिर और शोणित से भरी थैली (वस्तिपुटक–पेट का भीतरी भाग, आँतें) लेकर आओ।''

तब वे विश्वासपात्र पुरुष अभयकुमार की इस बात को हर्ष एवं प्रसन्नता के साथ स्वीकार करके वहाँ से निकले। निकलकर जहाँ पशुओं का वध–स्थल था, वहाँ पहुँचे और उन्होंने वहाँ से ताजा, गीला माँस, रक्त से सनी पेट की आँतों की थैली ली। लेकर जहाँ अभयकुमार था, वहाँ आये। आकर दोनों हाथ जोड़कर उस माँस, रक्त एवं वस्तिपुटक को सामने रख दिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

14. (b) When Abhaya Kumar heard about the problem from King Shrenik he assured the king, "Father ! please get rid of your anxiety and do not lose hope. I will do something and shall ensure that my step-mother, Queen Chelana, is able to fulfill her Dohad (desires of a pregnant mother)." Thus he reassured King Shrenik in encouraging words.

After reassuring King Shrenik, Abhaya Kumar returned to his palace. There he called his reliable and senior confidants and said—"Beloved of gods ! Go to an abattoir and get fresh flesh and blood (specifically the belly portion including intestines) filled in a bag."

Those confidants happily accepted Abhaya Kumar's command and left. They came to an abattoir and collected a bag filled with fresh flesh and blood including intestines. They returned to Abhaya Kumar and placed that bag before him.

१४. (ग) तए णं से अभए कुमारे तं अल्लं मंसं रुहिरं कप्पणीकप्पियं करेइ, करेत्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं रहसिगयं सयणिज्जंसि उत्ताणयं निवज्जावेइ, निवज्जावेत्ता सेणियस्स उयरवलीसु तं अल्लं मंसं रुहिरं विरवेइ, विरवेत्ता बत्थिपुडएणं वेढेइ, वेढेत्ता सवंतीकरणेणं करेइ, करेत्ता चेल्लणं देविं उप्पिं पासाए अवलोयणवरगयं ठवावेइ। ठवावेत्ता चेल्लणाए देवीए अहे समक्खं सपडिदिसिं सेणियं रायं सयणिज्जंसि उत्ताणगं निवज्जावेइ। सेणियस्स रन्नो उयरवलिमंसाइं कप्पणिकप्पियाइं करेइ, करेत्ता से य भायणंसि पक्खिवइ। तए णं से सेणिए राया अलियमुच्छियं करेइ, करेत्ता मुहुत्तंतरेणं अन्नमन्नेण सद्धिं संलवमाणे चिट्ठइ।

तए णं से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो उयरवलिमंसाई गिण्हेइ, गिण्हेत्ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणाए देवीए उवणेइ।

तए णं सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रन्नो तेहिं उयरवलिमंसेहिं सोल्लेहिं (जाव) दोहलं विणेइ। तए णं सा चेल्लणा देवी संपुण्णदोहला एवं संमाणियदोहला विच्छिन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ।

१४. (ग) तब अभयकुमार ने उस रक्त और माँस में से थोड़ा भाग लेकर कैंची से काटा। काटकर जहाँ श्रेणिक राजा था, वहाँ आया (श्रेणिक को गुप्त बात व नाटक रचने की योजना समझा दी) और फिर श्रेणिक राजा को एकान्त में शय्या पर चित लिटाया। लिटाकर श्रेणिक राजा के उदर पर उस आर्द्र रक्त–माँस को रख दिया और फिर वस्तिपुटक को लपेट दिया। वह ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे रक्त की धारा बह रही हो और फिर ऊपर के महल के झरोखे में चेलनादेवी को अवलोकन करने के आसन से बैठाया, अर्थात् ऐसे स्थान पर बिठलाया जहाँ से वह इस सम्पूर्ण दृश्य को देख सके। बैठाकर चेलनादेवी के ठीक नीचे सामने की ओर श्रेणिक राजा को शय्या पर चित लिटा दिया। छुरी से श्रेणिक राजा की उदरावली का माँस काटा, काटकर उसे एक बर्तन में रखा। तब श्रेणिक राजा ने झूठ–मूठ मूर्च्छित होने का नाटक किया। कुछ समय के पश्चात् दोनों ही आपस में बातचीत करने लग गये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्पश्चात् अभयकुमार ने श्रेणिक राजा की उदरावली के माँस-खण्डों को लिया, लेकर जहाँ चेलनादेवी थी, वहाँ आया और आकर चेलनादेवी के सामने रख दिया।

तब चेलनादेवी ने श्रेणिक राजा के उस उदरावली के माँस के लोथड़े से अपना दोहद पूर्ण किया। इस प्रकार चेलनादेवी का दोहद सम्पन्न और निवृत्त हो गया अर्थात् उसकी इच्छा पूर्ण हो गई। तब वह अपने गर्भ का सुखपूर्वक वहन करने लगी।

14. (c) Abhaya Kumar cut a portion of the flesh with scissors and came where King Shrenik was sitting. (He explained to King Shrenik the secret plan and his role.) The king was then made to lie down flat on his back on a bed in privacy. The blood soaked flesh was placed on the kings exposed belly covering it with the entrails. It looked as if fresh blood was oozing from the belly. Queen Chelana was asked to sit in a high balcony overlooking the whole scene. The bed with King Shrenik lying flat was brought immediately under the balcony. Portions of King Shrenik's belly (false) were sliced with a knife and placed in a tray. King Shrenik acted as if he had fainted. Some time later they both started talking.

After some time Abhaya Kumar took the tray with slices of flesh from King Shrenik's belly, brought it to Queen Chelana and placed it before her.

Then Queen Chelana fulfilled her *dohad* (desires of a pregnant mother) with slices of flesh from King Shrenik's belly. This way Queen Chelana's *dohad* (desires of a pregnant mother) was fulfilled and she carried her fetus comfortably.

विवेचन-इस सूत्र का विवेचन करते हुए आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने लिखा है-"इससे प्रतीत होता है, उस युग में नारी जाति की इच्छा का पूर्ण सम्मान किया जाता था। विशेषकर गर्भवती महिला के दोहद की पूर्ति करना पुरुष अपना दायित्व समझते थे।

इससे यह भी सूचित होता है कि श्रेणिक राजा के रसोई में माँस नहीं पकता था और रानी आदि सभी इसे घृणित मानते थे। इसीलिए तो अभयकुमार को ऐसा नाटक रचना पड़ा और इस दुष्कृत्य के प्रति चेलना रानी के मन में अत्यन्त ग्लानि तथा पश्चात्ताप का भाव उमड़ा। जिसके प्रायश्चित्त स्वरूप उसने नवजात शिशु को ही ऊकरड़ी पर फिंकवाकर मातृ-वत्सलता व ममता का मोह त्याग दिया।"

Elaboration—Commenting on this aphorism Acharya Shri Atmaram ji M. states—"This indicates that in those days desires of women were duly respected. Specially, fulfillment of the desire of pregnant women was considered to be an essential duty by the men-folk.

"This also indicates that meat was not cooked in King Shrenik's kitchen and every one, including Queen Chelana despised this. That is why Abhaya Kumar had to do this act and Queen Chelana was filled with feelings of

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

remorse and repentance for this misdeed. Suppressing her natural affection and maternal love, she later threw the newborn on a heap of trash as an act of atonement.'

चेलनादेवी की आशंका व आत्म-ग्लानि

१५. तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे (जाव) समुप्पज्जित्था-''जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उयरवलिमंसाणि खाइयाणि, तं सेयं खलु मए एयं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा'', एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणेहि य गब्भपाडणेहि य गब्भगालणेहि य गब्भविद्धंसणेहि य इच्छइ तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा विद्धंसइ वा।

तए णं सा चेल्लणा देवी तं गब्भं जाहे नो संचाएइ बहूहिं गब्भसाडएहिं य जाव गब्भविद्धंसणेहि य साडित्तए वा (जाव) विद्धंसित्तए वा, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणी अकामिया अवसवसा अट्टवसट्टदुहट्टा तं गब्भं परिवहइ।

१५. कुछ समय व्यतीत होने के बाद एक बार चेलनादेवी को मध्य रात्रि में जागते हुए इस प्रकार मानसिक विकल्प (आशंका) उत्पन्न हुआ-'इस बालक ने गर्भ में आते ही पिता के उदर का माँस खाया है, इसलिए इस गर्भ को नष्ट कर देना, गिरा देना, गला देना एवं विध्वस्त कर देना ही मेरे लिए श्रेयस्कर होगा' (क्योंकि जन्म लेकर बड़ा होने पर न जाने यह पिता का या कुल का क्या अनिष्ट करेगा), उसने ऐसा पक्का निर्णय किया। निर्णय करके गर्भ को नष्ट करने वाली, गिराने वाली, गलाने वाली और विध्वस्त करने वाली अनेक औषधियों के द्वारा उस गर्भ को नष्ट करने, गिराने, गलाने और विध्वस्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु वह गर्भ नष्ट नहीं हुआ, न गिरा, न गला और न विध्वस्त ही हुआ।

तदनन्तर जब चेलनादेवी उस गर्भ को नष्ट करने वाली यावत् विध्वस्त करने वाली बहुत-सी औषधियों से नष्ट करने यावत् विध्वस्त करने में सफल नहीं हुई तो श्रान्त, क्लान्त, खिन्न, ग्लानियुक्त और उदास होकर विवशता से बाध्य होकर आर्त्तध्यानग्रस्त होती हुई उस गर्भ का पालन करने लगी।

APPREHENSION AND REMORSE OF QUEEN CHELANA

15. Some days later at midnight when, Queen Chelana was awake she was filled with this apprehension—"The moment this child came to my womb it ate the flesh from his father's belly. Therefore, it would be good for me to destroy, abort, dissolve, and disintegrate this fetus (as otherwise on being born and getting mature he could bring harm to his father and the family). She firmly resolved to do so. She then made all efforts to destroy, abort, dissolve, and disintegrate the fetus by taking a variety of medicines prescribed for that. However, she failed to destroy, abort, dissolve, and disintegrate the fetus.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

When Queen Chelana failed to destroy,... and so on up to... disintegrate the fetus with the help of a variety of medicines, she became tired, exhausted, disappointed, dejected, and sad. Then out of compulsion and in a distressed state of mind, she helplessly carried the fetus.

बालक का जन्म : एकान्त में फेंकना

१६. तए णं सा चेल्लणा देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं (जाव) सोमालं सुरूवं दारगं पयाया।

तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए इमे एयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–'जइ जाव इमेण दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उयरवलिमंसाइं खाइयाइं, तं न नज्जइ णं एस दारए संवड्ढमाणे अम्हं कुलस्स अंतकरे भविस्सइ। तं सेयं खलु अम्हं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावित्तए' एवं संपेहेइ, संपेहित्ता दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–''गच्छह णं तुमं, देवाणुप्पिए, एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि।''

१६. तत्पश्चात् नौ मास पूर्ण होने पर चेलनादेवी ने एक सुकुमार एवं रूपवान् बालक को जन्म दिया।

बालक का प्रसव होने के पश्चात् चेलनादेवी के मन में इस प्रकार आशंका उत्पन्न हुई–'यदि इस बालक ने गर्भ में आते ही पिता के हृदय का माँस खाया है, तो हो सकता है कि यह बालक बड़ा होने पर हमारे कुल का भी अंत करने वाला, कुलघाती निकले। अतएव मेरे लिए यही अच्छा है कि इस बालक को एकान्त उकरड़े (कूड़े–कचरे के ढेर) पर फेंक देना चाहिए।' इस प्रकार का संकल्प–निश्चय किया। निश्चय करके अपनी विश्वासी दासी को बुलाया, बुलाकर उससे कहा–''देवानुप्रिये ! तुम जाओ और इस बालक को एकान्त में उकरड़े पर फेंक आओ।''

BIRTH OF THE CHILD : THROWING IT AWAY

16. After nine months of pregnancy Queen Chelana gave birth to a delicate and beautiful child.

After the delivery Queen Chelana was filled with this apprehension—"The moment this child came to my womb it ate the flesh from his father's belly. Therefore there are chances that on maturing he may end up being the scourge of the family. Therefore, it would be good for me to throw this infant on a heap of trash in isolation. Resolving thus she called a maid of her confidence and said—"Beloved of gods ! Go and throw this infant on a heap of trash in isolation."

श्रेणिक द्वारा भर्त्सना

१७. (क) तए णं सा दासचेडी चेल्लणाए देवीए एवं वुत्ता समाणी करयलं (जाव) कट्टु चेल्लणाए देवीए एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हेत्ता जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तेणं दारगेणं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिएणं समाणेणं सा असोगवणिया उज्जोविया यावि होत्था।

तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए, लद्धट्ठे समाणे, जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झियं पासेइ, पासित्ता आसुरुत्ते (जाव) मिसिमिसेमाणे तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेवेण चेल्लणा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणं देविं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ, आओसित्ता उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छेइ। एवं उद्धंसणाहिं उद्धंसेइ, उद्धंसित्ता एवं वयासी–''किस्स णं तुमं मम पुत्ते एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेसि'' त्ति कट्टु चेल्लणं देविं उच्चावय–सवहसावियं करेइ करेत्ता एवं वयासी–''तुमं णं देवाणुप्पिए एयं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेहि।''

१७. (क) तत्पश्चात् उस विश्वस्त दासी ने चेलनादेवी की यह आज्ञा सुनी, सुनकर दोनों हाथ जोड़े, आज्ञा को विनयपूर्वक स्वीकार किया। स्वीकार करके उस बालक को दोनों हाथों का सम्पुट बनाकर हथेलियों में उठाया। उठाकर अशोकवाटिका में गई और उस बालक को एकान्त में उकरड़े पर फेंक दिया।

उस बालक के एकान्त में उकरड़े पर फेंके जाने पर अशोकवाटिका में प्रकाश ही प्रकाश फैल गया।

राजा श्रेणिक ने जब यह समाचार सुना तो वह शीघ्र अशोकवाटिका में पहुँचा। वहाँ उस बालक को एकान्त में उकरड़े पर पड़ा देखकर क्रोध में लाल हो उठा, यावत् क्रोधाग्नि से जलते हुए दाँतों को मिसमिसाते हुए राजा ने उस बालक को अपनी हथेलियों में ले लिया और जहाँ चेलनादेवी थी, वहाँ आया। आकर चेलनादेवी को आक्रोशयुक्त शब्दों से फटकारा, कठोर वचनों से अपमानित किया और डाँटा। फिर इस प्रकार कहा–''तुमने किसलिए मेरे पुत्र को एकान्त–उकरड़े पर फिंकवाया?'' इस तरह ऊँच–नीच शब्द कहकर चेलनादेवी को सौगंध–शपथ दिलाई और कहा–''देवानुप्रिये ! इस बालक की देखरेख करती हुई इसका पालन–पोषण करो और संवर्धन करो।''

SCOLDING BY KING SHRENIK

17. (a) That reliable maid heard Queen Chelana's instructions and accepted them humbly by joining her palms. She then lifted the child in the cup of her joined palms. She proceeded to the garden and threw the child on a forlorn heap of trash.

When the child was thrown on a forlorn heap of trash the garden was filled with a glow.

When King Shrenik got this news he rushed to the garden. When he saw the child lying on a forlorn heap of trash he turned red with anger. Burning with anger and gnashing his teeth, the king lifted the infant in his palms and came to the place where Queen Chelana was sitting. He scolded and reprimanded Queen Chelana in angry and harsh tone. After that he

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-३

Illustration No. 3

कूणिक-जन्म

दृश्य-१

पुत्र जन्म होने पर चेलना ने अपनी विश्वस्त दासी को कहा-तुम इस नवजात शिशु को कहीं एकान्त शून्य स्थान पर रख आओ।

दासी दुःखी मन से नवजात शिशु को वस्त्र में लपेटकर नगर के बाहर एकान्त कचरे के स्थान (उकरड़ी) पर छोड़ने जाती है।

दृश्य-२

दासी ने शिशु के वस्त्र हटाकर उकरड़ी पर छोड़ दिया। शिशु के पूर्व पुण्यों से उसके चारों ओर प्रकाश पुंज सा बन गया।

दृश्य-३

श्रेणिक राजा स्वयं शिशु को देखने गया। पास ही घूमते मुर्गों ने उसकी एक अंगुली को नोंच लिया था। जिससे उसमें रक्त बहने लगा, पीड़ा से शिशु रो रहा है। राजा ने उसे गोद में उठा लिया।

दृश्य-४

शिशु को महलों में लाकर रानी को उलाहना देते हुए राजा ने अपनी सौगंध दिलाकर कहा-यह हमारा पुत्र है, तुम अच्छी प्रकार इसका पालन-पोषण करो। *-वर्ग १, अ. १, सूत्र १६-१७*

BIRTH OF KUNIK

SCENE-1

After giving birth to a son Chelana tells a reliable maid—"Go and place this newborn at some isolated forlorn place."

The maid sadly wraps the infant in a cloth and leaves to place it on a forlorn heap of trash outside the city.

SCENE-2

The maid unwrapped the infant and left it on the heap of trash. Due to the meritorious *karmas* of the past a glow appeared around the infant and light spread all around.

SCENE-3

King Shrenik went to see the child. A cock roaming nearby pecked the finger of the infant. Blood oozed out and the child cried in pain. The king took the child in his arms.

SCCENE-4

The king brought the child to the queen in the palace. After reprimanding her he made her take an oath and said—"Bring up our son taking due and proper care."

—Sec. I, Ch. 1, Sutra : 16-17

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

said—"Why did you manage to throw my son on a forlorn heap of trash ?" After these contemptuous words he made her take an oath and said—"Beloved of gods ! Bring up this child with due and proper care."

१७. (ख) तए णं सा चेल्लणा देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी लज्जिया विलिया विड्डा करयलपरिग्गहियं सेणियस्स रन्नो विणएणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेइ।

तए णं तस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्जमाणस्स अग्गंगुलिया कुक्कुडपिच्छएण दूमिया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं पूयं च सोणियं च अभिनिस्सवइ। तए णं से दारए वेयणाभिभूए समाणे महया महया सद्देणं आरसइ। तए णं सेणिए राया तस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता तं अग्गंगुलियं आसयंसि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता पूयं च सोणियं च आसएणं आमुसेइ। तए णं से दारए निव्वुए निव्वेयणे तुसिणीए संचिट्ठइ। ताहे वि य णं से दारए वेयणाए अभिभूए समाणे महया महया सद्देणं आरसइ, ताहे वि य णं सेणिए राया जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ तं चेव (जाव) निव्वेयणे तुसिणीए संचिट्ठइ ?

१७. (ख) श्रेणिक राजा के ऊँचे-नीचे कठोर शब्द सुनकर चेलनादेवी (अपने कृत्य पर) लज्जित हुई। प्रताड़ित और अपराधिनी-सी होकर दोनों हाथ जोड़कर श्रेणिक राजा के आदेश को विनयपूर्वक स्वीकार किया और अनुक्रम से उस बालक का लालन-पालन करती हुई उसका संरक्षण करने लगी।

एकान्त उकरड़े पर फेंके जाने के कारण उस बालक की अँगुली का आगे का भाग मुर्गे ने अपनी चोंच से घायल कर दिया था और उससे बार-बार पीव और खून बह रहा था। इस कारण वह बालक तीव्र वेदना से पीड़ित हुआ चीख-चीखकर रोने लगता था। श्रेणिक राजा उस बालक का रोना सुन और समझकर उसके पास आता और उसे गोदी में उठा लेता था। फिर उस अँगुली को मुख में लेता और उस पीव और खून को मुख से चूस लेता (और थूक देता)। ऐसा करने से वह बालक शान्ति का अनुभव कर चुप हो जाता। इस प्रकार जब-जब भी वह बालक वेदना के कारण जोर-जोर से रोने लगता, तब-तब श्रेणिक राजा उस बालक के पास आता, उसे हाथों में लेता और उसी प्रकार चूसता तथा वेदना शान्त हो जाने से वह चुप हो जाता था।

17. (b) Hearing the harsh and contemptuous words from King Shrenik, Queen Chelana was ashamed of her deed. Like a humiliated wrong-doer she joined her palms and accepted King Shrenik's command humbly. She commenced bringing up and protecting the child taking due and proper care.

When the child was thrown on a forlorn heap of trash a cock had pecked the tip of his finger and injured it. Blood and pus were intermittently oozing from the wound. This made the child scream and wail with extreme

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

agony. Hearing the wailing of the child and knowing the cause, King Shrenik used to come near the child and lift him. Then he would take the injured finger in his mouth, suck the blood and pus, and spit it out. This would give relief to the child and he would stop crying. This way whenever the child wailed, King Shrenik came near the child, lifted him, and sucked out the blood and pus. This gave relief to the child and he stopped crying.

१७. (ग) तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो तइए दिवसे चंदसूरदरिसणियं करेंति (जाव) संपत्ते बारसाहेदिवसे अयमेयारूवं गुणणिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति–"जहा णं अम्हं इमस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्जमाणस्स अंगुलिया कुक्कुडपिच्छएणं दूमिया, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं कूणिए!" तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति 'कूणिय' त्ति।

तए णं तस्स कूणियस्स आणुपुव्वेणं ठिइवडियं च, जहा मेहस्स (जाव) उप्पिं पासायवरगए विहरइ। अट्ठओ दाओ।

१७. (ग) तत्पश्चात् माता-पिता ने अपने नवजात पुत्र को तीसरे दिन चन्द्र, सूर्य के दर्शन करवाये, यावत् बारहवें दिन इस प्रकार का गुण-निष्पन्न नामकरण किया-"क्योंकि हमारे इस बालक को एकान्त उकरड़े पर फेंके जाने से अँगुली का ऊपरी भाग मुर्गे की चोंच से कट गया था इसलिए हमारे इस बालक का नाम 'कूणिक' (कटी अँगुली वाला) होना चाहिए।" इस प्रकार बालक के माता-पिता ने अपने पुत्र का नाम 'कूणिक' रख दिया।

इसके पश्चात् कुल परम्परा के अनुसार बालक का जन्मोत्सव आदि मनाया गया। (वह बड़ा होकर) मेघकुमार के समान राजप्रासाद में आमोद-प्रमोदपूर्वक जीवन बिताने लगा। (आठ राज-कन्याओं के साथ उसका पाणिग्रहण हुआ और) माता-पिता ने आठ-आठ वस्तुएँ प्रीतिदान (दहेज) में प्रदान कीं।

17. (c) Later, on the third day (of the birth ceremonies) they performed the ritual adorational beholding of the sun and the moon... and so on up to... On the twelfth day they performed the naming ceremony giving the child a virtue based name—"As the tip of the finger of this son of ours was cut by a cock when he was thrown on an isolated heap of trash his name should be Kunik (one with a cut finger)." Thus the new-born was formally named Kunik by his parents.

After this the traditional birth related ceremonies were concluded. As he grew Kunik enjoyed all comforts of life in the palace. He was married to eight princesses and his parents gave him marriage gifts in sets of eight. (all details as per the story of Megh Kumar in *Jnata Dharma Katha Sutra*)

कूणिक का कुचक्र

१८. तए णं तस्स कूणियस्स कुमारस्स अन्नया पुव्वरत्ता. (जाव) समुप्पज्जित्था-'एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो संचाएमि सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरित्तए, तं सेयं खलु मम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेणियं रायं नियलबंधणं करेत्ता अप्पाणं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सेणियस्स रन्नो अंतराणि य छिड्डाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं से कूणिए कुमारे सेणियस्स रन्नो अंतरं वा (जाव) मम्मं वा अलभमाणं अन्नया कयाइ कालाईए दस कुमारे नियघरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-''एवं खलु देवाणुप्पिया, अम्हे सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो संचाएमो सयमेव रज्जसिरिं करेमाणा पालेमाणा विहरित्तए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सेणियं रायं नियलबंधणं करेत्ता रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च जणवयं च एक्कारसभाए विरिंचित्ता सयमेय रज्जसिरिं करेमाणाणं पालेमाणाणं (जाव) विहरित्तए।''

१८. किसी समय उस कुमार कूणिक को मध्य रात्रि में जागते हुए मन में ऐसा विचार आया कि 'श्रेणिक राजा के विघ्नों-प्रतिबन्धों के कारण मैं अपनी इच्छानुसार स्वयं राज्य-शासन और राज्य-वैभव का उपभोग नहीं कर पाता हूँ, अतः श्रेणिक राजा को हथकड़ियों, बेड़ियों आदि से बाँधकर कारागार में बन्द कर देना और बहुत बड़े राज्याभिषेक से अपना राज्याभिषेक कर लेना मेरे लिए लाभदायक होगा।' उसने इस प्रकार का निश्चय किया और निश्चय के अनुसार श्रेणिक राजा के अन्तर-(अवसर या मौका), छिद्र व दुर्बलताओं और विरह-अकेला पाने की ताक में रहने लगा।

तत्पश्चात् कूणिककुमार श्रेणिक राजा की कोई भी दुर्बलता तथा गुप्त मर्मों को नहीं जान सका, न ही एकान्त अवसर मिला, तब उसने एक दिन काल आदि दस राजकुमारों (अपने भाइयों) को अपने निजी महल में आमंत्रित किया और उनको अपने विचार बताये-''हे देवानुप्रियो ! श्रेणिक राजा के कारण हम स्वयं राजश्री का उपभोग और राज्य का पालन करने से वंचित रह रहे हैं। इसलिए हे देवानुप्रियो ! हमारे लिए यह श्रेयस्कर होगा कि श्रेणिक राजा को हथकड़ियों, बेड़ियों से जकड़कर (कारागार में डाल दें) और हम स्वयं राज्य, राष्ट्र, बल, सेना, वाहन (हाथी-घोड़े), कोष, (खजाना) धान्य-भण्डार और जनपद को ग्यारह भागों में बाँट करके राज-वैभव का उपभोग करते हुए प्रजा का पालन करें।''

KUNIK'S CONSPIRACY

18. Once while awake around midnight prince Kunik thought—"Due to interference and restrictions from King Shrenik it is impossible for me to enjoy the power and wealth of the kingdom as I desire. Therefore, to handcuff, shackle, and imprison King Shrenik and ascend the throne by crowning myself in an elaborate coronation ceremony would be to my benefit." He turned the idea into a resolve and started looking for faults and lapses in the king's security and an opportunity to catch him unawares.

As time passed he failed to either find faults and lapses in the king's security or any opportunity to catch him unawares. Then one day he invited ten princes (his ten brothers) including Kaal Kumar in his personal

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

palace and took them into confidence--"Beloved of gods ! Due to interference and restrictions from King Shrenik we are being deprived of enjoying the power and wealth of the kingdom. Therefore, beloved of gods ! it would be to our benefit to handcuff, shackle, and imprison King Shrenik. After that we should divide the kingdom, state, army, carriers (elephants and horses), treasury, granaries and population in eleven parts and govern the people enjoying the wealth and grandeur of the state."

काल आदि द्वारा स्वीकृति

१९. तए णं ते कालाईया दस कुमारा कूणियस्स कुमारस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणंति। तए णं से कूणिए कुमारे अन्नया कयाइ सेणियस्स रन्नो अंतरं जाणइ, जाणित्ता सेणियं रायं नियलबंधणं करेइ, करित्ता अप्पाणं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावेइ। तए णं से कूणिए कुमारे राया जाए महया महया।

१९. उन काल आदि दसों राजपुत्रों ने कूणिक के विचार सुने, सुनकर इस विचार को विनयपूर्वक स्वीकार कर लिया। इसके कुछ दिन बाद कूणिककुमार ने किसी समय श्रेणिक राजा के आंतरिक रहस्यों को जाना और जानकर श्रेणिक राजा को बेड़ी से बाँध दिया (कारागार में डाल दिया)। महान् महोत्सव के साथ अपना राज्याभिषेक करवाया। तब वह कूणिककुमार स्वयं राजा बन गया।

ACCEPTANCE BY THE PRINCES

19. The ten princes including Kaal Kumar listened to the idea of Kunik and humbly accepted the same. A few days later, at some opportune moment after knowing the secrets of King Shrenik, prince Kunik put King Shrenik in shackles (and put him in the prison). In an elaborate coronation ceremony he got himself crowned. Prince Kunik now became the king.

कूणिक का माता के चरण वंदनार्थ गमन

२०. (क) तए णं से कूणिए राया अन्नया कयाइ ण्हाए जाव कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए सव्वालंकारविभूसिए चेल्लणाए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ।

तए णं से कूणिए राया चेल्लणं देविं ओहय. (जाव) झियायमाणिं पासइ, पासित्ता चेल्लणाए देवीए पायग्गहणं करेइ करित्ता चेल्लणं देविं एवं वयासी—"किं णं अम्मो ! तुम्हं न तुट्ठी वा न ऊसए वा न हरिसे वा न आणंदे वा, जं अहं सयमेव रज्जसिरिं (जाव) विहरामि ?

तए णं सा चेल्लणा देवी कूणियं रायं एवं वयासी—"कहं णं पुत्ता ! ममं तुट्ठी वा ऊसए वा हरिसे वा आणंदे वा भविस्सइ, जं णं तुमं सेणियं रायं पियं देवयं गुरु—जणगं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करित्ता अप्पाणं महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावेसि ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. (क) तदनन्तर किसी दिन राजा कूणिक स्नान करके, सुगन्धित द्रव्य, तिलक आदि लगाकर और राजा के योग्य शुद्ध वस्त्र-आभूषण पहनकर चेलनादेवी के पास चरण-वंदना करने के लिए आया।

उस समय कूणिक राजा ने माता चेलनादेवी को उदासीन यावत् चिन्ता, शोक में डूबी हुई देखा। देखते ही चेलनादेवी के पाँव पकड़ लिए और चेलनादेवी से इस प्रकार पूछने लगा-"माता ! ऐसी क्या बात है कि आज तुम्हारे चित्त में संतोष, उत्साह, हर्ष और आनन्द नहीं है जबकि मैं स्वयं (आपका पुत्र) राज्य-वैभव का उपभोग करते हुए सुखपूर्वक समय बिता रहा हूँ ?" (अर्थात् मेरा राजा बनना क्या आपको अच्छा नहीं लग रहा है ?)

उत्तर में चेलनादेवी ने कूणिक राजा से इस प्रकार कहा-"हे पुत्र ! मेरे मन में प्रसन्नता, उत्साह, हर्ष अथवा आनन्द कैसे हो सकता है ? जबकि तुमने देवतास्वरूप, गुरुजन जैसे अत्यन्त स्नेहानुरागयुक्त अपने पिता श्रेणिक राजा को बेड़ियों से बाँधकर अपना महान् राज्याभिषेक स्वयं कराया है।"

HOMAGE AT THE FEET OF THE MOTHER

20. (a) One day after taking his bath, applying perfumes and auspicious mark (*tilak*), and wearing clean garb and ornaments suitable for the royalty, King Kunik came to Queen Chelana to touch her feet and pay homage.

On this occasion he found mother Chelana sad, worried and melancholic. He at once touched Queen Chelana's feet and asked—"Mother ! What is the matter ? Today you do not appear contented, zealous, joyous or happy, even when I, your son, live happily enjoying the glory of the kingdom ?" (In other words, does my becoming king not please you ?)

Queen Chelana replied—"Son ! How can I be contented, zealous, joyous or happy when you have ceremoniously ascended the throne by imprisoning your god-like and guru-like father, King Shrenik, who has only love and affection for you."

चेलना रानी द्वारा भ्रान्तिनिवारण

२०. (ख) तए णं से कूणिए राया चेल्लणं देविं एवं वयासी-"धाएउकामे णं, अम्मो ! मम सेणिए राया, एवं मारेउ बंधिउ. निच्छुभिउकामे णं अम्मो ! ममं सेणिए राया। तं कहं णं अम्मो ! ममं सेणिए राया अच्चंतनेहाणुरागरत्ते ?"

तए णं सा चेल्लणा देवी कूणियं कुमारं एवं वयासी-"एवं खलु, पुत्ता ! तुमंसि ममं गब्भे आभूए समाणे तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं ममं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए 'धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, (जाव) अंगपडिचारियाओ, निरवसेसं भाणियव्वं (जाव), जाहे वि य णं तुमं वेयणाए अभिभूए महया. (जाव) तुसिणीए संचिट्ठसि। एवं खलु पुत्ता ! सेणिए राया अच्चंतनेहाणुरागरत्ते।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं कूणिए राया चेल्लणाए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चेल्लणं देविं एवं वयासी–"दुट्ठु णं अम्मो ! मए कयं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणगं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधण करंतेणं। तं गच्छामि णं सेणियस्स रन्नो सयमेव नियलाणि छिंदामि" त्ति कट्टु परसुहत्थगए जेणेव चारगसाला तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

२०. (ख) माता चेलनादेवी की बात सुनकर कूणिक ने इस प्रकार कहा–"माता ! श्रेणिक राजा तो मेरा घात करने के इच्छुक थे। हे अम्मा ! श्रेणिक राजा तो मुझे मार डालना चाहते थे, बाँधना चाहते थे और मुझे राज्य से निर्वासित कर देना चाहते थे। तो फिर हे माता ! आप यह कैसे कहती हैं कि श्रेणिक राजा का मेरे प्रति अतीव स्नेहानुराग था ?"

यह सुनकर चेलनादेवी ने कूणिककुमार से इस प्रकार कहा–"हे पुत्र ! जब तू मेरे गर्भ में आया था, तब तीन मास अच्छी तरह पूरे होने पर मुझे इस प्रकार का दोहद उत्पन्न हुआ था कि–वे माताएँ धन्य हैं, यावत्। अंगपरिचारिकाओं से मैंने तुम्हें उकरड़े पर फिंकवा दिया, आदि। जब भी तुम वेदना से पीड़ित होते और जोर–जोर से रोते तब श्रेणिक राजा तुम्हारी व्रणग्रस्त अँगुली मुख में लेते और मवाद चूसते। तब तुम शान्त हो जाते, इत्यादि पूर्व वर्णित सब वृत्तान्त चेलना ने कूणिक को सुनाया। "इसी कारण हे पुत्र ! मैंने कहा कि श्रेणिक राजा के मन में तुम्हारे प्रति अत्यन्त स्नेहानुराग था।"

चेलना रानी के मुख से कूणिक राजा ने इस पूर्व वृत्तान्त को सुना, उस पर विचार किया तो वह चेलनादेवी से इस प्रकार कहने लगा–"माता ! निश्चित ही मैंने बहुत बुरा किया जो देवतास्वरूप, गुरुजन जैसे अत्यन्त स्नेहानुराग से अनुरक्त अपने पिता श्रेणिक राजा को बेड़ियों से बाँधा। अब मैं जाता हूँ और स्वयं अपने हाथों से ही श्रेणिक राजा की बेड़ियों को काटता हूँ।" ऐसा कहकर वह परशु–कुल्हाड़ी हाथ में लेकर जहाँ कारागृह था, उस ओर चल दिया।

QUEEN CHELANA REMOVES MISUNDERSTANDING

20. (b) To these words of mother Chelana Kunik responded—"Mother ! King Shrenik was desirous of destroying me. O mother ! King Shrenik wanted to kill me or apprehend me and exile me from the state. O mother ! How then do you say that he dearly loved me ?"

Hearing these words Queen Chelana said to prince Kunik—"Son ! On completion of three months after I conceived you I had this *dohad*—"Blessed, fortunate, and contented are those mothers who... and so on up to... with the help of my maids I threw you on a heap of trash... and so on up to... whenever you wailed, King Shrenik came near you and sucked out the blood and pus from your wounded finger. This gave you relief and you stopped crying." Thus Queen Chelana narrated the aforesaid details to Kunik and added—"That is the reason, why I told you that King Shrenik dearly loved you."

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

King Kunik heard this story about his past from Queen Chelana and thought about it. He then said—"Mother ! Indeed, I have committed a grave mistake by shackling King Shrenik, my god-like and guru-like father who so profoundly loved me. Now I shall go and cut his shackles with my own hands." With these words he picked up an axe and left for the prison.

विवेचन—इस सूत्र पर टिप्पणी लिखते हुए आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज सूचित करते हैं–''इससे पता चलता है कि कूणिक इससे पूर्व अपने जन्म-विषयक, सम्पूर्ण घटनाक्रम से अपरिचित था। राजतिलक नहीं करने के कारण वह क्षुब्ध भी था। कुछ गलतफहमियों के कारण पिता को अपना शत्रु समझने लगा था। दूसरी बात, राज्य-लोभ में वह फँस चुका था। इस दुष्कर्म में पूर्वजन्मों के कर्म भी प्रेरक कारण बने हैं। *(पूर्वजन्म का वृत्तान्त परिशिष्ट में देखें।)*

Elaboration—Commenting on this aphorism Acharya Shri Atmaram ji M. informs—This informs that prior to the said moment Kunik was not aware of all these details about the post birth incidents of his life. He was also angry because of the delay in his coronation. He considered his father to be his enemy because of some misunderstandings. Further, he was caught in the trap of greed for the kingdom. Besides, *karmas* accumulated in the past births were also the inspiring factor for this. *(see appendix for the story of the past births)*

श्रेणिक का अन्तर्द्वन्द्व

२१. (क) तए णं सेणिए राया कूणियं कुमारं परसुहत्थगयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–"एस णं कूणिए कुमारे अपत्थियपत्थिए (जाव) हिरि-सिरि-परिवज्जिए परसुहत्थगए इह हव्वमागच्छइ। तं न नज्जइ णं ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्सइ" त्ति कट्टु भीए (जाव) तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभये तालपुडगं विसं आसगंसि पक्खिवइ।

तए णं से सेणिए राया तालपुडगविसंसि आसगंसि पक्खित्ते समाणे मुहुत्तंतरेण परिणममाणंसि निप्पाणे निच्चेट्ठे जीवविप्पजढे ओइण्णे।

तए णं से कूणिए कुमारे जेणेव चारगसाला तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता सेणियं रायं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं ओइण्णं पासइ, पासित्ता महया पिइसोएणं अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्ते विव चम्पगवरपायवे धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिए।

२१. (क) तब श्रेणिक राजा ने कूणिककुमार को हाथ में कुल्हाड़ी लिए अपनी ओर आते हुए देखा। देखते ही उसने मन ही मन विचार किया–'यह अकर्त्तव्य को कर्त्तव्य मानने वाला, मेरा विनाश चाहने वाला, यावत् लोक-लाज से रहित, निर्लज्ज कूणिककुमार हाथ में कुल्हाड़ी लेकर इधर आ रहा है। न मालूम मुझे यह किस कुमौत से मारेगा।' इस विचार से भयभीत, त्रस्त, आशंकाग्रस्त, उद्विग्न और भयाक्रान्त होकर तालपुट विष को अपने मुख में डाल लिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालपुट विष को मुख में डालते ही कुछ क्षणों के बाद उस विष के शरीर में घुल जाने पर श्रेणिक राजा निष्प्राण, निश्चेष्ट एवं जीवनरहित हो गया।

इसके बाद वह कूणिककुमार जहाँ कारावास था वहाँ पहुँचा। पहुँचकर उसने श्रेणिक राजा को निष्प्राण, निश्चेष्ट, निर्जीव देखा। तब वह असह्य, भयंकर पितृ-शोक से बिलबिलाता हुआ शोक संतप्त हुआ, कुल्हाड़ी से कटे चम्पक वृक्ष की तरह धड़ाम-से पछाड़ खाकर भूमि पर गिर पड़ा।

SHRENIK'S INNER CONFLICT

21. (a) King Shrenik saw prince Kunik approaching with an axe in his hand. The moment he saw this he thought—Prince Kunik, who considers misdeeds as his duty wishes to destroy me. He is shameless and devoid of any considerations of honour. He is coming this way with an axe in his hand. I do not know what contemptible death he will inflict on me." Filled with fear, awe, apprehension, nervousness and horror, he put *taalput-vish* (a deadly poison) in his mouth.

Within a few moments of swallowing it the poison spread throughout the body of King Shrenik and it was rendered breathless, motionless, and lifeless.

Prince Kunik reached the prison after this and found King Shrenik breathless, motionless, and lifeless. Whining with bereavement of losing his father and engulfed in grief, he fall on the ground like an axed *champak* tree.

कूणिक का पश्चात्ताप

२१. (ख) तए णं से कूणिए कुमारे मुहुत्तंतरेण आसत्थे समाणे रोयमाणे कंदमाणे सोयमाणे विलवमाणे एवं वयासी-"अहो णं मए अधन्नेणं अपुण्णेणं अकयपुण्णेणं दुट्ठुकयं सेणियं रायं पियं देवयं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करंतेणं। मम मूलागं चेव णं सेणिए राया कालगए" त्ति कट्टु।

राईसरतलवर जाव माडम्बिय-कोडुम्बिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड पीढमद्द-नगर-निगम-दूय-संधिवालसद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे सोयमाणे विलवमाणे महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं सेणियस्स रन्नो नीहरणं करेइ।

तए णं से कूणिए कुमारे एएणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अन्नया कयाइ अंतेउरपरियाल-संपरिवुडे सभण्डमत्तोवगरणमायाए रायगिहाओ पडिनिक्खमइ, जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ तत्थ वि णं विउलभोग-समिइसमन्नागए कालेणं अप्पसोए जाए यावि होत्था।

तए णं से कूणिए राया अन्नया कयाइ कालाईए दस कुमारे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता रज्जं च जाव रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च अंतेउरं च जणवयं च एक्कारसभाए विरिंचइ, विरिंचित्ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

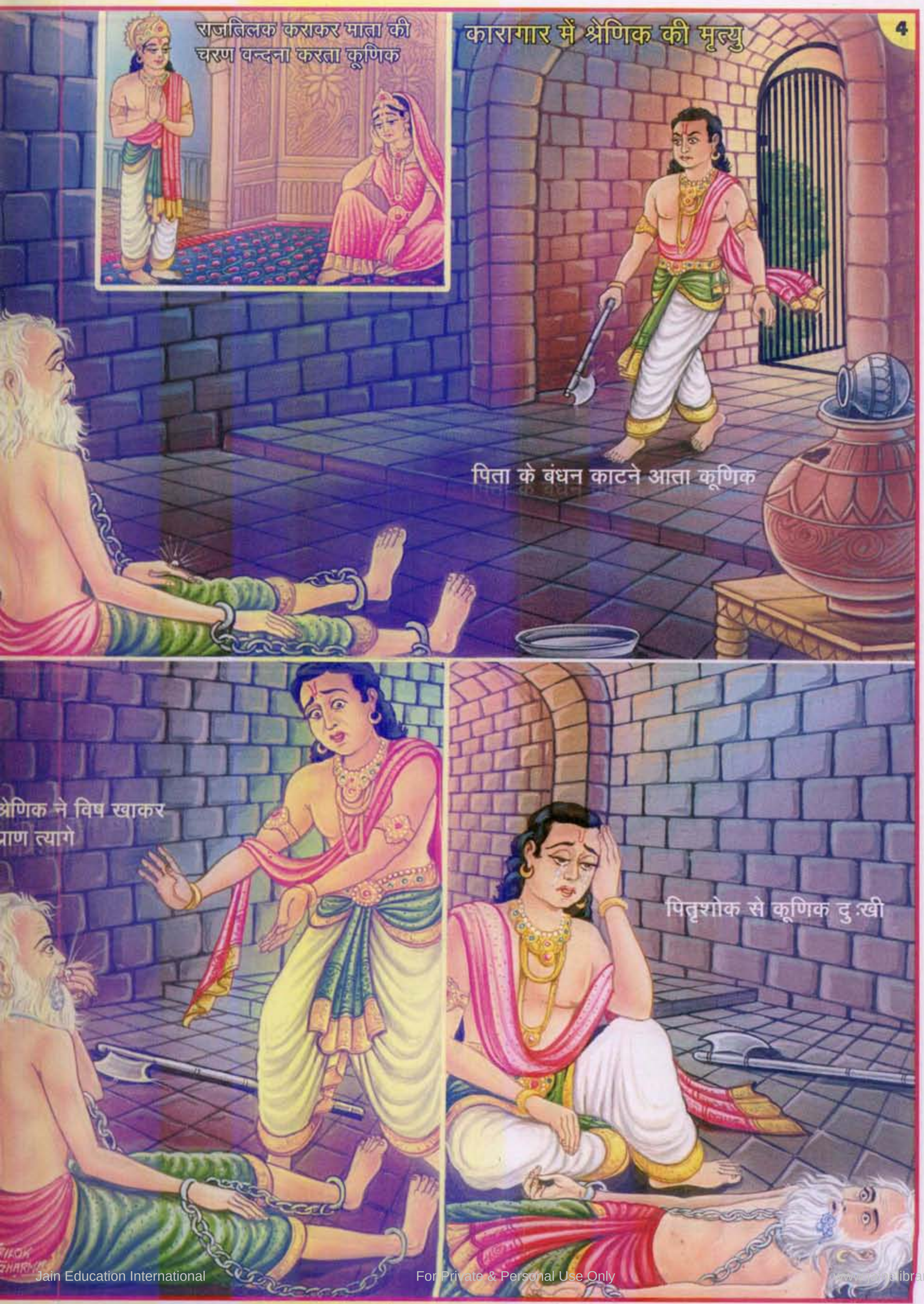

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-४

Illustration No. 4

कारागार में श्रेणिक की मृत्यु

दृश्य–१

चेलना रानी के मुख से जब कूणिक ने सुना कि, उसके पिता राजा श्रेणिक तो उससे बहुत अधिक प्यार करते थे, तो कूणिक को अपने कुकृत्य पर बहुत अधिक पश्चात्ताप व आत्म–ग्लानि हुई। "अहो ! मैंने देवता स्वरूप अपने पूज्य पिता को बेड़ियों से बाँधा, यह बड़ा दुष्कृत्य किया। अब मैं जाता हूँ और अपने हाथ से ही उनकी बेड़ियाँ काटता हूँ।" यह निश्चय कर हाथ में कुल्हाड़ी लेकर वह कारागार की तरफ चल पड़ता है।

दृश्य–२

कुल्हाड़ी हाथ में लिए कूणिक को आते देखकर श्रेणिक सोचता है–"यह मेरा बुरा चाहने वाला निर्लज्ज तालपुट कूणिक पता नहीं किस कुमौत से मुझे मार डाले।" इस विचार से भयाक्रान्त हुआ श्रेणिक हीरे की अँगूठी चूसता है। उसके विष से कुछ ही समय में मृत्यु हो जाती है।

दृश्य–३

कूणिक कारावास में पहुँचा, पिता को मृत देखकर पितृ शोक से विह्वल हो उठता है।

–वर्ग १, अ. १, सूत्र २०–२१

SHRENIK DIES IN PRISON

SCENE-1

When King Kunik heard from Queen Chelana that his father, King Shrenik, loved him very much, he felt guilty and repentant on his misdeed—"Oh ! Indeed, I have committed a grave mistake by shackling my god-like father. Now I go and cut his shackles with my own hands." With these words he picked up an axe and left for the prison.

SCENE-2

When King Shrenik saw prince Kunik approaching with an axe in his hand, he thought—"Prince Kunik, who wishes ill of me and is shameless, comes this way. I do not know what contemptible death he will deal me." Filled with awe, Shrenik licks his diamond ring. He dies within moments of swallowing the poison.

SCENE-3

Prince Kunik reached the prison and found King Shrenik dead. He was overwhelmed with the grief of loosing his father.

—Sec. I, Ch. 1, Sutra : 20-21

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. (ख) कुछ ही समय पश्चात् कूणिककुमार थोड़ा स्वस्थ–सा हुआ, तब रोते हुए, जोर–जोर से क्रन्दन, शोक, विलाप करते हुए इस प्रकार कहने लगा–"अहो ! मैं नीच हूँ, पुण्यहीन, पापी हूँ, अभागा हूँ–मैंने बहुत ही दुष्ट कर्म किया, जो देवता स्वरूप अत्यन्त स्नेहानुरागयुक्त अपने पिता श्रेणिक राजा को कारागार में डाला। मेरे कारण ही मेरे पिता श्रेणिक राजा काल कवलित हुए हैं। मैं ही इनकी मृत्यु का मूल कारण हूँ।"

तदनन्तर (राजसभा में रहने वाले) ऐश्वर्यशाली पुरुषों, तलवर, राज्यमान्य पुरुषों, मांडबिक, ज़ागीरदारों, इभ्यों–श्रीमंतों, समाज में प्रमुख माने जाने वाले श्रेष्ठी, सेनापतियों, मंत्री, ज्योतिषी, द्वारपाल, अमात्य, सेवक, पीठमर्दक–अंगरक्षक, नागरिक, व्यवसायी, दूत, राष्ट्र के सीमान्त प्रदेशों के रक्षक, संधिपाल आदि विशिष्ट जनों से घिरे हुए रुदन, आक्रन्दन, शोक और विलाप करते हुए महान् ऋद्धि, सत्कार–सन्मान एवं महोत्सव के साथ श्रेणिक राजा की नीहरण क्रिया–अग्नि–संस्कार किया।

इसके पश्चात् वह कूणिककुमार इस गहन मानसिक दुःख से अतीव दुःखी होकर, (इस दुःख को विस्मृत करने के लिए) किसी समय अपने अन्तःपुर परिवार को साथ लेकर धन–सम्पत्ति आदि गार्हस्थिक उपकरणों के साथ राजगृह से बाहर निकला और जहाँ चम्पानगरी थी, वहाँ आ गया। (अर्थात् उसने राजगृह नगर का परित्याग कर चम्पानगरी को अपनी राजधानी बना लिया) वहाँ अपने प्राप्त भोगों को भोगते हुए कुछ समय के बाद शोक–संताप से रहित हो गया।

एकदा उस कूणिक राजा ने किसी दिन काल आदि दस राजकुमार बन्धुओं को बुलाया और राज्य, राष्ट्र, सेना, वाहन–रथ, कोश, धन–सम्पत्ति, धान्य–भण्डार, अंतःपुर और जनपद–देश के ग्यारह भाग किये। अपना–अपना भाग ले करके वे सभी बंधु स्वयं अपनी–अपनी राज्य–ऋद्धि का भोग करते हुए, प्रजा का पालन करते हुए रहने लगे।

KUNIK'S REPENTANCE

21. (b) Some time later, when prince Kunik regained some of his composure, he uttered, weeping and wailing in grief—"Alas ! I am a despicable, worthless, and unfortunate sinner. I have committed an extremely evil deed by putting my god-like and loving father, King Shrenik in prison. My father, King Shrenik, died because of me. I am the singular cause of his death."

After that, weeping, wailing, mourning and moaning surrounded by luminaries including numerous chieftains, administrators, princes, knights of honour, landlords, village heads, family heads, businessmen, merchants, commanders, caravan chiefs, ambassadors, and diplomats he performed the last rites and cremation of King Shrenik ceremoniously and elaborately with due honour and respect.

Deeply effected by this grief prince Kunik, loaded with funds and household equipment, left Rajagriha with his family and retinue and came

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

to Champa city (in order to forget his sorrow). (This indicates that he shifted his capital from Rajagriha to Champa) Under the influence of mundane enjoyments and comforts of life, his grief and sorrow were consigned to oblivion in due course.

One day King Kunik invited his ten brothers including Kaal Kumar and divided the kingdom, state, army, carriers (elephants and horses), treasury, granaries, retinue and population into eleven parts. Taking charge of their individual shares all the brothers lived happily governing their respective people and enjoying the wealth and grandeur of their respective states."

वेहल्लकुमार की गज–क्रीड़ा

२२. तत्थ णं चम्पाए नगरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कुणियस्स रन्नो सहोयरे कणीयसे भाया वेहल्ले नामं कुमारे होत्था, सोमाले (जाव) सुरूवे।

तए णं तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स सेणिएणं रन्ना जीवंतएणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके हारे पुव्वदिन्ने।

तए णं से वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा अन्तेउरपरियालसंपरिवुडे चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता अभिक्खणं अभिक्खणं गंगं महाणइं मज्जणयं ओयरइ। तए णं सेयणए गंधहत्थी देवीओ सोण्डाए गिण्हइ, गिण्हित्ता अप्पेगइयाओ पुट्ठे ठवेइ, अप्पेगइयाओ खंधे ठवेइ एवं कुम्भे ठवेइ, सीसे ठवेइ, दंतमुसले ठवेइ, अप्पेगइयाओ सोण्डागयाओ अंदोलावेइ, अप्पेगइयाओ दंतंतरेसु नीणेइ, अप्पेगइयाओ सीभरेणं ण्हाणेइ, अप्पेगइयाओ अणेगेहिं कीलावणेहिं कीलावेइ।

तए णं चम्पाए नयरीए सिंघाडग–तिग–चउक्क–चच्चर–महापह–पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव एवं भासेइ एवं पन्नवेइ एवं परूवेइ–'एवं खलु देवाणुप्पिया, वेहल्ले कुमारे सेयणएण गंधहत्थिणा अंतेउर. तं चेव जाव, अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ। तं एस णं वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफलं पच्चणुभवमाणे विहरइ, नो कूणिए राया।'

२२. उस चम्पानगरी में श्रेणिक राजा का पुत्र, चेलनादेवी का अंगजात कूणिक राजा का छोटा भाई वेहल्ल नामक राजकुमार था। वह सुकुमार यावत् रूप–सौन्दर्य–सम्पन्न था।

श्रेणिक राजा ने अपने जीवनकाल में पहले ही वेहल्लकुमार को सेचनक नामक गंधहस्ती और अठारह लड़ियों का हार दिया था।

वह वेहल्लकुमार अन्तःपुर परिवार को साथ लेकर सेचनक गंधहस्ती पर आरूढ़ होकर चम्पानगरी के बीचोंबीच राजमार्ग पर निकलता और बारम्बार गंगा महानदी में स्नान करने के लिए उतरता–प्रविष्ट होता। उस समय वह सेचनक गंधहस्ती रानियों को सूँड़ से पकड़ता, पकड़कर किसी को पीठ पर बिठा लेता, किसी को कंधे पर, किसी को कुम्भ–स्थल पर, किसी को मस्तक पर बैठाता, किसी को दंत–मूसलों पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिठा लेता, किसी को सूँड़ में पकड़कर झुलाता, किसी को दाँतों के बीच ले लेता, किसी को फुहारों से नहलाता और किसी-किसी को अनेक प्रकार की क्रीड़ाओं से खेलाता रहता था।

(गंधहस्ती के साथ वेहल्लकुमार की क्रीड़ाओं को देखकर)-चम्पानगरी के तिराहों, चौराहों और राजमार्गों पर खड़े बहुत से नगर-निवासी आपस में एक-दूसरे से इस प्रकार कहते, बोलते, बतियाते और आलोचना करते कि "देवानुप्रियो ! अन्तःपुर परिवार को साथ लेकर यह वेहल्लकुमार सेचनक गंधहस्ती के द्वारा अनेक प्रकार की क्रीड़ाएँ करता है। वास्तव में वेहल्लकुमार ही राजलक्ष्मी का सुख व आनन्द अनुभव कर रहा है। कूणिक तो राजा होते हुए भी राजलक्ष्मी का पूर्ण रूप में उपभोग नहीं कर पा रहा है।

ELEPHANT PLAY OF PRINCE VEHALLA

22. In Champa city lived prince Vehalla, the younger brother of King Kunik and son of King Shrenik from Queen Chelana. He was charming and handsome.

When King Shrenik was alive he had given the majestic elephant Sechanak and an eighteen string necklace to prince Vehalla.

That prince Vehalla and his family used to ride Sechanak elephant and passing through the roads of Champa go to the banks of river Ganges. As a routine he would enter the river for taking his bath. During that period (of enjoying the bath) Sechanak elephant would lift the queens with its trunk, place one on its back, one on its shoulders, another on its neck and still another on its head. It would also put one of them on its tusks and swing one between tusks with its trunk. It would also shower water on some. Thus it played with them in many ways.

Many citizens standing on the trisections, crossings and roads of Champa city (seeing the playful activity of prince Vehalla with Sechanak elephant) said, spoke, chatted, and criticized—"Beloved of gods ! This prince Vehalla, along with his family, enjoys various playful activities with Sechanak elephant. In fact it is prince Vehalla who is truly enjoying the pleasures and joys of the royal wealth. In spite of being the sovereign, King Kunik appears to be unable to enjoy the royal wealth to its fullest.

विवेचन-'वेहल्ल' के नाम के सम्बन्ध में ग्रन्थों में विविधता मिलती है। प्रस्तुत निरयावलिका में इस युद्ध के घटना-प्रसंग को केवल वेहल्लकुमार के साथ ही जोड़ा है। निरयावलिका टीका, भगवती टीका, भरतेश्वर-बाहुबली वृत्ति आदि ग्रन्थों में इसी घटना-प्रसंग के लिए हल्ल और विहल्ल-इस प्रकार दो नाम प्रयुक्त हुए हैं।

अनुत्तरोपपातिकसूत्र में विहल्ल और वेहायस को चेलणा का पुत्र बताया है तथा हल्ल को धारिणी का। निरयावलिका टीका और भगवती टीका के अनुसार हल्ल और विहल्ल दोनों ही चेलणा के पुत्र हैं। नामों का अन्तर क्यों है, वस्तुस्थिति अन्वेषण का विषय है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—There is an inconsistency regarding the name Vehalla in the available scriptures. In this *Niryavalika Sutra* the story of this battle is connected exclusively with prince Vehalla. In *Niryavalika Tika, Bhagavati Tika, Bharateshvar-Bahubali Vritti,* and many other books two names have been mentioned with this incident—Halla and Vihalla.

In *Anuttaraupapatik Sutra* Vihalla and Vehayas are shown as sons of Chelana and Dharini respectively. According to *Niryavalika Tika* and *Bhagavati Tika* both Halla and Vihalla were sons of Chelana. What is the reason for these discrepancies is a matter of research.

पद्मावती की ईर्ष्या

२३. तए णं तीसे पउमावईए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीए अयमेयारूवे (जाव) समुप्पज्जित्था–''एवं खलु वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा (जाव) अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ। तं एस णं वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफलं पच्चणुभवमाणे विहरइ, नो कूणिए राया। तं किं णं अम्हं रज्जेणं वा (जाव) जणवएण वा, जइ णं अम्हं सेयणगे गंधहत्थी नत्थि। तं सेयं खलु ममं कूणियं रायं एयमट्ठं विन्नवित्तए'' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल. (जाव) परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावित्ता एवं वयासी–''एवं खलु सामी, वेहल्ले कुमारे सेयणएण गंधहत्थिणा जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ। तं किं णं अम्हं रज्जेण वा जाव जणवएण वा, जइ णं अम्हं सेयणए गंधहत्थी नत्थि ?

तए णं से कूणिए राया पउमावईए एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं सा पउमावई देवी अभिक्खणं अभिक्खणं कूणियं रायं एयमट्ठं विन्नवेइ। तए णं से कूणिए राया पउमावईए देवीए अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं विन्नविज्जमाणे अन्नया कयाइ कुमारं सद्दावेइ, सद्दावित्ता सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायइ।

२३. तब (कूणिक राजा की रानी) पद्मावती देवी ने प्रजाजनों के मुख से इस प्रकार की बातें सुनीं, सुनकर उसके मन में विचार उत्पन्न हुआ–'अवश्य ही वेहल्लकुमार सेचनक गंधहस्ती के द्वारा अनेक प्रकार की क्रीड़ाएँ करता रहता है। अतएव यह वेहल्लकुमार ही सचमुच में राज्य–ऐश्वर्य–प्राप्ति का फल भोग रहा है, कूणिक राजा नहीं। ऐसी दशा में हमारा यह राज्य–वैभव यावत् विशाल जनपद किस काम का यदि हमारे पास सेचनक गंधहस्ती ही नहीं है? इसलिए मुझे कूणिक राजा से इस विषय में निवेदन करना चाहिए।' पद्मावती रानी ने इस प्रकार का विचार किया और फिर जहाँ कूणिक राजा था, वहाँ आई और आकर दोनों हाथ जोड़, आवर्त्त करते हुए मस्तक पर अंजलि करके जय–विजय शब्दों से उसे बधाया और निवेदन किया–''स्वामिन् ! आपका छोटा भाई वेहल्लकुमार सेचनक गंधहस्ती से इस प्रकार भाँति–भाँति की क्रीड़ाएँ करता हुआ जीवन का आनन्द लूट रहा है, तो हमारा राज्य–वैभव, विशाल जनपद किस काम का? इससे क्या लाभ है, यदि हमारे पास सेचनक गंधहस्ती नहीं है?''

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-५

Illustration No. 5

वेहल्लकुमार की जल क्रीड़ा

श्रेणिक राजा का पुत्र, चेलना रानी का आत्मज, कूणिक राजा का छोटा भाई वेहल्लकुमार कभी-कभी अपने सेचनक गंधहस्ती पर आरूढ़ होकर चम्पानगरी से बाहर गंगा महानदी पर जाकर अपनी रानियों के संग जल क्रीड़ा करता था।

सेचनक गंधहस्ती रानियों को सूँड़ से पकड़कर झुलाता है। किसी को पीठ पर बिठलाता है, किसी को मस्तक पर, किसी को दाँतों के बीच में लेकर जल-फुहारों से नहलाता है, किसी को पूँछ पर बिठा लेता है। इस प्रकार वेहल्लकुमार विविध प्रकार की जल क्रीड़ाएँ करता है।

नगर के लोक किनारे खड़े हुए इस जल क्रीड़ा को देखकर चर्चा करते हैं कि वास्तव में राज-लक्ष्मी का आनन्द तो वेहल्लकुमार ही अनुभव करता है। महलों के गवाक्ष से झाँकती रानी पद्मावती प्रजा के मुख से ये बातें सुनकर ईर्ष्या से जलकर विचार करने लगती है।

-वर्ग १, अ. १, सूत्र २३

VEHALLLA KUMAR'S ENTERTAINMENT IN RIVER

Once in a while Prince Vehalla, King Kunik's younger brother and King Shrenik's son from Queen Chelana, used to ride Sechanak elephant and go out of Champa city to the banks of river Ganges. He and his queens enjoyed playing in the river.

Sechanak elephant would swing one of the queens on its trunk. It would place one on its back and another on its head. It would also spray water on the third one placing her between its tusks. Thus prince Vehalla enjoyed playing in the river water.

Some citizens standing on the banks and seeing these playful activities, commented that prince Vehalla truly experiences the joys of royal wealth. Standing at the window of her palace, Queen Padmavati listens to these comments and broods in envy.

—Sec. I, Ch. 1, Sutra : 23

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूणिक राजा ने पद्मावती रानी के इस कथन को महत्त्व नहीं दिया, उसे सुना–अनसुना कर दिया, न ही उस पर ध्यान दिया, मौन ही रहा। तब वह पद्मावती देवी बार–बार समय–बेसमय इसी बात को दोहराती रही, राजा को कहती रही। पद्मावती द्वारा बार–बार इसी बात को दुहराने व जोर देने पर कूणिक राजा ने एक दिन वेहल्लकुमार को बुलाया और सेचनक गंधहस्ती तथा अठारह लड़वाला हार वापस माँग लिया।

PADMAVATI'S JEALOUSY

23. When Queen Padmavati heard these rumors prevailing among the citizens, she thought—"It is certain that prince Vehalla entertains himself by playful activities with Sechanak elephant. Thus it is, indeed, true that it is prince Vehalla and not King Kunik who is truly enjoying the pleasures and joys of the royal wealth. Therefore, if we do not own that Sechanak elephant all this royal grandeur and large state we have is worthless. So I should convey this to King Kunik." With these thoughts Queen Padmavati came to King Kunik and greeted him by touching her forehead with joined palms and hails of victory. She then said—"My lord ! Your younger brother, prince Vehalla, enjoys life indulging in a variety of playful activities with Sechanak elephant. Therefore, of what use and worth is all this royal grandeur and large state if we do not own that Sechanak elephant ?"

King Kunik remained silent and gave no heed, importance or attention to what Queen Padmavati said. He acted as if he did not listen to it. Then Queen Padmavati started nagging the king repeating her statement timely and untimely. On being pressurized and nagged by Queen Padmavati, King Kunik one day called prince Vehalla and asked him to return Sechanak elephant and the eighteen string necklace.

वेहल्लकुमार का मनोमंथन

२४. तए णं से वेहल्ले कुमारे कूणियं रायं एवं वयासी–''एवं खलु सामी, सेणिएणं रन्ना जीवंतेणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे दिन्ने। तं जइ णं सामी, तुब्भे ममं रज्जस्स य (जाव) जणवयस्स अद्धं दलयह, तो णं अहं तुब्भं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं दलयामि।''

तए णं से कूणिए राया वेहल्लस्स कुमारस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, अभिक्खणं अभिक्खणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायइ।

तए णं तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स कूणिएणं रन्ना अभिक्खणं अभिक्खणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायमाणस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पज्जित्था–''एवं खलु अक्खिविउकामे णं, गिण्हिउकामे णं, उद्दालेउकामे णं ममं कूणिए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं ! तं (जाव) ममं कूणिए राया (नो जाणइ) ताव (सेयं मे) सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडस्स सभण्डमत्तोवगरणमायाए चंपाओ नयरीओ पडिनिक्खमित्ता वेसालीए नयरीए अज्जगं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।''

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कूणियस्स रन्नो अंतराणि य छिद्दाणि य मम्माणि य रहस्साणि य विवराणि य पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं से वेहल्ले कुमार अन्नया कयाइ कूणियस्स रन्नो अंतरं जाणइ, सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अन्तेउरपरियालसंपरिवुडे सभण्डमत्तोवगरणमायाए चम्पाओ नयरीओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वेसाली नयरी, तेणेव उवागच्छइ, वेसालीए नयरीए अज्जगं चेडयं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

२४. तब वेहल्लकुमार ने कूणिक राजा को इस प्रकार कहा-''स्वामिन् ! श्रेणिक राजा ने अपने जीवनकाल में ही मुझे यह सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों का हार दिया था। यदि आप इन्हें लेना चाहते हैं तो अपने राज्य और जनपद का आधा भाग मुझे दे दें तब मैं सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों वाला हार आपको दे दूँगा। (ग्रन्थों के अनुसार इन दोनों वस्तुओं का मूल्य मगध के पूरे राज्य के बराबर माना जाता था-*आवश्यकचूर्णि, उत्तरार्ध, पत्र १६७*)

कूणिक राजा ने वेहल्लकुमार की इस बात को स्वीकार नहीं किया। उस पर ध्यान ही नहीं दिया और बार-बार सेचनक गंधहस्ती एवं अठारह लड़ों वाले हार को देने का आग्रह करता रहा।

कूणिक राजा द्वारा बारंबार सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ियों वाले हार को माँगने पर वेहल्लकुमार के मन में विचार आया कि 'वह उनसे ये दोनों वस्तुएँ छीनना चाहता है, जबर्दस्ती लेना चाहता है, इसलिए जब तक कूणिक राजा मेरे सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों वाले हार को झपट न ले, छीन न ले, उससे पहले ही मैं सेचनक गंधहस्ती और हार को लेकर अन्तःपुर परिवार और अपने भाण्डोपकरण-गृहस्थी की साधन-सामग्री के साथ चम्पानगरी से निकलकर-(भागकर) वैशाली नगरी में आर्यक (नाना) चेटक का आश्रय लेकर रहूँ, उनके पास चला जाऊँ।'

वेहल्लकुमार ने ऐसा विचार किया। विचार करके कूणिक राजा की असावधानी, अवसर और अन्तरंग गुप्त रहस्यों की जानकारी की प्रतीक्षा करते हुए समय बिताने लगा।

किसी दिन वेहल्लकुमार को कूणिक राजा की अनुपस्थिति का पता चला तब मौका पाकर सेचनक गंधहस्ती, अठारह लड़ों वाला हार तथा अन्तःपुर परिवार को साथ लिए गृहस्थी के समस्त साधनों को लेकर चम्पानगरी से चुपचाप निकल गया। निकलकर वैशाली नगरी में अपने नाना चेटक के पास आया और उनका आश्रय लेकर वैशाली नगरी में निवास करने लगा।

PRINCE VEHALLA'S DELIBERATION

24. Prince Vehalla responded—"My lord ! King Shrenik had given me Sechanak elephant and the eighteen string necklace during his life time. If you want to take these please give me half of your kingdom and state. Then only I will give you Sechanak elephant and the eighteen string necklace.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(*According to the scriptures the worth of these two things was estimated to be equal to the entire state of Magadh—Avashyak Churni, second part, leaf 167*)

King Kunik did not accept prince Vehalla's demand. Attaching no importance to it he time and again put forth his demand for Sechanak elephant and the eighteen string necklace.

On this repeated demand for Sechanak elephant and the eighteen string necklace, prince Vehalla thought—"The king wants to forcibly dispossess me of these two things. Therefore, before King Kunik confiscates Sechanak elephant and the eighteen string necklace I should leave Champa city with my family, household things, Sechanak elephant and the eighteen string necklace and elope to Vaishali city to take refuge with grandfather Chetak."

With these thoughts prince Vehalla waited looking for information about King Kunik's inner secrets, lapses in security and an opportunity to elope.

One day when prince Vihalla knew of King Kunik's absence, he took the opportunity and stealthily left Champa city with his family, household things, Sechanak elephant and the eighteen string necklace. He came to Vaishali city, took refuge with his maternal grandfather Chetak and settled there.

कूणिक राजा की प्रतिक्रिया

२५. (क) तए णं से कूणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे 'एवं वेहल्ले कुमारे ममं असंविदिएणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अन्तेउरपरियालसंपरिवुडे (जाव) अज्जगं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तं सेयं खलु सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं आणेउं दूयं पेसित्तए संपेहेइ, संपेहित्ता दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–''गच्छह णं तुमं, देवाणुप्पिया ! वेसालिं नयरिं। तत्थ णं तुमं ममं अज्जं चेडगं रायं करयल. वद्धावेत्ता एवं वयाही–एवं खलु सामी, कूणिए राया विन्नवेइ–एस णं वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदिएणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय हव्वमागए। तए णं तुब्भे सामी, कूणियं रायं अणुगिण्हमाणा सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमारं च पेसेह।''

२५. (क) कूणिक राजा को जब यह (वेहल्लकुमार के जाने का) समाचार ज्ञात हुआ कि मुझे बिना बताये ही वेहल्लकुमार सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों का हार तथा अन्तःपुर परिवार सहित गृहस्थी के उपकरण–साधनों को लेकर अपने नाना आर्यक चेटक राजा के आश्रय में निवास कर रहा है। तब उसने सोचा–'सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों वाले हार को लौटाने के लिए दूत भेजना चाहिए।' ऐसा विचार करके दूत को बुलाया। बुलाकर इस प्रकार आज्ञा दी–''देवानुप्रिय ! तुम वैशाली नगरी जाओ। वहाँ तुम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आर्यक चेटक राजा को दोनों हाथ जोड़कर जय–विजय शब्दों से बधाकर इस प्रकार निवेदन करना– स्वामिन् ! कूणिक राजा विनती करते हैं कि वेहल्लकुमार कूणिक राजा को सूचना दिये बिना ही सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों वाले हार को लेकर यहाँ आ गये हैं। इसलिए स्वामिन् ! आप कूणिक राजा पर अनुग्रह करते हुए सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों वाला हार राजा कूणिक को वापस लौटा दीजिए। साथ ही वेहल्लकुमार को भी भेज दीजिए।''

KING KUNIK'S REACTION

25. (a) When King Kunik got the news that prince Vehalla with his family, household things, Sechanak elephant and the eighteen string necklace was living with his maternal grandfather Chetak, he thought—"I should send an emissary to bring back Sechanak elephant and the eighteen string necklace." With this idea he called an emissary and instructed—"Beloved of gods ! Go to Vaishali city and after greeting King Chetak with hails of victory convey this message—'My lord ! King Kunik humbly submits that prince Vehalla has gone there with Sechanak elephant and the eighteen string necklace without informing King Kunik. Therefore, my lord ! please oblige King Kunik by returning Sechanak elephant and the eighteen string necklace. Also, please send prince Vehalla back.'"

२५. (ख) तए णं से दूए कूणिएणं करयल. (जाव) पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जहा चित्तो (जाव) पायरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं अन्तरावासेहिं वसमाणे वसमाणे जेणेव चम्पानयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चम्पाए नयरीए मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव चेडगस्स रन्नो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ।

तं महत्थं जाव पाहुडं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव अब्भंतरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चेडए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेडगं रायं करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी–''एवं खलु, सामी, कूणिए राया विन्नवेइ–एस णं वेहल्ले कुमारे, तहेव भाणियव्वं (जाव) वेहल्लं कुमारं पेसेह।''

२५. (ख) दूत ने कूणिक राजा की इस आज्ञा को दोनों हाथ जोड़कर स्वीकार किया, फिर जहाँ अपना आवास था, वहाँ आया। आकर चित्त सारथी के समान (चित्त सारथी ने जिस प्रकार पूरी तैयारी करके श्रावस्ती के लिए प्रस्थान किया; देखें रायपसेणिय सूत्र, पृ. २४६–२४७) प्रातः कलेवा करता हुआ, छोटे अन्तरावास–पड़ाव–विश्राम करते हुए जहाँ वैशाली नगरी थी वहाँ पहुँचा। वैशाली नगरी में जहाँ चेटक राजा का आवास–गृह था और जहाँ उसकी बाह्य उपस्थानशाला (सभाभवन) थी, वहाँ आया। घोड़ों को रोका, रथ को खड़ा किया और रथ से नीचे उतरा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साथ में लाया हुआ बहुमूल्य एवं महान् पुरुषों के योग्य उपहार लेकर, जहाँ आभ्यन्तर सभाभवन में चेटक राजा बैठा था, वहाँ पहुँचा। पहुँचकर दोनों हाथ जोड़कर 'जय-विजय' शब्दों से उसे बधाया और बधाकर निवेदन किया-"स्वामिन् ! कूणिक राजा आपसे प्रार्थना करते हैं-वेहल्लकुमार हाथी और हार लेकर कूणिक राजा को बिना सूचित किये चुपचाप चले आये हैं इत्यादि सभी बातें कहीं। आप हार, हाथी और वेहल्लकुमार को वापस लौटा दीजिए।"

25. (b) The emissary accepted King Kunik's order joining his palms and returned to his residence. From there, like Chitta charioteer (this refers to the elaborate preparations made by Chitta charioteer before leaving for Shravasti as mentioned in *Rayapaseniya Sutra*, pp. 246-247), he left after breakfast and taking short breaks on the way for rest, he arrived in Vaishali. In Vaishali he came to King Chetak's palace, stopped his chariot at the outer assembly and alighted.

He took the costly gifts suitable for great men, he had brought along and entered the outer assembly where King Chetak was sitting. He joined his palms and greeted the king with hails of victory. After this he submitted—'My lord ! King Kunik humbly submits that prince Vehalla has come here with Sechanak elephant and the eighteen string necklace without informing King Kunik... and so on up to... please send prince Vehalla back."

चेटक राजा का उत्तर

२६. (क) तए णं से चेडए राया तं दूयं वयासी-"जह चेव णं देवाणुप्पिया, कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए, तहेव णं वेहल्ले वि कुमारे सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए, मम नत्तुए।

सेणिएणं रन्ना जीवंतेणं चेव वेहल्लस्स कुमारस्स सेयणगे गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे पुव्वविइण्णे। तं जइ णं कूणिए राया वेहल्लस्स रज्जस्स य जणवयस्स य अद्धं दलयइ तो णं अहं सेयणगं अट्ठारसवंकं हारं च कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामि, वेहल्लं च कुमारं पेसेमि।"

तं दूयं सक्कारेइ संमाणेइ पडिविसज्जेइ।

तए णं से दूए चेडएणं रन्ना पडिविसज्जिए समाणे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, वेसालिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुहेहिं वसहीहिं (जाव) वद्धावेत्ता एवं वयासी-"एवं खलु, सामी; चेडए राया आणवेइ-जह चेव णं कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते, चेल्लणाए देवीए अत्तए, मम नत्तुए, तं चेव भाणियव्वं जाव, वेहल्लं च कुमारं पेसेमि। तं न देइ णं सामी, चेडए राया सेयणगं अट्ठारसवंकं हारं च, वेहल्लं च नो पेसेइ।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. (क) दूत का निवेदन सुनकर चेटक राजा ने इस प्रकार कहा–"देवानुप्रिय ! जिस प्रकार कूणिक राजा श्रेणिक राजा का पुत्र और चेलनादेवी का अंगजात तथा मेरा दौहित्र है, उसी प्रकार वेहल्लकुमार भी श्रेणिक राजा का पुत्र, चेलनादेवी का अंगजात और मेरा दौहित्र है। (मेरे लिए दोनों ही समान हैं।)

श्रेणिक राजा ने अपने जीवनकाल में स्वयं ही वेहल्लकुमार को सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों वाला हार दिया था। इसलिए यदि कूणिक राजा इन दोनों वस्तुओं को वापस लेना चाहते हैं तो वेहल्लकुमार को अपने राज्य और जनपद का आधा भाग प्रदान करें तो मैं सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों वाला हार कूणिक राजा को लौटा दूँगा तथा वेहल्लकुमार को भी वापस भेज दूँगा।

इस प्रकार स्पष्ट उत्तर देकर चेटक राजा ने दूत का सत्कार-सम्मान करके विदा कर दिया।

चेटक राजा द्वारा विदा किया वह दूत जहाँ उसका चार घण्टों वाला अश्व-रथ था, वहाँ आया। आकर उस चार घण्टों वाले अश्व-रथ पर आरूढ़ हुआ। वैशाली नगरी के बीच से निकलकर मार्ग में सुखकारी स्थानों पर विश्राम करता हुआ प्रातःकाल का कलेवा तथा यथासमय भोजन आदि करता हुआ चम्पानगरी में पहुँचा। पहुँचकर (कूणिक राजा के समक्ष उपस्थित हुआ और उसे) जय-विजय शब्दों से बधाकर निवेदन किया–"स्वामिन् ! चेटक राजा ने कहा है–जैसे श्रेणिक राजा का पुत्र और चेलनादेवी का अंगज कूणिक राजा मेरा दोहिता है, वैसे ही वेहल्लकुमार भी है, इत्यादि। (चेटक राजा का पूर्वोक्त सब कथन कह दिया) इसलिए हे स्वामिन् ! चेटक राजा सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों वाला हार लौटाने को तैयार नहीं है और न ही वेहल्लकुमार को भेजेंगे।"

KING CHETAK'S REPLY

26. (a) On hearing the emissary's submission King Chetak said—"Beloved of gods ! As King Kunik is the son of King Shrenik and Queen Chelana and my grandson, so is prince Vehalla. (In other words, both are same for me.)

"King Shrenik had given Sechanak elephant and the eighteen string necklace to prince Vehalla during his life time. Therefore if King Kunik wants to take these two things he should give prince Vehalla half of his kingdom and state. Once he does so, I will return Sechanak elephant and the eighteen string necklace to King Kunik and also send back prince Vehalla.

With this candid reply King Chetak dismissed the emissary with formal greetings and honour.

After being dismissed by King Chetak the emissary came where his four-bell chariot was parked. He boarded the chariot and passing through Vaishali city, resting at suitable places, taking his breakfast and meals at proper time arrived at Champa city. There (coming to King Kunik) he

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

greeted the king with hails of victory and said—"My lord ! King Chetak has said—'As King Kunik is the son of King Shrenik and Queen Chelana and my grandson, so is prince Vehalla. (and he repeated King Chetak's aforesaid message)' Therefore, my lord ! King Chetak is not prepared to either return Sechanak elephant and the eighteen string necklace or send back prince Vehalla."

२६. (ख) तए णं से कूणिए राया दोच्चं पि दूयं सद्दावेत्ता एवं वयासी—"गच्छह णं तुमं, देवाणुप्पिया ! वेसालिं नयरिं। तत्थ णं तुमं मम अज्जगं चेडगं रायं जाव एवं वयासी—एवं खलु, सामी, कूणिए राया विन्नवेइ—"जाणि काणि रयणाणि समुप्पज्जंति, सव्वाणि ताणि रायकुलगामीणि। सेणियस्स रन्नो रज्जसिरिं करेमाणस्स पालेमाणस्स दुवे रयणा समुप्पन्ना, तं जहा—सेयणए गंधहत्थी, अट्ठारसवंके हारे। तं णं तुब्भे सामी, रायकुलपरंपरागयं ठिइयं अलोवेमाणा सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमारं पेसेह।"

तए णं से दूए कूणियस्स रन्नो, तहेव जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु सामी, कूणिए राया विन्नवेइ—जाणि काणि, वेहल्लं कुमारं पेसेह।"

तए णं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासी—"जइ चेव णं देवाणुप्पिया, कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए, जहा पढमं (जाव) वेहल्लं च कुमारं पेसेमि।" तं दूयं सक्कारेइ संमाणेइ पडिविसज्जेइ।

तए णं से दूए (जाव) कूणियस्स रन्नो वद्धावेत्ता एवं जाव—"चेडए राया आणवेइ—जह चेव णं, देवाणुप्पिया ! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवी अत्तए, (जाव) वेहल्लं कुमारं पेसेमि। तं न देइ णं, सामी, चेडए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं कुमारं नो पेसेइ।"

२६. (ख) चेटक राजा का उत्तर पाकर कूणिक राजा ने दूसरी बार पुनः दूत को बुलाकर कहा—"देवानुप्रिय ! तुम पुनः वैशाली नगरी जाओ। वहाँ तुम मेरे नाना चेटक राजा से इस प्रकार निवेदन करो—स्वामिन् ! कूणिक राजा यह प्रार्थना करता है—जो कोई भी रत्न राज्य में प्राप्त होते हैं, वे राजा के अधिकार के होते हैं। श्रेणिक राजा ने राज्य—शासन करते हुए, प्रजा का पालन करते हुए दो रत्न प्राप्त किये थे—सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों का हार। इसलिए स्वामिन् ! आप राजकुल—परम्परागत मर्यादा को अक्षुण्ण रखते हुए सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों वाला हार कूणिक राजा को वापस लौटा दें और वेहल्लकुमार को भी भेज दें।"

दूत ने कूणिक राजा की आज्ञा को सुना और सहर्ष स्वीकार किया। तत्पश्चात् वह वैशाली गया और कूणिक राजा की ओर से निवेदन किया—"स्वामिन् ! कूणिक राजा ने पुनः प्रार्थना की है कि जो कोई भी रत्न राज्य में प्राप्त होते हैं, वे राजकुलानुगामी राजा के अधिकार में होते हैं, अतः आप हाथी, हार और वेहल्लकुमार को वापस भेज दें।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तब चेटक राजा ने उस दूत से इस प्रकार कहा–"देवानुप्रिय ! जैसे कूणिक राजा श्रेणिक राजा का पुत्र, चेलनादेवी का अंगज है, वैसे ही वेहल्लकुमार भी है, इत्यादि जैसे पूर्व में कहा, वैसा सब पुनः यहाँ भी कहा।" और उस दूत का सत्कार-सम्मान करके विदा कर दिया।

तत्पश्चात् वह दूत लौटकर चम्पानगरी को वापस आ गया। कूणिक राजा का अभिनन्दन कर इस प्रकार निवेदन किया–"देवानुप्रिय ! चेटक राजा ने कहा है कि मेरे लिए जैसे कूणिक राजा श्रेणिक का पुत्र और चेलनादेवी का अंगजात प्रिय है, उसी प्रकार वेहल्लकुमार भी है। यावत् आधा राज्य देने पर ही कुमारवेहल्ल को भेजूँगा। इसलिए स्वामिन् ! चेटक राजा सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों वाला हार नहीं देंगे और न वेहल्लकुमार को वापस भेजेंगे।"

26. (b) On getting this reply from King Chetak, King Kunik once again called the emissary and said—"Beloved of gods ! Go to Vaishali once again. Reaching there convey this message to my maternal grandfather King Chetak—'My lord ! King Kunik submits this request—Whatever gems (valuables) are found in a kingdom traditionally belong to the king. During his reign and ruling over his subjects King Shrenik had obtained two gems, namely Sechanak elephant and the eighteen string necklace. Therefore, my lord ! following the norms of royal tradition you should kindly return Sechanak elephant and the eighteen string necklace. Also send back prince Vehalla.' "

The emissary listened to and happily accepted King Kunik's order. He then went to Vaishali and conveyed King Kunik's message—'My lord ! King Kunik once again submits his request that whatever gems (valuables) are found in a kingdom traditionally belong to the king. Therefore, kindly return Sechanak elephant and the eighteen string necklace. Also send back prince Vehalla."

King Chetak said to the emissary—"Beloved of gods ! As King Kunik is the son of King Shrenik and Queen Chelana and my grandson, so is prince Vehalla...." and so on as he had said earlier, and dismissed the emissary with formal greetings and honour.

The emissary returned to Champa city and after greeting King Kunik submitted—"My lord ! King Chetak has said—'Beloved of gods ! As King Kunik is the son of King Shrenik and Queen Chelana and my grandson, so is prince Vehalla.' (and he repeated King Chetak's aforesaid message) Therefore, my lord ! King Chetak is not prepared to either return Sechanak elephant and the eighteen string necklace or send back prince Vehalla."

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७. तए णं से कूणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते (जाव) मिसिमिसेमाणे तच्चं दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया, वेसालीए नयरीए चेडगस्स रन्नो वामेण पाएणं पायपीढं अक्कमाहि अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणावेहि, पणावित्ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलिंय भिउडिं निडाले साहट्टु चेडगं रायं एवं वयाही-हं भो चेडगराया, अपत्थियपत्थिया, दुरंत. (जाव) परिवज्जिया, एस णं कूणिए राया आणवेइ पच्चप्पिणाहि णं कूणियस्स रन्नो सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं च कुमारं पेसेहि, अहवा जुद्धसज्जो चिट्ठाहि। एस णं कूणिए राया सबले सवाहणे सखंधावारे णं जुद्धसज्जे हव्वमागच्छइ।

तए णं से दूए करयल., तहेव (जाव) जेणेव चेडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल. (जाव) वद्धावेत्ता एवं वयासी-"एस णं, सामी, ममं विणयपणिवत्ती। इयाणिं कूणियस्स रन्नो आण त्ति-चेडगस्स रन्नो वामेणं पाएण पायपीढं अक्कमइ, अक्कमित्ता आसुरुत्ते कुंतग्गेण लेहं पणावेइ, तं चेव सबलखंधावारे णं इह हव्वमागच्छइ।"

तए णं से चेडए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते (जाव) साहट्टु एवं वयासी-"न अप्पिणामि णं कूणियस्स रन्नो सेयणगं अट्ठारसवंकं हारं, वेहल्लं च कुमारं नो पेसेमि, एस णं जुद्धसज्जे चिट्ठामि" तं दूयं असक्कारियं असंमाणियं अवद्दारेणं निच्छुहावेइ।

२७. कूणिक राजा ने दूत के मुख से चेटक राजा के इस उत्तर को सुना और विचार किया। सुनकर वह क्रोध में लाल-पीला हो उठा। दाँतों को पीसते हुए पुनः तीसरी बार दूत को बुलाया। बुलाकर इस प्रकार कहा-"देवानुप्रिय ! तुम वैशाली नगरी जाओ और बायें पैर से सिंहासन को ठोकर मारकर चेटक राजा को भाले की नोंक पर रखकर यह पत्र देना। पत्र देकर क्रोध प्रदर्शित करते हुए, दाँत पीसते हुए ललाट पर तीन भृकुटि तानकर चेटक राजा से इस प्रकार कहना-"अरे ओ अकाल मृत्यु के इच्छुक भाग्यहीन यावत् निर्लज्ज चेटक राजा ! कूणिक राजा यह आदेश देता है कि कूणिक राजा को सेचनक गंधहस्ती एवं अठारह लड़ियों वाला हार लौटा दो और वेहल्लकुमार को वापस भेजो, नहीं तो युद्ध के लिए सज्जित हो जाओ। कूणिक राजा बल, वाहन और पैदल सेना के साथ युद्ध के लिए तैयार होकर शीघ्र ही यहाँ आ रहे हैं।"

दूत ने पहले की भाँति दोनों हाथ जोड़कर कूणिक राजा का आदेश स्वीकार किया। वह शीघ्र वैशाली नगरी पहुँचा। जहाँ चेटक राजा था वहाँ आया। आकर उसने पहले दोनों हाथ जोड़कर जय-विजय शब्दों से बधाकर इस प्रकार कहा-"स्वामिन् ! यह तो मेरी विनय भक्ति का शिष्टाचार है। किन्तु अब कूणिक राजा की आज्ञा तो यह है कि बायें पैर से चेटक राजा के सिंहासन को ठोकर मारो, ठोकर मारकर क्रोधित होकर भाले की नोंक से यह पत्र उनको दो और कहो युद्ध के लिए सज्ज हो जाओ, वे सेना सहित शीघ्र ही यहाँ आ रहे हैं।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तब दूत के मुख से यह धमकी सुनकर चेटक राजा चिन्तन कर क्रोधाभिभूत हो गया, होकर ललाट सिकोड़कर इस प्रकार उत्तर दिया–"मैं कूणिक राजा को सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों वाला हार नहीं लौटाऊँगा और न ही वेहल्लकुमार को वापस भेजूँगा, हाँ, मैं युद्ध के लिए तैयार हूँ।" ऐसा कहकर दूत को असत्कार–असम्मानपूर्वक अपमानित कर पिछले द्वार से निकाल दिया।

KING KUNIK'S WARNING

27. On hearing King Chetak's reply from the emissary King Kunik turned red with anger. Gnashing his teeth he called the emissary a third time and said—"Beloved of gods ! Go to Vaishali city and deliver this letter to King Chetak after kicking his throne with your left foot and pointing the tip of your spear at him. After delivering the letter display your anger by gnashing your teeth and raising your eyebrows to make three lines appear on your forehead. Expressing your anger thus, tell him—'Desirous of untimely death, O unfortunate and shameless King Chetak ! King Kunik commands you to either return Sechanak elephant and the eighteen string necklace and send back prince Vehalla or prepare yourself for a war. Soon King Kunik is coming here with all his military might including army, infantry and all, ready to wage a war.' "

As he had done earlier, the emissary accepted King Kunik's order joining his palms. He rushed to Vaishali and visited King Chetak. After hails of victory and formal greetings he said—"My lord ! I have expressed my modesty, devotion and courtesy for you. But King Kunik has ordered me to kick your throne with my left foot, display my anger, and deliver you his letter with the tip of my spear. Also to tell you that prepare yourself for war. He is soon coming here with his army."

Hearing this threat from the emissary and pondering over it King Chetak was filled with anger. He raised his eyebrows and said—"I will neither return Sechanak elephant and the eighteen string necklace nor send back prince Vehalla. Yes ! I am ready for a war." With these words he summarily dismissed the emissary to leave through the rear gate as a token of insult and dishonour.

युद्ध की तैयारी

२८. तए णं से कूणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते कालाईए दस कुमारे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–"एवं खलु, देवाणुप्पिया, वेहल्ले कुमारे ममं असंविदिएण सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं हारं अंतेउरं सभंडं च गहाय चम्पाओ निक्खमई, निक्खमित्ता वेसालिं अज्जगं (जाव) उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं मए सेयणगस्स गंधहत्थिस्स अट्ठारसवंकस्स अट्ठाए दूया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

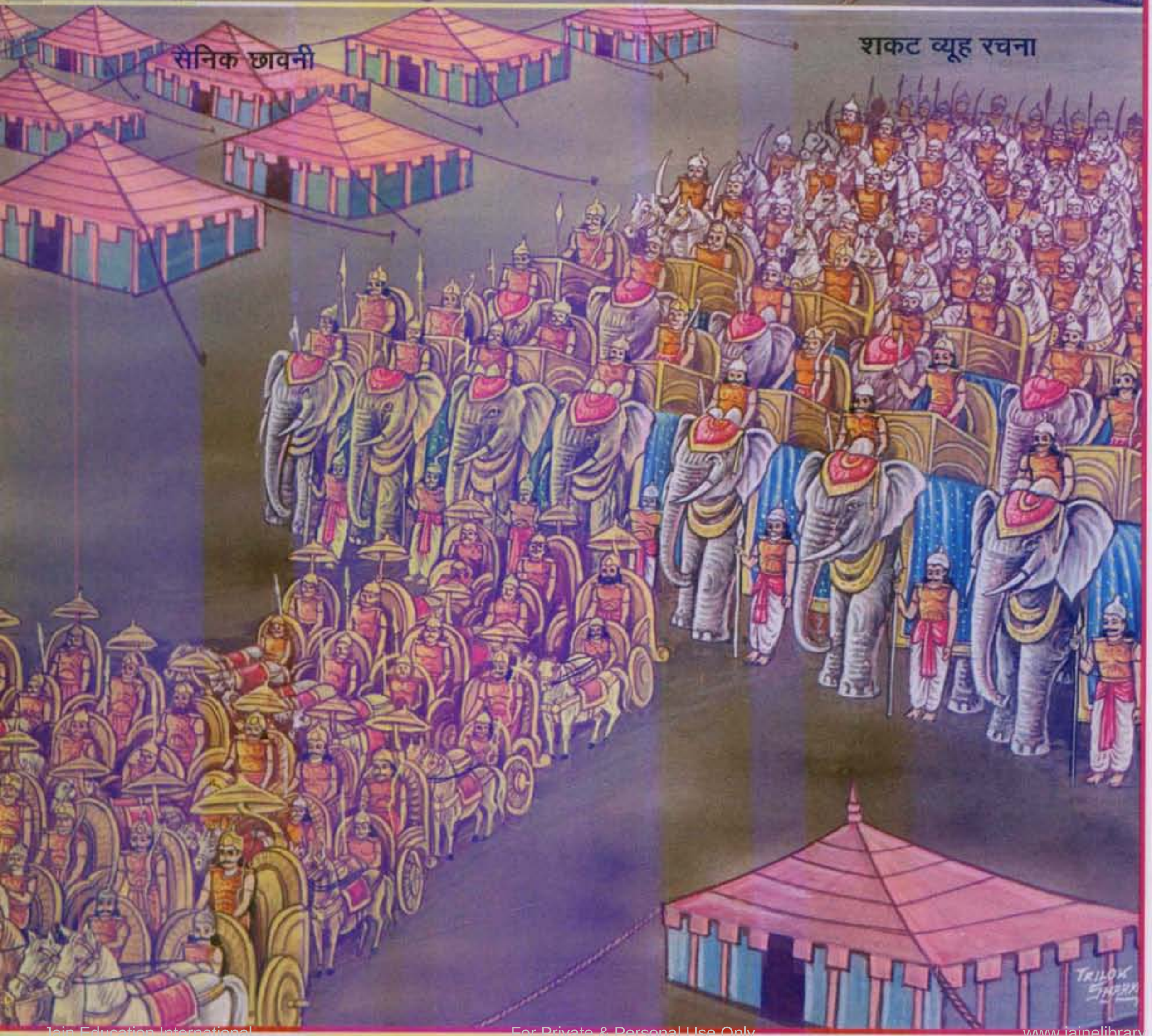

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

युद्ध रचना

दृश्य–१

गरुड़ व्यूह रचना

कूणिक राजा अपने दसों भाईयों के साथ ३३ हजार हाथियों यावत् ३३ कोटि पैदल सैनिकों की विशाल सेना लेकर युद्ध भूमि में आकर डटा। उसने अपनी सेना को गरुड़ की आकृति में स्थापित किया। जिसे गरुड़ व्यूह रचना कहा जाता है। सेना के बीच में कालकुमार आदि दसों भाई हाथियों पर स्थित युद्ध करते थे।

दृश्य–२

शकट व्यूह रचना

चेटक राजा अठारह गण राजाओं के साथ उनकी सत्तावन हजार हस्ति सेना तथा सत्तावन कोटि पदाति सेना को लेकर आया। उसने अपनी सेना की शकट (बैलगाड़ी के आकार में) व्यूह रचना की।

–वर्ग १, अ. १, सूत्र ३३

BATTLE FORMATION

SCENE-1

GARUDA VYUHA

King Kunik organized his army of thirty three thousand elephants... and so on up to... three hundred thirty million soldiers in eagle shaped battle formation (*garuda vyuha*). In the center were positioned his ten brothers including Kaal Kumar riding elephants.

SCENE-2

SHAKAT VYUHA

On the other side King Chetak organized his army of fifty seven thousand elephants... and so on up to... five hundred seventy million soldiers in cart shaped battle formation (*shakat vyuha*).

—Sec. I, Ch. 1, Sutra : 33

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पेसिया। ते य चेडएण रन्ना इमेणं कारणेणं पडिसेहिया अदुत्तरं च णं ममं तच्चे दूए असक्कारिए असंमाणिए अवद्दारेणं निच्छुहावेइ। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया, अम्हं चेडगस्स रन्नो जुत्तं गिण्हित्तए।''

तए णं कालाईया दस कुमारा कूणियस्स रन्नो एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति।

२८. तत्पश्चात् कूणिक राजा दूत से यह समाचार सुनकर और उस पर विचार कर क्रोधित हुआ। फिर काल आदि दस कुमारों को बुलाया और बुलाकर इस प्रकार कहा–''देवानुप्रियो ! बात यह है कि वेहल्लकुमार मुझे बिना बताये ही सेचनक गंधहस्ती तथा अठारह लड़ियों वाला हार और अन्तःपुर–परिवार सहित सब सामान लेकर चम्पा से भाग निकला है और वैशाली में आर्य चेटक का आश्रय लेकर रह रहा है। मैंने सेचनक गंधहस्ती और अठारह लड़ों का हार देने के लिए तथा उसे वापस भेजने के लिए दूत भेजा। चेटक राजा न हाथी, हार और वेहल्लकुमार को भेजने से इंकार कर दिया; इतना ही नहीं, मेरे तीसरे दूत को तिरस्कृत, अपमानित कर पिछले द्वार से बाहर निकलवा दिया। इसलिए हे देवानुप्रियो ! अब हमें चेटक राजा के साथ युद्ध करना चाहिए, उसे दण्ड देना चाहिए।''

तब उन काल आदि दस कुमारों ने कूणिक राजा के इस विचार को विनयपूर्वक स्वीकार कर लिया।

WAR PREPARATIONS

28. Getting this news from the emissary and pondering over it, King Chetak was filled with anger. He then called the ten princes including Kaal Kumar and said—"Beloved of gods ! I would like to inform you that without informing me prince Vehalla has eloped from Champa with his family, household things, Sechanak elephant and the eighteen string necklace. He has gone to Vaishali and settled there under protection of Arya Chetak. I had sent an emissary to King Chetak to return Sechanak elephant and the eighteen string necklace and also send back prince Vehalla. But King Chetak refused to return Sechanak elephant, the eighteen string necklace and prince Vehalla as they are under his protection. Not only this, he insulted and dismissed my third emissary through the rear gate. Therefore, O Beloved of gods ! We should now fight a war with King Chetak and punish him."

The ten princes including Kaal Kumar humbly accepted King Kunik's proposal.

काल आदि दस कुमारों की युद्धार्थ सज्जा

२९. तए णं से कूणिए राया कालाईए दस कुमारे एवं वयासी–''गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया, सएसु सएसु रज्जेसु; पत्तेयं पत्तेयं ण्हाया (जाव) पायच्छित्ता हत्थिखंधवरगया, पत्तेयं पत्तेयं तिहिं दंतिसहस्सेहिं एवं तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं आससहस्सेहिं तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए. (जाव) रवेणं सएहिंतो सएहिंतो नयरेहिंतो पडिनिक्खमह, पडिनिक्खमित्ता ममं अंतियं पाउब्भवह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते कालाईया दस कुमारा कूणियस्स रन्नो एयमट्ठं सोच्चा सएसु सएसु रज्जेसु पत्तेयं पत्तेयं ण्हाया जाव तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिंतो सएहिंतो नयरेहिंतो पडिनिक्खमन्ति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अंगा जणवए जेणेव चम्पा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागया करयल. जाव वद्धावेंति।

२९. तदनन्तर वह कूणिक राजा काल आदि दस कुमारों से इस प्रकार कहने लगा–"देवानुप्रियो ! आप लोग अपने–अपने राज्यों में जाओ, वहाँ जाकर प्रत्येक राजकुमार स्नान आदि से शुद्ध होकर श्रेष्ठ हाथी पर आरूढ़ होकर प्रत्येक अपने तीन–तीन हजार हाथियों, तीन हजार रथों, तीन हजार घोड़ों और तीन कोटि मनुष्यों–सैनिकों को साथ लेकर समस्त ऋद्धि, समस्त वैभव यावत् सब प्रकार के सैन्य, समुदाय को साथ लेकर दुन्दुभि के घोष की ध्वनि गुँजाते हुए अपने–अपने नगरों से प्रस्थान करो और मेरे पास आकर एकत्रित होओ।

वे कालादि दसों कुमार कूणिक राजा की आज्ञा को सुनकर अपने–अपने राज्यों में आये। स्नान करके तैयार हुए। (तीन–तीन हजार हाथियों, रथों, घोड़ों) यावत् तीन कोटि पैदल सैनिकों को साथ लेकर समस्त ऋद्धि यावत् विविध वाद्यघोष–निनादों के साथ अपने–अपने नगरों से निकलते हैं, निकलकर जहाँ अंग जनपद की चम्पानगरी थी, वहाँ कूणिक राजा के पास आते हैं। आकर दोनों हाथ जोड़कर जय–विजय शब्दों से उसका अभिनन्दन करते हैं।

TEN PRINCES PREPARE FOR WAR

29. Then King Kunik said to the ten princes including Kaal Kumar—"Beloved of gods ! Go to your respective kingdoms and after due lustration by taking bath and performing other rituals ride the best of your elephants. After that each one of you should assemble his army consisting of three thousand elephants, three thousand chariots, three thousand horses and thirty million soldiers. With all your opulence and grandeur along with the great army leave your respective kingdoms and march with drum beats to join me.

On getting these instructions from King Kunik the ten princes including Kaal Kumar returned to their respective kingdoms and after due lustration by taking bath... and so on up to... and thirty million soldiers. With all their opulence and grandeur along with the great army they left their respective kingdoms and marched with drum beats and sounds of a variety of musical instruments to join King Kunik at Champa city, the capital of Anga state. Arriving there they joined their palms and greeted him with hails of victory.

कूणिक की युद्ध–सज्जा

३०. तए णं से कूणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हय–गय–रह–जोह–चाउरंगिणिं सेणं संनाहेह, ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह" जाव पच्चप्पिणंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ. (जाव) पडिनिग्गिच्छिइ पडिनिग्गिच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव नरवई दुरूढे।

तए णं से कूणिए राया तिहि दंतिसहस्सेहिं जाव रवेणं चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कालाईया दस कुमारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कालाइएहिं दसहिं कुमारेहिं सद्धिं एगओ मेलायंति।

तए णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दंत्तिसहस्सेहिं तेत्तीसाए आससहस्सेहिं तेत्तीसाए रहसहस्सेहिं तेत्तीसाए मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए (जाव) रवेणं सुहेहिं वसईहिं सुहेहिं पायरासेहिं नाइविप्पगिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे वसमाणे अंगजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव विदेहे जणवए, जेणेव वेसाली नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

३०. तब उस कूणिक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों–सेवकों को बुलाया और बुलाकर आज्ञा दी– "देवानुप्रियो ! शीघ्र ही मेरे बैठने योग्य अभिषेक किये हुए हस्ति रत्न–हाथियों में श्रेष्ठ हाथी को सुसज्जित करो, घोड़े, हाथी, रथ और श्रेष्ठ योद्धाओं से सुगठित चतुरंगिणी सेना को युद्ध के लिए तैयार करो और फिर मेरी आज्ञा पूरी होने पर मुझे सूचित करो। तैयार होने पर वे सेवक आज्ञानुरूप कार्य सम्पन्न होने की सूचना देते हैं।

तत्पश्चात् कूणिक राजा अपने स्नानगृह में प्रविष्ट हुआ। स्नान करके वस्त्राभूषणों से सज्ज होकर बाहर सभाभवन में आया। वहाँ विशालकाय हाथी पर आरूढ़ हुआ।

तत्पश्चात् कूणिक राजा तीन हजार हाथियों, तीन हजार अश्वों के साथ यावत् वाद्य यन्त्रों के उद्घोषपूर्वक चम्पानगरी के बीचोंबीच में से होता हुआ जहाँ काल आदि दस कुमार ठहरे थे वहाँ पहुँचा और काल आदि दस कुमारों के साथ मिला।

इसके बात तेंतीस हजार हाथियों, तेतीस हजार घोड़ों, तेतीस हजार रथों और तेतीस कोटि मनुष्य सैनिकों से परिवृत हुआ सर्व ऋद्धि यावत् वाद्य निर्घोषों के साथ सुविधाजनक स्थानों पर पड़ाव डालता हुआ, सुखपूर्वक प्रातःकाल का भोजन आदि ग्रहण करता हुआ, अधिक लम्बी यात्रा न करके नजदीक–नजदीक पड़ाव डालता हुआ अंग जनपद के मध्य भाग में से होते हुए जहाँ विदेह जनपद की राजधानी वैशाली नगरी थी उस ओर जाने के लिए प्रस्थान किया।

KUNIK'S PREPARATIONS FOR WAR

30. King Kunik called his attendants and instructed—"Beloved of gods ! Prepare for me the best of elephants suitable for the use of a monarch. Also call the four pronged army with the best of horses, elephants, chariots, and warriors to attention or a state of readiness. Inform me when you do all this. The attendants did as instructed and informed the king accordingly.

King Kunik then entered his bathroom. After taking his bath, getting dressed and adorning himself with ornaments he came to the outer court. There he rode the great elephant.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Now King Kunik, with three thousand elephants, three thousand horses,... and so on up to... marched with drum beats and sounds of a variety of musical instruments, crossed Champa city and joined the ten princes including Kaal Kumar where they had camped.

Surrounded by thirty three thousand elephants, thirty three thousand chariots, thirty three thousand horses and three hundred thirty million soldiers; with all his opulence King Kunik marched with drum beats and sounds of a variety of musical instruments. Resting at suitable places, taking his breakfast and meals at proper time, camping after covering limited stretches and without unduly extending the march, he passed through the Anga state and moved towards Vaishali, the capital of Videh state.

गण–राजाओं के साथ चेटक का परामर्श

३१. (क) तए णं से चेडए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे नव मल्लई नव लेच्छई कासी कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाओ सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदिएणं सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय इहं हव्वमागए। तए णं कूणिएणं सेयणगस्स अट्ठारसवंकस्स य अट्ठाए तओ दूया पेसिया। ते य मए इमेणं कारणेणं पडिसेहिया। तए णं से कूणिए ममं एयमट्ठं अपडिसुणमाणे चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुद्धसज्जे इहं हव्वमागच्छइ।

तं किं णं देवाणुप्पिया, सेयणगं अट्ठारसवंकं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामो ? वेहल्लं कुमारं पेसेमो ? उदाहु जुज्झित्था ?"

३१. (क) कूणिक राजा का युद्ध के लिए प्रस्थान का समाचार प्राप्त होने पर चेटक राजा ने काशी–कोशल देशों के नौ लिच्छवी और नौ मल्लकी इन अठारह गणराजाओं को परामर्श करने हेतु आमंत्रित किया और एकत्र होने पर उनसे कहा–"देवानुप्रियो ! कूणिक राजा को बिना सूचित किये वेहल्लकुमार सेचनक हाथी और अठारह लड़ों वाला हार लेकर यहाँ आ गया है। कूणिक ने सेचनक हाथी और अठारह लड़ों के हार को वापस लेने के लिए यहाँ तीन बार दूत भेजे। किन्तु मैंने इस कारण [अर्थात् स्वयं श्रेणिक राजा ने अपनी जीवित अवस्था में उसे ये दोनों वस्तुएँ प्रदान की हैं, फिर भी हार–हाथी चाहते हो तो उसे आधा राज्य दो, यह उत्तर देकर] उन दूतों को वापस लौटा दिया। तब कूणिक मेरी इस बात को स्वीकार न करके चतुरंगिणी सेना के साथ युद्ध के लिए तैयार होकर यहाँ आ रहा है।

तो क्या देवानुप्रियो ! सेचनक हाथी और अठारह लड़ों वाला हार वापस कूणिक राजा को लौटा दें ? वेहल्लकुमार को उसे सौंप दें अथवा युद्ध करें ?"

CHETAK'S CONSULTATIONS WITH HEADS OF REPUBLICS

31. (a) When King Chetak got the news of King Kunik's march, he invited the eighteen kings including nine heads of the Lichchhivi republics

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

and nine of Mallaki republics of Kashi-Kaushal states for consultation. When they assembled he said—"Beloved of gods ! Without informing King Kunik prince Vehalla has come here with Sechanak elephant and the eighteen string necklace. Kunik had sent emissaries three times to get Sechanak elephant and the eighteen string necklace. But I refused for a valid reason (King Shrenik had given Sechanak elephant and the eighteen string necklace to prince Vehalla during his life time. Therefore if King Kunik wants to take these two things he should give prince Vehalla half of his kingdom and state.) and sent back the emissaries. King Kunik did not accept my proposal and is marching here with his four pronged army to wage a war.

"Under the circumstances, Beloved of gods ! should we return Sechanak elephant and the eighteen string necklace ? Should we surrender prince Vehalla to him or fight a war ?

३१. (ख) तए णं नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो चेडगं रायं एवं वयासी–''न एयं सामी ! जुत्तं वा पत्तं वा रायसरिसं वा, जं णं सेयणगं अट्ठारसवंकं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणिज्जइ, वेहल्ले य कुमारे सरणागए पेसिज्जइ। तं जइ णं कूणिए राया चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुद्धसज्जे इहं हव्वमागच्छइ, तए णं अम्हे कूणिएणं रन्ना सद्धिं जुज्झामो।''

तए णं से चेडए राया ते नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो एवं वयासी–'जइ णं देवाणुप्पिया, तुब्भे कूणिएणं रन्ना सद्धिं जुज्झह, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया, सएसु सएसु रज्जेसु, ण्हाया जहा कालाईया (जाव) जएणं विजएणं वद्धावेंति।

तए णं से चेडए राया कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–''आभिसेक्कं जहा कूणिए'' (जाव) दुरूढे।

३१. (ख) तब काशी–कोशल के नौ मल्लकी और नौ लिच्छवी अठारह गणराजाओं ने चेटक राजा से कहा–''स्वामिन् ! यह न तो उचित है, न समयोचित है और न ही राजा की गरिमा के अनुरूप ही है कि सेचनक और अठारह लड़ों वाला हार कूणिक राजा को लौटा दिया जाए और शरणागत वेहल्लकुमार को वापस लौटा दिया जाये। इसलिए जब कूणिक राजा चतुरंगिणी सेना को लेकर युद्ध के लिए तैयार होकर यहाँ आ रहा है तब हम कूणिक राजा के साथ युद्ध करेंगे।''

उन नौ मल्लकी, नौ लिच्छवी, काशी–कोशल के अठारह गणराजाओं से चेटक राजा ने कहा–''यदि आप देवानुप्रिय ! कूणिक राजा से युद्ध करने के लिए तैयार हैं तो देवानुप्रियो ! पहले अपने–अपने राज्यों में जाइए और स्नान आदि से निवृत्त हो कालादि कुमारों की तरह [युद्ध के लिए सुसज्जित होकर अपनी–अपनी चतुरंगिणी सेना के साथ चम्पा में आइए। तब अठारहों राजा अपने–अपने राज्यों में गये और युद्ध के लिए सुसज्जित होकर आये।] आकर उन्होंने चेटक राजा को जय–विजय शब्दों के साथ बधाई दी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसके बाद चेटक राजा ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों–सेनाधिकारियों को बुलाया और यह आज्ञा दी– ''मेरे आभिषिक्त हस्तिरत्न को सजाओ, आदि समस्त वर्णन कूणिक राजा की तरह यहाँ समझना चाहिए।

31. (b) The eighteen kings including nine heads of the Lichchhivi republics and nine of Mallaki republics of Kashi-Kaushal states said to King Chetak—"Lord ! It is neither proper, nor opportune or suitable to the prestige of a king that we return Sechanak elephant and the eighteen string necklace or surrender prince Vehalla. Therefore, when King Kunik is marching here with his four pronged army to wage a war we will face him by fighting the war."

King Chetak said to the eighteen kings including nine heads of the Lichchhivi republics and nine of Mallaki republics of Kashi-Kaushal states—"Beloved of gods ! If you are ready to fight a war with King Kunik, please return to your respective kingdoms and after due lustration by taking bath and performing other rituals... and so on up to... Arriving there they joined their palms and greeted him with hails of victory. *[same as mentioned in case of ten princes including Kaal Kumar in aphorism-29]*

King Chetak called his attendants and instructed—"Beloved of gods ! Prepare for me the best of elephants suitable for the use of a monarch... and so on... (Other details are same as mentioned in aphorism-30 about King Kunik)

चेटक राजा का युद्ध–क्षेत्र में आगमन

३२. तए णं से चेडए राया तिहिं दंतिसहस्सेहिं, जहा कूणिए (जाव) वेसालिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाओ तेणेव उवागच्छइ।

तए णं से चेडए राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं, सत्तावन्नाए आससहस्सेहिं, सत्तावन्नाए रहसहस्सेहिं सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए. जाव रवेणं सुहेहिं वसहीहिं पायरासेहिं नाइविगिट्ठेहिं अंतरेहिं वसमाणे वसमाणे विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खन्धावारनिवेसणं करेइ करित्ता कूणियं रायं पडिवालेमाणे जुद्धसज्जे चिट्ठइ।

तए णं से कूणिए राया सव्विड्ढीए (जाव) रवेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेडयस्स रन्नो जोयणंतरियं खंधावारनिवेसं करेइ।

३२. (वैशाली में अठारह गणराजाओं के आ जाने के पश्चात्) वह चेटक राजा जैसे कूणिक राजा तीन हजार हाथियों आदि के साथ निकला, उसी प्रकार वैशाली नगरी के बीचोंबीच होकर निकला। जहाँ वे नौ मल्लकी, नौ लिच्छवी काशी–कोशल के अठारह गण राजा उपस्थित थे, वहाँ आया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वहाँ आकर चेटक राजा सत्तावन हजार हाथियों, सत्तावन हजार घोड़ों, सत्तावन हजार रथों और सत्तावन कोटि मनुष्य सैनिकों को साथ लेकर सर्व ऋद्धि-वैभव के साथ वाद्य यंत्रों के उच्च्य घोष के साथ शुभ स्थानों पर पड़ाव डालता हुआ, प्रातःकालीन भोजन ग्रहण करता हुआ और निकट-निकट विश्राम करते हुए विदेह जनपद के मध्य चलते-चलते जहाँ राज्य का सीमान्त-प्रदेश था, वहाँ आया। आकर स्कन्धावार का निवेश किया-सेना की छावनी डाली तथा कूणिक राजा की प्रतीक्षा करते हुए युद्ध के लिए सन्नद्ध होकर ठहरा।

इधर वह कूणिक राजा अपने समस्त ऋद्धि-वैभव के साथ यावत् कोलाहल करता हुआ जहाँ अपना सीमांत प्रदेश था, वहाँ आया। आकर चेटक राजा के पड़ाव से एक योजन की दूरी पर उसने भी अपनी सेना का पड़ाव किया।

KING CHETAK IN THE ARENA OF WAR

32. (When the eighteen heads of republics arrived in Vaishali) King Chetak, like King Kunik, came out with three thousand elephants (etc.) and marching through Vaishali came where the eighteen kings including nine heads of the Lichchhivi republics and nine of Mallaki republics of Kashi-Kaushal states had camped.

Surrounded by fifty seven thousand elephants, fifty seven thousand chariots, fifty seven thousand horses and five hundred seventy million soldiers and with all his opulence, King Chetak marched with drum beats and sounds of a variety of musical instruments. Resting at suitable places, taking his breakfast and meals at proper time, camping after covering limited stretches, he passed through the Videh state and reached the state border. There he established forward cantonment and waited for King Kunik in a state of full alert.

On the other side King Kunik with all his opulence and glory made a tumultuous arrival in the border area and camped one *Yojan* away from King Chetak's camp.

युद्धार्थ व्यूह-रचना

३३. (क) तए णं ते दोन्नि वि रायाणो रणभूमिं सज्जावेंति, सज्जावित्ता रणभूमिं जयंति।

तए णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं जाव मणुस्सकोडीहिं गरुलवूहं रएइ रइत्ता गरुलवूहेणं रहमुसलं संगामं उवायाए।

तए णं से चेडगे राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं (जाव) सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीहिं सगडवूहं रएइ रइत्ता सगडवूहेणं रहमुसलं संगामं उवायाए।

तए णं ते दोण्ह वि राईणं अणीया संनद्धा (जाव) गहियाउहपहरणा मंगतिएहिं फलएहिं, निक्किट्ठाहिं असीहिं, अंसागएहिं तोणेहिं, स्जीवेहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लालियाहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डावाहिं, ओसारियाहिं उरुघण्टाहिं, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठसीहनाय-बोलकलकलरवेण समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा सव्विड्ढीए जाव रवेणं हयगया हयगएहिं, गयगया गयगएहिं, रहगया रहगएहिं, पायत्तिया पायत्तिएहिं अन्नमन्नेहिं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था।

३३. (क) तदनन्तर दोनों राजाओं ने रणभूमि को सज्जित करवाया, (झाड़-झंखाड़ साफ करवाकर युद्ध के योग्य बनाया) सज्जित करके रणभूमि में अपनी-अपनी जय-विजय के लिए अर्चना की।

इसके बाद कूणिक राजा ने तेतीस हजार हाथियों आदि तथा तेतीस कोटि पैदल सैनिकों से युक्त होकर गरुड़व्यूह की रचना की। रचना करके गरुड़व्यूह द्वारा रथ-मूसल संग्राम की तैयारी की।

इधर चेटक राजा ने सत्तावन हजार हाथियों यावत् सत्तावन कोटि पदाति सैनिकों द्वारा शकट-व्यूह की रचना की और रचना करके शकट-व्यूह द्वारा रथ-मूसल संग्राम को लक्ष्य में रखकर युद्धभूमि में प्रवृत्त हुआ।

तब दोनों राजाओं की सेनाएँ युद्ध के लिए सन्नद्ध हो, कवच आदि धारण कर, आयुधों (रक्षात्मक शस्त्र) और प्रहरणों (प्रहारक शस्त्र) को लेकर, हाथों में ढालों को बाँधकर, तलवारें म्यान से बाहर निकालकर, कंधों पर लटकें तूणीरों से डोरी खींचकर, धनुषों से छोड़े हुए बाणों से, फटकारते हुए बायें हाथों से, जंघाओं में बँधी हुई घंटिकाओं की तुमुल ध्वनियों से, बजती हुई तुरहियों से एवं प्रचण्ड हुँकारों के तुमुल कोलाहल से समुद्र-गर्जना जैसा गर्जारव करते हुए सर्वऋद्धि यावत् वाद्य यंत्रों के स्वरों से गुंजाते हुए अश्वारोही परस्पर अश्वारोहियों से; गजारूढ़ गजारूढ़ों से, रथारोही रथारोहियों से और पैदल चलने वाले पैदल चलने वालों से परस्पर युद्ध करने लगे।

BATTLE FORMATION

33. (a) After that both the kings got the battle field prepared (by clearing bushes and other obstacles) and performed auspicious rites for their respective victory.

Now King Kunik organized his army of thirty three thousand elephants... and so on up to... three hundred thirty million soldiers in eagle shaped battle formation (*garuda vyuha*). He prepared for the *Rath-musal* battle in the eagle formation

On the other side King Chetak organized his army of fifty seven thousand elephants... and so on up to... five hundred seventy million soldiers in cart shaped battle formation (*shakat vyuha*). He prepared for the *Rath-musal* battle in the cart formation

Thus getting ready for war wearing armours (etc.), carrying countering weapons (*aayudh*) and attacking weapons (*praharan*), tying shields on hands, drawing swords from sheaths, and drawing arrows from quivers; the two armies, with all their prowess accompanied by drum beats and sounds of a variety of musical instruments, marched and engaged.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Launching arrows, waving left hands, emitting tumultuous sound from bells tied to thighs, blowing trumpets, shouting loud challenges like roar of a sea, horse riders started fighting with horse riders, elephant riders with elephant riders, charioteers with charioteers and foot soldiers with foot soldiers.

३३. (ख) तए णं ते दोण्ह वि रायाणं अणीया नियगसामीसासणाणुरत्ता महया जणक्खयं जणवहं जणप्पमद्दं जणसंवट्टकप्पं नच्चन्त कबन्धवारभीमं रुहिरकद्दमं करेमाणा अन्नमन्नेणं सद्धिं जुज्झन्ति।

तए णं से काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव मणूसकोडीहिं गरुलवूहेणं एक्कारसमेणं खंधेणं रहमुसलं संगामं संगामेमाणं हयमहिय. जहा भगवया कालीए देवीए परिकहियं (जाव) जीवियाओ ववरोविए।

"तं एवं खलु, गोयमा, काले कुमारे एरिसएहिं आरंभेहिं जाव एरिसएणं असुभकडकम्मपब्भारेणं काले मासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने।"

३३. (ख) तब वहाँ दोनों राजाओं की सेनाएँ अपने-अपने स्वामी के आदेश-अनुशासन पालन में सावधान हुई अपार जनसंहार, जन-वध, जन-मर्दन और भय आतंक उत्पन्न करने लगी। जिस प्रकार संवर्तक वायु (चक्करदार तूफान में) वस्तुएँ घूमती-नाचती दीखती हैं, उसी प्रकार युद्ध-स्थल में कट-कटकर गिरते हुए नरमुण्ड नाच रहे थे। खून के कीचड़ से भूमि भीग रही थी। योद्धा इस प्रकार का घोर युद्ध करने लगे।

तदनन्तर कालकुमार तीन हजार हाथियों यावत् तीन करोड़ मनुष्य सैनिकों से युक्त गरुड़व्यूह की रचना करके अपनी सेना के ग्यारहवें भाग सहित कूणिक राजा का साथ देता हुआ रथ-मूसल संग्राम में राजा चेटक से युद्ध करते हुए (उसके एक ही अमोघ बाण से) आहत और मथित हो गया, इत्यादि जैसा भगवान महावीर ने कालीदेवी से कहा था, तदनुसार मृत्यु को प्राप्त हो गया।

(-यह वृत्तान्त सुनाकर भगवान महावीर ने कहा)-अतएव गौतम ! कालकुमार इस प्रकार के घोर आरम्भों से, इस प्रकार के कृत अशुभ कृत्यों के कारण मरण प्राप्त कर चौथी पंकप्रभा पृथ्वी के हेमाभ नरकावास में नैरयिक रूप से उत्पन्न हुआ है।

33. (b) Enthused to follow the command and control of their respective kings, the two armies started wreaking unending slaughter, killing, repression, fear and terror. The dismembered and falling heads were bobbing and swinging like things caught in a whirlwind. The ground was turning slimy with blood. The warriors thus fought a fierce battle.

Kaal Kumar, along with three thousand elephants... and so on up to... thirty million foot soldiers in eagle formation, supporting King Kunik and forming the eleventh part of his army, fought in the *Rath-musal* battle against King Chetak... and so on up to... In just one shot Kaal Kumar fell

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

on the ground like a broken peak of a hill, as told by Bhagavan Mahavir to Queen Kaali, and died on the spot.

(Narrating these details Bhagavan Mahavir added—) Therefore, Gautam ! As Kaal Kumar embraced his death due to intense sinful activities and evil deeds, he has taken birth in the *Hemabh Narak* (name of a specific area in the infernal world) of the *Pankaprabha Prithvi* (the fourth hell) as a *nairayik* (infernal being).

विवेचन– गरुड़–व्यूह क्या है ?

प्रस्तुत सूत्र में गरुड़–व्यूह तथा शकट–व्यूह की रचना का उल्लेख है। आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने अपनी हिन्दी टीका में इस विषय पर प्रकाश डाला है। गरुड़–व्यूह का अर्थ है, गरुड़ की भाँति जिस सेना का आगे का भाग विशाल हो, जिसे देखकर शत्रुसेना भयभीत हो जाये तथा वह प्रथम आक्रमण कर सकती हो।

शकट–व्यूह रचना का अभिप्राय है, सबसे आगे के भाग में ज्यादा शकट (रथ) हो, बीच के भाग में उनकी संख्या कम हो और अन्त का पिछला भाग फिर विशाल हो। यह शकट (गाड़ी) के आकार में होता है।

कोणिक ने गरुड़–व्यूह की रचना की, चेटक राजा ने अपनी सेना शकट–व्यूह में स्थापित की। रथ–मूसल संग्राम के विषय में विशेष वर्णन भगवतीसूत्र, शतक ७, उद्देशक ९ में प्राप्त होता है जिसका सार निम्न प्रकार है–

रथ–मूसल संग्राम

प्रस्तुत सूत्र ३३ में बताया है–'रथ–मूसल' संग्राम को लक्ष्य करके कूणिक ने गरुड़–व्यूह की रचना की। भगवतीसूत्र में कूणिक–चेटक के दो महायुद्धों का वर्णन है। इसमें पहले दिन महाशिलाकंटक युद्ध हुआ तथा दूसरे दिन रथ–मूसल संग्राम। और इस युद्ध की परिणति राजा चेटक की सेना की पराजय तथा कूणिक की विजय के रूप में हुई। किन्तु निरयावलिका के प्रस्तुत प्रसंग में पहले दस दिनों के युद्ध में कूणिक के पक्ष के कालकुमार आदि दसों भाइयों की मृत्यु का उल्लेख है। इससे अनुमान लगता है कि इस दस दिन के युद्ध के पश्चात् महाशिलाकंटक संग्राम व रथ–मूसल संग्राम हुआ। प्राचीन ग्रन्थों की कथा भी इसी का संकेत करती है।

कथानुसार दस दिन के महायुद्ध में कोणिक के दसों सेनापति (दशों भाई) चेटक राजा के एक–एक बाण प्रहार से मृत्यु को प्राप्त हो गये। तब ग्यारहवें दिन कूणिक की बारी थी। कूणिक घबरा गया। सोचा–'चेटक राजा का बाण अमोघ होता है, मैं उसके समक्ष किसी भी प्रकार जीत नहीं सकूँगा।' इसलिए उसने उपाय सोचा। तीन दिन का युद्ध विराम किया। अष्टम तप करके अपने पूर्वभव के मित्र देवों, शक्रेन्द्र तथा असुरेन्द्र–चमरेन्द्र को स्मरण किया।

शक्रेन्द्र ने कहा–"मैं चेटक राजा को नहीं मार सकता, क्योंकि वह परम वीर दृढ़धर्मी श्रावक है। फिर भी मित्र के नाते तुम्हारी रक्षा का उपाय करता हूँ। शक्रेन्द्र ने कूणिक की मित्रता निबाहने के लिए वज्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवशक्ति से निर्मित विनाशकारी रथ

7

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-७

Illustration No. 7

रथ-मूसल संग्राम

दस दिनों के महायुद्ध में दसों भाईयों की मृत्यु होने के पश्चात् चिन्तित कूणिक ने अपनी विजय के लिए देव सहायता का उपाय सोचा। पूर्वभव के मित्र देव शक्रेन्द्र व असुरेन्द्र (चमरेन्द्र) की सहायता माँगी।

शक्रेन्द्र ने वज्र के समान अमोघ वस्त्र व कवच कूणिक को दिया तथा चमरेन्द्र ने महाशिला कंटक व रथमूसल युद्ध यंत्रों की विकुर्वणा की।

यह देव शक्ति से चालित अद्‌भुत रथ जब युद्ध भूमि में आया तो उसके मूसल जैसे लोहे के तीक्ष्ण पहिये चिनगारियाँ छोड़ते हुए शत्रु सेना को दलते-मथते चलने लगे। रणभूमि शत्रु सेना के रक्त से कीचड़ युक्त हो गई।

इस युद्ध में चेटक का अमोघ बाण भी निष्फल रहा। अन्त में कूणिक ने वैशाली का विनाश कर डाला।

-वर्ग १/१, सूत्र ३३

RATH-MUSAL BATTLE

In the first ten days of the great war Kunik's ten brothers were killed and he got worried. He thought of seeking divine help. He sought help from Shakrendra and Chamarendra, friendly gods from his past birth.

Shakrendra gave a diamond hard armour to Kunik and Chamarendra created two war-machines called Mahashilakantak and Rath-musal.

When in the battlefield this strange divine chariot with its mace like wheels with pointed projections emitted sparks and crushed the opposing army. The battlefield became slimy with blood.

In this battle King Chetak's invincible arrow also failed. In the end Kunik destroyed Vaishali.

—Sec. I, Ch. 1, Sutra : 33

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समान अमोघ वस्त्र और कवच की विकुर्वणा की। जिसे धारण करके कूणिक सुरक्षित हो गया। चमरेन्द्र ने महाशिलाकंटक व रथ–मूसल युद्ध–यंत्रों की विकुर्वणा की।

महाशिलाकंटक संग्राम में कूणिक की सेना द्वारा फेंका गया, तृण, काष्ठ, कंकर, पत्थर शत्रु सेना पर ऐसा भारी प्रहार करता था जैसे महाशिला उनके ऊपर गिर पड़ी हो और शत्रु पक्ष का प्रचण्ड शस्त्र भी कंटक जैसा तेजहीन हो जाता। इस युद्ध में चौरासी लाख मनुष्य मारे गये। इस युद्ध में चेटक का सेनापति वरुण नाग का पौत्र था, जो स्वयं तत्त्वज्ञ श्रमणोपासक था। इसकी प्रतिज्ञा थी कि वह निरपराधी जीव को नहीं मारेगा। वरुण ने कूणिक के सेनापति वज्री को मार गिराया। कूणिक दिव्य कवच से सुरक्षित था, उस पर चेटक राजा ने बाण चलाया, परन्तु उसका बाण कवच को नहीं भेद सका। प्रतिज्ञा अनुसार चेटक ने दूसरा बाण नहीं चलाया।

दूसरे दिन जब युद्ध हुआ तो कूणिक के पक्ष के जो रथ चलते थे, जिनमें घोड़े, सारथी व योद्धा कोई नहीं होता, अर्थात् मानव–पशुरहित स्वचालित रथ थे। उस रथ में मूसल लगे थे, रथ–प्रतिपक्षी सेना को मूसल से मथता, नष्ट करता हुआ रक्त का कीचड़ करता हुआ जन–प्रलय मचाता रणभूमि में दौड़ता था। इस युद्ध में छियानवें लाख मनुष्यों का संहार हुआ। चेटक का अमोघ बाण आज भी व्यर्थ चला गया।

इस पराजय से क्षुब्ध होकर चेटक राजा वैशाली में चला गया। नगर द्वार बन्द कर वह पौषधशाला में जाकर ध्यानस्थ होकर बैठ गया। कूणिक वैशाली के दृढ़ द्वार नहीं तोड़ सका, फिर छल–छन्द रचकर कूणिक ने वैशाली का विनाश कर दिया।

कोटि संख्या : एक चिन्तन

इस सूत्र में सेना की संख्या में 'कोटि' शब्द का बार–बार प्रयोग हुआ है, परम्परानुसार कोटि का अर्थ करोड़ ही किया जाता रहा है, किन्तु अनेक स्थानों पर यह संख्या विचारणीय प्रतीत होती है। आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने प्राचीन सन्दर्भों के साथ इन शब्दों पर अपनी टिप्पणी की है, जो इस प्रकार है–

–"इस स्थान पर कोटि मनुष्यों का उल्लेख है–कूणिक की ३३ करोड़ सेना का वर्णन है। राजा चेटक एवं अठारह गणराजाओं की सेना का प्रमाण सत्तावन करोड़ बताया गया है। यहाँ पर हमारा विचार है कि कोटि एक विशेष संज्ञा होगी जो उस समय सैनिक परिमाण के लिए प्रयुक्त हुआ करती थी।

तपागच्छीय श्वेताम्बर मुनि श्री आत्माराम जी महाराज अपने ग्रन्थ 'जैन तत्त्वादर्श' के सातवें परिच्छेद सम्यक्त्व के पाँच अतिचारों का वर्णन करते हुए प्रथम शंका अतिचार में लिखते है–"सो जिन–वचन में शंका नहीं करनी, क्योंकि जिन–वचन बहुत गम्भीर है और उसका यथार्थ अर्थ कहने वाला इस काल में कोई नहीं है और जो शास्त्र हैं सो अनेक नयात्मक हैं उनकी गिनती तथा संज्ञा विचित्र है। कई एक जगह तो 'कोटि' शब्द करोड़ का वाचक है और किसी जगह रूढ़ वस्तु २० (बीस) की संख्या का वाचक है। क्योंकि श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण सर्वसंघ के समस्त आचार्य संघयण नामक पुस्तक में तथा विशेषवती ग्रन्थ में लिखते हैं कि कोई आचार्य 'कोडी' शब्द को एक करोड़ का वाचक नहीं मानते हैं, किन्तु संज्ञातर मानते हैं, क्योंकि वर्तमान काल में भी बीस को कोड़ी कहते हैं तथा सौराष्ट्र देश में भी पाँच आने की कोड़ी है। यह जैसे कोड़ी शब्द में मतान्तर है ऐसे ही शत सहस्र शब्द भी किसी संज्ञा के वाचक होवे तो कुछ दोष नहीं तथा शत्रुञ्जय तीर्थ में जो मुनि मोक्ष गए हैं वहाँ भी पाँच कोड़ी आदि शब्द संज्ञा–विशेष में है। ऐसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ही ५६ करोड़ यादवों की संख्या कोई संज्ञा-विशेष है। कोणिक एवं चेटक राजाओं की सेना में जो 'कोडी' 'शत' 'शतसहस्र' शब्द हैं सो संज्ञा-विशेष के वाचक हैं। इसलिए सब शब्दों का सर्व जगह एक सरीखा अर्थ मानना युक्त नहीं है। इस कथन में पूज्य श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण पूरे साक्षी देने वाले हैं।''

हो सकता है 'कोटि' शब्द आज की सैनिक शब्दावली के 'कम्पनी' शब्द का बोधक हो। किसी भी कम्पनी में सैनिकों की संख्या निश्चित नहीं होती, कम्पनी विशिष्ट सैनिक समूह को कहा जाता है। ऐसे ही कोटि में सैनिकों की संख्या निश्चित नहीं होती होगी। फिर भी सत्य अर्थ तो केवली भगवान को ही ज्ञात होगा। *[निरयावलिका टीका, सूत्र १२, पृ. १५०]*

Elaboration—Garuda Vyuha (eagle formation)—This aphorism mentions *garuda vyuha* (eagle formation) and *shakat vyuha* (cart formation). Acharya Shri Atmaram ji M. has explained this in his Hindi commentary (*Tika*). *Garuda Vyuha* (eagle formation) means the arrangement of army where the spearhead is massive like an eagle. This frightens the opposing army facilitating an effective initial attack.

Shakat vyuha (cart formation) means an arrangement where the spearhead is formed predominantly by chariots (*shakat*), middle portion has lesser density of chariots and the rear, once again, has higher density of chariots.

Kunik arranged his army in the eagle formation and Chetak in the cart formation. More details about the *Rath-musal* battle are mentioned in *Bhagavati Sutra* 7/9, the gist of which is as follows :

RATH-MUSAL BATTLE

In the aforesaid aphorism-33 it is mentioned that for the *Rath-musal* battle Kunik used the eagle formation. In *Bhagavati Sutra* there is a mention of two great battles fought by Kunik and Chetak. Of these the *Mahashilakantak* battle was fought on the first day and the *Rath-musal* battle on the second. This war ended in defeat of King Chetak's armies and victory of King Kunik. But according to this description in *Niryavalika Sutra* the first ten days of the war saw the deaths of the ten brothers including Kaal Kumar. From this mention it appears that the *Mahashilakantak* and *Rath-musal* battles were fought after the first ten days of the war. Other ancient scriptures also confirm this.

As the story goes, in the first ten days of the great war the ten commanders of Kunik's army (his ten brothers) were killed by just one shot of arrow each by King Chetak. On the eleventh day it was the turn of Kunik and he had the fear of life. He thought—'The arrow launched by King Chetak is unsurmountable. I will never be able to conquer him.' And he

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

came out with a solution. He called a cease fire for three days. After a three day fast he evoked Shakrendra and Chamarendra, his friendly gods from the past birth.

Shakrendra said—"I cannot kill King Chetak as he is a highly valorous and righteous *shravak* (devout Jain). However, as a friend I will make arrangements for your security. As a gesture of friendship Shakrendra created diamond hard and impenetrable dress and armour with his divine power. By wearing it Kunik became fully protected. With his divine powers Chamarendra created two war-machines (tank like) called *Mahashilakantak* and *Rath-musal*.

In the *Mahashilakantak* battle missiles including foliage, wood, pebbles, and rocks were launched with the divine war-machine. These missiles hit the opposing army like a great boulder (*mahashila*) and the fiercest of weapons of the opposition was rendered ineffective like a small thorn (*kantak*). In this battle eight million four hundred thousand soldiers were killed. In this battle the commander of King Chetak's army was Varun, a devout and scholarly *shravak*. He was the grandson of Naag and had taken an oath that he will not kill an innocent being. Varun killed the commander of Kunik's army, Vajri. Kunik himself was protected by his divine armour and King Chetak could not penetrate it with his one arrow. According to his vow, Chetak did not use another arrow.

On the second day Kunik used the divine machines (*Rath-musal*) made in the form of automated chariots, which had neither horses nor charioteers or warriors. These chariots were fitted with maces. While moving, this chariot trampled and destroyed the opposing army with its maces in motion. This killing machine turned human beings into bloody slime covering the battle ground. In this battle nine million six hundred thousand men were annihilated. Chetak's unsurmountable arrow was wasted this day also.

Dejected by this defeat Chetak retreated to Vaishali city. Closing the city gates he went into the *paushadh shala* (place of stay for ascetics) and sat in meditation. Kunik could not open or break the strong gates of Vaishali. At last he resorted to deception and guile to destroy Vaishali.

THE NUMBER KOTI : A VIEW

In context of the size of the army the term *'kodi'* (*koti*) has been frequently used in this aphorism. Traditionally it has been translated as *karod* or *crore* (ten million) but in many instances this interpretation does

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

not fit and requires more detailed analysis. On the basis of ancient references Acharya Shri Atmaram ji M. has commented on this as follows—

"Here there is a mention of *kodi* (*koti*) men and description of the 33 *kodi* (*koti* or crore or ten million) strong army of Kunik. The numerical strength of the combined army of King Chetak and the heads of eighteen republics is said to be 57 *kodi* (*koti* or *crore* or ten million). In my opinion the term *kodi* (*koti*) carries a special meaning here. It might have been a noun specially coined, in army terminology of those times, for a unit representing some specific strength in numbers.

In the seventh chapter of his book *Jain Tattvadarsh*, while describing five transgressions of *samyaktva* (righteousness) Muni Shri Atmaram ji M. of *Shvetambar Tapagachha* sect mentions in context of **Doubt : The First Transgression**—"...Therefore do not question the word of the Jina because the word of the Jina is very profound and in these times there is no one who can truly and exactly interpret it. Also, the scriptures are based on multiple viewpoints and the terminology for numbers used there is strange. At some place *kodi* (*koti*) means *crore* and at some other place it is used to indicate the colloquial term for a count of 20. This is because in his works *'Sarva Sangh ke Samast Acharya Sanghayan'* and *'Visheshavati'* Shri Jinabhadra Gani Kshamashraman mentions that some *acharyas* do not accept that the term *'kodi'* means crore. They believe that it is a noun coined for some specific number. The evidence for this is that even in modern times a count of twenty is called *'kodi'*. Also, in Maharashtra five annas make a *kodi* (five annas have twenty paise). As *kodi* represents a specific unit, it would not be surprising if the term *'shat-sahastra'* also represents some such unit. In the statement that the number of ascetics liberated from Shatrunjaya is five *kodi*, the term *kodi* means some specific unit. In the same way 56 *kodi* (*koti*) Yadavs is also some specific unit. The use of the terms *'kodi'*, *'shat'*, and *'shat-sahasra'* with reference to the armies of King Kunik and King Chetak also denote some specific units. Therefore it is not proper to believe that one word has just one meaning. Jinabhadra Gani Kshamashraman provides authentication of this view.

"It is possible that the term *'kodi'* (*koti*) has been used to indicate a group of soldiers exactly as terms like company, battalion or brigade are used in modern army terminology. The exact number of soldiers forming a company or other such group varies from army to army and is not fixed universally. In the same way the number of soldiers in a *kodi* may also not have been fixed. Any way, the exact meaning was known only to the omniscient." (*Niryavalika*-92. p. 150)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४. 'काले णं भंते ! कुमारे चउत्थीए पुढवीए.... अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?'

"गोयमा, महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं जहा दढपइन्नो (जाव) सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ (जाव) अंतं काहिए।'

'तं एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं निरयावलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते।'

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥१॥

३४. गौतम स्वामी ने पुनः प्रश्न किया–"भंते ! वह कालकुमार चौथी नरक भूमि से निकलकर कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?"

भगवान–"गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में जो अनेक ऋद्धिमान धनधान्य से युक्त कुल हैं, उनमें जन्म लेकर दृढ़प्रतिज्ञकुमार के समान (रायपसेणियसूत्र में दृढ़प्रतिज्ञ का वर्णन है) सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, यावत् परिनिर्वाण को प्राप्त होगा और समस्त दुःखों का अन्त करेगा।"

श्री सुधर्मा स्वामी ने कहा–"आयुष्मान् जम्बू ! निर्वाण को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने निरयावलिका के प्रथम अध्ययन का यह भाव कथन किया है।"

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

CONCLUSION

34. Gautam Swami again asked—"*Bhante* ! Where will Kaal Kumar go from the fourth hell ? Where will he reincarnate ?

"Gautam ! Like prince Dridhapratijna he will be born in the Mahavideh area (a mythical area) in one of the clans that are affluent, brilliant, influential, and wealthy. He will then attain perfection, enlightenment, liberation and nirvana ending all miseries." (for the story of Dridhapratijna refer to *Rayapaseniya Sutra*)

Shri Sudharma Swami concluded—"Long lived Jambu ! This is the text and meaning of the first chapter of *Niryavalika* narrated by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained the eternal abode of the *Siddha*-state."

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूणिक अजातशत्रु से सम्बन्धित विशेष तथ्य

औपपातिकसूत्र तथा निरयाबलिकासूत्र में मगधपति कूणिक के सम्बन्ध में काफी वर्णन है। औपपातिक में कूणिक का चरित्र एक आदर्श शासक और जिन उपासक का है, परन्तु निरयावलिका में कुछ भिन्न–एक महत्त्वाकांक्षी, अहंकारी, राज्य–विस्तार का लिप्सु और पितृघातक के रूप में अंकित है।

प्रस्तुत निरयावलिका में संक्षिप्त में सम्राट् श्रेणिक व कूणिक से सम्बन्धित जो प्रसंग हैं, उनका पूर्वापर सम्बन्ध और स्पष्टीकरण समझने के लिए यहाँ कुछ विस्तार से दिया जा रहा है।

मगध सम्राट् श्रेणिक राजा प्रसेनजित के सौ पुत्रों में सबसे ज्येष्ठ प्रतापी और बुद्धिमान् था। उसके पिता प्रसेनजित भगवान पार्श्वनाथ के उपासक जिनभक्त थे। राजा प्रसेनजित ने जब देखा कि उसके पुत्र राज्य–सत्ता के लोभ में परस्पर एक–दूसरे पर घात लगाये बैठे हैं तो उसने श्रेणिक को जीवित रखने के लिए किसी बहाने देश निकाला दे दिया। इस निर्वासित काल में श्रेणिक ने बौद्ध मठों में आश्रय लिया, भिक्षुओं के सम्पर्क में आया। उनके सद्व्यवहार से प्रभावित होकर वह उनका आदर करने लगा।

इसी प्रवास में वेनातट के वणिक् श्रेष्ठी की अत्यन्त बुद्धिमती सुशील पुत्री नन्दा के साथ उसका विवाह हो गया और वह वहीं रहने लगा। यहीं पर नन्दा ने एक पुत्र को जन्म दिया जो बुद्धिनिधान अभयकुमार नाम से प्रसिद्ध हुआ। पिता की मृत्यु का समाचार पाकर श्रेणिक राजगृह में आ गया और राजगृह का शासक बना। अपनी बुद्धिमत्ता, नीति–कुशलता तथा पराक्रम के बल पर उसने मगध साम्राज्य को समृद्धि के शिखर तक पहुँचा दिया।

जैन साहित्य में श्रेणिक का नाम 'भंभसार' तथा बौद्ध साहित्य में 'बिम्बसार' प्रसिद्ध है।

श्रेणिक की रानियाँ

जैन आगमों व ग्रन्थों के अनुसार राजा श्रेणिक की पच्चीस रानियों का उल्लेख मिलता है। अन्तकृद्दशांग में नन्दा, नन्दमती, काली, सुकाली आदि २३ रानियों का वर्णन है। श्रेणिक की मृत्यु के पश्चात् इन्होंने भगवान महावीर के पास दीक्षा ग्रहण कर कठोर उग्र तपःसाधना कर निर्वाण प्राप्त किया। ज्ञाताधर्मकथांग में मेघकुमार की माता धारिणी का और दशाश्रुतस्कन्ध में कूणिक की माता चेलना रानी का उल्लेख है।

श्रेणिक का पुत्र–परिवार

श्रेणिक के ४० पुत्रों का उल्लेख भिन्न–भिन्न आगमों में मिलता है। जाली, मयाली आदि २३ राजकुमारों का वर्णन अनुत्तरोपपातिसूत्र में है। वे दीक्षा लेकर उग्र तपश्चरण कर अनुत्तरविमान में उत्पन्न हुए। मेघकुमार का कथन ज्ञातासूत्र में है। अभयकुमार का वर्णन भी अनेक सूत्रों में है। नन्दीषेण भी श्रमण बनकर साधना–पथ पर बढ़ा। वेहल्ल, कूणिक तथा कालकुमार आदि कुल बारह पुत्रों का वर्णन निरयावलिका में आया है।

कूणिक–श्रेणिक का पूर्वबद्ध वैर

श्रेणिक के पुत्र चेलना के अंगजात तीन पुत्रों का उल्लेख आगमों में आता है–कूणिक, वेहल्ल तथा वेहायसकुमार।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरयावलिका में कूणिक के जन्म का संक्षिप्त वर्णन है। इस प्रसंग में ज्ञातव्य यह है कि कूणिक के मन में श्रेणिक के प्रति जो द्वेषभाव था उसका बीज उनके पूर्वभव के सम्बन्धों में छिपा है। अनेक जन्म पूर्व बसन्तपुर के राजा का पुत्र था सुमंगल। सुमंगल बहुत ही गुणी, धर्मप्रिय था। मंत्रिपुत्र सेनक से उसकी मित्रता थी। सेनक दीखने में बड़ा कुरूप था। राजकुमार सुमंगल उसकी कुरूपता का मजाक उड़ाकर उसके साथ हँसी-मजाक करता रहता। अपनी कुरूपता पर कसे जाने वाले व्यंग्य वचनों से तंग आकर सेनक घर से निकल गया और एकान्त जंगल में तप करने लगा। एक-एक मास का कठोर तप करके उसने अपना शरीर अत्यन्त क्षीण कर डाला। तपस्वी सेनक एक बार बसन्तपुर में आया। राजपुत्र सुमंगल उसके दर्शन करने गया और उसे मासिक तप का पारणा राजमहल में करने को आमंत्रण दिया। पारणे के दिन सेनक राजमहल की तरफ आया, परन्तु उसी रात राजा सुमंगल बीमार होने से प्रातःकाल तक सोया रहा; तपस्वी बिना पारणा लिए ही लौट गया और उसने दूसरा मासिक तप स्वीकार कर लिया। सुमंगल को पता चला, तपस्वी आकर भूखा ही लौट गया, उसने जाकर क्षमा माँगी और दूसरे मासिक तप का पारणा राजमहल में करने को पुनः आमंत्रण दिया। दूसरी बार भी तपस्वी आया परन्तु सुमंगल बीमार हो गया, पहरेदार ने द्वार से ही तपस्वी को भूखा लौटा दिया। तपस्वी ने तीसरा मासिक तप स्वीकार कर लिया।

सुमंगल फिर जाकर क्षमा माँगता है और सेनक फिर तीसरे मास का पारणा करने की पुरजोर प्रार्थना करता है। संयोग ऐसा बना कि इस बार फिर पारणे के दिन सुमंगल बीमार हो गया, तपस्वी पारणा लेने का संकल्प लिए आता है। द्वारपाल ने सोचा-'जब-जब यह तपस्वी आता है राजा बीमार हो जाता है, यह मनहूस है।' क्रोध में आकर द्वारपालों ने तपस्वी को कोड़ों से पीटा और धक्के देकर निकाल दिया। तपस्वी का क्रोध भड़क उठा। क्रोध में उसने निदान किया-"मैं इसका बदला लूँगा। ऐसे ही कोड़े मार-मारकर इसे भूख से तड़पाऊँगा।"

तपस्वी सेनक मरकर वाणव्यन्तर देव बना और वहाँ से मरकर सुमंगल क्रमशः राजा प्रसेनजित का पुत्र श्रेणिक बना तथा तपस्वी सेनक का जीव चेलणा की कुक्षि से कूणिक के रूप में जन्म लेता है। पूर्वबद्ध शत्रुता के संस्कारों के कारण ही चेलना को श्रेणिक के कलेजे का माँस खाने का दुष्ट दोहद उत्पन्न होता है और प्रारम्भ से ही वह इसे पितृघाती के रूप में मानने लगती है।

श्रेणिक राजा वृद्ध हो चला है, तब भी उसने कूणिक को राज्य-भार नहीं सौंपा, कूणिक के मन में तीव्र राज्यलिप्सा जगती है और कालकुमार आदि दसों भाइयों से मिलकर षड्यंत्र रचकर श्रेणिक को कारागार में बंद करता है। भूखा-प्यासा रखकर कोड़ों से मारता है।

कथाकारों ने इस घटना के पीछे पूर्वजन्म का यह वैर विपाक बताया है।

मगध राज्य के दो अनमोल रत्न

निरयावलिकासूत्र में बताया है, सेचनक गंधहस्ती तथा अठारह लड़ियों वाला वंकचूल हार के कारण कूणिक ने युद्ध किया। यह दोनों वस्तुएँ मगध राज्य के अनमोल रत्न थे। इनकी प्राप्ति की घटना इस प्रकार है।

राजगृह के निकटवर्ती वनों में तापसों का एक आश्रम था। वहाँ वृक्षों के सघन झुण्ड में एक हथिनी ने गुप्त रूप में एक शिशु को जन्म दिया। यह शिशु हाथी जन्मकाल से ही तापसों के निकट रहता। तापस उसे केला आदि कंदमूल फल खिलाते और उससे बहुत प्यार करते। तापस नदी से जल लाकर वृक्षों को सींचते थे, उनके साथ शिशु हाथी भी सूँड़ में जल भर-भरकर लाता और वृक्षों को सींचता रहता। वृक्षों को सींचते रहने से तापसों ने उसे 'सेचनक' (सींचने वाला) नाम दे दिया। बड़ा होने पर वह हाथी अत्यन्त बलिष्ठ हो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गया। वनों में मस्ती से अकेला घूमता। दूसरे हाथियों से भिड़ जाता कभी क्रोध में आकर वृक्षों को उखाड़ फेंकता। एक बार कोई दूसरा बूढ़ा हाथी उधर आ गया। तरुण सेचनक उस बूढ़े हाथी से भिड़ गया और घमासान युद्ध किया। इस युद्ध में सेचनक ने बूढ़े हाथी को घायल कर डाला। परन्तु फिर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ। क्रोध में फुँकारता वह आश्रम में आया और आश्रम के कदली वृक्षों एवं पुष्प वृक्षों को भी उखाड़-पछाड़ करने लगा। तापसों ने यह देखा तो सेचनक को डाँटा फटकारा। इससे भी सेचनक का क्रोध अधिक भड़क उठा और अब वह जंगल में उत्पात मचाने मचलता रहता। सेचनक के उत्पातों से तंग आकर तापसों ने राजा श्रेणिक के पास रक्षा की पुकार की। श्रेणिक ने सैनिकों को भेजा, सेचनक को पकड़वाया। इसे देखा तो अभयकुमार ने बताया-यह तो गंधहस्ती है, बहुत ही श्रेष्ठ शुभ लक्षणों वाला है। राज्य का पट्टहस्ती बनने योग्य है। राजा श्रेणिक ने तब से सेचनक गंधहस्ती को पट्टहस्ती स्थापित कर दिया। गंधहस्ती के शरीर से एक विशेष प्रकार की गंध निकलती रहती है, इस गंध से आकृष्ट हुई हथिनियाँ उसकी तरफ खिंची चली आती हैं, किन्तु दूसरे हाथी इस गंध से भयत्रस्त होकर दूर पलायन कर जाते हैं।

कहा जाता है-इस सेचनक गंधहस्ती को जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त था और उसका मतिज्ञान बहुत निर्मल था। यह उत्कृष्ट स्वामिभक्त था। उस युग में दो गंधहस्तियों का वर्णन आता है-एक मगध में सेचनक गंधहस्ती था, दूसरा उज्जयिनी नरेश चण्डप्रद्योत के पास अनलगिरि हाथी।

वंकचूल हार

राजा श्रेणिक एक बार भगवान महावीर की धर्मदेशना सुनकर लौट रहे थे। मार्ग में उन्होंने एक श्रमण को वृक्षों के कच्चे फल तोड़कर खाते देखा। श्रेणिक ने मुनि को समझाया-"मुने ! ऐसा धर्म-विरुद्ध आचरण क्यों करते हो ?"

मुनि बोला-"मुझे बहुत भूख लगी है।"

राजा ने कहा-"चलो मेरे यहाँ शुद्ध भिक्षा ले लो।"

मुनि ने उत्तर दिया-"तुम क्या जानो, चोरी-छिपे सभी श्रमण जंगल में वृक्षों से फल तोड़-तोड़कर खाते हैं।" श्रेणिक ने उसे समझाया और कहा-"ऐसा मिथ्या भाषण क्यों करते हो ? भगवान महावीर के श्रमण उत्कृष्ट शुद्ध आचारवान है।"

श्रेणिक कुछ दूर आगे चला तो एक सरोवर के किनारे एक सुन्दर तरुण साध्वी शरीर के अंगोपांग धो रही थी। राजा को आश्चर्य हुआ, साध्वी को देखा तो पता चला वह तो गर्भवती है ! राजा ने इस दुराचरण के लिए उसकी भर्त्सना की, साध्वी महावीर शासन की सभी साध्वियों पर ऐसे गुप्त दुराचार का आरोप लगाने लगी।

राजा ने उसे फटकारा-"अपनी भूल छिपाने के लिए दूसरे पवित्र चारित्रवान साधु-साध्वियों पर झूठा कलंक लगाते तुम्हें शर्म आनी चाहिए। मुझे दृढ़ विश्वास है, भगवान महावीर के सभी श्रमण-श्रमणियाँ निर्मल शुद्ध आचारवान् हैं। तुम्हारा कथन सर्वथा मिथ्या है।"

इस प्रकार श्रेणिक के मन में भगवान के शासन के प्रति अत्यन्त दृढ़ श्रद्धा-विश्वास की प्रतीति देखकर एक दिव्य देव-पुरुष प्रकट हुआ और नमस्कार कर बोला-"हे राजन् ! इन्द्र महाराज ने आपकी दृढ़ सम्यक्त्व की प्रशंसा की थी, मैं उसी की परीक्षा लेने आया था और यह सब नाटक मैंने ही रचा है, मुझे क्षमा करें। आप सचमुच में निर्मल आस्थावान दृढ़ सम्यक्त्वी हैं।" देवता ने प्रशंसा करके राजा श्रेणिक को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो उपहार दिये। एक अठारह लड़ियों वाला दिव्य हार तथा मिट्टी के दो गोले। राजा ने दिव्यहार जो वंकचूल हार के नाम से प्रसिद्ध हुआ रानी चेलना को दिया और मिट्टी के गोले अभयकुमार की माता नन्दा रानी को दिये। मिट्टी के गोले देखकर नन्दा ने अपना अपमान समझा, क्रोध में आकर फेंक दिये। गोले फूटे तो एक गोले से दो दिव्य कुण्डल और दूसरे से देवदूष्य वस्त्र प्रकट हुए।

सेचनक गंधहस्ती और देवप्रदत्त अठारह लड़ियों वाला वंकचूल दिव्यहार मगध राज्य की अद्भुत सम्पत्ति थी। आवश्यकचूर्णि के अनुसार मगध के पूरे ऐश्वर्य के मूल्य के बराबर इन दोनों का मूल्य था।

APPENDIX

IMPORTANT FACTS REGARDING KUNIK AJATASHATRU

Aupapatik Sutra and *Niryavalika Sutra* contain ample details about Magadh Emperor Kunik. In *Aupapatik*, Kunik has been described as an ideal ruler and a devotee of the Jina but in *Niryavalika* he has been painted differently as an ambitious and egotistic ruler with territorial ambitions and a person who killed his father.

In order to properly and chronologically understand the brief description about Emperor Shrenik and Kunik available here, we present the story with some more details.

Magadh Emperor Shrenik was the eldest, most valourous and intelligent among the hundred sons of King Prasenjit who was a devotee of Bhagavan Parshva Nath. When King Prasenjit realized that his sons, coveting for the throne, are looking for opportunities to kill each other, he exiled Shrenik on some pretext, in order to save him. During this period of exile Shrenik took refuge in Buddhist monasteries and came in contact with *Bhikshus*. Impressed by their good treatment he developed a healthy respect for them.

During this exile he also got married to Nanda, the highly virtuous and intelligent daughter of a rich merchant of Venatat city. There only, Nanda gave birth to a son who later became famous as Abhaya Kumar, the storehouse of wisdom. On getting the news of his father's death, Shrenik returned to Rajagriha and ascended the throne. With his intelligence, state-craft and valour he took the Magadh empire to new heights of prosperity and glory.

In Jain literature Shrenik is popularly known as Bhambhasar and in Buddhist literature as Bimbasar.

CONSORTS OF SHRENIK

There is a mention of King Shrenik's twenty five queens in *Agamic* and other scriptures of Jains. In *Antakriddashanga* there is a mention of twenty three queens of Shrenik including Nanda, Nandamati, Kaali, and Sukaali.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

After the death of Shrenik they all got initiated in Bhagavan Mahavir's order and attained nirvana after rigorous austerities. In *Jnatadharmakathanga* is the mention of Megh Kumar's mother queen Dharini and in *Dashashrutaskandh* that of Kunik's mother Queen Chelana.

SHRENIK'S SONS

In various *Agam* works we find mention of thirty six sons of Shrenik. In *Anuttaraupapatik Sutra* we find mention of twenty three sons including Jaali and Mayali. They all got initiated and after rigorous austerities reincarnated as gods in *Anuttar Vimans*. The story of Megh Kumar is available in *Jnata Sutra*. Nandishen also became an ascetic and took to the spiritual path. *Niryavalika* has the description of Kunik and his ten brothers including Kaal Kumar.

ANIMOSITY OF KUNIK AND SHRENIK

There is a mention of three sons of Shrenik by Queen Chelana—Kunik, Vehalla, and Vehayas.

In *Niryavalika* there is a brief description of the birth of Kunik. This incident conveys that the feeling of animosity for Shrenik in Kunik's mind had its root in their relationship in the past births.

Many births earlier the king of Basantpur had a son named Sumangal who was highly virtuous and religious. Senak, the minister's son, was his friend. Senak was ugly in appearance. In light vein Prince Sumangal used to make fun of his ugliness constantly. Fed up of the sarcastic remarks on his ugly appearance, Senak left his house, went into the jungle and started practicing austerities in solitude. He made his body weak and emaciated by observing month long fasts. Once hermit Senak came to Basantpur. Prince Sumangal went to pay him homage and invited him to break his month long fast in the palace. On the day of fast-breaking Senak went to the palace. But as King Sumangal got sick the previous night he slept till late in the morning. The hermit returned without breaking his fast and he commenced another month long fast. When Sumangal came to know that the hermit had returned without breaking his fast, he came to Senak and sought his forgiveness. This time also he invited the hermit to the palace for breaking his fast . The second time also Senak came to the palace but the king was indisposed and the palace guard sent back the hermit without offering him food. Senak commenced his third month long fasting.

Sumangal again came and sought forgiveness. He once again beseeched Senak to come to the palace to break his third month long fast. Coincidentally this time also Sumangal fell ill on the day of fast-breaking. Senak came with the intention of seeking alms for breakfast. The guard thought that every time that hermit came the king fell sick, thus he was ominous. The irritated guards

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

flogged the hermit and threw him out. The hermit got enraged and resolved—"I will take revenge. I will make him suffer flogging and hunger."

After death hermit Senak reincarnated as a *Vanavyantar* (interstitial) god. Then Sumangal reincarnated as King Prasenjit's son Shrenik and the interstitial god that was hermit Senak reincarnated as Queen Chelana's son Kunik. The feelings of animosity from the earlier births surfaced and inspired Chelana to eat flesh from Shrenik's belly. Chelana considered her son as killer of his father from the very beginning.

Even when Shrenik became old he delayed transferring of power to his son and heir Kunik. At last, driven by his intense desire for power, Kunik conspired with his ten brothers including Kaal Kumar and imprisoned Shrenik, deprived him of food and water, and flogged him with a whip.

According to the authors, this incident was caused by precipitation of the animosity from the past births.

TWO PRICELESS TREASURES OF MAGADH

According to *Niryavalika Sutra* Kunik fought a war for the great elephant Sechanak and the eighteen string necklace called Vankachula. These two things were priceless treasures of the state of Magadh. The story of their acquisition goes like this—

In the forests around Rajagriha there was a hermitage. There a she-elephant secretly gave birth to a little elephant in a thick cluster of trees. Since the very beginning this baby elephant lived with the hermits. The hermits loved him very much and fed him bananas and other fruits. When the hermits brought water from the river to water the plants in the hermitage, the baby elephant would also imitate them by bringing water in his trunk. As he watered the plants the hermits named him Sechanak (one who waters plants). Sechanak grew to be a very strong bull elephant. He roamed around alone in the jungle. Some times he would fight other elephants and at others root out and toss around large trees. Once an old elephant crossed his path and Sechanak fought it bitterly and wounded it. This victory did not pacify his rage and when he came to the hermitage he was still mad. He entered the hermitage trumpeting angrily and trampled the banana trees and other plants. When the hermits saw all this they scolded Sechanak but this added fuel to the fire. Sechanak continued his trampling and destroying vegetation in the jungle. Fed up with this the hermits sought help from King Shrenik. The soldiers of the king trapped the elephant and brought it to the Kings elephant yard. When Abhaya Kumar saw Sechanak he informed that this was a rare elephant known as *Gandh Hasti* and was very auspicious. It deserved being made the chief elephant of the state. King Shrenik followed Abhaya Kumar's advice and Sechanak became the chief elephant. A *Gandh Hasti* emits an aroma that draws she-elephants to it but male elephants get panicky and run away.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

It is said that Sechanak elephant was endowed with the knowledge of his past birth and his sensory knowledge was also pristine. He was faithful to his master. In scriptures we find mention of two such great elephants of that era—Sechanak elephant of Magadh and Analgiri elephant of King Chandapradyot of Ujjayini.

VANKACHULA NECKLACE

King Shrenik was once returning after attending the discourse of Bhagavan Mahavir. On the way in a jungle he saw an ascetic plucking raw fruits from trees and eating them. Shrenik advised him—"O muni ! Why do you indulge in an activity proscribed in the religious code ?"

The ascetic replied—"I am very hungry."

The king said—"Come with me. I will offer you food acceptable for an ascetic."

The ascetic argued—"What do you know ? All *shramans* (ascetic followers of Bhagavan Mahavir) secretly pluck fruits from trees and eat."

Shrenik refuted—"Why do you tell a lie ? The ascetic followers of Bhagavan Mahavir are upright and immaculate in maintaining purity of conduct."

On proceding ahead Shrenik saw a young and beautiful *saadhvi* (female ascetic) washing parts of her body on the bank of a lake. The king was surprised when he also found that she was pregnant. He admonished her for this misdeed. The *saadhvi* slandered all the *saadhvis* of Bhagavan Mahavir's order blaming them generally indulging in such misdeeds.

The king rebuked her—"You should be ashamed of blaming falsely the true followers of ascetic conduct just in order to conceal your misdeed. It is my unwavering belief that all the *shramans* and *shramanis* (male and female ascetics) of Bhagavan Mahavir's order are true followers of pure ascetic conduct. What you say is absolutely false."

Seeing King Shrenik's absolutely unwavering faith for Bhagavan Mahavir's order a divine person appeared and said after greeting—"O King ! Indra had praised your perfect righteousness. In order to test it I created all this. Please pardon me. You are, indeed, an extremely righteous person with purity of faith." With this honour the god gave two gifts to King Shrenik—a divine eighteen string necklace and two earthen balls. The king gave the Vankachula necklace to Queen Chelana and the earthen balls to Abhaya Kumar's mother Queen Nanda. Queen Nanda felt insulted on seeing the earthen balls and threw them. The balls broke and from one came out a pair of divine earrings and from the other a divine dress.

The great elephant Sechanak and the divine eighteen string necklace called Vankachula were two priceless treasures of the state of Magadh. According to *Avashyak Churni* these two were valued to be equal to all the remaining wealth of the Magadh empire. ●●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीय अध्ययन
SECOND CHAPTER

३५. 'जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं निरयावलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते, अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?'

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। कूणिए राया। पउमावई देवी।

तत्थ णं चम्पाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था सुकुमाला।

तीसे णं सुकालीए देवीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे होत्था सुकुमाले। तए णं से सुकाले कुमारे अन्नया कयाइ तिहिं दंतिसहस्सेहिं, जहा कालो कुमारो, निरवसेसं तं चेव भाणियव्वं जाव महाविदेहे वासे ... अंतं काहिइ।

॥ बीयं अज्झयणं समत्तं ॥१ ।२ ॥

३५. सुधर्मा स्वामी से जम्बू स्वामी ने पूछा-"भगवन् ! श्रमण भगवान महावीर ने निरयावलिका के प्रथम अध्ययन का यह भाव बताया है तो भगवन् ! निरयावलिका के द्वितीय अध्ययन का श्रमण भगवान महावीर ने क्या अर्थ प्रतिपादन किया है ?

आर्य श्री सुधर्मा ने उत्तर दिया-"आयुष्मान् जम्बू ! उस काल उस समय में चम्पा नाम की नगरी थी। वहाँ पूर्णभद्र चैत्य था। कूणिक राजा था। पद्मावती पटरानी थी।

उस चम्पानगरी में श्रेणिक राजा की भार्या, कूणिक राजा की सौतेली माता सुकाली नाम की रानी थी, जो सुकुमाल शरीर वाली थी।

उस सुकालीदेवी का पुत्र सुकोमल अंग-प्रत्यंग वाला सुकाल नामक राजकुमार था।

वह सुकालकुमार किसी समय (पूर्व में कथित युद्ध-प्रसंग में) तीन हजार हाथियों इत्यादि सहित जैसा पूर्व में कालकुमार के विषय में कहा, वैसा समग्र वृत्तान्त यहाँ भी जानना चाहिए अर्थात् वह भी रथ-मूसल संग्राम में मारा गया। मरकर चौथी नरकपृथ्वी में उत्पन्न हुआ है। वहाँ से निकलकर महाविदेह वर्ष में उत्पन्न होकर कर्मों का अन्त करेगा। सम्पूर्ण कथन कालकुमार के समान ही जानना चाहिए।

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

35. Jambu Swami asked Sudharma Swami—"*Bhante* ! If this is the text and meaning of the first chapter of *Niryavalika* as told by Bhagavan Mahavir, *Bhante* ! what is the text and meaning of the second chapter of *Niryavalika* as told by Bhagavan Mahavir ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Arya Sudharma replied—"Long lived Jambu ! During that period of time there was a city called Champa. Outside this city was a garden called Purnabhadra. The city was ruled by King Kunik. The consort of the King was queen Padmavati.

Also in Champa city, there lived Sukaali Devi, wife of King Shrenik and a step mother of King Kunik. She had a delicate body.

Sukaali Devi had a son named Sukaal Kumar. He was also delicate and handsome.

That Sukaal Kumar, along with three thousand elephants (etc.) joined King Kunik in the *Rath-musal* battle (remaining description same as in case of Kaal Kumar fighting the *Rath-musal* battle). After death he has reincarnated in the fourth hell. From there he will reincarnate in the Mahavideh Varsh area and end all his miseries by attaining liberation. Complete description should be taken similar to that in case of Kaal Kumar.

● END OF SECOND CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीय से दशम अध्ययन
THIRD TO TENTH CHAPTER

३६. एवं सेसा वि अट्ठ अज्झयणा नेयव्वा पढमसरिसा, नवरं मायाओ सरिसनामाओ।

॥ निरयावलियाओ समत्ताओ॥

॥ पढमो वग्गो समत्तो॥

३६. प्रथम अध्ययन के समान शेष आठ अध्ययन भी जानने चाहिए। इसमें इतना विशेष है कि उनकी माताओं के नाम के समान उन कुमारों के नाम हैं। यथा–महाकाली रानी का पुत्र महाकाल, कृष्णादेवी का पुत्र कृष्ण, सुकृष्णादेवी का पुत्र सुकृष्ण आदि। ये सभी कुमार क्रमशः कूणिक की सेना के सेनापति बनकर आये और अन्त में चेटक राजा के बाण से मारे गये।

इस प्रकार दस दिन के घोर युद्ध में ये दसों कुमार रणक्षेत्र में मृत्यु को प्राप्त हुए।

इनके आगामी जन्म का कथन सभी का समान है। महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर, मुनि–दीक्षा धारणकर, तप–संयम द्वारा समस्त कर्मों का क्षय कर मोक्ष प्राप्त करेंगे।

॥ निरयावलिका उपांग समाप्त॥

॥ निरयावलिका उपांग के दस अध्ययन समाप्त॥

॥ प्रथम वर्ग समाप्त॥

36. The remaining eight chapters (3rd to 10th) are same as the first chapter. The only difference is that the names of the princes are similar to the names of their respective mothers. For example—the name of the son of Queen Mahakali is Mahakaal, that of the son of Queen Krishnadevi is Krishna, that of the son of Queen Sukrishnadevi is Sukrishna, and so on. One after the other all these princes became the commanders of Kunik's army and were killed by the arrows of King Chetak.

Thus in the fierce battles fought for ten days all these ten princes died in the battlefield. The description of their reincarnation is also the same. They all will reincarnate in future in the Mahavideh area, get initiated, destroy all *karmas* through austerities and attain liberation.

● END OF NIRYAVALIKA UPANGA ●

● END OF THE TEN CHAPTERS OF NIRYAVALIKA UPANGA ●

● END OF THE FIRST SECTION ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीय वर्ग : कल्पावतंसिका

उपोद्‌घात

प्रथम वर्ग–निरयावलिका में श्रेणिक राजा की काली आदि दस रानियों के अंगजात कालकुमार आदि दस पुत्रों का वर्णन है। महा हिंसा, महा आरम्भ और अशुभ आचरण के कारण ये दसों मरकर नरक में उत्पन्न हुए। नरक में उत्पन्न होने का वर्णन होने से प्रथम वर्ग का नाम निरयावलिका (नरकावलिका) है।

भगवान महावीर के श्रीमुख से काली आदि रानियों ने जब अपने पुत्रों की दुःखद मृत्यु तथा अशुभ कर्मों के कारण दुर्गति गमन का कथन सुना तो उनका मन सांसारिक भोगों से विरक्त हो गया और वे दसों रानियाँ भगवान महावीर के शासन में दीक्षित हुईं। कठोर उग्र तपश्चरण कर अपना कल्याण किया। इनकी दीक्षा तथा तपश्चरण का वर्णन अन्तकृद्‌दशांगसूत्र में है।

बहुत सम्भव है, जब कालकुमार आदि के पुत्रों ने अपने पिताओं की इस दुर्गति का वर्णन सुना तो उनका मन भी संसार के राज–सुखों के प्रति ग्लानि से भर गया और वे भी विरक्त हो गये। तत्पश्चात् दसों कुमारों के पुत्रों ने भी भगवान महावीर की धर्मदेशना सुनी तथा प्रव्रजित हो गये।

राजा श्रेणिक के दस पुत्र राज्य–लिप्सा के कारण मरकर दुर्गति में गये। किन्तु उसके पौत्र राज्य–वैभव का त्यागकर दीक्षित होकर उग्र तपःसाधना कर स्वर्गगामी बने।

इन दसों पद्म आदि राजपुत्रों के दीक्षा लेने का संक्षिप्त वर्णन कल्पावतंसिका नामक द्वितीय वर्ग में है। कल्पविमानों में उत्पन्न होने वालों का वर्णन होने से इस वर्ग को कल्पावतंसिका कहा गया है। इसके भी दस अध्ययन हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SECOND SECTION : KALPAVATANSIKA

INTRODUCTION

The first section titled *Niryavalika* contains the stories of King Shrenik's ten sons from his ten queens including Queen Kaali. As a result of their indulgence in extreme violence, extreme sin, and evil conduct they all were born in hell after their death. As it contains the description of hell-bound beings this section is named *Niryavalika* (*Narakavalika*).

When the ten queens including Kaali listened from Bhagavan Mahavir about the sad demise of their sons and their passage to hell, they got detached from mundane pleasures. They all got initiated in Bhagavan Mahavir's order. They attained salvation by indulging in rigorous austerities. The description of their initiation and austerities is available in *Antakrid-dashanga Sutra*.

It is quite possible that when the sons of these princes including Kaal Kumar heard the description of the bad end of their fathers, they were also filled with aversion for the mundane and regal pleasures and got detached. After that these princes also attended Bhagavan Mahavir's discourse and got initiated.

After their death, King Shrenik's ten sons went to hell due to their covetousness for the throne. But his grandsons renounced the regal grandeur and went to heaven after dressing intense austerities.

Brief description of initiation of these princes including Padma is given in this second section titled *Kalpavatansika*. As this contains the story of those destined to the *Kalp Vimans* (celestial vehicles), this section is named *Kalpavatansika*. This also has ten chapters.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम अध्ययन
FIRST CHAPTER

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया (जाव) संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ?

एवं खलु, जंबू ! समणेणं भगवया (जाव) संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता। तं जहा– १. पउमे, २. महापउमे, ३. भद्दे, ४. सुभद्दे, ५. पउमभद्दे, ६. पउमसेणे, ७. पउमगुम्मे, ८. नलिणिगुम्मे, ९. आणंदे, १०. नंदणे।

जइ णं भंते ! समणेणं (जाव) संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं भगवया जाव के अट्ठे पन्नत्ते ?

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। कूणिए राया। पउमावई देवी।

तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था सुहमाला.। तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था सुहमाल.। तस्स णं कालस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था, सोमाला (जाव) विहरइ।

१. जम्बू स्वामी का प्रश्न–"भगवन् ! निर्वाण को संप्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने निरयावलिका नामक उपांग के प्रथम वर्ग का यह (पूर्वोक्त) भाव प्रतिपादित किया है तो हे भगवन् ! दूसरे वर्ग कल्पावतंसिका के कितने अध्ययन कहे हैं ?"

सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–"आयुष्मान् जम्बू ! श्रमण भगवान ने कल्पावतंसिका नामक दूसरे वर्ग के दस अध्ययन कहे हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं–(१) पद्म, (२) महापद्म, (३) भद्र, (४) सुभद्र, (५) पद्मभद्र, (६) पद्मसेन, (७) पद्मगुल्म, (८) नलिनीगुल्म, (९) आनन्द, और (१०) नन्दन।

जम्बू–"भगवन् ! यदि श्रमण भगवान ने कल्पावतंसिका के दस अध्ययन कहे हैं तो भगवन् ! श्रमण भगवान ने कल्पावतंसिका के प्रथम अध्ययन का क्या भाव कथन किया है ?"

सुधर्मा–"आयुष्मान् जम्बू ! उस काल और उस समय में चम्पा नामक नगरी थी। (उसके उत्तर पूर्व में) पूर्णभद्र चैत्य था। कूणिक वहाँ का राजा था। उसकी पटरानी का नाम पद्मावती था। *(इनका विस्तृत वर्णन औपपातिक सूत्र में है।)*

उस चम्पानगरी में श्रेणिक राजा की भार्या, कूणिक राजा की विमाता काली नामक रानी थी, जो अतीव सुकुमार, गुणों से सम्पन्न थी। उस कालीदेवी का पुत्र काल नामक कुमार था। उस कालकुमार की पद्मावती नामक पत्नी थी, जो सुकोमल थी, वह मानवीय सुख–भोगों को भोगती हुई जीवन व्यतीत कर रही थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1. Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When aforesaid is the text and meaning of the first section of the *Upanga* named *Niryavalika* as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained the eternal abode of the *Siddha*-state, how many chapters are said to be there in the second section called *Kalpavatansika* ?"

Sudharma Swami replied "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has preached ten chapters of *Kalpavatansika*, the second section. They are—(1) Padma, (2) Mahapadma, (3) Bhadra, (4) Subhadra, (5) Padmabhadra, (6) Padmasen, (7) Padmagulma, (8) Nalinigulma, (9) Anand, and (10) Nandan.

Jambu—"*Bhante* ! If there are ten chapters in *Kalpavatansika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of the first chapter of *Kalpavatansika* ?"

Sudharma Swami—"Jambu ! During that period of time there was a city called Champa. There was a garden called Purnabhadra (outside this city in the north-east direction). The ruler of the city was King Kunik. His consort was queen Padmavati. *(detailed description as in Aupapatik Sutra)*

Also in Champa city lived Kaali Devi, wife of King Shrenik and a step mother of King Kunik. She too had delicate limbs and was very beautiful. Kaali Devi had a son named Kaal Kumar. This Kaal Kumar's consort was Padmavati, who was very delicate. She lived happily enjoying comforts of life.

पद्मावती का स्वप्न–दर्शन

२. तए णं सा पउमावई देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे (जाव) सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा। एवं जम्मणं, जहा महाबलस्स, (जाव) नामधेज्जं–''जम्हा णं अम्हं इमे दारए कालस्स कुमारस्स पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं पउमे।'' सेसं जहा महाबलस्स। अट्ठओ दाओ। (जाव) उप्पिं पासायवरगए विहरइ।

सामी समोसरिए। परिसा निग्गए। कूणिए निग्गए। पउमे वि जहा महाबले, निग्गए। तहेव अम्मापिइ–आपुच्छणा, (जाव) पव्वइए अणगारे जाए (जाव) गुत्तबंभयारी।

२. वह पद्मावती देवी राज परिवार के योग्य शयन–गृह में शय्या पर सो रही थी। वह शयन–कक्ष भीतर से विविध प्रकार के चित्रों से सुसज्जित मनोहर था। किसी एक रात्रि में शय्या पर सुखपूर्वक शयन करती हुई सिंह का स्वप्न देखकर पद्मावतीदेवी जाग गई। समय पर पुत्र को जन्म दिया। महाबल की तरह उसका जन्मोत्सव मनाया गया। ''क्योंकि हमारा यह बालक कालकुमार का पुत्र और पद्मावतीदेवी का आत्मज है, अतः हमारे इस बालक का नाम 'पद्म' होना चाहिए'' इस प्रकार नामकरण किया गया। शेष समस्त वर्णन महाबल के समान समझना चाहिए, अर्थात् राजसी ठाट से उसका पालन–पोषण हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यथासमय उसने कलाचार्य के पास बहत्तर कलाएँ सीखीं। युवावस्था आने पर आठ कन्याओं के साथ उसका पाणिग्रहण हुआ। आठ–आठ वस्तुएँ दहेज में दी गईं। पद्मकुमार श्रेष्ठ प्रासाद के ऊपरी भाग में रहकर सुख भोगता हुआ विचरने लगा।

किसी एक समय भगवान महावीर स्वामी का चम्पा में समवसरण हुआ। परिषद् धर्मदेशना सुनने आयी। कूणिक भी वन्दनार्थ आया। महाबल के समान पद्मकुमार भी दर्शन–वन्दना करने के लिए आया। (धर्मश्रवण कर प्रतिबोध प्राप्त कर) पद्मकुमार महाबल के ही समान माता–पिता से अनुमति प्राप्त करके प्रव्रजित हुआ, यावत् गुप्त ब्रह्मचारी अनगार होकर विचरने लगा। *[महाबल के जन्म आदि का वर्णन भगवती शतक ११/११ में देखें।]*

DREAM OF PADMAVATI

2. Once Padmavati Devi was sleeping in her royal bedroom which was beautifully decorated with a variety of paintings. During the night, while comfortably sleeping, she woke up after seeing a lion in her dream. In due course she gave birth to a son. His birth was celebrated like that of Mahabal. It was announced—"As this child is the son of Kaal Kumar and Padmavati, he should be named Padma." Thus the boy was given this name. All other details should be taken exactly as those in case of Mahabal; that is : He was brought up in regal grandeur and was sent to a teacher where he learned seventy two arts. When he grew mature he was married to eight princesses and his parents gave him marriage gifts in sets of eight. Padma Kumar lived in the upper portion of a grand mansion and enjoyed all comforts of life.

Once the *samavasaran* (religious assembly) of Bhagavan Mahavir was held in Champa city. People came to attend the discourse. King Kunik also came to pay his homage. Like Mahabal, Padma Kumar also came to pay homage and obeisance. Like Mahabal, Padma Kumar (on listening to the sermon) also sought permission from his parents and got initiated,... and so on up to... and wandered around after becoming a completely celibate *anagar* (ascetic). *[Story of Mahabal since his birth is in Bhagavati Sutra—11/11]*

पद्म अनगार की साधना

३. तए णं से पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जिइ, अहिज्जित्ता, बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमं (जाव) विहरइ।

तए णं से पउमे अणगारे तेणं ओरालेणं, जहा मेहो, तहेव धम्मजागरिया, चिंता। एवं जहेव मेहो तहेव समणं भगवं आपुच्छित्ता विउले (जाव) पाओवगए समाणे तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं, बहुपडिपुण्णाइं पंच वासाइं सामण्णपरियाए। मासियाए संलेहणाए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दिभत्ताइं। आणुपुव्वीए कालगए। थेरा ओतिण्णा। भगवं गोयमे पुच्छइ, सामी कहेइ (जाव) सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कंते उड्ढं चंदिम. सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने। दो सागराइं।

"से णं भंते, पउमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं।" पुच्छा। "गोयमा, महाविदेह वासे, जहा दढपइन्नो, (जाव) अंतं काहिइ।"

निक्खेवो–तं एवं खल जंबू, समणेणं (जाव) संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि।

॥ पढमं अज्झयणं ॥२॥

३. तत्पश्चात् वह पद्म अनगार श्रमण भगवान महावीर के तथारूप (आगम कथित गुणों से सम्पन्न) स्थविरों के समीप रहकर सामायिक से लेकर ग्यारह अंगों का अध्ययन करता है। यावत् चतुर्थभक्त, षष्टभक्त, अष्टमभक्त इत्यादि विविध प्रकार की तपःसाधना से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगा।

क्रमशः जिस प्रकार मेघकुमार ने (ज्ञातासूत्र प्रथम अध्ययन) धर्म जागरणा करते हुए अनशन करने की भावना की, उसी प्रकार भगवान महावीर की आज्ञा लेकर विपुलगिरि पर्वत पर चढ़कर पादोपगमन अनशन कर साधना–आराधना करने लगा। उग्र तप आराधना से उसका शरीर अत्यन्त कृश, क्षीण अस्थिपंजर मात्र हो गया।

तथारूप स्थविरों से सामायिक आदि से लेकर ग्यारह अंगों का श्रवण कर परिपूर्ण पाँच वर्ष की श्रमण पर्याय का पालन किया। फिर एक मास की संलेखना अंगीकार कर, साठ भक्तों का अनशन पूर्ण कर अनुक्रम से काल को प्राप्त हुआ। उसे कालगत जानकर स्थविर पर्वत से नीचे उतरकर भगवान के समीप आये। उसके भाण्डोपकरण भगवान को बताये।

तब भगवान गौतम ने पद्म अनगार के भविष्य के विषय में प्रश्न किया। महावीर स्वामी ने उत्तर दिया कि "यह पद्म अनगार अनशन द्वारा साठ भोजनों को छेदन कर, आलोचना–प्रतिक्रमण कर सुदूर चन्द्र आदि ज्योतिष्क विमानों के ऊपर सौधर्मकल्प में देव रूप से उत्पन्न हुआ है। वहाँ दो सागरोपम की उसकी आयु है।"

गौतम स्वामी ने पुनः प्रश्न किया–"भगवन् ! वह पद्मदेव देवलोक की आयुस्थिति पूर्ण कर उस देवलोक से च्यवन करके कहाँ उत्पन्न होगा ?"

भगवान ने उत्तर दिया–"गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगा। दृढ़प्रतिज्ञ के समान (जन्म–मरण का) अन्त करेगा।" *[दृढ़ प्रतिज्ञ का वर्णन औपपातिक सूत्र १०९–११६ में देखें।]*

आर्य सुधर्मा कहते हैं–"इस प्रकार हे आयुष्मान् जम्बू ! निर्वाण को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने कल्पावतंसिका के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ प्रतिपादित किया है। इस प्रकार जैसा मैंने भगवान से सुना है, वैसा मैं कहता हूँ।"

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SPIRITUAL PRACTICES OF ASCETIC PADMA

3. After getting initiated by Shraman Bhagavan Mahavir, that ascetic Padma studied all the eleven *Angas* (canons) including *Samayik* from the senior ascetics... and so on up to... he wandered around enriching his soul by observing various austerities including one, two, and three day fasts.

As Megh Kumar (*Jnata Sutra*, chapter 1) resolved to none ahead on the spiritual path by observing serial fasts so did Padma. After seeking permission from Bhagavan Mahavir he climbed the Vipul-giri hill and commenced his spiritual accent by observing *padopagaman anashan* (lifelong fasting keeping the body motionless like a fallen tree). Due to these rigorous austerities his body got extremely weak and emaciated and he was reduced to a mere skeleton.

After studying all the eleven *Angas* (canons) including *Samayik* from the senior ascetics he immaculately observed the ascetic code for five years. After that he took the ultimate vow (*sallekhana*) of one month duration and met his end at the conclusion of the month long fast (avoiding sixty meals). When the senior ascetics accompanying him saw that he was dead they came and placed his ascetic equipment before Bhagavan Mahavir.

Then Gautam Swami asked about the future of ascetic Padma. Bhagavan Mahavir replied, "Gautam ! This ascetic Padma, after rejecting sixty meals (doing a month long fast) and doing *pratikraman* (critical review), has met his end. His soul has gone beyond *Jyotishk Vimans* (the stellar celestial vehicles) including the moon and has taken birth as a god in the *Saudharma kalp* (a dimension of gods). His life span there is two *Sagaropam*."

Gautam Swami again asked, "*Bhagavan* ! completing the age, state, and life of the dimension of gods and descending from there, where will god Padma be born ?"

Bhagavan said, "Gautam ! He will be born as a human being in the Mahavideh area and terminate the cycles of rebirth like Dridhapratijna." *(for story of Dridhapratijna refer to Aupapatik Sutra—101-116)*

Sudharma Swami told Jambu, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Kalpavatansika*. As I have heard from him and so I state."

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीय अध्ययन
SECOND CHAPTER

४. जइ णं भंते समणेणं भगवया (जाव) संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते, अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?

"एवं खलु जंबू !"

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। कूणिए राया। पउमावई देवी। तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था। तीसे णं सुकालीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे। तस्स णं सुकालस्स कुमारस्स महापउमा नामं देवी होत्था, सुउमाला।

तए णं सा महापउमा देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि, एवं तहेव, महापउमे नामं दारए, [जाव] सिज्झिहिइ। नवरं ईसाणे कप्पे उववाओ। उक्कोसट्ठिईओ।

॥ बीयं अज्झयणं ॥२।२॥

४. जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–"भगवन् ! निर्वाण को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने कल्पावतंसिका के प्रथम अध्ययन का जो भाव बताया है वह मैंने सुना, अब हे भगवन् ! उसके द्वितीय अध्ययन का भगवान ने क्या आशय कहा है ? मुझे बताएँ।"

सुधर्मा स्वामी–"आयुष्मन् जम्बू ! वह इस प्रकार है–

उस काल, उस समय में चंपानगरी थी। पूर्णभद्र चैत्य था। कूणिक राजा था। पद्मावती रानी थी। उस चम्पानगरी में श्रेणिक राजा की भार्या कूणिक राजा की विमाता सुकाली नाम की रानी थी। उस सुकाली का पुत्र सुकाल नामक राजकुमार था। उस राजकुमार सुकाल की महापद्मा नाम की पत्नी थी।

उस महापद्मा ने किसी एक रात्रि में सुखदायी शय्या पर सोते हुए एक स्वप्न देखा, इत्यादि पहले अध्ययन के समान वर्णन कहना चाहिए। बालक का जन्म हुआ और उसका महापद्म नाम रखा गया। यथासमय वह प्रव्रज्या अंगीकार करके ईशानकल्प नामक देवलोक में उत्कृष्ट दो सागरोपम की स्थिति वाला देव बनेगा। वहाँ से आयुष्य पूर्ण कर महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर सिद्ध–बुद्ध–मुक्त होगा।

इस प्रकार हे आयुष्मन् जम्बू ! श्रमण भगवान ने कल्पावतंसिका के द्वितीय अध्ययन का जो भाव बताया है, वह मैंने तुमसे कहा है।"

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

4. Jambu Swami asked—"*Bhante* ! I have heard the text and meaning of the first chapter of *Kalpavatansika* as told by Shraman Bhagavan

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mahavir, who has attained nirvana. *Bhante* ! Now please tell me the text and meaning of the second chapter of *Kalpavatansika*."

Sudharma Swami replied—"Long lived Jambu ! It is as follows—

During that period of time there was a city called Champa. (Outside this city in the north-east direction) There was a garden called Purnabhadra. The ruler of the city was King Kunik. His consort was queen Padmavati. Also in Champa city lived Sukaali Devi, wife of King Shrenik and a step mother of King Kunik. Sukaali Devi had a son named Sukaal Kumar. This Sukaal Kumar's consort was Mahapadmaa.

Once Mahapadmaa while sleeping in her comfortable bed saw a dream. Remaining details are same as in the first chapter. A son was born and was named Mahapadma. In due course he got initiated and finally he will reincarnate as a god in the *Ishan kalp* (a dimension of gods) having a life span of maximum two *Sagaropam*. After completing the life-span there he will be born in the Mahavideh area and get perfection, enlightenment and liberation.

"Long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has narrated this text and meaning of the second chapter of *Kalpavatansika*. As I have heard from him and so I state."

● END OF THE SECOND CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीय से दशम अध्ययन
THIRD TO TENTH CHAPTER

५. एवं सेसावि अट्ठ नेयव्वा। मायाओ सरिसनामाओ। कालाईणं दसण्हं पुत्ता अणुपुव्वीए–

दोण्हं च पंच चत्तारि तिण्हं, तिण्हं च होंति तिण्णे व।
दोण्हं च दोन्नि वासा, सेणियनत्तूण परियाओ॥१॥

उववाओ आणुपुव्वीए–पढमो सोहम्मे, बीओ ईसाणे, तइओ सणंकुमारे, चउत्थो माहिन्दे, पंचमो बम्भलोए,छट्ठो लंतए, सत्तमो महासुक्के, अट्ठमो सहस्सारे, नवमो पाणए, दसमो अच्चुए। सव्वत्थ उक्कोसट्ठिई भाणियव्वा। महाविदेहे सिद्धे।

॥ कप्पवडिंसियाओ समत्ताओ॥

॥ बीओ वग्गो समत्तो॥

५. इसी प्रकार आगे के आठों ही अध्ययनों का वर्णन जानना चाहिए। सबकी माताएँ पुत्रों के सदृश नाम वाली हैं अर्थात् पुत्रों के समान ही उनके नाम हैं, जैसे–भद्रकुमार की माता भद्रा, सुभद्रकुमार की माता सुभद्रा आदि। ये सभी अनुक्रम से कालादि दसों कुमारों के पुत्र थे। इन दसों की दीक्षा-पर्याय इस प्रकार थी–

(१) पद्म और (२) महापद्म अनगार की पाँच-पाँच वर्ष की, (३) भद्र, (४) सुभद्र और (५) पद्मभद्र की चार-चार वर्ष, (६) पद्मसेन, (७) पद्मगुल्म और (८) नलिनीगुल्म की तीन-तीन वर्ष की तथा (९) आनन्द और (१०) नन्दन की दीक्षा-पर्याय दो-दो वर्ष की थी। ये सभी श्रेणिक राजा के पौत्र थे।

इनके वर्णन क्रम में इस प्रकार जानना चाहिए–अनुक्रम से इनका जन्म हुआ। दीक्षा ली। देहत्याग के पश्चात् प्रथम का सौधर्म कल्प में, द्वितीय का ईशान कल्प में, तृतीय का सनत्कुमार कल्प में, चतुर्थ का माहेन्द्र कल्प में, पंचम का ब्राह्म कल्प में, छठे का लान्तक कल्प में, सातवें का महाशुक्र कल्प में, आठवें का सहस्रार कल्प में, नौवें का प्राणत कल्प में और दसवें का अच्युत कल्प में देव रूप में उपपात हुआ। सभी की आयु स्थिति उत्कृष्ट कहनी चाहिए। ये सभी स्वर्ग से च्यवन करके महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर सिद्ध होंगे।

5. The stories given in the following eight chapters are same as the preceding ones. The name of the mothers are similar to those of the sons; for example mother of Bhadra Kumar is Bhadra, that of Subhadra Kumar is Subhadra, and so on. All these were sons of the ten princes including

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Kaal Kumar respectively. The span of the part of their life they spent as ascetics was as follows—

(1) Padma and (2) Mahapadma—five years each. (3) Bhadra, (4) Subhadra, and (5) Padmabhadra—four years each. (6) Padmasen, (7) Padmagulma, and (8) Nalinigulma—three years each. (9) Anand and (10) Nandan—two years each. They all were grandsons of King Shrenik.

Additional information to be known about there life is—They progressed in this order : they were born, got initiated and after death were instantaneously reincarnated as gods in this order--first in *Saudharma kalp*, second in *Ishan kalp*, third in *Sanatkumar kalp*, fourth in *Mahendra kalp*, fifth in *Brahma kalp*, sixth in *Lantak kalp*, seventh in *Mahashukra kalp*, eighth in *Sahasrara kalp*, ninth in *Pranat kalp*, and tenth in *Achyut kalp*. There life-span there is maximum of the specific *kalp*. They will descend from the heavens to reincarnate in Mahavideh area and become *Siddhas* (liberated souls).

विवेचन—इन दसों अध्ययनों की तालिका इस प्रकार है—

क्र. सं.	पिता	माता	नाम	दीक्षा–पर्याय	देवलोक में उपपात
१.	कालकुमार	पद्मावती	पद्मकुमार	पाँच वर्ष	सौधर्म कल्प
२.	सुकालकुमार	महापद्मा	महापद्मकुमार	पाँच वर्ष	ईशान कल्प
३.	महाकालकुमार	भद्रा	भद्रकुमार	चार वर्ष	सनत्कुमार कल्प
४.	कृष्णकुमार	सुभद्रा	सुभद्रकुमार	चार वर्ष	माहेन्द्र कल्प
५.	सुकृष्णकुमार	पद्मभद्रा	पद्मभद्रकुमार	चार वर्ष	ब्राह्म कल्प
६.	महाकृष्णकुमार	पद्मसेना	पद्मसेनकुमार	तीन वर्ष	लान्तक कल्प
७.	वीरकृष्णकुमार	पद्मगुल्मा	पद्मगुल्मकुमार	तीन वर्ष	महाशुक्र कल्प
८.	रामकृष्णकुमार	नलिनीगुल्मा	नलिनीगुल्मकुमार	तीन वर्ष	सहस्रार कल्प
९.	पितृसेनकृष्णकुमार	आनन्दा	आनन्दकुमार	दो वर्ष	प्राणत कल्प
१०.	महासेनकृष्णकुमार	नन्दना	नन्दनकुमार	दो वर्ष	अच्युत कल्प

॥ कल्पावतंसिका समाप्त ॥

॥ द्वितीय वर्ग समाप्त ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—Aforesaid information contained in the ten chapters compiled in tabular form is as follows—

S. No.	Father	Mother	Name	Ascetic life	Kalps where reborn
1.	Kaal Kumar	Padmavati	Padma Kumar	five years	*Saudharma kalp*
2.	Sukaal Kumar	Mahapadmaa Kumar	Mahapadma	five years	*Ishan kalp*
3.	Mahakaal Kumar	Bhadraa	Bhadra Kumar	four years	*Sanatkumar kalp*
4.	Krishna Kumar	Subhadraa	Subhadra Kumar	four years	*Mahendra kalp*
5.	Sukrishna Kumar	Padmabhadraa	Padmabhadra Kumar	four years	*Brahma kalp*
6.	Mahakrishna Kumar	Padmasena	Padmasen Kumar	three years	*Lantak kalp*
7.	Virakrishna Kumar	Padmagulmaa	Padmagulma Kumar	three years	*Mahashukra kalp*
8.	Ramakrishna Kumar	Nalinigulmaa	Nalinigulma Kumar	three years	*Sahasrara kalp*
9.	Pitrasen-krishna Kumar	Anandaa	Anand Kumar	two years	*Pranat kalp*
10.	Mahasen-krishna Kumar	Nandanaa	Nandan Kumar	two years	*Achyut kalp*

● END OF KALPAVATANSIKA ●

● END OF SECOND SECTION ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीय वर्ग : पुष्पिका

उपोद्घात

प्रथम तथा द्वितीय वर्ग में भगवान महावीर युग के घटना प्रसंग हैं जबकि तृतीय वर्ग में पुष्पिका के दस अध्ययनों में भगवान महावीर और भगवान पार्श्वनाथ दोनों युगों का सम्बन्ध है। चन्द्र, सूर्य आदि ज्योतिष्कराज तथा अन्य प्रभावशाली देवियाँ भगवान महावीर के दर्शन करने समवसरण में आती हैं। वहाँ अपनी ऋद्धि–वैभव दिखाने तथा भगवान के प्रति भक्ति बहुमान प्रदर्शित करने हेतु नाटक दिखाती है। उनके वापस चले जाने के पश्चात् गौतम स्वामी उनके पूर्व जीवन के विषय में जिज्ञासा करते हैं तब भगवान महावीर उन देव–देवियों द्वारा पूर्व जीवन में किये गये धर्माचरण आदि का कथन करते हैं। पूर्वजन्मों का सम्बन्ध भगवान पार्श्वनाथ के धर्मशासन से जुड़ता है।

महत्त्व की बात यह है कि प्रथम के चार अध्ययनों में कठोर तपश्चरण करते हुए भी अपने गृहीत व्रतों में दोष लगने पर आलोयणा–प्रतिक्रमण द्वारा शुद्धि नहीं करने के कारण उनका विराधक दशा में मरण बताया है। इससे यह संदेश मिलता है कि साधक को जीवन के अंतिम समय में आलोयणा प्रतिक्रमण द्वारा व्रत शुद्धि अवश्य कर लेना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

THIRD SECTION : PUSHPIKA

INTRODUCTION

The first and second sections have incidents of Bhagavan Mahavir's period whereas the ten chapters of the third section, *Pushpika*, contain stories related to periods of Bhagavan Mahavir and Bhagavan Parshva Nath both. *Jyotishk Rajas* (kings of the stellar gods) including Chandra and Surya along with many other powerful goddesses come to behold and pay homage to Bhagavan Mahavir. There the present dramatic performances in order to express their devotion and respect for Bhagavan Mahavir as also to display their opulence and grandeur. After their departure Gautam Swami inquires about their past births and Bhagavan Mahavir narrates the religious conduct of those gods and goddesses during their past births. These details from the past births relate to the period of influence of Bhagavan Parshva Nath.

Important thing is that in the first four chapters the concerned individuals died in unrighteous state of mind because, even while indulging in rigorous austerities, they did not pursue spiritual purity by performing critical review for the transgressions in their accepted vows. This indicates that during the last moments of his life an aspirant should essentially pursue spiritual purity by performing critical review for the transgressions in the vows.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम अध्ययन : चन्द्र
FIRST CHAPTER : CHANDRA

१. "जइ णं भंते ! समणेणं भगवया (जाव) संपत्तेणं उवंगाणं दोच्चस्स कप्पवडिंसियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं पुप्फियाणं के अट्ठे पन्नत्ते ?"

"एवं खलु जंबू ! समणेणं (जाव) संपत्तेणं उवंगाणं तच्चस्स वग्गस्स पुप्फियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता। तं जहा–

चन्दे सूरे सुक्के बहुपुत्तिय पुण्ण माणिभद्दे य।
दत्ते सिवे बले या अणाढिए चेव बोद्धव्वे॥"

"जइ णं भंते ! समणेणं (जाव) संपत्तेण पुप्फियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते, समणेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?"

१. जम्बू स्वामी ने आर्य सुधर्मा स्वामी से प्रश्न किया–"भगवन् ! श्रमण भगवान् महावीर ने द्वितीय उपांग कल्पावतंसिका का यह (पूर्वोक्त) अर्थ प्रतिपादन किया है तो भगवन् ! उपांगों के तृतीय वर्ग रूप पुष्पिका का क्या अर्थ कहा है (कृपा कर बताएँ) ?"

आर्य सुधर्मा ने कहा–"जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने तृतीय उपांग वर्ग रूप पुष्पिका के दस अध्ययन इस प्रकार कहे हैं–(१) चन्द्र, (२) सूर्य (३) शुक्र, (४) बहुपुत्रिका, (५) पूर्णभद्र, (६) मानभद्र, (७) दत्त, (८) शिव, (९) बल, और (१०) अनादृत।"

जम्बू स्वामी ने पुनः पूछा–"भगवन् ! यदि श्रमण भगवान ने पुष्पिका नामक उपांग के दस अध्ययन बताए हैं तो प्रथम अध्ययन का क्या भाव कहा है ?"

प्रत्युत्तर में आर्य सुधर्मा स्वामी ने जम्बू स्वामी से इस प्रकार कहा–

1. Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When aforesaid is the text and meaning of the second section of the *Upanga* named *Kalpavatansika* as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of the third section of the *Upanga* named *Pushpika* ?"

Sudharma Swami replied "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has preached ten chapters of *Kalpavatansika*, third section of the Upanga named Pushpika. They are—(1) Chandra, (2) Surya, (3) Shukra, (4) Bahuputrika, (5) Purnabhadra, (6) Maan-bhadra, (7) Datta, (8) Shiva, (9) Bala, and (10) Anadrit.

Jambu—"*Bhante* ! If there are ten chapters in *Pushpika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of its first chapter ?"

Sudharma Swami replied as follows :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। राया। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं जाव [सामाणीयसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणियाहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं, अन्नेहि य बहूहिं विमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाहयनट्टगीयवाइयतन्तीतल-तालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे] **इमं च णं केवलकप्पं जम्बुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे आभोएमाणे पासए, पासित्ता, समणं भगवं महावीरं, जहा सूरियाभे, आभिओगं देवं सद्दावेत्ता (जाव) सुरिंदाभिगमणजोग्गं करेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।**

सूसरा घण्टा (जाव) विउव्वणा नवरं (जाणविमाणं) जोयणसहस्सवित्थिण्णं अद्धतेवट्ठिजोयण-समूसियं, महिंदज्झओ पणुवीसं जोयणमूसिओ, सेसं जहा सूरियाभस्स, (जाव) आगओ। नट्टविही। तहेव पडिगओ।

''भंते'' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं पुच्छा। कूडागारसाला, सरीरं अणुपविट्ठा। पुव्वभवो।

२. आयुष्मन् जम्बू ! उस काल और उस समय में राजगृह नगर था। वहाँ गुणशिलक नामक चैत्य (उद्यान) था। वहाँ श्रेणिक राजा राज्य करता था। उस काल उस समय में श्रमण भगवान महावीर राजगृह के गुणशिलक उद्यान में पधारे। दर्शनार्थ परिषद् आई।

उस समय में ज्योतिष्क देवों का राजा ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र चन्द्रावतंसक विमान की सुधर्मा सभा में चन्द्र नामक सिंहासन पर बैठा था। *[उस सभा में चार हजार सामानिक देव परिवार सहित, चार अग्रमहिषियाँ, तीन प्रकार की परिषदाएँ, सात प्रकार की सेनाएँ, सात उनके सेनापति, सोलह हजार आत्मरक्षक देव तथा अन्य दूसरे भी बहुत से उस विमान में रहने वाले देव-देवियाँ उपस्थित थे। वहाँ निरन्तर उच्च गम्भीर ध्वनिपूर्वक निपुण पुरुषों द्वारा बजाये जा रहे तंत्री-वीणा, हस्तताल, कांस्यताल, त्रुटित, घन मृदंग आदि वाद्यों एवं नाट्यों के दिव्य सुखों का अनुभव कर रहे थे।]* तब उसने अपने विपुल अवधिज्ञान से अवलोकन करते हुए इस केवलकल्प-सम्पूर्ण जम्बूद्वीप को देखा। वहाँ विराजमान श्रमण भगवान महावीर को भी देखा। तब उसके मन में भगवान के दर्शनार्थ जाने का संकल्प जाग्रत हुआ। जिस प्रकार सूर्याभदेव ने (रायपसेणिय, सूत्र ७, पृ. ८) विचार कर दर्शनार्थ जाने की तैयारी की, उसी प्रकार चन्द्रदेव ने अपने आभियोगिक आज्ञाकारी देवों को बुलाया तथा उन्हें सुरेन्द्रों के अभिगमन करने योग्य तैयारी करने की आज्ञा दी। तैयारी करके वापस सूचित करने को कहा। आभियोगिक देवों ने भी सुरेन्द्रों के अभिगमन योग्य सब कार्य करके उसे कार्य सम्पन्न होने की सूचना दी।

फिर चन्द्रदेव ने पदाति सेनानायक को आज्ञा दी-''सुस्वरा घण्टा बजाकर सब देव-देवियों को भगवान के दर्शनार्थ चलने के लिए सूचित करो।'' उस सेनानायक ने भी वैसा ही किया। यावत् सूर्याभदेव के समान नाट्यविधि आदि प्रदर्शित करने की विकुर्वणा की। यहाँ पर सूर्याभदेव के वर्णन से इतना अन्तर जानना चाहिए कि इसका यान-विमान एक हजार योजन विस्तीर्ण और साढ़े बासठ योजन ऊँचा था। उसके आगे-आगे पच्चीस योजन ऊँची महेन्द्रध्वजा चल रही थी। इसके अतिरिक्त सभी वर्णन सूर्याभ विमान के समान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समझना चाहिए। जिस प्रकार सूर्याभदेव भगवान के पास आया, नाट्यविधि प्रदर्शित की और वापस लौट गया, वही सब चन्द्रदेव के विषय में भी जान लेना चाहिए। *[सूर्याभदेव के विस्तृत वर्णन हेतु देखें सचित्र रायपसेणियसूत्र, सूत्र ६६ से ११२ तक।]*

चन्द्रदेव के लौट जाने के पश्चात् भगवान गौतम ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार करके प्रश्न किया-"भंते ! ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिष्क राजा चन्द्र द्वारा विकुर्वित वह सब दिव्य देव-ऋद्धि, दैविक प्रभाव कहाँ चले गये ? कहाँ समा गये ?"

भगवान ने कूटागारशाला का दृष्टान्त देकर बताया-"गौतम ! चन्द्र द्वारा विकुर्वित वह सब दिव्य ऋद्धि आदि उसके शरीर में चली गई, अन्तर्लीन हो गई। (कूटागारशाला का दृष्टान्त रायपसेणियसूत्र अनुसार इस प्रकार है-)

"हे गौतम ! (कल्पना करें) जैसे कोई एक गहरी, विशाल कूटाकार-पर्वत शिखर के आकार वाली शाला हो। वह भीतर-बाहर गोबर आदि से लिपी-पुती, बाहर परकोटे-से घिरी हुई, मजबूत किवाड़ों से युक्त गुप्त द्वार वाली, जिसमें वायु का प्रवेश भी कठिन हो, उस कूटाकारशाला के निकट एक विशाल जनसमूह बैठा हो। उस समय वह जनसमूह आकाश में एक बहुत बड़े मेघपटल-सघन बादलों के समूह को अथवा जलवृष्टि करने योग्य बादलों को अथवा प्रचण्ड आँधी को आता हुआ देखे तो जैसे वह उस कूटाकारशाला के भीतर प्रवेश कर जाता है, उसी प्रकार हे गौतम ! सूर्याभदेव की वह सब दिव्य देव-ऋद्धि (देव-माया) आदि उसके शरीर में प्रविष्ट हो गई-अन्तर्लीन हो गई है, इस कारण मैंने कहा कि "वह उसके शरीर में ही प्रविष्ट हो गई।" *(रायपसेणियसूत्र, सूत्र ११६)*

तदनन्तर गौतम स्वामी ने पूछा-"भंते ! उस देव को इस प्रकार की वह दिव्य देव-ऋद्धि यावत् दिव्य देवानुभाव कैसे प्राप्त हुआ है ? पूर्वभव में वह कौन था ? [उसने ऐसा क्या दान दिया ? ऐसा क्या भोग किया ? ऐसा क्या शुभ कार्य किया ? ऐसा कौन-सा आचरण किया ? और कौन से तथारूप श्रमण अथवा माहण से ऐसा कौन-सा एक भी धार्मिक आर्य सुवचन सुना और अवधारित किया कि जिससे उस देव ने वह दिव्य देव-ऋद्धि यावत् दैविक प्रभाव प्राप्त किया है ?]"

KING OF GODS CHANDRA IN CHANDRA VIMAN

2. "Long lived Jambu ! During that period of time there was a city called Rajagriha where there was a *chaitya* (garden) called Gunasheelak. The ruler of the city was King Shrenik. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Gunasheelak Chaitya in Rajagriha. People came to pay homage.

During that period of time Chandra, the king of Chandra Jyotishk gods was sitting on a throne named Chandra in the *Sudharma* assembly in *Chandravatansak Viman* (celestial vehicle). [In that assembly four thousand vehicle based gods, four queen-goddesses, three types of assemblies, seven armies, seven commanders, sixteen thousand guard-gods and a mass of many other gods and goddesses residing in that *viman* were in attendance. They were enjoying the divine pleasures that included drama as

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

well as loud and resonant musical performance of instruments like *Veena*, cymbal, bronze cymbal, *Trutit*, and *Ghan Mridang* played by accomplished artists.] Then with the help of his all enveloping *Avadhi Jnana* he observed this whole Jambu continent. Chandra saw Shraman Bhagavan Mahavir stationed there and had a desire to go to pay him homage and obeisance. As Suryabh god had thought and made preparations to go to behold *Bhagavan* (*Rayapaseniya*, Sutra-7, p. 8), Chandrabh god too called his *Abhiyogik Devs* (servant-gods) and instructed them to make preparations for travel, suitable for kings of gods, and report back. Accordingly the servant-gods made preparations suitable for travel of kings of gods and reported back.

Chandra then instructed the commander of his army of foot soldiers—"Sound the melodious bell to inform all gods and goddesses to come to pay homage to *Bhagavan*." The commander followed the instructions... and so on up to... created arrangements for display of stage performances as Suryabh god had done. The only variation from the description of Suryabh god is that here the *viman* was one thousand *Yojan* in area and sixty two *Yojan* in height and it was preceded by a twenty five *Yojan* tall flag called *Mahendra Dhvaj*. Besides this all other details of the *viman* are same as those of *Suryabh viman*. Also same for Chandra god is the description that follows, as to how Suryabh god came to Bhagavan, presented the stage performance, and returned. *[for detailed description of Suryabh god refer to Illustrated Rayapaseniya Sutra, sutra-66 to 112]*

When Chandra left, Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir after paying homage and obeisance—"*Bhante* ! Where did the divine display of opulence and powers created by Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods, go and disappear ?"

Bhagavan answered the question by giving the example of *Kutagar*—"Gautam ! The divine display of opulence and powers created by Chandra was drawn into and disappeared within his own body. (the example of *Kutagar* according to *Rayapaseniya Sutra* is as follows —)

"Gautam ! Suppose there is a cone shaped (like hill-top) camouflaged house, large and deep underground. It is plastered within and outside with cow-dung. It is surrounded by a parapet wall and has strong and air-tight but concealed doors. A large crowd is sitting near that camouflaged house. If that crowd suddenly sees dark rain bearing clouds or a terrible storm approaching, it at once enters that camouflaged house and disappears. In the same way, Gautam ! all the opulence and divine illusion displayed by Suryabh god entered and merged into his body. That is why I said that it entered into his own body." (*Rayapaseniya Sutra*, Sutra 116)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

After that Gautam Swami asked—*"Bhante* ! How did that god acquire that divine opulence and power ? Who was he in the past birth ? (What charity had he made ? What experience did he gain ? What good deed did he perform ? What conduct did he follow ? And what religious and noble words he listened to and accepted from a sagacious *Shraman* or Brahmin so as to be endowed with such divine opulence and power ?)

श्रावस्ती नगरी का अंगति गाथापति (चन्द्र देव का पूर्व भव)

३. 'गोयमा' इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी--एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था। कोट्ठए चेइए। तत्थ णं सावत्थीए अंगई नामं गाहावई होत्था अड्ढे (जाव) अपरिभूए।

तए णं से अंगई गाहावई सावत्थीए नयरीए बहूणं नगर--निगम सेट्ठि–सेणावइ सत्थवाह–दूय–संधिवालाणं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेस य कुडुम्बेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य णं कुडुम्बस्स मेढी पमाणं आहारे आलम्बणं, चक्खू, मेढीभूए जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था। जहा आणंदो।

३. श्रमण भगवान महावीर ने गौतम को संबोधित कर कहा–''गौतम ! उस काल उस समय में श्रावस्ती नाम की नगरी थी। वहाँ कोष्ठक चैत्य था। उस श्रावस्ती नगरी में अंगति नामक एक गाथापति निवास करता था, जो समृद्धि–सम्पन्न था। लोगों द्वारा अपरिभूत था (–प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण कोई उसका अपमान, तिरस्कार, अनादर नहीं कर सकता था।)

वह अंगति गाथापति (आनन्द श्रावक की तरह) श्रावस्ती नगरी के बहुत से नगर–निवासी व्यापारी, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह, दूत, संधिपालक आदि के अनेक कार्यों में, कारणों (उपायों) में, मंत्रणाओं (परामर्श) में, पारिवारिक समस्याओं के समाधान में, गोपनीय बातें जानने योग्य, निर्णय लेने में सक्षम, सामाजिक व्यवहारों में पूछने योग्य एवं परामर्श करने योग्य था। वह अपने कुटुम्ब परिवार का मेढि–केन्द्रीय आधार, प्रमाण--व्यवस्थापक, आलम्बन, चक्षु–मार्गदर्शक, मेढिभूत यावत् (प्रमाणभूत, आधारभूत, आलंबनभूत, चक्षुभूत) तथा सब कार्यों में अग्रणी था।

ANGATI GATHAPATI OF SHRAVASTI CITY (EARLIER BIRTH OF CHANDRA)

3. Shraman Bhagavan Mahavir replied—"Gautam ! During that period of time there was a city named Shravasti. Outside the city there was a *Chaitya* named Koshthak. In Shravasti lived a householder (*gathapati*) named Angati who was very rich. He was insuperable (due to his status and influence he could not be insulted, ignored or belittled by anyone).

That Angati Gathapati (like Anand Shravak) enjoyed a very high reputation among a large number of traders, merchants, commanders, caravan chiefs, emissaries, ambassadors and other citizens of Shravasti as

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

a confidante, arbiter, trouble shooter and counselor in diverse matters like general activities, business, social and family problems, and other deliberations. He was the spine, manager, provider and guide of his family. He lead the family in every walk of life.

अर्हत् पार्श्व का पदार्पण

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे णं अरहा पुरिसादाणीए आइगरे, जहा महावीरो, नवुस्सेहे सोलसेहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठतीसाए अज्जियासहस्सेहिं (जाव) कोट्ठए समोसढे। परिसा निग्गया।

तए णं से अंगई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठे जहा कत्तिओ सेट्ठी तहा निग्गच्छई (जाव) पज्जुवासइ। धम्मं सोच्चा निसम्म, जं, नवरं, ''देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठावेमि। तए णं अहं देवाणुप्पियाणं जाव पव्वयामि।'' जहा गंगदत्ते तहा पव्वइए (जाव) गुत्तबंभयारी।

४. उस काल उस समय में पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु श्रमण भगवान महावीर के समान धर्म की आदि करने वाले तीर्थंकर विद्यमान थे। उनका शरीर नौ हाथ ऊँचा था। अर्हत् पार्श्व प्रभु सोलह हजार श्रमणों एवं अड़तीस हजार आर्याओं के समुदाय के साथ ग्रामानुग्राम विहार करते हुए (श्रावस्ती के) कोष्ठक चैत्य में पधारे। परिषद् दर्शनार्थ निकली।

तब वह अंगति गाथापति प्रभु के पधारने का संवाद सुनकर हर्षित एवं संतुष्ट होता हुआ कार्तिक श्रेष्ठी के समान अपने घर से निकला यावत् पर्युपासना करे लगा। धर्म उपदेश सुनकर हृदय में धारण कर उसने प्रभु से निवेदन किया–''देवानुप्रिय ! में अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित करूँगा। तत्पश्चात् आप देवानुप्रिय के निकट प्रव्रज्या ग्रहण करूँगा।'' पश्चात् वह गंगदत्त के समान प्रव्रजित हुआ यावत् गुप्त ब्रह्मचारी अनगार हो गया।

(कार्तिक श्रेष्ठी और गंगदत्त दोनों ही बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रत के तीर्थ में हुए। इनका वर्णन भगवतीसूत्र में क्रमशः शतक १५, उ. २ तथा शतक १५, उ. ५ में एवं धर्मकथानुयोग, भाग २, द्वितीय स्कंध, पृ. २२–२८ पर देखना चाहिए।)

ARRIVAL OF ARHAT PARSHVA

4. During that period of time Purushadaniya Arhat Parshva, the propagator of a religion similar to Bhagavan Mahavir, was living. He was nine cubits tall. Moving from one village to another with his ascetic group of sixteen thousand *Shramans* (male ascetics) and thirty eight thousand *Aryaas* (female ascetics), Arhat Parshva arrived at Koshthak Chaitya (in Shravasti). People came to behold and pay homage to him.

On getting the news of *Bhagavan's* arrival Angati Gathapati was pleased and, like Kartik merchant, he came out of his house... and so on up to... and commenced worship. After listening to and understanding the sermon he said to *Bhagavan*—"Beloved of gods ! I would make my eldest son the head of my family and after that I will get initiated by you." In due course he got initiated like Gang-datt... and so on up to... became an absolutely celibate *anagar* (homeless ascetic).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Kartik merchant and Gang-datt both lived during the period of influence of the twentieth *Tirthankar* Bhagavan Munisuvrat. Their stories are available in *Bhagavati Sutra*, 15/2, 5 and *Dharmakathanuyoga* Part-2, pp. 22-28.)

अंगति अनगार का उपपात

५. तए णं से अंगई अणगारे पासस्स अरहओ तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ (जाव) भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्ण–परियागं पाउणइ पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा चंदवडिंसए विमाणे उववाइयाए सभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए चंदे जोइसिंदत्ताए उववन्ने।

तए णं से चंदे जोइसिंदे जोइसियराया अहुणोववन्ने समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छइ, तं जहा–आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए सासोसासपज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए।

५. तत्पश्चात् अंगति अनगार ने अर्हत् पार्श्वनाथ के तथारूप स्थविरों के पास सामायिक (आचारांग) आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया। अध्ययन करने के पश्चात् चतुर्थभक्त आदि विविध प्रकार के तप द्वारा आत्मा को भावित करते हुए उसने बहुत वर्षों तक श्रमण–पर्याय का पालन किया। अन्त में अर्धमासिक संलेखनापूर्वक अनशन द्वारा तीस भक्तों (भोजनों) का छेदन कर मरण समय आने पर–मरण प्राप्त करके संयम की विराधना करने के कारण चन्द्रावतंसक विमान की उपपात–सभा में देवदूष्य से आच्छादित देव–शय्या में ज्योतिष्केन्द्र चन्द्रदेव के रूप में उत्पन्न हुआ।

तब वह ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिष्कराज चन्द्र आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति और भाषा–मनःपर्याप्ति इन पाँच प्रकार की पर्याप्तियों से पर्याप्तभाव को प्राप्त हुआ।

UPAPAT OF ANGATI ANAGAR

5. After studying all the eleven *Angas* (canons) including *Samayik* from the senior ascetic disciples of Arhat Parshva and enkindling his soul by observing a variety of austerities including fasting, he immaculately followed the ascetic code for many years. In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of half a month duration and met his end at the conclusion of the fortnight long fast (avoiding thirty meals). As he died without doing *pratikraman* (critical review) his soul has reincarnated instantaneously (*upapat*) as Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods, in the divine bed covered with divine cloth in the *Upapat*-hall of *Chandravatansak viman*.

Thereafter Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods attained the state of full development (*paryapti*) through five kinds of full development (*paryapti*) namely, *ahar* (food) *paryapti, sharira* (body) *paryapti, indriya* (sense organs) *paryapti, shvasochhavas* (breathing) *paryapti*, and *bhasha-man* (speech and mind) *paryapti*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. "चंदस्स णं भंते, जोइसिंदस्स जोइसरन्नो केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ?

गोयमा ! पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं। एवं खलु गोयमा, चंदस्स जाव जोइसरन्नो सा दिव्वा देविड्ढी।

चंदे णं भंते ! जोइसिंदे जोइसराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

६. गणधर गौतम ने श्रमण भगवान महावीर से पूछा–"भंते ! ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिष्कराज चन्द्रदेव की वहाँ कितने काल की आयु–स्थिति है ?"

"हे गौतम ! एक लाख वर्ष अधिक एक पल्योपम की स्थिति है। इस प्रकार हे गौतम ! उस ज्योतिष्कराज चन्द्र ने वह दिव्य देव–ऋद्धि प्राप्त की है।"

गणधर गौतम ने पुनः प्रश्न किया–"भंते ! ज्योतिष्क इन्द्र ज्योतिष्कराज चन्द्र इस देवलोक की आयु पूर्ण करके कहाँ उत्पन्न होगा ?"

"गौतम ! यह भी महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर सिद्धगति प्राप्त करेगा।"

THE FUTURE BIRTH OF CHANDRA GOD

6. Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir—*"Bhante* ! What is the life span of Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods ?"

"Gautam ! His life span there is one hundred thousand years more than one *Palyopam.* Thus, Gautam ! that Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods acquired that divine opulence and power."

Gautam Swami again asked, *"Bhante* ! Completing the age, state, and life of the dimension of gods where will Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods, be born ?"

Bhagavan said, "Gautam ! He will be born as a human being in the Mahavideh area and finally become a *Siddha* (liberated soul)."

७. तं एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

७. आयुष्मन् जम्बू ! इस प्रकार से मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के प्रथम अध्ययन का यह भाव प्रतिपादित किया है। ऐसा मैं कहता हूँ। प्रथम अध्ययन सम्पूर्ण हुआ।

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

7. Sudharma Swami told Jambu, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Pushpika.* So I state."

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीय अध्ययन : सूर्य
SECOND CHAPTER : SURYA

८. जइ णं भंते समणेणं भगवया (जाव) पुप्फियाणं पढमस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं, भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

८. जम्बू–''भंते ! यदि श्रमण भगवान ने पुष्पिका के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ बताया है तो श्रमण भगवान ने पुष्पिका के द्वितीय अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?''

8. Jambu—*"Bhante* ! When this is the text and meaning of the first chapter of *Pushpika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of the second chapter of *Pushpika* ?"

सूर्य का समवसरण में आगमन

९. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। समोसरणं। जहा चंदो तहा सूरो वि आगओ (जाव) नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगओ। पुव्वभवपुच्छा। सावत्थी नगरी। सुपइट्ठे नामं गाहावई होत्था। अड्ढे जहेव अंगई (जाव) विहरइ। पासो समोसढो, जहा अंगइ तहेव पव्वइए तहेव विराहियसामण्णे, (जाव) महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ (जाव) अंतं करेहिइ।

९. सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–''आयुष्मन् जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृह नगरी में गुणशिलक चैत्य था। वहाँ श्रेणिक राजा राज्य करता था। एकदा श्रमण भगवान महावीर का पदार्पण हुआ। जैसे भगवान के दर्शन करने के लिए चन्द्रदेव आया था उसी प्रकार सूर्य इन्द्र का भी आगमन हुआ यावत् नृत्य–विधियाँ प्रदर्शित कर वापस चला गया।''

तत्पश्चात् गणधर गौतम ने सूर्यदेव के पूर्वभव के विषय में प्रश्न किया। भगवान् ने इस प्रकार प्रत्युत्तर दिया–

श्रावस्ती नाम की नगरी थी। वहाँ धन–वैभव आदि से सम्पन्न सुप्रतिष्ठ नामक गाथापति रहता था। वह भी अंगति के समान धनाढ्य एवं प्रभावशाली था। वहाँ अर्हत् पार्श्व प्रभु पधारे। अंगति के समान सुप्रतिष्ठ ने प्रव्रज्या ली। उसी तरह संयम की विराधना करने के कारण मरण को प्राप्त कर सूर्यविमान में देवरूप में उत्पन्न हुआ। आयु क्षय होने पर वहाँ से च्यवकर महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर सिद्धि प्राप्त करेगा यावत् सर्व दुःखों का अन्त करेगा।

KKKK

9. "Long lived Jambu ! During that period of time there was a city called Rajagriha where there was a *chaitya* (garden) called Gunasheelak. The ruler of the city was King Shrenik. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Gunasheelak Chaitya in Rajagriha. Like

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Chandra god, Surya, the king of *Surya Jyotishk* gods also came... and so on up to... presented the stage performance, and returned.

Then Gautam Swami asked about the earlier birth of Surya god. *Bhagavan* replied—

There was a city named Shravasti where lived a householder (*gathapati*) named Supratishtha who was very rich and opulent. Like Angati, he was also affluent and insuperable. Arhat Parshva arrived there. Like Angati, Supratishtha got initiated. In the same way, as he died without doing *pratikraman* (critical review) his soul has reincarnated as a god in *Surya viman*. Completing the age, state, and life of the dimension of gods he will be born as a human being in the Mahavideh area and finally become a *Siddha* (liberated soul) to end all miseries."

१०. निक्खेवओ–तं एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। ति बेमि।

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

१०. आयुष्मन् जम्बू ! इस प्रकार मुक्ति को संप्राप्त श्रमण भगवान ने पुष्पिका के द्वितीय अध्ययन का यह भाव कथन किया है। ऐसा मैं कहता हूँ।

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

10. "Long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the second chapter of *Pushpika*. So I state."

● END OF THE SECOND CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीय अध्ययन : शुक्र
THIRD CHAPTER : SHUKRA

११. उक्खेवओ–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव पुप्फियाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, तच्चस्स णं भंते, अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

एवं खलु जंबू।

११. जम्बू स्वामी ने आर्य सुधर्मा स्वामी से प्रश्न किया–"भंते ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने पुष्पिका के द्वितीय अध्ययन का पूर्वोक्त भाव बताया है तो श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के तृतीय अध्ययन का क्या भाव बताया है ?"

आर्य सुधर्मा स्वामी ने कहा–"आयुष्मन् जम्बू ! वह इस प्रकार है–

11. Jambu Swami asked Sudharma Swami—"*Bhante* ! When this ic the text and meaning of the second chapter of *Pushpika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of the third chapter of *Pushpika* ?"

Arya Sudharma said—"Long lived Jambu ! It is as follows—

१२. रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसढे। परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सुक्के महग्गहे सुक्कवडिंसए विमाणे सुक्कंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहेव चंदो तहेव आगओ नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगओ।

"भंते" त्ति। कूडागारसाला। पुव्वभव पुच्छा।

१२. राजगृह नगर था। गुणशिलक चैत्य था। वहाँ राजा श्रेणिक राज्य करता था। किसी समय स्वामी (श्रमण भगवान महावीर) का पदार्पण हुआ। धर्मदेशना श्रवण करने के लिए परिषद् निकली।

उस काल उस समय में शुक्र महाग्रह (शुक्रदेव) शुक्रावतंसक विमान में शुक्र सिंहासन पर बैठा था। चार हजार सामानिक देवों आदि के साथ नृत्य गीत आदि दिव्य सुख भोग रहा था। वह चन्द्रदेव के समान पूरे परिवार के साथ भगवान के समवसरण में आया। उस शुक्राधिपति ने चन्द्रदेव की तरह नृत्य-विधि का प्रदर्शन किया और नृत्य-विधि दिखाकर वापस दर्शन-वन्दन करके चला गया।

तत्पश्चात् गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महाबीर से उसकी दैविक ऋद्धि आदि के अन्तर्लीन होने के सम्बन्ध में पूछा। भगवान ने कूटाकारशाला के दृष्टान्त द्वारा गौतम का समाधान किया। तदनन्तर गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव के सम्बन्ध में जिज्ञासा की।

12. There was a city called Rajagriha where there was a *chaitya* (garden) called Gunasheelak. The ruler of the city was King Shrenik. Once

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Swami (Shraman Bhagavan Mahavir) arrived. People came to attend religious discourse.

During that period of time Shukra Mahagraha (great planet; the king of *Shukra Jyotishk* gods) was sitting on a throne named Shukra in *Shukravatansak Viman* (celestial vehicle). In that assembly there were four thousand vehicle based gods,... and so on up to... They were enjoying the divine pleasures.

Like Chandra god, Shukra god also came with his family... and so on up to... presented the stage performance, and returned.

Then Gautam Swami asked about the disappearance of his divine opulence (etc.). *Bhagavan* gave him the example of *Kutagar-shala* (camouflaged house) and explained. Gautam Swami further asked about the earlier birth of Shukra god.

शुक्र महाग्रह का पूर्वभव

१३. 'एवं खलु गोयमा'। तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी होत्था। तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे परिवसइ। अड्ढे जाव अपरिभूए रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिए। पासे समोसढे। परिसा पज्जुवासइ।

१३. भगवान महावीर ने प्रत्युत्तर में बताया-"गौतम ! उस काल उस समय में वाराणसी नगरी थी। उस वाराणसी नगरी में सोमिल नामक ब्राह्मण निवास करता था, जो धन-धान्य आदि से सम्पन्न यावत् अत्यन्त प्रभावशाली था। ऋग्वेद आदि (चार वेद, इतिहास, निघण्टु, व्याकरण आदि का सांगोपांग ज्ञाता) में पारंगत था। एक समय पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु वहाँ पधारे। परिषद् दर्शन करने निकली और पर्युपासना करने लगी।

EARLIER BIRTH OF SHUKRA MAHAGRAHA

13. Bhagavan Mahavir replied—"Gautam ! During that period of time there was a city named Varanasi. In Varanasi lived a Brahmin named Somil who was very rich and insuperable. He was a scholar of *Rigveda* (this includes all the four *Vedas*, history, lexicon, grammar, etc.). Once Purushadaniya Arhat Parshva, arrived there. People came to behold and pay homage to him.

१४. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए-"एवं पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं (जाव) अम्बसालवणे विहरइ। तं गच्छामि णं पासस्स अरहओ अंतिए पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं" जहा पण्णत्तीए।

सोमिलो निग्गओ खण्डियविहूणो (जाव) एवं वयासी-"जत्ता ते भंते ! जवणिज्जं च ते ?" पुच्छा। "सरिसवया मासा कुलत्था ? एगे भवं ?" (जाव) संबुद्धे। सावगधम्मं पडिवज्जित्ता पडिगए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं पासे णं अरहा अन्नया कयाइ वाणारसीओ नयरीओ अम्बसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं।

तए णं से सोमिले माहणे अन्नया कयाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणयाए य मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं परिवड्ढमाणेहिं सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं परिहायमाणेहिं मिच्छत्तं च पडिवन्ने।

१४. तदनन्तर सोमिल ब्राह्मण ने अर्हत् पार्श्व का आगमन समाचार सुनकर इस प्रकार चिन्तन किया–पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु पूर्वानुपूर्वी क्रम से गमन करते हुए वाराणसी के आम्रशालवन में विराज रहे हैं। मैं जाऊँ और अर्हत् पार्श्व प्रभु के समाने उपस्थित होकर उनसे इस प्रकार के अर्थ प्रश्न हेतु, (कारण) और उनकी व्याख्या पूछूँ। (जैसा व्याख्याप्रज्ञप्ति में वर्णन है।)

तत्पश्चात् अपने शिष्यों को साथ लिए बिना ही अकेला सोमिल अपने घर से निकला। भगवान की सेवा में पहुँचकर इस प्रकार प्रश्न किया–"भगवन् ! आपकी यात्रा कैसी है ? आपके यापनीय क्या हैं ? और आपका प्रासुक विहार कैसा हो रहा है ? आपके लिए सरिसव (सरसों) मास (माष–उड़द) कुलत्था (कुलथी धान्य)–भक्ष्य हैं या अभक्ष्य हैं ? आप एक हैं ? (क्या आप दो हैं ? क्या आप अनेक हैं आदि।" प्रभु ने उन प्रश्नों का यथोचित उत्तर दिया) जिनका समाधान पाकर सोमिल संबुद्ध हुआ और श्रावक धर्म को अंगीकार करके वापस अपने स्थान पर आया। इसके बाद किसी एक दिन अर्हत् पार्श्व वाराणसी नगरी के आम्रशालवन चैत्य से विहार करके अन्य जनपदों में विचरण करने लगे।

तदनन्तर वह सोमिल ब्राह्मण किसी समय असाधु दर्शन–महाव्रतधारी साधुओं का दर्शन न कर पाने के कारण एवं निर्ग्रन्थ श्रमणों की पर्युपासना (निकट सम्पर्क) नहीं करने के कारण–उनके उपदेश श्रवण का संयोग नहीं मिलने से तथा मिथ्यात्व पर्यायों के बढ़ते जाने से एवं सम्यक्त्व–पर्यायों के धीरे–धीरे हीन होने (घटने) से मिथ्यात्व भाव को प्राप्त होकर श्रद्धाविहीन मिथ्यादृष्टि हो गया।

14. On getting the news of Arhat Parshva's arrival Somil Brahmin thought—Wandering from one village to another Purushadaniya Arhat Parshva has arrived and is stationed at Amrashaalvan in Varanasi. I should go and put forth my questions to him and seek answers, reasons and elaborations from him. (as described in *Vyakhyaprajnapti*)

Then Somil left his house alone without taking his disciples along. He came to *Bhagavan* and asked—"*Bhante* ! How is your journey ? What are your restraints (*yaapaniya*) ? How are your defined movement (*prasuk vihar*) ? Are *Sarisava* (*Sarason* or mustard seeds), *Maash* (*Udad*; a kind of pulse; Phaseolus mungo L.), and *Kulattha* (*Kulathi*; horse-bean; Dolichos biflorus L.) edible for you or not ? Are you one ? (Are you two ? Are you many ? etc." *Bhagavan* gave suitable replies) On getting the answers Somil got enlightened and accepted the *Shravak-dharma* (code of conduct meant for Jain laity). He then returned home. Later Arhat Parshva left Amrashaalvan Chaitya in Varanasi and commenced his itinerant life in other areas.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In the absence of opportunities to behold ascetics who observe great vows, to associate himself with *Nirgranth Shramans* (detached ascetics), and to listen to their discourses, the righteous thoughts of Somil Brahmin were gradually replaced by unrighteous thoughts and with passage of time, he succumbed to falsehood to become an unrighteous person devoid of devotion.

विवेचन–सोमिल ब्राह्मण के सम्बन्ध में यहाँ बहुत ही संक्षेप में कथन करके उसके प्रश्नों के सम्बन्ध में व्याख्याप्रज्ञप्ति–भगवतीसूत्र से जान लेने की सूचना दी है।

यहाँ सर्वप्रथम ज्ञातव्य है, भगवतीसूत्र में वर्णित सोमिल ब्राह्मण इससे भिन्न व्यक्ति है। यह सोमिल वाराणसी का रहने वाला तथा भगवान पार्श्वनाथ से प्रश्न पूछता है, जबकि भगवती का सोमिल वाणिज्यग्राम का रहने वाला है तथा वह भगवान महावीर से प्रश्नोत्तर करता है। हाँ, केवल नाम की तथा प्रश्नों के विषय की समानता है। इसलिए यहाँ प्रश्न और उनके उत्तर भगवतीसूत्र से जान लेने की सूचना है। इन प्रश्नों में कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न व उनके उत्तर इस प्रकार हैं–

प्रश्न १–भंते आपके यात्रा है, वह कैसी है ?

उत्तर–तप, नियम, संयम, स्वाध्याय, ध्यान और आवश्यक आदि योगों में यतना-प्रवृत्ति करना ही मेरी यात्रा है।

प्रश्न २–भंते ! आपके यापनीय क्या है ?

उत्तर–यापनीय दो प्रकार का है। श्रोत्र आदि पाँचों इन्द्रियों को अपने वश करके रखना, (१) इन्द्रिय यापनीय है। क्रोध आदि चारों कषाय समूल नष्ट हो चुके हैं यह (२) नोइन्द्रिय यापनीय है।

प्रश्न ३–भंते ! आपके अव्याबाध (बाधारहित) क्या है ?

उत्तर–शरीर के वात, पित्त, कफ आदि विकार उपशान्त हैं। यह मेरा अव्याबाध (शरीर सम्बन्धी बाधारहित–सुख) है।

प्रश्न ४–भंते ! आपका प्रासुक विहार क्या है ?

उत्तर–स्त्री, पशु, नपुंसक आदि से रहित, उद्यान आदि निर्दोष स्थान में विचरण करना–यह मेरा प्रासुक विहार है।

प्रश्न ५–भंते ! सरिसव भक्ष्य है या अभक्ष्य ?

उत्तर–भक्ष्य भी है, और अभक्ष्य भी।

प्रश्न–ऐसा आप किस कारण से कहते हैं ?

उत्तर–**सदृशवय**–समवयस्क मित्र अभक्ष्य है तथा **सरिसव**–धान्य भक्ष्य है।

प्रश्न ६–भंते ! मास भक्ष्य है या अभक्ष्य है ?

उत्तर–भक्ष्य भी है, अभक्ष्य भी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न–ऐसा आप किस कारण से कहते हैं ?

उत्तर–द्रव्य मास अभक्ष्य है, जैसे कि श्रावण आदि महीने तथा सोना–चाँदी आदि मापने का परिमाण। यह अभक्ष्य है। भाव मास में भी माष (उड़द) धान्य जो शस्त्र परिणत (जीवरहित) तथा एषणीय है वह भक्ष्य है, शेष अभक्ष्य।

प्रश्न ७–'कुलत्था' भक्ष्य है या अभक्ष्य ?

उत्तर–'कुलत्था' शब्द के दो अर्थ हैं, कुलीन स्त्री तथा कुलत्था (कुलथी) धान्य। कुलथी धान्य शस्त्र परिणत तथा याचना से प्राप्त हुआ एषणीय होता है, भक्ष्य है, शेष अभक्ष्य है।

प्रश्न ८–भन्ते ! आप एक हैं या अनेक ?

उत्तर–मैं द्रव्य दृष्टि से आत्मा एक हूँ। ज्ञान–दर्शन पर्याय के भेद से दो हूँ। उपयोग की दृष्टि से (भूत, वर्तमान तथा भविष्य परिणामों की दृष्टि से) अनेक हूँ। –भगवतीसूत्र, शतक १८, उ. १०

इसी प्रकार के प्रश्न–उत्तर ज्ञाताधर्मकथांग, अध्ययन ५ में शैलक राजर्षि के प्रसंग में भी आये हैं।

Elaboration—Only a brief account about Somil Brahmin is given here with an advise to refer to *Vyakhyaprajnapti* (*Bhagavati Sutra*) for greater details about his queries.

Here it should be understood that Somil Brahmin mentioned in *Bhagavati Sutra* is in fact a different person and not the one mentioned here. Somil mentioned here is a resident of Varanasi and he asks questions from Bhagavan Parshva Nath, whereas Somil of *Bhagavati Sutra* is a resident of Vanijyagram and he asks questions from Bhagavan Mahavir. However, as the names and questions asked are similar it has been advised here to refer to *Bhagavati Sutra* for more details. Some of the important questions under reference and their answers are as follows—

Q. 1. *Bhante* ! How is your journey ?

Ans. To pursue austerities (*tap*), codes (*niyam*), discipline (*samyam*), self-study (*svadhyaya*), meditation (*dhyan*), and associations (*yoga*) with essential duties (*avashyak*) is my journey.

Q. 2. *Bhante* ! What are your restraints (yaapaniya) ?

Ans. Restraints (*yaapaniya*) is of two kinds. To have complete control over the sense organs including that of hearing is my (1) restraint over senses (*indriya yaapaniya*). I have completely rooted out all the four passions including anger; this is my (2) restraint other than that over senses (*noindriya yaapaniya*).

Q. 3. *Bhante* ! What is the meaning of 'unrestricted' in your context ?

Ans. In my case physical disorders caused by the three body humours, air (*vaat*), bile (*pitta*), and phlegm (*cough*) have been completely pacified.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The meaning of 'unrestricted' in my context is this state of bliss 'unrestricted' by body.

Q. 4. What is your defined movement and stay (*prasuk vihar*) ?

Ans. To move and stay in areas and places that are free of women, animals, eunuches, and other such faults is my defined movement and stay (*prasuk vihar*).

Q. 5. *Bhante* ! Is *Sarisava* edible (*bhakshya* or usable or acceptable) for you or not ?

Ans. It is edible and inedible both.

Q. Why do you say that ?

Ans. *Sarisava* (*sadrashvaya* or of same age) friend is unacceptable (*abhakshya*) and *Sarisava* (*Sarason* or mustard) seeds are edible (*bhakshya*).

Q. 6. *Bhante* ! Is *Maas* edible or not ?

Ans. *Maas* in its literal meaning of months (like *Shravan*) and measure of gold or silver is of no use (*abhakshya*). However, one of its interpretation is only *Maash* (*Udad*; a kind of pulse; Phaseolus mungo L.), and that too free of living organism and taken as alms. It is edible (*bhakshya*), others are not.

Q. 7. *Bhante* ! Is *Kulattha* edible for you or not ?

Ans. The word *kulattha* has two meanings—noble woman and *Kulathi* (horse-bean; Dolichos biflorus L.). The beans are edible if free of living organism and taken as alms. Others are not.

Q. 8. Are you one or many ?

Ans. Physically I am one, that is soul. In terms of modes I am two, that is knowledge and perception. In terms of application or activities of past, present, and future I am many. (*Bhagavati Sutra*, 18/10)

Similar questions and answers also feature in the story of Shailak Rajarshi in *Jnatadharmakathanga*, chapter 5.

सोमिल ने गृहत्याग का विचार किया

१५. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था–"एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नाम माहणे अच्चंतमाहणकुलप्पसूए। तए णं मए वयाइं चिण्णाइं, वेया य अहीया, दारा आहूया, पुत्ता जणिया, इड्ढीओ समाणीयाओ, पसुवधा कया, जन्ना जेट्ठा, दक्खिणा दिन्ना, अतिहीपूइया, अग्गी हूया, जूवा निक्खित्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं सेयं खलु ममं इयाणिं कल्लं (जाव) जलंते वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अम्बारामा रोवावित्तए एवं माउलिंगा बिल्ला कविट्ठा चिञ्चा पुप्फारामा रोवावित्तए" एवं संपहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलन्ते वाणारसीए नयरीए बहिया अम्बारामे जाव पुप्फारामे य रोवावेइ।

तए णं बहवे अम्बरामा य जाव पुप्फारामा य अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा आराम जाया किण्हा किण्होभासा (जाव) रम्मा महामेह-निकुरंबभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीया अईव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठन्ति।

१५. इसके बाद सोमिल ब्राह्मण किसी एक समय मध्य रात्रि में अपनी कौटुम्बिक स्थिति (कुडुम्ब जागरिया) पर विचार करते हुए सोमिल के मन में इस प्रकार का मानसिक संकल्प उत्पन्न हुआ-'मैं वाराणसी नगरी का रहने वाला और अत्यन्त उच्च ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ हूँ। मैंने व्रतों (कुलागत विधि-विधानों) को अंगीकार किया, वेदों का अध्ययन किया, विवाह कर पत्नी को लाया, कुल परम्परा की वृद्धि के लिए पुत्रादि संतान को जन्म दिया, ऋद्धि प्राप्त की-अर्थोपार्जन किया, यज्ञार्थ पशुवध किया, अनेक बड़े-बड़े यज्ञ किये, ब्राह्मणों को दक्षिणा दी, अतिथियों का पूजा-सत्कार किया, अग्नि होत्र-कर्म किये-यूप (यज्ञ मण्डप में स्तम्भ) स्थापित किये इत्यादि गृहस्थ सम्बन्धी अनेक कार्य किये।

किन्तु अब मुझे यह उचित लगता है कि कल जब सूर्य जाज्वल्यमान तेज से प्रकाशित हो जाय, तब वाराणसी नगरी के बाहर बहुत से आम्र-उद्यान (आमों के बगीचे) लगवाऊँ, इसी प्रकार से **मातुलिंग**-बिजौरा, **बिल्व**-बेल, **कविट्ठ**-कैथ, **चिंचा**-इमली और फूलों की वाटिकाएँ लगवाऊँ।' इस प्रकार उसने विचार किया और विचार करके आगामी दिन यावत् प्रातः सूर्य के उदय होने पर वाराणसी नगरी के बाहर बहुत से आम के बगीचे यावत् पुष्पोद्यान आदि लगवाने में संलग्न हुआ।

तत्पश्चात् बहुत से आमों के बगीचे यावत् फूलों के बगीचे भली प्रकार पशु-पक्षियों से संरक्षण, वायु के वेग से संगोपन करते हुए तथा जल आदि से सिंचन संवर्धन किये जाने से दर्शनीय बगीचे बन गये। वे उद्यान कृष्ण आभा से युक्त रमणीय महामेघों के समान काली आभा वाले, पत्रों, पुष्पों, फलों से नील वर्ण की प्रभा से युक्त अति उत्तम मनोहर दीखने लगे। अपनी हरी-भरी कान्ति से अतीव-अतीव शोभायमान होने लगे।

SOMIL THINKS OF RENOUNCING HOME

15. One midnight while pondering over his family circumstances, Somil Brahmin thought—"I am a resident of Varanasi city and belong to a very high caste Brahmin family. I have accepted vows (traditional rituals and codes), studied *Vedas*, married and brought a wife home, got sons and daughters for extending the family lineage, acquired wealth, sacrificed animals for *yajna*, performed elaborate *yajnas*, offered gifts to Brahmins, honoured and worshiped guests, offered sacrifice to fire, installed *yupas* (ritual pillar in a *yajna*), and performed many other such deeds required of a householder.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

But now I feel that tomorrow when the sun is at its full glow I should arrange to plant numerous orchards of mango trees. In the same way I should arrange for planting gardens of Matuling (*Bijaura*, a kind of lemon), *Bilva* (*Bel*; timb; Aegle marmelos), *Kavittha* (*Kaith*; Feronia limonia), *Chincha* (*Imli*; tamarind) and other flowering plants outside Varanasi city. According to what he thought, next morning he started planting many mango-orchards... and so on up to... flowering plants outside Varanasi city.

Having the required protection from animals and birds as well as strong winds and with proper watering and nurturing, these gardens, in due course, turned beautiful and appealing. These gardens looked enchanting due to their dark hue like that of beautiful grand clouds and deep green glow of leaves, flowers, and fruits. They became highly delightful due to their radiant dense greenery.

१६. (क) तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था–

"एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चंतमाहणकुलप्पसूए। तए णं मए वयाइं चिण्णाइं (जाव) जूवा निक्खित्ता। तए णं मए वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अम्बारामा जाव पुप्फारमा य रोवाविया। तं सेयं खलु मए इयाणिं कल्लं (जाव) जलंते सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडं घडावेत्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्तनाइनियगसंबंधिपरिजणं आमंतेत्ता तं मित्तनाइनियगसंबंधिपरिजणं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगन्धमल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तनाइनियगसंबंधिपरिजणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवित्ता तं मित्तनाइनियगसंबंधिपरिजणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंम्बियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूला वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा–

होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जन्नई सड्ढई थालई हुम्बउट्ठा दन्तुक्खलिया उम्मज्जगा संमज्जगा निमज्जगा संपक्खालगा दक्खिणकूला उत्तरकूला संखधमा कूलधमा मियलुद्धया हत्थितावसा उद्दण्डा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो बिलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अम्बुभक्खिणो वायुभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कन्दाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडियकन्दमूलतय–पत्तपुप्फफलाहारा जलाभिसेयकढिणगायभूया आयावणाहिं पञ्चग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कन्दुसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाण विहरंति।

१६. (क) इसके बाद पुनः किसी अन्य समय उस सोमिल ब्राह्मण को मध्य रात्रि में कुटुम्ब जागरणा जागते हुए इस प्रकार का मानसिक संकल्प उत्पन्न हुआ–

'मैं वाराणसी नगरी निवासी सोमिल ब्राह्मण अत्यन्त श्रेष्ठ–प्रसिद्ध ब्राह्मण कुल में जन्मा हुआ हूँ। मैंने व्रतों का पालन किया, वेदों का अध्ययन आदि किया यावत् अनेक यज्ञस्तम्भ स्थापित किये और इसके बाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाराणसी नगरी के बाहर बहुत से आमों के बगीचे यावत् फूलों के बगीचे लगवाए। लेकिन अब मेरे लिए यही श्रेयस्कर होगा कि कल प्रातः सूर्य उदय होने पर बहुत से लोहे के कड़ाह, कुडछी एवं तापसों के योग्य ताँबे के पात्रों-बर्तनों को घड़वाकर तथा विपुल मात्रा में अशन-पान-खादिम-स्वादिम चारों प्रकार का भोजन बनवाकर मित्रों, जातिबांधवों, स्वजनों, सम्बन्धियों और परिचित जनों को आमंत्रित करूँ। उन मित्रों, जातिबंधुओं, स्वजनों, सम्बन्धियों और परिचितों का विपुल अशन-पान-खादिम-स्वादिम, वस्त्र, गंध, माला एवं अलंकारों से सत्कार-सन्मान करूँ; फिर उन्हीं मित्रों, जाति-बन्धुओं, स्वजनों, सम्बन्धियों और परिचितों के सामने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब का भार सौंपकर तथा उनसे एवं ज्येष्ठ पुत्र से पूछकर उन बहुत से लोहे के कड़ाहे, कुड़छी आदि तापसों के पात्र लेकर गंगातटवासी वानप्रस्थ तापसों के पास जाऊँ।

वे विविध प्रकार के तापस-जो होत्रिक (अग्निहोत्री), पोत्रिक (वस्त्रधारी), कौत्रिक (भूमि पर सोने वाले), याज्ञिक (यज्ञ करने वाले), श्राद्धकिन (श्राद्ध करने वाले), स्थालकिन (पात्र धारण करने वाले), हुम्बउट्ठ (वानप्रस्थ तापस), दन्तोदूखलिक- (दाँतों से धान्य को तुषहीन करके खाने वाले), उन्मज्जक (पानी में एक बार डुबकी लगाने वाले), संमज्जक (बार-बार हाथ-पैर धोने वाले), निमज्जक (पानी में कुछ देर तक डूबे रहने वाले), संप्रक्षालक (मिट्टी आदि से शरीर को रगड़कर स्नान करने वाले), दक्षिणकूल वासी, उत्तरकूल-वासी, शंखध्मा (शंख बजाकर भोजन करने वाले), कूलध्मा (तट पर खड़े होकर जोर से आवाज लगाकर भोजन करने वाले), मृगलुब्धक (हिरणों का माँस खाने वाले), हस्तीतापस (हाथी का माँस खाकर जीवन-यापन करने वाले), उद्दण्डक (दंड को ऊँचा करके चलने वाले), दिशाप्रोक्षिक (जल तर्पण कर दिशाओं की पूजा करने वाले), वल्कवासी (वृक्ष की छाल पहनने वाले), बिलवासी (भूमि खोदकर उसमें रहने वाले), जलवासी (जल में रहने वाले), वृक्षमूलिक (वृक्ष के मूल में-नीचे रहने वाले), जलभक्षी (जल मात्र का आहार करने वाले), वायुभक्षी (वायु मात्र से जीवित रहने वाले), शैवालभक्षी (काई या घास खाने वाले), मूलाहारी (वृक्ष की जड़ें खाने वाले), कंदाहारी, त्वचाहारी, पत्राहारी, पुष्पाहारी, बीजाहारी, विनष्ट (सड़े हुए) कन्द, मूल, त्वचा, पत्र, पुष्प, फल को खाने वाले, जलाभिषेक से शरीर को कड़ा बनाने वाले तथा आतापना और पंचाग्नि ताप से अपनी देह को अंगारपक्व-(अंगारों में पके हुए शूलों-सी और कंदुपक्व में (भाड़ में भूनी हुई-सी) बनाते हुए समय यापन करते हैं।

16. (a) Later, some other midnight, while pondering over his family circumstances, Somil Brahmin thought—"I am a resident of Varanasi city and belong to a very high caste Brahmin family. I have accepted vows (traditional rituals and codes), studied *Vedas*, ... and so on up to... installed *yupas* (ritual pillar in a *yajna*), and after that I have planted many mango-orchards... and so on up to... flowering plants outside Varanasi city. But now I feel that tomorrow when the sun is at its full glow I should arrange to get made numerous cooking pans and spoons of iron and utensils of copper suitable for *tapasas* (hermits). Also I should get large quantities of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food) cooked. Having done that I should invite my friends, family members, relatives and acquaintances; greet them; offer them this food;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

and honour them with clothes, perfumes, garlands, and ornaments. After that, in their presence I should hand over the responsibility of the family to my eldest son. Then after seeking permission from them and my eldest son, and carrying the iron and copper utensils, I should go to the *tapasas* (hermits) who have renounced their homes and are living on the banks of river Ganges.

Those *tapasas* (hermits) include—*Hotrak* (those who do offerings at fire sacrifice); *Potrak* (the clad ones); *Kautrik* (those who sleep on the ground); *Yajnik* (those who perform *yajna* or ritual sacrifice); *Shraaddhakin* (those who perform rituals for the benefit of deceased relatives); *Sthaalakin* (those who carry plate or *thaali* and other pots); *Humbauttha* (those dwelling in jungle); *Dantodukhalik* (those who remove husk from grain with their teeth before eating); *Unmajjak* (those who bathe by taking just one dip in water); *Sammajjak* (those who wash their hands and feet repeatedly); *Nimajjak* (those who remain under water for some time); *Samprakshalak* (those who cleanse their body by rubbing sand or clay); *Dakshin-koolak* (those who live on the southern bank of the Ganges); *Uttar-koolak* (those who live on the northern bank of the Ganges); *Shankhadhma* (those who take their meals after blowing conch-shell); *Kooladhma* (those who take their meals on the bank after shouting loudly); *Mrigalubdhak* (those who subsist on deer-meat); *Hastitapas* (those who subsist on elephant-meat); *Uddandak* (those who move about raising their staff); *Dishaprokshi* (those who sprinkle water in all directions for worship); *Valkavasi* (the bark-clad); *Bil-vasi* (those who dig holes and live in them); *Jal-vasi* (those who live in water); *Vrikshamoolak* (those who live under trees); *Jal-bhakshi* (those who subsist only on water); *Vayubhakshi* (those who subsist only on air); *Shaivalabhakshi* (those who subsist on moss or grass only); *Moolahari* (those who subsist on roots only); *Kandahari* (those who subsist on bulbous roots); *Tvachahari* (those who subsist on bark of a plant); *Patrahari* (those who subsist on leaves); *Pushpahari* (those who subsist on flowers); *Bijahari* (those who subsist on seeds); those who subsist on naturally fallen or detached bulbous roots, roots, bark, leaves, flowers, and fruits; those who develop endurance for water by regularly pouring water on their bodies; and those who mortify their bodies by five fires (burning four pyres on four sides and considering sun to be the fifth) as if cooking on burning coal or roasting in hot sand.

१६. (ख) तत्थ णं जे ते दिसापोक्खिया तावसा तेसिं अंतिए दिसापोक्खियत्ताए पव्वइत्तए, पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि–कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं (जाव) जलन्ते सुबहुं लोह. (जाव) दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं जाव अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

१६. **(ख)** इन तापसों में से जो दिशाप्रोक्षिक तापस हैं मैं उन दिशाप्रोक्षिक तापसों के पास प्रव्रजित होना चाहता हूँ। प्रव्रजित होने के पश्चात् इस प्रकार का यह कठिन अभिग्रह अंगीकार करूँगा–'यावज्जीवन के लिए निरन्तर षष्ठ–षष्ठभक्त (बेला–बेला) पूर्वक दिशा चक्रवाल तपस्या करता हुआ सूर्य के सन्मुख भुजाएँ उठाकर आतापनाभूमि में आतापना लूँगा।' उसने इस प्रकार का संकल्प किया और संकल्प करके (आगामी दिन) जाज्वल्यमान सूर्य उदित होने पर बहुत से लोह–कड़ाहों आदि को लेकर दिशाप्रोक्षिक तापस के रूप में प्रव्रजित हो गया। प्रव्रजित होने के साथ पूर्व में निश्चय किया हुआ अभिग्रह अंगीकार करके प्रथम षष्ठक्षपण दो–दो दिन का तप अंगीकार करके विचरने लगा।

16. (b) Of these *tapasas* (hermits) I would like to get initiated with the *Dishaprokshiks* (those who sprinkle water in all directions for worship). After getting initiated I will take this rigorous resolve—"I will observe a life long vow of continuous two day fasts (a two day fast followed by a day of eating and again followed by a two day fast and so on). While doing this I will perform the *Disha-chakraval* practice mortifying my body enduring heat of the sun with raised arms in the heat-mortification arena." Deciding thus, at dawn (next morning) he took along many iron and other utensils and got initiated as a *Dishaprokshik* hermit. Immediately on initiation he took the aforesaid resolve and moved about commencing the first two day fast.

विवेचन–दिशा चक्रवाल तपस्या के सम्बन्ध में आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने स्पष्टीकरण किया है–तपस्या के पारणे के लिए तपस्वी तपोभूमि के चारों ओर फलों का संग्रह करके रखता है। पारणे का समय आने पर पहले पारणे में पूर्व दिशा में रखे हुए फलों का सेवन करके पारणा करता है। दूसरे पारणे में दक्षिण दिशा में, तीसरे पारणे में पश्चिम दिशा में तथा चौथे पारणे में उत्तर दिशा में रखे फलों को ग्रहण करता है। इस पद्धति से जिस तपस्या में पारणा किया जाता है, वह दिशा–चक्रवाल तपस्या कही जाती है। *[तापसों का विस्तृत वर्णन औपपातिकसूत्र ७२ में किया गया है।]*

Elaboration—Explaining the *Disha-chakraval* practice Acharya Shri Atmaram ji M. states—For breaking fast in this practice the aspirant collects fruits and places in four directions of the arena of practice. At the proper time he breaks his first fast eating the fruits placed in the east direction. The second, third and fourth fasts are broken by eating fruits placed in south, east, and north directions respectively. The practice in which fast is broken following this sequence is called *Disha-chakraval* practice. *[detailed description of hermits is available in Aupapatik Sutra, aphorism-72]*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. तए णं सोमिले माहणे रिसी पढमछट्ठक्खमणपारणंसि आयावणभूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयं गेण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसिं पुक्खेइ, "पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसिं। जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ" त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पसरइ, पसरित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य (जाव) हरियाणि य ताइं गेण्हइ, गिण्हित्ता किढिणसंकाइयगं भरेइ, भरित्ता दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च समिहाओ कट्ठाणि य गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयगं ठवेइ, ठवित्ता वेदिं वड्ढेइ, वड्ढित्ता उवलेवणसंमज्जणं करेइ, करित्ता दब्भकलस–हत्थगए जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ; उवागच्छित्ता गंगं महाणइं ओगाहइ ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करित्ता जलकिड्डं करेइ, करित्ता जलाभिसेयं करेइ, करित्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवपिउकयकज्जे दब्भकलस–हत्थए गंगाओ महाणईओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भे य कुसे य वालुयाए य वेदिं रएइ, रइत्ता सरयं करेइ, करित्ता अरणिं करेइ, करित्ता सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता अग्गिं संधुक्केइ, संधुक्कित्ता समिहा कट्ठाणि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालेइ उज्जालित्ता अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तंगाइं समादहे–

तं जहा–सकथं वक्कलं ठाणं, सेज्जभण्डं कमण्डलुं।
दण्डदारुं तहप्पाणं, अह ताइं समादहे॥१॥

महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ। चरुं साहेइ, साहित्ता बलिवइस्सदेवं करेइ करेत्ता अतिहिपूयं करेइ करेत्ता, तओ पच्छा अप्पणा आहारं आहारेइ।

तए णं सोमिले माहणरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणपारणगंसि, तं चेव सव्वं भाणियव्वं (जाव) आहारं आहारेइ। नवरं इमं नाणत्तं–"दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलं माहणरिसिं, जाणि य तत्थ कन्दाणि य (जाव) अणुजाणउ" त्ति कट्टु दाहिणं दिसिं पसरइ।

एवं पच्चत्थिमेणं वरुणे महाराया (जाव) पच्चत्थिमं दिसिं पसरइ।

उत्तरेणं वेसमणे महाराया (जाव) उत्तरं दिसिं पसरइ। पुव्वदिसागमेणं चत्तारि वि दिसाओ भाणियव्वाओ (जाव) आहारं आहारेइ।

१७. (प्रव्रजित होकर) वह सोमिल ब्राह्मण ऋषि प्रथम बेले के पारणे के दिन आतापना भूमि से नीचे उतरे। उतरकर वल्कल वस्त्र धारण किया, जहाँ अपनी कुटिया थी, वहाँ आये। आकर वहाँ से–किढिण बाँस की छबड़ी और कावड़ को ग्रहण किया, फिर पूर्व दिशा का पूजन–प्रक्षालन किया और बोला–"हे पूर्व

दिशा के लोकपाल सोम महाराज ! साधनामार्ग में चलते हुए मुझ सोमिल ब्रह्मर्षि की रक्षा करें और पूर्व दिशा में जो भी कन्द, मूल, छाल, पत्र, पुष्प, फूल, बीज और हरी वनस्पतियाँ घास आदि हैं, उन्हें लेने की आज्ञा दें।'' यों कहकर सोमिल ब्रह्मर्षि पूर्व *दिशा की ओर गया और वहाँ जो भी कन्द, मूल यावत् घास आदि थी उन्हें अपनी बाँस की छबड़ी व कावड़ में रखता है।* फिर दर्भ (डाभ), कुश तथा वृक्ष की शाखाओं को मोड़कर तोड़े हुए पत्ते और समिधाकाष्ठ ग्रहण किया, पश्चात् अपनी कुटिया पर आये। कावड़ सहित छबड़ी नीचे रखी, फिर वेदिका (बैठने के लिए चबूतरे का साफ स्थान) बनाता है। उसे गोबर आदि से लीपकर शुद्ध किया। तदनन्तर जल छिड़कता है फिर डाभ और कलश हाथ में लेकर गंगा महानदी के पास आकर गंगा महानदी में अवगाहन करता है। उसके जल से देह शुद्ध करता है। फिर जल क्रीड़ा करके, अपनी देह पर पानी सींचा और आचमन आदि करके स्वच्छ और परम शुचिभूत (पवित्र) होकर देव और पितरों का तर्पण करता है। पश्चात् डाभ सहित कलश को हाथ में लेकर गंगा महानदी से बाहर निकलता है। फिर अपनी कुटिया में आकर डाभ, कुश और बालू से वेदिका (चबूतरा) निर्माण करता है। सर (मथन-काष्ठ) और अरणि तैयार की। मथन-काष्ठ वे अरणि काष्ठ को रगड़ा, अग्नि सुलगाई। अग्नि प्रज्वलित की। तब उसमें समिधा (लकड़ी) डालकर अग्नि और अधिक प्रज्वलित होने पर अग्नि की दाहिनी ओर ये सात वस्तुएँ स्थापित कीं-(१) सक्थ (उपकरण विशेष), (२) वल्कल, (३) स्थान (आसन), (४) शय्या-भाण्ड, (५) कमण्डलु, (६) लकड़ी का दंड, और (७) अपना शरीर। इन सातों वस्तुओं को स्थापित कर मधु, घी और चावलों का अग्नि में हवन किया और चरु से बलि प्रदान की। तथा नित्य यज्ञ कर्म किया। अतिथिपूजा की (अतिथियों को भोजन कराया) और उसके बाद स्वयं आहार ग्रहण किया।

इसके पश्चात् सोमिल ब्रह्मर्षि ने दूसरा षष्ठक्षपण (बेला) अंगीकार किया। उस दूसरे बेले के पारणे में भी प्रथम पारणे की भाँति आहार करने तक वही विधि है। इतना विशेष ज्ञातव्य है कि इस बार दक्षिण दिशा की तरफ मुख करके कहा-''हे दक्षिण दिशा के यम महाराज ! प्रस्थान-साधना के लिए प्रवृत्त मुझ सोमिल ब्रह्मर्षि की रक्षा करें और यहाँ जो कन्द, मूल आदि हैं, उन्हें लेने की आज्ञा दें,'' ऐसा कहकर दक्षिण की तरफ प्रस्थान किया।

तदनन्तर उन सोमिल ब्रह्मर्षि ने तृतीय बेला तप अंगीकार किया। उसके पारणे के दिन भी पूर्वोक्त सब विधि-विधान किया, विशेष इतना है कि तब पश्चिम दिशा की पूजा करके बोला-''हे पश्चिम दिशा के लोकपाल वरुण महाराज ! परलोक-साधना में प्रवृत्त मुझ सोमिल ब्रह्मर्षि की रक्षा करें।'' ऐसा कहकर पश्चिम दिशा का अवलोकन किया और वेदिका आदि बनाई, उसके बाद स्वयं आहार किया, यहाँ तक का सब वृत्तान्त प्रथम पारणे के समान जानना चाहिए।

इसके बाद सोमिल ब्रह्मर्षि ने चतुर्थ बेला तप अंगीकार किया। पारणा के दिन प्रथम पारणे की सारी विधि की। विशेष इतना है कि इस बार उत्तर दिशा की पूजा करके इस प्रकार प्रार्थना की-''हे उत्तर दिशा के लोकपाल वैश्रमण महाराज ! प्रस्थान-साधना में प्रवृत्त मुझ सोमिल ब्रह्मर्षि की रक्षा करें।'' इत्यादि कहकर उत्तर दिशा का अवलोकन किया। बाकी पूर्व दिशा के वर्णन के समान सभी चारों दिशाओं का वर्णन एक समान जानना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

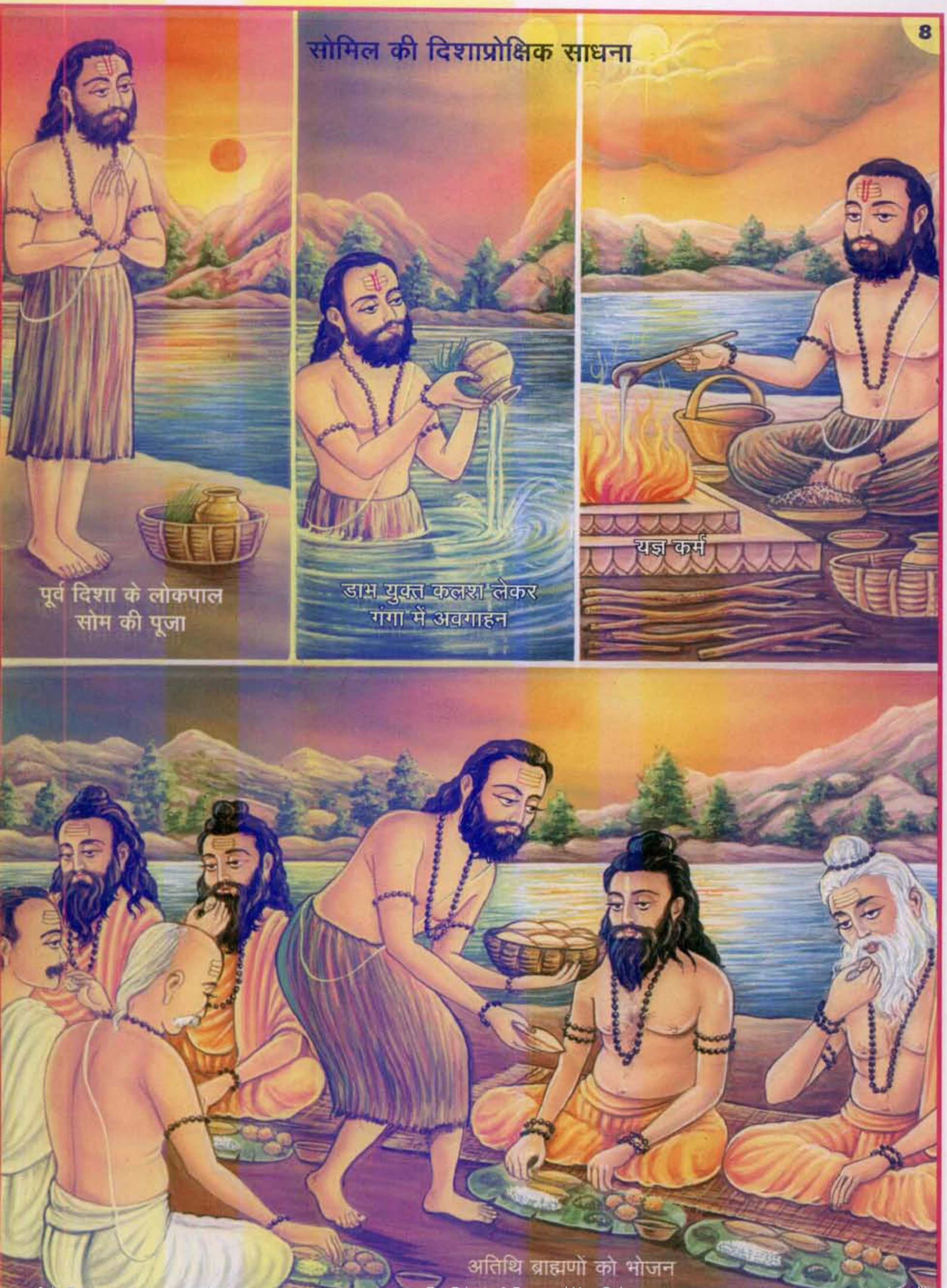

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-८

Illustration No. 8

सोमिल की दिशा प्रोक्षिक साधना

ब्राह्मण ऋषि सोमिल वल्कल वस्त्र पहन कर बाँस की छाबड़ व कावड़ आदि लेकर पूर्व दिशा में आता है। पूर्व दिशा के लोकपाल सोम महाराज का पूजन कर साधना मार्ग में प्रस्थान की आज्ञा लेता है।

पूर्व दिशा में आगे जाकर डाभ और कलश में हाथ लिए गंगा महानदी में अवगाहन कर देव-पितरों सम्बन्धी तर्पण आदि कार्य सम्पन्न करता है।

नदी से बाहर आकर तट पर बालू की वेदिका का निर्माण करता है। फिर यज्ञ कुण्ड में अग्नि प्रज्ज्वलित कर मधु-घृत-चावलों आदि से हवन कर यज्ञ कर्म सम्पन्न करता है।

यज्ञ सम्पन्न कर अतिथियों, वृद्ध ब्राह्मणों आदि को भोजन कराकर अतिथि पूजा करके फिर स्वयं भोजन ग्रहण करता है।

इसी क्रम से दक्षिण-पश्चिम-उत्तर आदि चारों दिशाओं के लोकपालों की आज्ञा लेकर दिशा पूजन आदि सम्पूर्ण क्रियाएँ करता है।

-वर्ग ३, अ. ३, सूत्र १७

SOMIL'S DISHAPROKSHIK PRACTICE

Somil Brahmin goes to the east putting on his bark-garments, and taking a bamboo basket, pole, etc. After due worship he seeks permission from Soma, the guardian angel of the east, to proceed on the spiritual path.

Going towards east, he takes the grass and a pitcher and entering the Ganges he makes offerings to deities and his ancestors.

Coming out of the river he prepares a sacrificial platform with sand. He then makes offerings of honey, butter-oil, and rice into the pyre performing the *yajna*.

After that he reveres the guests and offers them food. He eats food only after this.

He performs the same ritual in all the remaining cardinal directions after seeking due permission from the guardian angel of each direction, south, east, and north.

—Sec. III, Ch. 3, Sutra : 17

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SOMIL'S DISHAPROKSHIK PRACTICE

17. (Post-initiation) On the day he was to break his first two day fast that Somil Brahmin stepped down from the heat-mortification arena. He then put on his bark-garments and came to his hut. He took a bamboo basket and a pole to carry it. After worshipping and sprinkling water in the east he uttered—"O honoured Soma, the guardian angel of the east, please protect me, Somil Brahmarshi, on the spiritual path and permit me to take whatever bulbous roots, roots, bark, leaves, flowers, fruits, seeds, and green vegetables as well as grass that are available in the east." With these words Somil Brahmarshi went towards east and collected whatever bulbous roots, roots,... and so on up to... grass he could find and put them in the basket. He also collected some grass, some leaves by bending branches, and some fire-wood. He then returned to his hut. He placed the basket and the pole on the ground. Now he made a clean platform and plastered it with cow-dung and other purifying things. After sprinkling water over that spot he took the grass and a pitcher, walked to the Ganges and entered it. He washed his body clean in the river water and played around in the river to soak his body. After washing his mouth and getting absolutely pure, he made offerings of water to deities and his ancestors. After this ritual he came out of the Ganges carrying the grass and the pitcher and returned to his hut. Back in the hut, he prepared a sacrificial platform with grass and sand. Taking the fire-wood he prepared two pieces of wood, one with a hole and the other pointed to fit in the whole. With the help of these two pieces of wood he made fire and inflamed it by adding fire-wood. Once the pyre was ready he installed seven things on its right-hand side—(1) *Sakth* (an instrument), (2) *Valkal* (bark garment), (3) *Sthaan* (*aasan*; seat or mattress), (4) *Shayya-bhaand* (bed and utensils), (5) *Kamandalu* (gourd-bowl), (6) wooden staff, and (7) one's own body. Installing these seven things he offered honey, butter-oil, and rice into the pyre and offered sacrifice with the urn. He performed the daily *yajna* and worshipped guests (offered food to guests). At last he himself accepted food.

Somil Brahmin then commenced his second two-day fast. He broke the second two-day fast following the aforesaid procedure. The only change was that this time he faced south and uttered—"O honoured Yama, the guardian angel of the south, please protect me, Somil Brahmarshi, on the spiritual path and permit me to take whatever bulbous roots, roots,... and so on up to... grass are available in the south." With these words Somil Brahmarshi went towards the south.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Somil Brahmarshi then commenced his third two-day fast. He broke the third two-day fast following the aforesaid procedure. The only change was that this time he faced west and uttered—"O honoured Varun, the guardian angel of the west, please protect me, Somil Brahmarshi, on the spiritual path and permit me to take whatever bulbous roots, roots,... and so on up to... grass are available in the west." With these words Somil Brahmarshi *went towards the west. He then continued the aforesaid* procedure he had followed on the first breaking of fast up to... At last he himself accepted food.

Somil Brahmarshi then commenced his fourth two-day fast. He broke the fourth two-day fast following the aforesaid procedure. The only change was that this time he faced north and uttered—"O honoured Vaishraman, the guardian angel of the north, please protect me, Somil Brahmarshi, on the spiritual path and permit me to take whatever bulbous roots, roots, ... and so on up to... grass are available in the north." With these words Somil Brahmarshi went towards the north. He then continued the aforesaid procedure he had followed on the first breaking of fast up to... At last he himself accepted food. The details of the procedure for all the four directions are same as those of the east.

सोमिल का नया संकल्प

१८. तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था–''एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणरिसी अच्चंतमाहणकुलप्पसूए। तए णं मए वयाइं चिण्णाइं (जाव) जूवा निक्खित्ता। तए णं मम वाणारसीए (जाव) पुप्फारामा य (जाव) रोविया। तए णं मए सुबहुं लोह (जाव) घडावेत्ता (जाव) जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता जाव जेट्ठपुत्तं आपुच्छित्ता सुबहुं लोह (जाव) गहाय मुण्डे (जाव) पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे छट्ठं छट्ठेणं (जाव) विहरामि।

तं सेयं खलु ममं इयाणिं कल्लं जाव जलंते बहवे तावसे दिट्ठाभट्ठे य पुव्वसंगइए य परियायसंगइए य आपुच्छित्ता आसमसंसियाणि य बहूइं सत्तसयाइं अणुमाणइत्ता वागलवत्थनियत्थस्स किढिणसंकाइयगहियसभण्डोवगरणस्स कट्ठमुद्दाए मुहं बंधित्ता उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहस्स महपत्थाणं पत्थावेत्तए'' एवं संपेहेइ।

संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते बहवे तावसे य दिट्ठाभट्ठे य पुव्वसंगइए य, तं चेव जाव, कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ–''जत्थेव णं अम्हं जलंसि वा एवं थलंसि वा दुग्गंसि वा निन्नंसि वा पव्वयंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा पक्खलिज्ज वा पवडिज्ज वा, नो खलु मे कप्पइ पच्चुट्ठित्तए'' त्ति अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिगिण्हित्ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहमहपत्थाणं पत्थिए से सोमिले माहणरिसी पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागए, असोगवरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेदिं वड्ढेइ, वेड्ढित्ता उवलेवणसंमज्जणं करेइ, करित्ता दब्भकलसहत्थगए जेणेव गंगा महाणई, जहा सिवो जाव गंगाओ महाणईओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए य वेदिं रएइ, रइत्ता सरगं करेइ करित्ता जाव बलिवइस्सदेवं करेइ, करित्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता तुसिणीए संचिट्ठइ।

१८. तत्पश्चात् सोमिल ब्रह्मर्षि के हृदय में किसी समय मध्यरात्रि के समय अनित्य जागरणा (अनित्यता सम्बन्धी चिन्तन) करते हुए इस प्रकार का यह विचार उत्पन्न हुआ-'मैं वाराणसी नगरी का रहने वाला, अत्यन्त महान् कुल में उत्पन्न सोमिल ब्रह्मर्षि हूँ। गृहस्थाश्रम में रहते हुए मैंने व्रतों का पालन किया है। यज्ञस्तम्भ आदि गड़वाए। इसके बाद मैंने वाराणसी नगरी के बाहर बहुत से आमों के बगीचे यावत् फूलों के बगीचे लगवाये। और फिर मैंने बहुत से लोहे के कड़ाहे, कुड़छी आदि बनवाया अपने बड़े पुत्र को कुटुम्ब का भार सौंपकर, मित्रों एवं ज्येष्ठ पुत्र की सम्मति लेकर लोहे की कड़ाहियाँ आदि लेकर मुण्डित हो प्रव्रजित हुआ। प्रव्रजित होने पर षष्ठभक्त (बेले-बेले) तप करते हुए दिशाचक्रवाल साधना करने लगा।

"किन्तु अब मेरे लिए यह श्रेयष्कर है कि कल सूर्योदय होने पर बहुत से तापस जो अब मेरी दृष्टि से ओझल हो चुके हैं अथवा मेरे पूर्व संगतिक-(पूर्वकाल के साथी) और पर्यायसंगतिक-(तापस अवस्था के साथी) रहे हैं, उन सबसे पूछकर और आश्रम में रहने वाले सैकड़ों जनों को वचन आदि से संतुष्ट/सम्मानित कर और उनसे अनुमति लेकर वल्कल वस्त्रधारी बनकर, कावड़ की छबड़ी में अपने भाण्डोपकरणों को रखकर तथा काष्ठमुद्रा से अपना मुँह बाँधकर उत्तराभिमुख होकर उत्तर दिशा में महाप्रस्थान (मृत्यु के लिए गमन) करूँ।" सोमिल ने इस प्रकार से विचार किया।

इस प्रकार विचार करके सोमिल ब्रह्मर्षि ने दूसरे दिन सूर्य उदय होने पर अपने निश्चय के अनुसार उन सभी तापसों, जो पहले मिल चुके हैं, पूर्व परिचित हैं और जो पहले साथ-साथ रह चुके हैं। उन सबसे पूछकर तथा आश्रमस्थ अनेक सैकड़ों जनों को संतुष्ट कर काष्ठमुद्रा से मुख को बाँधा। मुख को बाँधकर इस प्रकार का अभिग्रह (प्रतिज्ञा) धारण किया, "जहाँ कहीं भी-चाहे जल हो या स्थल हो, दुर्गम स्थान हो अथवा नीचा प्रदेश हो, पर्वत हो अथवा विषम भूमि हो, गड्ढा हो या गुफा हो, इन सब में से जहाँ कहीं भी मैं चलते-चलते फिसल जाऊँ या गिर पड़ूँ तो वहाँ से मुझे उठना नहीं कल्पता है अर्थात् मैं वहाँ से नहीं उठूँगा।" ऐसा अभिग्रह धारण कर लिया।

तत्पश्चात् उत्तराभिमुख होकर महाप्रस्थान (मृत्यु पथ) के लिए वह सोमिल ब्रह्मर्षि उत्तर दिशा की ओर चल पड़े। गमन करते हुए अपराह्न काल (दिन के तीसरे प्रहर) में जहाँ उत्तम अशोक वृक्ष था, वहाँ आये। उस अशोक वृक्ष के नीचे अपना कावड़ रखा। वेदिका (बैठने की जगह) साफ की, उसे लीप-पोतकर स्वच्छ किया, फिर डाभ (दूब) और कलश हाथ में लेकर गंगा महानदी के पास आये, वहाँ आकर शिव राजर्षि के समान उस गंगा महानदी में स्नान आदि किया। फिर वहाँ से बाहर आकर जहाँ वह उत्तम अशोक वृक्ष था वहाँ आकर डाभ, कुश एवं वालुका से वेदी की रचना की, फिर सरक व अरणि काष्ठ को रगड़कर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्नि प्रज्वलित की इत्यादि पूर्व में कहे गये सभी विधि-विधान पूर्ण करके बलिवैश्वदेव-अग्नियज्ञ करके काष्ठमुद्रा से अपना मुख बाँधकर मौन धारण कर बैठ गये।

SOMIL'S NEW RESOLVE

18. Later, some other midnight, while pondering over his ephemeral state, Somil Brahmin thought—"I am Somil Brahmarshi, a resident of Varanasi city and belonging to a very high caste Brahmin family. I have accepted vows (traditional rituals and codes),... and so on up to... installed *yupas* (ritual pillar in a *yajna*). After that I have planted many mango-orchards... and so on up to... flowering plants outside Varanasi city. And then I got made numerous cooking pans and spoons of iron. I handed over the responsibility of the family to my eldest son. Then after seeking permission from friends and my eldest son, and carrying the iron and copper utensils, I got tonsured and initiated as a hermit. After getting initiated I commenced the *Disha-chakraval* practice observing the austerity of continuous two-day fasts.

"But now I feel that tomorrow when the sun is at its full glow I should bid farewell to the many *tapasas* (hermits) who are beyond my vision, or those who have been my companions of my pre-hermit and post-hermit states. I should greet and honour with words the hundreds of residents of the hermitage, seek their permission, put on bark-garments, place my utensils and other possessions in the basket of the sling-pole, cover my mouth with a strip of wood, face northwards and depart towards north for the great journey (journey unto death)." Thus thought Somil.

Thinking thus and following his resolve Somil Brahmarshi, after dawn the next morning, bade farewell to the many *tapasas* (hermits) who had met him, were known to him and were his companion. Seeking their permission and gratifying hundreds of residents of the hermitage... and so on up to... covering his mouth with a strip of wood he took this vow—"It would not be proper for me to (I resolve not to) get up from a place where I slip or otherwise fall while walking, irrespective of it being water, land, difficult terrain, a depression, a hill, uneven ground, a ditch, or a cave." Thus he took a resolve.

Then Somil Brahmarshi faced northwards and moved towards north for the great journey (journey unto death). While walking he arrived near an excellent Ashoka tree in the afternoon (third quarter of the day). He placed his basket and sling-pole under that Ashoka tree. Then he made a clean platform and plastered it with purifying pastes. After that he took the grass

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

and a pitcher, walked to the Ganges, and like Shiva Rajarshi took his bath and performed other rituals. He then came out and returned to the Ashoka tree. Back there, he prepared a sacrificial platform with grass and sand. Taking the fire-wood he prepared two pieces of wood and with their help made fire and inflamed it by adding fire-wood. After performing all other rituals including the offerings to fire (as already mentioned) he covered his mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down.

विवेचन—इस सूत्र में सोमिल ब्रह्म ऋषि की महाप्रस्थान यात्रा—मृत्यु की तैयारी में प्रस्थान करने का वर्णन है। यहाँ शिव राजर्षि की तरह गंगा में उतरकर स्नान आदि करने की सूचना है। शिव राजर्षि का कथानक भगवतीसूत्र, शतक ११, उद्देशक ९ में विस्तृत रूप में आया है। ये हस्तिनापुर के राजा थे। सोमिल की तरह ही अपने राज्य का त्यागकर दिशाप्रोक्षिक तापस प्रव्रज्या धारण करके इसी प्रकार साधना करते हुए उन्हें विभंगज्ञान उत्पन्न होता है। विभंग ज्ञान से समुद्र-पर्यन्त देखते हैं, तब अपनी शंकाओं का समाधान पाने भगवान महावीर के पास आते हैं। समाधान प्राप्त कर श्रमण प्रव्रज्या लेकर उग्र तपकर सर्व कर्म क्षय कर निर्वाण को प्राप्त होते हैं।

इस सूत्र में आये विशेष शब्दों का टीकाकार ने इस प्रकार स्पष्टीकरण किया है—

काष्ठ मुद्रा—यह काठ की एक छोटी पट्टी होती थी जिसके दोनों सिरों पर छिद्र रहते थे, जिनमें धागा डालकर मुख पर बाँधी जाती थी। काष्ठमुद्रा मुख पर धारण करने का मतलब है, कठोर मौन धारण कर लेना।

शरक—यह एक प्रकार की लकड़ी होती है, जिसे अरणि के साथ घिसने पर अग्नि प्रज्वलित हो उठती है।

महाप्रस्थान—मृत्यु की अपेक्षा रखकर जो कठोर आचार स्वीकार किया जाता है, वह 'महा प्रस्थानपथ' है।

Elaboration—This aphorism describes the great journey of Somil Brahmarshi, the journey preparatory to death. There is a mention of entering the Ganges and taking bath like Shiva Rajarshi. The detailed story of Shiva Rajarshi is narrated in *Bhagavati Sutra, 11/9.* He was the ruler of Hastinapur. Like Somil he too renounced his kingdom and got initiated as a *Dishaprokshik* hermit. While performing the aforesaid practices he acquired *Vibhanga Jnana* (pervert knowledge). With the help of this *Vibhanga Jnana* his vision expand up to oceans. He then approached Bhagavan Mahavir to remove his doubts. Once his doubts were removed he got initiated as an ascetic and after destroying all *karmas* through intense austerities attained nirvana.

The technical terms used here have been explained by the commentator (*Tika*) as follows—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Kaasth Mudra—it is a small strip of wood having tie-holes at both ends. It is tied on the face with strings passing through holes to cover mouth. To cover one's mouth with it indicates that he has taken a vow of strict silence.

Sharak—This is a type of wood which when rubbed with *arani* (another type of wood) gives sparks to make fire.

Mahaprasthan—the vow of rigorous conduct accepted with the purpose of embracing death is called *mahaprasthan path* or the great journey.

देव द्वारा प्रतिबोध

१९. तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए। तए णं से देवे सोमिलमाहणं एवं वयासी–"हं भो सोमिलमाहणा, पव्वइया ! दुप्पव्वइयं ते।" तए णं से सोमिले तस्स देवस्स दोच्चं पि तच्चं पि एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, जाव तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं से देवे सोमिलेणं माहणरिसिणा अणाढाइज्जमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव जाव पडिगए।

तए णं से सोमिले कल्लं जाव जलंते वागलवत्थनियत्ते कढिणसंकाइयं गहाय गहियभंडोवगरणे कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

१९. तब एक समय सोमिल ब्रह्मर्षि के समक्ष मध्य रात में एक देव प्रकट हुआ। देव ने सोमिल ब्रह्मर्षि को सम्बोधित कर इस प्रकार कहा–"हे सोमिल ब्राह्मण ! तुमने जो प्रव्रज्या धारण की है, वह दुष्प्रव्रज्या है।" देव ने दूसरी और तीसरी बार भी ऐसा ही कहा। किन्तु सोमिल ब्राह्मण ऋषि ने उस देव के कथन पर ध्यान नहीं दिया, यावत् मौन धारण किये रहा।

सोमिल ब्रह्मर्षि द्वारा इस प्रकार उपेक्षा व अनादर किया जानकर वह देव जिस दिशा से आया था, वापस उसी दिशा में चला गया।

तत्पश्चात् दूसरे दिन सूर्योदय होने पर वल्कल वस्त्रधारी सोमिल ने अपने कावड़, भाण्डोपकरण आदि लेकर काष्ठमुद्रा से मुख को बाँधा तथा उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान कर दिया।

THE DIVINE ADVISE

19. Then one midnight a god appeared before Somil Brahmarshi and said to him—"O Somil Brahmin ! The praxis you have accepted is a bad praxis." The god uttered these words a second and a third time also. But Somil Brahmarshi gave no heed to his words and remained silent.

Realizing it to be neglect and disrespect the god returned in the direction from which he came.

Next morning at dawn bark-garment clad Somil took his baskets and pole as well as other possessions, covered his mouth with the wooden strip and moved towards north.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. तए णं से सोमिले बिइयदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव सत्तिवण्णे तेणेव उवागए। सत्तिवण्णस्स अहे कढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेदिं वड्ढेइ। जहा असोगवरपायवे जाव अग्गिं हुणइ, कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए। तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने जहा असोगवरपायवे जाव पडिगए। तए णं से सोमिले कल्लं जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे कढिणसंकाइयं गेण्हइ, गिण्हित्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

२०. इसके बाद–दूसरे दिन अपरान्ह काल के अन्तिम प्रहर (सूर्यास्त से कुछ ही पूर्व सन्ध्याकाल) में सोमिल ब्रह्मर्षि जहाँ सप्तपर्ण वृक्ष था, वहाँ आता है। सप्तपर्ण वृक्ष के नीचे (कावड़ रखकर) वेदिका–बैठने के स्थान को साफ करता है, इत्यादि जैसे पहले अशोक वृक्ष के नीचे कृत्य किये थे, वे सभी यहाँ भी किये, यावत् अग्नि में आहुति दी और काष्ठमुद्रा से अपना मुख बाँधकर बैठ गये।

तब मध्य रात्रि के समय में सोमिल ब्रह्मर्षि के समक्ष पुनः एक देव प्रकट हुआ और अंतरिक्ष में खड़ा रहकर अशोक वृक्ष के नीचे बैठे हुए सोमिल को जिस प्रकार पहले कहा था इसी प्रकार कहा कि "तुम्हारी प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है, परन्तु सोमिल ब्रह्मर्षि ने उस देव की बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया (मौन धारण किये रहा) वह देव पुनः लौट गया।

इसके बाद (तीसरे दिन) वल्कल वस्त्र धारण करके सोमिल ने सूर्य उदय होने पर अपने कावड़ उपकरण आदि लिये। काष्ठमुद्रा से मुख को बाँधा और मुख बाँधकर उत्तर दिशा की ओर चल दिये।

20. While walking he arrived near a *Saptaparna* tree in the afternoon (third quarter of the day). He placed his basket and pole under that *Saptaparna* tree. Then he made a clean platform and plastered it with purifying pastes. After that he performed all what he had done under the Ashoka tree and finally after offerings to fire he covered his mouth with a strip of wood and sat down.

Then at midnight a god appeared before Somil Brahmarshi and, as done earlier under the Ashoka tree, said to him—"O Somil Brahmin ! The praxis you have accepted is a bad praxis." But Somil Brahmarshi gave no heed to his words and remained silent. Once again the god left.

Next morning (the third day) at dawn bark-garment clad Somil took his baskets and pole as well as other possessions, covered his mouth with the wooden strip and moved towards north.

२१. तए णं से सोमिले तइयदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेइं वड्ढेइ जाव गंगं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाणइं पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ। वेइं रएइ, रइत्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ बंधित्ता तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था, तं चेव भणइ जाव पडिगए।

तए णं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकाइयं जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

२१. इस प्रकार सोमिल ब्रह्मर्षि तीसरे दिन सायंकाल में जहाँ उत्तम अशोक वृक्ष था, वहाँ आ पहुँचे। उस अशोक वृक्ष के नीचे कावड़ रखी। बैठने के लिए वेदी बनाई और दर्भयुक्त कलश को लेकर गंगा महानदी में अवगाहन किया। स्नान आदि कृत्य करके गंगा महानदी से बाहर निकले। निकलकर अशोक वृक्ष के नीचे वेदी का निर्माण किया। अग्निहोत्रादि (हवन) किया फिर काष्ठमुद्रा से मुख को बाँधकर मौन धारण कर बैठ गये।

तत्पश्चात् मध्य रात्रि के समय में सोमिल के समक्ष पुनः वही देव प्रकट हुआ और उसने उसी प्रकार कहा—"हे सोमिल ! तेरी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।" सोमिल मौन धारण किये रहा, तब वह देव वापस लौट गया।

इसके बाद सूर्योदय होने पर वह वल्कल वस्त्र पहनकर कावड़ और भाण्डोपकरण उठाकर काष्ठमुद्रा से मुख को बाँधकर उत्तर दिशा की ओर मुँह करके चल देता है।

21. Thus on the third day while walking he arrived near an excellent Ashoka tree in the afternoon (third quarter of the day). He placed his basket and pole under that Ashoka tree. Then he made a clean platform. After that he took the grass and a pitcher, walked to the Ganges and took his bath and performed other rituals. He then came out and returned to the Ashoka tree. Back there, he prepared a sacrificial platform. After offerings to fire he covered his mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down.

Then at midnight the same god appeared once again before Somil Brahmarshi and, as earlier, said to him—"O Somil Brahmin ! The praxis you have accepted is a bad praxis." But Somil Brahmarshi remained silent and the god left.

At dawn bark-garment clad Somil took his baskets and pole as well as other possessions, covered his mouth with the wooden strip and moved towards north.

२२. तए णं से सोमिले चउत्थे दिवसे पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव वडपायवे तेणेव उवागए। वडपायवस्स अहे कढिणं संठवेइ, संठवित्ता वेदिं वड्ढेइ, उवलेवणसंमज्जणं करेइ, जाव कट्ठमुद्दाए मुहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधइ, तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था, तं चेव भणइ जाव पडिगए।

तए णं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकाइयं, जाव, कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

२२. तत्पश्चात् चलते-चलते सोमिल ब्रह्मर्षि चौथे दिन के सन्ध्या काल में जहाँ वट-वृक्ष था, वहाँ आए। आकर वट-वृक्ष के नीचे कावड़ रखी। बैठने के योग्य स्थान साफ किया। उसको गोबर मिट्टी से लीपा, स्वच्छ किया। इसी प्रकार काष्ठमुद्रा से मुख बाँधा और मौन धारण कर बैठे गये। मध्य रात्रि के समय पुनः सोमिल के समक्ष वही देव प्रकट हुआ और उसने पहले के समान कहा-"सोमिल ! तुम्हारी प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।" सोमिल मौन रहा, वह देव अन्तर्धान हो गया।

प्रातः जाज्वल्यमान तेजयुक्त सूर्य उदय होने पर वह सोमिल वल्कल वस्त्र धारण कर अपनी कावड़ व अन्य उपकरण लेकर और काष्ठमुद्रा से मुख बाँधकर उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा।

22. On the fourth day while walking Somil Brahmarshi arrived near a banyan tree in the afternoon (third quarter of the day). He placed his basket and pole under that banyan tree. Then he made a clean platform and plastered it with cow-dung and clay.... and so on up to... he covered his mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down. Then at midnight the same god appeared once again before Somil and, as earlier, said to him—"O Somil Brahmin ! The praxis you have accepted is a bad praxis." But Somil remained silent and the god left.

At dawn when the sun became bright, bark-garment clad Somil took his baskets and pole as well as other possessions, covered his mouth with the wooden strip and moved towards north.

२३. तए णं से सोमिले पंचमदिवसंमि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव उंबरपायवे तेणेव उवागच्छइ। उंबरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, वेर्दि वड्ढइ, जाव संचिट्ठइ।

तए णं तस्स सोमिलमाहणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे, जाव एवं वयासी-"हं भो सोमिला, पव्वइया, दुप्पव्वइयं ते," पढमं भणइ, तहेव तुसिणीए संचिट्ठइ। देवो दोच्चं पि तच्चं पि वयइ-"सोमिला, पव्वइया, दुप्पव्वइयं ते।" तए णं से सोमिले तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे तं देवं एवं वयासी-"कहं णं देवाणुप्पिया ! मम दुप्पव्वइयं ?"

तए णं से देवे सोमिलं माहणं वयासी-"एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुमं पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियं पंचाणुव्वए सत्तसिक्खावए दुवालसविहे सावयधम्मे पडिवन्ने। तए णं तव अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजागरियं .... जाव पुव्वचिंतियं. देवो उच्चारेइ जाव जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयं जाव तुसिणीए संचिट्ठसि। तए णं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वरत्तावरत्तकाले तव अंतियं पाउब्भवामि, "हं भो सोमिला,पव्वइया, दुप्पव्वइयं ते," तह चेव देवो नियवयणं भणइ, जाव पंचमदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव उम्बरपायवे, तेणेव उवागए किढिणसंकाइयं ठवेसि, वेइं वड्ढेसि, उवलेवणं संमज्जणं करेसि, करेत्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधेसि, बंधित्ता तुसिणीए संचिट्ठसि। तं एवं खलु, देवाणुप्पिया, तव दुप्पव्वइयं।"

२३. अपनी प्रस्थान यात्रा के पाँचवें दिन वह सोमिल ब्रह्मर्षि सन्ध्या के समय जहाँ उदुम्बर (गूलर) का वृक्ष था, वहाँ आकर ठहरे। उदुम्बर वृक्ष के नीचे अपनी कावड़ व उपकरण रखे। वेदिका बनाई, पश्चात् काष्ठमुद्रा से मुख बाँधकर मौन धारण कर बैठ गये।

मध्य रात्रि के समय पुनः सोमिल ब्राह्मण के समक्ष वही देव प्रकट हुआ और उसने पहले की तरह कहा–"हे सोमिल ! तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।" इस प्रकार पहली बार उस देव की वाणी को सुनकर मौन धारण कर बैठे रहे। देव ने दूसरी और तीसरी बार भी इसी प्रकार कहा–"सोमिल ! तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।" देव द्वारा दूसरी–तीसरी बार भी इसी प्रकार कहे जाने पर सोमिल ने देव से प्रश्न किया–"हे देवानुप्रिय ! मेरी प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या क्यों है ?"

सोमिल के पूछने पर देव ने कहा–"देवानुप्रिय ! तुमने पहले पुरुषादानीय पार्श्व अर्हत् से पाँच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकार का श्रावकधर्म अंगीकार किया था। (किन्तु इसके बाद साधुओं के दर्शन उपदेश आदि का संयोग न मिलने और मिथ्यात्व पर्यायों के बढ़ने से अंगीकृत श्रावकधर्म को त्याग दिया) इसके अनन्तर किसी समय अर्ध–रात्रि में कुटुम्ब जागरणा करते हुए (तुम्हारे मन में विचार उत्पन्न हुआ कि गंगा किनारे तपस्या करने वाले विविध प्रकार के तापसों में से दिशाप्रोक्षिक तापसों के पास लोहे के कड़ाह, कुड़छी और ताँबे के तापसपात्र बनवाकर और उन्हें लेकर दिशाप्रोक्षिक तापस बनूँ। इत्यादि सोमिल ब्राह्मण द्वारा) पूर्व में चिन्तन किये सभी मनोभावों को देव ने प्रकट किया और कहा–"फिर तुमने दिशाप्रोक्षिक प्रव्रज्या धारण की। प्रव्रज्या धारण कर अन्त में यह अभिग्रह लिया, अभिग्रह के अनुसार जहाँ अशोक वृक्ष था, तुम वहाँ आये और कावड़ रख वेदी आदि बनाई। गंगा में स्नान किया। अग्निहोत्र किया। काष्ठमुद्रा से मुख बाँधकर मौन होकर बैठ गये।" बाद में मध्य रात्रि के समय तुम्हारे समीप आकर मैंने तुम्हें प्रतिबोधित किया–"हे सोमिल ! तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।" किन्तु तुमने उस पर ध्यान नहीं दिया और मौन ही रहे। इस प्रकार मैंने तुम्हें चार दिन तक समझाया किन्तु तुमने मेरे कथन पर ध्यान नहीं दिया। इसके बाद आज पाँचवें दिवस चौथे प्रहर में इस उदुम्बर वृक्ष के नीचे आकर तुमने अपना कावड़ रखा। बैठने के स्थान को साफ किया, लीप–पोतकर स्वच्छ किया। अग्नि में हवन किया और काष्ठमुद्रा से अपना मुख बाँधकर मौन धारण कर बैठ गये। इस प्रकार हे देवानुप्रिय ! तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।

23. On the fifth day of his great journey, Somil Brahmarshi arrived near an Udumbar (*Gular*; the wild fig; Ficus glomerata) tree in the afternoon (third quarter of the day). He placed his basket and pole under that wild big tree. Now he made a clean platform... and so on up to... he covered his mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Then at midnight the same god appeared once again before Somil and, as earlier, said to him—"O Somil ! The praxis you have accepted is a bad praxis." But Somil remained silent. The god uttered these words a second and a third time also—"O Somil ! The praxis you have accepted is a bad praxis." On this second and third utterance Somil asked the god—"Beloved of gods ! Why my praxis is bad praxis ?"

The god replied to Somil Brahmin—"Beloved of gods ! Earlier you had accepted the twelve-fold *Shravak dharma* (code of laity) inclusive of five *anuvrats* (minor vows) and seven *shikshavrats* (instructive or complimentary vows of spiritual discipline). (Deprived of opportunities to behold ascetics and to listen to their discourses, you succumbed to falsehood and abandoned the accepted *Shravak dharma*). Later, one midnight, while pondering over your family circumstances (you thought of getting made and carrying iron pans and spoons and copper utensils, going to hermits on the banks of the Ganges, and getting initiated as *Dishaprokshik* hermit) and so on." The god narrated all what Somil had thought earlier and added—"Then you got initiated as *Dishaprokshik* hermit and in due course took a vow and following it you came to an Ashoka tree placed your baskets and pole under it and made a clean platform, took a bath in the Ganges, offered sacrifice in fire, covered your mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down. Then at midnight I appeared before you and advised—'O Somil ! The praxis you have accepted is a bad praxis.' But you did not pay any heed and remained silent. In the same way I offered you advise for four days but you never paid any attention to what I said. Then today, the fifth day, you arrived near an Udumbar tree in the afternoon and placed your basket and pole under the tree. You cleaned the spot for sitting and plastered it. After offerings in fire you covered your mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down. Therefore, O Beloved of gods ! The praxis you have accepted is a bad praxis."

सोमिल द्वारा पुनः श्रावकधर्म–ग्रहण

२४. तए णं से सोमिले तं देवं एवं वयासी–"कहं णं देवाणुप्पिया ! सुप्पव्वइयं ?"

तए णं से देवे सोमिलं एवं वयासी–"जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! इयाणिं पुव्वपडिवन्नाइं, पंच अणुव्वयाइं सयमेवं उवसंपज्जित्ताणं विहरसि, तो णं तुज्झ इयाणिं सुपव्वइयं भवेज्जा।"

तए णं से देवे सोमिलं वंदइ नमंसइ,वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाऊब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

तए णं सोमिले माहणरिसी तेण देवेणं एवं वुत्ते समाणे पुव्वपडिवन्नाइं पंच अणुव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. देव का वचन सुनकर सोमिल ब्रह्म ऋषि ने उस देव से कहा–"हे देवानुप्रिय ! अब आप ही बताइये कि मेरी यह प्रव्रज्या सुप्रव्रज्या कैसे हो सकती है ?"

उत्तर में देव ने सोमिल ब्राह्मण से इस प्रकार कहा–"देवानुप्रिय ! यदि तुम भगवान श्री पार्श्व प्रभु से पूर्व में ग्रहण किये हुए पाँच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत रूप श्रावकधर्म को स्वयमेव पुनः स्वीकार करके विचरण करो तो तुम्हारी यह प्रव्रज्या सुप्रव्रज्या हो सकती है।"

इसके बाद देव ने सोमिल ब्राह्मण ऋषि को वन्दन नमस्कार किया और वन्दन नमस्कार करके जिस दिशा से आया था उसी दिशा में वापस चला गया।

देव के चले जाने के पश्चात् सोमिल ब्रह्मर्षि देवता के कथनानुसार पूर्व में स्वीकृत किये हुए पाँच अणुव्रतों (संपूर्ण बारह व्रतों) को अंगीकार करके जीवन-यात्रा करने लगा।

SOMIL ACCEPTS SHRAVAK DHARMA AGAIN

24. On hearing these words from the god Somil Brahmarshi said—"O Beloved of gods ! Please tell me how my bad praxis can become a good praxis ?"

The god replied to Somil Brahmin—"Beloved of gods ! If you, on your own, once again accept the *Shravak dharma* (code of laity) inclusive of five *anuvrats* (minor vows) and seven *shikshavrats* (instructive or complimentary vows of spiritual discipline) that you had accepted in the past from Bhagavan Parshva Naath and move about, your bad praxis can become good praxis."

After this the god paid homage and obeisance to Somil Brahmarshi and returned in the direction from which he had come.

When the god left, Somil Brahmarshi, as advised by the god, once again accepted the five *anuvrats* (and all the twelves vows) that he had accepted in the past and commenced his spiritual journey.

सोमिल की शुक्र महाग्रह में उत्पत्ति

२५. तए णं से सोमिले बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमं (जाव) मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोवहाणेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते विराहियसम्मत्ते कालमासे कालं किच्चा सुक्कवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि (जाव) ओगाहणाए सुक्कमहग्गहत्ताए उववन्ने।

तए णं से सुक्के महग्गहे अहुणोववन्ने समाणे जाव भासामणपज्जत्तीए.।

२५. सोमिल ने अनेक चतुर्थभक्त (उपवास), षष्ठभक्त (बेला), अष्टमभक्त (तेला) यावत् अर्ध-मासक्षपण, मासक्षपण रूप नाना प्रकार के तपःउपधान (तपश्चरण) द्वारा अपनी आत्मा को भावित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करके श्रमणोपासक-पर्याय का पालन किया। अन्त में अर्ध-मासिक संलेखना द्वारा आत्मा की शुद्धि की और तीस भोजनों का अनशन द्वारा त्याग किया; किन्तु पूर्वकृत उन पापस्थानों (दुष्प्रव्रज्या रूप कृत प्रमाद) की आलोचना और प्रतिक्रमण नहीं करने के कारण सम्यक्त्व की विराधना करके मरण के समय मरण प्राप्त करके शुक्रावतंसक विमान की उपपातसभा में स्थित देव-शय्या पर (जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट सात हाथ प्रमाण अवगाहना में) शुक्र महाग्रह में शुक्रदेव के रूप में उत्पन्न हुआ।

शुक्र महाग्रह देव तत्काल उत्पन्न होकर भाषा-मनःपर्याप्ति आदि पाँचों पर्याप्तियों से पर्याप्त भाव को प्राप्त हुआ।

SOMIL'S REINCARNATION IN SHUKRA GREAT PLANET

25. Somil lead his *Shramanopasak* (lay worshipper of Jain ascetics) life, enkindling his soul by observing a variety of austerities including many one day, two day, three day... and so on up to... fortnight long and month long fasts. In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of a fortnight duration and observed a fortnight long fast (avoiding thirty meals). As he died without doing *pratikraman* (critical review) at the moment of his death, thereby transgressing the righteous code, his soul has reincarnated instantaneously (*upapat*) as Shukra, the king of *Shukra Jyotishk* gods, in the divine bed (with a minimum occupied space of uncountable fraction of an *Angul* and a maximum of seven cubits) covered with divine cloth in the *Upapat*-hall of *Shukravatansak vimaan* in the *Shukra Mahagraha* (great planet).

Then Shukra Mahagraha god attained the state of full development (*paryapti)* through five kinds of full development (*paryapti*)... and so on up to... *bhasha-man* (speech and mind) *paryapti*.

२६. एवं खलु गोयमा ! सुक्केणं सा दिव्वा (जाव) अभिसमन्नागए। एगं पलिओवमं ठिई।

"सुक्के णं भंते ! महग्गहे तओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं कहिं गच्छिहिइ ?"

"गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।"

२६. विषय का उपसंहार करते हुए भगवान महावीर स्वामी ने कहा-"हे गौतम ! इस प्रकार से उस शुक्र ग्रह देव ने वह दिव्य देवऋद्धि, देवद्युति यावत् दिव्य प्रभाव प्राप्त किया है। उसकी वहाँ एक पल्योपम की आयु स्थिति है।

गौतम स्वामी ने भगवान से पूछा-"भंते ! वह शुक्र ग्रह देव आयु, भव और स्थिति पूर्ण होने पर उस देवलोक से च्यवन कर कहाँ जायेगा ? (कहाँ उत्पन्न होगा ?)"

भगवान ने कहा-"गौतम ! वह शुक्र ग्रह देव आयुक्षय, भवक्षय और स्थितिक्षय होने पर महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर सिद्ध होगा, (यावत् सर्व दुःखों का अन्त करेगा)।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

26. Concluding the story Bhagavan Mahavir said—"Thus, Gautam ! that *Shukra Graha* god acquired that divine opulence and power. His life span there is one *Palyopam*."

Gautam Swami again asked, "*Bhante* ! Completing the age, state, and life of the dimension of gods and descending from that abode of gods, where will *Shukra Graha* god go ? (Where will he be born ?)"

Bhagavan said, "Gautam ! Completing the age, state, and life of the dimension of gods, that *Shukra Graha* god will be born as a human being in the Mahavideh area and finally become a *Siddha* (liberated soul)."

२७. निक्खेवओ–तं एवं खुल जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ तइयं अज्झयणं समत्तं ॥

२७. सुधर्मा स्वामी ने जम्बू स्वामी से कहा–"आयुष्मन् जम्बू ! इस प्रकार मुक्ति को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के तृतीय अध्ययन में इस भाव का प्रतिपादन किया है। ऐसा मैं कहता हूँ।

॥ तृतीय अध्ययन समाप्त ॥

27. Sudharma Swami told Jambu, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Pushpika*. So I state."

● END OF THE THIRD CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थ अध्ययन : बहुपुत्रिका देवी
FORTH CHAPTER : BAHUPUTRIKA DEVI

उपोद्घात : प्रस्तुत अध्ययन का सन्देश

तृतीय वर्ग का यह चतुर्थ अध्ययन बहुपुत्रिका देवी के नाम से विश्रुत है। इस अध्ययन का कथानक अन्य अध्ययनों की अपेक्षा अधिक विस्तृत तथा विविध रोचक घटनाओं से भरा है।

इस अध्ययन से एक महत्त्वपूर्ण सन्देश मिलता है कि "जीवन में कभी भी, किसी वस्तु व सुख के प्रति अधिक आसक्ति व तीव्र लालसा नहीं रखनी चाहिए। आसक्ति का परिणाम सदा ही दुःखदायी होता है।"

बहुपुत्रिका देवी ने संतान-प्राप्ति की अत्यधिक आसक्ति व तीव्र लालसा के फलस्वरूप तीन जन्मों में कष्ट पाये।

सुभद्रा सार्थवाही के भव में वह बंध्या थी, दूसरी पुत्रवती स्त्रियों को देखकर सन्तान-प्राप्ति की लालसा रखती थी। साध्वी बनकर भी उसने बच्चों के प्रति मोह-राग के कारण उनको खिलाना, स्नान कराना, उनके साथ विविध क्रीड़ा व मनोरंजन करना आदि साधु जीवन के विपरीत आचरण किया। इस दोष की आलोयणा प्रतिक्रमण किये बिना मृत्यु प्राप्त कर अगले देवी भव में वह बहुपुत्रिका देवी नाम से प्रसिद्ध हुई। वहाँ भी इन्द्रदेव के समक्ष अनेक बालक-बालिकाओं की विकुर्वणा कर उनका मनोरंजन करना पड़ा। वहाँ से पुनः सोमा ब्राह्मणी के भव में जन्म लेगी, पूर्वजन्म की तीव्र आसक्ति का बंधन मन से अभी तक नहीं छूटने के कारण इस जन्म में भी वह प्रतिवर्ष दो-दो सन्तानों को एक साथ जन्म देकर सोलह वर्ष में बत्तीस सन्तानों की माता बनेगी। छोटे-छोटे बच्चों को सँभालने, उनकी देखभाल करने से अत्यन्त परेशान होकर वह सोचती है-'इससे तो वंध्या ही रहती तो अच्छा था। मैं बहुसन्तानवती होकर अत्यन्त दुःखी हूँ।'

इस प्रकार किसी जन्म में जो सन्तान-सुख की लालसा से दुःखी थी, इस जन्म में वह अधिक संतानों के कारण अत्यन्त दुःखी हो उठी। इसी तीव्र लालसा के काँटे उसे तीन जन्मों तक चुभते रहे।

इस अध्ययन से यह सन्देश मिलता है कि भौतिक सुख-साधनों के प्रति तीव्र लालसा, आसक्ति, मोह सदा ही दुःखदायी व पीड़ाकारी होता है तथा जब तक अपने किये हुए पापों की आलोयणा-प्रतिक्रमण करके आत्मा निःशल्य नहीं होती, तब तक वह चाहे श्रावकव्रत पालें चाहे साधुव्रत ! आराधक नहीं होता। विराधक को परलोक में सद्गति प्राप्त नहीं होती। अतः जीवन के अन्त में अवश्य ही अपने कृतकर्मों की आलोयणा, प्रायश्चित्त कर निःशल्य होकर आराधक बनने का भाव रखना चाहिए।

INTRODUCTION : THE MESSAGE OF THIS CHAPTER

This fourth chapter of the third section is popularly known as Bahuputrika Devi. The story in this chapter is much longer as compared to the other chapters and is full of many interesting incidents.

This chapter gives an important message—one should never have intense desire or infatuation for any thing or pleasure. Infatuation always leads to misery.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Bahuputrika Devi suffered for three births due to her intense desire of bearing a child.

In her birth as Subhadra Sarthavahi (wife of a caravan chief) she was sterile. Her desire for having a child increased when she saw other women with children. Even after getting initiated as an ascetic, her fondness for children inspired her to indulge in anti-ascetic activities including fondling children, giving them a bath, and enjoying various games and other pastimes with them. She died without a critical review and atonement of these faults and reincarnated as a goddess to become famous as Bahuputrika Devi. In that birth also she had to create numerous children with her divine powers for the entertainment of Indra, the king of gods. From there she will reincarnate as Soma Brahmani. Not rid of the bondage of intense craving from the past birth, she would give birth to twins every year. Finally she will be the mother of thirty two children in sixteen years. Disturbed by the hardship of taking care and bringing up so many small kids she will get fed up and think—"It would have been better had I been sterile. Having many children makes me sad."

Thus in some past birth she was sad because of the unfulfilled desire of having children but in the birth under discussion she became sad because of more children. Thorns of intense craving tormented her for three births.

The lesson of this chapter is that intense desire for means of mundane pleasures and comforts always leads to pain and sorrow. Also that as long as a person does not resort to critical review and atonement for the sins committed, he is not a true aspirant of the spiritual path irrespective of his following *Shravak vrat* (the code for laity) or the *Sadhu vrat* (ascetic-code). The transgressor of codes fails to attain a good birth. Therefore, one should try to do critical review and atonement for all his faults and endeavour to be a true aspirant free of the thorns of sinful deeds.

बहुपुत्रिका देवी

२८. उक्खेवओ–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव पुप्फियाणं तच्चस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, चउत्थस्स णं भंते !अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

एवं खलु जंबू !

२८. तीसरा अध्ययन सुनने के पश्चात् जम्बू स्वामी ने सुधर्मा स्वामी से पूछा–"भगवन् ! यदि निर्वाण प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के तृतीय अध्ययन का उक्त भाव निरूपण किया है तो भंते ! चतुर्थ अध्ययन का क्या भाव कहा है ?"

आर्य सुधर्मा स्वामी ने कहा–"जम्बू ! वह इस प्रकार है–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

BAHUPUTRIKA DEVI

28. After listening to the third chapter, Jambu Swami asked Sudharma Swami—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the third chapter of *Pushpika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of the fourth chapter of *Pushpika* ?"

Arya Sudharma said—"Long lived Jambu ! It is as follows—

२९. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसढे। परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं बहुपुत्तिया देवी सोहम्मेकप्पे बहुपुत्तिए विमाणे सभाए सुहम्माए बहुपुत्तियंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं, जहा सूरियाभे, (जाव) भुंजमाणी विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जम्बूद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी आभोएमाणी पासइ, पासित्ता समणे भगवं महावीरं, जहा सूरियाभो, (जाव) नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा संनिसण्णा।

आभियोगा जहा सूरियाभस्स, सूसरा घण्टा, आभियोगियं देवं सद्दावेइ।

जाणविमाणं जोयणसहस्सवित्थिण्णं। जाणविमाणवण्णओ। (जाव) उत्तरिल्लेणं निज्जाणमग्गेण जोयणसाहस्सिएहिं विग्गेहेहिं आगया, जहा सूरियाभे।

धम्मकहा समत्ता। तए णं सा बहुपुत्तिया देवी दाहिणं भुयं पसारेइ, पसारित्ता देवकुमाराणं अट्ठसयं देवकुमारियाण य वामाओ भुयाओ अट्ठसयं। तयाणंतरं च णं बहवे दारगा य दारियाओ य डिंभए य डिंभियाओ य विउव्वइ। नट्टविहिं जहा सूरियाभो, उवदंसित्ता पडिगया।

२९. उस काल उस समय में राजगृह नगर था। वहाँ गुणशिलक चैत्य था। वहाँ पर राजा श्रेणिक राज्य करता था। (श्रमण भगवान महावीर) स्वामी का पदार्पण हुआ। उनकी धर्मदेशना सुनने के लिए परिषदा आई।

उस काल उस समय में सौधर्मकल्प के बहुपुत्रिक विमान की सुधर्मा सभा में बहुपुत्रिका देवी बहुपुत्रिक-सिंहासन पर चार हजार **सामानिक देवियों**–(परामर्शदात्री मंत्री स्थानीय) तथा चार हजार **महत्तरिका**–(न्याय–नीति की शिक्षा देने वाली गुरु स्थानीय) देवियों के साथ सूर्याभदेव के समान अनेक प्रकार के दिव्य सुखों को भोग रही थी। उस समय उसने अपने विपुल अवधिज्ञान से इस केवलकल्प (सम्पूर्ण) जम्बूद्वीप नामक द्वीप को देखा तथा राजगृह नगर में समवसरण में विराजमान भगवान महावीर स्वामी को देखा। उनको देखकर (सिंहासन से उठकर सात–आठ कदम सामने जाकर) नमस्कार किया फिर अपने उत्तम सिंहासन पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ गई। (यह समस्त वर्णन रायपसेणियसूत्रगत सूर्याभदेव के समान जानना चाहिए।)

फिर सूर्याभदेव के समान उसने अपने आभियोगिक देवों को सुस्वरा घण्टा बजाने की आज्ञा दी। उन्होंने सुस्वरा घंटा बजाकर सभी देव–देवियों को भगवान के दर्शनार्थ चलने के लिए सूचित किया। तत्पश्चात्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुनः आभियोगिक देवों को आज्ञा दी–"भगवान के दर्शनार्थ जाने योग्य विमान की विकुर्वणा करो।" आज्ञानुसार उन आभियोगिक देवों ने एक हजार योजन विस्तृत व साढ़े बासठ योजन ऊँचे यान–विमान की विकुर्वणा की। सूर्याभदेव के समान वह अपनी समस्त ऋद्धि–वैभव के साथ उत्तर दिशा की ओर जाने वाले मार्ग से निकलकर एक हजार योजन ऊँचा वैक्रिय शरीर बनाया। फिर भगवान के समवसरण में उपस्थित हुई।

भगवान ने धर्मदेशना दी। धर्मदेशना की समाप्ति के पश्चात् भगवान को वन्दना कर उस बहुपुत्रिका देवी ने अपनी दाहिनी भुजा फैलाई। उस भुजा से एक सौ आठ देवकुमारों की ओर बायीं भुजा फैलाकर एक सौ आठ देवकुमारिकाओं की रचना की। इसके बाद बहुत से दारक–दारिकाओं (बड़ी उम्र के बच्चे–बच्चियों) तथा डिम्भक–डिम्भिकाओं (छोटी उम्र के बालक–बालिकाओं) की विर्कुवणा की तथा सूर्याभदेव के समान नाट्य–विधि दिखाकर (भगवान को नमस्कार करके) वापस लौट गई।

29. During that period of time, there was a city called Rajagriha where there was a *chaitya* (garden) called Gunasheelak. The ruler of the city was King Shrenik. Once *Swami* (Shraman Bhagavan Mahavir) arrived. People came to attend religious discourse.

During that period of time Bahuputrika Devi was sitting on a throne named *Bahuputrik* in the *Sudharma Sabha* (divine assembly) of the *Bahuputrik Vimaan* (celestial vehicle) along with four thousand vehicle based goddesses and four thousand *Mahattarika* goddesses (teacher goddesses who taught ethics and morality). Like Suryabh god they were enjoying a variety of divine pleasures. Then with the help of her all pervading *Avadhi Jnana* she observed this whole Jambu continent. She saw Shraman Bhagavan Mahavir sitting in his *Samavasaran* (divine assembly of a *Tirthankar*) and got up from her throne. She (took seven-eight steps forward) paid homage, returned to her throne and sat facing east. (detailed description is same as that in *Rayapaseniya Sutra* in context of Suryabh Dev)

She then, like Suryabh Dev, instructed her *abhiyogik devs* (attendant gods) to sound the melodious bell. They sounded the melodious bell to inform all gods and goddesses to come to pay homage to *Bhagavan*. After that she again instructed the attendant gods to create a *vimaan* (celestial vehicle) suitable for going to pay homage to *Bhagavan*. The commander followed the instructions and created a *vimaan* one thousand *Yojan* in area and sixty two and a half *Yojans* in height. Like Suryabh Dev she proceeded in the northward direction, created a one thousand *Yojan* tall *vaikriya sharira* (transmuted body) and came to *Bhagavan's Samavasaran* (divine assembly of a *Tirthankar*).

Bhagavan gave his sermon. When the discourse concluded, that Bahuputrika Devi paid homage to *Bhagavan* and extended her right arm

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

to create one hundred eight young gods. Extending her left arm she also created one hundred eight young goddesses. After that she also created numerous adolescents and children. Then like Suryabh Dev she presented stage performance and returned (after paying homage to *Bhagavan*).

गौतम की जिज्ञासा

३०. "भंते" त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ। कूडागारसाला। "बहुपुत्तियाए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी"... पुच्छा, "जाव अभिसमन्नागया ?"

"एवं खलु गोयमा !"

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसीनामं नयरी, अंबसालवणे चेइए तत्थ तं वाणारसीए नयरीए भद्दे नामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे (जाव) अपरिभूए। तस्स णं भद्दस्स सुभद्दा नामं भारिया सुउमाला वञ्झा अवियाउरी जाणुकोप्परमाता यावि होत्था।

३०. बहुपुत्रिका देवी के चले जाने के पश्चात् गौतम स्वामी ने भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार कर प्रश्न किया-"भगवन् ! उस बहुपुत्रिका देवी की वह दिव्य देव-ऋद्धि, द्युति और देवानुभाव कहाँ चला गया ? कहाँ समा गया ?"

भगवान ने कूटाकारशाला का दृष्टान्त देकर बताया-"वह उसी के शरीर में समा गया।"

गौतम स्वामी ने पुनः पूछा-"भंते ! उस बहुपुत्रिका देवी को वह दिव्य देव-ऋद्धि आदि कैसे मिली ?"

उत्तर में भगवान ने बताया-"गौतम ! उस काल उस समय वाराणसी नाम की नगरी थी। आम्रशालवन नामक चैत्य था। उस वाराणसी नगरी में धन-धान्यादि से समृद्ध भद्र नामक सार्थवाह रहता था। उस भद्र सार्थवाह की पत्नी का नाम सुभद्रा था। वह अतीव सुकुमाल अंगोपांग वाली एवं रूपवती थी। किन्तु वन्ध्या होने के कारण उसने एक भी सन्तान को जन्म नहीं दिया। वह केवल अपने जानु (घुटने) और कूर्पर (कोहनी) की माता थी अर्थात् उसके स्तनों को केवल घुटने और कोहनियाँ ही स्पर्श करती थीं, सन्तान नहीं।"

GAUTAM'S CURIOSITY

30. When Bahuputrika Devi left, Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir after paying homage and obeisance—"*Bhante* ! Where did the divine display of opulence and powers created by Bahuputrika Devi go and disappear ?"

Bhagavan answered the question by giving the example of *Kutagar*—"Gautam ! The divine display of opulence and powers created by Bahuputrika Devi was drawn into and disappeared within her own body.

After that Gautam Swami asked—"*Bhante* ! How did that Bahuputrika Devi acquire that divine opulence and power ?

Shraman Bhagavan Mahavir replied—"Gautam ! During that period of time there was a city named Varanasi. Outside the city was a *Chaitya* named Amrashalavan. In Varanasi lived a caravan chief (*sarthavaha*)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

named Bhadra who was very rich. The name of Bhadra Sarthavaha's wife was Subhadra. She had very delicate limbs and was very beautiful. But as she was sterile she did not give birth to even a single child. She was only the mother of her knees and elbow (this means that her breasts were touched only by her knees and elbows, not her child)."

सुभद्रा सार्थवाही की चिन्ता

३१. तए णं तीसे सुभद्दाए सत्थवाहीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए पत्थिए चिंतिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-''एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयाया। तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, (जाव) सपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं मणुयजम्मजीवियफले, जासिं मन्ने नियकुच्छिसंभूयगाइं थणदुद्धलुद्धगाइं महुरसमुल्लावगाणि मम्मणप्पजम्पियाणि थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणगाणि पण्हयन्ति, पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंगनिवेसियाणि देंति, समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मम्मणप्पभणिए। अहं णं अधन्ना अपुण्णा एत्तो एगमवि न पत्ता।'' ओहय. जाव झियाइ।

३१. किसी समय मध्य रात्रि में सुभद्रा को अपनी पारिवारिक स्थिति का विचार करते हुए इस प्रकार का आन्तरिक चिन्तन, प्रार्थित (इच्छा के फलस्वरूप) और मनोगत (मन में छुपा) संकल्प उत्पन्न हुआ-'मैं भद्र सार्थवाह के साथ विपुल मानवीय भोगों को भोगती हुई जीवन व्यतीत कर रही हूँ, किन्तु आज तक मैंने एक भी बालक या बालिका को जन्म नहीं दिया है। वे माताएँ धन्य हैं, पुण्यशालिनी हैं, उन्होंने पुण्य का उपार्जन किया है, उन माताओं ने अपने मनुष्य-जन्म और जीवन का फल प्राप्त किया है, जिन्होंने अपनी कुक्षि से सन्तान उत्पन्न की है, स्तन के दूध पर ललचाई, मन को लुभाने वाली वाणी का उच्चारण करने वाली, तोतली बोली बोलने वाली, स्तनों के नीचे और कोंख के पास रमने वाली सन्तान को दूध पिलाया है, बच्चों के मधुर स्वर, तोतली बोली सुनी है, बच्चों को स्तन व छाती से लगाकर छुपाया है। उनके कमल सदृश कोमल हाथों को पकड़कर गोद में बिठलाया है, कानों को प्रिय लगने वाले मधुर-मधुर संलापों से अपना मनोरंजन किया है। लेकिन मैं ऐसी भाग्यहीन हूँ, पुण्यहीन हूँ कि सन्तान सम्बन्धी एक भी सुख मुझे प्राप्त नहीं हुआ है।'' इस प्रकार के विचारों से निरुत्साह-भग्नमनोरथ होकर आर्त्तध्यान करती हुई दुःखमय जीवन बिताने लगी।

THE WORRY OF SUBHADRA SARTHAVAHI

31. One day while Subhadra was thinking about family matters an aspiration (*ajjhatthiye* or *adhyatmik*), expectation (*patthiye* or *prarthit*), notion (*manogaye* or *manogat*) and intention (*sankappe* or *sankalp*) surfaced—"I have been enjoying my married life with Bhadra Sarthavaha. However, I have not given birth even to a single boy or girl. Complete is the life as humans of those mothers and blessed, fortunate, and meritorious are those mothers who have given birth to a child; who breast-feed their own child who is eager to suckle, who sweetly stutters, and who in stupor shifts

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

from the base of the breasts toward the armpit; who have heard the sweet stutter of the child and comforted it by hugging; and who have lifted the baby with their tender and loving hands, placed it in the lap and enjoyed sweet and loving talk with the baby. But I am the wretched and ill-fated one that has been deprived of any of these pleasures of an offspring." Depressed by these tormenting thoughts she spent a wretched life.

सुव्रता आर्या का आगमन

३२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ णं अज्जाओ इरियासमियाओ भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमियाओ उच्चारपासवण-खेलजल्लसिंघाण-पारिट्ठावणासमियाओ मणगुत्तीओ वयगुत्तीओ कायगुत्तीओ गुत्तिंदियाओ गुत्तबंभयारिणीओ बहुसुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ गामाणुगामं दूइज्जमाणीओ जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागयाओ उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति।

३२. उस काल और उस समय में सुव्रता नाम की आर्या पूर्वानुपूर्वी क्रम (तीर्थंकर परम्परा से प्राप्त विधि अनुसार) से चलती हुई, ग्रामानुग्राम में विहार करती हुई, जहाँ वाराणसी नगरी थी, वहाँ आई। वे ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदान-भांड-मात्रनिक्षेपणा-समिति, उच्चार-प्रस्रवण-श्लेष्म-सिंघाणपरिष्ठापना-समिति से समित थी। मनोगुप्ति, वचनगुप्ति एवं कायगुप्ति से युक्त थी। इन्द्रियों का दमन करने वाली गुप्त ब्रह्मचारिणी, बहुश्रुता शिष्याओं के बहुत विशाल परिवार वाली थी। वहाँ आकर कल्पानुसार यथायोग्य उनके स्वामी की अवग्रह-आज्ञा लेकर शय्या आदि ग्रहण किया। संयम और तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी।

ARRIVAL OF SUVRATA ARYAA

32. During that period of time, wandering comfortably from one village to another, an *aryaa* (female ascetic) named Suvrata, arrived in the town of Varanasi. She was sincerely pursuing the practices of five *samitis* (regulations) prescribed for movement, speech, alms seeking, maintaining ascetic equipment including bowls, and excreta disposal. She also practiced the three *guptis* (restraints) of mind, speech, and body. She exercised complete restraint over sense organs (*guptindriya*). She practiced celibacy with nine restraints (*gupta brahmacharini*). She was accompanied by a large family of scholarly female disciples. After seeking formal permission from the owner, she accepted bed and other necessary things and camped there enkindling her soul with spiritual activities related to inner discipline and austerities.

सुभद्रा की जिज्ञासा

३३. तए णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए वाणारसी नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइंकुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे भद्दस्स सत्थवाहस्स गिहं अणुप्पविट्ठे। तए णं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुभद्दा सत्थवाही ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठ- खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेत्ता एवं वयासी–

"एवं खलु अहं, अज्जाओ, भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि। तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, (जाव) एत्ता एगमवि न पत्ता।

तं तुब्भे, अज्जाओ, बहुणायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागरनगर. (जाव) संनिवेसाइं आहिंडह, बहूणं राईसरतलवर. (जाव) सत्थवाहप्पभिईणं गिहाइं अणुपविसह, अत्थि से केइ कहिंचि विज्जापओए वा मन्तप्पओए वा वमणं वा विरेयणं वा वत्थिकम्मं वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धे, जेणं अहं दारगं वा दारिगं वा पयाएज्जा।"

३३. तदनन्तर सुव्रता आर्या का एक संघाड़ा (दो या तीन साध्वियों का समूह) वाराणसी नगरी के सामान्य, मध्यम और उच्च कुलों में सामुदानिक भिक्षाचर्या के लिए परिभ्रमण करता हुआ भद्र सार्थवाह के घर में आया। सुभद्रा सार्थवाही ने उन आर्यिकाओं को आते हुए देखा। देखकर वह हर्षित और प्रसन्न हुई, शीघ्र ही अपने आसन से उठकर खड़ी हुई। सात–आठ कदम उनके सामने गई और वन्दन–नमस्कार किया। फिर विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम आहारदान का लाभ लेकर इस प्रकार प्रार्थना करने लगी–

"आर्याओ ! मैं भद्र सार्थवाह के साथ विपुल भोगोपभोग भोग रही हूँ, किन्तु मैंने आज तक एक भी सन्तान को जन्म नहीं दिया है। वे माताएँ धन्य हैं, पुण्यशालिनी हैं (जो सन्तान का सुख भोगती हैं) मैं बहुत अधन्या पुण्यहीना हूँ कि मैं एक भी सन्तान का सुख प्राप्त नहीं कर सकी हूँ।

"देवानुप्रियो ! आप बहुत ज्ञानी हैं, बहुत पढ़ी–लिखी हैं और बहुत से ग्राम, आकर, नगरों यावत् देशों में घूमती हैं। अनेक राजा, ईश्वर, तलबर, सार्थवाह आदि के घरों में भिक्षा के लिए प्रवेश करती हैं। तो क्या कोई ऐसा विद्याप्रयोग, मंत्र प्रयोग, वमन, विरेचन, वस्तिकर्म, औषध अथवा भेषज आदि आपको ज्ञात है, कहीं देखा–सुना है जिसके प्रयोग से मैं बालक या बालिका को जन्म देने योग्य हो सकूँ।"

SUBHADRA'S QUESTION

33. Later while moving about to seek suitable alms from ordinary, middle, and high class families in Varanasi, a group of two-three *aryikas* (female ascetics) came to Bhadra Sarthavaha's house. When Subhadra Sarthavahi saw the *aryikas* coming she was happy and pleased. She at once got up from her seat, went ahead seven-eight steps and paid homage to them. After availing the opportunity of giving ample *ashan, paan, khadya, svadya ahaar* (staple food, liquids, general food, and savoury food) as alms she requested—

"*Aryaas* ! I have been enjoying my married life with Bhadra Sarthavaha. However, I have not given birth even to a single child. Blessed, fortunate, and meritorious are those mothers... and so on up to... But I am

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

the wretched and ill-fated one that has been deprived of any of these pleasures of even a single offspring."

"Beloved of gods ! You are very wise and scholarly. You visit many villages, settlements near mines, cities, and countries. You go to houses of many kings, influential and rich persons, knights of honour, caravan chiefs, etc. to seek alms. Do you know of or have come across some such magical method, mantra, or medical treatment including *Vaman* (emesis), *Virechan* (purgation), *Vastikarma* (common anaema), medicines, formulations, etc. that may enable me to bear and give birth to a child."

आर्याओं का उत्तर

३४. तए णं ताओ अज्जाओ सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी–"अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ (जाव) गुत्तबंभयारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं एयमट्ठं कण्णेहि वि निसामेत्ताए किमंग पुण उद्दिसित्तए वा समायरित्तए वा ? अम्हे णं देवाणुप्पिए। नवरं तव विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं परिकहेमो।"

३४. यह सुनकर उन आर्यिकाओं ने सुभद्रा सार्थवाही से इस प्रकार कहा–"देवानुप्रिये। हम ईर्यासमिति आदि समितिओं से समित, तीन गुप्तिओं से गुप्त, इन्द्रियों को वश में करने वाली गुप्त ब्रह्मचारिणी निर्ग्रन्थ–श्रमणियाँ हैं। हमको ऐसी बातें सुनना भी नहीं कल्पता है तो फिर हम इनका उपदेश अथवा आचरण कैसे कर सकती हैं ? किन्तु देवानुप्रिये ! हम तुम्हें केवलिप्ररूपित दान, शील आदि अनेक प्रकार का धर्मोपदेश सुना सकती हैं।

THE REPLY OF ARYIKAS

34. At this those *aryikas* said to Subhadra Sarthavahi—"Beloved of gods ! We are *Nirgranth Shramanis* (female ascetics) who observe the conduct of five *samitis* (regulations) including *irya samiti* (regulation of movement), three *guptis* (restraints), complete restraint over sense organs and celibacy. It is not proper for us even to hear such talk, how can we preach such subject and act accordingly ? However, O Beloved of gods ! We can tell you about the Omniscient-propagated religion that includes charity, righteousness and much more.

सुभद्रा का श्रमणोपासिका व्रत ग्रहण

३५. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा ताओ अज्जाओ तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि रोएमि णं, अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं..... । एवमेयं अवितहमेयं," (जाव) सावगधम्मं पडिवज्जए।

"अहासुहं, देवाणुप्पिए, मा पडिबंधं करेह।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए (जाव) पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं सुभद्दा सत्थवाही समणोवासिया जाया, जाव विहरइ।

३५. तत्पश्चात् वह सुभद्रा सार्थवाही उन आर्यिकाओं से धर्मश्रवण कर, उस पर चिन्तन कर, अवधारण कर हृष्ट-तुष्ट प्रसन्न हुई। उन आर्याओं को तीन बार आदक्षिण-प्रदक्षिणा की। दोनों हाथ जोड़कर आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अंजलि करके वंदना-नमस्कार किया। वंदना-नमस्कार करके बोली-"देवानुप्रियो ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करती हूँ, विश्वास करती हूँ, रुचि करती हूँ। आपने जो उपदेश दिया है, वह तथ्य है, सत्य है, अवितथ (यथार्थ) है। मैं श्रावकधर्म को अंगीकार करना चाहती हूँ।"

आर्यिकाओं ने उत्तर दिया-"देवानुप्रिये ! जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा करो किन्तु शुभ कार्य में प्रमाद मत करो।"

तत्पश्चात् सुभद्रा सार्थवाही ने उन आर्यिकाओं के समीप श्रावकधर्म अंगीकार किया। अंगीकार करके उन आर्यिकाओं को वन्दन-नमस्कार करके उन्हें विदा किया।

इस प्रकार वह सुभद्रा सार्थवाही श्रमणोपासिका होकर श्रावकधर्म पालती हुई जीवन बिताने लगी।

SUBHADRA TAKES THE VOW OF SHRAMANOPASIKA

35. Subhadra Sarthavahi was happy and contented after listening to, contemplating over, and understanding the religious discourse by the *aryikas*. She went around the *aryikas* clockwise three times. Raising her joined palms and waving them near her forehead she paid them homage and obeisance. She then said—"Beloved of gods ! I respect and believe the preaching of the *Nirgranth* (the Omniscient) and have faith and interest in it. What you have said is correct, true, and real. I want to embrace the *Shravak Dharma* (Jain religion)."

The aryikas replied—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed."

Then Subhadra Sarthavahi formally accepted *Shravak Dharma* from those *aryikas*. After doing that she paid them homage and bid them farewell.

Thus that Subhadra Sarthavahi became a *Shramanopasika* (devotee of *Shraman*) and spent her life observing *Shravak Dharma*.

सुभद्रा का दीक्षा का संकल्प

३६. तए णं तीसे सुभद्दाए समणोवासियाए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था-'एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं विउलाइं भोगभोगाइं जाव विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा.... । तं सेयं खलु ममं कल्लं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव जलंते भद्दस्स आपुच्छित्ता सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए अज्जा भवित्ता अगाराओ (जाव) पव्वइत्तए' एवं संपेहेइ।

संपेहित्ता जेणेव भद्दे सत्थवाहे तेणेव उवागया, करयल (जाव) एवं वयासी-"एवं खलु अहं, देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं विउलाइं भोगभोगाइं (जाव) विहरामि, नो चेव णं दारगं वा दारियं वा पयायामि। तं इच्छामि णं, देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अणुन्नाया समाणी सुव्वयाणं अज्जाणं (जाव) पव्वइत्तए।"

३६. इसके बाद उस सुभद्रा श्रमणोपासिका को किसी दिन मध्य रात्रि के समय कुटुम्ब जागरणा करते हुए इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-'मैंने भद्र सार्थवाह के साथ विपुल भोगोपभोग भोगते हुए बहुत समय व्यतीत किया है, किन्तु अभी तक मैंने एक भी बालक या बालिका को जन्म नहीं दिया है। इसलिए अब मुझे यह उचित लगता है कि मैं कल प्रातः सूर्योदय होने पर भद्र सार्थवाह से अनुमति प्राप्त कर सुव्रता आर्यिका के पास जाऊँ और गृह त्यागकर प्रव्रज्या ग्रहण कर लूँ।'

उसने इस प्रकार का विचार करके प्रातः जहाँ भद्र सार्थवाह था, वहाँ आई। आकर दोनों हाथ जोड़कर इस प्रकार बोली-"देवानुप्रिय ! तुम्हारे साथ बहुत वर्षों से विपुल भोगों को भोगती हुई जीवन बिता रही हूँ, किन्तु आज तक मैंने एक भी बालक या बालिका को जन्म नहीं दिया है। अब मेरी इच्छा है आप देवानुप्रिय की अनुमति प्राप्त करके सुव्रता आर्यिका के पास प्रव्रज्या-श्रमण दीक्षा ग्रहण करूँ।"

SUBHADRA'S RESOLVE TO GET INITIATED

36. Once around midnight while Subhadra was thinking about family matters, she thought—"I have been enjoying my married life with Bhadra Sarthavaha. However, I have not given birth even to a single child. Therefore, now I feel that tomorrow at sunrise it would be proper for me to seek permission from Bhadra Sarthavaha, go to Aryika Suvrata and get initiated after renouncing the household."

Accordingly in the morning she went to Bhadra Sarthavaha and joining her palms said—"Beloved of gods ! I have been enjoying my married life with you for many years but I have not given birth even to a single child. Now it is my desire that after getting your permission I will go to Aryika Suvrata and get initiated as an ascetic."

३७. तए णं से भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी-

"मा णं तुमं देवाणुप्पिए, मुंडा (जाव) पव्वयाहि। भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए, मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं, तओ पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं (जाव) पव्वयाहि।"

तए णं सुभद्दा सत्थवाही भद्दस्स एयमट्ठं नो परियाणइ। दोच्चं पि तच्चं पि सुभद्दा सत्थवाही भद्दं सत्थवाहं एवं वयासी-"इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी (जाव) पव्वइत्तए।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से भद्दे सत्थवाहे, जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य, एवं पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा (जाव) पन्नवित्तए वा, सन्नवित्तए वा, विन्नवित्तए वा, ताहे अकामए चेव सुभद्दाए निक्खमणं अणुमन्नित्था।

३७. तब सुभद्रा की बात सुनकर भद्र सार्थवाह ने इस प्रकार कहा–

"देवानुप्रिये ! तुम अभी मुण्डित होकर गृह त्याग करके प्रव्रज्या ग्रहण मत करो। पहले की तरह मेरे साथ विपुल भोगोपभोगों का भोग करो, भोगों को भोगने के पश्चात् सुव्रता आर्या के पास अनगार प्रव्रज्या अंगीकार कर लेना।"

सुभद्रा सार्थवाही ने भद्र सार्थवाह के उन वचनों को स्वीकार नहीं किया। दूसरी बार और फिर तीसरी बार भी सुभद्रा सार्थवाही ने भद्र सार्थवाह से यही आग्रह करके कहा–"देवानुप्रिय ! आपकी आज्ञा–अनुमति लेकर मैं सुव्रता आर्या के पास प्रव्रज्या लेना चाहती हूँ।"

जब भद्र सार्थवाह अनुकूल–प्रेम व प्रलोभनयुक्त वचनों तथा प्रतिकूल–भयजनक विपरीत वचनों से बहुत–सी युक्तियों, प्रज्ञप्तियों (विस्तारपूर्ण कथन), संज्ञप्तियों (घटनाओं और उदाहरणों द्वारा) और विज्ञप्तियों (आग्रह भरे कथन) से उसे समझाने–बुझाने, और अपनी बात मनाने में सफल नहीं हुआ तब इच्छा न होने पर भी विवश होकर सुभद्रा को दीक्षा लेने की अनुमति दे दी।

37. At these words from Subhadra, Bhadra Sarthavaha said—

"Beloved of gods ! Please don't tonsure your head, renounce the household and get initiated immediately. Enjoy more mundane pleasures with me as before and get initiated by Suvrata Aryaa only later."

Subhadra Sarthavahi did not accept these words of Bhadra Sarthavaha. Second time and third time also she insisted saying—"Beloved of gods ! I want to get your permission and go to Aryika Suvrata to get initiated as an ascetic."

With all enticing and warning words, arguments, detailed explanations (*prajnapti*), narration of examples and incidents (*sanjnapti*), and persuasions (*vijnapti*) Bhadra Sarthavaha failed to dissuade Subhadra. Finally, out of compulsion, he unwillingly gave her permission to get initiated.

दीक्षा–महोत्सव

३८. तए णं से भद्दे सत्थवाहे विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ। मित्त–नाइ जाव आमंतेइ पच्छा भोयण वेलाए (जाव) मित्त–नाइ सक्कारेइ संमाणेइ। सुभद्दं सत्थवाहिं ण्हायं (जाव) पायच्छित्तं सव्वालंकार–विभूसियं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेइ। तओ सा सुभद्दा सत्थवाही मित्तनाइ ... (जाव) संबंधिसंपरिवुडा सव्विड्ढीए (जाव) रवेणं वाणारसीनयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, सुभद्दं सत्थवाहिं सीयाओ पच्चोरुहेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहिं पुरओ काउं जेणेव सुव्वया अज्जा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुभद्दा सत्थवाही ममं भारिया इट्ठा कंता, (जाव) मा णं वाइया पित्तिया सिंभिया संनिवाइया विविहा रोगातंका फुसन्तु। एस णं, देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा, भीया जम्ममरणाणं, देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता (जाव) पव्वयाइ। तं एयं अहं देवाणुप्पियाणं सीसिणिभिक्खं दलयामि। पडिच्छंतु णं, देवाणुप्पिया ! सीसिणिभिक्खं।

"अहासुहं, देवाणुप्पिया, मा पडिबंधं करेह।"

३८. तत्पश्चात् भद्र सार्थवाह ने (सेवकों को आदेश देकर) विपुल परिमाण में अशन, पान, खादिम, स्वादिम भोजन तैयार करवाया और अपने सभी मित्रों, जातिबांधवों, स्वजनों, सम्बन्धी–परिचितों को आमन्त्रित किया। उन्हें भोजन कराने के पश्चात् उन मित्रों आदि का सत्कार–सम्मान किया। फिर सुभद्रा सार्थवाही स्नान करके कौतुक–मंगल प्रायश्चित्त आदि करके सभी अलंकारों से विभूषित हुई। फिर एक हजार पुरुषों द्वारा वहन की जाने योग्य विशाल पालकी में बैठी और मित्र–ज्ञातिजन, स्वजन–सम्बन्धी परिजनों से घिरी हुई भव्य ऋद्धि–वैभव के साथ भेरी आदि वाद्यों का घोष करते हुए वाराणसी नगरी के बीचोंबीच से होती हुई जहाँ सुव्रता आर्या का उपाश्रय था वहाँ आई। वहाँ आकर पुरुषसहस्रवाहिनी पालकी को रोककर नीचे उतरी।

भद्र सार्थवाह ने पालकी से उतारकर सुभद्रा सार्थवाही को आगे किया। सुव्रता आर्या के पास आया और आकर वन्दन–नमस्कार किया। फिर इस प्रकार निवेदन करने लगा–

"देवानुप्रिये ! मेरी यह धर्मपत्नी सुभद्रा भार्या मुझे अत्यन्त इष्ट और प्रिय है। मैंने इसको वात, पित्त, कफ और सन्निपातजन्य विविध रोग–आतंकों से सर्वदा सुरक्षित रखने का ध्यान रखा है। किन्तु हे देवानुप्रिये ! अब यह संसार के भय से उद्विग्न होकर एवं जन्म–मरण के दुःखों से भयभीत होकर आप देवानुप्रिया के पास मुण्डित होकर प्रव्रज्या ग्रहण करने के लिए तैयार हुई है। इसलिए हे देवानुप्रिये ! मैं आपको यह शिष्या रूप भिक्षा दे रहा हूँ। आप देवानुप्रिया इस शिष्या–भिक्षा को स्वीकार करें।"

भद्र सार्थवाह का निवेदन सुनकर सुव्रता आर्या ने कहा–"देवानुप्रिय ! जैसा तुम्हें अनुकूल प्रतीत हो, वैसा करो, किन्तु इस शुभ मांगलिक कार्य में विलम्ब मत करो।"

INITIATION CEREMONY

38. After that Bhadra Sarthavaha arranged for (by instructing his servants) large quantities of staple food, liquids, general food, and savoury food and invited all his friends, kin-folk, family members, relatives and acquaintances. After feeding them he greeted and honoured them. Then Subhadra Sarthavahi took her bath, performed auspicious rituals and atonements and adorned herself with ornaments. She then rode a large palanquin carried by one thousand persons. Amidst the sound of musical instruments like trumpet, display of wealth and grandeur and surrounded by friends, kin-folk, family members, relatives and acquaintances she

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

arrived, passing through Varanasi city, at the *upashraya* (place of stay for ascetics) of Suvrata Aryaa. The palanquin was stopped and she alighted from it.

Bhadra Sarthavaha got down from his palanquin and escorted Subhadra Sarthavahi to the place where Suvrata Aryaa was. After paying homage and obeisance he submitted—

"Beloved of gods ! I adore and love Subhadra, my wife. I have always cared and protected her from various ailments and torments caused by disturbed body humours—air, bile and.phlegm. But, O Beloved of gods ! Disturbed by the fears of worldly existence and afraid of the miseries of life and death, she now wants to tonsure her head and get initiated by you. Therefore, O Beloved of gods ! I offer her to you as a disciple-donation. Kindly accept this disciple-donation.

At this request by Bhadra Sarthavaha, Suvrata Aryaa said—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good auspicious deed."

३९. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणी हट्ठा. सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेमेव सुव्वयाओ अज्जाओ, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ तिक्खुत्तो आयाहिण–पयाहिणेणं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त–पलित्तेणं भंते ! लोए जराए मरणे ण य जहा देवाणंदा तहा पव्वइया (जाव) अज्जा जाया गुत्तबंभयारिणी।

३९. सुव्रता आर्या के इन वचनों को सुनकर सुभद्रा सार्थवाही हर्षित एवं प्रसन्न हुई। उसने (एक ओर जाकर) स्वयं अपने हाथों से गृहस्थ वेश के वस्त्र, माला और आभूषणों को उतारकर (श्वेत वस्त्र धारण किये)। पंचमुष्टिक केश लोच किया, फिर सुव्रता आर्या के पास आई। आकर तीन बार प्रदक्षिणापूर्वक वन्दन–नमस्कार किया। वन्दन–नमस्कार करके इस प्रकार बोली–

''भंते ! यह संसार जन्म–जरा–मरण रूप आग से जल रहा है। धधक रहा है–जैसे किसी गृहस्थ के घर में आग लग गई हो और वह घर जल रहा हो तब वह उस जलते हुए घर में से बहुमूल्य और अल्प भार वाली वस्तुओं को निकालकर सुरक्षित रखता है, उसी प्रकार मैं अपनी आत्मा को, जो मुझे अति इष्ट, कान्त, प्रिय, संमत, अनुमत है, जिसे शीत–उष्ण, क्षुधा–तृषा, चोर, सर्प, सिंह, डांस–मच्छर तथा वात–पित्त–कफजन्य रोग आदि, परीषह, उपसर्ग आदि किसी प्रकार की हानि न पहुँचा सके, इस प्रकार सुरक्षित रखूँगी।'' इत्यादि वचन बोलते हुए देवानन्दा (भगवतीशतक ९, उ. ३३) ने जिस प्रकार भगवान महावीर के समक्ष कहा उसी प्रकार कहकर वह उन सुव्रता आर्या के पास प्रव्रजित हो गई। पाँच समितियों एवं तीन गुप्तियों से युक्त होकर इन्द्रियों का निग्रह करने वाली गुप्त ब्रह्मचारिणी आर्या हो गई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

39. Subhadra Sarthavahi was pleased and contented at hearing these words from Suvrata Aryaa. She (went aside and) discarded her householder's dress, garlands and ornaments (and put on the white ascetic-garb). Pulling out all hair from her head (formally termed as five-fistful pulling out of hair) she approached Suvrata Aryaa. After going around her three times and paying homage she said—

"*Bhante* ! This world is being consumed by the fire of birth, old age and death. In a situation when his house is on fire a householder chooses the most valuable and least cumbersome objects to take out and keep safe. In the same way I will protect my soul, which I very much adore, desire, love, covet, and approve, in such a way that no harm is caused to it by heat, cold, hunger, thirst, thief, snake, lion, wasp, mosquito and ailments caused by disturbed wind, bile, and phlegm." Uttering these words as Devananda had said to Bhagavan Mahavir (*Bhagavati Sutra* 9/33), she got initiated by Suvrata Aryaa. She became a completely celibate *aryaa* observing five *samitis* (self regulations) and three *guptis* (restraints).

सुभद्रा आर्या का सन्तान–अनुराग

४०. तए णं सा सुभद्दा अज्जा अन्नया कयाइ बहुजणस्स चेडरूवे संमुच्छिया (जाव) अज्झोववन्ना अब्भंगणं च उव्वट्टणं च फासुयपाणं च अलत्तगं च कंकणाणि य अंजणं च वण्णगं च चुण्णगं च खेल्लणगाणि य खज्जल्लगाणि य खीरं च पुप्फाणि य गवेसइ, गवेसित्ता बहुजणस्स दारए वा दारिया वा कुमारे य कुमारियाओ य डिंभए य डिंभियाओ य, अप्पेगइयाओ अब्भंगेइ, अप्पेगइयाओ उव्वट्टेइ, एवं अप्पेगइयाओ फासुयपाणएणं ण्हावेइ, पाए रयइ, ओट्ठे रयइ, अच्छीणी अंजेइ, उसुए करेइ, तिलए करेइ, दिगिंदलए करेइ, पंतियाओ करेइ, छिज्जावइं, खज्जुकरेइ, वण्णएणं समालभइ, चुण्णएणं समालभइ, खेल्लणगाइं दलयइ, खज्जलगाइं दलयइ, खीरभोयणं भुंजावेइ, पुप्फाइं ओमुयइ, पाएसु ठवेइ, जंघासु करेइ, एवं उरूसु उच्छंगे कडीए पिट्ठे उरसि खंधे सीसे य करयलपुडेणं गहाय हलउलेमाणी हलउलेमाणी आगायमाणी आगायमाणी परिगायमाणी परिगायमाणी पुत्तपिवासं च धूयपिवासं च नत्तुयपिवासं च नत्तिपिवासं च पच्चणुभवमाणी विहरइ।

४०. प्रव्रज्या के बाद सुभद्रा आर्या किसी समय गृहस्थों के बालक–बालिकाओं में मूर्च्छा–मोह भाव रखती हुई उन पर अनुराग–स्नेह करने लगी। उन बालक–बालिकाओं के लिए अभ्यंगन (तैल मालिश), शरीर का मैल दूर करने के लिए उबटन, पीने के लिए प्रासुक जल, उन बच्चों के हाथ–पैर रंगने के लिए मेंहदी आदि रंजक द्रव्य, हाथों में पहनने के लिए कंकण, अंजन–काजल आदि, वर्णक–चंदन आदि, चूर्णक–सुगन्धित द्रव्य, (पाउडर), खेलनक–खिलौने, खाने के लिए खाजे आदि मिष्ठान्न, खीर, दूध और पुष्पमाला आदि वस्तुएँ गृहस्थों के घर से गवेषणा करके लाने लगी। उन गृहस्थों के दारक–दारिकाओं, कुमार–कुमारिकाओं, बच्चे–बच्चियों में से किसी की तैल–मालिश करती, किसी के उबटन लगाती, इसी प्रकार किसी को प्रासुक जल से स्नान कराती, किसी के पैर व ओठ रँगती, किसी की आँखों में काजल आँजती,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ललाट पर तीर के आकार का तिलक लगाती, केशर का तिलक–बिन्दी लगाती, किसी बालक को हिंडोले में झुलाती तथा किसी–किसी को पंक्ति में खड़ा करती, फिर एक पंक्ति में खड़े उन बच्चों को अलग–अलग खड़ा करती, किसी के शरीर पर चन्दन का लेप लगाती, तो किसी के शरीर में सुगन्धित चूर्ण (पाउडर) लगाती। किसी को गुड़िया–खिलौने देती, किसी को खाने के लिए खाजे आदि मिष्ठान्न देती, किसी को दूध पिलाती या खीर खिलाती, किसी के कण्ठ में पहनी हुई पुष्पमाला को उतारती, उन पर फूल फेंकती, किसी को अपने दोनों पाँवों पर बैठाती तो किसी को जाँघों पर बैठाती। किसी को टाँगों पर, किसी को गोदी में, किसी को कमर पर, पीठ पर, छाती पर, कन्धों पर, मस्तक पर बैठाती और हथेलियों में लेकर हुलराती–दुलराती, बारम्बार लोरियाँ गाती हुई, उच्च स्वर में गाती हुई–पुचकारती हुई, पुत्र की लालसा, पुत्री की वांछा, पोते–पोतियों की पिपासा (की पूर्ति) का अनुभव करती हुई अपना जीवन यापन करने लगी।

SUBHADRA ARYAA'S ATTACHMENT FOR OFFSPRINGS

40. At some point of time after initiation, with feelings of fondness and attachment for them, Subhadra Aryaa developed love and affection for children of householders. She started searching and bringing a variety of things for these children. The things included—oil for massage, pastes for removing filth from body, potable water, henna powder and other colours to decorate their limbs, bracelets, collyrium (etc.), sandal-wood, perfumed powder, toys, sweets, *kheer* (a pudding made of rice and milk), milk, garlands, and many other such things. Of these adolescents, kids, and babies of the householders, she would massage some with oil, rub pastes to some, give bath with clean water to some, paint legs and lips of some, apply collyrium to eyes of some, make arrow like figure with saffron at the center of the foreheads of some, and rock some in a rocker. She would also make some kids stand in a line and then make them stand apart for applying sandal-wood paste to some and perfumed powder to others. To some she would give dolls to play with, to some she would feed sweets and to some she would feed milk or kheer. She would take off garland from neck of some and shower flowers on them. Some she would place on both the legs and others on her thighs. She would lovingly cuddle and fondle babies lifting some on her legs, some in her arms, some on her waist, some on her back, some on her breasts, some on her shoulders, some on her head and some in her palms. Smooching them, she would sing lullabies to some and songs in loud voice to others. This way she spent her time with children, vicariously satiating her desire for a son, wish for a daughter, and craving for grand-children.

सुभद्रा का पृथक् आवास

४१. तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सुभद्दे अज्जं एवं वयासी–''अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ (जाव) गुत्तबम्भयारिणीओ। नो खलु अम्हं कप्पइ जातककम्मं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

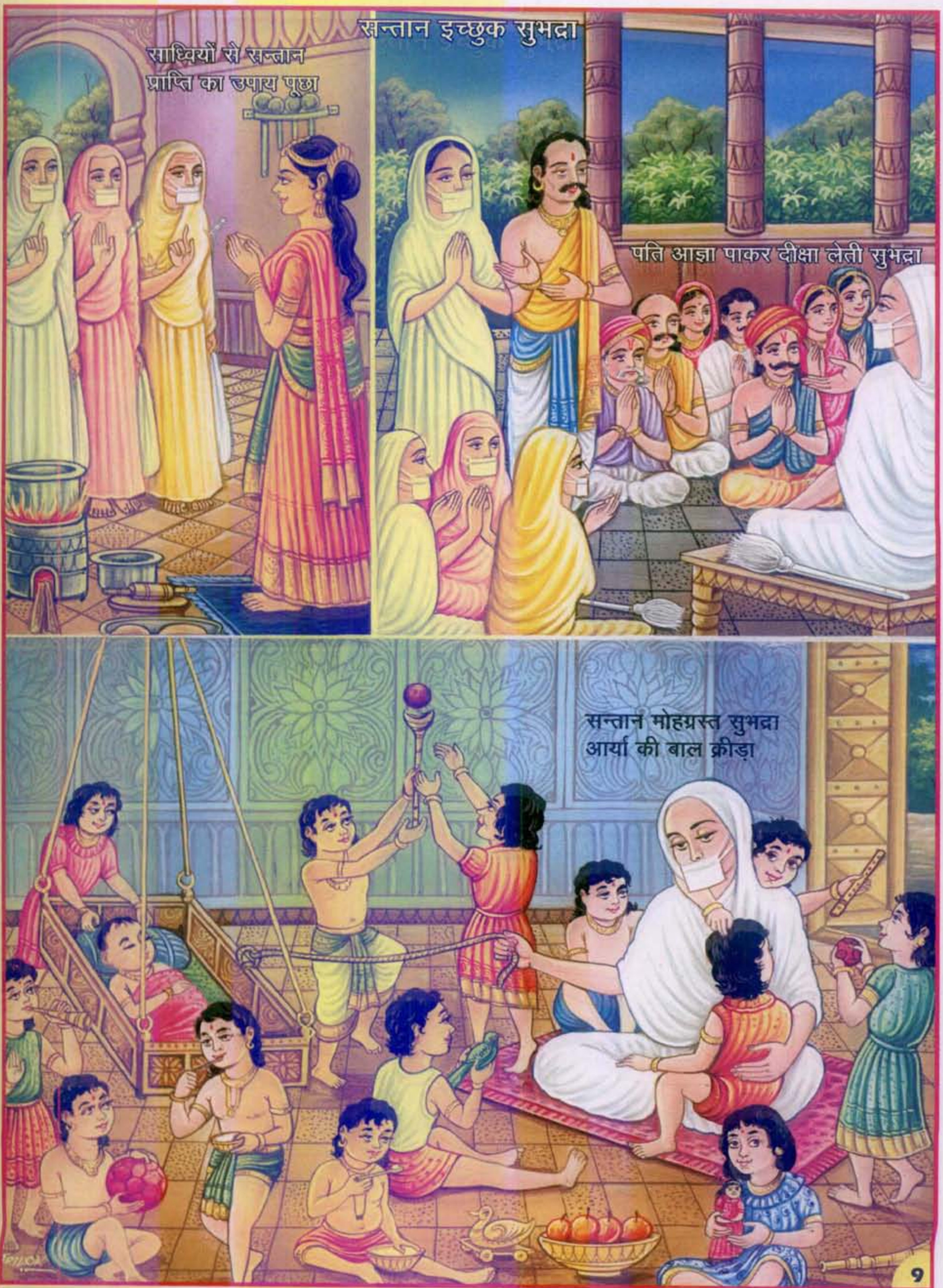

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-९

Illustration No. 9

सन्तान इच्छुक सुभद्रा

वाराणसी निवासी भद्र सार्थवाह की पत्नी सुभद्रा कोई सन्तान नहीं होने से बहुत चिन्तित रहती है। एकदिन सुव्रता नामक आर्या साध्वी परिवार के साथ वहाँ पधारी। उनकी कुछ शिष्याएँ भिक्षा के लिए भ्रमण करती हुई उसके घर पर आईं। (ये साध्वियाँ भगवान महावीर से पूर्व तीर्थंकरों के तीर्थ में हुईं अतः उनके वस्त्र विविध रंगों के हैं)

सुभद्रा साध्वियों से सन्तानोत्पत्ति का कोई उपाय पूछती है। साध्वियाँ उसे धर्म का उपदेश देती हैं।

वैराग्य होने पर सुभद्रा सुव्रता आर्या के पास दीक्षा लेना चाहती है। तब उसका पति भद्र सार्थवाह सुव्रता आर्या से दीक्षा देने की प्रार्थना करता है।

–वर्ग ३, अ. ४, सूत्र ३४

दीक्षा लेने के कुछ वर्षों बाद सुभद्रा आर्या के मन में बालकों के प्रति अत्यधिक अनुराग जाग उठा। वह गुरुणी से अलग उपाश्रय में रहने लगी और बच्चों के साथ क्रीड़ा करती रहती। वहाँ किसी बच्चे को झूले में झुलाती, किसी को तैल–उबटन लगाती, किसी के तिलक अंजन आदि करती, इस प्रकार साधु आचार के विरुद्ध कार्य करती हुई पुत्र–पुत्रियाँ–पोते–पोतियाँ की इच्छापूर्ति का अनुभव करती है।

–वर्ग ३, अ. ४, सूत्र ४०-४३

SUBHADRAA'S DESIRE FOR OFFSPRING

Subhadraa, wife of Bhadra Sarthavaha of Varanasi, is worried because she is childless. One day Aryaa Suvrata came to Varanasi with her disciple *sadhvis* (female ascetics). Some of these *sadhvis* came to her house to seek alms. (As these *sadhvis* belonged to pre-Mahavir period they are in coloured garb.)

Subhadraa asks for some way to bear a child. The *sadhvis* preach her religion.

On getting detached Subhadraa wants to get initiated by Suvrata Aryaa. Her husband, Bhadra Sarthavaha, requests Suvrata Aryaa for her initiation.

—Sec. III, Ch. 4, Sutra : 34

Some years after initiation Subhadraa Aryaa was filled with great love for children. She starts living in another *upashraya* (place of stay for ascetics) away from her teacher. There she plays around with children. Of these she would rock some in a rocker. massage some with oil and pastes, apply marks on foreheads of some, and so on. Thus she satisfies her desire of having sons, daughters, and grand-children by indulging in anti-ascetic activities.

—Sec. III, Ch. 4, Sutra : 40-43

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करित्तए। तुमं च णं देवाणुप्पिए ! बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया (जाव) अज्झोववन्ना अब्भंगणं (जाव) नत्तिपिवासं वा पच्चणुभवमाणी विहरसि। तं णं तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि (जाव) पायच्छित्तं पडिवज्जाहि।''

४१. सुभद्रा आर्या की साधु आचार के विपरीत ऐसी प्रवृत्तियाँ देखकर सुव्रता आर्या ने उससे कहा– ''देवानुप्रिये ! हम निर्ग्रन्थी श्रमणी हैं। ईर्यासमिति आदि से युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी हैं। हमें गृहस्थ बालकों का लालन–पालन, बालक्रीड़ा आदि करना–कराना नहीं कल्पता है। परन्तु देवानुप्रिये ! तुम गृहस्थों के बालकों में मूर्च्छित–आसक्त यावत् अनुरागिणी होकर उनका अभ्यंगन–मालिश आदि अकल्पनीय कार्य करती हो यावत् पुत्र–पौत्र आदि की लालसा–पूर्ति का अनुभव करती हो। हे देवानुप्रिये ! तुम इस दोषयुक्त अकल्पनीय कार्य की आलोचना करो यावत् प्रायश्चित्त ग्रहण करो।''

INDEPENDENT HOUSE OF SUBHADRA

41. When Aryaa Suvrata saw all these anti-ascetic activities of Subhadra she warned—"Beloved of gods ! we are *Nirgranth Shramanis* (female ascetics) and we are strictly celibate observers of *Irya samiti* (etc.). As such, we are not allowed to indulge in caring for and fondling children of householders. But inspired by feelings of fondness and attachment, love and affection for children of householders, you indulge in proscribed activities including massaging oil... and so on up to... satiating your desire for a son, grandson (etc.). O Beloved of gods ! you should condemn this proscribed and disgraceful conduct and do the prescribed atonement."

४२. तए णं सा सुभद्दा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ।

तए णं ताओ समणीओ निग्गंथीओ सुभद्दं अज्जं हीलेंति, निंदंति, खिंसंति, गरहंति अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति।

४२. सुव्रता आर्या द्वारा इस प्रकार समझाने पर भी उस सुभद्रा आर्या ने उन सुव्रता आर्या के वचनों का आदर नहीं किया, कथन पर ध्यान नहीं दिया, किन्तु उपेक्षा–अवहेलना करती हुई पूर्ववत् बालकों के साथ क्रीड़ा–मनोरंजन करती रही।

तब वे निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ इस अकल्पनीय कार्य के लिए सुभद्रा आर्या की हीलना (तिरस्कार) करतीं, निन्दा करतीं, उस पर खीजतीं–उपालंभ देतीं, गर्हा–घृणा करतीं–भर्त्सना करतीं और ऐसा करने से उसे बार–बार रोकतीं।

42. Subhadra neither believed nor accepted these instructions and directions of Aryaa Suvrata. Defying and ignoring her instructions, she continued her adopted way of playing with children.

As a result of this the *Nirgranth Shramanis* of the group started reproaching her, criticizing her, proscribing her, and disdaining her. And they restrained her time and again from indulging in prohibited activities.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३. तए णं तीए सुभद्दाए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए (जाव) अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारिज्जमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था--जया णं अहं अगारवासं वसामि, तया णं अहं अप्पवसा, जंप्पभिइं च णं अहं मुण्डा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, तप्पभिइं च णं अहं परवसा; पुव्विं च समणीओ निग्गंथीओ आढेंति, परिजाणेंति, इयाणिं नो आढाऐंति नो परिजाणंति, तं सेयं खलु मे कल्लं (जाव) जलन्ते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं (जाव) जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं--अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

तए णं सा सुभद्दा अज्जा अज्जाहिं अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छन्दमई बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया (जाव) अब्भंगणं च (जाव) नत्तिपिवासं च पच्चणुभवमाणी विहरइ।

४३. सुव्रता आदि निर्ग्रन्थ श्रमणी आर्याओं द्वारा पूर्वोक्त प्रकार से हीलना वर्जना आदि किये जाने और अकल्पनीय कार्यों के लिए बार-बार रोकने पर उस सुभद्रा आर्या के मन में इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-'जब मैं अपने घर में थी, तब मैं स्वाधीन/स्वतंत्र थी, लेकिन जब से मैं मुण्डित होकर गृह त्यागकर अनगार बनी हूँ, तब से मैं पराधीन हो गई हूँ। पहले जो निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ मेरा आदर-सत्कार करती थीं, मेरे साथ प्रेमपूर्वक आलाप-संलाप व मधुर व्यवहार करती थीं, वे आज न तो मेरा आदर करती हैं और न प्रेम से बोलती हैं। इसलिए मैं कल प्रातःकाल सूर्य उदय होने पर इन सुव्रता आर्या से अलग होकर, पृथक् स्वतंत्र उपाश्रय में जाकर रहूँगी' सुभद्रा आर्या ने मन में इस प्रकार का संकल्प किया। फिर दूसरे दिन सूर्योदय होने पर सुव्रता आर्या को छोड़कर वह उपाश्रय से निकल गई और अलग उपाश्रय में जाकर स्वतंत्र रूप में अकेली ही रहने लगी।

इस प्रकार वह सुभद्रा आर्या अन्य आर्याओं के निषेध को नहीं मानती हुई निरंकुश और स्वच्छन्दमति हो स्वेच्छाचारिणी होकर गृहस्थों के बालकों के मोह में मूर्च्छित हुई उनकी तेल-मालिश आदि सावद्य क्रियाएँ करती हुई पुत्र-पौत्रादि की पिपासापूर्ति का अनुभव करती हुई विचरने लगी।

43. This reproaching... and so on up to... restrained her from indulging in prohibited activities by other Aryikas forced Subhadra to think, "When I was a house-holder I had my freedom. Since I got my head tonsured and initiated I have lost my freedom. Earlier these Aryikas used to respect me but not now. So it would be good for me to leave this group, led by Aryaa Suvrata, tomorrow itself and live independently in another *upashraya* (place of stay for ascetics)." She resolved to do accordingly and the first thing she did in the morning was to abandon Suvrata Aryaa and shift to another suitable *upashraya* to live alone.

Thus not heeding to censure by other *aryikas* Subhadra Aryaa became unrestrained, willful, and footloose in her fondness for and excessive indulgence in massaging the children of householders and other such sinful activities. She moved about satiating her desire for sons and grandsons.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४. तए णं सा सुभद्दा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी संसत्ता संसत्तविहारी अहाछन्दा अहाछन्दविहारी बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तियाविमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरियाए अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्ताए ओगाहणाए बहुपुत्तियदेवित्ताए उववन्ना।

तए णं सा बहुपुत्तिया देवी अहुणोववन्नमेत्ता समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए (जाव) भासामणपज्जत्तीए।

एवं खलु गोयमा ! बहुपुत्तियाए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी (जाव) अभिसमन्नागया।

४४. तदनन्तर वह आर्या सुभद्रा **पासत्था**–साधु के गुणों से दूर होकर, शिथिलाचारी, साधु के आचार के पालन में उदासीन होकर, **पासत्थविहारी,** अवसन्न (खण्डितव्रत वाली) अवसन्नविहारी, **कुसील**–(आचारभ्रष्ट/दूषित आचार वाली), कुशीलविहारी, **संसक्त**–(गृहस्थों से सम्पर्क रखने वाली), संसक्तविहारी और **स्वच्छन्द**–(निरंकुश) तथा स्वच्छंदविहारी हो गई। उसने बहुत वर्षों तक श्रमणी–पर्याय का पालन किया। अन्त में वह अर्ध–मासिक संलेखना द्वारा आत्मा के कर्ममल को शोधित करती हुई, अनशन द्वारा तीस भोजन काल का अतिक्रमण करके और अकरणीय सावद्य कार्यों की आलोचना–प्रतिक्रमण किए बिना ही मरण समय आने पर मरण प्राप्त करके सौधर्मकल्प के बहुपुत्रिका विमान की उपपातसभा में देवदूष्य से आच्छादित देव–शय्या पर अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण (स्व–शरीर प्रमाण) अवगाहना से बहुपुत्रिका देवी के रूप में उत्पन्न हुई।

तब वह बहुपुत्रिका देवी तत्काल उत्पन्न होते ही भाषा–मनःपर्याप्ति आदि पाँच प्रकार की पर्याप्तियों से पर्याप्त अवस्था को प्राप्त होकर देवी रूप में रहने लगी।

गौतम ! इस प्रकार बहुपुत्रिका देवी ने वह दिव्य देव–ऋद्धि एवं देवद्युति प्राप्त की है।

REINCARNATION AS BAHUPUTRIKA DEVI

44. As time passed, distancing herself from ascetic virtues (*pasattha*) that Subhadra Aryaa became lax in her ascetic conduct (*pasatth-vihari*); breaking her vows she became vow-breaker; indulging in base activities (*avsanna*) she became disgraceful (*avasannavihari*); keeping contact with householders (*samsakt*) she became gregarious (*samsaktavihari*); and acting willfully she became footloose. This way she lived long as an ascetic. In the end she observed the ultimate vow of fifteen days duration to cleanse her soul of the dirt of *karmas* and abandoning thirty meals died without reviewing and atoning for her sinful misconduct. She reincarnated as Bahuputrika Devi, with a minimum occupied space of uncountable fraction of an *Angul* (and a maximum of seven cubits), on the divine bed covered with divine cloth in the *Upapat-hall* of *Bahuputrika vimaan* (celestial vehicle) in the *Saudharm Kalp* (divine dimension).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Then Bahuputrika Devi instantaneously attained the state of full development (*paryapti*) through five kinds of full development (*paryapti*)... and so on up to... bhasha-man (speech and mind) paryapti and lived as a goddess.

"Thus, Gautam ! that Bahuputrika Devi acquired that divine opulence and power.

गौतम की पुनः जिज्ञासा

४५. (क) 'से केणट्ठेणं, भंते ! एवं वुच्चइ बहुपुत्तिया देवी बहुपुत्तिया देवी ?'

'गोयमा, बहुपुत्तिया णं देवी जाहे जाहे सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो उवत्थाणियणं करेइ, ताहे ताहे बहवे दारए य दारियाओ य डिंभए य डिंभियाओ य विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव सक्के देविंदे देवराया, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो दिव्वं देविड्ढि दिव्व देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभावं उवदंसेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ बहुपुत्तिया देवी।'

'बहुपुत्तियाणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता।'

'गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ?'

४५. (क) पूर्वभव का वृत्तान्त सुनकर गौतम स्वामी ने पुनः प्रश्न किया–"भंते ! किस कारण से बहुपुत्रिका देवी को बहुपुत्रिका कहा जाता है ?"

भगवान ने उत्तर दिया–"गौतम ! जब–जब वह बहुपुत्रिका देवी देवेन्द्र देवराज शक्र के पास जाती है तब–तब वह बहुत से बालक–बालिकाओं, बच्चे–बच्चियों की विकुर्वणा (रचना) करती। विकुर्वणा करके जहाँ देवेन्द्र–देवराज शक्र आसीन होते, वहाँ आकर उन देवेन्द्र–देवराज शक्र के समक्ष अपनी दिव्य देव–ऋद्धि, दिव्य देवद्युति एवं दिव्य देवानुभाव–प्रभाव को प्रदर्शित करती है। इसी कारण गौतम ! वह बहुपुत्रिका देवी 'बहुपुत्रिका' कहलाती है।"

गौतम स्वामी–"भंते ! वहाँ बहुपुत्रिका देवी की स्थिति कितने काल की है ?"

भगवान- "गौतम ! उस देवी की स्थिति चार पल्योपम की है।"

KKKK

45. (a) On listening to the description of her earlier birth Gautam Swami asked further—"*Bhante* ! Why is that Bahuputrika Devi called *Bahuputrika* (having many offsprings) ?

Bhagavan replied—"Gautam ! Every time that Bahuputrika Devi goes to Shakra, the king of gods, she creates many children and infants. After doing this she approaches Shakra, the king of gods, seated on his throne and displays her divine power, opulence and influence. For this reason, Gautam ! that Bahuputrika Devi called *Bahuputrika* (having many offsprings).

Gautam Swami—"*Bhante* ! What is the life-span of Bahuputrika Devi in that divine realm ?

Bhagavan—"Gautam ! Her life-span there is four *Palyopam*."

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुपुत्रिका देवी का आगामी भव

४५. (ख) 'बहुपुत्तिया णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ?'

'गोयमा ! इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे विञ्झगिरिपायमूले विभेलसंनिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिइ।'

तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते जाव बारसेहिं दिवेसहिं वीइक्कंतेहिं अयमेयारूवं नामधेज्जं करेंति–'होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जं सोमा।'

४५. **(ख)** गौतम–"भगवन् ! आयुक्षय, भवक्षय और स्थितिक्षय होने के पश्चात् बहुपुत्रिका देवी उस देवलोक से च्यवन करके कहाँ जायेगी ? कहाँ उत्पन्न होगी ?"

भगवान–"गौतम ! आयुक्षय आदि के अनन्तर बहुपुत्रिका देवी इसी जम्बूद्वीप के भारतवर्ष में विन्ध्याचल पर्वत की तलहटी में बसे विभेल ग्राम में ब्राह्मण-कुल में बालिका रूप में उत्पन्न होगी।

ग्यारह दिन बीतने पर उस बालिका के माता-पिता बारहवें दिन इस प्रकार का नामकरण करेंगे– "हमारी इस बालिका का नाम 'सोमा' होना चाहिए, अर्थात् वे अपनी बालिका का नाम सोमा रखेंगे।"

THE FUTURE BIRTH OF BAHUPUTRIKA DEVI

45. (b) Gautam Swami again asked, "*Bhante* ! Completing the age, state, and life of the dimension of gods and descending from that abode of gods, where will Bahuputrika Devi go ? Where will she be born ?"

Bhagavan said, "Gautam ! Completing the age, state, and life of the dimension of gods that Bahuputrika Devi will be born as a daughter in a Brahmin family residing in Vibhel village located at the foothills of Vindhyachal mountain in Bharatvarsh in the Jambudveep continent."

After eleven days of her birth, on the twelfth day, her parents will name her thus—"Our this daughter should be called Soma."

सोमा की युवावस्था

४६. तए णं सोमा उम्मुक्कबालभावा विन्नयपरिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाव भविस्सइ।

तए णं तं सोमं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं विन्नयपरिणयमेत्तं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिकूविएणं सुक्केणं पडिरूवएणं नियगस्स भाइणेज्जस्स रट्ठकूडस्स भारियत्ताए दलइस्सइ।

सा णं तस्स भारिया भविस्सइ इट्ठा कंता जाव भण्डकरण्डगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया चेलपेडा इव सुसंपरिहिया रयणकरण्डगो विव सुसारक्खिया सुसंगोविया, मा णं सीयं (जाव) उण्हं वाइया पित्तिया सम्भिया संन्निवाइया विविहा रोयातंका फुसन्तु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६. धीरे–धीरे वह सोमा बाल्यावस्था को पारकर, सज्ञानदशा (सांसारिक सुखों से परिचय) प्राप्त करेगी। युवावस्था में प्रवेश करके वह यौवन एवं सुन्दरता से अत्यन्त उत्तम एवं उत्कृष्ट शरीर वाली हो जायेगी।

तब सोमा के माता–पिता उसे बचपन से मुक्त हुई, सांसारिक विषय–सुखों से परिचित तथा पूर्ण युवती हुई जानकर यथायोग्य गृहस्थोपयोगी उपकरण, साधन, धन–आभूषण एवं सम्पत्ति देकर अपने भानजे राष्ट्रकूट के साथ (दोनों की सम्मति होने पर) उसका विवाह कर देंगे।

राष्ट्रकूट को वह सोमा अत्यन्त प्रिय, इष्ट और सुन्दर लगेगी। वह सोमा की **भाण्डकरण्डक** (आभूषणों की पेटी) के समान, **तैलकेल्ला** (तैलपात्र या इत्रदान) के समान यत्नपूर्वक सुरक्षा करेगा, वस्त्रों के पिटारे के समान उसकी भलीभाँति देखभाल करेगा, रत्नकरण्डक के समान अच्छी प्रकार सँभाल रखेगा और उसको सर्दी, गर्मी, वात, पित्त, कफ एवं सन्निपातजन्य रोग और आतंक न सताये, इस प्रकार से सर्वदा सावधान रहेगा।

THE YOUTH OF SOMA

46. In due course Soma will cross adolescence and attain maturity (when awareness of worldly pleasures is gained). In her youth she will develop into an exquisite beauty having a body with perfect proportions and endowed with youth and charm.

Then her parents will realize that she has crossed adolescence, is aware of worldly pleasures, and is a mature young woman. Consequently they will marry her to Rashtrakoot (with mutual consent), their *bhanja* (nephew; sister's son), and give enough household things, facilities, wealth and ornaments.

Rashtrakoot will find Soma lovable, adorable, and beautiful. He will carefully protect her like a jewel box and a pot of oil. He will look after her like a wardrobe. He will take proper care of her like a box of gems. He will always be attentive to ensure that she is not tormented by cold, heat, ailments caused by disturbed body humours—wind, bile, and phlegm—and any other troubles.

सोमा द्वारा बत्तीस सन्तान को जन्म

४७. तए णं सा सोमा माहणी रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी संवच्छरे संवच्छरे जुयलगं पयायमाणी, सोलसेहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाइ।

तए णं सोमा माहणी तेहिं बहूहिं दारगेहिं य दारियाहि य कुमारेहि य कुमारियाहि य डिम्भएहि य डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताण–सेज्जएहि य अप्पेगइएहिं थणियाएहिं य, अप्पेगइएहिं पीहगपाएहिं अप्पेगइएहिं परंगणएहिं, अप्पेगइएहिं परक्कममाणेहिं अप्पेगइएहिं पक्खोलणएहिं अप्पेगइएहिं थणं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं खीरं मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खेल्लणयं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं खज्जगं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं कूरं मग्गमाणेहिं, पाणियं मग्गमाणेहिं हसमाणेहिं रूसमाणेहिं अक्कोसमाणेहिं अक्कुस्समाणेहिं हणमाणेहिं विप्पलायमाणेहिं, अणुगम्ममाणेहिं रोवमाणेहिं कन्दमाणेहिं विलवमाणेहिं कूवमाणेहिं उक्कूवमाणेहिं निद्दायमाणेहिं पलंबमाणेहिं दहमाणेहिं दंसमाणेहिं वममाणेहिं छेरमाणेहिं मुत्तमाणेहिं मुत्तपुरीस वमियसुलित्तोवलित्ता मइलवसणपुच्चडा जाव असुइबीभच्छा परमदुग्गन्धा नो संचाएइ रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए।

४७. तदनन्तर वह सोमा ब्राह्मणी अपने पति राष्ट्रकूट के साथ विविध प्रकार के भोगों का सुख अनुभवती हुई प्रत्येक वर्ष एक युगल (एक जोड़ा) सन्तान को जन्म देती हुई सोलह वर्ष में बत्तीस बालकों को जन्म देगी। तब उन बहुत से (बत्तीस) लड़के-लड़कियों-कुमार-कुमारियों एवं अल्पवयस्क बालक-बालिकाओं में से कोई तो ऊपर सिर की ओर पैर करके सोते रहेंगे, कोई बच्चा चीख-पुकार मचाता रहेगा, कोई बच्चा पाँवों से चलना चाहेगा, कोई बच्चा सरकता पड़ोसियों के आँगन में पहुँच जायेगा, कोई बच्चा चलने की चेष्टा करेगा, कोई बालक धरती पर गिर पड़ेगा, कोई बच्चा भूख लगने पर उसके स्तन ढूँढ़ेगा, कोई बालक दूध की तलाश कर रहा होगा, कोई बच्चा खिलौने ढूँढ़ रहा होगा, कोई बच्चा खाद्य पदार्थों की खोज कर रहा होगा, कोई बालक भोजन (भात) खोजता होगा, कोई बालक पानी अथवा अन्य पेय पदार्थ पाने को भटक रहा होगा, कोई हँस रहा होगा, कोई रूठकर मचल रहा होगा, कोई गुस्से में भरकर भन्ना रहा होगा, कोई बच्चा अपनी वस्तु पाने के लिए दूसरों से लड़ रहा होगा, कोई बच्चा दूसरे बच्चे को मार रहा होगा, कोई मार खाकर प्रलाप कर रहा होगा, कोई किसी के पीछे उसे पकड़ने के लिए भाग रहा होगा, कोई रो रहा होगा, कोई क्रन्दन कर रहा होगा, कोई सुबक रहा होगा, कोई जोर-जोर से चिल्लाते हुए रो रहा होगा, कोई सो रहा होगा, कोई बच्चा अग्नि या किसी गरम पदार्थ को छूकर जल रहा होगा, कोई बालक दूसरे बालक को दाँतों से काट रहा होगा, कोई उल्टी (वमन) कर रहा होगा, कोई शौच कर रहा होगा और कोई पेशाब कर रहा होगा। इस प्रकार वह सोमा ब्राह्मणी सदैव उन बच्चों के मल, मूत्र, वमन से लिपटे शरीर वाली तथा मैले-कुचैले कपड़ों के कारण कांतिहीन गंदगी से भरी रहने से देखने में वीभत्स और अत्यन्त दुर्गन्धित घृणास्पद लगने के कारण अपने पति राष्ट्रकूट के साथ मन इच्छित कामभोगों को भोगने में सर्वथा असमर्थ एवं अक्षम हो जायेगी।

SOMA GIVES BIRTH TO THIRTY TWO CHILDREN

47. In due course that Soma Brahmani will enjoy a variety of worldly pleasures with her husband Rashtrakoot and give birth to twins every year for sixteen years making a total of thirty two children. Of these adolescents, children, and infants of different ages—some will sleep reverse on the bed, some will scream and shout, some will learn to walk, some will crawl to neighbouring courtyards, some will toddle around, some will fall on the ground, some will seek her breasts when they are hungry, some will search for milk, some will look for toys, some will look around for snacks, some will ask for meals, some will wander around for water or drinks, some will laugh, some will be upright and fretful, some will be agitated and angry, some will quarrel with others to get back their things, some will beat

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

others, some will shout after being beaten, some will rush to catch others, some will cry, some will wail, some will sob, some will bawl, some will sleep, some will get scolded by touching something hot, some will bite others, some will vomit, some will pass stool, and some will urinate. Thus that Soma Brahmani will be ever smeared with stool, urine, and vomit and dressed in dirty rags. Due to her dull and dirty looks, and loathsome, stinking and repulsive appearance that Soma Brahmani will become unable and unfit to enjoy the desired worldly pleasures with her husband Rashtrakoot.

सोमा का विचार

४८. तए णं तीसे सोमाए माहणीए अन्नया कयाइ पुव्वत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–'एवं खलु अहं इमेहिं बहूहिं दारगेहि य (जाव) डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसेज्जएहि य (जाव) अप्पेगइएहिं मुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं दुज्जम्मएहिं हयविप्पहयभग्गेहिं एगप्पहारपडिएहिं जाणं मुत्त–पुरीस–वमिय–सुलित्तोवलित्ता जाव परमदुब्भिगन्धा नो संचाएमि रट्ठकूडेणं सद्धिं जाव भुंजमाणी विहरित्तए। धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ (जाव) जीवियफले जाओ णं बंझाओ अवियाउरीओ जाणुकोप्परमायाओ सुरभिसुगंधगंधियाओ विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीओ विहरंति। अहं णं अधन्ना अपुण्णा अकयपुण्णा नो संचाएमि रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं जाव विहरित्तए।'

४८. ऐसी दुरवस्था में पड़ी सोमा ब्राह्मणी के मन में किसी समय रात को पिछले प्रहर में अपनी और अपने कुटुम्ब की स्थिति पर विचार करते हुए इस प्रकार का मनोभाव उत्पन्न होगा–'मैं इन बहुत से दुःख देने वाले अभागे, एक साथ थोड़े–थोड़े दिनों के बाद उत्पन्न हुए दुर्जन्म वाले छोटे–बड़े और नवजात बहुत से दारक–दारिकाओं यावत् बच्चे–बच्चियों में से, कोई सिर की ओर पैर करके सोने से, किसी के पेशाब आदि करने से, उनके मल, मूत्र, वमन आदि से लिपटी रहने के कारण अत्यन्त दुर्गन्धमयी रहने के कारण अपने पति राष्ट्रकूट के साथ भोगों का सुख–अनुभव नहीं कर पा रही हूँ। इसलिए वे माताएँ धन्य हैं, उनका मनुष्य–जन्म और जीवन सफल है, जो वन्ध्या (बाँझ) ही रही है। सन्तानोत्पत्ति के योग्य नहीं होने से जानु–कूर्पर की माता (केवल अपने स्तनों व घुटनों को सँभालने वाली बाँझ) होकर, सुगन्धित द्रव्यों से सुवासित होकर, मनुष्य–जीवन सम्बन्धी विविध प्रकार के भोगोपभोगों को भोगती रहती है। मैं तो ऐसी अधन्या, पुण्यहीन, निर्भागी हूँ कि राष्ट्रकूट के साथ मन इच्छित भोगों को नहीं भोग पाती हूँ।'

SOMA'S THOUGHT

48. In this distressed state, during the last quarter of a night, Soma Brahmini, while contemplating about family affairs, will think—"Encumbered by these numerous torturing and ill-fated adolescents, children, and infants of different ages born as twins after short gaps; of whom—some sleep reverse on the bed,... and so on up to... some urinate;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-१०

Illustration No. 10

बहु सन्तान से दुःखी सोमा

भगवान महावीर गौतम स्वामी से कहते हैं–सुभद्रा आर्या का जीव यहाँ बहुपुत्रिका देवी बना है। यहाँ से आयु पूर्ण कर विभेल सन्निवेश में ब्राह्मण कुल में सोमा नाम की कन्या के रूप में जन्म लेगी।

सोमा का विवाह राष्ट्रकूट नामक युवक से होगा। वहाँ वह प्रतिवर्ष दो सन्तान (बालक–बालिका) को जन्म देती हुई सोलह वर्ष में ३२ सन्तान की माता बनेगी। कोई छोटा बच्चा उसकी गोदी में सोयेगा। वहीं टट्टी, पेशाब कर देगा। कोई उल्टी करेगा। कोई भूख से पीड़ित हुआ खाना माँगेगा। कोई खिलौना माँगेगा। कोई गिर जाने से चोट लगने से रोयेगा। कोई आपस में छीना–झपटी करेगा। कोई परस्पर लड़ेगा। कोई घर से बाहर निकलकर दूसरे के घर में भाग जायेगा। कोई सीधा सोया रहेगा। कोई हँसेगा, कोई रूठेगा।

इस प्रकार उन बत्तीस सन्तानों के कलह–विलाप–शोर व गन्दगी आदि के कारण बहुसन्तान से अत्यधिक पीड़ित–दुःखी होकर वह असमय में ही बूढ़ी हो जायेगी और अपने को पुण्यहीन, भाग्यहीन मान कर दुःखी रहने लगेगी।

–वर्ग ३, अ. ४, सूत्र ४८–४९

SOMA DISAPPOINTED WITH NUMEROUS CHILDREN

Bhagavan Mahavir said to Gautam Swami—The soul that was Subhadraa Aryaa has reincarnated as Bahuputrika Devi. Completing the age she will be born as Soma, a daughter in a Brahmin family, residing in Vibhel village.

She will get married to young Rashtrakoot. She will give birth to one twin every year for sixteen years making a total of thirty two children. Of these children—Some will sleep in her lap and will pass stool and urine there. Some will vomit. Some will ask for feed. Some will want toys. Some will fall and cry with pain. Some will quarrel with others and snatch their things. Some will get out of the house and go to another house. Some will sleep straight. Some will laugh and some will get angry.

Thus tormented and distressed by quarreling, crying and wailing of numerous shoddy children she will age untimely. She will remain gloomy considering herself to be unfortunate and impious.

—Sec. III, Ch. 4, Sutra : 48-49

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ever smeared with stool, urine, and vomit; and with stinking and repulsive appearance I am not being able to enjoy the desired worldly pleasures with my husband Rashtrakoot. Therefore, as human beings fulfilled is the life of and blessed are those mothers who remain sterile. Being mother only to their breasts and knees (who care only for their breasts and knees and not an offspring) and unable to bear a child, they use perfumes and enjoy a variety of worldly human pleasures and comforts. But I am the wretched and ill-fated one that has been deprived of any desired worldly pleasures with Rashtrakoot, my husband."

सुव्रता आर्या का आगमन

४९. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नाम अज्जाओ इरियासमियाओ जाव बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं .... जेणेव विभेले संनिवेसे तेणेव उवागच्छइ अहापडिरूवं उग्गहं जाव विहरंति।

तए णं तासिं सुव्वयाणं अज्ञायाणं एगे संघाडए विभेले संनिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे रट्ठकूडस्स गिहं अणुपविट्ठे। तए णं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा. खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वंदइ, नमसंइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणं ४ पडिलाभेत्ता एवं वयासी-

एवं खलु अहं अज्जाओ ! रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं जाव संवच्छरे संवच्छरे जुगलं पयामि, सोलसहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाया। तए णं अहं तेहिं बहूहिं दारएहि य जाव डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसेज्जएहिं जाव मुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं जाव नो संचाएमि .... विहरित्तए। तं इच्छामि णं अहं अज्जाओ ! तुम्हं अंतिए धम्मं निसामेत्तए।"

तए णं ताओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्तं (जाव) केवलिपन्नत्तं धम्मं परिकहेन्ति।

४९. (उस अवसर पर जब सोमा ने ऐसा विचार किया) तब समिति आदि पाँच समितियों से युक्त बहुत विशाल साध्वी परिवार के साथ सुव्रता नाम की आर्याएँ पूर्वानुपूर्वी क्रम-(तीर्थंकरों द्वारा निर्दिष्ट आचार के अनुरूप) से विहार करती हुई उस विभेल ग्राम में आयेंगी और साधु मर्यादा अनुसार आज्ञा अवग्रह लेकर उपाश्रय में ठहरेंगी।

तत्पश्चात् उन सुव्रता आर्याओं का एक संघाड़ा (दो साध्वियों का समुदाय) विभेल ग्राम के उच्च, सामान्य और मध्यम परिवारों में सामूहिक रूप में भिक्षा के लिए घूमता हुआ राष्ट्रकूट के घर में प्रवेश करेगा। तब वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओं को आते देखकर हर्षित और सन्तुष्ट होगी। हर्षित होकर शीघ्र ही अपने आसन से उठेगी, उठकर सात-आठ कदम उनके सामने जायेगी। वन्दन-नमस्कार करेगी और फिर अशन, पान, खादिम, स्वादिम चारों प्रकार के आहारदान का लाभ लेती हुई इस प्रकार कहेगी-

"आर्याओ ! अपने पति राष्ट्रकूट के साथ अनेक प्रकार के भोगों को भोगते हुए मैंने प्रतिवर्ष बालक-युगलों (दो बालकों) को जन्म देकर सोलह वर्ष में बत्तीस बालकों का प्रसव किया है, जिससे मैं उन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुर्जन्मा बहुत से बालक–बालिकाओं, बच्चे–बच्चियों से जो कुछ चित्त होकर सोए रहते हैं, कुछ मल–मूत्र त्यागते रहते हैं उनके मल–मूत्रादि से लिपटी अत्यन्त दुर्गन्धित शरीर वाली रहकर मैं अपने पति राष्ट्रकूट के साथ सुखोपभोग नहीं भोग पाती हूँ। इसलिए हे आर्याओ, मैं आपसे धर्म का उपदेश सुनना चाहती हूँ।''

सोमा के कथन को सुनकर वे आर्याएँ सोमा ब्राह्मणी को तीर्थंकरों द्वारा प्ररूपित तप–संयम रूप विविध प्रकार के धर्म का उपदेश सुनाएँगी।

ARRIVAL OF SUVRATA ARYAA

49. During that period of time (when Soma will think thus), wandering comfortably from one village to another (following the conduct defined by *Tirthankars*), an *aryaa* (female ascetic) named Suvrata, sincerely pursuing the practices of five *samitis* (regulations)... and so on up to... accompanied by a large family of scholarly female disciples, will arrive in Vibhel village. After seeking formal permission according to the ascetic conduct she will camp there.

Later while moving about to seek suitable alms from ordinary, middle, and high class families in Vibhel village, a group of two-three *aryikas* (female ascetics) will come to Rashtrakoot's house. Soma Brahmani will be happy and pleased to see the *aryikas* (female ascetics) coming. She will at once get up from her seat, take seven-eight steps forward and pay homage to them. After availing the opportunity of giving ample *ashan, paan, khadya, svadya ahaar* (staple food, liquids, general food, and savoury food) as alms she will submit—

"*Aryaas* ! Enjoying a variety of worldly pleasures with my husband Rashtrakoot I gave birth to one twin every year for sixteen years making a total of thirty two children. Of these adolescents, children, and infants of different ages—some sleep reverse on the bed, ... and so on up to... and some urinate. Due to being ever smeared with stool, urine, ... and so on up to... stinking and repulsive appearance I am unable to enjoy the desired worldly pleasures with my husband Rashtrakoot. Therefore, O *Aryaas* ! I wish to listen to your religious discourse."

At this request from Soma those *aryaas* (female ascetics) will preach austerities, discipline and other different aspects of the religion propagated by *Tirthankars*.

सोमा का श्रावकधर्म ग्रहण

५०. तए णं सा सोमा माहणी तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा. जाव हियया ताओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–''सद्दहामि णं, अज्जाओ, निग्गंथं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पावयणं, जाव अब्भुट्ठेमि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं अज्जाओ ! जाव से जहेयं तुब्भे वयह। जं नवरं, अज्जाओ, रट्ठकूडं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए (जाव) मुंडा पव्वयामि।''

''अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं।''

तए णं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ।

५०. सोमा ब्राह्मणी उन आर्यिकाओं से धर्म सुनकर और उसे हृदय में धारण कर हर्षित, संतुष्ट यावत् प्रसन्न हृदयपूर्वक उन आर्याओं को वन्दना-नमस्कार करेगी। वन्दना-नमस्कार करके इस प्रकार कहेगी- ''हे आर्याओ ! मैं आप द्वारा कथित निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करती हूँ, उसे अंगीकार करना चाहती हूँ। आर्याओ ! निर्ग्रन्थ प्रवचन जैसा आपने प्रतिपादन किया है इसी प्रकार सत्य है। मैं अपने पति राष्ट्रकूट से पूछूँगी। उसकी आज्ञा लेकर आप देवानुप्रिय के पास मुण्डित होकर प्रव्रजित होऊँगी।''

तब आर्याएँ सोमा ब्राह्मणी से इस प्रकार उत्तर देगीं-''देवानुप्रियो ! जैसे तुम्हें सुख हो वैसा करो, किन्तु धर्मकार्य में विलम्ब मत करो।''

इसके पश्चात् सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओं को वन्दन-नमस्कार करके विदा करेगी।

SOMA TAKES THE VOW OF SHRAMANOPASIKA

50. Soma Brahmani will be happy and contented after listening to, contemplating over, and understanding the religious discourse by the *aryikas* (female ascetics). She will pay them homage and obeisance. Therafter she will say—"Beloved of gods ! I respect and believe the preaching of the *Nirgranth* (the Omniscient) and have faith and interest in it. I want to embrace it. O *Aryaas* ! What you have said is correct, true, and real. I will request my husband Rashtrakoot. Seeking his permission I would like to get initiated by you after getting my head tonsured."

The *aryikas* (female ascetics) will reply—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed."

Then Soma Brahmani will pay them homage and bid farewell to the *aryikas* (female ascetics).

सोमा का राष्ट्रकूट से दीक्षा के लिए पूछना

५१. तए णं सा सोमा माहणी जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागया करयल.... एवं वयासी-''एवं खलु मए देवाणुप्पिया, अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते। से वि य णं धम्मे इच्छिए (जाव) अभिरुइए। तए णं अहं, देवाणुप्पिया, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वइत्तए।''

तए णं से रट्ठकूडे सोमं माहणिं एवं वयासी-''मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! इयाणिं मुंडा भवित्ता (जाव) पव्वयाहि। भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए ! मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं, तओ पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं अन्तिए मुण्डा (जाव) पव्वयाहि।''

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा सोमा माहणी ण्हाया (जाव) सरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता विभेलं संनिवेसं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ, पज्जुवासइ।

तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं परिकहेन्ति जहा जीवा बज्झन्ति। तए णं सा सोमा माहणी सुव्वयाणं अज्जाणं अन्तिए (जाव) दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ। सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

तए णं सा सोमा माहणी समणोवासिय जाया अभिगयजीवाजीवा जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अन्नया कयाइ विभेलाओ संनिवेसाओ पडिनिक्खमन्ति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति।

५१. तत्पश्चात् वह सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूट के पास जाकर दोनों हाथ जोड़ मस्तक पर अंजलिबद्ध होकर इस प्रकार कहेगी-"देवानुप्रिय ! मैंने आर्याओं के पास धर्म का उपदेश सुना है और वह धर्म मुझे प्रिय यावत् रुचिकर लगा है। इसलिए देवानुप्रिय ! आपकी अनुमति लेकर मैं सुव्रता आर्या से प्रव्रज्या अंगीकार करना चाहती हूँ।"

यह सुनकर राष्ट्रकूट सोमा ब्राह्मणी से कहेगा-"देवानुप्रिये ! अभी तुम मुण्डित होकर घर छोड़कर प्रव्रज्या ग्रहण मत करो किन्तु देवानुप्रिये ! अभी तुम मेरे साथ मानव-जीवन के अनेक प्रकार के कामभोगों के साधनों का उपभोग करो और भुक्तभोगी होने के पश्चात् सुव्रता आर्या के पास मुण्डित होकर यावत् गृह त्याग कर प्रव्रजित हो जाना।"

(राष्ट्रकूट के परामर्श को मान लेने के पश्चात्) सोमा ब्राह्मणी स्नान कर यावत् सुन्दर वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित होकर दासियों के समूह से घिरी हुई अपने घर से बाहर निकलेगी। निकलकर विभेल ग्राम के बीचोंबीच से निकलती हुई सुव्रता आर्याओं के उपाश्रय में पहुँचेगी। वहाँ सुव्रता आर्याओं को वन्दन-नमस्कार करके उनकी पर्युपासना करेगी।

तत्पश्चात् वे सुव्रता आर्या उस सोमा ब्राह्मणी को केवलि प्ररूपित विविध प्रकार के धर्म का उपदेश देंगी-यथा-जीव अपने किये कर्मों के कारण ही बँधता है, अपने पुरुषार्थ से ही कर्मों को तोड़कर मुक्त होता है इत्यादि उस धर्म को सुनकर सोमा ब्राह्मणी सुव्रता आर्या के समक्ष बारह प्रकार के श्रावक धर्म को स्वीकार करेगी और फिर सुव्रता आर्या को वन्दन-नमस्कार करेगी। वंदन-नमस्कार करके अपने घर की ओर लौट जायेगी।

तत्पश्चात् सोमा ब्राह्मणी श्रमणोपासिक (श्राविका) हो जायेगी। तब वह जीव-अजीव आदि तत्त्वों के स्वरूप की जानकार हो जायेगी। (एवं ग्रहण किये हुए विविध प्रकार के शीलव्रत, गुणव्रत, विरमण, प्रत्याख्यान, पौषधोपवासों से) आत्मा को भावित करती हुई जीवन बितायेगी।

इसके पश्चात् वे सुव्रता आर्या किसी समय विभेल ग्राम से विहार कर अन्य जनपदों में विचरण करती रहेगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SOMA SEEKS PERMISSION FROM RASHTRAKOOT

51. Then that Soma Brahmani will go to Rashtrakoot and raising her joined palms to her forehead shall say—"Beloved of gods ! I have listened to the religious discourse by *aryikas* (female ascetics) and found it suited to my liking and interest. Therefore, O Beloved of gods ! After getting your permission I would like to go to Aryika Suvrata and get initiated as an ascetic."

At these words from Soma Brahmani, Rashtrakoot will say—

"Beloved of gods ! Please don't tonsure your head, renounce the household and get initiated immediately. Enjoy more mundane pleasures and comforts with me as before and get initiated by Suvrata Aryaa only when you have had enough."

(After accepting this advise from Rashtrakoot) Soma Brahmani will take her bath, ... and so on up to... surrounded by a group of maid servants come out of her house. She will arrive, passing through Vibhel village, at the *upashraya* (place of stay for ascetics) of Suvrata Aryaa. After paying homage an obeisance to Suvrata Aryaa she will commence her worship.

Then Suvrata Aryaa will preach to Soma Brahmani austerities, discipline and other different aspects of the religion propagated by *Tirthankars* including—a being is trapped in bondage due his deeds and gets liberated by shattering the shackles of *karmas* through his own endeavour only (etc.). After listening to that discourse, Soma Brahmani will accept the twelve fold *Shravak Dharma* (Jain code for laity). After paying homage and obeisance to Suvrata Aryaa she will return home.

Then that Soma Brahmani will become a *Shramanopasika* (Jain lay woman) endowed with the knowledge of fundamentals like being and non-being. She will spend her life enkindling her soul (by observing various vows including codes of uprightness, restraints that reinforce the practice of minor vows, abandoning and atoning for sinful deeds, living as ascetics for short periods and fasting).

In due course that Suvrata Aryaa will leave Vibhel village and wander around in other populated areas.

सोमा की प्रव्रज्या

५२. तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं.... जाव विहरंति। तए णं सा सोमा माहणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठा ण्हाया तहेव निग्गया, जाव वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता धम्मं सोच्चा (जाव) नवरं "रट्ठकूडं आपुच्छामि, तए णं पव्वयामि।"

"अहासुहं.....।"

तए णं सा सोमा माहणी सुव्वयं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सुव्वयाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव रट्ठकूडे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल. तहेव आपुच्छइ (जाव) पव्वइत्तए।

"अहासुहं, देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं.....।"

तए णं रट्ठकूडे विउलं असणं, तहेव जाव पुव्वभवे सुभद्दा (जाव) अज्जा जाया इरियासमिया (जाव) गुत्तबम्भयारिणी।

५२. इसके बाद वे सुव्रता आर्या किसी समय अनुक्रम से विहार करती हुई, पुनः विभेल ग्राम में आयेंगी। तब वह सोमा ब्राह्मणी आर्याओं के आगमन का समाचार सुनकर हर्षित एवं सन्तुष्ट हो स्नान आदि कर तथा सभी प्रकार के अलंकारों से विभूषित हो पहले की भाँति दासियों सहित दर्शनार्थ जायेगी। वंदन-नमस्कार करेगी। वन्दन-नमस्कार करके धर्म सुनकर सुव्रता आर्या से निवेदन करेगी-"मैं अपने पति राष्ट्रकूट से पूछकर आपके पास मुण्डित होकर प्रव्रज्या ग्रहण करना चाहती हूँ।"

तब सुव्रता आर्या उससे कहेंगी-"देवानुप्रिये ! तुम्हें जिस प्रकार सुख हो वैसा ही करो, किन्तु शुभ कार्य में विलम्ब मत करो।"

इसके बाद सोमा ब्राह्मणी उन सुव्रता आर्याओं को वन्दन-नमस्कार करके जहाँ उसका अपना घर होगा, जहाँ राष्ट्रकूट होगा, वहाँ आयेगी। आकर दोनों हाथ जोड़कर पूछेगी कि "मैं आपकी आज्ञा लेकर प्रव्रज्या अंगीकार करना चाहती हूँ।"

इस बात को सुनकर राष्ट्रकूट कहेगा-"देवानुप्रिये ! जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो किन्तु इस धर्मकार्य में प्रमाद मत करो।"

तत्पश्चात् राष्ट्रकूट बहुत-सा अशन, पान, खादिम, स्वादिम चार प्रकार के भोजन बनवाकर अपने मित्र, जातिबांधव, स्वजन, सम्बन्धियों को आमन्त्रित करेगा। उन्हें भोजन करायेगा। उनका सत्कार-सन्मान करेगा। जिस प्रकार पूर्वभव में सुभद्रा प्रव्रजित हुई थी, उसी प्रकार आर्या होकर ईर्यासमिति आदि समितियों एवं गुप्तियों से युक्त गुप्त ब्रह्मचारिणी होकर विचरेगी।

INITIATION OF SOMA

52. After that at some later period wandering comfortably from one village to another Aryaa Suvrata will once again come to Vibhel village. On getting the news of arrival of *aryikas* (female ascetics) Soma Brahmani will be pleased and contented. Taking her bath, adorning her with a variety of ornaments and accompanied by many maid servants as before, she will go to pay homage to Suvrata Aryaa. After paying homage and obeisance to Suvrata Aryaa and listening to her discourse she will say—

"Seeking permission from my husband Rashtrakoot I wish to get initiated by you after getting my head tonsured."

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Suvrata Aryaa will reply—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed."

Then Soma Brahmani will pay homage and obeisance to Suvrata Arya and return home to her husband Rashtrakoot. Joining her palms she will ask—"Beloved of gods ! Seeking your permission I want to get initiated as an ascetic."

To this Rashtrakoot will reply—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed."

After that Rashtrakoot will arrange for large quantities of staple food, liquids, general food, and savoury food and invite all his friends, kin-folk, family members, relatives and acquaintances. After feeding them he will greet and honour them... and so on. As Subhadra Sarthavahi got initiated in the previous birth, Soma Brahmani will also get initiated and will spend her life as a completely celibate *aryaa* (female ascetic) observing five *samitis* (self regulations) and three *guptis* (restraints).

५३. तए णं सा सोमा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूइं छट्ठमट्ठमदसमदुवालस जाव भावेमाणी बहूहिं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कन्ता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा सक्कस्स देविन्दस्स देवरन्नो सामाणियदेवत्ताए उववज्जिहिइ।

तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं सोमस्स वि देवस्स दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।

५३. तदनन्तर सोमा आर्या सुव्रता आर्या के समीप रहकर सामायिक आदि ग्यारह अंगशास्त्रों का अध्ययन करेगी। अध्ययन करके बहुत से चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश-भक्त आदि अनेकविध तपः साधना से आत्मा को भावित करती हुई बहुत वर्षों तक श्रमण-पर्याय का पालन करेगी। अन्त में मासिक संलेखना से आत्मा को शुद्ध कर, अनशन द्वारा साठ भक्तों को छोड़कर, आलोचना-प्रतिक्रमण करती हुई पूर्ण समाधिभाव के साथ मरण प्राप्त करके देवेन्द्र देवराज शक्र के सामानिक देव के (प्रथम देवलोक में) रूप में उत्पन्न होगी।

वहाँ किसी-किसी देव की दो सागरोपम की स्थिति होती है। उस सोमदेव की भी दो सागरोपम की स्थिति होगी।

53. After that Soma Aryaa will live with Suvrata Aryaa and study eleven *Angas* (the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts) including *Samayik*. After this study she will lead ascetic life for many years enkindling her soul by observing a variety of austerities including fasting for two, three, four, five, six, and more days. In the end she will take the ultimate vow (*sallekhana*) of one month duration and avoiding sixty meals

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

embrace meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the moment of her death. She will reincarnate as a *Samanik* (of equal status) god of Shakra, the king of gods (in the first heaven).

There the life-span of some gods is two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time). The life-span of that Soma Dev will also be two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time).

५४. 'से णं, भंते, सोमे देवे तओ देवलोगाओ आउक्खएणं, जाव चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ?'

गोयमा, महाविदेहे वासे (जाव) अंतं काहिसि।

५४. (यह सब सुनकर) गौतम स्वामी ने पूछा-"भंते ! वह सोमदेव आयुक्षय, भवक्षय और स्थितिक्षय होने के अनन्तर देवलोक से आयुष्यपूर्ण कर कहाँ जायेगा, कहाँ उत्पन्न होगा ?"

भगवान ने कहा-"हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर सिद्ध होगा यावत् सर्व दुःखों का अन्त करेगा।"

54. (On hearing all this) Gautam Swami again asked, "*Bhante* ! Completing the age, state, and life in the dimension of gods and descending from that abode of gods, where will that Soma Dev go ? (Where will he be born ?)"

Bhagavan said, "Gautam ! He will be born as a human being in the Mahavideh area and finally become a *Siddha* (liberated soul) after ending all miseries."

५५. निक्खेवो-तं एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं भगवया पुप्फियाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥

५५. श्री सुधर्मा स्वामी ने उसंहार करते हुए कहा-"आयुष्मन् जम्बू ! इस प्रकार से मुक्ति को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के चतुर्थ अध्ययन का यह भाव निरूपण किया है। ऐसा मैं कहता हूँ।"

॥ चतुर्थ अध्ययन समाप्त ॥

55. Concluding the story, Sudharma Swami told Jambu, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the fourth chapter of *Pushpika*. So I state."

● END OF THE FOURTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचम अध्ययन : पूर्णभद्र देव
FIFTH CHAPTER : PURNABHADRA DEV

५६. उक्खेवओ–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव पुष्फियाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, पंचमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुष्फियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

५६. जम्बू स्वामी ने आर्य सुधर्मा स्वामी से पूछा–"भगवन् ! यदि निर्वाण–प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका नामक उपांग के चतुर्थ अध्ययन का यह अर्थ कहा है तो भगवान ! ने पुष्पिका के पंचम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

56. Jambu Swami asked Sudharma Swami—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the fourth chapter of *Pushpika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, what is the text and meaning of the fifth chapter of *Pushpika* ?"

पूर्णभद्र देव का नाट्य–प्रदर्शन

५७. एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसरिए। परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं पुण्णभद्दे देवे सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे सभाए सुहम्माए पुण्णभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, जहा सूरियाभो (जाव) बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए। कूडागारसाला। पुव्वभवपुच्छा।

'एवं खलु गोयमा' तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मणिवइया नामं नयरी होत्था रिद्ध.। चंदो राया। ताराइण्णे चेइए। तत्थ णं मणिवइयाए नयरीए पुण्णभद्दे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे।

तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना (जाव) जीवियासमरणभयविप्पमुक्का बहुस्सुया बहुपरिवारा पुव्वाणुपुव्विं (जाव) समोसढा। परिसा निग्गया।

५७. आर्य सुधर्मा स्वामी ने कहा–"आयुष्मन् जम्बू ! पंचम अध्ययन का भाव इस प्रकार है–उस काल और उस समय राजगृह नामक नगर था। गुणशिलक चैत्य था। वहाँ श्रेणिक राजा राज्य करता था। भगवान महावीर स्वामी पधारे। जन–समूह दर्शन करने एवं धर्म सुनने के लिए निकला।

उस काल और उस समय सौधर्मकल्प देवलोक में पूर्णभद्र विमान की सुधर्मा सभा में पूर्णभद्र नामक सिंहासन पर स्थित पूर्णभद्र देव सूर्याभदेव के समान चार हजार सामानिक देवों आदि के साथ विचर रहा था। उसने अवधिज्ञान से भगवान को राजगृह के गुणशिलक चैत्य में विराजमान देखा। भगवान की सेवा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में उपस्थित हुआ, और सूर्याभदेव की भाँति बत्तीस प्रकार की नृत्यविधियों का प्रदर्शन कर भगवान को वन्दना कर वापस स्वर्ग को लौट गया।

तब गौतम स्वामी ने भगवान से उस देव की दिव्य देव-ऋद्धि आदि के अन्तर्धान होने के विषय में पूछा। भगवान ने कूटाकारशाला के दृष्टान्त द्वारा समाधान किया। तत्पश्चात् उसके पूर्वभव के विषय में पूछने पर भगवान ने बताया-

"गौतम ! उस काल उस समय में इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में धन वैभव इत्यादि से समृद्ध-मणिपदिका नाम की नगरी थी। उस नगरी के राजा का नाम चन्द्र था और ताराकीर्ण नाम का एक सुन्दर उद्यान था। उस मणिपदिका नगरी में पूर्णभद्र नाम का एक सद्गृहस्थ रहता था, जो धन-धान्य इत्यादि से सम्पन्न था।

उसी समय बहुश्रुत स्थविर भगवंत, जो जाति एवं कुल से सम्पन्न, जीवन की आकांक्षा और मरण के भय से मुक्त बहुश्रुत स्थविर थे। अपने विशाल शिष्य परिवार के साथ विहार करते हुए मणिपदिका नगरी में पधारे। जनसमूह उनकी धर्मदेशना सुनने के लिए उपस्थित हुआ।

DANCE PERFORMANCE BY PURNABHADRA GOD

57. Arya Sudharma said—"Long lived Jambu ! It is as follows—

During that period of time there was a city called Rajagriha. There was a *chaitya* (temple complex) called Gunasheelak. The ruler of the city was King Shrenik. Shraman Bhagavan Mahavir arrived. People came out to pay homage and attend discourse.

During that period of time, like Suryabh Dev, Purnabhadra god was sitting on a throne named *Purnabhadra* in the *Sudharma* assembly in *Purnabhadra Viman* (celestial vehicle) in *Saudharma Kalp Devlok* (divine dimension) with four thousand vehicle based gods... and so on up to... Then with the help of his *Avadhi Jnana* (extrasensory knowledge of the physical dimension, something akin to clairvoyance) he saw Shraman *Bhagavan* Mahavir stationed at Gunasheelak Chaitya. He came to Bhagavan, gave thirty two types of stage performances as Suryabh god had done and returned after paying homage to *Bhagavan*.

Then Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir about disappearance of the divine opulence and powers of that god. *Bhagavan* answered the question by giving the example of *Kutagar Shala*. After that to the question about his past birth *Bhagavan* replied—

"Gautam ! During that period of time in this Jambudveep continent in Bharat area there was a grand and prosperous city named Manipadika. The ruler of the city was King Chandra. In the city there was a beautiful garden named Tarakeern. In Manipadika city lived a noble householder (*gathapati*) named Purnabhadra who was very rich.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

During that period of time some learned *Sthavir Bhagavants* (senior ascetics), who belonged to high castes and families and were free of any ambition for life as well as fear of death, came to Manipadika city with a large family of disciples. Masses gathered to attend their religious discourse.

५८. तए णं से पुण्णभद्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे हट्ठ. (जाव) जहा पण्णत्तीए गंगदत्ते, तहेव निग्गच्छइ, (जाव) निक्खंतो (जाव) गुत्तबम्भयारी।

तए णं से पुण्णभद्दे अणगारे भगवंताणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाई अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम (जाव) भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि (जाव) भासामणपज्जीत्तए।

एवं खलु, गोयमा ! पुण्णभद्देणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी (जाव) अभिसमन्नागया।

'पुण्णभद्दस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ?'

'गोयमा, दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।'

'पुण्णभद्दे णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ (जाव) कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ?'

'गोयमा ! महाविदेह वासे सिज्झिहिइ (जाव) अंतं काहिइ।'

५८. तब वह पूर्णभद्र गाथापति स्थविर भगवंतों के आगमन का समाचार सुनकर, हृदय में हृष्ट-तुष्ट हुआ। यह सब वर्णन गंगदत्त (भगवतीसूत्र १६/५) के समान जानना चाहिए। पूर्णभद्र श्रमणों के दर्शन के लिए गया। उनके समीप प्रव्रजित हुआ, ईर्यासमिति आदि से युक्त गुप्त ब्रह्मचारी अनगार बन गया।

तत्पश्चात् पूर्णभद्र अनगार उन स्थविर भगवन्तों के समीप सामायिक (आचारांग) से प्रारम्भ कर ग्यारह अंगों का अध्ययन करता है। बहुत प्रकार से चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम भक्त आदि तपःसाधना के द्वारा आत्मा को परिशोधित करके बहुत वर्षों तक श्रमण पर्याय का पालन किया। अन्त में मासिक संलेखनापूर्वक साठ भक्त अनशन पूर्ण कर आलोचना-प्रतिक्रमण करके समाधिपूर्वक शरीर त्याग कर सौधर्मकल्प के पूर्णभद्र विमान की उपपात सभा में, देव-शय्या पर देव रूप से उत्पन्न हुआ। वहाँ भाषा-मनःपर्याप्ति से पर्याप्त भाव को प्राप्त किया।

इस प्रकार हे गौतम ! पूर्णभद्र देव ने वह दिव्य देव-ऋद्धि प्राप्त की है।

"भंते ! पूर्णभद्र देव की वहाँ पर कितने काल की स्थिति बताई है ?"

भगवान्-"गौतम ! उसकी दो सागरोपम की स्थिति है।"

गौतम-"भगवन् ! वह पूर्णभद्र देव उस देवलोक से आयुष्य पूर्ण करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?"

भगवान ने कहा-"गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर सिद्ध होगा। यावत् सर्व दुःखों का अन्त करेगा।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

58. When Purnabhadra Gathapati got the news of the arrival of senior ascetics, he was pleased and contented. All this description is same as that about Gangadatt (*Bhagavati Sutra* 16/5). Purnabhadra went to pay homage to the senior ascetics, got initiated and spent his life as a completely celibate ascetic observing five *samitis* (etc.).

After that Purnabhadra ascetic lived with those senior ascetics and studied eleven *Angas* (the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts) including *Samayik*. After this he led ascetic life for many years enkindling his soul by observing a variety of austerities including fasting for two, three, four, five, six, and more days. In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of one month duration and avoiding sixty meals embraced meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the time of his death. He reincarnated instantaneously (*upapat*) as a god in the divine bed covered with divine cloth in the *Upapat*-hall of *Purnabhadra Viman* (celestial vehicle) in *Saudharma Kalp Devlok* (divine dimension). There he attained the state of full development (*paryapti*) through *bhasha-man* (speech and mind) *paryapti*.

Thus, Gautam ! Purnabhadra god acquired that divine opulence.

"*Bhante* ! What is said to be the life-span of Purnabhadra god there ?

Bhagavan—"Gautam ! His life-span is two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time).

Gautam—"*Bhante* ! Completing the age, state, and life in the dimension of gods where will that Purnabhadra god go ? (Where will he be born ?)"

Bhagavan said, "Gautam ! He will be born as a human being in the Mahavideh area and finally become a *Siddha* (liberated soul) to end all miseries."

५९. निक्खेवओ–तं एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ पंचम अज्झयणं समत्तं ॥

५९. इस प्रकार हे आयुष्मन् जम्बू ! मुक्ति को प्राप्त श्रमण भगवान ने पुष्पिका उपांग के पाँचवें अध्ययन का यह भाव कहा है, ऐसा मैं कहता हूँ।''

॥ पंचम अध्ययन समाप्त ॥

59. Thus, long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the fifth chapter of *Pushpika*. So I state."

● END OF THE FIFTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

षष्ठ अध्ययन : मणिभद्र देव
SIXTH CHAPTER : MANIBHADRA DEV

६०. उक्खेवओ–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव पुप्फियाणं पंचमस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

'एवं खलु जंबू !'

६०. जम्बू अनगार आर्य सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं–"भगवन् ! यदि निर्वाण को प्राप्त श्रमण भगवान ने पुष्पिका के पंचम अध्ययन का यह भाव कहा है तो पुष्पिका के (छठे) अध्ययन का क्या भाव कथन किया है ?"

आर्य सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–"आयुष्मन् जम्बू ! वह इस प्रकार है।"

60. Jambu Swami asked Sudharma Swami—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the fifth chapter of *Pushpika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, what is the text and meaning of the sixth chapter of *Pushpika* ?"

Arya Sudharma said—"Long lived Jambu ! It is as follows—

६१. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसरिए।

तेणं कालेणं तेणं समएणं मणिभद्दे देवे सभाए सुहम्माए माणिभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहा पुण्णभद्दो तहेव आगमणं, नट्टविही, पुव्वभवपुच्छा।

मणिवई नयरी, माणिभद्दे गाहावई, थेराणं अंतिए पव्वज्जा, एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं वासाइं परियाओ, मासिया संलेहणा, सट्ठि भत्ताइं। माणिभद्दे विमाणे उववाओ, दो सागरोवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ?

६१. हे जम्बू ! उस काल उस समय राजगृह नगर था। वहाँ गुणशिलक चैत्य था। वहाँ श्रेणिक राजा राज्य करता था। एक बार राजगृह में महावीर स्वामी का पदार्पण हुआ।

उस समय मणिभद्र देव सुधर्मा सभा के मणिभद्र सिंहासन पर चार हजार सामानिक देव आदि परिवार के साथ बैठा था। पूर्णभद्र देव की भाँति वह भी भगवान के समवसरण में आया और नृत्य-विधियों का प्रदर्शन कर वापस लौट गया।

तत्पश्चात् गौतम स्वामी ने उसको दिव्य देव-ऋद्धि आदि प्राप्त होने एवं पूर्वभव के विषय में जिज्ञासा की।

भगवान ने उत्तर दिया–"उस काल उस समय मणिपदिका नाम की नगरी में मणिभद्र नाम का गाथापति निवास करता था। उसने स्थविरों के समीप प्रव्रज्या अंगीकार की। ग्यारह अंगों का अध्ययन किया। बहुत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्षों तक श्रमण-पर्याय का पालन किया और मासिक संलेखना की। अनशन द्वारा साठ भक्त छेदन कर पापस्थानों की आलोचना प्रतिक्रमण करके समाधिपूर्वक मरण प्राप्त करके मणिभद्र विमान में उत्पन्न हुआ। वहाँ उसकी दो सागरोपम की स्थिति है। अन्त में देवलोक से च्यवन करके महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर सिद्ध होगा।''

61. O Jambu ! During that period of time there was a city called Rajagriha. There was a *chaitya* (temple complex) called Gunasheelak. The ruler of the city was King Shrenik. Shraman Bhagavan Mahavir arrived.

During that period of time Manibhadra god was sitting on a throne named *Manibhadra* in the *Sudharma* assembly with four thousand vehicle based gods. Like Purnabhadra god he also came to *Bhagavan*, gave thirty two types of stage performances and returned after paying homage to *Bhagavan*.

Then Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir about disappearance of the divine opulence and powers of that god as also his earlier birth.

Bhagavan replied—

"Gautam ! During that period of time in Manipadika city lived a noble householder (*gathapati*) named Manibhadra. He got initiated by senior ascetics. He studied eleven *Angas*. He led ascetic life for many years and took the ultimate vow (*sallekhana*) of one month duration. Avoiding sixty meals he embraced meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the moment of his death. He reincarnated in *Manibhadra Viman* (celestial vehicle). His life-span is two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time). In the end, descending from the divine dimension, he will be born in the Mahavideh area to become a *Siddha* (liberated soul)."

६२. तं एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ षष्ठ अज्झयणं समत्तं ॥

६२. सुधर्मा स्वामी–''आयुष्मन् जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के छठे अध्ययन का यह भाव कहा है। ऐसा मैं कहता हूँ।''

॥ छठा अध्ययन समाप्त ॥

62. Sudharma Swami—"Long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has narrated this text and meaning of the sixth chapter of Pushpika. So I state."

● END OF THE SIXTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७ से १० अध्ययन : मणिभद्र देव
SEVENTH TO TENTH CHAPTER : MANIBHADRA DEV

६३. एवं दत्ते ७, सिवे ८, बले ९, अणाढिए १०, सव्वे जहा पुण्णभद्दे देवे। सव्वेसिं दो सागरोवमाइं ठिई। विमाणा देवसरिसनामा।

पुव्वभवे दत्ते चंदणाए, सिवे मिहिलाए, बले हत्थिणापुरे नयरे, अणाढिए काकंदिए। चेइयाइं जहा संगहणीए।

॥ तइओ वग्गो समत्तो ॥

६३. इसी प्रकार (७) दत्त, (८) शिव, (९) बल, और (१०) अनादृत, इन सभी देवों का वर्णन पूर्णभद्र देव के समान कहना चाहिए। सौधर्मकल्प विमान में सभी दो-दो सागरोपम की स्थिति है। इन देवों के नाम के अनुसार ही इनके विमानों के नाम हैं।

(इनमें विशेष इतना समझना चाहिए) पूर्वभव में दत्त **चन्दना नगरी में**, शिव **मिथिला नगरी में**, बल **हस्तिनापुर नगर में**, अनादृत **काकन्दी नगरी में** जन्मे थे।

संग्रहणी गाथा में कहे अनुसार उन नगरियों के चैत्यों के नाम समझ लेना चाहिए। (संग्रहणी गाथा अनुपलब्ध है)

इस प्रकार पुष्पिका उपांग का सातवाँ, आठवाँ, नौवाँ और दसवाँ अध्ययन समाप्त हुआ।

॥ सप्तम से दशम अध्ययन समाप्त ॥

॥ पुष्पिका नामक तृतीय वर्ग समाप्त ॥

63. In the same way the stories of all the remaining gods, namely Datt (7), Shiva (8), Bala (9) and Anadrit (10) are to be read generally the same as that of Purnabhadra god. The life-span of each of these in *Saudharma Kalp* is two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time). The names of their *vimans* are same as their own names.

The only exception is that in earlier birth Datt was born in Chandana city, Shiva in Mithila city, Bala in Hastinapur city, and Anadrit in Kakandi city.

The names of the *chaityas* (temple complexes) of these cities should be taken from the *Sangrahani Gatha* (collective verse which is not available in the text).

● END OF THE SEVENTH TO TENTH CHAPTER ●

● END OF THE THIRD SECTION TITLED PUSHIPIKA ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थ वर्ग : पुष्पचूलिका

उपोद्घात

पुष्पचूलिका नामक इस चतुर्थ वर्ग के दस अध्ययन हैं। इन अध्ययनों की पात्र श्रीदेवी आदि दस देवियाँ हैं। इन्होंने पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु के शासन में पुष्पचूलिका आर्यिका के पास दीक्षा ली। दीक्षा लेने के पश्चात् शारीरिक शोभा-विभूषा, साज-सज्जा में आसक्त होकर अपनी आत्मिक शोभा की उपेक्षा करने लगी। गुरुणी के समझाने पर भी साधु आचार के विपरीत आचरण को त्याग नहीं सकीं और न ही अन्तिम समय में संलेखना-संथारा करने के समय भी इन आचरित पापस्थानों की आलोयणा-प्रतिक्रमण करके दोष-शुद्धि की। इस कारण वे विराधक बनीं। फिर बहुपुत्रिका देवी की तरह भगवान महावीर के समवसरण में आकर अपनी ऋद्धि का प्रदर्शन किया और तब गौतम स्वामी की जिज्ञासा पर भगवान महावीर उनके पूर्वभवों का वर्णन सुनाते हैं।

इन दसों अध्ययनों से जो सन्देश मिलता है, वह मुख्य रूप में यह है कि सांसारिक सुख-भोग का त्यागकर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाले संयमियों को शरीर के प्रति इतना ममत्व-आसक्ति नहीं रखना चाहिए कि रात-दिन उसी की साज-सज्जा में लगकर अपने ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय आदि को भी उपेक्षित करते रहें। शरीर-आसक्ति व शरीर की शोभा-विभूषा की भावना को यहाँ **बकुशिका** अर्थात् संयम को दूषित करने वाली प्रवृत्ति माना है।

दूसरा सन्देश यह है कि संयम में प्रमाद-मोह व वश लगे दोषों की शुद्धि अवश्य ही कर लेना चाहिए। दोष-शुद्धि नहीं करने पर वह अपने चारित्र का, संयम का विराधक होता है और विराधक अवस्था में मृत्यु प्राप्त करने वाला परलोक में वांछित उच्च देवगति में नहीं जा सकता। इन वर्णनों से यह भी सूचित होता है कि करुणानिधान भगवान पार्श्वनाथ ने नारी-जाति के प्रति कितनी उदारता व विशाल दृष्टि जताई कि वृद्ध कुमारिकाएँ जो समाज में उपेक्षिता का-सा जीवन जीती थीं, उन्होंने संयम-पथ पर अग्रसर कर सम्पूर्ण समाज में आदर-सन्मान का स्थान प्रदान किया।

सभी अध्ययनों की कथावस्तु लगभग एक ही समान है।

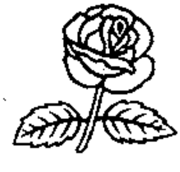

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

FOURTH SECTION : PUSHPACHULIKA

INTRODUCTION

There are ten chapters in this fourth section titled *Pushpachulika*. The central characters of these chapters are ten goddesses. They got initiated by Pushpachulika Aryaa during the period of influence of Purushadaniya Bhagavan Parshva Naath. After getting initiated they neglected their spiritual grandeur by getting over indulgent in physical grandeur like apparels and other adornments of the body. In spite of the advise of their teacher they did not refrain from their anti-ascetic conduct. They also did not atone for these sinful acts committed by them by doing critical review (*pratikraman*). That was the reason they became transgressors of the ascetic conduct. Later, like Bahuputrika Devi, they came to *Bhagavan* in the *Samavasaran* (the divine assembly of a *Tirthankar*) and displayed their divine opulence. After this Bhagavan Mahavir told the stories of their past births to satisfy Gautam Swami's curiosity.

The central theme of these ten chapters is that ascetics who take the vow of celibacy after renouncing mundane pleasures and comforts should not have so much fondness and involvement with the body that they spend all their time in its embellishment and neglect their primary duty of meditation, studies and pursuit of knowledge. The feeling of attachment for body and involvement in its embellishment is termed as *'bakushika'* here. The meaning of this term is—the attitude that spoils ascetic-discipline.

Another message is that one should essentially atone for the faults and transgressions in observing ascetic-discipline committed due to stupor or mundane attachments. One who does not atone for his faults becomes transgressor of the ascetic discipline and conduct. As a consequence he does not get reincarnated in the expected higher divine realm after death. These stories also inform us about how liberal and open-minded was Bhagavan Parshva Nath, the epitome of compassion. By inspiring spinsters of advanced age, leading a neglectful and wretched life, to take to the spiritual path he provided them a place of honour and respect in the society.

All these chapters have almost the same story line.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम अध्ययन : श्री देवी
FIRST CHAPTER : SHRI DEVI

१. उक्खेवओ–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं तच्चस्स पुप्फियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं पुप्फचूलियाणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

१. जम्बू स्वामी सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं–"भंते ! यदि मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका नामक तृतीय उपांग का पूर्व कथित अर्थ बताया है तो पुष्पचूलिका नामक चतुर्थ उपांग का क्या अर्थ कहा है ?"

1. Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When aforesaid is the text and meaning of the third section of the *Upanga* named *Pushpika* as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, what is the text and meaning of the fourth section of the *Upanga* named *Pushpachulika* ?"

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं चउत्थस्स णं पुप्फचूलियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा–

सिरि–हिरि–धिइ–कित्तीओ, बुद्धी–लच्छी य होइ बोद्धव्वा।

इलादेवी सुरादेवी रसदेवी गंधदेवी य ?

२. आयुष्मन् जम्बू ! मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने चौथे उपांग पुष्पचूलिका के दस अध्ययनों का निरूपण किया है, जो इस प्रकार है–

(१) श्रीदेवी, (२) ह्रीदेवी, (३) धृतिदेवी, (४) कीर्तिदेवी, (५) बुद्धिदेवी, (६) लक्ष्मीदेवी, (७) इलादेवी, (८) सुरादेवी, (९) रसदेवी, और (१०) गन्ध देवी।

2. "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has preached ten chapters of *Pushpachulika*, the fourth *Upanga*. They are—(1) Shridevi, (2) Hridevi, (3) Dhritidevi, (4) Kirtidevi, (5) Buddhidevi, (6) Lakshmidevi, (7) Iladevi, (8) Suradevi, (9) Rasadevi, and (10) Gandhadevi.

३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

३. "भंते ! यदि श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पचूलिका नामक चौथे उपांग के दस अध्ययनों का निरूपण किया है तो प्रथम अध्ययन का क्या भाव कहा है ?"

3. Jambu—"*Bhante* ! If there are ten chapters in *Pushpachulika*, the fourth *Upanga*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of its first chapter ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. तए णं से सुहम्मे जंबू अणगारं एवं वयासी–

४. तब आर्य सुधर्मा स्वामी ने जम्बू अनगार से इस प्रकार कहा–

4. Sudharma Swami replied to Jambu Anagar as follows :

५. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया। सामी समोसढे, परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सिरिदेवी सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सिरिंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं, जहा बहुपुत्तिया, (जाव) नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगया। नवरं दारियाओ नत्थि। पुव्वभवपुच्छा।

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, जियसत्तू राया। तत्थ णं रायगिहे नयरे सुदंसणो नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे। तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स पिया नामं भारिया होत्था सोमाला। तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स धूया पियाए गाहावयणीए अत्तया भूया नामं दरिया होत्था, बुड्ढा बुड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी वरगपरिवज्जिया यावि होत्था।

५. हे जम्बू ! उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। वहाँ गुणशिलक चैत्य था। राजगृह में श्रेणिक राजा राज्य करता था। एकदा श्रमण भगवान महावीर स्वामी पधारे। धर्मदेशना सुनने के लिए जनसमूह आया।

उस काल उस समय श्रीदेवी सौधर्मकल्प में श्री अवतंसक नामक विमान की सुधर्मा सभा में चार हजार सामानिक देवियों एवं चार महत्तरिकाओं के साथ श्री सिंहासन पर बैठी हुई थी। बहुपुत्रिका देवी के समान उसने भगवान को राजगृह में विराजमान देखा। वहाँ आई और नृत्य-विधि दिखाकर वापस लौट गई। विशेष यह जानना चाहिए कि श्रीदेवी ने अपनी नृत्यविधि में (बहुपुत्रिका की तरह) बालिकाओं की विकुर्वणा नहीं की।

श्रीदेवी के वापस जाने पर गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव के विषय में जिज्ञासा की। भगवान ने उत्तर में कहा–"हे गौतम ! उस काल उस समय में राजगृह नगर था। गुणशिलक चैत्य था, वहाँ जितशत्रु नाम का राजा था। उस राजगृह में सुदर्शन नाम का धन-सम्पन्न गाथापति निवास करता था। उस सुदर्शन गाथापति की प्रिया नाम की भार्या थी। जो सुन्दर व सुकोमल अंगोपांग वाली थी। उस सुदर्शन गाथापति की पुत्री, प्रिया गाथापत्नी की आत्मजा 'भूता' नाम की कन्या थी। जो कुमारी अवस्था (अविवाहित दशा) में ही बूढ़ी हो जाने से वृद्ध शरीर वाली और जीर्ण शरीर वाली जीर्णकुमारी प्रतीत होती थी। उसके नितम्ब व स्तन (आदि अंगोपांग) शिथिल हो चुके थे, किन्तु वह किसी पुरुष से अछूती वर-विहीन होने के कारण पवित्र आचार वाली थी।

5. Jambu ! During that period of time there was a city called Rajagriha where there was a *chaitya* (temple complex) called Gunasheelak. The ruler of the city was King Shrenik. Once *Swami* (Shraman Bhagavan Mahavir) arrived. People came to attend his religious discourse.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

During that period of time Shri Devi was sitting on a throne named *Shri* in the *Sudharma Sabha* (divine assembly) of the *Shri Avatansak Vimaan* (celestial vehicle) in *Saudharm Kalp* (divine dimension) along with four thousand vehicle based goddesses and four thousand *Mahattarika* goddesses (teacher goddesses who taught ethics and morality). Like Bahuputrika Devi, she saw Shraman Bhagavan Mahavir stationed in Rajagriha. She came there, presented stage performance and returned. The only difference was that she did not create children during her dance performance (like Bahuputrika had done).

When Shri Devi left, Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir about her past birth. *Bhagavan* replied—"Gautam ! During that period of time there was a city named Rajagriha. There was a *chaitya* (temple complex) named Gunasheelak. The ruler was King Jitshatru. In Rajagriha lived a *gathapati* (householder) named Sudarshan who was very rich. The name of Sudarshan Gathapati's wife was Priya. She had very delicate limbs and was very beautiful. Sudarshan Gathapati and Priya Gathapatni had a daughter named Bhoota. As she grew old without getting married she appeared to be an old spinster with a frail and decrepit body. Her buttocks and breasts (and other parts of the body) had become loose and infirm but being unmarried and untouched by man she was still chaste.

भूता का दर्शनार्थ गमन

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए (जाव) नव रयणीए। वण्णओ सोच्चेव। समोसरणं परिसा निग्गया।

तए णं सा भूया दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी–''एवं खलु, अम्मताओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे (जाव) गणपरिवुडे विहरइ। तं इच्छामि णं अम्मताओ, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए।''

'अहासुहं–देवाणुप्पिए, मा पडिबंधं''''।'

तए णं सा भूया दारिया ण्हाया (जाव) सरीरा चेडीचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा।

तए णं सा भूया दारिया निययपरिवारपरिवुडा रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थयरातिसए पासइ, पासित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता चेडीचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो (जाव) पज्जुवासइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए भूयाए दारियाए य महइ.''''। धम्मकहा। धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ. वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, जाव अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, से जहेयं तुब्भे वयह, जं नवरं, भंते ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं (जाव) पव्वइत्तइ।'

'अहासुहं देवाणुप्पिए !'

६. उस काल उस समय में नौ हाथ की अवगाहना वाले पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु पधारे। जनता दर्शन करने के लिए निकली।

भूता दारिका इस संवाद को सुनकर हर्षित और प्रसन्न हुई; अपने माता-पिता के पास आई। आकर उनकी आज्ञा माँगी-"हे मात-तात ! पुरुषादानीय पार्श्व अर्हत् विचरण करते हुए शिष्य-समूह के साथ यहाँ विराजमान हैं। हे मात-तात ! आपकी आज्ञा-अनुमति लेकर मैं पुरुषादानीय पार्श्व अर्हत् की चरण-वंदना के लिए जाना चाहती हूँ।"

माता-पिता ने कहा-"देवानुप्रिये ! जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो, किन्तु विलम्ब मत करो।"

माता-पिता की अनुमति प्राप्त कर भूता दारिका ने स्नान किया, शरीर को वस्त्र, आभूषणों से अलंकृत करके अनेक दासियों व सहेलियों के साथ अपने घर से निकली। निकलकर जहाँ बाहरी सभाभवन-बैठक थी, वहाँ आई और आकर अपने धार्मिक यान-रथ पर आसीन हुई।

भूता दारिका अपने स्वजन-परिवार को साथ लेकर राजगृह नगर के मध्य भाग में से होती हुई गुणशिलक चैत्य के समीप आई, वहाँ तीर्थंकरों के छत्रादि अतिशय देखकर धार्मिक रथ से नीचे उतरी। दासी-समूह के साथ जहाँ पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु विराजमान थे, वहाँ पर आई। आकर उसने तीन बार प्रदक्षिणापूर्वक वन्दना की और उनकी पर्युपासना करने लगी।

तदनन्तर पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु ने उस भूता कन्या (कुमारी) और अति विशाल परिषद् के समक्ष धर्मदेशना दी। धर्मदेशना सुनकर उसे हृदयंगम करके वह प्रसन्न हुई। फिर भूता दारिका ने प्रभु को वंदन-नमस्कार करके इस प्रकार अपने मनोभाव प्रकट किये-"भगवन् ! मैं आप द्वारा प्ररूपित निर्ग्रन्थ-प्रवचन पर श्रद्धा करती हूँ। मैं निर्ग्रन्थ-प्रवचन को ग्रहण करने के लिए तत्पर हूँ। यह निर्ग्रन्थ-प्रवचन वैसा ही है, जैसा आपने विवेचन किया है, (अर्थात् परम सत्य और यथार्थ है) किन्तु भंते ! पहले मैं अपने माता-पिता से आज्ञा प्राप्त कर लूँ, तदनन्तर प्रव्रज्या अंगीकार करना चाहती हूँ।"

अर्हत् पार्श्व प्रभु ने कहा-"देवानुप्रिये ! तुम्हें जैसा सुख हो वैसा करो।"

BHOOTA GOES TO PAY HOMAGE

6. During that period of time nine cubits tall Purushadaniya Arhat Parshva arrived (in the city). People came out to pay homage to him.

Getting this news Bhoota Darika (Miss Bhoota) was pleased and delighted. She went to her parents and sought permission—"O mother and father ! During his wanderings Purushadaniya Arhat Parshva arrived here. He now stays here with his family of disciples. O parents ! After

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

getting your permission I want to go to worship Purushadaniya Arhat Parshva's feet."

The parents said—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed."

After getting permission from her parents Bhoota Darika took her bath, dressed and adorned herself with ornaments. She came out of her house with many friends and maids, came to the outer hall and boarded her chariot assigned for religious activities.

Accompanied by her friends and relatives, Bhoota Darika passed through Champa city and arrived near Gunasheelak Chaitya. She alighted from the chariot when she saw the divine canopy and other divine signs of a *Tirthankar*. Surrounded by her maids, she approached the spot where Purushadaniya Arhat Parshva was seated. She went around *Bhagavan* three times, paid homage and obeisance and commenced worship with reverence.

Purushadaniya Arhat Parshva gave his discourse to the large gathering including Bhoota Darika. On listening to and understanding the sermon she was pleased. Later Bhoota Darika paid homage and obeisance to *Bhagavan* and conveyed her feelings—"*Bhagavan* ! I have faith in the *Nirgranth*-sermon propagated by you. I am prepared to accept this sermon. It is exactly as you have stated (it is the ultimate truth and reality). *Bhante* ! I would like to get initiated, but first let me seek permission from my parents.

Arhat Parshva said—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed."

भूता का प्रव्रज्या-ग्रहण

७. तए णं भूया दारिया तमेव धम्मियं जाणप्पवरं (जाव) दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागया। रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागया। रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो, तेणेव उवागया। करयल., जहा जमाली, आपुच्छइ।

'अहासुहं देवाणुप्पिए !'

तए णं से सुदंसणे गाहावई विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, मित्तनाइ. आमंतेइ आमंतित्ता जाव जिमियभुत्तुत्तरकाले सुईभूए निक्खमणमाणेत्ता कोडुम्बि पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! भूयादारियाए पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता जाव पच्चप्पिणह।'

तए णं ते (जाव) पच्चप्पिणंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से सुदंसणे गाहावई भूयं दारियं ण्हायं विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मित्तनाइ. (जाव) रवेणं रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं, जेणेव गुणसिलए चेइए, तेणेव उवागए, छत्ताईए तित्थयराइसए पासइ, पासित्ता सीयं ठावेइ, ठवित्ता भूयं दारियं सीयाओ पच्चारुहेइ।

तए णं तं भूयं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए, तेणेव उवागए तिक्खुत्तो वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"एवं खलु देवाणुप्पिया ! भूया दारिया अम्हं एगा धूया, इट्ठा। एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा भीया (जाव) देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा (जाव) पव्वयइ। तं एयं णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं दलयामो। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं।"

"अहासुहं, देवाणुप्पिया !"

तए णं सा भूया दारिया पासेणं अरहया एवं वुत्ता समाणी हट्ठा, उत्तरपुरत्थिमं, सयमेय आभरणमल्लालंकारं उम्मुयइ, जहा देवाणंदा, पुप्फचूलाणं अंतिए (जाव) गुत्तबम्भयारिणी।

७. (भगवान को वन्दना करके) वह भूता कन्या उसी धार्मिक यान पर आरूढ़ होकर राजगृह नगर के मध्य भाग में होती हुई जहाँ अपना आवास था, वहाँ आई। रथ से नीचे उतरकर माता-पिता के समीप आई। आकर दोनों हाथ जोड़कर अंजलिबद्ध होकर जमालि की तरह (भगवतीसूत्र, श. ९, उ. ३३) माता-पिता से दीक्षा की आज्ञा माँगी। माता-पिता ने अनुमति देते हुए कहा-"देवानुप्रिये ! जैसे सुख हो, तदनुसार करो।"

इसके पश्चात् सुदर्शन गाथापति विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम पदार्थ बनवाकर मित्रों, ज्ञातिजनों आदि को आमंत्रित करता है। उन्हें भोजन कराने के पश्चात् शुद्ध-स्वच्छ होकर भूता का अभिनिष्क्रमण (दीक्षा महोत्सव) कराने के लिए कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और उन्हें आज्ञा दी-"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही दीक्षार्थिनी भूता कन्या के लिए सहस्र पुरुषों द्वारा वहन की जाने वाली शिविका (विशाल पालकी) लाओ, कार्य होने पर मुझे पुनः सूचित करो।"

कौटुम्बिक पुरुष आदेशानुसार कार्य करके सूचित करते हैं।

तत्पश्चात् सुदर्शन गाथापति ने स्नान कर अनेक आभूषणों से विभूषित हुई भूता दारिका को पुरुषसहस्रवाहिनी शिविका पर बिठलाया और अनेक मित्रों, जाति-बांधवों आदि के साथ वाद्य ध्वनियों से वायुमण्डल को गुँजाते हुए राजगृह नगर के मध्य भाग में से होकर जहाँ गुणशिलक चैत्य था, वहाँ आया और तीर्थंकरों के छत्रादि अतिशयों को देखा। देखकर पालकी रोकी और उससे भूता दारिका को नीचे उतारा।

इसके पश्चात् माता-पिता उस भूता दारिका को आगे करके पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु के समक्ष आये। तीन बार प्रदक्षिणापूर्वक वन्दन-नमस्कार किया तथा निवेदन किया-"देवानुप्रिय ! यह भूता दारिका हमारी एकलौती पुत्री है। यह हमें बहुत प्रिय है। देवानुप्रिय ! यह संसार के भय से उद्विग्न तथा भयभीत होकर आप देवानुप्रिय के समीप गृह त्यागकर प्रव्रजित होना चाहती है। शिष्या-भिक्षा के रूप में देवानुप्रिय ! हम आपको समर्पित करते हैं। आप इस शिष्या-भिक्षा को स्वीकार कीजिए।

अर्हत् पार्श्व प्रभु ने कहा-"देवानुप्रिय ! जैसे तुम्हारी आत्मा को सुख उपजे वैसा करो।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तब भूता दारिका पार्श्व अर्हत् की स्वीकृति सुनकर हर्षित हुई। फिर ईशानकोण में जाकर स्वयं अपने आभरण–अलंकार उतारे। यह समग्र वृत्तान्त देवानन्दा (भगवतीसूत्र ९/३३) के अनुसार यहाँ समझ लेना चाहिए। अर्हत् प्रभु पार्श्व ने प्रव्रजित करके पुष्पचूलिका आर्या को शिष्या रूप में सौंप दिया। उसने पुष्पचूलिका आर्या से शिक्षा प्राप्त की यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी हो गई।

INITIATION OF BHOOTA

7. (After paying homage to *Bhagavan*) Bhoota Darika rode the same religious-chariot and passing through Rajagriha city returned home. She got down from the chariot and went to her parents. Like Jamali (*Bhagavati Sutra* 9/33), she joined her palms and sought permission for initiation from her parents. Giving permission her parents said—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed."

After that Sudarshan Gathapati arranged for (by instructing his servants) large quantities of staple food, liquids, general food, and savoury food and invited all his friends, kin-folk, family members, relatives and acquaintances. After feeding them he greeted and honoured them. After Bhoota performed her ritual cleansing, Sudarshan called his servants for the renunciation ceremony and instructed—"Beloved of gods ! Bring at once a large palanquin carried by one thousand men and inform me as soon as you do that."

The servants did as asked and informed.

Sudarshan Gathapati then let Bhoota Darika, who had already taken her bath and adorned herself with ornaments, ride the palanquin carried by one thousand persons. Amidst the sound of musical instruments like trumpet and surrounded by friends, kin-folk, family members, relatives and acquaintances he arrived, passing through Rajagriha city, at Gunasheelak Chaitya. When he saw the divine canopy and other divine signs of a *Tirthankar*, he stopped the palanquin and let Bhoota alight from it.

Then the parents escorted Bhoota Darika to the place where Purushadaniya Arhat Parshva was seated. After going around *Bhagavan* three times and paying homage and obeisance they submitted—"Beloved of gods ! This is our only daughter Bhoota and we love her very much. But, O Beloved of gods ! Disturbed by the fears of worldly existence, she now wants to renounce the world and get initiated by you. Therefore, O Beloved of gods ! we offer her to you as a disciple-donation. Kindly accept this disciple-donation.

Purushadaniya Arhat Parshva said—"Beloved of gods ! Do as you please."

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-११

Illustration No. 11

श्रीदेवी द्वारा भगवान के दर्शन

दृश्य-१

भगवान महावीर राजगृह के गुणशीलक उद्यान में विराजमान हैं। उस समय श्रीदेवी नामक ऋद्धिशाली देवी अपने देवी परिवार के साथ भगवान महावीर के दर्शन करने आती है। भक्ति वश वहाँ नृत्य विधि द्वारा अपनी ऋद्धि का प्रदर्शन करती है। तथा देशना श्रवण कर स्वर्ग को लौट जाती है।

दृश्य-२

गौतम गणधर भगवान से श्रीदेवी के पूर्वभव सम्बन्धी जिज्ञासा करते हैं। प्रभु फरमाते हैं-प्राचीन काल में एक समय इसी राजगृह में पुरुषादानीय भगवान पार्श्वनाथ पधारे। तब भूता नामक एक वृद्ध कन्या जो अविवाहित ही वृद्ध जराग्रस्त हो गयी थी। वह प्रभु पार्श्व के पास दीक्षा लेती है।

दृश्य-३

भूता साध्वी कुछ समय पश्चात् शरीरबकुशिका अर्थात् शरीर की शोभा-विभूषा करने वाली हो गई। वह बार-बार हाथ पैर धोती, जहाँ पर भी बैठती, स्वाध्याय करती वहाँ पहले पानी छिड़कती, स्वच्छ करके बैठती। गुरुणी द्वारा समझाने पर भी भूता ने शोभा-विभूषा नहीं छोड़ी। अन्तिम आलोचना-प्रतिक्रमण किये बिना आयुष्य पूर्ण कर यह सौधर्म देव लोक में देवी बनी है। *-वर्ग ४, अ. ६, सूत्र २*

SHRIDEVI BEHOLDS BHAGAVAN

SCENE-1

Bhagavan Mahavir is seated in the Gunasheelak garden in Rajagriha. Shridevi an opulent goddess, comes to pay homage to *Bhagavan* with her family. Out of devotion she displays her divine opulence through dance performance. She listens to the sermon and returns.

SCENE-2

Ganadhar Gautam asks *Bhagavan* about Shridevi's past birth. *Bhagavan* says—In ancient times once Purushadaniya Bhagavan Parshva Nath came to Rajagriha. During that time Bhoota, a spinster had grown old without marriage. She gets initiated in presence of Bhagavan Parshva Nath.

SCENE-3

After some time Bhoota Aryika became *sharir-bakushika*. She would wash her limbs many times. Before sitting or studying any where she would sprinkle water over the ground. She did not abandon this unascetic way even after her teacher's advise. She died without doing the last critical review (*pratikraman*) and has reincarnated as a goddess in Saudharma Devlok.

—Sec. IV, Ch. 6, Sutra 2

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Bhoota Darika was pleased and contented to hear these words from Purushadaniya Arhat Parshva. She went in the north-eastern direction (*Ishan Kone*) and discarded her householder's dress and ornaments. All this description should be taken exactly as mentioned about Devananda (*Bhagavati Sutra* 9/33). After initiating her, Purushadaniya Arhat Parshva handed her over to Aryaa Pushpachulika as her disciple. She studied under Aryaa Pushpachulika and became a completely celibate *aryaa* (female ascetic).

शरीर–बकुशिका

८. तए णं सा भूया अज्जा अन्नया कयाइ सरीरबाउसिया जाया यावि होत्था। अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवइ, पाए धोवइ, एवं सीसं धोवइ, मुहं धोवइ थणगंतराइं धोवइ, कक्खंतराइं धोवइ, गुज्झंतराइं धोवइ, जत्थ जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तत्थ तत्थ वि य णं पुव्वामेव पाणएणं अब्भुक्खेइ, तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेइए।

तए णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ भूयं अज्जं एवं वयासी–'अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ (जाव) गुत्तबम्भचारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाओसियाणं होत्तए। तुमं च णं, देवाणुप्पिए, सरीरबाओसिया अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवसि (जाव) निसीहियं चेएसि। तं णं तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि' त्ति। सेसं जहा सुभद्दाए, जाव पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

तए णं सा भूया अज्जा अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवइ जाव चेइए।

८. दीक्षित होने के कुछ काल पश्चात् वह भूता आर्यिका शरीर–बकुशिका (शारीरिक शोभा–विभूषा की प्रवृत्ति से संयम को दूषित करने वाली) हो गई। वह बार-बार हाथ धोती, पैर धोती, सिर धोती, मुख धोती, स्तनों के मध्य भाग को धोती, काँख धोती, गुह्यांगों को धोती और जहाँ कहीं भी खड़ी होती, सोती, बैठती अथवा स्वाध्याय करती उस–उस स्थान पर पहले पानी छिड़कती और उसके बाद खड़ी होती, सोती, बैठती या स्वाध्याय करती।

तब पुष्पचूलिका आर्या ने भूता आर्या का यह आचरण देखकर इस प्रकार समझाया–''देवानुप्रिये ! हम ईर्यासमिति आदि पाँच समितियों से आन्तरिक विकारों का शोधन कर ब्रह्मचर्य व्रतधारिणी निर्ग्रन्थ श्रमणी हैं। इसलिए हमें शरीर–बकुशिका होना नहीं कल्पता है, किन्तु देवानुप्रिये ! तुम शरीर–बकुशिका बनकर हाथ, पैर, सिर धोती रहती हो यावत् पानी छिड़ककर बैठती, शयन करती, स्वाध्याय आदि करती हो। देवानुप्रिये ! तुम इस स्थान (नियम विरुद्ध प्रवृत्ति) की आलोचना करो। इत्यादि शेष वर्णन सुभद्रा आर्या के समान जानना चाहिए। किन्तु वह (आर्या पुष्पचूलिका के समझाने पर भी वह नहीं समझी) और एक दिन उपाश्रय से निकलकर स्वतंत्र रूप में अकेली पृथक् उपाश्रय में जाकर निवास करने लगी।

इस प्रकार वह भूता आर्या अपनी बात का हठ रखती हुई निरंकुश, बिना रोक–टोक के स्वच्छन्द–मति होकर साधु आचार के विपरीत बार–बार हाथ–पैर धोती हुई शारीरिक विभूषा में लगी रहती।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

8. Some time after her initiation, that Bhoota Aryika became *sharir-bakushika* (a woman having an attitude that spoils ascetic-discipline as a consequence of over indulgence in beautification of the body). She would wash her limbs, head, face, cleavage, armpits and genitals many times. Before standing, sleeping, meditating or studying anywhere she would sprinkle water over the ground she used for these activities.

When Aryaa Pushpachulika saw all this she warned Bhoota Aryika—"Beloved of gods ! we are *Nirgranth Shramanis* (Jain female ascetics) cleansing our inner perversions with five *samitis* (regulations) including the *Irya samiti* (regulation of movement) and are strictly celibate. As such, we are not allowed to be *sharir-bakushika* (over indulgent in beautification of the body). But as you have become *sharir-bakushika* and are washing your limbs, head,... and so on up to... sprinkle water over the ground you use for sitting, standing, sleeping and studies you should do critical review and the prescribed atonement for this action." Further details should be taken as those mentioned about Subhadra Aryaa. But Bhoota Aryika (neither believed nor accepted these instructions and directions of Aryaa Pushpachulika) left the *upashraya* (place of stay for ascetics) and shifted to another suitable abode.

This way that Bhoota Aryika washed her limbs and took extra care of her body without any qualms and restrictions. She became antinomian and adamantly pursued her anti-ascetic way of life.

भूता का अवसान और सिद्धि–गमन

९. तए णं सा भूया अज्जा बहूहिं चउत्थछट्ठ. बहूइं वासाइं सामण्णपरियाणं पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे उववाय–सभाए देवसयणिज्जंसि जाव ओगाहणाए सिरिदेवित्ताए उववन्ना, पंचविहाए पज्जत्तीए जाव भासामणपज्जीत्तीए पज्जत्ता।

'एवं खलु गोयमा ! सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता। एगं पलिओवमं ठिई।'

'सिरी णं भंते, देवी जाव कहिं गच्छिहिइ ?'

'महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।'

९. इस प्रकार वह भूता आर्या अनेक प्रकार की चतुर्थ भक्त, षष्ठ भक्त आदि तपश्चर्या करती हुई बहुत वर्षों तक श्रमणी–पर्याय का पालन करती हुई अपनी अनुचित अयोग्य कार्य–प्रवृत्ति की आलोचना एवं प्रतिक्रमण किए बिना ही मृत्यु प्राप्त करके सौधर्मकल्प के श्री अवतंसक विमान की उपपात सभा में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देव-शय्या पर यथोचित शारीरिक अवगाहना से श्रीदेवी के रूप में उत्पन्न हुई। तदनन्तर आहारपर्याप्ति यावत् भाषा-मन:पर्याप्ति, इन पाँच पर्याप्तियों से पर्याप्त हुई।

इस प्रकार "गौतम ! श्रीदेवी ने यही दिव्य देव-ऋद्धि प्राप्त की है। वहाँ उसकी एक पल्योपम की आयु-स्थिति है।"

गौतम स्वामी-"भंते ! यह श्रीदेवी देवभव का आयुष्य पूर्ण करके कहाँ जायेगी ? कहाँ उत्पन्न होगी ?"

भगवान-"वह महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगी और (संयम की शुद्ध आराधना करके) सिद्धगति प्राप्त करेगी।"

DEATH AND LIBERATION OF BHOOTA

9. This way observing two-day fasts, three day fasts and other austerities, that Bhoota Aryika lived for a long time as an ascetic. In the end she died without reviewing and atoning for her misconduct. She reincarnated instantaneously (*upapat*) as Shri Devi, a goddess with suitable body size, in the divine bed covered with divine cloth in the *Upapat*-hall of *Shri Avatansak Viman* (celestial vehicle) in *Saudharma Kalp Devlok* (divine dimension). There she attained the state of full development (*paryapti*) through *bhasha-man* (speech and mind) *paryapti*.

Thus, Gautam ! Shri Devi acquired that divine opulence. Her life-span there is one *Palyopam*.

Gautam—*"Bhante* ! Completing the age, state, and life in the dimension of gods where will that Shri Devi go ? (Where will she be born ?)"

Bhagavan said, "Gautam ! She will be born as a human being in the Mahavideh area and (after observing strict ascetic-discipline) shall finally become a *Siddha* (liberated soul)."

१०. निक्खेवओ-तं एवं खलु, जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं पुप्फचूलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते। त्ति बेमि।

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

१०. उपसंहार करते हुए श्री सुधर्मा स्वामी ने कहा-"आयुष्मन् जंबू ! श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पचूलिका के प्रथम अध्ययन का यह भाव कहा है। ऐसा मैं कहता हूँ।"

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

10. In conclusion Sudharma Swami said—"Thus, long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has narrated this text and meaning of the first chapter of *Pushpachulika*. So I state."

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्ययन दो से दस
SECOND TO TENTH CHAPTERS

११. एवं सेसाण वि नवण्हं भाणियव्वं। सरिसनामा विमाणा। सोहम्मे कप्पे पुव्वभवो। नयर–चेइय–पियमाईणं अप्पणो य नामादि जहा संगहणीए। सव्वा पासस्स अंतिए निक्खंता। ताओ पुप्फचूलाणं सिस्सिणीयाओ, सरीरबाओसियाओ, सव्वाओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति।

॥ पुप्फचूलाओ समत्ताओ ॥

११. आर्य सुधर्मा स्वामी ने कहा–''इसी प्रकार शेष नौ अध्ययनों का भी वर्णन कहना चाहिए। वे सभी संयम ग्रहण कर मरण के प्रश्चात् अपने–अपने नाम के अनुरूप नाम वाले विमानों में उत्पन्न होती हैं। जैसे–हीदेवी सौधर्मकल्प के हीविमान में, धृतिदेवी धृतिविमान में, कीर्तिदेयी कीर्तिविमान में, बुद्धिदेवी बुद्धिविमान में आदि। उनका पूर्वभव भूता के समान है। नगर, चैत्य, माता–पिता और अपने नाम आदि संग्रहणी गाथा के अनुसार जानना चाहिए। (किन्तु संग्रहणी गाथा उपलब्ध नहीं है।) सभी पार्श्व अर्हत् के समीप प्रव्रजति हुई और ये सभी पुष्पचूला आर्या की शिष्याएँ बनीं। सभी शरीर–बकुशिका होकर, आलोयणा बिना किये मृत्यु प्राप्त कर देवलोक में उत्पन्न हुईं। देवलोक के भव के पश्चात् च्यवन करके महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर सिद्ध–बुद्ध होंगी।''

॥ द्वितीय से दशम अध्ययन समाप्त ॥

॥ चतुर्थ पुष्पचूलिका उपांग समाप्त ॥

11. Arya Sudharma Swami said—"The remaining nine chapters should also be narrated in the same way. They all got initiated and after death reincarnated in celestial vehicles bearing each one's name. For example—Hridevi in *Hri Viman* in *Saudharma Kalp*, Dhritidevi in *Dhriti Viman*, Kirtidevi in *Kirti Viman*, Buddhidevi in *Buddhi Viman* and so on. Their past births are also same as that of Bhoota. The names of the city, *chaitya* (temple complex), parents, and their own names should be taken as mentioned in the *Sangrahini Gatha* (collective verse). However, this collective verse is not available in any text. They all got initiated by Arhat Parshva and became disciples of Pushpachula Aryaa. They all became *sharir-bakushikas* (over indulgent in beautification of the body), died without critical review and atonement, and reincarnated in divine dimension. Descending from the divine dimension they all will be born in the Mahavideh area and finally attain enlightenment and liberation (*Siddha-buddha*)."

● END OF THE SECOND TO TENTH CHAPTERS ●

● END OF THE FOURTH SECTION TITLED PUSHPACHULIA ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचम वर्ग : वह्निदशा

उपोद्घात

प्रस्तुत उपांग के पंचम वर्ग का नाम वण्हिदसा (वृष्णिदशा) है। नन्दीसूत्र की चूर्णि में इसे अंधक वृष्णिदशा कहा गया है। इसमें वृष्णि वंशीय बारह राजकुमारों का वर्णन है, प्रथम एवं द्वितीय वर्ग में भगवान महावीर के शासन में उत्पन्न राजकुमारों के चरित्र का कथन है। तीसरे व चौथे वर्ग में पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्वनाथ के युग के साधकों का चरित्र है तथा इस पाँचवें वर्ग में अर्हत् अरिष्टनेमि के युग के बारह साधकों का वर्णन है।

पाँचों वर्गों के चरित्रों में एक क्रमिक उत्थानिका जैसी प्रतीत हो रही है। प्रथम वर्ग निरयावलिया में दस नरकगामी आत्माओं के चरित्र का कथन है। इसके पश्चात् कल्पावतंसिका, पुष्पिका तथा पुष्पचूलिका में सौधर्मकल्प व ज्योतिष्क विमानों आदि विमानों में उत्पन्न होने वाली आत्माओं का चरित्र वर्णन है। पाँचवें वृष्णिदशा में अनुत्तर विमान के सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पन्न होने वाली आत्माओं का चरित्र वर्णित है। इस प्रकार उत्तरोत्तर उत्थान व विकास की ओर बढ़ते हुए चरित्रों का वर्णन आत्मा को उत्तरोत्तर शुद्ध व उन्नत बनाने की प्रेरणा देता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

FIFTH SECTION : VRISHNIDASHA

INTRODUCTION

The name of the fifth section of this *Upanga* is *Vahnidasa* or *Vrishnidasha*. In the commentary (*Churni*) of *Nandi Sutra* it is mentioned as *Andhak Vrishnidasha*. It contains stories of twelve princes of the Vrishni clan. The first and second sections of this *Upanga* contain stories of princes born during the period of Bhagavan Mahavir. The third and fourth sections contain stories of princes born during the period of Purushadaniya Arhat Parshvanaath. And this fifth section contains the stories of the aspirants of the period of Arhat Arishtanemi.

In the stories of all the five sections there is an evidence of a progressive ascent. In *Niryavaliya*, the first section, there are stories of ten souls reincarnating in the infernal world. This is followed by stories of souls reincarnating in the *Saudharm Kalp* and *Jyotishk Vimans* in *Kalpavatansika, Pushpika* and *Pushpachulika* sections. In the fifth section titled *Vrishnidasha* are the stories of souls reincarnating in the *Sarvarth Siddha Viman* of *Anuttar* dimension. Thus the stories of progressive development and ascent provide inspiration to pursue the path of progressive purity and ascent of soul.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम अध्ययन
FIRST CHAPTER

१. उक्खेवओ–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं चउत्थस्स णं पुप्फचूलियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं वण्हिदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

१. (श्री जम्बू स्वामी ने सुधर्मा स्वामी से पूछा)–"भगवन् ! यदि मोक्ष को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने चतुर्थ उपांग पुष्पचूलिका का यह (पूर्वोक्त) भाव कहा है तो भंते ! भगवान महावीर ने पाँचवें वण्हिदशा नामक उपांग वर्ग का क्या भाव प्रतिपादित किया है ?"

उत्तर में सुधर्मा स्वामी ने कहा–

1. (Jambu Swami asked Sudharma Swami—) "*Bhante* ! When aforesaid is the text and meaning of the fourth section of the *Upanga* named *Pushpachulika* as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, what is the text and meaning of the fifth section of the *Upanga* named *Vrishnidasha* ?"

In reply, Sudharma Swami told—

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पंचमस्स णं वण्हिदसाणं दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

निसढे–माअणि–वह–वहे पगया जुत्ती दसरहे दढरहे य।
महाधणू सत्तधणू दसधणू नामे सयधणू य॥

२. आयुष्मन् जम्बू ! मुक्ति को संप्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पाँचवें वण्हिदशा उपांग के बारह अध्ययन कहे हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं–

(१) निषध, (२) मातलि, (३) वह, (४) वहे, (५) पगता, (६) ज्योति, (७) दशरथ, (८) दृढ़रथ, (९) महाधन्वा, (१०) सप्तधन्वा, (११) दशधन्वा, और (१२) शतधन्वा।

2. "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has preached twelve chapters of *Vrishnidasha*, the fifth *Upanga*. They are—

(1) Nishadh, (2) Maatali, (3) Vaha, (4) Vahe, (5) Pagata, (6) Jyoti, (7) Dasharath, (8) Dridharath, (9) Mahadhanva, (10) Saptadhanva, (11) Dashadhanva, and (12) Shatadhanva.

३. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं पंचमस्स वग्गस्स वण्हिदसाणं दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. "भंते ! यदि मोक्ष का संप्राप्त श्रमण भगवान ने पाँचवें उपांग वर्ग के बारह अध्ययन कहे हैं तो उनमें से प्रथम अध्ययन का क्या भाव कहा है ?"

3. Jambu—"*Bhante* ! If there are twelve chapters in *Vrishnidasha*, the fifth *Upanga* (section), as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of its first chapter ?"

४. तए णं से सुहम्मे जंबू अणगारं एवं वयासी—

४. तब आर्य सुधर्मा ने जम्बू अनगार से इस प्रकार कहा—

4. Sudharma Swami replied to Jambu Anagar as follows :

द्वारिका नगरी

५. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नामं नयरी होत्था, दुवालस जोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलोयभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

५. "हे जम्बू ! उस काल उस समय में (जब भगवान अरिष्टनेमि विद्यमान थे) द्वारवती—(द्वारिका) नाम की नगरी थी। वह पूर्व—पश्चिम में बारह योजन लम्बी (और उत्तर—दक्षिण में नौ योजन चौड़ी) थी, अर्थात् उसकी चौड़ाई नौ योजन और लम्बाई बारह योजन की थी। उसके निवासीजन धन—धान्य से सम्पन्न प्रमोदयुक्त रहते थे। वह साक्षात् देवलोक के समान मन को प्रसन्न करने वाली, देखने में सुन्दर, शिल्पकला में अद्वितीय शोभा वाली थी।

KKKK

5. Jambu ! During that period of time (when Bhagavan Arishtanemi lived) there was a city called Dvaravati (Dvarika). It was spread in an area measuring twelve *Yojan* (an ancient measure of distance) east-west and nine *Yojan* north-south. In other words it was nine *Yojan* wide and twelve *Yojan* long. Its inhabitants were rich and charming. Like a divine city it was delightful, beautiful and unique in architecture and sculpture.

रैवतक पर्वत

६. तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं रेवए नामं पव्वए होत्था—तुंगे गगणतलमणुलिहन्तसिहरे नाणविहरुक्ख—गुच्छ—गुम्म—लया—वल्लीपरिगयाभिरामे हंस—मिय—मयूर—कोंच—सारस—चक्कवाग—मयणसाल—कोलि—कुलोववेए अणेग—तड—कडगवियर—उज्झरपवाय—पब्भारसिहरपउरे अच्छरगण—देवसंघ—विज्जाहर—मिहुण—संनिचिण्णे निच्चच्छणए दसारवरवीर—पुरिसतेल्लोक्कबलयगाणं सोमे सुभए पियदंसणे सुरूवे पासादीए (जाव) पडिरूवे।

६. द्वारिका नगरी के बाहर उत्तर—पूर्व दिशा के ईशानकोण में रैवतक नामक एक बहुत ऊँचा पर्वत था उसके शिखर गगनतल को स्पर्श करते थे। वह विविध प्रकार के वृक्षों, गुच्छों, गुल्मों (वृक्ष समूह), लताओं और वल्लियों (बेलों) से हरा—भरा सुन्दर दीखता था। वह हंस, मृग, मयूर, क्रौंच (कुटर), सारस, चक्रवाक, मदनसारिका (मैना) और कोयल आदि पक्षियों के कलरव से गूँजता रहता था। उस पर्वत पर नदी—नालों के अनेक तट थे, कहीं विशाल मैदान थे और कहीं अनेक गुफाएँ थीं। कहीं झरने, जल प्रपात,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राग्भार (कुछ–कुछ नमे हुए गिरि प्रदेश) और ऊँचे शिखर थे। उस पर्वत पर अप्सराओं के समूह, देवों के समुदाय, विद्याधरों के युगल वहाँ आकर क्रीड़ा करते रहते थे। तीनों लोकों में बलशाली माने जाने वाले दसारवंशीय दशार्ह वीर समुद्रविजय आदि दस श्रेष्ठ वीर पुरुषों द्वारा वहाँ नित नये–नये उत्सव–महोत्सव मनाये जाते थे। उस पर्वत का स्थान बहुत सौम्य, सुभग, देखने में प्रिय, सुरूप, मन को प्रसन्नता देने वाला, आँखों को प्रियकारी, मन को आकर्षक लगने वाला और अतीव मनोरम था।

RAIVATAK MOUNTAIN

6. There was a lofty mountain range with sky-high peaks outside Dvaravati city in the north-east direction. Its enchanting lush greenery included a variety of trees, shrubs, bushes, vines, creepers, etc. The mountain resonated with the sounds of a variety of animals and birds including swans, deer, peacocks, *Kraunch* (the Demoiselle crane), Sarus (crane), *Chakravaks* (Brahminy duck; Anas casarca), mynas (a type of Asian starling), cuckoos, etc. There were numerous banks of rivers and streams. At some places there were large plateaus and at others there were caves. Water-falls, lofty peaks and projections too added to its beauty. A variety of divine couples lead by *Apsaras, Charans,* and *Vidyadhars* always indulged in group festivities there. Ten great warriors from the *Dashar* clan including Samudravijaya frequently organized a variety of celebrations and festivities there. That mountain range was tranquil, serene, beautiful, enchanting, delightful and attractive.

नन्दनवन उद्यान, सुरप्रिय यक्षायतन

७. तत्थ णं रेवयगस्स पव्वयस्स अदूरसामंते एत्थ णं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था– सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासादीए जाव दरिसणिज्जे।

तस्स णं नंदणवणे उज्जाणे सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था–चिराईए (जाव) बहुजणो आगम्म अच्चेइ सुरप्पियं जक्खाययणं।

से णं सुरप्पिए जक्खाययणे एगेणं महया वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते जहा पुण्णभद्दे जाव सिलावट्टए।

७. उस रैवतक पर्वत के समीप यथोचित स्थान पर नन्दनवन नाम का उद्यान था। जो सर्व ऋतु–सम्बन्धी पुष्पों और फलों से समृद्ध, अतीव रमणीय, आनन्ददायी तथा दर्शनीय, मन को आकर्षित करने वाला था।

उस नन्दनवन उद्यान के ठीक मध्य भाग में एक बहुत प्राचीन सुरप्रिय नामक यक्षायतन (मन्दिर) था। वहाँ बहुत से लोग आ–आकर सुरप्रिय यक्ष की पूजा अर्चना करते रहते थे।

यह सुरप्रिय यक्षायतन पूर्णभद्र चैत्य के समान चारों ओर से एक विशाल वनखण्ड द्वारा घिरा हुआ था, उस वनखण्ड में एक पृथ्वीशिलापट्ट था। (इनका वर्णन औपपातिकसूत्र के अनुसार जानना चाहिए।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

NANDANAVAN GARDEN AND SURAPRIYA TEMPLE

7. Neither very far nor very near that Raivatak mountain was a garden named Nandanvan. It was filled with all season flowering trees and was as beautiful as Nandan Kanan (the divine garden).

At the center of this garden was an ancient temple of Surapriya Yaksh. Many of people visited this temple for the worship of Surapriya Yaksh.

Like Purnabhadra Chaitya this Surapriya Yaksh temple was also surrounded by a garden at the center of which was a large flat rock. (the description is same as mentioned in *Aupapatik Sutra*)

द्वारिका नगरी में कृष्ण वासुदेव, बलदेव आदि

८. तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ। से णं तत्थ समुद्दविजय-पामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पञ्चण्हं महावीराणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसाहस्सीणं, पज्जुण्णपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुइंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, रुप्पिणिपामोक्खाणं सोलसण्हं देवीसाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईणं वेयड्ढगिरिसागरमेरागस्स दाहिणड्ढभरहस्स आहेवच्चं जाव विहरइ।

तत्थ णं बारवईए नयरीए बलदेवे नामं राया होत्था, महया जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ।

तस्स णं बलदेवस्स रन्नो रेवई नामं देवी होत्था सोमाला जाव विहरइ।

तए णं सा रेवई देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि जाव सीहं सुमिणे पासित्ताणं...., एवं सुमिणदंसणपरिकहणं, कलाओ जहा महाबलस्स, पन्नासओ दाओ, पन्नासराय-कन्नगाणं एगदिवसेणं पाणिग्गहणं...... नवरं निसढे नामं, जाव उप्पिं पासायं विहरइ।

८. उस द्वारका नगरी में कृष्ण वासुदेव राजा निवास करते थे। वासुदेव श्रीकृष्ण के नेतृत्व में समुद्रविजय (पूज्य जन) आदि दस दसार्ह, बलदेव आदि पाँच महावीर, उग्रसेन आदि सोलह हजार राजा, प्रद्युम्न आदि साढ़े तीन करोड़ कुमार, शाम्ब आदि साठ हजार दुर्दान्त योद्धा, वीरसेन आदि इक्कीस हजार वीर, रुक्मिणी आदि सोलह हजार रानियाँ, अनंगसेना आदि अनेक सहस्र गणिकाएँ तथा इनके अतिरिक्त अन्य बहुत से राजा, ईश्वर, यावत् तलवर, माडंबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह आदि निवास करते थे। उत्तर दिशा में वैताढ्य पर्वत तक तथा अन्य तीन दिशाओं में लवणसमुद्र की सीमा तक विस्तृत दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र पर तथा द्वारिका नगरी पर वासुदेव श्रीकृष्ण का अधिपतित्व व स्वामित्व था। वासुदेव सबका पालन करते हुए, उन पर शासन करते हुए सुखपूर्वक रह रहे थे।

उसी द्वारिका नगरी में श्रीकृष्ण वासुदेव के ज्येष्ठ भ्राता बलदेव नामक राजा थे। वे महान् प्रभावशाली थे यावत् राज्य का रक्षण कर रहे थे।

उन बलदेव राजा की पत्नी का नाम रेवतीदेवी था। वह रेवतीदेवी अत्यन्त सुकुमाल और सुन्दर थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किसी समय रेवतीदेवी ने राजाओं के योग्य अपने श्रेष्ठ शयनागार की शय्या पर सोये हुए सिंह का स्वप्न देखा। स्वप्न देखकर वह जाग्रत हुई। स्वप्न देखकर पति के पास गई। पति बलदेव ने स्वप्न का फल बताया। प्रातःकाल स्वप्न-पाठकों को आमन्त्रित किया गया। यथासमय बालक का जन्म हुआ। उसका 'निषध' नाम रखा गया। जब बालक आठ वर्ष का हो गया तो महाबल के समान उसने बहत्तर कलाओं का अध्ययन किया। विवाह के समय उसे पचास वस्तुएँ दहेज में दी गईं। एक ही दिन पचास उत्तम राजकन्याओं के साथ पाणिग्रहण हुआ इत्यादि वर्णन महाबल के समान जानना चाहिए। वह आमोद-प्रमोद के साथ ऊँचे प्रासाद में रहकर आनन्दपूर्वक समय व्यतीत कर रहा था।

KRISHNA VASUDEV AND BALDEV

5. In the city of Dvaravati lived King Krishna Vasudev. The details of the people under his reign are—the ten *Dashar* kings lead by Samudravijaya, five great warriors lead by Baldev, sixteen thousand kings lead by Ugrasen, thirty five million princes lead by Pradyumna, sixty thousand fiery warriors lead by Shamb, twenty one thousand great soldiers lead by Virsen, thirty two thousand queens lead by Rukmini, thousands of courtesans lead by Anangasena and a multitude of regional kings, influential and rich persons, knights of honour, landlords, heads of large families, affluent people, established merchants, commanders, caravan chiefs, etc. His empire extended from the Vaitadhya mountain in the north to the Lavana sea in the three remaining directions. He ruled this large land mass known as Dakshinardha Bharat ably with all his power and grandeur.

In the same Dvaravati city lived King Baladev, the elder brother of Shrikrishna Vasudev. He was also very powerful and looked after the security of the state.

The name of King Baldev's wife was Revati Devi who was very delicate and beautiful.

Once Revati Devi saw a lion in her dream when she was sleeping in her bed in the royal bedroom. She got up and went to her husband. King Baldev interpreted the dream. In the morning augurs were called. In due course a son was born. He was named Nishadh. When the boy was eight years old he studied seventy two arts (subjects) like Mahabal. At the time of his marriage he was given fifty sets of gifts as dowry. He was married to fifty princesses at the same time. All these details should be taken exactly as mentioned about Mahabal. He lived happily enjoying worldly pleasures and comforts in his lofty mansion.

अर्हत् अरिष्टनेमि का आगमन

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी आइगरे दस धणूइं.... वण्णओ जाव समोसरिए। परिसा निग्गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया, सभाए सुहम्माए सामुदाणियं भेरिं तालेहि।"

तए णं से कोडुम्बियपुरिसे जाव पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाणिया भेरी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाणियं भेरिं महया महया सद्देणं तालेइ।

९. उस समय में अर्हत् अरिष्टनेमि प्रभु द्वारिका नगरी में पधारे। वे धर्म की आदि करने वाले थे, अर्हत् अरिष्टनेमि के शरीर की ऊँचाई (अवगाहना) दश धनुष की थी। उनकी धर्मदेशना सुनने के लिए जनसमूह आया।

उस समय कृष्ण वासुदेव ने अर्हत् अरिष्टनेमि आगमन का संवाद सुना। सुनकर हर्षित एवं संतुष्ट हुए। कौटुम्बिक पुरुषों (सेवकों) को बुलाकर आज्ञा दी–"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही सुधर्मा सभा में जाकर सामुदानिक (जिसके बजने पर जनसमूह एकत्रित हो जाये, ऐसी) भेरी को बजाओ।"

कौटुम्बिक पुरुष कृष्ण वासुदेव की आज्ञा स्वीकार करके सुधर्मा सभा में उस सामुदानिक भेरी को जोर से बजाते हैं।

ARRIVAL OF ARHAT ARISHTANEMI

9. During that period of time Arhat Arishtanemi arrived in Dvaravati city. He was the propagator of religion. He was ten *Dhanush* (an ancient linear measure) tall. People came to attend his discourse.

When Krishna Vasudev heard the news of Arhat Arishtanemi's arrival he was pleased and contented. He called his attendants and said, "Beloved of gods ! Rush to the *Sudharma* assembly hall and blow the *Samudanik* trumpet (on hearing which people start gathering).

The attendants accepted Krishna Vasudev's order and blew the *Samudanik* trumpet loudly in the *Sudharma* assembly.

कृष्ण वासुदेव का दर्शनार्थ गमन

१०. तए णं तीसे सामुदाणियाए भेरीए महया महया सद्देण तालियाए समाणीए समुद्दविजय पामोक्खा दसारा, देवीओ भाणियव्वाओ, जाव अणंगसेणापामोक्खा अणेगा गणियासहस्सा अन्ने य बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईओ ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया जहाविभवइड्ढी सक्कारसमुदएणं अप्पेगइया हयगया गयगया पायचारविहारेणं वंदावंदएहिं पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे, तेणेव उवागच्छित्ता करयल. कण्हं वासुदेवं जएण विजएणं वद्धावेंति।

तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुम्बियपुरिसे एवं वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं कप्पेह हयगयरहपवर." जाव पच्चप्पिणंति।

तए णं से कण्हे वासुदेवे मज्जणघरे जाव दुरूढे, अट्ठट्ठ मंगलगा, जहा कूणिए, सेयवरचामरेहिं उद्धव्वमाणेहिं उद्धव्वमाणेहिं समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव सत्थवाहप्पभिईहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारवइं नयरिं मज्झंमज्झेणं,....सेसं जहा कूणिओ जाव पज्जुवासइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. सामुदानिक भेरी जोर-जोर से बजने का घोष सुनकर समुद्रविजय आदि दसार्ह क्षत्रिय, रुक्मिणी आदि देवियाँ, अनंगसेना आदि अनेक सहस्र गणिकाएँ तथा अन्य बहुत से राजा, ईश्वर यावत् सार्थवाह आदि स्नान कर यावत् प्रायश्चित्त-मंगलविधान कर सभी प्रकार के अलंकारों से विभूषित हो अपने-अपने वैभव ऋद्धि सत्कार एवं अभ्युदय के अनुसार कोई घोड़े पर आरूढ़ होकर, कोई हाथी पर आरूढ़ होकर और कोई पैदल ही जन-समुदाय को साथ लेकर जहाँ कृष्ण वासुदेव थे, वहाँ आकर उपस्थित हुए। दोनों हाथ जोड़कर जय-विजय. शब्दों से कृष्ण वासुदेव का अभिनन्दन किया।

फिर वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को आज्ञा दी-"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही आभिषेक्य हस्तिरत्न को सजाकर तैयार करो और अश्व, गज, रथ एवं पदातियों से युक्त चतुरंगिणी सेना को सुसज्जित करो तथा मुझे वापस आकर सूचित करो।"

तत्पश्चात् कृष्ण वासुदेव ने स्नानगृह में प्रवेश किया। स्नान करके, वस्त्रालंकार से सुसज्जित होकर हाथी पर आरूढ़ हुए। प्रस्थान करने पर आठ मांगलिक द्रव्य उनके आगे-आगे चले और श्रेष्ठ चामरों से विंजाते हुए समुद्रविजय आदि दस दसार्ह यावत् सार्थवाह आदि के साथ समस्त राजसी ऋद्धि यावत् तुमुल वाद्यघोषों के साथ द्वारवती नगरी के मध्य में होकर निकले। अर्हत् अरिष्टनेमि के समक्ष पहुँचे। उनकी पर्युपासना करने लगे। यहाँ तक का सभी वर्णन कूणिक राजा के समान औपपातिक की भाँति जानना चाहिए।

KRISHNA VASUDEV GOES TO PAY HOMAGE

10. Hearing the reverberating echo of the *Samudanik* trumpet the ten *Dashar* kings lead by Samudravijaya, Rukmini and other queens, thousands of courtesans lead by Anangasena and a multitude of regional kings, influential and rich persons,... and so on up to... caravan chiefs (etc.) took their bath, performed auspicious rituals, and got ready adorning themselves with a variety of ornaments. They came to Krishna Vasudev riding elephant, horse, and other carriers according to each one's status. Many of them arrived even walking. They joined their palms and greeted Krishna Vasudev with hails of victory.

After this Krishna Vasudev called his servants and ordered—"Beloved of gods ! Get my best elephant duly decorated and ready. Order the four pronged armed forces comprising of horse riders, elephant riders, charioteers and foot soldiers to be ready to march and report back."

Krishna Vasudev entered his bathroom, took his bath, dressed and embellished himself with ornaments. Once ready, he rode the elephant and left. Lead by eight auspicious things and accompanied by ten *Dashar* kings lead by Samudravijaya,... and so on up to... caravan chiefs (etc.) and with all his glory and grandeur... and so on up to... amidst the loud sound of musical instruments he came to Arhat Arishtanemi passing through Dvaravati city. After performing due obeisance he worshipped the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Tirthankar. All this description follows the same pattern as that mentioned in *Aupapatik Sutra* in context of King Kunik.

निषधकुमार का दर्शनार्थ गमन

११. तए णं तस्स निसहस्स कुमारस्स उप्पिं पासायवरगयस्स तं महया जणसद्दं च .... जहा जमाली, जाव धम्मं सोच्चा निसम्म वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-"सद्दहामि णं भंते, निग्गथं पावयणं, जहा चित्तो, जाव सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता पडिगए।"

११. उस समय निषधकुमार अपने ऊँचे प्रासाद पर स्थित था। उसे जन-कोलाहल आदि सुनकर कौतूहल हुआ। वह भी जमालि के समान ऋद्धि वैभव के साथ प्रासाद से निकला। भगवान के समवसरण में पहुँचकर भगवान् को वन्दन-नमस्कार करके धर्मश्रवण किया तथा उसे हृदयंगम किया। पुनः भगवान को वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार कहने लगा "भंते ! मैं निर्ग्रन्थ-प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ।" चित्त सारथी के समान उसने श्रावकधर्म अंगीकार किया, श्रावकधर्म अंगीकार करके वापस लौट गया।

PRINCE NISHADH GOES TO PAY HOMAGE

11. At that time Prince Nishadh was in his lofty mansion. When he saw the tumultuous crowd, he became curious. Like Jamali, he also came out of his mansion with all his grandeur and opulence. He came to *Bhagavan's Samavasaran*, paid homage and obeisance, listened to the discourse and understood it. He once again paid homage to *Bhagavan* and said—"*Bhante* ! I have faith in the *Nirgranth-pravachan* (*Tirthankar's* sermon)." Like Chitta Sarathi, he accepted the *Shravak Dharma* (code for laity) and returned home.

वरदत्त अनगार की जिज्ञासा

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी वरदत्ते नामं अणगारे उराले जाव विहरइ। तए णं से वरदत्ते अणगारे निसढं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-"अहो णं, भंते, निसढे कुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे, एवं पिए पियरूवे मणुन्नए, मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे। निसढेणं भंते। कुमारेण अयमेयारूवे माणुस्सइड्ढी किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता ?" पुच्छा जहा सूरियाभस्स।

एवं खलु वरदत्ता ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे रोहीडए नामं नयरे होत्था, रिद्ध. .....। मेहवण्णे उज्जाणे। माणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे। तत्थ णं रोहीडए नयरे महब्बले नामं राया। पउमावई नामं देवी।

अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सीहं सुमिणे ...., एवं जम्मणं भाणियव्वं जहा महाबलस्स, नवरं वीरंगओ नामं, बत्तीसओ दाओ, बत्तीसाए रायवरकन्नगाण पाणिं जाव ओगिज्जमाणे ओगिज्जमाणे पाउस-वरिसारत्त-सरय-हेमन्त-गिम्ह-बसन्ते छप्पि उऊ जहाविभवे समाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सगे कामभोए भुंजमाणे विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेणं कालेणं तेणं समएणं सिद्धत्था नाम आयरिया जाइसंपन्ना जहा केसी, नवरं बहुस्सुया बहुपरिवारा जेमेव रोहीडए नयरे, जेणेव मेहवण्णे उज्जाणे, जेणेव माणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे, तेणेव उवागए अहापडिरूवं जाव विहरइ। परिसा निग्गया।

१२. उस सयम वहाँ अर्हत् अरिष्टनेमि के प्रधान शिष्य वरदत्त नामक अनगार थे। उन वरदत्त अनगार ने निषधकुमार को देखा तो मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई यावत् अरिष्टनेमि भगवान की पर्युपासना करते हुए इस प्रकार निवेदन किया–"भगवन् ! यह निषधकुमार इष्ट (सभी को प्रियकारी है) इष्ट रूप वाला (मनचाहा प्रियकारी रूप प्राप्त हुआ है) सुन्दर है सुन्दर रूप से सम्पन्न एवं प्रिय, प्रिय रूप वाला है। मनोज्ञ (मन को अच्छा लगने वाला) मनोज्ञ रूप वाला, मन को लुभाने वाला है, वैसा ही रूप सम्पन्न है, सौम्य, सौम्य रूप वाला है, प्रियदर्शन और सुरूप है ! भंते ! इस निषधकुमार को इस प्रकार की यह मानवीय समृद्धि कैसे उपलब्ध हुई, कैसे प्राप्त हुई ? जिस प्रकार सूर्याभदेव के विषय में गौतम स्वामी ने पूछा उसी प्रकार वरदत्त मुनि ने अर्हत् अरिष्टनेमि से प्रश्न किया।

अर्हत् अरिष्टनेमि ने समाधान करते हुए कहा–"आयुष्मन् वरदत्त ! उस काल उस समय में इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में रोहीतक नाम का नगर था। वह धन-धान्य से समृद्ध था। वहाँ मेघवन नाम का उद्यान था, उसमें मणिदत्त यक्ष का यक्षायतन था। उस रोहीतक नगर के राजा का नाम महाबल था। उसकी रानी का नाम पद्मावती था।

किसी एक रात वह पद्मावती सुखपूर्वक शय्या पर सो रही थी, तब उसने सिंह का स्वप्न देखा, इत्यादि महाबल के समान पुत्र-जन्म का सभी वर्णन जानना चाहिए। महाबल के पुत्र का नाम वीरांगद रखा गया। योग्य होने पर बत्तीस राजकन्याओं के साथ पाणिग्रहण हुआ, उसे बत्तीस-बत्तीस वस्तुएँ दहेज में दी गईं। वह अपने ऊँचे महलों में वैभव के अनुरूप पावस, वर्षा, शरद्, हेमन्त, ग्रीष्म और वसन्त, इन छहों ऋतुओं के योग्य अनुकूल-मनोनुकूल शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध वाले पाँच प्रकार के मानवीय कामभोगों का उपभोग करते हुए आनन्दपूर्वक समय बिता रहा था।

उस समय सिद्धार्थ नामक आचार्य केशीश्रमण जैसे प्रभावशाली किन्तु विशेष यह है कि ये चार ज्ञान के धारक नहीं, केवल बहुश्रुत थे। वे अपने विशाल शिष्य परिवार सहित रोहीतक नगर में जहाँ मेघवन उद्यान, जहाँ मणिदत्त यक्ष का यक्षायतन था, वहाँ पधारे और साधुओं के योग्य स्थान आदि के लिए अवग्रह लेकर विराजे। आचार्य के दर्शनार्थ तथा धर्म सुनने जन-समूह आया।

CURIOSITY OF VARADATT ANAGAR

12. During that period of time *Anagar* (ascetic) Varadatt was the principal disciple of Arhat Arishtanemi. When Varadatt Anagar saw Prince Nishadh he was curious. While worshiping he asked Arhat Arishtanemi—"*Bhante* ! This Prince Nishadh is beloved (of all) having lovable appearance, attractive having attractive appearance, adorable having adorable appearance, enchanting having enchanting appearance, serene having serene appearance, good-looking, and pretty. *Bhante* ! How this Prince Nishadh got and availed this human opulence ?" As Gautam Swami had

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

asked about Suryabh Dev, likewise Varadatt Anagar asked Arhat Arishtanemi (about Prince Nishadh).

Arhat Arishtanemi replied—"Long lived Varadatt ! During that period of time in Bharat area of this Jambudveep continent there was a city named Rohitak. It was very prosperous. There was a garden named Meghavan in that city. In the garden there was the temple of Manidatt Yaksh. The name of the ruler of Rohitak city was King Mahabal. The name of his consort was queen Padmavati.

One night Padmavati was sleeping comfortably in her bed when she saw a lion in her dream. The description up to the birth of a son should be read as mentioned about Mahabal. Mahabal's son was named Virangad. When he matured he was married to thirty two princesses and was given sets of thirty two things in dowry. He spent his life happily in lofty palaces enjoying mundane pleasures gratifying all the five sense organs of hearing, touch, taste, vision, and smell suitable for all the six seasons namely, *pavas*, *varsha* (monsoon), *sharad* (autumn), *hemant* (winter), *greeshma* (summer), and *vasant* (spring).

During that period of time lived Acharya Siddharth, who was as accomplished a scholar as Keshi Shraman but just short of four kinds of knowledge. He arrived with his large family of disciples at the temple of Manidatt Yaksh in Meghavan garden in Rohitak city. He formally sought for a place of stay suitable for ascetics and stayed there. Masses gathered to pay homage and attend his religious discourse.

१३. तण णं तस्स वीरंगयस्स कुमारस्स उप्पिं पासायवरगयस्स तं महया जणसद्दं .... जहा जमाली, निग्गओ। धम्मं सोच्चा ....., जं नवरं देवाणुप्पिया, अम्मापियरो आपुच्छामि, जहा जमाली तहेव निक्खंते जाव अणगारे जाए जाव गुत्तबंभयारी।

१३. तब उत्तम प्रासाद में निवास करते हुए वीरांगदकुमार ने राजमार्ग पर जन-कोलाहल आदि सुना और एक ही दिशा में जनसमूह जाता हुआ देखा। जमालि की तरह वह भी भगवान के दर्शन करने निकला। धर्मदेशना सुनकर के दीक्षा लेने संकल्प मन में जगा। उसने भी सिद्धार्थ आचार्य से जमालि की तरह निवेदन किया कि माता-पिता की अनुमति प्राप्त करके मैं दीक्षा ग्रहण करूँगा। पश्चात् प्रव्रज्या अंगीकार की और गुप्त ब्रह्मचारी अनगार हो गया।

13. Prince Virangad heard the tumultuous noise of the crowd and saw the masses going in one direction. Like Jamali, he also went to pay homage to the Acharya and after listening to the discourse got inspired to get initiated. Like Jamali he also told Acharya Siddharth about his intention of seeking permission from his parents and getting initiated. Later he got initiated and became a completely celibate ascetic.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. तए णं से वीरंगए अणगारे सिद्धत्थाणं आयरियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ अहिज्जित्ता बहूइं जाव चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं पणयालीसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा बम्भलोए कप्पे मणोरमे विमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं वीरंगयस्स देवस्स वि दस सागरोवमा ठिई पण्णत्ता।

१४. (दीक्षित होकर) वीरांगद अनगार ने सिद्धार्थ आचार्य के समीप सामायिक (आचारांग) आदि ग्यारह अंगशास्त्रों का अध्ययन किया। विविध प्रकार के चतुर्थ भक्त आदि तपश्चरण से आत्मा को भावित करते हुए परिपूर्ण पैंतालीस वर्ष तक श्रमण-पर्याय का पालन किया। अन्त में दो मास की संलेखना करके आत्मा को विशुद्ध बनाते हुए एक सौ बीस भक्तों का अनशन द्वारा छेदन कर, आलोचना प्रतिक्रमण करके समाधि सहित मरण प्राप्त कर ब्रह्मलोक कल्प के मनोरम विमान में देवरूप से उत्पन्न हुआ। वहाँ कितने ही देवों की दस सागरोपम की स्थिति कही गई है। वीरांगद देव की भी दस सागरोपम की स्थिति कही है।

14. After that Virangad ascetic lived with Acharya Siddharth and studied eleven *Angas* (the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts) including *Samayik*. After this he led ascetic life for forty five years enkindling his soul by observing a variety of austerities including fasting for two or more days. In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of two month duration and avoiding one hundred and twenty meals embraced meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the moment of his death. He reincarnated as a god in the *Manoram Viman* (celestial vehicle) in *Brahmalok Kalp* (divine dimension). Many gods in that dimension have a life-span of ten *Sagaropam* (a metaphoric unit of time). The life-span of Virangad god is also said to be ten *Sagaropam* (a metaphoric unit of time).

१५. से णं वीरंगए देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव अनंतरं चयं चइत्ता इहेव बारवईए नयरीए बलदेवस्स रन्नो रेवईए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने।

तए णं सा रेवई देवी तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सुमिणदंसणं, जाव उप्पिं पासायवरगए विहरइ।

तं एवं खलु वरदत्ता ! निसढेणं कुमारेणं अयमेयारूवे उराले मणुयइड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया।

"पभू णं भंते ! निसढे कुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वइत्तए ?"

हंता, पभू। से एवं भंते ! इह वरदत्ते अणगारे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं अरहा अरिट्ठनेमी अन्नया कयाइ बारवईओ नयरीओ जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ। निसढे कुमारे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. वह वीरांगद देव ब्रह्मदेव लोक से देव आयु पूर्ण करके वहाँ से च्यवन करके इसी द्वारवती नगरी में बलदेव राजा की रेवतीदेवी की कुक्षि में पुत्ररूप से उत्पन्न हुआ है।

(उसके जन्म से पूर्व) रेवतीदेवी ने उस सुखकारी शय्या पर सोते हुए सिंह का स्वप्न देखा। यथासमय बालक को जन्म दिया, वह तरुणावस्था को प्राप्त हुआ, पाणिग्रहण हुआ। यावत् उत्तम प्रासाद में सुख भोगते हुए जीवन बिता रहा है।

"हे वरदत्त ! इस निषधकुमार को इस प्रकार की ऐसी उत्तम मानव-जीवन सम्बन्धी ऋद्धि-समृद्धि प्राप्त हुई है।"

वरदत्त मुनि ने पुनः प्रश्न किया-"भंते ! क्या निषधकुमार आप देवानुप्रिय के पास प्रव्रजित होने के लिए समर्थ है ?"

भगवान अरिष्टनेमि ने कहा-"हाँ वरदत्त ! वह समर्थ है।

भंते ! आपका कथन यथार्थ है।" इत्यादि कहकर वरदत्त अनगार अपनी आत्मा को तप-संयम के साथ भावित करते हुए विचरने लगे।

इसके बाद किसी एक समय अर्हत् अरिष्टनेमि द्वारवती नगरी से प्रस्थान कर अन्य जनपदों में विचरण करने लगे। निषधकुमार जीव-अजीव आदि तत्त्वों का ज्ञाता बनकर श्रमणोपासक हो गया।

15. On completing his divine life-span in *Brahmalok Kalp* that Virangad god has descended and reincarnated in this Dvaravati city as the son of King Baldev and queen Revati.

(Before his birth) Queen Revati saw a lion in her dream while she was sleeping in her comfortable bed. In due course she gave birth to a son, he matured and was married. He spends his life enjoying mundane pleasures in his exclusive mansion.

O Vardatt ! This is why this Nishadh Kumar has acquired all this opulence of human life.

Ascetic Vardatt again asked—"*Bhante* ! Does Prince Nishadh have the ability to get initiated by you ?"

Bhagavan Arishtanemi said—"Yes, Vardatt, he has.

"*Bhante* ! What you say is, indeed, true." With these words ascetic Vardatt resumed his itinerant way enkindling his soul through austerities and ascetic-discipline.

In due course Arhat Arishtanemi left Dvaravati and wandered about in other inhabited areas. Acquiring the knowledge of fundamentals including the living and the non-living, Prince Nishadh became a *Shramanopasak* (a devotee of *Shramans*).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. तए णं से निसढे कुमारे अन्नया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव दब्भसंथारोवगए विहरइ। तए णं तस्स निसढस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-"धन्ना णं ते गामागर जाव संनिवेसा जत्थ णं अरहा अरिट्ठणेमी विहरइ। धन्ना णं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईओ जे णं अरिट्ठणेमिं वंदंति, नमंसंति जाव पज्जुवासंति। जइ णं अरहा अरिट्ठणेमी पुव्वाणुपुव्विं.... नंदणवणे विहरेज्जा, तए णं अहं अरहं अरिट्ठणेमिं वंदिज्जा जाव पज्जुवासिज्जा।

१६. तदनन्तर किसी समय निषधकुमार अपनी पौषधशाला में आया। आकर कुशा-(सूखी घास) के आसन पर बैठकर पौषधव्रत ग्रहण करके धर्मध्यान करने लगा। तब निषधकुमार को मध्य रात्रि के समय धार्मिक चिन्तन करते हुए हृदय की गहराई में इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-'उन ग्राम, आकर, सन्निवेशों के निवासी धन्य हैं जहाँ अर्हत् अरिष्टनेमि प्रभु विचरण करते हैं तथा वे राजा, ईश्वर (राजकुमार-युवराज), सार्थवाह आदि भी धन्य हैं जो अर्हत् अरिष्टनेमि प्रभु को वन्दन-नमस्कार करते हैं, उनकी पर्युपासना करने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। यदि अर्हत् अरिष्टनेमि ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए, यहाँ नन्दनवन में पधारें तो मैं उन अर्हत् अरिष्टनेमि प्रभु को वंदन-नमस्कार करूँगा यावत् पर्युपासना करने का लाभ प्राप्त करूँगा।

PRINCE NISHADH'S WISH

16. Then one day Prince Nishadh came to his *Paushadh-shala* (place of meditation). He sat on a mattress made of hay, took the *paushadh* vow (partial ascetic vow under which a householder lives like an initiated ascetic for a specific period) and commenced meditation. While Prince Nishadh was engrossed in meditation, a thought emerged from the depths of his heart—"Blessed are the inhabitants of those villages, and other inhabited areas where Arhat Arishtanemi moves about and also blessed are those kings, princes,... and so on up to... caravan chiefs who get the opportunity of paying homage to Arhat Arishtanemi and doing his worship. If moving from one village to another, Arhat Arishtanemi comes here in the Nandanavan I too will get the opportunity of paying homage to Arhat Arishtanemi and doing his worship."

निषधकुमार की दीक्षा : देवलोकोत्पत्ति

१७. तए णं अरहा अरिट्ठनेमी निसढस्स कुमारस्स अयमेयारूवमज्झत्थियं जाव वियाणित्ता अट्ठारसहिं समणसहस्सेहिं जाव नंदणवणे....। परिसा निग्गया।

तए णं निसढे कुमारे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ. चाउग्घंटेणं आसरहेणं निग्गए जहा जमाली, जाव अम्मापियरो आपुच्छित्ता पव्वइए, अणगारे जाए जाव गुत्तबम्भयारी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. निषधकुमार के अन्तःकरण में उठे इस प्रकार के मानसिक संकल्प को जानकर अर्हत् अरिष्टनेमि अठारह हजार श्रमणों के साथ ग्राम आदि में विहार करते हुए द्वारवती के नन्दनवन उद्यान में पधारे। उनके दर्शन-वन्दन आदि करने के लिए श्रद्धालुजन घरों से निकलकर उद्यान की तरफ चल पड़े।

तब निषधकुमार को भी अर्हत् अरिष्टनेमि के पदार्पण का संवाद मिला, वह हर्षित एवं परितुष्ट होता हुआ चार घण्टों वाले अश्वरथ पर आरूढ़ होकर जमालि की तरह अपने वैभव के साथ भगवान के दर्शन करने निकला, अन्त में माता-पिता से आज्ञा-अनुमति प्राप्त करके प्रव्रजित हुआ। यावत् गुप्त ब्रह्मचारी अनगार बन गया।

INITIATION AND INCARNATION IN DIVINE DIMENSION

17. Aware of Prince Nishadh's train of thoughts, Arhat Arishtanemi along with his eighteen thousand ascetic disciples, moving from one village to another, came to the Nandanavan garden in Dvaravati. People came out and moved in the direction of the garden to pay homage and obeisance to him.

Prince Nishadh also got the news of Arhat Arishtanemi's arrival and he was pleased and contented. Riding a four-bell chariot he also left, like Jamali, with all his grandeur and opulence, to pay homage to *Bhagavan*. In the end he also took permission from his parents, got initiated and became a completely celibate ascetic.

१८. तए णं से निसढे अणगारे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूइं चउत्थछट्ठ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं नववासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए।

१८. दीक्षित होकर निषध अनगार ने अर्हत् अरिष्टनेमि के उन तथारूप (उत्तम श्रुत-चारित्र सम्पन्न) स्थविरों के समीप सामायिक से लेकर ग्यारह अंगों का अध्ययन किया। चतुर्थ भक्त, षष्ट भक्त आदि अनेक प्रकार की तपःसाधना द्वारा आत्मा को भावित करते हुए पूरे नौ वर्ष तक श्रमण-पर्याय का पालन किया। श्रमण-पर्याय को पालन करते हुए बयालीस भक्तों (२१ दिन) को अनशन द्वारा छेद कर आलोचना और प्रतिक्रमण करके समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त किया।

18. After getting initiated ascetic Nishadh lived with the senior ascetic disciples of Arhat Arishtanemi and studied eleven *Angas* (the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts) including *Samayik*. After this he led ascetic life for nine years enkindling his soul by observing a variety of austerities including fasting for two or more days. In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of twenty one days duration and avoiding forty two meals embraced meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the moment of his death.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. तए णं से वरदत्ते अणगारे निसढं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव एवं वयासी-"एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए। से णं भंते ! निसढे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने ?"

"वरदत्ता" इ अरहा अरिट्ठणेमी वरदत्तं अणगारं एवं वयासी-"एवं खलु, वरदत्ता, ममं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए ममं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं नव वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चन्दिम-सूरिय-गहनक्खत्त-तारारूवाणं सोहम्मीसाण जाव अच्चुते तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणा वाससए वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धविमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं निसढस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।"

१९. तब वरदत्त अनगार निषधकुमार को काल प्राप्त हुआ जानकर अर्हत् अरिष्टनेमि प्रभु के समीप आये। आकर इस प्रकार निवेदन किया-"देवानुप्रिय ! आपका शिष्य निषध अनगार जो प्रकृति से भद्र, सरल और विनीत था वह काल को प्राप्त होकर कहाँ गया है ? कहाँ उत्पन्न हुआ है ?"

अर्हत् अरिष्टनेमि ने सम्बोधित कर वरदत्त अनगार को कहा-"वरदत्त ! मेरा अन्तेवासी निषध नामक अनगार जो प्रकृति से भद्र यावत् विनीत था, मेरे तथारूप स्थविरों के समीप सामायिक आदि से लेकर ग्यारह अंगों का अध्ययन करके, नौ वर्ष तक श्रमण-पर्याय का पालन किया। अनशन द्वारा बयालीस भोजनों का त्याग करके, पापस्थानों की आलोचना-प्रतिक्रमण करता हुआ समाधिस्थ होकर मरणावसर पर मरण प्राप्त करके ऊर्ध्वलोक में, चन्द्र-सूर्य-ग्रह-नक्षत्र-तारारूप ज्योतिष्क देव विमानों से ऊपर सौधर्म-ईशान आदि अच्युत देवलोकों का तथा तीन सौ अठारह ग्रैवेयक, विमानों का अतिक्रमण करके अर्थात् इनसे भी ऊपर सर्वार्थसिद्ध नामक विमान में देवरूप से उत्पन्न हुआ है। वहाँ पर देवों की तेतीस सागरोपम की स्थिति है।

19. Then realizing that ascetic Nishadh had met his end ascetic Varadatt came to Arhat Arishtanemi and conveyed—"Beloved of gods ! Where has your noble, simple, and humble disciple ascetic Nishadh gone after his death ? Where has he reincarnated ?

Arhat Arishtanemi replied—"Varadatt ! My noble, simple, and humble disciple ascetic Nishadh lived with my senior ascetic disciples and studied eleven *Angas* (the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts) including *Samayik*. After this he led ascetic life for nine years enkindling his soul by observing a variety of austerities including fasting for two or more days. In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of twenty one days duration and avoiding forty two meals embraced meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the moment

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

of his death. Crossing the stellar dimensions including the moon, the sun, planets, constellations and stars; the *Achyut* dimensions including *Saudharm* and *Ishan*; the three hundred eighteen *Graiveyak Vimans* and going even higher he has reincarnated as a god in the *Sarvarthasiddha Viman* (celestial vehicle). Gods in that dimension have a life-span of thirty three *Sagaropam* (a metaphoric unit of time)."

निषध का मुक्तिगमन

२०. "से णं भंते ! निसढे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ?"

वरदत्ता ! इहेव जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उन्नाए नगरे विसुद्धपिइवंसे रायकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। तए णं से उम्मुक्कबालभावे विन्नयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलबोहिं बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वज्जिहिइ। से णं तत्थ अणगारे भविस्सए इरियासमिए जाव गुत्तबम्भयारी।

से णं तत्थ बहूइं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहि तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणिस्सइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसिहिइ, झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइहिइ, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुण्डभावे अण्हाणए जाव अदंतवणए अच्छत्तए अणोवाहणाए फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बम्भचेरवासे परघरपवेसे पिण्डवाओ लद्धावलद्धे उच्चावया य गामकंटगा अहियासिज्जइ, तमट्ठं आराहिइ, आराहित्ता चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणं अंतं काहिइ।"

निक्खेवओ—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं वण्हिदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते। त्ति बेमि।

एवं सेसा वि एक्कारस अज्झयणा नेयव्वा संहगणी—अणुसारेण अहीणमइरित्त एक्कारससु वि।

॥ पञ्चमो वग्गो समत्तो ॥

२०. यह सुनकर वरदत्त अनगार ने पुनः पूछा—"भन्ते ! वह निषध देव उस देवलोक से आयुक्षय, भवक्षय और स्थितिक्षय होने के पश्चात् वहाँ से च्यवन करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?"

भगवान अरिष्टनेमि ने उत्तर दिया—'आयुष्मन् वरदत्त ! इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप के महाविदेह क्षेत्र के उन्नाक नगर में विशुद्ध पितृवंश वाले एक राजकुल में पुत्र रूप में जन्म लेगा। वहाँ बाल्यावस्था बीत जाने पर सवयस्क होकर युवावस्था को प्राप्त होने पर तथारूप स्थविरों के समीप केवलबोधि अर्थात् सम्यग्ज्ञान प्राप्त कर गृहस्थ जीवन त्यागकर अनगार प्रव्रज्या को अंगीकार करेगा। वह ईर्यासमिति आदि से सम्पन्न यावत् गुप्त ब्रह्मचारी अनगार बन जायेगा।

वह अनगार बनकर अनेक प्रकार की चतुर्थभक्त, षष्ठभक्त, अष्टमभक्त, दसमभक्त, द्वादशभक्त, मासखमण, अर्ध-मासखमण रूप विचित्र तपःसाधना द्वारा आत्मा को शुद्ध करते हुए बहुत वर्षों तक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण-पर्याय का पालन करेगा। श्रमण-पर्याय का पालन करके एक मास की संलेखना द्वारा आत्मा को विशुद्ध करेगा, साठ भोजनों का अनशन द्वारा त्याग करेगा और जिस प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए नग्नभाव (ममत्व त्याग), मुंडभाव (द्रव्य भाव रूप से मुण्डित होना), स्नानत्याग, दाँत धोने का त्याग, छत्र का त्याग, उपानह (जूता, पादुका आदि) का त्याग तथा पाट पर सोना, काष्ट तृण आदि पर सोना-बैठना, केश लुंचन करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, भिक्षा के लिए पर-गृह में प्रवेश करना, भिक्षा में जैसा मिला उसी में निर्वाह करना, ऊँचे-नीचे अर्थात् अच्छे-बुरे शब्दों द्वारा होने वाले इन्द्रियों को चुभने वाले काँटों (कष्टों) को सहन करना इत्यादि नियमों की आराधना करेगा और आराधना करके अन्तिम श्वासोच्छ्वास में सिद्ध होगा, बुद्ध होगा, यावत् सर्व दुःखों का अन्त करेगा।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं-"इस प्रकार आयुष्मन् जम्बू ! मुक्ति को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने वृष्णिदशा (वह्निदशा) के प्रथम अध्ययन का यह उपर्युक्त भाव प्रतिपादित किया है। ऐसा मैं कहता हूँ।"

इसी प्रकार से शेष ग्यारह अध्ययनों का भाव भी संग्रहणी-गाथा के अनुसार दो से बारह तक के पात्रों के नाम पूर्व सूत्र २ में बताये गये हैं, उन्हें बिना किसी हीनाधिकता के जैसा का तैसा जान लेना चाहिए।

॥ पंचम वर्ग समाप्त ॥

LIBERATION OF NISHADH

20. On hearing this ascetic Vardatt asked further—"*Bhante* ! Completing the age, state, and life in the dimension of gods and descending from that abode of gods, where will that Nishadh Dev go ? (Where will he be born ?)"

Bhagavan Arishtanemi said, "Vardatt ! He will be born as a prince in a royal family of a noble clan in Unnak city in the Mahavideh area of the Jambudveep continent. Crossing his childhood and maturing into youth he will get enlightened by senior ascetics, acquire righteous knowledge, renounce his household and get initiated. He will become a completely celibate ascetic observing self regulation and other ascetic codes.

After this he will lead ascetic life for many years enkindling his soul by observing a variety of unusual austerities including fasting for one, two, three, four, five, six, seven, eight, nine, or ten days, a fortnight or a month. Then he will purify his soul by observing the ultimate vow (*sallekhana*) of month long duration avoiding sixty meals. During this period he will follow all the codes including sleeping on a plank, reclining and sitting on wood and hay, pulling out hair, remaining celibate, entering houses of others to seek alms, living only on whatever alms are offered, enduring pricks of pleasant and unpleasant words piercing the sense organs, etc. in order to attain the goal for which he had become unclad (detached), got tonsured (physically and mentally), abandoning bathing, brushing of teeth, using umbrella and shoes. Observing these codes, in his last breath, he will finally become a *Siddha* (liberated soul) and Buddha (enlightened) ending all miseries."

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Sudharma Swami concluded, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Vrishni Dasha*. So I state."

Remaining eleven chapters also follow the same pattern without any deletion or addition for the characters listed in aforesaid aphorism-2 and information contained in the *Sangrahani Gatha* (collective verse which is not available in the text).

● END OF THE FIFTH SECTION TITLED VRISHNIDASHA ●

ग्रन्थ की अन्तिम प्रशस्ति

२१. निरयावलियासुयखंधो समत्तो। समत्ताणि उवंगाणि।

निरयावलियाउवंगेणं एगो सुयखंधो, पञ्च वग्गो, पञ्चसु दिवसेसु उद्दिस्संति। तत्थ चउसु वग्गेसु दस दस उद्देसगा, पञ्चमवग्गे बारस उद्देसगा।

॥ निरयावलियासुत्तं समत्तं ॥

२१. निरयावलिका नामक श्रुतस्कंध समाप्त हुआ। उसके साथ ही (पाँच) उपांगों का वर्णन भी पूर्ण हुआ।

निरयावलिका उपांग में एक श्रुतस्कन्ध है। उसके पाँच वर्ग हैं, जिनका पाँच दिनों में वाचन किया जाता है। आदि के चार वर्गों में दस-दस उद्देशक हैं और पाँचवें वर्ग में बारह उद्देशक हैं। यों कुल मिलाकर ५२ उद्देशक हैं।

॥ निरयावलिकासूत्र समाप्त ॥

CONCLUDING VERSE

21. Thus ends the *Shrutskandh* titled *Niryavalika*. With it is concluded the narration of the (five) *Upangas*.

In the *Upanga* titled *Niryavalika* there is one *Shrutskandh* (part). It has five sections (*varg*) that are read and recited in five days. The first four sections have ten chapters each and the fifth section has twelve chapters. Thus the total number of chapters in the book is fifty two.

● END OF NIRYAVALIKA SUTRA ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचम गणधर, भगवत् सुधर्मा स्वामिप्रणीत षष्ठम अंग आगम

विपाक सूत्र

*

The Sixth Anga Agam by The Fifth Ganadhar, Bhagavat Sudharma Swami

VIPAAK SUTRA

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स
विपाकश्रुत

प्रथम श्रुतस्कन्ध : प्रथम अध्ययन

उपोद्‌घात

यह ग्यारहवाँ अंग, 'विपाकश्रुत' नाम से प्रसिद्ध है। विपाक का अर्थ है, जीव के शुभ–अशुभ कर्मों का फल। उनका प्रतिपादन करने वाला शास्त्र है विपाकश्रुत। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध में अशुभ कर्मों के कटु फल–विपाक का वर्णन है, इसलिए इसका प्रसिद्ध नाम है **दुःख–विपाक**।

दूसरे श्रुतस्कंध में शुभकर्मों के शुभ फल–विपाक का वर्णन होने से 'सुख–विपाक' नाम से जाना जाता है। प्रत्येक श्रुतस्कंध के दस–दस अध्ययन हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध का प्रथम अध्ययन 'मृगापुत्र' है। यह अध्ययन विस्तृत है, आगे के सभी अध्ययन संक्षिप्त है।

प्रथम अध्ययन में मृगाग्राम के विजय क्षत्रिय की मृगारानी के पुत्र का वर्णन है। यह वर्णन इतना हृदय द्रावक है जिसे पढ़ने और सुनने से ही आत्मा काँप उठती है। हिंसा आदि अशुभ–क्रूर कर्मों के परिणामों पर विचार कर हृदय में पाप कर्मों से ग्लानि एवं विरक्ति होने लगती है। मृगापुत्र की दयनीय; वीभत्स दशा देखकर गौतम स्वामी जैसे महाज्ञानी का हृदय भी द्रवित हो उठा तो साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या?

मनुष्य प्राणी सुख प्रिय है, दुःखों से घबराता है। सुख मिले या न मिले, किन्तु वह दुःख तो नहीं चाहता। इसलिए सर्वप्रथम दुःख–निवृत्ति की इच्छा रखता है। इस मनोविज्ञान के आधार पर इस शास्त्र में पहले दुःख–विपाक सूत्र में दुःख और दुःख के मूल कारणों पर बड़ी ही रोचक शैली में प्रकाश डाला है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Namotthunam Samanassa Bhagavao Mahavirassa

VIPAAK SHRUT

First Shrutskandh : First Chapter

INTRODUCTION

This eleventh *Anga* (The primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts. This consists of twelve treatises, eleven of which are extant according to the Shvetambar tradition.) is popularly known as *Vipaak Shrut. Vipaak* means the fruits of the good and bad *karmas* acquired by a soul. The scripture where these are described is called *Vipaak Shrut.* It has two *Shrutskandhs* (parts). The first *Shrutskandh* describes the bitter fruits of bad *karmas.* Accordingly it is popularly known as *Duhkha-vipaak* (fruits of bad or ignoble *karmas*)

As the second *Shrutskandh* describes the fruits of good or noble *karmas* it is known as *Sukha-vipaak.* Each of these parts contains ten chapters. The first chapter of the first part is titled Mrigaputra. This is an elaborate chapter and all the following chapters are brief.

The first chapter contains the story of the son of Vijaya Kshatriya and Mrigarani of Mrigagram. This story is so heart-rending that mere reading or listening to it makes one shiver. Thinking about the consequences of violence and other bad and cruel deeds makes one detest and abhor sinful activity. What to say of an ordinary human being when a great sage like Gautam Swami was touched by horrible and pathetic condition of Mrigaputra.

Man loves pleasure and detests pain. Whether he gets pleasure or not, he certainly does not desire pain. Therefore, his first priority is to be rid of pain. Based on this psychological fact, this scripture initially throws light on sorrow and its root causes in a lucid style in its first part, *Duhkha-vipaak.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम अध्ययन
FIRST CHAPTER

उत्क्षेप (प्रस्तावना)

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। वण्णओ। पुण्णभद्दे चेइए। वण्णओ।

१. उस काल (इसी अवसर्पिणी काल) और उस समय (जब सुधर्मा स्वामी यह कथन कर रहे हैं) में चम्पा नाम एक नगरी थी। चम्पा नगरी का वर्णन औपपातिक सूत्र में आये वर्णन के ही समान समझ लेना चाहिए। (उस नगरी के बाहर ईशानकोण में) पूर्णभद्र नामक एक चैत्य-उद्यान था। पूर्णभद्र चैत्य का वर्णन भी औपपातिक सूत्र के अनुसार जान लेना चाहिए।

FOREWORD

1. During that period (end of the fourth section of the current descending cycle of time) of time (when Arya Sudharma was narrating this text) there was a city called Champa. Description of Champa city should be read as in *Aupapatik Sutra*. (Outside the city, in the north-eastern direction) their was Purnabhadra Chaitya (*Yaksha* temple complex). Description of Purnabhadra Chaitya should also be read as in *Aupapatik Sutra*.

सुधर्मास्वामी का आगमन

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं अणगारे जाइसंपन्ने वण्णओ। चउद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव चंपानयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं जाव विहरइ। परिसा निग्गया। धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

२. उस समय में श्रमण भगवान महावीर के अंतेवासी-(निकट रहने वाले व आज्ञानुवर्ती) शिष्य सुधर्मा स्वामी विद्यमान थे। वे आर्य सुधर्मा उत्तम जाति (सुयोग्य गुण सम्पन्न माता के गर्भ से) में जन्मे, उत्तम शरीर वाले, श्रेष्ठ आचार गुणों से सम्पन्न एवं चौदह पूर्वों के ज्ञाता थे। मति, श्रुत, अवधि तथा मनःपर्यव-चार ज्ञान के धारक थे। पाँच सौ अणगारों के साथ ग्रामानुग्राम विहार करते हुए चम्पानगरी के पूर्णभद्र चैत्य में पधारे। वहाँ आकर साधु मर्यादा के अनुसार आज्ञा आदि ग्रहण कर ठहर गये। उनके दर्शन करने एवं धर्म सुनने के लिए जन समूह उमड़ पड़ा। सुधर्मा स्वामी ने धर्म का उपदेश दिया। धर्मोपदेश सुनकर जनसमूह वापस अपने-अपने स्थान को चला गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ARRIVAL OF SUDHARMA SWAMI

2. During that period of time Arya Sudharma, a disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, was living. He belonged to a prominent family and caste (born of an able and virtuous mother). Besides being strong, handsome, and humble he was also endowed with loftiest of virtues. He had the complete knowledge of all the fourteen *Purvas* (subtle canon) and possessed all the four branches of knowledge, namely *mati, shrut, avadhi* and *manahparyav jnana* (sensory knowledge, scriptural knowledge, extrasensory perception of the physical dimension, and extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings). Wandering from one village to another, along with his five hundred disciples, Sudharma Swami arrived at the Purnabhadra Chaitya in the town of Champa. After seeking formal permission he camped there. Throngs of people came to attend his discourse. Sudharma Swami gave a discourse and then the masses returned home.

जम्बू अणगार की जिज्ञासा

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे सत्तुस्सेहे, जहा गोयमसामी तहा, जाव विहरइ।

तए णं अज्जजंबू नामं अणगारे जायसड्ढे जेणेव अज्जसुहम्मे अणगारे तेणेव उवागए, तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता जाव पज्जुवासइ, पज्जुवासित्ता एवं वयासी।

३. उस समय में आर्य सुधर्मा स्वामी के अंतेवासी सभी शिष्यों में प्रमुख जम्बू अणगार थे। उनका शरीर सात हाथ ऊँचा (यह प्रमाण उत्सेधांगुल से है) अत्यन्त रूपवान और तेजोदीप्त था। ज्ञाताधर्मकथांग में सुधर्मा स्वामी का जैसा वर्णन है, उसी अनुसार यहाँ जम्बू अणगार के विषय में जानना चाहिए।

जम्बू अणगार आर्य सुधर्मा के निकट बैठे उनकी पर्युपासना कर रहे थे। उस समय उनके मन में श्रद्धा–जानने की इच्छा जागृत हुई। अपने आसन से उठकर आर्य सुधर्मा के निकट आये। अंजलिबद्ध होकर तीन बार दायें से बायें प्रदक्षिणा करके वन्दना–नमस्कार किया। फिर उनके सामने न अधिक दूर न अधिक निकट उचित स्थान पर बैठकर सेवा–पर्युपासना करते हुए विनयपूर्वक इस प्रकार बोले–

CURIOSITY OF ASCETIC JAMBU

3. During that period of time Arya Jambu was the senior most among the disciples of Arya Sudharma Swami. He was seven cubits tall (in *Utsedhangul* units or standard of fragmentary units of *angul* or the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

breadth of finger; for details refer to *Anuyogadvar* 345), very handsome and radiant. The description of his virtues should be read as those of Sudharma Swami mentioned in *Jnata Dharma Kathanga*.

He was sitting near and absorbed in worship of Arya Sudharma Swami. At that time a curiosity sparked in his mind. He got up and approached Sudharma Swami. He circum-ambulated Sudharma Swami three times clockwise, uttered a panegyric, and bowed before him. He sat down neither very far nor very near Sudharma Swami and humbly and respectfully spoke—

४. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दसमस्स अंगस्स पण्हावागरणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, एक्कारसमस्स णं भंते ! अंगस्स विवागसुयस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

४. हे भगवन् । मोक्ष को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने प्रश्नव्याकरण नामक दसवें अंग का (पूर्वोक्त) भाव कहा है तो विपाकश्रुत नामक ग्यारहवें अंग का क्या भाव कथन किया है ?

4. "*Bhante* ! If this is the text and meaning of the tenth *Anga* named *Prashna Vyakaran* as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained the Siddha-state, what is the text and meaning of the eleventh *Anga, Vipaak Shrut,* as given by him ?"

सुधर्मा स्वामी का समाधान

५. तए णं अज्जसुहम्मे अणगारे जंबुं अणगारं एवं वयासी—"एवं खलु, जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता; तं जहा—दुहविवागा य सुहविवागा य।"

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता, तं जहा—दुहविवागा य सुहविवागा या, पढमस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ?

५. तदनन्तर आर्य सुधर्मा अणगार ने जम्बू अणगार को इस प्रकार कहा—हे जम्बू ! मोक्ष को संप्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने विपाकश्रुत नाम के ग्यारहवें अंग के दो श्रुतस्कन्ध प्रतिपादित किये हैं, जैसे कि—दुःखविपाक और सुखविपाक।

जम्बू—भगवन् ! यदि श्रमण भगवान महावीर ने एकादशवें अंग विपाकश्रुत के दुःखविपाक और सुखविपाक नामक दो श्रुतस्कन्ध कहे हैं, तो भंते ! दुःखविपाक नामक प्रथम श्रुतस्कन्ध के कितने अध्ययन कहें हैं ?

REPLY BY SUDHARMA SWAMI

5. Sudharma Swami said to ascetic Jambu—"O Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the eleventh

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Anga in two parts—(1) *Duhkha-vipaak* (fruits of bad or ignoble *karmas*) and (2) *Sukha-vipaak* (fruits of good or noble *karmas*).

Jambu—"*Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the eleventh *Anga* in two parts, *Duhkha-vipaak* and *Sukha-vipaak*, then according to him how many chapters are there in the first part titled *Duhkha-vipaak* ?"

६. तए णं अज्जसुहम्मे अणगारे जंबुं एवं वयासी–एवं खलु जंबू ! समणेणं आइगरेणं तित्थयरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्झयणा, पन्नत्ता, तं जहा–

मियापुत्ते य उज्झियए, अभग्ग सगडे बहस्सई नंदी।
उंबर सोरियदत्ते य, देवदत्ता य अंजू य॥१॥

६. आर्य सुधर्मा ने जम्बू अनगार को इस प्रकार कहा–'हे जम्बू ! धर्म की आदि करने वाले, धर्म तीर्थप्रवर्तक, मोक्ष को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने दुःखविपाक के दस अध्ययन इस प्रकार कहे हैं–

(१) मृगापुत्र, (२) उज्झितक, (३) अभग्नसेन, (४) शकट, (५) बृहस्पति, (६) नन्दिवर्धन, (७) उम्बरदत्त, (८) शौरिकदत्त, (९) देवदत्ता, और (१०) अंजू।

6. "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who is the first propagater of *dharma* (*Aaigare* or *Aadikar*), the religious ford-maker (*Titthagare* or *Tirthankar*),... and so on up to... who has attained liberation has preached ten chapters of *Duhkha-vipaak*. They are—

(1) Mrigaputra, (2) Ujjhitak, (3) Abhagnasen, (4) Shakat, (5) Brihaspati, (6) Nandivardhan, (7) Umbardatt, (8) Shaurik Datt, (9) Devadatta, and (10) Anju".

प्रथम अध्ययन

७. 'जइ णं भंते ! समणेणं आइगरेणं तित्थयरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता; तं जहा–मियापुत्ते य जाव अंजू य, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?'

तए णं से सुहम्मे जंबुं अणगारं एवं वयासी–"एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं मियग्गामे नामं नयरे होत्था। वण्णओ। तत्थ णं सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खायणं होत्था, चिराइए जहा पुण्णभद्दे।

७. भंते ! धर्म की आदि करने वाले, तीर्थंकर, मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने दुःखविपाक के मृगापुत्र से लेकर अंजू पर्यन्त दश अध्ययन कहे हैं तो दुखविपाक के प्रथम अध्ययन का क्या भाव कहा है ?

उत्तर में आर्य सुधर्मा कहते हैं–जम्बू ! उस काल उस समय में मृगाग्राम नाम का एक नगर था, (जिसका वर्णन औपपातिक सूत्र में किये गये नगरवर्णन के समान जान लेना चाहिए।) उस मृगाग्राम नगर के बाहर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तर पूर्व दिशा के मध्य अर्थात् ईशान कोण में सब ऋतुओं में फलने वाले पुष्प, फल आदि से युक्त चन्दनपादप नामक एक उपवन था। उस उद्यान में सुधर्मा नामक यक्ष का एक प्राचीन यक्षायतन था जिसका वर्णन पूर्णभद्र (औपपातिक सूत्र) यक्षायतन की तरह समझना चाहिए।

FIRST CHAPTER

7. *Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, the first propagater of *dharma*, the *Tirthankar*, and who has attained liberation, has preached ten chapters of *Duhkha-vipaak* from Mrigaputra to Anju, then what is the text and meaning of the first chapter of *Duhkha-vipaak* ?

Arya Sudharma replied—Jambu ! During that period of time there was a town named Mrigagram (the details should be read from the description of city mentioned in *Aupapatik Sutra*). In the north-eastern direction (*Ishan Kone*) outside this town was a garden named Chandanapadap having trees bearing all season flowers and fruits. In that garden there was an ancient temple of Sudharma Yaksh. The details of this should be read from the description of Purnabhadra Yaksh temple (*Aupapatik Sutra*).

विवेचन—प्रस्तुत आगम में मुख्यतः चार स्थानों पर "**वण्णओ**" पद का प्रयोग मिलता है–प्रथम नगर वर्णन के लिए दूसरा उद्यान के साथ, तीसरा राजा और चौथा रानी के साथ। जैनागमों की अपनी एक पारम्परिक प्रणाली रही है कि यदि किसी एक आगम में किसी उद्यान, नगर, चैत्य, राजा, रानी, संयमशील साधु का सांगोपांग वर्णन कर दिया हो, तब प्रसंगवश उस वर्णन को पुनः नहीं दुहराते हुए निर्दिष्ट आगम से उसका वर्णन जान लेने के लिए '**वण्णओ**' ऐसा सांकेतिक शब्द निर्दिष्ट किया जाता है। अतः जहाँ कहीं वण्णओ शब्द का संकेत हो वहाँ औपपातिक सूत्र में वर्णित नगर, उद्यान, यक्ष, यक्षायतन, राजा व रानी के वर्णन की तरह समझ लेना चाहिए। '**वण्णओ**' के समान ही '**जाव**' शब्द भी अन्य स्थान से वर्णन जान लेने का संकेत करता है।

Elaboration—In this *Agam* the word *'Vannao'* has been mainly used in four instances—with description of a city, garden, king, and queen. This is a style traditionally accepted in Jain *Agams* that when complete details of some garden, city, king, queen, or practicing ascetic have been narrated in one particular *Agam*, it is not generally repeated elsewhere. Instead, using the term *'Vannao'* (*varnan* or description) it is advised to read the description from that specific *Agam*. Thus wherever *'Vannao'* is mentioned it should taken as an indication to read the description of a city, garden, king, and queen from *Aupapatik Sutra*. Like *'Vannao'* the term *'Java'* is also used to indicate to read description from some other place. In place of *Vannao* we will use the word description in parenthesis.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. तत्थ णं मियग्गामे नयरे विजय नामं खत्तिए राया परिवसइ, वण्णओ। तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स मिया नामं देवी होत्था। अहीण.। वण्णओ। तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए होत्था। जाइ-अंधे, जाइ-मूए, जाइ-बहिरे, जाइ-पंगुले, हुंडे य वायवे य। नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा णासा वा। केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिई आगिइमित्ते।

तए णं सा मियादेवी तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ।

८. उस मृगाग्राम नगर में विजय नाम का एक क्षत्रिय राजा था। उस विजय नामक क्षत्रिय राजा की मृगा नामक रानी थी। वह सर्वांगसुन्दरी निर्दोष परिपूर्ण पाँचों इन्द्रियाँ वाली थीं (रानी का रूप-लावण्य औपपातिक सूत्र में किये गये राज्ञीवर्णन के समान जान लेवें) उस विजय क्षत्रिय का पुत्र और मृगा देवी का आत्मज मृगापुत्र नाम का एक दारक बालक था। वह बालक जन्म के समय से ही अन्धा, गूंगा, बहरा, लूला, हुण्ड संस्थान (उसके शरीर के सभी अवयव बिना ढंग के-बेढब थे) वाला था। वह जन्म से ही वातरोग से पीड़ित था। उस बालक के हाथ, पैर, कान, आँख और नाक भी न थे। इन अंगोपांगों की केवल आकृति (चिह्न) ही थी और वह आकृति भी नाम-मात्र की थी।

वह मृगादेवी गुप्त भूमिगृह (मकान के नीचे के तलघर) में गुप्तरूप से आहारादि के द्वारा उस बालक का पालन-पोषण करती रहती थी।

CONGENITAL BLIND MRIGAPUTRA

8. In that Mrigagram city lived a *Kshatriya* King named Vijaya (description as in *Aupapatik Sutra*). That *Kshatriya* King named Vijaya had a queen named Mriga. She was perfectly beautiful and had fully developed sense organs (description as in *Aupapatik Sutra*). That Vijaya Kshatriya and Mriga had a son named Mrigaputra. Since his birth that child was blind, dumb, deaf, crippled and was with *hund-samsthan* (crooked-constitution; a body constitution where almost every part of the body is deformed and disfigured). He suffered from congenital rheumatism (*vaat-roag*). That child had no hands, feet, ears or nose. He only had mere outlines of these parts and those too for namesake.

Therefore, that Mriga Devi was feeding and bringing up that child under wraps in a secret cellar.

विवेचन—चरक संहिता के अनुसार वातरोग ८० प्रकार के होते हैं। जैसे पीठ का जकड़ जाना, गर्दन टेढ़ी हो जाना, अंगों का सुन्न हो जाना आदि। वातरोग सबसे उग्र व भयानक होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—According to *Charak Samhita* there are 80 kinds of diseases caused due to disturbed *vaat* (one of the body humours). Some of these are—stiff back, bent neck, and parts of body going numb. Rheumatism and gout are also caused by disturbed *vaat*. These are highly disturbing and chronic ailments.

जाति अंध पुरुष का समवसरण में आगमन

९. तत्थ णं मियग्गामे नयरे एगे जाइअंधे पुरिसे परिवसइ। से णं एगेणं सचक्खुएणं पुरिसेणं पुरओ दंडएणं पगड्ढिज्जमाणे पगड्ढिज्जमाणे फुट्टहडाहडसीसे मच्छियाचडगरपहकरेणं णन्निज्ज माणमग्गे मियग्गामे नयरे गिहे गिहे कालुणवडियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ।

९. उस मृगाग्राम में एक जन्मान्ध पुरुष रहता था। आँखों वाला एक पुरुष उसकी लकड़ी पकड़कर उसके आगे-आगे चलता रहता था। उसी की सहायता से वह नगर में भ्रमण करता था। उसके मस्तक के बाल रूखे और बिखरे हुए अत्यन्त अस्त-व्यस्त थे। (अत्यन्त मैला-कुचेला रहने क कारण-) उसके आगे-पीछे मक्खियों के झुण्ड के झुण्ड भिनभिनाते रहते थे। (वह देखने में अत्यन्त घृणास्पद लगता था) वह जन्मान्ध पुरुष मृगाग्राम नगर के घर-घर में अत्यन्त दीन-दयनीय वचन बोलता हुआ भीख माँगकर अपनी आजीविका चला रहा था।

ARRIVAL OF A BLIND PERSON IN SAMAVASARAN

9. In that Mrigagram city lived a congenital blind. A person with normal vision always guided him holding his stick. Only with the help of this person he moved around in the city. His hair were shriveled and disheveled. Swarms of houseflies hovered around him (so dirty and repulsive was he). That blind person earned his livelihood by humbly and pitifully seeking alms door to door in Mrigagram city.

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए। जाव परिसा निग्गया। तए णं से विजए खत्तिए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे, जहा कूणिए तहा निग्गए जाव पज्जुवासइ।

१०. उस समय में श्रमण भगवान महावीर (नगर के बाहर चन्दनपादप उद्यान में) पधारे। भगवान के पदार्पण के समाचार जानकर जनता दर्शनार्थ आई। विजय नामक क्षत्रिय राजा भी महाराजा कूणिक की तरह भगवान के शुभागमन के समाचार पाकर दर्शनार्थ निकला। समवसरण में जाकर भगवान की पर्युपासना-सेवा-भक्ति करने लगा।

10. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived (in Chandanapadap garden outside the city). Getting the news of *Bhagavan's* arrival people came to pay homage. Like king Kunik the *Kshatriya* king Vijaya also came out to pay homage. Going to the *Samavasaran* he commenced *Bhagavan's* worship.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. तए णं से जाइअंधे पुरिसे तं महया जणसद्दं जाव सुणेत्ता तं पुरिसं एवं वयासी–"किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति ?"

तए णं से पुरिसे जाइअंधपुरिसं एवं वयासी–"नो खलु, देवाणुप्पिया ! इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छइ। समणे जाव विहरइ। तए णं एए जाव निग्गच्छंति।'

तए णं से जाइअंधपुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी–'गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! अम्हे वि समणं भगवं जाव पज्जुवासामो।"

तए णं जाइअंधे पुरिसे तेणं पुरओदंडएणं पुरिसेणं पगड्डिज्जमाणे पगड्डिज्जमाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उगावए, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे विजयस्स खत्तियस्स तीसे य.... धम्ममाइक्खइ, जाव परिसा पडिगया, विजए वि गए।

११. उस समय उस जन्मान्ध पुरुष ने नगर में लोगों के आवागमन का कोलाहलमय वातावरण सुना, तब अपने सहायक पुरुष से इस प्रकार पूछा–हे देवानुप्रिय ! क्या आज मृगाग्राम नगर में कोई इन्द्र–महोत्सव आदि है ? अथवा उद्यान की या पर्वत की कोई यात्रा है ? जिसके कारण सभी लोग एक ही दिशा में नगर के बाहर जा रहे हैं।

उस पुरुष ने जन्मान्ध पुरुष से कहा–देवानुप्रिय ! आज इस नगर में इन्द्रमहोत्सव आदि कुछ नहीं है; किन्तु नगर के बाहर चन्दनपादप उद्यान में श्रमण भगवान महावीर स्वामी पधारे हैं; वहाँ ये सब लोक दर्शनार्थ जा रहे हैं।

तब उस जन्मान्ध पुरुष ने उस सहायक पुरुष से कहा–ऐसा है तो चलो, हम भी चलें और चलकर भगवान की पर्युपासना करें।

तब दण्ड पकड़कर आगे चलता हुआ वह पुरुष उस जन्मान्ध पुरुष को जहाँ पर श्रमण भगवान महावीर स्वामी विराजमान थे वहाँ पर ले आया। वहाँ आकर वह तीन बार प्रदक्षिणा करता है। प्रदक्षिणा करके वन्दन–नमस्कार करता है। फिर भगवान की पर्युपासना–सेवा भक्ति करने लगा। तब श्रमण भगवान महावीर ने विजय राजा सहित नगर की जनता को धर्मोपदेश दिया। धर्मोपदेश सुनकर विजय राजा तथा परिषद् यथास्थान वापस चले गये।

11. At that time the person who was blind by birth listened to the commotion and asked his guide—"Beloved of gods ! Is their some divine festival or celebration in Mrigagram city ? Or there is some procession going to a garden or a hill ? Why all these people are going out of the city in the same direction ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

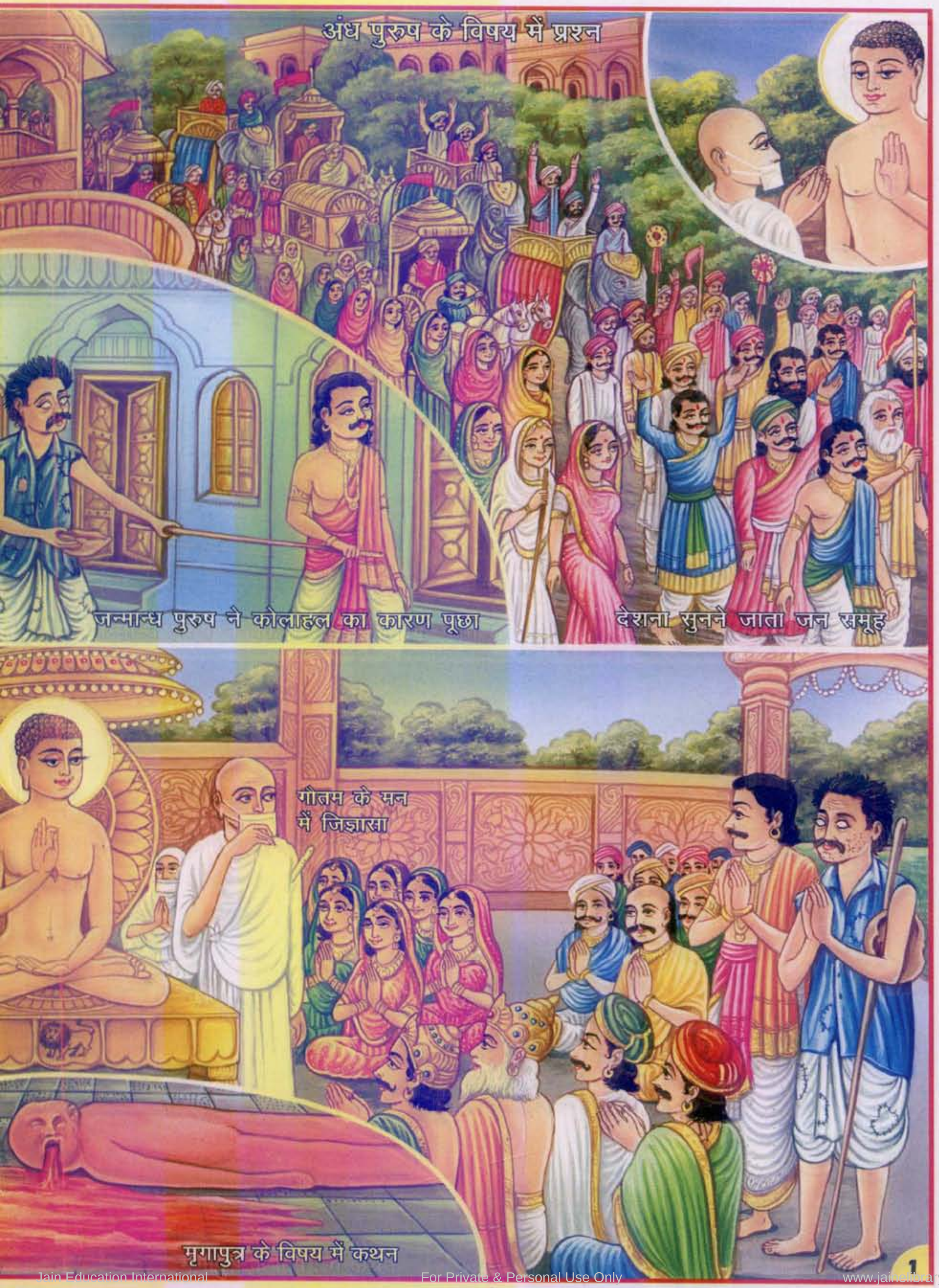

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-१

Illustration No. 1

अंध पुरुष के विषय में जिज्ञासा

दृश्य—१

एक समय भगवान महावीर मृगाग्राम में पधारे। गणधर गौतम गोचरी करने नगर में गये। वहाँ एक ऐसे जन्मान्ध पुरुष को देखा, जिसे एक आँखों वाला पुरुष लट्ठी पकड़कर लेकर चलता है। वह अंध पुरुष घर-घर में बड़ी करुण आर्त पुकार करता हुआ भिक्षा माँगता है।

नगर जन भगवान के दर्शन करने जाते हैं। कोलाहल सुनकर अंध पुरुष पूछता है, तो उसने बताया— नगर में भगवान महावीर पधारे हैं। ये सब उनके दर्शन हेतु जा रहे हैं। अंध पुरुष भी समवसरण में आकर वन्दना करता है।

दृश्य—२

गणधर गौतम ने उसी जन्मान्ध पुरुष को आते देखा तो उनके मन में कुतूहल भरी जिज्ञासा उत्पन्न हुई—भंते ! क्या इस जन्मान्ध पुरुष जैसा कोई अन्य पुरुष भी इस नगर में है ?

तब भगवान मृगापुत्र के विषय में बताते हैं।

-श्रुतस्कन्ध १, अ. १, सूत्र ५-१०

CURIOSITY ABOUT THE BLIND MAN

SCENE-1

Once Bhagavan Mahavir arrived in Mrigagram. Ganadhar Gautam went into the city to collect alms. He saw a person blind by birth, led by a person holding his stick. That blind person begs in pathetic voice for alms door to door.

People from the city go to pay homage to *Bhagavan*. The blind person heard the commotion and asked his guide about the cause. That person informed that Bhagavan Mahavir has arrived and people are going there to pay homage. The blind man also goes to the *Samavasaran* and pays homage.

SCENE-2

When Ganadhar Gautam saw the blind man he became curious—"*Bhante* ! Is there some other person like this blind man ?"

In reply *Bhagavan* informs him about Mrigaputra.

—Sec. I, Ch. 1, Sutra : 5-10

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

That person replied to the blind man—"Beloved of gods ! There is nothing like a divine festival in the city but Shraman Bhagavan Mahavir has arrived in Chandanapadap garden outside the city. These people are going there to pay homage."

The blind man said to his guide—"Beloved of gods ! Come, let us go as well and worship *Bhagavan*."

Then the guide holding the stick of the blind man led him to the place where Shraman Bhagavan Mahavir was seated. The blind man circumambulated *Bhagavan* three times and paid homage and obeisance. He then commenced *Bhagavan's* worship. Shraman Bhagavan Mahavir gave his discourse to king Vijaya and the people of the city, after which the king and the people returned home.

गौतम की जिज्ञासा

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव विहरइ। तए णं से भगवं गोयमे तं जाइअंधपुरिसं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव एवं वयासी–'अत्थि णं भंते ! केई पुरिसे जाइअंधे जाइअंधारुवे ?'

हंता अत्थि।

"कह णं भंते ! से पुरिसे जाइअंधे जाइअंधारूवे ?"

'एवं खलु, गोयमा ! इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए जाइअंधे जाइअंधारूवे। नत्थि णं तस्स दारगस्स जाव आगिइमित्ते। तए णं सा मियादेवी जाव पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ !'

तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी– 'इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे मियापुत्तं दारगं पासित्तए।'

'अहासुहं देवाणुप्पिया !'

१२. उस समय श्रमण भगवान महावीर स्वामी के प्रधान शिष्य इन्द्रभूति नाम के अनगार भी वहाँ विराजमान थे। भगवान गौतम स्वामी ने उस जन्मान्ध पुरुष को देखा और देखकर उनके मन में कुतूहल तथा जिज्ञासा उत्पन्न हुई। भगवान गौतम ने पूछा–'भगवन् ! क्या कोई ऐसा (अन्य) पुरुष भी है कि जो (इसी तरह) जन्म से ही अन्धा हो, जन्मान्ध रूप हो।

भगवान ने कहा–हाँ, ऐसा पुरुष है !

गौतम स्वामी ने पूछा–भंते ! वह पुरुष कहाँ है जो जन्मान्ध व जन्मान्धरूप है ?'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान ने कहा–'गौतम ! इसी मृगाग्राम नगर में विजयनरेश का पुत्र और मृगादेवी का आत्मज मृगापुत्र नाम का बालक है, जो जन्मतः अन्धा है, जन्मान्धरूप है। उसके हाथ, पैर आदि अंगोपांग भी नहीं हैं ! मात्र उन अंगोपांगों के आकार ही हैं ! उसकी माता मृगादेवी उसका पालन–पोषण सावधानी पूर्वक गुप्त रूप में कर रही है।

तब भगवान गौतम ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन–नमस्कार किया। वन्दन–नमस्कार करके इस प्रकार प्रार्थना की–भंते ! यदि आपकी अनुमति हो तो मैं उस मृगापुत्र बालक को देखना चाहता हूँ।'

भगवान ने कहा–'गौतम ! जैसे तुम्हें सुख हो, वैसा करो !'

GAUTAM'S CURIOSITY

12. During that period of time Indrabhuti Anagar (Gautam Swami), the chief disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, was also sitting there. When Bhagavan Gautam Swami saw the man who was blind by birth he became curious. He asked—"*Bhante* ! Is there some (other) person who is blind by birth (like him), absolutely blind."

Bhagavan said—"Yes ! There is such a person."

Gautam Swami asked—"Where is that person who is blind by birth (like him), absolutely blind ?"

Bhagavan said—"Gautam ! In this very Mrigagram city child Mrigaputra, the son of Vijaya Kshatriya and Mriga, is blind by birth (like him), absolutely blind. He does not even have hands and feet and other parts of the body. He only has mere outlines of these parts. His mother Mriga Devi feeds and brings up that child carefully and furtively."

Bhagavan Gautam then paid homage and obeisance to *Bhagavan* and requested—"*Bhante* ! If you give permission I would like to see that child Mrigaputra."

Bhagavan said—"Do as you please, Gautam.

विवेचन–जन्मान्ध के नेत्रों का आकार मात्र होता है, उनमें ज्योति रूप शक्ति नहीं होती, परन्तु जन्मान्धरूप कहने का अर्थ है उसके शरीर में नेत्रों का पर्याप्त आकार भी नहीं होता। अथवा जो किसी रोग आदि के कारण नहीं, किन्तु जन्म से ही अंधा हो। *(आचार्य श्री आत्माराम जी म. हिन्दी टीका, पृ. ३१)*

Elaboration—A congenital blind (*janmandh*) has only non-functioning eyes. The eyes are devoid of vision. The term *'janmandh roop'* indicates that the person does not even have fully formed eyes. This defect is not accidental or caused by some disease, it is by birth. *(Hindi Tika by Acharya Shri Atmaram ji M., p. 31)*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मृगादेवी के घर पर गौतम

१३. तए णं से भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे हट्ठतुट्ठे समणस्स भगवो महावीरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमेइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियं जाव सोहेमाणे जेणेव मियग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव मियादेवीए गिहे तेणेव उवागच्छइ।

१३. श्रमण भगवान महावीर की आज्ञा प्राप्त होने पर गौतम स्वामी हर्षित व सन्तुष्ट होकर मृगापुत्र को देखने के लिए भगवान के पास से निकले। जरा भी उतावल किये बिना ईर्यासमिति का पालन करते हुए जहाँ मृगाग्राम नगर था वहाँ आये, आकर मृगाग्राम नगर के मध्यमार्ग से नगर में प्रवेश किया। जहाँ मृगादेवी का घर था, गौतम स्वामी वहाँ पहुँचे।

GAUTAM AT THE HOUSE OF MRIGA DEVI

13. On getting permission from Shraman Bhagavan Mahavir, Gautam Swami was pleased and contented. He left *Bhagavan* to go and see Mrigaputra. Observing *irya samiti* (care of movement) he moved without any haste and came to Mrigagram city. He entered the city from the main road and came to the house of Mriga Devi.

१४. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी– ''संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयणं ?''

तए णं से भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी– ''अहं णं देवाणुप्पिए,तव पुत्तं पासिउं हव्वमागए।''

तए णं सा मियादेवी मियापुत्तस्स दारगस्स अणुमग्गजायए चत्तारि पुत्ते सव्वालंकारविभूसिए करेइ, करेत्ता भगवओ गोयमस्स पाएसु पाडेइ, पाडेत्ता एवं वयासी– ''एए णं भंते ! मम पुत्ते, पासह।''

१४. तब वह मृगादेवी भगवान गौतम स्वामी को आते हुए देखती है, देखकर हर्षित प्रमुदित हुई, वन्दना–नमस्कार करके इस प्रकार पूछा–'भगवन् ! आपके यहाँ पधारने का क्या प्रयोजन है ?'

तब भगवान गौतम बोले–देवानुप्रिये ! मैं तुम्हारे पुत्र को देखने सीधा यहाँ आया हूँ !'

मृगादेवी ने तब मृगापुत्र के पश्चात् उत्पन्न हुए अपने चार पुत्रों को वस्त्रआभूषणादि से अलंकृत करके गौतम स्वामी के चरणों में नमस्कार कराया और इस प्रकार कहा–'भगवन् ! ये मेरे पुत्र हैं; इन्हें आप देख लीजिए !'

14. When Mriga Devi saw Gautam Swami coming she was pleased and delighted. After paying homage and obeisance she asked—"Beloved of gods ! What gives me the honour of your visit ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Bhagavan Gautam responded—"Beloved of gods ! I have straightway come to see your son."

At this Mriga Devi adorned her four sons born after Mrigaputra and made them touch Gautam Swami's feet. She said—"*Bhante* ! Look here please, these are my sons."

१५. तए णं से भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी–''नो खलु देवाणुप्पिए ! अहं एए तव पुत्ते पासिउं हव्वमागए। तत्थ णं जे से तव जेट्ठे मियापुत्ते दारए जाइअंधे जाइअंधरूवे, जं णं तुमं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरसि तं णं अहं पासिउं हव्वमागए।'

तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी–'से के णं गोयमा ! ते तहारूवे णाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एसमट्ठे मम ताव रहस्सीकए तुब्भं हव्वमक्खाए, जओ णं तुब्भे जाणह ?'

तए णं भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी–''एवं खलु देवाणुप्पिए ! मम धम्मायरिए समणे भगवं जाव, तओ णं अहं जाणामि।''

१५. तब भगवान गौतम मृगादेवी से बोले–देवानुप्रिये ! मैं तुम्हारे इन पुत्रों को देखने के लिए यहाँ नहीं आया हूँ, किन्तु तुम्हारा जो ज्येष्ठ पुत्र मृगापुत्र है, जो जन्मान्ध व जन्मान्धरूप है, तथा जिसको तुमने एकान्त भूमिगृह में गुप्त रूप से सावधानी पूर्वक रखा है और अति गुप्त रूप में खान–पान आदि के द्वारा जिसका पालन–पोषण सावधानी पूर्वक कर रही हो, उसी को देखने मैं यहाँ आया हूँ !

यह सुनकर मृगादेवी ने आश्चर्यचकित (संभ्रान्त–सी) होकर पूछा–हे गौतम ! कौन ऐसे महान् ज्ञानी व तपस्वी हैं, जिन्होंने मेरे द्वारा एकान्त गुप्त रखी यह बात आपको यथार्थरूप में बता दी। जिससे आपने यह गुप्त रहस्य सरलता से जान लिया ?

भगवान गौतम स्वामी ने कहा–भद्रे ! मेरे धर्माचार्य श्रमण भगवान महावीर स्वामी (ऐसे श्रेष्ठ ज्ञानी हैं) हैं जिन्होंने ही मुझे यह रहस्य बताया है।

15. Bhagavan Gautam told Mriga Devi—"Beloved of gods ! I have not come here to see your these sons but to see your eldest son, Mrigaputra, who is blind by birth, absolutely blind. You have kept this son in an isolated cellar and are feeding and bringing him up carefully under wraps. I have come here only to see him."

Mriga Devi was taken aback at these words. She asked—"O Gautam ! Who is that great sage and ascetic that has revealed my well kept secret so explicitly and enabled you to be aware of my secret without any effort ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Bhagavan Gautam Swami said—"Lady ! It is my religious leader (who is one such omniscient) who has told me this secret.

१६. जाव च णं मियादेवी भगवया गोयमेण सद्धिं एयमट्ठं संलवइ, तावं च णं मियापुत्तस्स दारगस्स भत्तवेला जाया यावि होत्था। तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी–'तुब्भे णं भंते ! इहं चेव चिट्ठह जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि त्ति कट्टु जेणेव भत्त–पाणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वत्थपरियट्टयं करेइ,करेत्ता कट्ठसगडियं गिण्हइ, गिण्हित्ता विउलस्स असण–पाण–खाइम–साइमस्स भरेइ, भरित्ता तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी अणुकड्ढमाणी जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी–''एह णं तुब्भे भंते ! मम अणुगच्छह,जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि।'' तए णं से भगवं गोयमे मियादेविं पिट्ठओ समणुगच्छइ।

१६. जिस समय मृगादेवी भगवान गौतम स्वामी के साथ यह वार्तालाप कर रही थी उसी समय मृगापुत्र बालक के भोजन का समय हो गया। मृगादेवी ने भगवान गौतम स्वामी से निवेदन किया– 'भगवन् ! आप यहीं ठहरिये, मैं अभी मृगापुत्र बालक को दिखलाती हूँ।' यों कहकर वह जहाँ भोजनशाला थी, वहाँ आई। आकर वस्त्र बदले। वस्त्र बदलकर काष्ठ–शकट–लकड़ी की गाड़ी को लेती है और उसमें आवश्यक मात्रा में रोटी, दाल, शाक, भात, पानी आदि चारों प्रकार का भोजन रखती है। फिर उस काष्ठ–शकट को स्वयं खींचती हुई जहाँ भगवान गौतम स्वामी थे वहाँ आती है और निवेदन करती है–'प्रभो ! आप मेरे पीछे–पीछे चलें। में आपको मृगापुत्र बालक को बताती हूँ। (यह सुनकर) गौतम स्वामी मृगादेवी के पीछे–पीछे चलने लगे।

16. While Mriga Devi was talking to Bhagavan Gautam Swami thus, it was time to feed child Mrigaputra. Mriga Devi said to Gautam Swami—"*Bhante* ! Please wait here, I will soon show you child Mrigaputra." Having said so she went to the kitchen, changed her dress and took a wooden trolley. She placed enough quantity of staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*) in the trolley. Pushing this trolley she came where Bhagavan Gautam Swami was waiting and said—"*Bhante* ! Please follow me. I will show you child Mrigaputra." Gautam Swami followed Mriga Devi (on being requested).

मृगापुत्र की बीभत्स अवस्था

१७. तए णं सा मियादेवी तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी अणुकड्ढमाणी जेणेव भूमिघरे तेणेव उवागच्छइ; उवागच्छित्ता चउप्पुडेणं वत्थेणं मुहं बंधेइ। मुहं बंधमाणी भगवं गोयमं एवं वयासी–'तुब्भे वि य णं भंते ! मुहपोत्तियाए मुहं बंधह।' तए णं से भगवं गोयमे मियादेवीए एवं वुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुहं बंधेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. वह मृगादेवी उस लकड़ी की गाड़ी को खींचती-खींचती जहाँ भूमिगृह था वहाँ पर आती है और आकर चार परत वाले वस्त्र से मुँह को बाँधती है तथा भगवान गौतम स्वामी से भी इस प्रकार निवेदन किया-भगवन् ! आप भी मुख-वस्त्रिका से मुँह को बाँध लीजिए।' मृगादेवी के ऐसा कहने पर भगवान गौतम स्वामी ने भी मुख-वस्त्रिका से मुख को बाँध लिया।

REPUGNANT CONDITION OF MRIGAPUTRA

17. Pushing the trolley, Mriga Devi came to the cellar and covered her mouth with a peace of cloth folded four times. She requested Bhagavan Gautam Swami—"*Bhànte* ! Please cover your mouth with a folded piece of cloth." Bhagavan Gautam Swami followed the advise and covered his mouth with a folded piece of cloth.

विवेचन-यहाँ चार पुट चार तहों वाले वस्त्र से मुख बाँधने का आशय है मुँह और नाक को इस प्रकार ढँक लें कि वहाँ की भयंकर असह्य दुर्गन्ध से बचा जाय। कारण दुर्गंध को नाक ही ग्रहण करता है, मुख नहीं। मृगादेवी ने स्वयं भी नाक पर ही वस्त्र बाँधा है, क्योंकि दुर्गंध से बचने का यही उपाय था। गौतम स्वामी ने मुखपत्ती तो पहले ही बाँध रखी थी। *(आचार्य श्री आत्माराम जी म. टीका, पृ. ४४)*

Elaboration—The purpose of covering mouth, this includes nose as well, with four folds of cloth is to minimize the offensive stench pervading that place. It is nose and not mouth that is receptor of smell. Mriga Devi had also covered her nose because only that could minimize the stench. As far as covering only the mouth is concerned, it was an essential part of Gautam Swami's code. *(Hindi Tika by Acharya Shri Atmaram ji M., p. 44)*

१८. तए णं सा मियादेवी परंमुही भूमिघरस्स दुवारं विहाडेइ। तए णं गंधे निग्गच्छइ से जहानामए अहिमडे इ वा जाव गंधे पन्नत्ते !

तए णं से मियापुत्ते दारए तस्स विउलस्स असण-पाण-खाइम-साइमस्स गंधेणं अभिभूए समाणे तंसि विउलंसि असण-पाण-खाइम-साइमंमि मुच्छिए तं विउलं असण-पाण खाइम-साइमं आसएणं आहारेइ, आहारित्ता खिप्पामेव विद्धंसेइ, तओ पच्छा पूयत्ताए य सोणियत्ताए य परिणामेइ; तं पि य णं से पूयं च सोणियं च आहारेइ।

१८. तत्पश्चात् मृगादेवी ने पराङ्मुख होकर (पीठ पीछे मुँह करके) जब उस भूमिगृह का दरवाजा खोला तब उसमें से जो दुर्गन्ध निकलने लगी वह गन्ध मरे हुए सर्प (गाय, कुत्ता, बिल्ली, चूहा आदि के सड़े हुए कलेवर) की दुर्गन्ध से भी बहुत अधिक अनिष्ट, अप्रिय असह्य थी।

तब उस अशन, पान, खादिम, स्वादिम की सुगन्ध से आकृष्ट व मूर्च्छित हुआ वह मृगापुत्र आसक्तिपूर्वक उस आहार को मुख द्वारा ग्रहण करता है। आहार लेते ही उस आहार को (तीव्र जठराग्नि से) पचा लेता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-२	Illustration No. 2

मृगापुत्र को देखने आये गौतम

दृश्य–१

भगवान की अनुमति लेकर गौतम मृगापुत्र को देखने के लिए रानी मृगादेवी के भवन पर पधारे और कहा–मैं तुम्हारे पुत्र को देखने आया हूँ। श्रीदेवी ने अपने अन्य चार पुत्रों को उपस्थित कर कहा–भन्ते ! ये मेरे पुत्र हैं !

गौतम कहते हैं–मैं इन्हें नहीं, किन्तु तुम्हारी सबसे बड़ी सन्तान मृगापुत्र को देखने आया हूँ।

मृगादेवी बोली–ठीक है, चलिए मैं आपको उसे दिखाती हूँ। उसके भोजन का समय भी हो गया है। आप अपनी नाक को ढँक लीजिए क्योंकि वहाँ असहनीय दुर्गन्ध उछल रही है।

मृगादेवी ने वस्त्र बदले। लकड़ी की हाथ गाड़ी में भोजन सामग्री रखी और भूगृह की तरफ चली। उसके पीछे–पीछे गौतम चले। गौतम ने मृगापुत्र के बीभत्स दुर्गन्ध मय रूप को देखा। देखकर वापस अपने स्थान को आ गये।

–श्रुतस्कन्ध १, अ. १, सूत्र १०

GAUTAM COMES TO SEE MRIGAPUTRA

On getting permission from *Bhagavan*, Gautam Swami came to the house of queen Mriga Devi and said that he had come to see her son. Mriga Devi presented her four other sons and said—*"Bhante* ! These are my sons."

Gautam says—"I have not come to see them but to see your eldest son, Mrigaputra.

Mriga Devi said—*"Bhante* ! Please follow me. I will show him to you. It is feeding time as well. Please cover your mouth because that place has intolerable stench."

Mriga Devi changed her dress, loaded a trolley with food and walked towards the cellar. Gautam followed her and saw Mrigaputra in his repulsive and stinking condition. After seeing he returned to his place.

—Sec. I, Ch. 1, Sutra : 10

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है और फिर वह आहार तत्काल पीव (मवाद) व रुधिर के रूप में परिवर्तित हो जाता है। मृगापुत्र बालक ने पीव व रुधिर रूप में परिवर्तित उस आहार का वमन कर दिया और अपने ही द्वारा वमन किये हुए उस पीव व रुधिर को भी पुनः चाट लिया।

18. Mriga Devi then opened the gate of the cellar with her face turned away. A whiff of stench came from the cellar. This stench was much more obnoxious, repulsive and intolerable than that of a dead snake (or a decayed carcass of cow, dog, cat, or rat).

Attracted and mesmerized by the aroma of the staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*), Mrigaputra swallowed the food through his mouth. He at once digested that food and it transformed into pus and blood. Mrigaputra soon vomited what he ate in the form of pus and blood and licked back the whole thing.

मृगापुत्र–विषयक जिज्ञासा

१९. तए णं भगवओ गोयमस्स तं मियापुत्तं दारगं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–'अहो णं इमे दारए पुरापोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ। न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा। पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे नरगपडिरूवयं वेयणं वेयइ।' त्ति कट्टु मियं देविं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मियाए देवीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता–नमंसित्ता एवं वयासी–

'एवं खलु अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेण अणुप्पविसामि, अणुपविसित्ता जेणेव मियाए देवीए गिहे तेणेव उवागए। तए णं से मियादेवी मम एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठा, तं चेव सव्वं जाव पूयं च सोणियं च आहारेइ। तए णं इमे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था–अहो णं इमे दारए पुरा जाव विहरइ।

से णं भंते ! पुरसे पुव्वभवे के आसी ? किंनामए वा किंगोत्तए वा ? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता केसिं वा पुरा पोराणाणं जाव विहरइ ?

१९. मृगापुत्र बालक की ऐसी (बीभत्स तथा करुणाजनक) दुर्दशा को देखकर भगवान गौतम स्वामी के मन में चिन्तन व जिज्ञासा रूप में ये विकल्प उत्पन्न हुए–"अहो ! यह बालक पूर्वजन्मों के **दुश्चीर्ण**–(दुष्टता पूर्वक किये गये) व **दुष्प्रतिक्रान्त**–(जिन कर्मों को नष्ट करने का कोई सरल उपाय भी नहीं हो) ऐसे घोर अशुभ पापकर्मों के पापरूप फल को भोग रहा है। मैंने प्रत्यक्ष में नरक व नारकी तो नहीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देखी, परन्तु यह मृगापुत्र तो सचमुच नारकीय वेदनाओं का अनुभव करता हुआ दिखाई दे रहा है।'' ऐसा चिन्तन करते हुए भगवान गौतम ने मृगादेवी से कहा–''अब मैं जा रहा हूँ।'' और फिर उसके घर से प्रस्थान किया। मृगाग्राम नगर से चलकर जहाँ श्रमण भगवान महावीर स्वामी विराजमान थे; वहाँ आ गये। आकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी को प्रदक्षिणा पूर्वक वन्दन, नमस्कार किया और वन्दन करके इस प्रकार बोले–

–''भगवन ! आपश्री से आज्ञा प्राप्त करके मैं मृगाग्राम नगर में से चलता हुआ जहाँ मृगादेवी का घर था वहाँ पहुँचा। मुझे आते हुए देखकर मृगादेवी प्रसन्न हुई, यावत् मृगापुत्र को अपने ही पीव व शोणित–रक्त का आहार करते हुए देखकर मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ–अहह ! यह बालक पूर्वजन्मोपार्जित अत्यन्त घोर पापकर्मों का फल भोगता हुआ बीभत्स जीवन बिता रहा है ?

भगवन् ! यह मृगापुत्र पूर्वभव में कौन था ? किस नाम व गोत्र का था ? किस ग्राम अथवा नगर का रहने वाला था ? क्या भोगकर, किन–किन कर्मों का आचरण कर और किन–किन पुराने कर्मों के फल को भोगता हुआ यह कष्टमय जीवन बिता रहा है।

INQUIRY ABOUT MRIGAPUTRA

19. Looking at this horrible (repulsive and pathetic) condition Bhagavan Gautam Swami thoughtfully contemplated—"Oh ! This child is suffering the fruits of sin as a consequence of the sinful *karmas* he acquired due to intentionally committed evil deeds (*dushchirna*) during his earlier births, and which are not easily destroyed (*dushpratikrant*). I have not seen hell or infernal beings in person but here I can see that this Mrigaputra is, indeed, suffering infernal miseries." With these thoughts Bhagavan Gautam Swami said to Mriga Devi—"Now I am going." And he left that house. Crossing Mrigagram city he came where Shraman Bhagavan Mahavir was seated. After going around *Bhagavan* and paying him homage and obeisance he said—

"*Bhante* ! On getting your permission I crossed Mrigagram city and reached the house of Mriga Devi, who was pleased to see me coming... and so on up to... When I saw Mrigaputra licking pus and blood I thought—Oh ! This child leads a miserable life suffering the fruits of intense sinful *karmas* he acquired during his earlier births.

"*Bhante* ! Who was this Mrigaputra in his earlier birth ? What was his name and family ? In which village or city he lived ? He leads this miserable life as a consequence of what *karmas* he acquired, which activities he indulged in, and what deeds he committed ?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. 'गोयमा !' इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—'एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सयदुवारे नामं नयरे होत्था रिद्धत्थिमिय·····। वण्णओ। तत्थ णं सयदुवारे नयरे धणवई नामं राया होत्था। वण्णओ। तस्स णं सयदुवारस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए विजयवद्धमाणे नामं खेडे होत्था। रिद्धत्थमियसमिद्धे। तस्स णं विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंचगामसयाइं आभोए यावि होत्था। तत्थ णं विजयवद्धमाणे खेडे इक्काई नामं रट्ठकूडे होत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे। से णं इक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंचण्हं गामसयाणं आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरइ।

२०. श्रमण भगवान महावीर ने भगवान गौतम को सम्बोधित कर कहा—'हे गौतम ! उस काल एवं उस समय में इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष में 'शतद्वार' नामक एक समृद्धिशाली नगर था। उस नगर में धनपति नाम का एक राजा राज्य करता था। उस नगर से कुछ दूरी पर दक्षिण और पूर्व–दिशा के मध्य–अग्निकोण में विजयवर्द्धमान नामक एक खेट–(नदी व पर्वतों से घिरा हुआ छोटा) नगर था, जो ऋद्धि–समृद्धि आदि से युक्त था। उस विजयवर्द्धमान खेट के अधीन पाँच सौ ग्राम थे। उस खेट में इक्काई–एकादि नाम का राष्ट्रकूट–(राजा की ओर से नियुक्त प्रतिनिधि) था, जो बहुत ही अधार्मिक यावत् अधर्मिष्ट तथा **दुष्प्रत्यानन्दी**–(दुष्कर्मों में ही सदा आनन्द मानने वाला अथवा जिसको प्रसन्न करना भी कठिन हो ऐसा घोर असंतोषी) था। वह एकादि राष्ट्रकूट विजयवर्द्धमान खेट के पाँच सौ ग्रामों का शासन और पालन करता था।

PREVIOUS BIRTH OF MRIGAPUTRA

20. Shraman Bhagavan Mahavir said to Bhagavan Gautam—"Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Shatadvar in Bharatvarsh area in Jambu continent. A king named Dhanapati was the ruler of that city. On its south-east direction (*Agni Kone*) was a grand and prosperous *khet* (a settlement surrounded by a temporary mud wall; borough). There were five hundred villages under that borough called Vijayavardhaman. In that borough there was a governor (*rashtrakoot*) named Ekadi (Ikkai) who was irreligious and *dushprtyanandi* (a person who enjoys evil deeds or who is so discontented that it is difficult to please him). That governor Ekadi ruled and protected the five hundred villages of Vijayavardhaman borough.

एकादि का अत्याचार

२१. तए णं से इक्काई विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं बहूहिं करेहि य भरेहि य विद्धीहि य उक्कोडाहि य पराभवेहि य दिज्जेहि य भिज्जेहि य कुंतेहि य लंछपोसेहि य आलीवणेहिय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंथकोट्टेहि य ओवीलेमाणे ओवीलेमाणे विहम्मेमाणे विहम्मेमाणे तज्जेमाणे तज्जेमाणे तालेमाणे तालेमाणे निद्धणे करेमाणे करेमाणे विहरइ।

तए णं से इक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स बहूणं राई–सर–तलवर–माडंबिय–कोडुंबिय–सेट्ठि–सत्थवाहाणं अन्नेसिं च बहूणं गामेल्लगपुरिसाणं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य सुणमाणे भणइ न 'सुणेमि', असुणमाणे भणइ 'सुणेमि' एवं पस्समाणे, भासमाणे, गिण्हमाणे जाणमाणे'। तए णं से इक्काई रट्ठकूडे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणमाणे विहरइ।

२१. वह एकादि नाम का प्रान्ताधिति विजयवर्द्धमान खेट के पाँच सौ ग्रामों को करों के भार से दबाये रखता था। किसानों को जितना धान्य आदि देता उससे दुगुना वापस लेता था। रिश्वत–घूसखोरी करता, प्रजा का निर्दयता पूर्वक दमन करता, अधिक ब्याज वसूल करता, उन पर हत्यादि अपराध के आरोप लगा देता, धन लूटता, धन वसूलने के लिए किसी को स्थान आदि का प्रबन्धक बना देता, चोर आदि दुष्ट व्यक्तियों का पोषण व रक्षण करता रहता, ग्रामादि को जला देता, पथिकों को मार–पीटकर लूट लेता, इस प्रकार प्रजा को व्यथित पीड़ित करता रहता था। धर्म से विमुख करता रहता था चाबुक आदि से ताड़ित करता और धनवानों को निर्धन करता हुआ प्रजा पर अत्यधिक अधिकार जमाये हुए था।

तदनन्तर वह राष्ट्रकूट एकादि विजयवर्द्धमान खेट के राजा, ईश्वर, तलवर अथवा राजा की ओर से जिन्हें उच्च सन्मान,पदवी, आसन–स्थान–विशेष प्राप्त हुआ हो ऐसे नागरिक लोगों, माडंबिकों, कौटुम्बिकों, श्रेष्ठी, सार्थनायकों तथा अन्य अनेक ग्रामीण पुरुषों के कार्यों में, कारणों में, गुप्त मन्त्रणाओं में, निश्चयों और विवादास्पद निर्णयों अथवा व्यावहारिक बातों में सुनता हुआ भी कहता था कि ''मैंने नहीं सुना'' और नहीं सुनता हुआ कहता था कि ''मैंने सुना है।'' इसी प्रकार देखता हुआ, बोलता हुआ, ग्रहण करता हुआ और जानता हुआ भी वह कहता था कि 'मैंने देखा नहीं', मैंने बोला नहीं, मैंने ग्रहण नहीं किया और जाना भी नहीं। इसी प्रकार के धूर्तता पूर्ण क्रूर कर्म करने वाला, मायाचारों को ही मुख्य कर्तव्य मानने वाला, प्रजा को पीड़ित करने की विद्या में निपुण और मनमानी करने को ही सदाचरण मानने वाला, वह एकादि राष्ट्रकूट अत्यन्त कलुषित पापकर्मों को उपार्जित करता हुआ जीवन–यापन करता था।

(**नोट :** सूत्र में **एयकम्मे** आदि चार विशेषण देकर यह बताया है कि राष्ट्रकूट ऐसे घोर दुष्कर्मों में आकण्ठ डूबा हुआ था।)

TORMENTS BY EKADI

21. That governor Ekadi loaded the five hundred villages of Vijayavardhaman borough with taxes. He would take back twice of whatever grains he gave to the farmers. He took bribe and tortured the people ruthlessly. He charged excessive interest from them and charged them of murder and other crimes. He extorted money from people and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

appointed agents at various places for collecting such funds. He nurtured and protected thieves and other rogues. He would set fire to villages, torment and rob travelers. This way he continued to exploit and torment people. He had imposed his tortuous rule by whipping people, impoverishing them and forcing them to go against religion.

Even after hearing the opinions of people like regional kings (*raja*), influential and rich persons (*ishvar*), knights of honour (*talavar*), landlords (*mandavik*), heads of large families (*kautumbik*), established merchants (*shreshti*), caravan chiefs (*sarthavaha*) and other villagers during their activities, deliberations, secret consultations, decisions, controversies and social interactions, that governor Ekadi would say—'I have not heard.' When he had not heard anything he would say—'I have heard.' In the same way he would say 'I have not seen, not spoken, not accepted, and not understood' for things he had seen, spoken, accepted, and understood. Thus indulging in such wicked and cruel deeds (*eyakamme*), considering deceitful activities to be his prime duty (*eyappahane*), gaining expertise in tormenting people (*eyavijje*), and accepting willful action to be good conduct (*eyasamayare*), that governor Ekadi led an extremely ignoble life acquiring highly demeritorious *karmas*.

(**Note :** Using four adjectives like *'eyakamme'* the aphorism conveys that the governor was immersed up to his neck in such extremely wicked activities.)

एकादि को भयंकर रोग

२२. तए णं तस्स रट्ठकूडस्स अन्नया कयाइ सरीरगंसि जमग–समगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया। तं जहा–

सासे कासे जरे दाहे कुच्छिसूले भगंदरे।
अरिसे अजीरए दिट्ठी, मुद्धसूले अकारए॥
अच्छिवेयणा कण्ण–वेयणा कंडू दओयरे कोढे॥

तए णं से इक्काई रट्ठकूडे सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–''गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विजयवद्धमाणे खेडे सिंघाडग–तिग–चउक्क–चच्चर–महापह–पहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयह–'इह खलु देवाणुप्पिया ! इक्काई रट्ठकूडस्स सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तं जहा–सासे कासे जरे जाव कोढे। तं जो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं इच्छइ देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणओ वा जाणयपुत्तो वा तेगिच्छी वा तेगिच्छिपुत्तो वा इक्काई रट्ठकूडस्स तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए तस्स णं इक्काई रट्ठकूडे विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ। दोच्चं पि तच्चं पि उग्घोसेह, उग्घोसित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।''

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति !

२२. उसके बाद किसी समय उस एकादि राष्ट्रकूट के शरीर में एक साथ ही सोलह प्रकार के रोगातंक-(अत्यन्त कष्टकर असाध्य रोग) उत्पन्न हो गये। जैसे कि-(१) श्वास, (२) कास (खाँसी), (३) ज्वर, (४) दाह, (५) कुक्षिशूल, (६) भगन्दर, (७) अर्श, (बवासीर), (८) अजीर्ण, (९) दृष्टिशूल, (१०) मस्तक-शूल, (११) भोजन की अरुचि, (१२) अक्षिवेदना, (१३) कर्णवेदना, (१४) खुजली, (१५) जलोदर, और (१६) कुष्ठरोग-(कोढ़)।

तब वह उक्त सोलह प्रकार के भयंकर रोगों से पीड़ित हुआ एकादि राष्ट्रकूट सेवकों को बुलाता है और बुलाकर कहता है-''देवानुप्रियो ! तुम जाओ और विजय वर्द्धमान खेट के शृंगाटक-(त्रिकोणमार्ग) त्रिक-त्रिपथ-(जहाँ तीन मार्ग मिलते हों) चतुष्क-चतुष्पथ-(जहाँ चार मार्ग एकत्रित होते हैं) चत्वर-(जहाँ चार से अधिक मार्गों का संगम होता हो) महापथ-राजमार्ग और साधारण मार्ग पर जाकर अत्यन्त ऊँचे स्वरों से इस प्रकार घोषणा करो-''हे देवानुप्रियो ! एकादि राष्ट्रकूट के शरीर में श्वास, कास, ज्वर यावत् कोढ़ आदि १६ भयंकर रोग उत्पन्न हुए हैं। यदि कोई वैद्य (मुख्य वैद्य) या वैद्यपुत्र सहायक-(वैद्य नौसिखिया) ज्ञायक-(मंत्र-तंत्र आदि का ज्ञाता) या ज्ञायक-पुत्र, चिकित्सक-(चिकित्सा या शल्यक्रिया में निपुण) या चिकित्सक-पुत्र उन सोलह रोगों में से किसी एक भी रोग को उपशान्त कर देगा तो एकादि राष्ट्रकूट की तरफ से उसको बहुत सा धन दिया जायेगा। इस प्रकार दो तीन बार उद्घोषणा करके मेरी आज्ञा का पालन होने की सूचना दो।''

उन कौटुम्बिक पुरुषों-सेवकों ने आदेशानुसार कार्य सम्पन्न करके उसे सूचित किया।

EKADI SUFFERS FROM CHRONIC AILMENTS

22. After some time that governor Ekadi suffered from sixteen different chronic ailments simultaneously. They are—(1) asthma (*shvas*), (2) bronchitis (*kaas*), (3) fever (*jvar*), (4) burning sensation (*daaha*), (5) stomach ache (*kukshi shool*), (6) fistula of the anus (*bhagandar*), (7) bleeding piles (*arsh* or *bavasir*), (8) indigestion (*ajeern*), (9) Glaucoma (*drishti shool*), (10) headache (*mastak shool*), (11) loss of appetite (*bhojan-aruchi*), (12) pain in the eyes (*akshi vedana*), (13) pain in the ears (*karna vedana*), (14) eczema (*khujali*), (15) dropsy (*jalodar*), and (16) leprosy (*kusht roag*).

When he suffered from these ailments governor Ekadi called his servants and instructed, "Beloved of gods ! Go and make this

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-३

Illustration No. 3

अत्याचारी एकादि राष्ट्रकूट

दृश्य–१

गौतम ने पूछा–भंते ! इस मृगापुत्र ने पूर्वजन्म में ऐसे क्या घोर पाप कर्म किये थेस ?

भगवान फरमाते हैं–प्राचीन काल में शतद्वार नगरी के राजा का एक एकादि राष्ट्रकूट नामक राज प्रतिनिधि था।

दृश्य–२–३

राष्ट्रकूट स्वभाव से अत्यन्त कठोर और अन्यायी शासक था। वह राहगीरों को लूटता। उन्हें वृक्षों से बाँध देता और चोरों को आश्रय देता था। गांवों में आग लगाकर लोगों को आतंकित करता रहता। जो धन नहीं देते उन्हें बाँधकर चाबुकों से, बेतों से पीटता इत्यादि।

दृश्य–४

जीवन के अन्तिम समय में इकाई सोलह महारोगों से ग्रस्त होकर रोग शय्या पर पड़ा है। वैद्य उपचार करते हैं, परन्तु उसका असाध्य रोग दूर नहीं हुआ। तब वैद्यों के सामने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाता है–कुछ भी धन ले लो, मुझे ठीक कर दो।

दृश्य–५

असाध्य रोगों से पीड़ित निराश इकाई को अब सामने मौत अट्टहास करती दिखाई पड़ती है।

–श्रुतस्कन्ध १, अ. १, सूत्र २४

TYRANT EKADI RASHTRAKOOT

SCENE-1

Gautam asks—*Bhante* what grave sins this Mrigaputra had committed during his past birth ?

Bhagavan says—In ancient times in Shatadvar city there was a governor named Ekadi.

SCENE-2-3

Governor Ekadi was a cruel and tyrannical ruler. He used to rob wayfarers and tie them to trees. He protected thieves. He terrorized people by setting fire to villages. He shackled and thrashed those who did not pay money to him.

SCENE-4

During the last days of life Ekadi lies on bed suffering from sixteen grave ailments. Doctors try their best but fail to cure him. Joining his palms he pathetically requests—"Take all the money you want but cure me please."

SCCENE-5

Dejected and depressed by painful ailments, Ekadi sees the laughing face of death.

—Sec. I, Ch. 1, Sutra : 24

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

announcement loudly at every corner, crossings where three, four or more roads meet, main road and streets in the Vijayavardhaman borough—

'O Beloved of gods ! Governor Ekadi is suffering from the pain of sixteen different ailments including asthma, bronchitis,... and so on up to... leprosy. Any *Vaidya* (qualified *Ayurvedic* doctors) and junior *Vaidya*, or senior and junior *Jnayak* (those who learned and practiced the art of healing through their own experience), or senior and junior *Chikitsak* (those who practiced medicine and surgery) who is able to cure even one of these diseases will be amply and richly rewarded by the governor.' Make this announcement two or three times and report back to me.

The servants did as told and reported back.

२३. तए णं से विजयवद्धमाणे खेडे इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे वेज्जा य जाव सत्थकोसहत्थगया सएहिंतो सएहिंतो गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता विजयवद्धमाणस्स खेडस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव इक्काई रट्ठकूडस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता इक्काइ रट्ठकूडस्स सरीरगं परामुसंति, परामुसित्ता तेसिं रोगाणं निदाणं पुच्छंति, पुच्छित्ता, इक्काइ रट्ठकूडस्स बहूहिं अब्भंगेहि य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणाहि य अवदहणाहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणाहिं य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणेहि य पच्छणेहि य सिरोवत्थीहि य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य मूलेहि य फलेहि य बीएहि य सीलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामित्तए।

तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणया य जाणयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

२३. उस विजयवर्द्धमान खेट में इस प्रकार की उद्घोषणा सुनकर तथा समझकर अनेक वैद्य आदि अपने-अपने शस्त्रकोष-(औजार रखने की पेटी या थैली) को हाथ में लेकर अपने घरों से निकलते हैं और निकलकर विजयवर्द्धमान खेट में जहाँ एकादि राष्ट्रकूट का घर था, वहाँ पर आते हैं। आकर एकादि राष्ट्रकूट के शरीर को स्पर्श करते हैं, संस्पर्श करके निदान-(रोगों के उत्पत्ति का कारण) की पूछताछ करते हैं और पूछकर एकादि राष्ट्रकूट के इन सोलह रोगों में से किसी एक रोग को शान्त करने के लिए अनेक प्रकार के **अभ्यंगन**-(मालिश), **उद्वर्तन**-(उवटन), **स्नेहपान**-(घृतादि स्निग्ध पदार्थों को पिलाना), **वमन**-(उल्टी कराना), **विरेचन**-(जुलाब आदि देना), **स्वेदन**-(पसीना निकलना), **अवदहन**-(लोहा गर्म करके चमड़ी पर रखना), **अवस्नान**-(अनेक प्रकार के द्रव्यों से संस्कारित जल से स्नान कराना), **अनुवासन**-(गुदा द्वारा पेट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में घृत–तैलादि का प्रवेश कराना) **निरूह**–(औषधियाँ डालकर पकाये गये काढ़ा व दूध आदि से विरेटन कराना) **वस्तिकर्म**–(मलद्वार से बत्ती आदि लगाना), **शिरोवेध**–(नाड़ी का वेधन करना), **तक्षण**–(क्षुरा, चाकू आदि सामान्य शस्त्रों द्वारा काटना), **प्रतक्षण**–(विशेष रूप से बने बारीक शस्त्रों से त्वचा विदारण करना) **शिरोवस्ति**–(सिर में चर्म कोश बाँधकर उसमें औषधि–द्रव्य–मिले तैलादि को भरना) **तर्पण**–(स्निग्ध पदार्थों से शरीर का बृंहण–तृप्त करना) **पुटपाक**–(अमुक रस का पुट देकर पकाई हुई औषध), **छल्ली**–(छाल), **मूलकन्द**–(मूली, गाजर,आलू आदि जमीकन्द), **शिलिका**–(चिरायता आदि औषध), **गुटिका**–(अनेक द्रव्यों को महीन पीसकर औषध के रस की भावना आदि से बनाई गई गोलियाँ), **औषध**–(एक द्रव्य से निर्मित दवा अथवा वानस्पतिक जड़ी–बूटी) और **भैषज्य**–(अनेक–द्रव्यों के मिश्रण से बनी रसायन आदि) आदि के प्रयोग से प्रयत्न करते हैं, बहुत प्रयत्न करते हैं परन्तु उपर्युक्त अनेक प्रकार के प्रयोगों व उपचारों से वे इन सोलह रोगों में से किसी एक रोग को भी उपशान्त करने में सफल नहीं हुए। (जब वे वैद्यपुत्रादि) **श्रान्त**–(थक गये), **तन्त**–(मानसिक रूप से भी खिन्न हो गये) तथा **परितन्त**–(सभी प्रकार से हताश–निराश) हो गये तो जिधर से आये थे उधर ही वापस चले गये।)

(प्राचीनकाल के चिकित्सा सम्बन्धी विस्तृत वर्णन के लिए देखें–आचार्य श्री आत्माराम जी म. कृत टीका पृ. ७१–७३)

23. Hearing and understanding this announcement in Vijayavardhaman borough many healers (etc.) collected their instrument boxes and left their homes. They passed through the streets of Vijayavardhaman borough and came to the residence of Governor Ekadi. They thoroughly examined and questioned the patient. After diagnosis they selected different methods and regimens of treatment and tried to cure just one of the said ailments. The methods and processes employed are—

(1) *Abhyangan* or application of medicinal pastes, (2) *Udvartan* or rubbing with medicinal pastes, (3) *Snehapan* or giving medicated oils, (4) *Vaman* or emesis, (5) *Virechan* or purgation, (6) *Swedan* or perspiring, (7) *Avadahan* or cauterizing with hot metal, (8) *Apasnan* or washing with medicated water, (9) *Anuvasana* or enema of medicated oils, (10) *Niruha* or to cause sweating by applying medicated oil, (11) *Vastikarma* or common enema, (12) *Shiravedh* or bleeding toxic blood by cutting nerve-end, (13) *Takshan* or scraping of the epidermis with knife or other such instrument, (14) *Pravakshan* or cutting of the epidermis using special micro-instruments, (15) *Shirovasti* or covering head with leather bag filled with medicated oil or other such liquid, (16) *Tarpan* or pouring of medicated oils, (17) *Putpaak* or use of cooked medicines, (18) *Chhaal* or medicinal use of bark of trees, (19) *Mool kand* or use of radish, carrot,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

potato and other roots, (20) *Shilika* or herbal medicines like *chirayata*, (21) *Gitika* or use of pills or tablets, (22) *Aushadh* or medicines of vegetable origin and single ingredient, and (23) *Bhaishajya* or other medicines with many ingredients including those of metallic and mineral origin. However, in spite of all these methods of treatment they could not cure even one single ailment. When these healers got exhausted (*shraant*), confused or mentally tired (*tant*), and disappointed (*paritant*) they returned from where they came.

(For more detailed information about ancient art of healing refer to *Tika* by Acharya Shri Atmaram ji M. p. 71-73.)

एकादि की मृत्यु : मृगापुत्र का वर्तमान भव

२४. तए णं इक्काई रट्ठकूडे वेज्ज पडियाइक्खिए परियारगपरिच्चत्ते निव्विण्णोसहभेसज्जे सोलहरोगायंकेहिं अभिभूए समाणे रज्जे य रट्ठे य जाव अन्तेउरे य मुच्छिए रज्जं च रट्ठं च आसाएमाणे पत्थेमाणे पीहेमाणे अभिलसमाणे अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अड्ढाइज्जाइं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स मियाए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने !

२४. जब निराश होकर वैद्यों आदि ने मना कर दिया। सेवा करने वाले परिचारक भी छोड़कर चले गये, औषध और भैषज्य खाते-खाते वह थककर उदास हो गया। तब वह एकादि राष्ट्रकूट सोलह रोगांतकों से परेशान हुआ राज्य, राष्ट्र आदि में, अन्तःपुर-रणवास में मूर्छित-आसक्त हुआ एवं राज्य, राष्ट्र का सुख भोगने की तीव्र अभिलाषा करता हुआ वह आर्त-मनोव्यथा से व्यथित, दुःखार्त-शारीरिक पीड़ा से पीड़ित हुआ और वशार्त-इन्द्रियाधीन होने से परतन्त्र हुआ जीवन व्यतीत करता हुआ २५० वर्ष की सम्पूर्ण आयु भोगकर मृत्यु प्राप्त करके इस रत्नप्रभा पृथिवी-(प्रथम नरक) में उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति वाले नारकों में नारकरूप से उत्पन्न हुआ।

वह एकादि का जीव नरक की भवस्थिति सम्पूर्ण होने पर नरक से निकलते ही सीधा इस मृगाग्राम नगर में विजय क्षत्रिय की मृगादेवी नाम की रानी की कुक्षि में पुत्ररूप में उत्पन्न हुआ है।

DEATH OF EKADI AND REBIRTH AS MRIGAPUTRA

24. When the dejected healers expressed their inability to treat, the nursing staff also left him alone. He got tired and dejected of taking medicines. Tired of the sufferings of the sixteen ailments and in a state of

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

deep attachment and craving for kingdom, state, and his harem; mentally tormented (*artt*), physically tortured (*duhkhart*), and enslaved by sense organs (*vashart*), that governor Ekadi lived this agonizing life for 250 years. He then died and was reborn as an infernal being among the infernal beings of the Ratnaprabha Prithvi (the first hell) having a maximum life-span of one *Sagaropam*.

After completing the life-span as an infernal being, the soul that was Ekadi at once took birth as son from the womb of Mriga Devi, the wife of Vijaya Kshatriya.

माता को तीव्र वेदना

२५. तए णं तीसे मियादेवीए सरीरे वेयणा पाउब्भूया, उज्जला जाव दुरहियासा। जप्पभिइं च णं मियापुत्ते दारए मियाए देवीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववन्ने, तप्पभिइं च णं मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुन्ना अमणामा जाया यावि होत्था।

२५. उस जीव के मृगादेवी के उदर में आने पर मृगादेवी के शरीर में अत्यन्त **ज्वलन्त–उत्कट** व जाज्वल्यमान वेदना उत्पन्न हुई। जिस दिन से मृगापुत्र बालक मृगादेवी के उदर में गर्भरूप से उत्पन्न हुआ, तभी से वह मृगादेवी विजय क्षत्रिय (अपने पति) को अनिष्ट, अमनोहर, अप्रिय, **अमनोज्ञ**–मन को न भाने वाली–मन से उतरी हुई और अप्रिय हो गयी।

ACUTE PAIN TO THE MOTHER

25. When that soul descended into the womb of Mriga Devi her body suffered acute and excruciating pain. Since the day child Mrigaputra was conceived she became unpleasant, loathsome, detestable, and repugnant to Vijaya Kshatriya (her husband).

गर्भ गलाने के उपाय

२६. तए णं तीसे मियाए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियाए जागरमाणीए इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–''एवं खलु अहं विजयस्स खत्तियस्स पुव्विं इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा धेज्जा विसासिया अणुमया आसी। जप्पभिइं च णं मम इमे गब्भे कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववन्ने, तप्पभिइं च णं अहं विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा जाव अमणामा जाया यावि होत्था। नेच्छइ णं विजए खत्तिए मम नामं व गोयं वा गिण्हित्तए वा, किमंगपुण दंसणं वा परिभोगं वा। तं सेयं खलु ममं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणाहि य पाडणाहि य गालणाहि य मारणाहि य साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा एवं संपेहेइ, संपेहित्ता बहूणि खाराणि य कडुयाणि य तूवराणि य गब्भसाडणाणि य खायमाणी य पीयमाणी य इच्छइ तं गब्भं साडित्तए ४ नो चेव णं से गब्भे सडइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा ४। तए णं सा मियादेवी जाहे नो संचाएइ तं गब्भं साडित्तए वा ४ ताहे संता तंता परितंता अकामिया असयंवसा तं गब्भं दुहं–दुहेणं परिवहइ।

२६. तदनन्तर किसी समय में मध्यरात्रि के समय कुटुम्ब चिन्ता से जागती हुई उस मृगादेवी के हृदय में इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ कि–'मैं पहले तो विजय क्षत्रिय को इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ और अत्यन्त वल्लभ लगती थी। मैं उसके लिए ध्येय–(हर समय मन में रहने योग्य), चिन्तनीय–(विश्वसनीय व सम्माननीय) थी, परन्तु जबसे यह गर्भस्थ जीव मेरी कुक्षि में गर्भ के रूप में आया है, तब से विजय क्षत्रिय को मैं अप्रिय हो गई यावत् मन से उतर गई हूँ। इस समय विजय क्षत्रिय मेरे नाम तथा गोत्र को सुनना और स्मरण करना भी नहीं चाहते ! तो फिर देखने व भोगविलास की तो बात ही क्या है ? अतः मेरे लिए यही उचित है कि मैं इस गर्भ को अनेक प्रकार की **शातना**–(गर्भ को खण्ड–खण्ड कर गिरा देने वाले प्रयोगों से) **पातना**–(अखण्ड रूप से गर्भ को गिरने वाली क्रियाओं से) **गालना**–(गर्भ को गलाने वाले उपायों से) व **मारणा**–(मारने वाले प्रयोगों) से नष्ट कर दूँ। इस प्रकार वह शातना, पातना, गालना और मारणा के लिए विचार करती है और विचार करके गर्भपात के लिए गर्भ को गिरा देने वाली क्षारयुक्त (खारी), कड़वी, कसैली, औषधियों को खाती है, पीती है तथा उस गर्भ को हर प्रकार से नष्ट करने की इच्छा करती है। परन्तु वह गर्भ उपर्युक्त सभी उपायों से भी नष्ट नहीं हो सका। तब वह मृगादेवी शरीर से श्रान्त, मन से दुःखित तथा शरीर और मन से खिन्न–हताश होती हुई इच्छा न रहते हुए भी विवशता के कारण अत्यन्त दुःख के साथ गर्भ को वहन करने लगी।

MEANS OF ABORTION

26. Some days later one midnight when she was awake and worrying about the family, Mriga Devi thought—"Earlier I appeared pleasant, beautiful, lovable, adorable highly desirable to Vijaya Kshatriya. I was cherished and trusted by him. But since this soul has come in my womb as a fetus I have become unpleasant... and so on up to... repugnant to Vijaya Kshatriya. What to say of seeing and sharing moments of enjoyment with me when Vijaya Kshatriya does not want to hear and remember even my name and family now. Therefore, it would be good for me to get rid of this fetus by process of *shaatana* (to disintegrate and throw out in pieces), *paatana* (to abort in one piece), *gaalana* (to dissolve and throw out), and *maarana* (to kill). Thus she decided to get rid of the fetus by *shaatana*... and so on up to... *maarana* and in order to do so she started taking salty or alkaline, bitter and astringent medicines with a desire to be rid of the fetus. But all these efforts failed to destroy the fetus. When Mriga Devi failed to get rid of the fetus, she became tired, exhausted, disappointed, dejected, and sad. Out of compulsion and in a distressed state of mind, she carried the fetus.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७. तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अट्ठ नालीओ अब्भिंतरप्पवहाओ, अट्ठ नालीओ बाहिरप्पवहाओ, अट्ठ पूयप्पवहाओ, अट्ठ सोणियप्पवहाओ, दुवे-दुवे कण्णंतरेसु, दुवे-दुवे अच्छि-अंतरेसु, दुवे-दुवे नक्कंतरेसु, दुवे-दुवे धमणि-अंतरेसु अभिक्खणं अभिक्खणं पूयं च सोणियं च परिस्सवमाणीओ परिस्सवमाणीओ चेव चिट्ठंति।

तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अग्गिए नामं वाही पाउब्भूए। जे णं से दारए आहारेइ, से णं खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ, पूयत्ताए सोणियत्ताए य परिणमइ। तं पि य से पूयं च सोणियं च आहारेइ।

२७. गर्भ में रहे हुए उस बालक की आठ नाड़ियाँ अन्दर की ओर बह रही थी और आठ नाड़ियाँ बाहर की ओर बह रही थी। इन सोलह नाड़ियों में से दो नाड़ियाँ कान के छिद्रों में, दो-दो नाड़ियाँ नेत्र छिद्रों में, दो-दो नासिका छिद्रों में तथा दो-दो धमनियों-(हृदयकोष्ठ के भीतर की नाड़ियों) से बार-बार पीव व लोहू बहा रही थी। गर्भ में ही उस बालक को भस्मक नामक व्याधि उत्पन्न हो गयी थी, जिसके कारण वह बालक जो कुछ खाता, वह शीघ्र ही भस्म हो जाता था, और तत्काल पीव (मवाद) व शोणित के रूप में परिणत हो जाता था।

27. That child in the womb had eight arteries flowing inward and eight veins flowing outward. Of these sixteen tubular vessels two pairs each were intermittently emitting pus and blood through holes of ears, eyes, nose, and heart. That boy suffered from a disease called *bhasmak* (a disease in which food is digested quickly). As a consequence whatever he consumed was quickly digested and at once turned into pus and blood.

२८. तए णं सा मियादेवी अन्नया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपुण्णाणं दारगं पयाया जाइ-अंधे जाव (जाइमूए जाइबहिरे, जाइपंगुले हुंडे य वायव्वे। केवलं से तेसिं अंगाणं) आगिइमेत्तं। तए णं सा मियादेवी तं दारगं हुंडं अंधरूवं पासइ, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजातभया अम्मधाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'गच्छह णं देवाणुप्पिया ! तुयं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि।'

तए णं सा अम्मधाई मियादेवीए 'तह' त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव विजए खत्तिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव एवं वयासी-'एवं खलु सामी ! मियादेवी नवण्हं मासाणं जाव आगिइमेत्ते. ! तए णं सा मियादेवी तं हुंडं अन्धरूवं पासइ, पासित्ता भीया तत्था उव्विग्गा संजायभया ममं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि।' तं संदिसह णं सामी ! तं दारगं अहं एगंते उज्झामि उदाहु मा !''

२८. इस प्रकार नौ मास परिपूर्ण होने पर मृगादेवी ने एक बालक को जन्म दिया जो जन्म से अन्धा (गूँगा, बहरा पांगला, बेठब आकार वाला) और अवयवों की आकृति मात्र रखने वाला था। इस प्रकार विकृत, बेडोल अंगोपांग वाले तथा अन्धरूप उस बालक को मृगादेवी ने देखा और देखकर भयभीत, संत्रस्त,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्विग्न और व्याकुल हो गई। (भयातिरेक से उसका शरीर काँपने लगा) उसने तत्काल धायमाता को बुलाया और बुलाकर कहा–"देवानुप्रिये ! तुम जाओ और इस बालक को ले जाकर एकान्त में किसी कूड़े–कचरे के ढेर पर फेंक आओ।"

धायमाता ने मृगादेवी के इस कथन को 'बहुत अच्छा' कहकर स्वीकार किया, और स्वीकार करके विजय क्षत्रिय के पास आयी; हाथ जोड़कर इस प्रकार कहने लगी–'स्वामिन् ! नव मास पूरे हो जाने पर मृगादेवी ने एक जन्मान्ध यावत् अवयवों की आकृति मात्र रखने वाले बालक को जन्म दिया है। उस विकृतांग व जन्मान्ध बालक को देखकर मृगादेवी भयभीत हुई और मुझे बुलाया। बुलाकर इस प्रकार कहा–'देवानुप्रिये ! तुम जाओ और इस बालक को ले जाकर एकान्त में किसी कूड़े–कचरे के ढेर पर फेंक आओ। अतः हे स्वामिन् ! आप ही मुझे बताइये कि मैं उसे एकान्त में ले जाकर फेंक आऊँ या नहीं ?

28. After nine months of pregnancy Mriga Devi gave birth to a child who was congenitally blind (dumb, deaf, crippled, deformed and disfigured) and had mere outlines of body-parts. The moment Mriga Devi saw such deformed, disfigured and blind child she was terrified, horrified, disgusted and disturbed. (She started trembling with fear.) She at once called the nursemaid and said—"Beloved of gods ! Go and throw this infant on a heap of trash in isolation."

The nursemaid accepted Mriga Devi's order by uttering—"All right." After that she went to Vijaya Kshatriya and said—"Master ! After nine months of pregnancy Mriga Devi gave birth to a child who is congenitally blind... and so on up to... and has mere outlines of body-parts. When Mriga Devi saw this deformed and blind child she was terrified and called me. She said to me—'Beloved of gods ! Go and throw this infant on a heap of trash in isolation.' So, master ! please tell me if I should throw this infant in isolation or not ?"

२९. तए णं से विजए खत्तिए तीसे अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेत्ता जेणेव मियादेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियादेविं एवं वयासी–'देवाणुप्पिया ! तुज्झं पढमं गब्भे। तं जइ णं तुब्भे एयं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झसि, तओ णं तुज्झं पया नो थिरा भविस्सइ। तो णं तुमं एयं दारगं रहस्सियगंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी विहराहि; तो णं तुज्झं पया थिरा भविस्सइ।"

तए णं सा मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहिस्सएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. विजय नरेश उस धायमाता के मुख से यह समग्र वृत्तान्त सुनकर सहसा सम्भ्रान्त–(व्याकुल) से होकर उठे, उठकर खड़े हो गये। खड़े होकर जहाँ रानी मृगादेवी थी, वहाँ आये और मृगादेवी से इस प्रकार कहने लगे–''देवानुप्रिये ! तुम्हारा यह प्रथम गर्भ है,यदि तुम इसको एकान्त स्थान में कूड़े–कचरे के ढेर पर फिंकवा दोगी तो तुम्हारी भावी सन्तान स्थिर न रहेगी अर्थात् उसे हानि पहुँचेगी। अतः (फेंकने की अपेक्षा) तुम इस बालक को गुप्त भूमिगृह में रखकर गुप्त रूप से भक्त पानादि के द्वारा इसका पालन–पोषण करो। ऐसा करने से तुम्हारी भावी सन्तति स्थिर रहेगी।''

मृगादेवी ने विजय क्षत्रिय के इस कथन को ''तथेति'' (बहुत अच्छा) कहकर विनम्र भाव से स्वीकार कर लिया और उस बालक को गुप्त भूमिगृह में स्थापित कर गुप्त रूप से आहारपानादि के द्वारा पालन–पोषण करने लगी।

29. On hearing all this from the nursemaid Vijaya Kshatriya got disturbed and stood up. He then came to Mriga Devi and said—"Beloved of gods ! This is your first born and if you throw him on a heap of trash in isolation your future offspring will not be firm. In other words, they will be harmed. Therefore, (instead of throwing him) you should feed and rear up this child under wraps in a secret cellar. This would make your future offspring firm and stable."

Mriga Devi humbly accepted Vijaya Kshatriya's advise by uttering—"As you say." And she started feeding and bringing up that child under wraps in a secret cellar.

३०. एवं खलु गोयमा ! मियापुत्त दारए पुरापोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे विहरइ !

३०. भगवान महावीर ने कहा–गौतम ! यह मृगापुत्र बालक अपने पूर्वजन्मोपार्जित अशुभ कर्मों का प्रत्यक्ष रूप से फल भोगता हुआ इस तरह समय–यापन कर रहा है।

30. Bhagavan Mahavir added—"Gautam ! Thus child Mrigaputra is biding his time visibly suffering the fruits of the demeritorious *karmas* he acquired during his earlier birth."

मृगापुत्र का भविष्य

३१. मियापुत्ते णं भंते ! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

३१. भगवन् ! यह मृगापुत्र बालक यहाँ से मृत्यु को प्राप्त कर कहाँ जायेगा ? कहाँ पर उत्पन्न होगा ? (गौतम ने पूछा)

FUTURE OF MRIGAPUTRA

31. *"Bhante* ! Where will this child Mrigaputra go after his death ? Where will he reincarnate ?" (Gautam asked)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२. गोयमा ! मियापुत्ते दारए छव्वीसं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबूद्दीवे द्दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले सीहकुलंसि सीहत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ सीहे भविस्सइ अहम्मिए जाव बहुनगरणिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी साहसिए, सुबहुं पावकम्मं समणिज्जइ समज्जिणित्ता, कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठिइएसु जाव (नेरइएसु नेरइयत्ताए) उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सरीसवेसु उवज्जिहिइ। तत्थ णं कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसियाए तिण्णि सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिइ। तत्थ वि कालं किच्चा, तच्चाए पुढवीए सत्त सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओ सीहेसु। तयाणंतरं चोत्थीए। उरगो भव, पंचमीए। इत्थीओ भव, छट्ठीए। मणुओ, अहे सत्तमीए।

तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता से जाइं इमाइं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मच्छ–कच्छभ गाह–मगर–सुंसुमाराईणं अड्ढतेरस–जाइकुलकोडि–जोणिपमुहसयसहस्साइं, तत्थ णं एगमेगंसि जोणिविहाणंसि अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता, तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइस्सइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता चउप्पएसु एवं उरपरिसप्पेसु, भुयपरिसप्पेसु, खहयरेसु, चउरिंदिएसु, तेइंदिएसु, बेइंदिएसु, वणप्फइए कडुयरुक्खेसु, कडुयदुद्धिएसु, वाउ–तेउ–आउ–पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता, तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइस्सइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सुपइट्ठपुरे नयरे गोणत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे अन्नया कयाइ पढमपाउसंसि गंगाए महानईए खलीणमट्टियं खणमाणे तडीए पेल्लिए समाणे कालगए तत्थेव सुपइट्ठपुरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुमत्ताए पच्चायाहिस्सइ।

से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे विण्णाय परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ। से णं तत्थ अणगारे भविस्सइ, इरियासमिए जाव बंभयारी। से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं.... जहा दढपइन्ने, सा चेव वत्तव्वया, कलाओ जाव सिज्झिहिइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

३२. (गौतम स्वामी के प्रश्न का उत्तर देते हुए भगवान महावीर ने कहा–) गौतम ! मृगापुत्र बालक छब्बीस वर्ष का पूर्ण आयुष्य भोगकर मृत्यु का समय आने पर काल करके इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष में वैताढ्य पर्वत की तलहटी में सिंहकुल में सिंह के रूप में उत्पन्न होगा। वह सिंह महाअधर्मी तथा पापकर्म में साहसी बनकर अधिक से अधिक पाप कर्म का संचय करेगा। वह सिंह मृत्यु को प्राप्त होकर इस रत्नप्रभापृथ्वी नामक पहली नरकभूमि में, जिसकी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम की है, उन नारकियों में उत्पन्न होगा। अनन्तर पहली नरक से निकलकर सीधा सरीसृपों (भुजाओं अथवा छाती के बल से चलने वाले तिर्यंच प्राणियों जैसे सर्प–नकुल आदि) की योनियों में उत्पन्न होगा। वहाँ से काल करके दूसरे नरक में, उत्कृष्ट तीन सागरोपम की स्थिति वाले नारक रूप में उत्पन्न होगा।

वहाँ से निकलकर सीधा पक्षी–योनि में उत्पन्न होगा। वहाँ से मृत्यु प्राप्त कर तीसरे नरक में सात सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति वाला नैरयिक होगा।

नरक से निकलकर सिंह की योनि में उत्पन्न होगा। वहाँ से काल करके चौथी नरकभूमि में जन्म लेगा। चौथे नरक से निकलकर सर्प जाति में जन्म लेगा। वहाँ से पाँचवें नरक में उत्पन्न होगा। वहाँ से निकलकर स्त्रीरूप में उत्पन्न होगा। स्त्री पर्याय से काल करके छट्ठे नरक में उत्पन्न होगा। वहाँ से निकलकर पुरुष होगा। वहाँ से काल करके सातवीं नरक भूमि में उत्पन्न होगा। सातवीं नरक से निकलकर पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में जो मच्छ, कच्छप, ग्राह, मगर, सुंसुमार आदि जलचर पंचेन्द्रिय जाति की योनियाँ हैं–उन **कुलकोटियों** (जीव–समूहों) में, जिनकी संख्या साढ़े बारह लाख हैं, उनके एक एक **योनि विधान**–योनि–भेद में लाखों बार उत्पन्न होकर पुनः पुनः जन्म लेकर मरता रहेगा।

तत्पश्चात् चतुष्पदों में (चौपाये–पशु–योनि में) उरपरिसर्प–छाती के बल चलने वालों में, भुज परिसर्प–भुजाओं के बल चलने वालों में, खेचर–आकाश में उड़ सकने जीवों में एवं चार इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय और दो इन्द्रिय वाले प्राणियों में तथा वनस्पति काय के कड़वे वृक्षों में, कड़वे दूधवाली अर्कादि वनस्पतियों में, वायुकाय, तेजस्काय, अप्काय एवं पृथ्वीकाय में लाखों–लाखों बार जन्म–मरण करेगा।'

इसके पश्चात् वहाँ से निकलकर सुप्रतिष्ठपुर नामक नगर में वृषभ (बैल) के पर्याय में उत्पन्न होगा। जब वह वृषभ बाल्यावस्था को पार कर युवावस्था में प्रवेश करेगा तब किसी समय, वर्षाऋतु के आरम्भ काल में गंगा महानदी के किनारे पर स्थित मिट्टी को खोदता हुआ नदी के किनारे मिट्टी गिर जाने से गंगा में बहकर पीड़ा भोगता हुआ मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। फिर वह बैल उसी सुप्रतिष्ठपुर नामक नगर में किसी सेठ के घर में पुत्ररूप से जन्म लेगा।

वहाँ पर वह बालभाव का परित्याग कर युवावस्था को प्राप्त होने पर तथारूप साधुजनोचित गुणों को धारण करने वाले स्थविर–वृद्ध श्रमणों के पास धर्म सुनकर, मनन कर मुण्डित होकर अनगारधर्म को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंगीकार करेगा। अनगारधर्म में ईर्यासमिति युक्त यावत् ब्रह्मचारी बनेगा। बहुत वर्षों तक यथाविधि श्रमण-पर्याय साधु धर्म का पालन करके आलोचना व प्रतिक्रमण से आत्म-शुद्धि करता हुआ समाधि भाव को प्राप्त कर मरण प्राप्त कर सौधर्म नाम के प्रथम देवलोक में देवरूप में उत्पन्न होगा।

तदनन्तर देवभव की स्थिति पूरी हो जाने पर वहाँ से च्युत होकर (देव शरीर को छोड़कर) महाविदेह क्षेत्र में जो धनाढ्य कुल हैं, उनमें उत्पन्न होगा। वहाँ उसका कलाभ्यास, प्रव्रज्या ग्रहण यावत् मोक्षगमन रूप सभी कथन दृढ़प्रतिज्ञ की भाँति ही समझ लेना चाहिए।

सुधर्मा स्वामी कहते हैं-जम्बू ! इस प्रकार मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने दुःखविपाक के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ प्रतिपादन किया है। (जिस प्रकार मैंने प्रभु से साक्षात् सुना है; उसी प्रकार ! मैं तुमसे कहता हूँ।)

32. (Replying to Gautam Swami's question Bhagavan Mahavir said—) Gautam ! He will die at the (ordained) moment of death at the conclusion of his (predestined) life-span of twenty six years and will be born as a lion in a pride of lions in the valley of the Vaitadhya mountain. That lion will be extremely impious and, indulging in grave sinful activities, he will accumulate excessive bad *karmas*. After death that lion will take birth as an infernal being among the infernal beings of Ratnaprabha Prithvi, the first hell, having a maximum life-span of one *Sagaropam*. From the first hell he will get reborn in the genus of reptiles and from there he will reincarnate in the second hell having a maximum life span of three *Sagaropam*.

Coming out from there after death he will get reborn as a bird and from there in the third hell having a maximum life span of seven *Sagaropam*.

Ending his life as an infernal being he will get reborn as a lion and from there in the fourth hell. After leaving fourth hell he will take rebirth as a snake and from there in the fifth hell. After fifth hell he will take birth as a woman and then in the sixth hell. After the sixth hell he will take birth as a man and then in the seventh hell. Coming out of the seventh hell he will enter the genus of *jalachar-panchendriya tiryanch-yonik* (aquatic five-sensed animal) that includes 1.25 million species including fish, tortoise, crocodile, alligator, and *Sunsumar*. In each different species he will take birth and die millions of times

After this he will take birth and die millions of times in numerous different species including—animals such as *ur-parisarp* (non-limbed

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

reptilian), *bhuj-parisarp* (limbed reptilian), *khechar* (aerial beings); four, three, and two sensed beings; plant-bodied beings such as trees with bitter fruits and milk; and air, fire, water and earth-bodied beings.

After that he will take birth as a bull in Supratishthapur city. When this bull will mature, one day at the beginning of the monsoon season while digging earth on the banks of the Ganges the bank will collapse. He will be swept away in the currents of the river and die a painful death. He will then reincarnate in the very same Supratishthapur city in the house of a merchant as his son.

On completing his adolescence and attaining youth he will listen to the sermon of worthy senior ascetics. He will ponder over it and get initiated as an ascetic after tonsuring his head. He will observe the codes of *Irya samiti* (care of movement)... and so on up to... he will become completely celibate. Leading an ascetic life observing the ascetic codes properly he will embrace meditational death after purifying his soul with critical review and expiation (*pratikraman*). He will then reincarnate as a god in the first heaven called Saudharma Devlok.

On completing the life-span in the divine realm he will descend and be reborn in an affluent family in Mahavideh area. There his education, initiation and other information up to getting liberated should be read as in the story of Dridhapratijna.

Sudharma Swami concluded, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Duhkha-vipaak*. (So I have heard from him and so I state.)"

विवेचन–'उम्मुक्क बाल भावं' आदि पदों का अर्थ उद्घाटन करते हुए आचार्यश्री लिखते हैं–**बाल भाव**–अर्थात् बचपना, **विण्णय**–हेयोपादेय का ज्ञाता, विज्ञ, **जोव्वणगमणुपत्ते**–युवावस्था को प्राप्त होना।

प्रस्तुत प्रकरण में योनि, जाति और कुल कोटि शब्द आये हैं। इनकी अर्थ विचारणा में आचार्य श्री आत्माराम जी म. ने निम्न स्पष्टीकरण किया है–

''जाति, कुलकोटि आदि शब्दों की अर्थ–विचारणा से पूर्वोक्त पद स्पष्टतया समझे जा सकेंगे, अतः इनके अर्थों पर विचार किया जाता है–

जाति–शब्द के अनेकों अर्थ हैं, परन्तु प्रकृत में यह शब्द एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवों का परिचायक है। जलचर पंचेन्द्रिय का प्रस्तुत प्रकरण में प्रसंग चल रहा है। अतः प्रकृत में जाति शब्द से जलचरपंचेन्द्रिय का ग्रहण करना है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुलकोटी–जीवसमूह को कुल कहते हैं, और उन कुलों के विभिन्न भेदों–प्रभेदों (श्रेणियों) को कोटी कहते हैं। जिन जीवों का वर्ण, गन्ध आदि सम हैं, वे सब जीव एक कुल के माने जाते हैं और जिनका वर्ण, गन्ध आदि विभिन्न है, वे जीवसमूह विभिन्न कुलों के रूप में माने गये हैं।

उत्पत्तिस्थान एक होने पर भी अर्थात् एक योनि से उत्पन्न जीवसमूह भी विभिन्न वर्ण गन्धादि के होने से विभिन्न कुल के हो सकते हैं। इसको स्थूलरूप से समझने के लिए गोमय–गोबर का उदाहरण उपयुक्त रहेगा–

वर्ष ऋतु के समय गोबर में बिच्छू आदि नानाप्रकार के विभिन्न आकार रखने वाले जीव उत्पन्न होने के कारण वह गोबर, उन जीवों की एक योनि है, उसमें कृमि, वृश्चिक आदि नाना जातीय जीवसमूह अनेक कुलों के रूप में उत्पन्न होते हैं। अस्तु।

योनि–का अर्थ है–उत्पत्तिस्थान। तैजस् कार्मण शरीर को तो आत्मा साथ लेकर जाता है, फलतः जिस स्थान पर औदारिक और वैक्रियशरीर के योग्य पुद्गलों को ग्रहण कर तत्तत् शरीर का निर्माण करता है, वह स्थान योनि कहलाता है।

योनियों की संख्या नियत नहीं है, वे असंख्य हैं। फिर भी जिन योनियों का परस्पर वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श आदि एक जैसा है उन अनेक योनियों को भी जाति की दृष्टि से एक गिना जाता है और इस प्रकार विभिन्न वर्णादि की अपेक्षा से योनियों के ८४ लाख भेद माने जाते हैं। जैसा कि प्रज्ञापनासूत्र की वृत्ति में लिखा है–(हिन्दी टीका, पृ. ९६)

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

Elaboration—Explaining the meanings of the phrases like *'unmukka baal bhaavam'* Acharyashri writes—*baal bhaava* means childhood. *Vinnaya* means one who can differentiate between good and bad; sagacious. *Jovvanaganupatte* means to attain youth.

In this story *yoni, jati* and *kulakoti* words have been used. While interpreting these terms Acharya Shri Atmaram ji M. has provided following explanation—

"Pondering over the terms *yoni, jati* and *kulakoti* will be helpful in properly understanding the aforesaid statement. This goes as follows—

Jati—It has many meanings but in this context it means one, two, three, four and five sensed beings. The statement under reference is discussing aquatic five sensed beings. Therefore, here the term *jati* specifically means aquatic five sensed beings.

Kulakoti—a group of beings is called *kula* (species), and different sub-groups of these *kulas* is called *koti*. The beings having same attributes are

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

believed to belong to one *kula* and those having different attributes are believed to belong to different groups.

In spite of the place of origin or the genus being the same there can be different groups (*kulas*) of beings depending upon their attributes. For a better general understanding a good example is cowdung—

A variety of insects, such as scorpion, worms and other insects, originate from a lump of cowdung during the monsoon season. Although the place of origin is same the insects belong to different groups (*kulas*).

Yoni—the place of origin (genus). A soul carries along its *taijas* and *karman shariras* (fiery and karmic bodies). The place where it acquires the particles suitable for forming *audarik* (gross physical) and *vaikriya* (transmutable) bodies and forms those bodies is called *yoni*.

The number of *yonis* is not fixed, it is infinite. However the *yonis* that have same attributes of appearance, smell, taste, and touch are counted in a single group (jati). Based on variation of the said attributes the total number of *yonis* is believed to be 8.4 million. These details are mentioned in *Prajnapana Sutra Vritti* (*Hindi Tika* p. 96)

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम श्रुतस्कन्ध : द्वितीय अध्ययन

उपोद्‌घात

दुःख विपाक के दूसरे अध्ययन का नाम है 'उज्झितक'। मृगापुत्र के प्रथम अध्ययन में प्रजा उत्पीड़न, प्रजा पर अत्याचार व क्रूर हिंसा कर्म करने के कटु परिणामों का दिग्दर्शन है। इस दूसरे अध्ययन में पशुओं के साथ क्रूर, निर्दय व्यवहार तथा हिंसा एवं अत्यधिक कामासक्ति, व्यभिचार आदि पाप कर्मों का अत्यन्त घोर दुष्परिणाम बताने वाला 'उज्झितक' कुमार का वर्णन है। इन अध्ययनों से यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि पापी जीव जब माता के गर्भ में आता है तब उसे इसी प्रकार के निकृष्ट और हिंसाकारी परिणामों के दोहद उत्पन्न होते है। यह दोहद ही गर्भस्थ जीव की भावी प्रवृत्तियों का संकेत माना जाता है। उज्झितक का चरित्र इस अध्ययन में है।

FIRST SHRUTSKANDH : SECOND CHAPTER

INTRODUCTION

The second chapter of *Duhkha-vipaak* is titled 'Ujjhitak'. The first chapter, Mrigaputra, describes the bitter consequences of tormenting and torturing people and indulging in cruel violent deeds. This second chapter contains the story of Ujjhitak Kumar describing the grave consequences of sinful deeds like cruel, tortuous, and violent treatment of animals; extreme lust and adultery. These stories also reveal that when such sinful being is conceived, the mother has equally base and violent *dohad* (desires of a pregnant mother). Such *dohad* is said to be the indicator of the eventual attitude of the being to be born. This chapter has the story of Ujjhitak.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीय अध्ययन
SECOND CHAPTER

उत्क्षेप (प्रस्तावना)

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?'

तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबुं अणगारं एवं वयासी–

१. जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–भगवन् ! मोक्ष को संप्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने दुःखविपाक के प्रथम अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ बताया है तो इसके द्वितीय अध्ययन का क्या अर्थ बताया है ?

उत्तर में सुधर्मा अनगार ने जम्बू अनगार से इस प्रकार कहा–

FOREWORD

1. *Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the aforesaid text and meaning of the first chapter of *Duhkha-vipaak*, then what is the text and meaning of the second chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by him ?

Arya Sudharma replied to ascetic Jambu—

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था। रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तस्स णं वाणियगामस्स उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए दूईपलासे नामं उज्जाणे होत्था। तत्थ णं दूईपलासे सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था। तत्थ णं वाणियगामे मित्ते नामं राया होत्था वण्णओ। तस्स णं मित्तस्स रन्नो सिरी नामं देवी होत्था। वण्णओ।

२. हे जम्बू ! उस समय में वाणिजग्राम नामक एक नगर था जो सभी प्रकार से समृद्ध था। उस वाणिजग्राम के उत्तरपूर्व दिशा के ईशानकोण में दूतिपलाश नामक उद्यान था। उस दूतिपलाश उद्यान में सुधर्मा नाम के यक्ष का यक्षायतन था। उस वाणिजग्राम नगर में मित्र नामक राजा था। उस मित्र राजा की श्री नाम की पटरानी थी। इन सबका वर्णन पूर्ववत् ही जानना चाहिए।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Vanijyagram, which was prosperous in all respects. In the northeastern direction (*Ishan Kone*) outside this town was a garden named Dutipalash. In that Dutipalash garden there was a temple of Sudharma Yaksh. In that Vanijyagram city lived King Mitra. That King named Mitra had a queen named Shri. The detailed description of all these should be read as aforesaid.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. तत्थ णं वाणियगामे कामज्झया नामं गणिया होत्था। अहीण जाव सुरूवा, बावत्तरिकलापंडिया, चउसट्ठि-गणिया-गुणोववेया एगूणतीसविसेसे रममाणी, एक्कवीसरइगुणप्पहाणा बत्तीस-पुरिसोवयारकुसला, नवंगसुत्तपडिबोहिया, अट्ठारसदेसीभासाविसारया, सिंगारागारचारुवेसा, गीय-रइ-गन्धव्व-नट्टकुसला संगयगय. सुंदरत्थण. ऊसियज्झया सहस्सलंभा, विदिण्णछत्त-चामर-वालवीयाणिया, कण्णीरहप्पयाया यावि होत्था। बहूणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरइ।

३. उस वाणिजग्राम नगर में 'कामध्वजा' नाम की एक गणिका थी। वह पाँचों इन्द्रियों से परिपूर्ण सुन्दर शरीर वाली, ७२ कलाओं में कुशल, गणिका के ६४ गुणों से युक्त, २९ प्रकार के विषयगुणों में रमण करने वाली थी। २१ प्रकार के रतिगुणों में प्रधान, कामशास्त्र प्रसिद्ध पुरुष के ३२ उपचारों में कुशल थी। उसके सुप्त नव अंग जागृत हो चुके थे। अठारह देशों की अठारह प्रकार की भाषाओं में प्रवीण थी। जिसका सुन्दर वेष मानो शृंगार का घर ही हो ऐसी शृंगार प्रधान, गीत-(संगीत-विद्या) रति-(कामक्रीड़ा) गान्धर्व-(नृत्ययुक्त गीतकला) नाट्य-(नृत्यकला) में कुशल एवं मन को आकर्षित करने वाली, उत्तम गति युक्त (हास्य एवं बोलचाल, व्यवहार एवं स्तनादिगत सौन्दर्य से युक्त थी।) वह अपनी एक रात्रि का शुल्क एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ लेती थी। जिसके विलास भवन पर ऊँची ध्वजा फहरा रही थी, उसे राजा की ओर से पारितोषिक रूप में छत्र, चँवर, बालव्यंजनिका-चँवरी या छोटा पंखा कृपापूर्वक प्रदान किये गये थे और वह कर्णीरथ नामक रथ विशेष से गमनागमन करती थी। वह कामध्वजा गणिका-हजारों गणिकाओं का स्वामिनी थी। उनका नेतृत्व एवं संरक्षण करती थी।

KAMADHVAJA COURTESAN

3. In Vanijyagram city lived a courtesan named Kamadhvaja. She was endowed with a beautiful body having five fully developed sense organs. She was proficient in seventy two arts (*kalaa*), endowed with the sixty four qualities of a courtesan, an exponent of all the twenty nine types of entertainments, an expert of twenty one styles of sex plays, and accomplished in thirty two styles of interactions with males (mentioned in the compendium of sexology or *Kamashastra*). Her nine latent sense organs were animated. She had good command over eighteen indigenous languages. She dressed in style and was the embodiment of adornment. She was primarily romantic and excelled i . singing and music (*geet*), sex play (*rati*), dance drama (*gandharva*) and dance (*nritya*). She was a charming and artful mover in the social and physical dimensions. She had voluptuous breasts. Her charges for a night's entertainment were one thousand coins. A flag was hoisted high on her residence. The king had honoured her with an umbrella, whisks and fans. The palanquin she used

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

for commuting was named Karnirath. Having one thousand courtesans under her command, she lived happily.

विवेचन–प्रस्तुत अध्ययन के प्रारम्भ में ही कामध्वजा गणिका का विस्तृत वर्णन पढ़कर आश्चर्य हो सकता है कि एक नगरवधू गणिका का इतना विस्तृत वर्णन क्यों? आचार्य श्री आत्माराम जी म. ने अपनी हिन्दी टीका में इस प्रश्न का समाधान करते हुए लिखा है–यह उस काल की कला और संस्कृति का परिचायक है। कामध्वजा मात्र एक वेश्या या नगरवधू मात्र नहीं थी, उसके गुणों का व कलाओं का परिचय उसे एक उच्चकोटि की कलाकार, चतुर, व्यवहार–निपुण और ज्ञान–विज्ञान–कलाओं की ज्ञाता बताकर यह बताना है कि उस युग में भी नारियाँ, भले ही वह किसी निम्न कुल व पाप प्रधान आजीविका में संलग्न हो, किन्तु कला आदि के शिक्षण व प्रदर्शन में वे भी बढ़ी–चढ़ी थी।

१८ देशों की भाषाओं का ज्ञान, संगीत, गीत, नृत्य–नाटक आदि कलाओं में निपुणता बताकर सूत्रकार उस युग की विकसित कला संस्कृति से परिचित कराते हैं।

इस सूत्र में वर्णित ६४ गणिका गुणों आदि का वर्णन वात्स्यायन के कामसूत्र में विस्तार पूर्वक मिलता है।

समाज, संस्कृति व कला आदि की दृष्टि से यह विस्तृत वर्णन आचार्यश्री कृत हिन्दी टीका पृष्ठ ११६ पर देखा जा सकता है।

नवंगसुत्तपडिबोहिया–सुप्त नौ अंग जाग गये, का आशय है–दो कान, दो नेत्र, दो नासिका, एक जिह्वा, एक त्वचा तथा मन–ये नौ अंग बाल्यकाल में काम–संवेदना की दृष्टि से सुप्त रहते हैं अर्थात् विकार रहित रहते हैं। जब इनमें कामजनित संवेदना व अनुभूति जागृत होती है, तब युवावस्था व विवाह योग्य अवस्था मानी जाती है।

Elaboration—The detailed description of courtesan Kamadhvaja in the beginning of the chapter may astonish the reader and invoke a curiosity as to why such detailed description of a courtesan ? Explaining this, Acharya Shri Atmaram ji M. has mentioned in his Hindi *Tika*—"This provides a glimpse of the art and culture of that period. Kamadhvaja was not just an ordinary courtesan or a state dancer, she was an accomplished artist. The purpose of mentioning her qualities and qualifications in the field of arts and showing her to be an accomplished artist, intelligent individual, adept socialite and expert of numerous subjects is to reveal that women of that period were highly qualified in various subjects and skilled in performing arts even when they belonged to a lower caste or subsisting on some mean or lowly profession.

The author of the work informs about the highly advanced state of art and culture in that period by mentioning about the expertise of eighteen languages, music, singing, dance and other performing arts.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Detailed description of the 64 qualities of a courtesan is available in *Kama Sutra* of Vatsyayan.

Detailed discussion on this description in context of society, culture and arts is available in the *Hindi Tika* by Acharya Shri Atmaram ji M., p. 116.

Navangasuttapadibohiya—Her nine latent sense organs were animated. The nine sense organs are—two ears, two eyes, two nose-holes, one tongue, one skin (organ of touch) and one mind. In context of sexual sensitivity these nine organs are latent or free of perversions during childhood. When the sexual sensitivity is activated or animated it is accepted as the beginning of youth or marriageable age.

उज्झितक—परिचय

४. तत्थ णं वाणियगामे विजयमित्ते नामं सत्थवाहे परिवसइ। अड्ढे। तस्स णं विजयमित्तस्स सुभद्दा नामं भारिया होत्था। अहीण.। तस्स णं विजयमित्तस्स पुत्ते सुभद्दाए भारियाए अत्तए उज्झियए नामं दारए होत्था। अहीण. जाव सुरूवे।

४. उस वाणिजग्राम नगर में विजयमित्र नामक एक धनी सार्थवाह रहता था। उस विजयमित्र की पाँचों इन्द्रियों से पूर्ण (सर्वांगसुन्दर) सुभद्रा नाम की पत्नी थी। विजयमित्र का पुत्र और सुभद्रा का आत्मज उज्झितक नामक एक सर्वांगसम्पन्न रूपवान् बालक था।

INTRODUCTION OF UJJHITAK

4. In that Vanijyagram city lived a rich caravan chief (*sarthavaha*) named Vijayamitra who had a wife named Subhadra having beautiful body with five fully developed sense organs. Vijayamitra and Subhadra had a perfect and beautiful son named Ujjhitak.

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा निग्गया। राया जहा कूणिओ तहा निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया, राया य गओ।

५. उस समय में श्रमण भगवान महावीर विहार करते हुए वाणिजग्राम नगर के दूति पलाश उद्यान में पधारे। नगरजन उनके दर्शनार्थ गये। राजा भी कूणिक नरेश की तरह भगवान के दर्शन को गया। भगवान ने सभी को धर्म का उपदेश दिया। धर्म उपदेश सुनकर जनता तथा राजा दोनों वापस चले गये।

5. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Dutipalash Chaitya in Vanijyagram city. People came to pay homage. Like king Kunik the king of the city also came to pay homage. *Bhagavan* gave his discourse to all, after which the king and the people returned home.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. (क) तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव लेस्से छट्ठं-छट्ठेणं जहा पण्णत्तीए पढमाए जाव। जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठक्खमण-पारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए।

'अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं !'

तए णं भयवं गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दुइपलासाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव वाणियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवगच्छित्ता उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव रायमग्गे तेणेव ओगाढे।

तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ, सन्नद्ध-बद्ध-वम्मिय-गुडिय-उप्पीलियकच्छे, उद्दामियघंटे, नानामणि-रयण-विविहगेवेज्जउत्तरकंचुइज्जे, पडिकप्पिए, झय-पडागवरपंचामेल-आरूढ-हत्थारोहे, गहियाउहप्पहरणे।

अन्ने य तत्थ बहवे आसे पासइ, सन्नद्धबद्धवम्मियगुडिए, आविद्धगुडे, ओसारियपक्खरे, उत्तरकंचुइय-ओचूल-मुहचण्डाधर-चामर-थासगपरिमंडियकडिए, आरूढआसारोहे गहियाउहप्पहरणे।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ सन्नद्धबद्धवम्मियकवए, उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणद्धगेवेज्जे, विमलकरबद्ध-चिंधपट्टे, गहियाउहप्पहरणे।

६. (क) उस समय श्रमण भगवान महावीर के ज्येष्ठ अन्तेवासी इन्द्रभूति नामक अनगार, जो कि तेजोलेश्या को संक्षिप्त करके अपने भीतर समाहित किये हुए थे तथा बेले-बेले की तपस्या करते थे। प्रथम प्रहर में स्वाध्याय करते थे आदि सम्पूर्ण वर्णन भगवती सूत्र के अनुसार समझें। वे धीमी गति से चलते हुए भगवान महावीर के पास आये। और बोले-भंते ! आपकी आज्ञा प्राप्त करके मैं षष्ठखमण तप (बेला) के पारणा के लिए वाणिजग्राम में उच्च-नीच-मध्यम कुलों में सामुदायिक भिक्षाचरी के लिए जाना चाहता हूँ।'

तब भगवान ने कहा-गौतम ! तुम्हें जैसा अनुकूल हो वैसा करो।

तब भगवान गौतम श्रमण भगवान महावीर की अनुमति प्राप्त होने पर दूतिपलास उद्यान से निकलकर वाणिज ग्राम के उच्च-नीच-मध्यम कुलों में सामुदायिक रूप में भिक्षाचरी करते हुए राजमार्ग पर आ गये।

वहाँ राजमार्ग पर उन्होंने अनेक हाथी देखे। वे हाथी युद्ध के लिए उद्यत थे, वे कवच पहने हुए तथा शरीररक्षक उपकरण (झूल) आदि धारण किये हुए थे। उनके उदर (पेट) दृढ़ बन्धन से बाँधे हुए थे। उन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झूलों के दोनों तरफ बड़े-बड़े घण्टे लटक रहे थे। जिन पर नाना प्रकार के मणि और रत्न जड़े थे। वे हाथी विविध प्रकार के ग्रैवेयक (कण्ठाभूषण) पहने हुए थे तथा उत्तरकंचुक नामक विशेष प्रकार का कवच एवं अन्य कवच आदि सामग्री धारण किये हुए थे। वे तीन प्रकार की ध्वजा (जिस पर गरुड़ आदि चिह्न लगे हों) और दो प्रकार की पताका (जिस पर कोई चिह्न न हो) इन पाँच प्रकार के शिरोभूषण से विभूषित थे। उन पर **आयुध** (वह शस्त्र जो फेंका नहीं जा सकता, जैसे तलवार आदि) व **प्रहरणादि**-(जो शस्त्र फेंके जा सकते हैं, जैसे तीर आदि) लिए महावत बैठे थे।

इसी तरह वहाँ युद्ध के लिए उद्यत अनेक अश्वों को भी देखा, उन पर कवच तथा शारीरिक रक्षा के उपकरण बँधे हुए थे। अश्वों के शरीर पर सोने की बनी हुई झूल पड़ी थी तथा तनुत्राण लटक रहे थे तथा मुँह पर लगाम लगी हुई थी। वे अश्व क्रोध से होठों को चबा रहे थे। उनका कटिभाग चामर तथा स्थासक (आभूषण-विशेष) से विभूषित था, तथा जिन पर सवारी कर रहे अश्वारोही (घुड़सवार) आयुध और प्रहरण दोनों प्रकार के शस्त्र ग्रहण किये हुए थे।

इसी तरह वहाँ बहुत से पुरुषों को भी देखा, जो शरीर पर दृढ़ बन्धनों से बँधे हुए लोहमय कुसूलादि से युक्त कवच धारण किये हुए थे। उन्होंने शरासनपट्टिका-धनुष खींचने के समय हाथ की रक्षा के लिए बाँधी जाने वाली चमड़े की पट्टी, कसकर बाँध रखी थी तथा गले में ग्रैवेयक-कण्ठाभरण पहने हुए थे। उन पुरुषों के शरीर पर उत्तम चिह्नपट्टिका-(वस्त्र से निर्मित चिह्न-निशानी) लगी थी तथा आयुधों और प्रहरणों को ग्रहण किये हुए युद्ध के लिए उद्यत थे।

MISERABLE CONDITION OF UJJHITAK

6. (a) During that period of time the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavir was ascetic Indrabhuti (Gautam Swami). He had ingested *Tejoleshya* (firepower) after toning it down. He was observing a series of two day fasts interspersed with a day of meals. He used to spend first quarter of the day in studies and so on as mentioned in *Bhagavati Sutra*. He sauntered to Bhagavan Mahavir and asked—"*Bhante* ! Seeking your permission I want to go to Vanijyagram city and visit low, medium, and high caste families to collect alms from all for breaking my two day fast (*shashtakhaman tap*)."

Bhagavan replied—"Gautam ! Do as you please."

On getting permission from Shraman Bhagavan Mahavir, Bhagavan Gautam left Dutipalash garden and after collecting alms from low, medium, and high caste families came to the main road.

On that main road he saw many elephants. These elephants were battle-ready. They were adorned with armour plates and other protective coverings like caparisons (*jhool*). Their bellies were tightened with belts. Large bells were hanging on both sides of the caparisons. These bells were

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

studded with a variety of gems and beads. These elephants were further embellished with ornaments including necklaces. They were also wearing *Uttar Kanchuk* (a special additional armour plate) and other armour plates and embellishments. They were also adorned with three kinds of flags (with emblems of eagle and other motifs), two kinds of streamers (without any markings), and five kinds of head-ornaments. Mahouts carrying weapons including *ayudhs* (hand-held like sword) and *praharans* (weapons that can be launched or thrown like arrow).

He also saw many battle-ready horses equipped with armour plates and other protective coverings. These horses were covered with golden caparisons with hanging chains. They were harnessed with bridles and driving reins. They were gnashing their teeth in anger. Their middle was strapped with plumed belly-band and other ornaments (*sthasak*). The horsemen riding them carried weapons including *ayudhs* and *praharans*.

He also saw many men (soldiers) who were wearing stoutly strapped armours with pointed projections. They had tightly strapped their arms with protective leather straps needed when drawing bow-string. Their necks were adorned with necklaces. They were also wearing identifying emblems and strips made of cloth. Equipped with *ayudhs* and *praharans*, they were battle-ready.

६. (ख) तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ अवओडियबंधणं उक्कित्तकण्णनासं नेहतुप्पियगत्तं,वज्झकरकडिजुयनियत्थं, कंठेगुणरत्तमल्लदामं, चुण्णगुंडियगत्तं,

चुण्णयं वज्झपाणपियं तिलं-तिलं चेव छिज्जमाणं कागणिमंसाइं खावियंतं पावं, कक्खरगसएहिं हम्ममाणं, अणेगनरनारी संपरिवुडं चच्चरे चच्चरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं। इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं पडिसुणेइ-'नो खलु देवाणुप्पिया ! उज्झियगस्स दारगस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ; अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति !

६. **(ख)** उन पुरुषों के मध्य में भगवान गौतम ने एक अन्य पुरुष को देखा, जिसके दोनों हाथ पीछे की ओर मोड़कर रस्सी से बँधे थे और उन पर हथकड़ियाँ पड़ी थी। उसके नाक और कान कटे हुए थे। शरीर पर तैल चुपड़ा था। हाथ और कटि प्रदेश (कमर) पर वध्य पुरुषोचित-(मृत्यु दण्ड प्राप्त पुरुष के) वस्त्र खण्ड टँगे थे। कण्ठ में लाल फूलों की माला लटक रही थी। उसका शरीर गेरू के चूर्ण से पुता था।

वह पुरुष भय से काँप रहा था तथा जिसे प्राणों से बहुत प्यार था। जो जीना चाहता था उसे तिल-तिल करके काटा जा रहा था। शरीर के काकिणी जितने-छोटे-छोटे माँस के टुकड़े किये जा रहे थे। उस पापात्मा पुरुष पर सैकड़ों पत्थरों व चाबुकों से प्रहार किया जा रहा था। वह अनेक स्त्री-पुरुषों के समूह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से घिरा हुआ था। प्रत्येक चौराहे आदि पर फूटा ढोल बजाकर उसके सम्बन्ध में ऐसी उद्घोषणा सुनाई जा रही थी–

–'हे महानुभावों ! इस उज्झितक कुमार का किसी राजा अथवा राजपुत्र ने कोई अपराध नहीं किया अर्थात् इसकी दुर्दशा के लिए अन्य कोई दोषी नहीं है, किन्तु यह इसके अपने ही कर्मों का अपराध है–दोष है, जिस कारण यह इस दुर्दशा को प्राप्त हुआ है।

6. (b) Amongst these soldiers Bhagavan Gautam saw a person whose shackled hands were tied at his back with a rope. His nose and earlobes had been severed. His body was smeared with oil. His waist and hands were covered with rags fit for a man condemned to death. On his neck dangled a garland of red flowers. His whole body was covered with red chalk.

That man was trembling with fear. Although he dearly loved his life and wanted to live, he was being cut piece by piece. His body was being chopped into small pieces of the size of *Kakini* (a small coin). Surrounded by many men and women, that sinful person was being hit by hundreds of stones and whips. At every crossing a broken drum was being beaten and an announcement made—

"Listen gentlemen ! It is no king or prince who inflicts this punishment to this boy Ujjhitak. It is only his sinful deeds that are responsible for his miserable condition.

गौतम की जिज्ञासा

७. तए णं से भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता इमे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–'अहो णं इमे पुरिसे जाव नरयपडिरूवियं वेयणं वेएइ' त्ति कट्टु वाणियगामे नयरे उच्च–नीच–मज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे अहापज्जत्तं सामुदाणियं गिण्हइ, गिण्हित्ता वाणियगामे नयरे मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी–

'एवं खलु अहं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे वाणियगामं जाव तहेव वेइए। से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसी? जाव पच्चणुभवमाणे विहरइ ?

७. (राजमार्ग पर) उस पुरुष को देखकर भगवान गौतम के मन में यह चिन्तन और विचार उत्पन्न हुआ कि–'अहो ! यह पुरुष कैसी नरकतुल्य वेदना भोग रहा है !' ऐसा विचार करके भगवान गौतम वाणिजग्राम नगर के घरों में भ्रमण करते हुए आवश्यकतानुसार भिक्षा लेकर श्रमण भगवान महावीर के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पास आये। उन्हें लाई हुई भिक्षा दिखलाई। तत्पश्चात् भगवान को वंदना नमस्कार करके उनसे इस प्रकार प्रश्न किया–

–'हे प्रभो ! आपकी आज्ञा लेकर मैं भिक्षा हेतु वाणिजग्राम नगर में गया। वहाँ मैंने एक ऐसे पुरुष को देखा जो साक्षात् नारकीय वेदना का अनुभव कर रहा है। भगवन् ! वह पुरुष पूर्वभव में कौन था, जो यहाँ नरक जैसी विषम वेदना भोग रहा है ?

KKKK

7. On seeing that person on the main road Bhagavan Gautam thought and pondered—"Oh ! How much infernal torture this man is suffering !" With this thought Bhagavan Gautam collected required alms from houses in Vanijyagram city and returned to Bhagavan Mahavir. He placed the alms before *Bhagavan* and after paying him homage and obeisance said—

"*Bhante* ! On getting your permission I went to Vanijyagram city to seek alms. There I saw a person suffering infernal torture. *Bhante* ! In his earlier birth who was this person that now suffers such infernal torture ?

पूर्वभव–विवरण

८. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थि. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे सुणंदे णामं राया होत्था। महया हिमवंत.

तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे बहुमज्झदेसभाए महं एगे गोमंडवे होत्था। अणेगखम्भसयसंनिविट्ठे, पासाईए. तत्थ णं बहवे नगरगोरूवा णं सणाहा य अणाहा य नगरगावीओ य नगरवलीवद्दा य नगरपड्डियाओ य नगरवसभा य पउरतणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसंति।

८. (उस पुरुष के पूर्वभव का वृत्तान्त बताते हुए भगवान ने कहा)–गौतम ! उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भरतक्षेत्र में हस्तिनापुर नामक एक समृद्ध नगर था। उस नगर में सुनन्द नामक राजा था। वह हिमालय पर्वत के समान महान् प्रतापी था।

उस हस्तिनापुर नगर के लगभग मध्य भाग में सैकड़ों स्तम्भों से निर्मित सुन्दर मनोहर, एक विशाल गोशाला थी। वहाँ पर नगर के अनेक सनाथ–(जिनका कोई स्वामी हो) और अनाथ–(जिनका कोई स्वामी न हो) गायें, बैल, छोटी गायें–बछड़ियाँ, साँड़ आदि चौपाये पशु थे। उन्हें प्रचुर मात्रा में घास–पानी मिलता रहता था, वे भय तथा उपसर्गादि से मुक्त होकर सुखपूर्वक वहाँ निवास करते थे।

PREVIOUS BIRTH OF MRIGAPUTRA

8. (Narrating the story of previous birth of that person Shraman Bhagavan Mahavir said—) "Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Hastinapur in Bharatvarsh area in Jambu

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-४

Illustration No. 4

क्रूरकर्मा उज्झितक की दुर्दशा

एक बार वाणिज्यग्राम में गौतम स्वामी बेले का पारणा लेने गोचरी करते हुए नगर के मध्य में एक अति भयानक दृश्य देखते हैं। नगर के चौराहे पर एक पुरुष सांकलों से बँधा है, चारों तरफ सशस्त्र सैनिक, घुड़सवार व हाथी सवार उसे घेरकर खड़े हैं। कुछ सैनिक उसे चमड़े के गीले चाबुकों से, लोहे के दण्डों से, तीखे भालों से पीट रहे हैं, कुछ शस्त्रों से उसके पाँवों का माँस काट-काट कर पक्षियों को खिला रहे हैं। कटे हुए स्थानों पर गेरू का चूर्ण, क्षार आदि छिड़क रहे हैं। वह अपराधी जोर-जोर से चींख-चिल्ला रहा है।

एक सैनिक चौराहे पर खड़ा होकर ढोल बजाकर घोषणा करता है-''यह दुष्ट पुरुष राजा का अपराधी है। इसे अपने किये अपराध का दण्ड दिया जा रहा है।''

गौतम स्वामी भगवान के पास आकर पूछते हैं-भंते ! इसने ऐसा क्या घोर पापकर्म किया था जिस कारण यहाँ पर घोर नारकीय यातना भोग रहा है।

भगवान उसका पूर्वभव बताते हैं।

-श्रुतस्कन्ध १, अ. २, सूत्र ६-७

PATHETIC CONDITION OF UJJHITAK

Once Gautam Swami went to Vanijyagram to collect alms for breaking his two-day fast. There he saw a horrifying scene. On the main crossing he saw a shackled person surrounded by armed guards on foot, elephants and horses. He is being whipped by wet leather whips and beaten by iron rods and spears. His legs are being chopped and fed to birds. Sand and acid is being applied to his wounds. That prisoner is shrieking and wailing loudly.

Another guard is beating drums and announcing—"This evil person has committed a crime and is being punished for that."

Gautam Swami returns to *Bhagavan* and asks—"*Bhante* ! What grave sin this person committed during his past birth that he now suffers such infernal torture ?"

Bhagavan tells about his past birth

—Sec. I, Ch. 2, Sutra : 6-7

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

continent. A king named Sunand was the ruler of that city. He was as majestic as the Himalayas.

In the central part of Hastinapur city there was a large and beautiful cow-shed made up of hundreds of pillars. There dwelt numerous cows, oxen, small cows (calves), bulls and other cattle belonging to some one or belonging to no one. They got abundant grass (feed) and water and lived in comfort and without any fear or pain.

९. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे भीमे नामं कूडग्गाहे होत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे। तस्स णं भीमस्स कूडग्गाहस्स उप्पला नामं भारिया होत्था, अहीण. तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अन्नया कयाइ आवन्नसत्ता जाया यावि होत्था। तएणं णं तीसे उप्पलाए कूडग्गाहिणीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेवारूवे दोहले पाउब्भूए।

९. उस हस्तिनापुर नगर में भीम नामक एक कूटग्राह–(धोखे से कपटपूर्वक जीवों को फँसाने वाला) रहता था। वह स्वभाव से ही अधर्मी व पाप कर्मों से प्रसन्न होने वाला था। उस भीम कूटग्राह की पत्नी का नाम उत्पला था जो सम्पूर्ण पाँचों इन्द्रिय वाली थी। किसी समय वह उत्पला गर्भवती हुई। उस कूटग्राह की पत्नी उत्पला को पूरे तीन मास के पश्चात् इस प्रकार का दोहद–मनोरथ उत्पन्न हुआ।

9. In that Hastinapur city lived a *kootagraha* (trapper) named Bheem. He was by nature irreligious and derived pleasure in sinful deeds. The name of that Bheem trapper's wife was Utpalaa, who was well proportioned. Once Utpalaa became pregnant. After three months of pregnancy she had a *dohad* (pregnancy desire).

उत्पला को दोहद

१०. 'धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले जाओ णं बहूणं नगरगोरूवाणं सणाहाण य जाव वसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्ठेहि य कम्बलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीहुं च पसन्नं च आसाएमाणीओ विसाएमाणीओ, परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति। तं जइ णं अहमवि बहूणं नगर जाव विणिज्जामि' त्ति कट्टु।

तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीण–विमण–वयणा पंडुल्लइयमुहा ओमंथिय–नयण–वयण–कमला जहोइयं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकाराहारं अपरिभुंजमाणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहय जाव झियाइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. (दोहद का स्वरूप) "वे माताएँ धन्य हैं, (पुण्यवती हैं, कृतार्थ हैं।) उनका मनुष्यजन्म और जीवन भी सार्थक है जो अनेक अनाथ या सनाथ नगर में रहने वाले पशुओं यावत् वृषभों के ऊधस्–(वह थैली जिसमें दूध भरा रहता है) स्तन, **वृषण**–अण्डकोष, पूँछ, **ककुद्**–(स्कन्ध का ऊपरी भाग) कन्धे, कर्ण, नेत्र, नासिका, जीभ, होंठ, कम्बल–**सास्ना**–(गाय के गले का चमड़ा) के (माँस के) शोले बनाकर, तलकर, भूनकर, सुखाकर, लवण आदि मिलाकर उस माँस के साथ सुरा, **मधु**–(फूलों से बनी मदिरा) **मेरक**–(तालफल से बनाई गई मदिरा), **सीधु**–(गुड़ व धान के मेल से बनाई मदिरा), **प्रसन्ना**–(द्राक्षा आदि से बनी हुई) इन सब मद्यों का सामान्य और विशेष रूप से (थोड़ा एवं अधिक) स्वयं स्वाद लेती है और परिभाजन–(दूसरों को बाँटती हुई) तथा परिभोग–(सबके साथ मिलकर) करती हुई अपने दोहद को पूर्ण करती है। काश ! मैं भी अपने दोहद को इसी प्रकार पूर्ण करूँ।

ऐसा विचार करके उस दोहद के पूर्ण न होने से कूटग्राह की पत्नी उत्पला (खून सूख जाने से–) सूखने लगी, भूखे व्यक्ति के समान थकी हुई दीखने लगी, माँस सूख जाने पर हड्डियाँ दिखाई देने लगी। रोगिणी व रोगी के समान शिथिल शरीर वाली, कान्तिरहित, दीन तथा चिन्तातुर मुख वाली हो गयी। उसका वदन फीका एवं पीला पड़ गया, नेत्र तथा मुख–कमल मुर्झा गया। पुष्प, वस्त्र, गन्ध, फूलों की गूँथी हुई माला, आभूषण और हार आदि का उपभोग करना भी उसने छोड़ दिया। हाथ से मसली हुई कमल की माला की तरह म्लान होकर कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य के विवेक से रहित चिन्ताग्रस्त रहने लगीं।

UTPALAA'S DOHAD

10. "Blessed, fortunate, and contented are those mothers who brown, fry, roast, dry and salt the meat from the udders (*oodhas*), breasts, testicles (*vrishan*), tails, humps (*kukud*), shoulders, ears, eyes, noses, tongues, lips, and dewlaps (*kambal*) of cows,... and so on up to ...and other cattle belonging to some one or belonging to no one. And then they enjoy tasting and eating, distributing (*paribhajan*) and sharing with their friends (*paribhog*) a little or more with a variety of wines (*sura*), namely *madhu* (made from flowers or honey), *merak* (made from palm-fruit), *madya* (a kind of white wine), *seedhu* (made from mixture of jaggery and grains), and *prasanna* (made from grapes). And thus fulfill their *dohad* (desires of a pregnant mother). I wish I too fulfilled my *dohad* in the same way."

After these thoughts and because the *dohad* (desires of a pregnant mother) was not fulfilled, Utpalaa, the wife of the trapper, became anemic, emaciated, and weak like a famished person. Her skeleton showed as she lost her fat. Like a sick person she lost the natural freshness and glow, and the healthy pink of her face was replaced by a sick gloom. Her body became dull and pale. Her eyes and face withered. She became

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

apathetic to any and all sorts of cosmetics and adornments including flowers, perfumes, garlands, and ornaments. Wilted like a crushed garland of lotus flowers and devoid of rationality, she plunged into the sea of grief and misery.

११. इमं च णं भीमे कूडग्गाहे जेणेव उप्पला कूडग्गाहिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहय० जाव पासइ, एवं वयासी–" किं णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओहय जाव झियासि ?'

तए णं सा उप्पला भारिया भीमं कूडग्गाहं एवं वयासी–'एवं खलु, देवाणुप्पिया ! मम तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दोहला पाउब्भूया–'धन्ना णं ताओ जाओ णं बहूणं गोरूवाणं ऊहेहि य जाव लावणेहि य सुरं च ६ आसाएमाणीओ ४ दोहलं विणेंति।' तए णं अहं देवाणुप्पिया ! तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि जाव झियामि।'

११. इतने में वह भीम कूटग्राह, जहाँ पर उत्पला थी, वहाँ आया और उसने चिन्ताग्रस्त उदास उत्पला को देखा। देखकर पूछा–'देवानुप्रिये ! तुम क्यों इस तरह शोकाकुल, (हथेली पर मुख रखकर चिन्ताग्रस्त) बैठी हो ?

तब वह उत्पला भीम कूटग्राह को कहने लगी–'स्वामिन् ! लगभग तीन मास पूर्ण होने पर मुझे यह दोहद उत्पन्न हुआ है कि वे माताएँ धन्य हैं, जो गाय–वृषभ आदि पशुओं के ऊधस्, स्तन आदि के लवण मिश्रित माँस का अनेक प्रकार की मदिराओं के साथ आस्वादन करती हुई, सहेलियों को खिलाती पिलाती अपने दोहद को पूर्ण करती हैं। मेरा यह दोहद पूर्ण नहीं होने से मैं निस्तेज व हतोत्साह होकर आर्तध्यान में डूबी हूँ।''

11. At that time Bheem trapper came where Utpalaa was sitting and found her sad and gloomy. He asked—"Beloved of gods ! Why are you so gloomy (sitting with your chin in your palms) ?

Utpalaa responded—"My lord ! After three months of pregnancy I am filled with this *dohad* (pregnancy desire)—'Blessed are those mothers who brown, fry, roast, dry and salt the meat from the udders (*oodhas*),... and so on up to... And thus fulfill their *dohad*.' Because the *dohad* has not been fulfilled I have become anemic,... and so on up to... and plunged into the sea of grief and misery."

भीम द्वारा पशुओं की हिंसा

१२. तए णं से भीमे कूडग्गाहे उप्पलं भारियं एवं वयासी–'मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि; अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ।' ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं समासासेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से भीमे कूडग्गाहे अद्धरत्तकालसमयंसि एगे अबीए सन्नद्ध जाव पहरणे सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता हत्थिणाउरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव गोमण्डवे तेणेव उवागए, बहूणं नगरगोरूवाणं जाव वसभाण य अप्पेगइयाणं ऊहे छिंदइ जाव अप्पेगइयाणं कंबले छिंदइ, अप्पेगइयाणं अन्नमन्नाइं अंगोवंगाइं वियंगेइ, वियंगेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता उप्पलाए कूडग्गाहिणीए उवणेइ।

तए णं सा उप्पला भारिया तेहिं बहूहिं गोमंसेहि य सोल्लेहि य सुरं च–५ आसाएमाणी–४ तं दोहलं विणेइ।

तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी संपुण्णदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला वोच्छिन्नदोहला संपन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ।

१२. (यह सुनकर) उस भीम कूटग्राह ने अपनी उत्पला भार्या से कहा–"देवानुप्रिये ! तुम चिन्ताग्रस्त होकर दुःखी मत रहो। मैं वह सब कुछ करूँगा जिससे तुम्हारे इस दोहद की संपूर्ति हो जायेगी।" इस प्रकार के मधुर अनुकूल वचनों से उत्पला को आश्वस्त किया।

तत्पश्चात् भीम कूटग्राह आधी रात के समय अकेला ही दृढ़ कवच पहनकर, धनुष–बाण से सज्जित होकर, तलवार व तीर आदि लेकर अपने घर से निकला और हस्तिनापुर नगर के मध्य से होता हुआ जहाँ पर गोमण्डप (गौशाला) थी वहाँ पर आया, आकर वह नगर की गायों, बछड़ों यावत् वृषभों में से किसी के स्तन, किसी के कम्बल आदि व किसी के दूसरे अंगोपांगों को काटता है और काटकर अपने घर ले आता है। लाकर अपनी भार्या उत्पला को देता है।

तदनन्तर वह उत्पला उन अनेक प्रकार के शूल आदि पर पकाये गये गोमांसों के साथ विविध प्रकार की मदिरा आदि का आस्वादन करती हुई अपने दोहद को पूर्ण करती है। इस तरह वह परिपूर्ण दोहद वाली, सन्मानित दोहद वाली, निवृत्त दोहद वाली, दोहद के संस्कार मन से मिट जाने पर व्युच्छिन्न दोहद वाली होकर उस गर्भ का सुखपूर्वक पालन करती है।

KILLING OF ANIMALS BY BHEEM

12. (At these words) Bheem trapper said to his wife Utpalaa—"Beloved of gods ! Don't be sad and gloomy. I will do all what is required to fulfill this *dohad*." Thus he gave assurance to Utpalaa in sweet agreeable words.

Later, dressed in strong armour and carrying bow, arrows, and sword, Bheem trapper left his house alone during the night. Crossing the city he came to the cow-shed and cut off the udders, dewlaps and other parts of some cows, calves, and other animals. Having done that he brought these parts home and gave them to his wife Utpalaa.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Then Utpalaa sated her *dohad* by consuming these pieces of beef with a variety of wines. Thus her *dohad* was fulfilled, honoured, complied with, and removed. Having attained this she bore the fetus happily.

उत्पला द्वारा पुत्र जन्म

१३. तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अन्नया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया। तए णं तेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया महया चिच्ची सद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आरसिए।

तए णं तस्स दारगस्स आरसिय सद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे नयरे बहवे नगरगोरूवा जाव वसभा य भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सव्वओ समंता विप्पलाइत्था।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं नामधेज्जं करेंति-'जम्हा णं अम्हं इमेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया महया चिच्ची सद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आरसिए, तए णं एयस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे नयरे बहवे नगरगोरूवा जाव भीया तत्था तसिया उव्विग्गा, सव्वओ समंता विप्पलाइत्था, तम्हा णं होउ अम्हं दारए 'गोत्तासए' नामेणं।

तए णं से गोत्तासए दारए उम्मुक्कबालभावे जाये यावि होत्था।

१३. तदनन्तर उस उत्पला कूटग्राहिणी ने नव मास पूरे हो जाने पर एक पुत्र को जन्म दिया। जन्म के साथ ही उस बालक ने अत्यन्त कर्णभेदी चीत्कारपूर्ण भयंकर क्रन्दन किया। उस बालक के कठोर, चीत्कारपूर्ण क्रन्दन को सुनकर हस्तिनापुर नगर के बहुत से गाय-बछड़े यावत् वृषभ आदि भयभीत व उद्वेगग्रस्त होकर चारों दिशाओं में भागने लगे।

यह देखकर उसके माता-पिता ने इस बालक का नामकरण करते हुए कहा कि-जन्म के साथ ही इस बालक ने **'चिच्ची'**-चीत्कार के द्वारा तीव्र स्वर युक्त आक्रन्दन किया था। उस कर्णकटु, चीत्कारपूर्ण आक्रन्दन को सुनकर हस्तिनापुर नगर में गौ आदि पशु भयभीत, त्रस्त व उद्विग्न होकर चारों तरफ भागने लगे; अतः इस बालक का नाम **गोत्रास**-(गाय आदि पशुओं को त्रास देने वाला) रखा जाता है।

यथासमय उस गोत्रास नामक बालक ने बाल्यावस्था को पार कर युवावस्था में प्रवेश किया।

BIRTH OF A SON

13. After nine months of pregnancy, Utpalaa gave birth to a male child. The moment the child was born he produced a piercing fiendish shriek and wailed. Hearing this harsh shriek and wail many cows, calves, and bulls in Hastinapur ran helter-skelter with fear and anxiety.

Observing this his parents, during his naming ceremony, announced—The moment this child was born he produced a piercing shriek and wailed. Hearing this harsh shriek and wail many cows, calves, and bulls in

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Hastinapur ran helter-skelter with fear and anxiety. Therefore we give this child the name "Gotras" (one who terrifies cows).

In due course the child crossed childhood and attained youth.

विवेचन--टीकाकार अभयदेवसूरि-**भीया, तत्था** आदि शब्दों का अभिप्राय उद्घाटित करते हुए लिखते हैं, 'उस जन्मते बालक के हृदय को दहलाने वाला, कानों को फाड़ देने वाला चीत्कार पूर्ण क्रन्दन सुनकर नगर के पशु भयभीत हुए, उनमें भय व्याप्त हो गया। त्रस्त हो गये-अर्थात् कोई हमारे प्राण लूटने वाला आ गया है, इस भयपूर्ण अनुभूति से त्रस्त होकर बेचैन हो गये। उनका मन आकुल-व्याकुल हो उठा, उनका शरीर भय के मारे काँपने लगा और वे इधर-उधर भागने लगे। *(हिन्दी टीका पृष्ठ १५०)*

Elaboration—Explaining the terms *'bhiya', 'tattha',* etc. Abhayadev Suri, the commentator (*Tika*) mentions—"Hearing the fearful and ear-piercing fiendish shriek and wail of that new born, the cattle in the city became apprehensive and afraid. Filled with the apprehension that someone who will deprive us of our life has arrived, they were terrified and restless. They were in an agitated state of mind, their bodies trembled with fear and they ran around in disorder. (*Hindi Tika*, p. 150).

भीम की मृत्यु

१४. तए णं से भीमे कूडग्गाहे अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते। तए णं से गोत्तासए दारए बहुएणं मित्त-नाइ-नियग-सयण संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कन्दमाणे विलवमाणे भीमस्स कूडग्गाहस्स नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूहिं लोइयमयकिच्चाइं करेइ।

तए णं से सुनंदे राया गोत्तासं दारयं अन्नया कयाइ सयमेव कूडग्गाहत्ताए ठावेइ। तए णं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहे जाए यावि होत्था; अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

१४. (गोत्रास के युवक हो जाने पर किसी समय) भीम कूटग्राह मृत्यु को प्राप्त हुआ। तब गोत्रास बालक ने अपने मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सम्बन्धी और परिजनों के साथ रुदन, विलाप तथा आक्रन्दन करते हुए अपने पिता भीम कूटग्राह का दाहसंस्कार किया। लौकिक मृतक-क्रियाएँ कीं।

कुछ समय पश्चात् सुनन्द नामक राजा ने गोत्रास बालक को कूटग्राह के पद पर नियुक्त किया। गोत्रास भी (अपने पिता की ही भाँति) घोर अधर्मी व दुष्प्रत्यानन्द (पापकर्मों में आनन्द मनाने वाला) था।

DEATH OF BHEEM

14. (After Gotras became mature, one day) Bheem Kootagraha died. Young Gotras cremated his father, Bheem Kootagraha, crying, weeping, and sobbing in the company of his friends, kinfolk, family members, relatives and other people. He performed the formal last rites as well.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Some time later king Sunand appointed young Gotras at the post of *Kootagraha*. Gotras (like his father) was also by nature irreligious and derived pleasure in sinful deeds.

१५. तए णं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहित्ताए कल्लाकल्लिं अद्धरत्तियकालसमयंसि एगे अबीए सन्नद्धबद्धकवए जाव गहिया उहप्पहरणे सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव गोमण्डवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूणं नगरगोरूवाणं सणाहाण य जाव वियंगेइ, जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए। तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे तेहिं बहूहिं गोमंसेहि य सोल्लेहि य जाव आसाएमाणे विसाएमाणे जाव विहरइ।

तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता पंचवाससयाइं परमाउयं पालइत्ता अट्टदुहट्टोवगए कालमासे कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसं तिसागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

१५. उसके बाद वह गोत्रास कूटग्राह प्रतिदिन आधी रात्रि के समय केवल अकेला ही, सैनिक की तरह तैयार होकर, कवच पहनकर और शस्त्रास्त्रों को धारण कर अपने घर से निकलता है। निकलकर गोशाला में जाता है, वहाँ पर अनेक गौ आदि नगर–पशुओं के अंगोपांगों को काटकर अपने घर आता है। उन गौ आदि पशुओं के शूलपक्व तले, भुने, सूखे और नमकीन माँसों के साथ मदिरा आदि का आस्वादन करता हुआ जीवन बिताता है।

वह गोत्रास कूटग्राह इसप्रकार के क्रूर कर्मों को ही अपना कर्त्तव्य मानने वाला, इसप्रकार के कार्यों को ही मुख्यता देने वाला, इस प्रकार की पाप–विद्या को जानने वाला तथा ऐसे क्रूर आचरणों में संलग्न रहता हुआ बहुत घोर पापकर्मों का उपार्जन कर पाँच सौ वर्ष का आयुष्य भोगकर, चिन्ता और दुःख से पीड़ित होकर दूसरे नरक में नारक रूप से उत्पन्न हुआ। वहाँ उसकी उत्कृष्ट तीन सागरोपम की स्थिति है।

15. Then every night that Gotras trapper would leave his house alone dressed in strong armour like a soldier and equipped with a bow, arrows, and a sword. He would come to the cow-shed and cut off the body-parts of some cows and other cattle. Doing that he would bring these parts home. He would then spend his time enjoying consuming these pieces of beef, duly cooked various ways, with a variety of wines.

Considering this kind of cruel acts to be his duty, giving importance to, being well versed in, and being engrossed in such deeds, that Gotras Kootagraha continued to accumulate intense bad *karmas*. Completing his life span of five hundred years, he died in anxiety and misery and took rebirth as an infernal being in the second hell having a maximum life span of three *Sagaropam*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. तए णं विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा नामं भारिया जायनिंदुया यावि होत्था। जाया जाया दारगा विणिहायमावज्जंति।

तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे दोच्चाए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वाणियगामे नयरे विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने। तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया।

१६. (उस वाणिजग्राम निवासी) विजयमित्र सार्थवाह की सुभद्रा नाम की भार्या जातनिन्दुका थी अर्थात् जन्म लेते ही उसके बालक मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे। तत्पश्चात् वह गोत्रास कूटग्राह का जीव दूसरे नरक से निकलकर इसी वाणिजग्राम नगर के विजयमित्र सार्थवाह की सुभद्रा नाम की भार्या के उदर में पुत्ररूप से उत्पन्न हुआ–गर्भ में आया। नव मास परिपूर्ण होने पर सुभद्रा सार्थवाही ने पुत्र को जन्म दिया।

BIRTH OF UJJHITAK

16. Subhadra, the wife of Vijayamitra Sarthavaha (a resident of that Vanijyagram), was a *jatunandika* (a woman whose offspring die at birth). On leaving the second hell, the soul of that Gotras Kootagraha was conceived as a son in the womb of Subhadra, the wife of Vijayamitra Sarthavaha in Vanijyagram. On completion of nine months Subhadra Sarthavahi gave birth to a son.

१७. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तं दारगं जायमेत्तयं चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेइ, उज्झावित्ता दोच्चंपि गिण्हावेइ गिण्हावित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेइ।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठिइवडियं च चंदसूरपासणियं च जागरियं च महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं करेंति। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे निव्वत्ते, संपत्ते बारसमे दिवसे इमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति–'जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्तए चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए उज्झिए नामेणं।

तए णं से उज्झिए दारए पंचधाईपरिग्गहिए, तं जहा–खीरधाईए मज्जणधाईए मण्डणधाईए कीलावणधाईए अंकधाईए, जहा दढपइन्ने, जाव निव्वाघाए गिरिकन्दरमल्लीणे विव चम्पकपायवे सुहंसुहेणं परिवड्ढइ।

१७. तब सुभद्रा सार्थवाही उस बालक को जन्मते ही एकान्त में कूड़े–कर्कट के ढेर पर डलवा देती है और पुनः उठवा लेती है। तत्पश्चात् क्रमशः उस बालक का पालन–पोषण–रक्षण परिवर्द्धन करने लगती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसके बाद उस बालक के माता-पिता अपनी कुल-मर्यादा के अनुसार पुत्र की बधाई बाँटने आदि की क्रियाएँ करते हैं। चन्द्र-सूर्य-उत्सव व जागरण महोत्सव भी महान् ऋद्धि और उत्सव के साथ मनाते हैं। तत्पश्चात् ग्यारहवाँ दिन बीत जाने पर तथा बारहवाँ दिन आ जाने पर उस बालक के माता-पिता इस प्रकार का गुणनिष्पन्न-गुणानुरूप नामकरण करते हैं-"क्योंकि हमारा यह बालक एकान्त में उकरड़े-कचरा फेंकने की जगह पर फेंक दिया गया था, अतः हमारा यह बालक 'उज्झितक' नाम से प्रसिद्ध हो।"

तदनन्तर वह उज्झितक कुमार पाँच धायमाताओं की देखरेख में रहने लगा। उन धायमाताओं के नाम इस प्रकार हैं-**क्षीरधात्री**-दूध पिलाने वाली, **मज्जनधात्री**-स्नान कराने वाली, **मण्डनधात्री**-वस्त्राभूषण से अलंकृत करने वाली, **क्रीड़ायनधात्री**-क्रीड़ा कराने वाली और **अंकधात्री**-गोद में उठाकर खिलाने वाली। इन धाय-माताओं के द्वारा दृढ़प्रतिज्ञ कुमार की तरह आघात एवं बाधाओं से रहित पर्वत कन्दरा में अवस्थित चम्पक वृक्ष की तरह वह सुखपूर्वक वृद्धि को प्राप्त होने लगा।

17. Subhadra Sarthavahi got the newborn thrown on a heap of trash and then got it back. After that she fed, protected and gradually brought up the child. The parents performed ritual ceremonies, including distribution of gifts, connected with the birth of a son. They performed the ritual adorational beholding of the sun and the moon with great fanfare. When eleven days passed, on the twelfth day they performed the naming ceremony—"When this son of ours was born he was thrown on a heap of trash, as such, he should be popularly known by the name 'Ujjhitak' (the discarded one)."

Boy Ujjhitak was brought up under the care of five nurse-maids. They were—(1) *Kshir Dhatri* or milk-nurse-maid—the one who took charge of feeding; (2) *Majjan Dhatri* or bath-nurse-maid—the one who took charge of giving a bath; (3) *Mandan Dhatri* or dress-nurse-maid—the one who took charge of putting on dress and ornaments; (4) *Kridayan Dhatri* or play-nurse- maid—the one who took charge of playing with the baby; (5) *Anka Dhatri* or lap-nurse-maid—the one who took charge of keeping the baby in her lap. Under the care of these nursemaids, like Dridhapratijna, he grew happily as a *Champa* tree grows in a mountain cave undisturbed by the blowing winds.

विवेचन-इस विषय में टीकाकार का कथन है कि ऐसी लोक रूढ़ि प्रचलित थी, कि जिसकी सन्तान जीवित नहीं रहती वह इस प्रकार के टोटके करती थीं, जैसे ऊकरडी पर फैंकना, सूपड़े में सुला देना आदि। इसी कारण सुभद्रा ने ऊकरडी पर फिंकवाकर वापस उठा लिया और उसका पालन-पोषण किया।

Elaboration—In this connection the commentator (*Tika*) informs that during that period there was a general belief that when more than one offspring died on birth, a mother performed rituals like throwing the next

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

infant on a heap of trash, placing it on a winnowing basket, etc. That was the reason Subhadra threw the new born on a heap of trash and brought him back.

विजय मित्र की मृत्यु

१८. तए णं से विजयमित्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च चउव्विहं भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेण उवागए। तए णं से विजय मित्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविपत्तीए निव्वुड्डभंडसारे अत्ताणे असरणे कालधम्मुणा संजुत्ते। तए णं तं विजयमित्तं सत्थवाहं जे जहा बहवे ईसर–तलवर–माडंबिय–कोडुंबिय–इब्भ–सेट्ठि–सत्थवाहा लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए छूढं निव्वुड्डभंडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेंति, ते तहा हत्थनिक्खेवं च बाहिरभाण्डसारं च गहाय एगंते अवक्कमंति।

१८. इसके बाद विजयमित्र सार्थवाह किसी समय लवणसमुद्र की यात्रा पर निकला। उसने जहाज में अनेक प्रकार की वस्तुएँ भरी, जैसे–**गणिम**–(गिनती से बेची जाने वाली वस्तुएँ, नारियल आदि), **धरिम**–तराजू से तोलकर बेची जाने वाली वस्तुएँ घृत, तेल, शर्करा आदि), **मेय**–(मापकर बेचे जाने योग्य पदार्थ कपड़ा, फीता आदि) और **पारिच्छिद्य**–(परीक्षा करके बेची जाने वाली वस्तुएँ हीरा, पन्ना आदि) यह चारों प्रकार की बेचने योग्य वस्तुएँ लेकर लवणसमुद्र में यात्रा के लिए प्रस्थान किया। किन्तु लवणसमुद्र में जहाज नष्ट हो जाने से विजयमित्र की उपर्युक्त सभी प्रकार की महामूल्य वस्तुएँ समुद्र में डूब गयीं और वह स्वयं भी त्राण रहित–(जिसकी कोई रक्षा करने वाला नहीं था) अशरण–(जिसको कोई आश्रय देने वाला नहीं था) ऐसा असहाय होकर मृत्यु को प्राप्त होगया।

जब वाणिज ग्राम में रहने वाले अनेक ईश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, धनी, श्रेष्ठी तथा सार्थवाहों ने लवणसमुद्र में जहाज के नष्ट हो जाने और महामूल्य वाले क्रयाणक के जलमग्न हो जाने, तथा विजयमित्र की मृत्यु का वृत्तान्त सुना तो वे उसकी **हस्तनिक्षेप**–धरोहर (बिना किसी साक्षी के दी हुई रकम) व **बाह्य भाण्डसार**–(किसी गवाह के सामने रखी गई धरोहर) को लेकर (वाणिजग्राम को छोड़कर एकान्त अनजान स्थान पर चले गये।

DEATH OF VIJAYAMITRA

18. One day Vijayamitra Sarthavaha set out for a sea voyage in the Lavan Samudra. He filled the holds of his ship with a variety of merchandise. This included the four categories of goods—*Ganim* or the goods that are sold in numbers, such as coconut. *Dharim* or the goods that are sold by weight, such as sugar, butter, oil, etc. *Meya* or the goods that are sold by measurement, such as cloth, tape etc. *Paaricchedya* or the goods that are sold in pieces after testing, such as diamond, emerald, etc. After loading, the ship sailed. But the ship capsized in the Lavan Samudra and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

all the valuable merchandise belonging to Vijayamitra drowned in the sea. In absence of any protection or refuge, he himself died helplessly.

When numerous influential and rich persons (*ishvar*), knights of honour (*talavar*), landlords (*mandavik*), heads of large families (*kautumbik*), affluent people (*ibhya*), established merchants (*shreshti*), and caravan chiefs (*sarthavaha*) living in Vanijyagram got the news that Vijayamitra's ship had capsized in the Lavan Samudra, all the valuable merchandise belonging to Vijayamitra was swept away in the sea, and he himself had died, they eloped from Vanijyagram with *hastnikshep* (deposits without any witness) and *bahya bhaandasar* (deposits made in presence of a witness) belonging to Vijayamitra.

१९. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही विजयमित्तं सत्थवाहं लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निव्वुडभांडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेइ, सुणित्ता महया पइसोएणं अप्फुन्ना समाणी परसुनियत्ता विवचम्पगलया धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेण संनिवडिया। तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही मुहुत्तंतरेण आसत्था समाणी बहूहिं मित्त जाव सद्धिं परिवुडा रोयमाणी कंदमाणी विलवमाणी विजयमित्त सत्थवाहस्स लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ।

तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ लवणसमुद्दोत्तरणं च लच्छिविणासं च पोयविणासं च पइमरणं च अणुचिंतेमाणी अणुचिंतेमाणी कालधम्मुणा संजुत्ता।

१९. सुभद्रा सार्थवाही ने जब लवणसमुद्र में जहाज के नष्ट हो जाने के कारण समस्त भाण्डसार के जलमग्न हो जाने के साथ ही विजयमित्र सार्थवाह की मृत्यु का समाचार सुना, तब वह पति वियोगजन्य महान् शोक में डूब गई। कुल्हाड़ी से कटी हुई चम्पक लता (बेल या पौधा) की तरह धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ी। कुछ समय पश्चात् वह सुभद्रा सार्थवाही आश्वस्त हुई तब अनेक मित्रों, परिजनों से घिरी हुई रुदन, क्रन्दन, विलाप करती हुई विजयमित्र के लौकिक मृतक-क्रियाकर्म करती है।

तब वह सुभद्रा सार्थवाही लवणसमुद्र में पति का गमन, लक्ष्मी का विनाश, जहाज का जल में डूब जाना तथा पति की मृत्यु आदि के विषय में सोचती, चिन्ता करती शोक में डूबी हुई मृत्यु को प्राप्त हो गयी।

19. When Subhadra Sarthavahi got the news that Vijayamitra's ship had capsized in the Lavan Samudra, all the valuable merchandise belonging to Vijayamitra was swept away in the sea, and he himself had died, she was overwhelmed with the grief of loosing her husband. She fell prostrate on the ground like a cut *Champak* creeper. After some time she regained consciousness. Then surrounded by her friends and relatives she performed the last rites of Vijayamitra crying, weeping and wailing.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Brooding about her husband's sea voyage, ship wreck, loss of wealth and husband, that grief stricken Subhadra Sarthavahi also met her end soon.

२०. तए णं ते नगरगुत्तिया सुभद्दं सत्थवाहिं कालगयं जाणित्ता उज्झियगं दारगं सयाओ गिहाओ निच्छुभेंति, निच्छुभित्ता तं गिहं अन्नस्स दलयंति।

तए णं से उज्झियए दारए सयाओ गिहाओ निच्छूढे समाणे वाणियगामे नगरे सिंघाडग जाव पहेसु जूयखलएसु, वेसियाघरेसु पाणागारेसु य सुहंसुहेणं परिवड्डइ। तए णं से उज्झियए दारए अणोहट्टिए अनिवारए सच्छंदमई सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी चोर–जूय–वेस–दारप्पसंगी जाए यावि होत्था।

तए णं से उज्झियए अन्नया कयाइं कामज्झयाए गणियाए संपलग्गे जाए यावि होत्था। कामज्झयाए गणियाए सद्धिं विउलाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

२०. तदनन्तर नगररक्षक नगर अधिकारी पुरुषों ने सुभद्रा सार्थवाही की मृत्यु के समाचार जानकर उज्झितक कुमार को अपने घर से निकाल दिया और उसके घर को किसी दूसरे को (जो उज्झितक के पिता से रुपये माँगता था। उन रुपयों के बदले उसका घर उस लेनदार उत्तमर्ण को सौंप दिया।)

अपने घर से निकाला जाने पर वह उज्झितक कुमार वाणिजग्राम नगर के तिराहों, चौराहों, राजमार्ग एवं सामान्य मार्गों पर, द्यूतगृहों, वेश्यागृहों व मद्यपानगृहों में भटकने लगा। इस प्रकार बेरोकटोक, स्वच्छन्द एवं निरंकुश–स्वैराचारी बना हुआ वह चौर्यकर्म, द्यूतकर्म, वेश्यागमन और परस्त्रीगमन आदि दुर्व्यसनों में आसक्त हो गया। किसी समय वह कामध्वजा वेश्या के पास चला गया और उसी में आसक्त होकर मनुष्य सम्बन्धी विषयभोगों का उपभोग करता हुआ समय बिताने लगा।

20. On getting the news of the demise of Subhadra Sarthavahi the city guards and officers expelled young Ujjhitak from his house and handed over the house to some other person (who was a creditor of Ujjhitak's father and the house was given to him, Uttamarn, in exchange of the due amount).

On being expelled from his house, young Ujjhitak started roaming around the trisections, crossings, roads, streets, gambling dens, whorehouses and bars. Thus leading an unrestricted, freewheeling and unbridled life he got addicted to vices like stealing, gambling, visiting whorehouses and womanizing. Once he visited courtesan Kamadhvaja and got infatuated with her. He started passing his time enjoying all human comforts and carnal pleasures.

२१. तए णं तस्स विजयमित्तस्स रन्नो अन्नया कयाइ सिरीए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था। नो संचाएइ विजयमित्ते राया सिरीए देवीए सद्धिं उरालाइं माण्णुस्सगाइं भोग भोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं विजयमित्ते राया अन्नया कयाइं उज्झियदारयं कामज्झाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावित्ता कामज्झयं गणियं अब्भिंतरियं ठावेइ, ठावइत्ता कामज्झयाए गणिआए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

२१. किसी समय (उस नगर के) विजयमित्र राजा की रानी श्री देवी को योनिशूल रोग उत्पन्न हो गया। इसलिए विजयमित्र राजा अपनी रानी के साथ मनुष्य सम्बन्धी कामभोगोंको भोगने में समर्थ नहीं रहा।

अन्य किसी समय उस विजयमित्र राजा ने उज्झितककुमार को कामध्वजा गणिका के घर से निकलवा दिया और स्वयं कामध्वजा वेश्या के साथ विषयभोगों का उपभोग करने लगा।

21. Once queen Shri Devi, the consort of king Vijayamitra of that city, got some vaginal ailment. As a result she became unfit for enjoying conjugal pleasures with king Vijayamitra.

At some point of time king Vijayamitra got young Ujjhitak expelled from the house of Kamadhvaja courtesan and started enjoying all human comforts and carnal pleasures with the courtesan.

२२. तए णं से उज्झियए दारए कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे कामज्झयाए गणिआए मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववन्ने अन्नत्थ कत्थइ सुइं च रइं च धिइं च अविंदमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तप्पियकरणे तब्भावणाभाविए कामज्झयाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं से उज्झियए दारए अन्नया कयाइ कामज्झयं गणियं अंतरं लभेइ, लभित्ता कामज्झयाए गणियाए गिहं रहसियं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता, कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुजंमाणे विहरइ।

२२. तब वह उज्झितककुमार कामध्वजा गणिका के घर से निकाले जाने पर कामध्वजा गणिका में **मूर्च्छित**–(उसके ही ध्यान में पागल बना हुआ), **गृद्ध**–(उस वेश्या की ही दिन–रात इच्छा रखने वाला) **ग्रथित**–(उसके ही स्नेहजाल में जकड़ा हुआ) और **अध्युपपन्न**–(उस वेश्या की ही चिन्ता में लीन रहने वाला) वह उज्झितक कुमार अन्यत्र कहीं भी **स्मृति**–स्मरण, रति–प्रीति व **धृति**–मानसिक शान्ति को प्राप्त न करता हुआ, उसी में चित्त व मन को लगाए हुए, उसी को प्राप्त करने के प्रयत्न में जुटा हुआ उद्यत, उसी में मन, वचन और इन्द्रियों को समर्पित करने वाला, उसी की भावना से भावित होता हुआ कामध्वजा वेश्या के **अन्तर**–(ऐसा अवसर जिस समय राजा का आगमन न हो) **छिद्र**–(राज–परिवार का कोई व्यक्ति भी वहाँ न हो) व **विवर**–(कोई दूसरा सामान्य पुरुष भी जिस समय न वहाँ हो) पर ध्यान टिकाकर रहने लगा।

किसी अन्य समय में वह उज्झितक कुमार कामध्वजा गणिका के पास जाने का अवसर मिलते ही गुप्तरूप से उसके घर में प्रवेश कर गया और कामध्वजा वेश्या के साथ मनुष्य सम्बन्धी विषयभोगों का उपभोग करने लगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

22. On getting expelled from the house of Kamadhvaja courtesan, that young Ujjhitak being madly attached (*murchhit*) with Kamadhvaja courtesan, infatuated (*griddha*) with her, entrapped in her love (*grathit*), and lost in her thoughts (*adyupapanna*), could not think of loving any other person or thing and deriving mental peace. Always thinking about her, making efforts to possess her, devoting his mind speech and body to her, driven by his desire for her, he got himself involved in seeking an opportunity when the king did not come to courtesan Kamadhvaja's house, when no other royal person was there and when even an ordinary person was also not there.

At some point of time as soon as that young Ujjhitak got such an opportunity he stealthily entered the house of Kamadhvaja courtesan and started enjoying all human comforts and carnal pleasures with her.

विवेचन—इस सूत्र में कुछ ऐसे पर्यायवाची शब्द आये हैं, जिनसे लगता है, एक ही भाव को व्यक्त करने के लिए इतने शब्दों का प्रयोग किया गया है। किन्तु टीकाकार का कथन है, वीतराग वाणी में कोई भी शब्द निरर्थक या पुनरुक्त नहीं होता। इन पर्यायवाची प्रतीत होने वाले शब्दों के अर्थ में किंचित् अन्तर है। यह अन्तर उसकी सूक्ष्म मानसिक अवस्था के उतार-चढ़ाव को द्योतित करते हैं, जैसे—

मुच्छिए—मूर्च्छित, विवेक शून्य मनोदशा।

गिद्धे—गृद्ध, लम्पट या गीध की तरह टूट पड़ने वाला।

गढिए—ग्रथित—स्नेह के बंधनों में बँधा हुआ।

अज्झोववन्ने—अध्युपपन्न—किसी के पीछे एकाग्र भाव से लग जाने वाला।

तच्चित्ते—तद्चित्त—उसी में चित्त लगा हो, चित्त भाव मन का सूचक है।

तम्मणे—तद्मन—उसी में मन रमा हो, मन द्रव्य मन का बोधक है।

तल्लेसे—तद्लेश्य—आत्मा के परिणाम भी उसी में लगे हों।

तदज्झवसाणे—तदध्यवसाय—उसी में अध्यवसाय (सूक्ष्म मन) लगा हो, उसी को पाने में प्रयत्नशील।

तदट्ठोवउत्ते—तदर्थोपयुक्त—अपनी चाह के पीछे सतत सावधानी पूर्वक जुटा हो।

तदप्पियकरणे—तदर्पित करण—इन्द्रियों को उसी लक्ष्य पर संलग्न कर दिया हो।

तब्भावणाभाविए—तद्भावना भावित—उसी लक्ष्य की भावना से मन का कण-कण रंगा हो। *(आचार्यश्री आत्माराम जी म. कृत हिन्दी टीका पृ. १७३)*

Elaboration—This aphorism contains numerous synonyms that indicate that so many words have been used to convey just a single idea. But the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

commentator opines that in the sermon of the Detached no word is either meaningless or repeated. There is a subtle difference in the meanings of each of these synonyms defining the minute variations in his mental state. For example—

Muchchhiye—*murchchhit*; irrational state of mind.

Giddhe—*griddha*; a licentious person; one who pounces like a vulture.

Gadhiye—*grathit*; entrapped in bonds of love.

Ajjhovavanne—*adhypapanna*; having obsessive involvement in possessing something.

Tachchitte—*tadchitta*; obsessed state of psyche.

Tammane—*tadman*; obsessed state of mind;

Tallese—*tadleshya*; obsessed state of soul

Tadajjavasane—*tadadhyavasaya*; engaged in owning some thing.

Tadatthovautte—*tadarthopayukt*; carefully engaged in fulfilling one's desires

Tadappiyakarane—*tadarpit karan*; devoting all physical efforts to a goal.

Tabbhavanabhaviye—*tadbhaavana bhaavit*; devoting all mental efforts to a goal. *(Hindi Tika by Acharya Atmaram ji M., p. 173)*

२३. इमं च णं मित्ते राया ण्हाए जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए मणुस्सवागुरापरिक्खित्ते जेणेव कामज्झयाए गणियाए गेहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ णं उज्झियए दारे कामज्झयाए गणियाइ सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं जाव विहरमाणं पासइ, पसित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे, कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियभिउडिं निडाले साहट्टु उज्झियगं दारगं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गेण्हावित्ता अट्ठि–मुट्ठि–जाणु–कोप्पर–पहार–संभग्ग–महियगत्तं करेति करेत्ता अवओडयबंधणं करेइ, करेत्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

एवं खलु, गोयमा ! उज्झियए दारए पुरापोराणाणं कम्माणं जाव पच्चणुभवमाणे विहरइ।

२३. इधर किसी समय (विजय) मित्र नरेश, स्नान आदि करके मस्तक पर तिलक लगाकर सर्व अलंकारों से विभूषित हो, मनुष्यों के समूह से घिरा हुआ कामध्वजा वेश्या के घर गया। वहाँ उसने उज्झितक कुमार को कामध्वजा वेश्या के साथ मनुष्य सम्बन्धी भोगों में रमण करते हुए देखा। देखते ही वह क्रोध से लाल–पीला अत्यन्त उग्र हो गया। मस्तक पर त्रिवलिक भृकुटि–तीन रेखाओं वाली भौंहें चढ़ाकर अपने सैनिकों द्वारा उज्झितक कुमार को पकड़वाया। पकड़वाकर **यष्टि**–(लकड़ी), **मुष्टि**–(मुक्का–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घूँसा), जानु–(घुटना), कूर्पर–(कोहनी) के प्रहारों से उसके शरीर को चूर–चूर और मथित करके **अवकोटक बन्धन**–(जिस बन्धन में गर्दन को मरोड़कर पीठ पीछे हाथों के साथ बाँधा जाता है) से बाँधा। इसप्रकार बाँधकर (जैसा अभी तुमने देखा है) वध करने की आज्ञा दी।

हे गौतम ! इस प्रकार वह उज्झितक कुमार अपने पूर्वकृत पाप कर्मों का फल भोग रहा है।

23. Then one day king Vijayamitra, after taking his bath, applying auspicious mark on his forehead, embellished fully with ornaments, and accompanied by a throng of people, went to the house of Kamadhvaja courtesan. There he came across young Ujjhitak enjoying all human comforts and carnal pleasures with Kamadhvaja courtesan. As soon as he saw this he turned red with anger and became violent. Raising his eyebrows he got young Ujjhitak caught by his guards. After that he gave Ujjhitak a thorough beating by hammering and tossing his body with blows of stick, fist, knee, and elbow. Having done that the king got him tied in the *avakotak* bond (bending the neck and tying it with hands already tied at the back) and sentenced him to death.

Gautam ! This way that young Ujjhitak is suffering for the sinful deeds he committed in the past.

उज्झितक का भविष्य

२४. 'उज्झियए णं भंते ! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहि, कहिं उववज्जिहिइ ?'

गोयमा ! उज्झियए दारगे पणवीसं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलीभिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले वानरकुलंसि वानरत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तिरियभोगेसु मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववन्ने, जाए जाए वानरपेल्लए वहेइ। तं एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे नयरे गणियाकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ।

तए णं तं दारयं अम्मापियरो जायमेत्तकं वद्धेहिंति, नपुंसगकम्मं सिक्खावेहिंति। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं नामधेज्जं करेहिंति, तं जहा–'होउ णं अम्हं इमे दारए पियसेणे नामं नपुंसए।' तए णं से पियसेणे नपुंसए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते विन्नयपरिणयमेत्ते रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठे उक्किट्ठसरीरे भविस्सइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से पियसेणे नपुंसए इंदपुरे नयरे बहवे राईसर—जाव पभिइओ य मंत—चुण्णेहि य हियउड्डावणाहि य निण्हवणेहि य पण्हवणएहि य वसीकरणेहि य आभियोगिएहि य अभियोगित्ता उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ।

२४. गौतम स्वामी ने पूछा—भन्ते ! यह उज्झितक कुमार यहाँ से काल करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान ने उत्तर दिया—गौतम ! उज्झितक कुमार २५ वर्ष की आयु को पूर्ण कर आज ही दिन के तीसरे प्रहर में शूली से भेदा जाने पर मृत्यु प्राप्त कर रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक के नारक रूप में उत्पन्न होगा।

वहाँ से निकलकर इसी जम्बूद्वीप में भारतवर्ष के वैताढ्य पर्वत की तलहटी में वानर कुल में वानर के रूप में जन्म लेगा। वहाँ पर युवावस्था को प्राप्त होता हुआ वह तिर्यंच सम्बन्धी भोगों में मूर्च्छित हुआ, भोगों के स्नेहपाश में जकड़ा हुआ और भोगों में ही मन को लगाये रखने वाला होगा। वह तत्काल उत्पन्न हुए वानर शिशुओं का घात किया करेगा। ऐसे कुकर्म में तल्लीन हुआ वह काल करके इसी जम्बूद्वीप के अन्तर्गत इन्द्रपुर नामक नगर में गणिका के घर में पुत्र रूप में उत्पन्न होगा। वहाँ पर माता—पिता उस बालक को उत्पन्न होते ही वर्द्धितक (वधिया—नपुंसक) बना देंगे और नपुंसक के काम सिखलायेंगे। बारह दिन व्यतीत हो जाने पर उसका 'प्रियसेन' नाम रखेंगे। युवावस्था को प्राप्त होकर वह विज्ञ—विशेष ज्ञान वाला एवं बुद्धि आदि से परिपक्व अवस्था को प्राप्त होगा। वह प्रियसेन नपुंसक रूप, यौवन व लावण्य द्वारा आकर्षक शरीर वाला होगा।

तदनन्तर वह प्रियसेन नपुंसक इन्द्रपुर नगर के राजा, ईश्वर आदि मनुष्यों को अनेक प्रकार के विद्या—प्रयोगों से, मंत्रों द्वारा मन्त्रित चूर्ण, भस्म आदि प्रयोगों से, हृदय को विचार शून्य भ्रमित व आकर्षित कर देने वाले, अदृश्य कर देने वाले, वश में करने वाले, प्रसन्न कर देने वाले और पराधीन कर देने वाले प्रयोगों से अपने वश में करके मनुष्य सम्बन्धी भोगों को भोगता हुआ समय यापन करेगा।

THE FUTURE OF UJJHITAK

24. Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After his death where will this young Ujjhitak go ? Where will he be reborn ?"

Bhagavan replied—Gautam ! After completing his life-span of twenty five years, this young Ujjhitak will die in the gallows this afternoon and will reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha.

Getting out from there, he will take rebirth as a monkey in a monkey family at the foot of the Vaitadhya mountain. On maturing he will turn to be an animal involved and infatuated with and entrapped in carnal

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

pleasures. He will keep on killing newborn monkeys. Involved in such atrocious deeds he will complete his life-span and will be reborn as a son in the house of a courtesan in the city of Indrapur in this Jambu continent. On birth his parents will castrate him and train him as a eunuch. On the twelfth day after his birth they will name him as Priyasen. That Priyasen eunuch will have beautiful, youthful, charming and attractive body.

Eunuch Priyasen will bring various kings, rich merchants, and other such people of Indrapur city under his control with the help of a variety of magical powers, mantra-charged powders and ash, and other methods of mesmerizing, hypnotizing, enticing and captivating, and spend his time enjoying all human comforts and carnal pleasures.

२५. तए णं से पियसेणे नपुंसए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एकवीसं वाससयं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। तत्तो सरीसवेसु संसारो तहेव जहा पढमे जाव पुढवि.।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए महिसत्ताए पच्चायाहिइ।

से णं तत्थ अन्नया कयाइ गोट्ठिल्लएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव चंपाए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, अणगारे भविस्सइ, सोहम्मे कप्पे, जहा पढमे, जाव अंतं करेहिइ, त्ति निक्खेवो।

॥ द्वितीयं अज्झयणं समत्तं ॥

२५. इस तरह वह प्रियसेन नपुंसक इसप्रकार के पापपूर्ण कामों में ही लक्ष्य रखेगा, इन्हें ही अपना कर्त्तव्य एवं सर्वोत्तम आचरण मानेगा। इन दुष्प्रवृत्तियों के द्वारा वह बहुत पापकर्मों का उपार्जन करके १२१ वर्ष की पूर्ण आयु भोगकर मृत्यु का समय आने पर मृत्यु प्राप्त कर रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक में नारक के रूप में उत्पन्न होगा। वहाँ से निकलकर सरीसृप-(छाती के बल से चलने वाले सर्प) आदि प्राणियों की योनियों में जन्म लेगा। वहाँ से उसका संसार-भ्रमण प्रथम अध्ययन में वर्णित मृगापुत्र की तरह होगा। यावत् पृथ्वीकाय आदि में जन्म लेगा।

वहाँ से निकलकर इसी जम्बूद्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष की चम्पा नगरी में भैंसा (महिष) के रूप में जन्म लेगा। वहाँ गोष्ठिकों-मित्रमण्डली (अन्य भैंसों) के द्वारा मारे जाने पर उसी नगरी के श्रेष्ठिकुल में पुत्ररूप में उत्पन्न होगा। वहाँ पर बाल्यावस्था को पार करके यौवन अवस्था को प्राप्त होता हुआ वह तथारूप संयमी स्थविरों के पास शंका-कांक्षा आदि दोषों से रहित बोधिलाभ (सम्यक्त्व) को प्राप्त कर अनगार धर्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को ग्रहण करेगा। वहाँ से कालमास में कालकर सौधर्म नामक प्रथम देवलोक में उत्पन्न होगा। यावत् मृगापुत्र के समान कर्मों का अन्त करेगा।

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

25. Thus that Priyasen eunuch will aim only at such sinful activities and consider them to be his only duty and lofty conduct. As a consequence of these evil deeds he will acquire abundant demeritorious *karmas*. Having completed his life-span of one hundred twenty one years, at the time of death he will die and take rebirth as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha. From there he will reincarnate in the genuses of non-limbed reptilians and other such beings. From there he will follow the cycles of rebirth as mentioned in context of Mrigaputra in the first chapter... and so on up to... will be born as earth-bodied and other such beings.

Coming out from there he will be born as a buffalo in Champa city in Bharatvarsh area in this Jambu continent. After being killed by other buffaloes he will reincarnate as a son in a merchant family of the same city. On crossing adolescence and attaining youth, he will gain unambiguous and faultless righteousness (*samyaktva*) in the company of disciplined ascetics and get initiated as an ascetic. From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok... and so on up to... Like Mrigaputra he will shed all his *karmas*.

● END OF THE SECOND CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम श्रुतस्कन्ध : तृतीय अध्ययन
अभग्नसेन

उपोद्घात

इस तीसरे अध्ययन में अभग्नसेन नामक दुर्दान्त चोर सेनापति के क्रूर चौर्यकर्म, लूट-पाट, हिंसा, हत्या आदि अपराधिक दुष्कर्मों का पाप फल बताया है। विशेष ध्यान देने की बात है, वह पूर्वजन्म में अण्डों का बड़ा व्यापारी था, स्वयं जीवों की हिंसा करके रस-लोलुप बना अण्डा, सुरा, माँस आदि खाता पीता था और उनका व्यापार भी करता था। ऐसा पापी जीव जब माता के गर्भ में आया तो माता को भी जीव-हिंसा करके इसी प्रकार मद्य-माँस-सेवन का दोहद उत्पन्न हुआ। इस जीवन में अभग्नसेन की दुर्दशा का रोमांचक वर्णन और फिर अनेक जन्म-जन्मान्तरों में नरक-तिर्यंच आदि दुर्गतियों में परिभ्रमण करने का यह वर्णन हिंसा आदि दुष्कर्मों से निवृत्ति की प्रेरणा देता है।

FIRST SHRUTSKANDH : THIRD CHAPTER
ABHAGNASEN

INTRODUCTION

In this third chapter the consequences or fruits of stealing, looting, violence, murder and other such cruel and criminal acts committed by Abhagnasen, the villainous leader of thieves, are narrated. It is noteworthy that in his previous birth he was a prominent trader of eggs. He was a gourmand and in order to satiate his taste buds he killed animals and ate meat besides trading in eggs, meat and wine. When such sinner was conceived, his mother too had desire of killing animals and consuming meat and wine during her pregnancy. This vivid dreadful description of Abhagnasen's plight, followed by the details of his passage through base genuses like hell and animal for numerous cycles of rebirth, gives inspiration to avoid evil deeds.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीय अध्ययन
THIRD CHAPTER

उत्क्षेप

१. तच्चस्स उक्खेवो।

१. तृतीय अध्ययन की प्रस्तावना पूर्ववत् जानना चाहिए।

FOREWORD

1. The foreword of the third chapter should be read as before.

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरिमताले नामं नयरे होत्था, रिद्ध.। तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं अमोहदंसणे उज्जाणे। तत्थ णं अमोहदंसिस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था। तत्थ णं पुरिमताले महब्बले नामं राया होत्था।

२. उस काल, उस समय में पुरिमताल नामक एक नगर था। वह व्यापार–धन–धान्य आदि सभी प्रकार से समृद्ध तथा सुरक्षित था। उस पुरिमताल नगर के ईशानकोण में अमोघदर्शन नामक एक उद्यान था। उस उद्यान में अमोघदर्शी यक्ष का यक्षायतन था। इस नगर में महाबल नामक राजा राज्य करता था।

2. During that period of time there was a city named Purimtal, which was prosperous in all respects including business, wealth and agriculture, and was well protected. In the northeastern direction (*Ishan Kone*) outside this town was a garden named Amoghadarshan. In that garden there was a temple of Amoghadarshi Yaksh. A king named Mahabal ruled that Purimtal City.

शालाटवी चोरपल्ली

३. तत्थ णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देसप्पंते अडवी संठिया। इत्थ णं सालाडवी नामं चोरपल्ली होत्था। विसम–गिरिकन्दर–कोलम्बसंनिविट्ठ–वंसीकलंक–पागारपरिक्खित्ता छिण्णसेल–विसमप्पवायफरिहोवगूढा अब्भिंतरपाणीया सुदुल्लभ–जलपेरंता अणेगखंडी विदियजण–दिन्न निग्गम–प्पवेसा सुबहुयस्स वि कूवियस्स जणस्स दुप्पहंसा यावि होत्था।

३. उस पुरिमताल नगर के उत्तर–पूर्व दिशा के सीमान्त पर स्थित एक सघन अटवी (गहन जंगल था) थी। उस अटवी में शालाटवी नाम की चोरपल्ली (चोरों के रहने का गुप्त स्थान) थी। वह विषम पर्वतों के बीच, भयंकर गुफाओं के किनारे पर स्थित थी। उसके चारों तरफ बाड़रूप परकोटे जैसी बाँस के सघन वृक्षों की जाली बनी हुई थी। उसके चारों तरफ पर्वतों से टूटे हुए बड़े -बड़े पत्थर पड़े थे, कहीं विषम गड्डे थे और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहीं ऊँचे-नीचे विषम झरने, जिनसे एक प्राकृतिक खाई जैसी बन गई थी। किन्तु उसके बाहर दूर-दूर तक पानी दुर्लभ था। उसमें भागकर छिपने वाले मनुष्यों के लिए अनेक गुप्तद्वार बने हुए थे। जानकार व परिचित व्यक्ति ही उसमें आना-जाना कर सकता था। बहुत से **मोषव्यावर्तक**-चोरों से चुराई वस्तुओं को खोजने वाले खोजी सैनिकों व राजपुरुषों द्वारा भी वहाँ पहुँच पाना और उन्हें जीतना मुश्किल था।

SHALATVI HIDEOUT

3. In the outskirts of Purimtal city, in the northeastern direction there was a dense jungle. In that jungle was a hideout of thieves known as Shalatavi. It was located at an impregnable spot in a tedious hilly terrain at the edge of dangerous caves. A parapet-like network of bamboo thickets surrounded it. Around it there were large boulders, natural gorges, and high-low streams and waterfalls forming natural trenches. There was no source of water in the general area except the hideout proper. It had many small and concealed passages for entry and escape but only the acquainted could use them. It was difficult even for armed guards and trained detectives, coming in search of stolen goods, to reach this hideout and defeat the bandits.

चोरसेनापति विजय

४. तत्थ णं सालाडवीए चोरपल्लीए विजयं नामं चोरसेणावई परिवसइ। अहिम्मए जाव लोहियपाणी बहुनयरनिग्गयजसे, सूरे, दढप्पहारे, साहसिए, सद्दवेही असि-लट्ठिपढममल्ले। से णं तत्थ सालाटवीए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं जाव विहरइ।

४. उस शालाटवी चोरपल्ली में विजय नाम का चोर सेनापति रहता था। वह घोर अधर्मी यावत् उसके हाथ सदा खून से रंगे रहते थे। अनेक नगरों में उसका नाम प्रसिद्ध था। वह शूरवीर, दृढ़प्रहारी, दुःसाहसी, शब्दवेधी-(बिना देखे केवल शब्द सुनकर ही लक्ष्य को बींधने वाला) तथा तलवार और लाठी चलाने में प्रथम कोटि का योद्धा था। उस चोरपल्ली में पाँच सौ चोर उसके सेनापतित्व में रहते थे।

BANDIT LEADER VIJAYA

4. In Shalatavi lived the bandit leader Vijaya. He was absolutely corrupt... and so on up to... his hands were always red with blood. His notoriety had reached numerous towns. He was brave, ruthless, courageous, an expert marksman and an accomplished swordsman and stick fighter. He was the undisputed leader of the five hundred thieves of Shalatavi.

विवेचन-इस सूत्र में विजय चोर की क्रूरता का निदर्शन करने वाले कुछ विशेषण तो मूल पाठ मे है; तथा **अहम्मिए जाव**-शब्द से उसके अन्य विशेषण भी सूचित किये हैं। टीकाकार अभयदेवसूरि ने उनका अर्थ इस प्रकार किया है-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-५

Illustration No. 5

अत्याचारी अभग्नसेन को दण्ड

दृश्य–१

पुरिमताल नगर के घने जंगलों में पर्वतों के बीच चोरपल्ली में अभग्नसेन चोर सेनापति रहता था। वह बड़ा दुराचारी, अत्याचारी था। आस–पास के गाँवों को लूटता, नागरिकों को तरह–तरह की पीड़ाएँ देता रहता। राजा महाबल ने उसे गिरफ्तार कर अत्यन्त कठोर दण्ड दिया।

दृश्य–२

नगर में भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए गौतम स्वामी ने चौराहे पर उसी अभग्नसेन को देखा, जिसके दोनों हाथ मरोड़ कर पीछे बँधे हैं व साँकलों से पूरा शरीर जकड़ा है। राजपुरुष चमड़े की गीली बेंतों से, भालों व लौह दण्ड से प्रहार करते हैं। शस्त्रों से शरीर का माँस काट–काट कर पक्षियों को खिलाया जा रहा है। सिर पर गर्म लोहे की पट्टी बँधी है। उसी के सामने उसके चाचा–चाची, भाई-भतीजे तथा उनकी पत्नियों आदि को कठोर बन्धनों से बाँधकर यंत्रणा दी जा रही है।

दृश्य–३

गणधर गौतम स्वामी ने भगवान से पूछा–भंते ! इसने पूर्वभव में क्या घोर पापकर्म किये थे ?

दृश्य–४

भगवान ने बताया–पूर्वभव में यह निर्नय नामक अण्डों का व्यापारी था। पशु–पक्षियों को मारना, माँस, शराब बेचना आदि अत्यन्त जघन्य पापकर्मों के कारण यहाँ इसे यह दुखःरूप फल प्राप्त हुआ है।

–श्रुतस्कन्ध १, अ. ३, सूत्र ४–८

PUNISHMENT TO TYRANT ABHAGNASEN

SCENE-1

In a hideout named Shalatavi outside Purimtal city lived bandit leader Abhagnasen. He was absolutely corrupt and tyrannical. He used to plunder nearby villages and torment citizens many ways. King Mahabal got him arrested and sentenced him to harsh punishment.

SCENE-2

On his alms seeking trip in the city, Gautam Swami saw Abhagnasen with his both hands tied at his back and shackled. He is being whipped by wet leather whips and beaten by iron rods and spears. His flesh is being chopped and fed to birds. His head is strapped in hot iron band. His uncles, aunts, brothers, nephews and their wives are being tortured before his eyes.

SCENE-3

Gautam Swami returns to *Bhagavan* and asks—"*Bhante* ! What grave sins this person committed during his past birth ?"

SCENE-4

Bhagavan said—In his past birth he was Nirnaya, the egg-trader. He is suffering the bitter fruits of his acts of killing animals and birds as well as selling meat and wine.

—Sec. 1, Ch. 3, Sutra : 4-8

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१) **अधर्मी**–पापपूर्ण आचरण करने वाला।

(२) **अधर्मिष्ट**–अधर्म ही जिसको प्रिय–इष्ट हो।

(३) **अधर्माख्यायी**–जो दूसरों को भी अधर्माचरण का उपदेश देता हो।

(४) **अधर्मानुज्ञ**–धर्मशून्य या धर्म विरुद्ध कार्यों का अनुमोदन करने वाला।

(५) **अधर्मप्रलोकी**–अधर्म पर ही सदा ध्यान केन्द्रित रखने वाला।

(६) **अधर्मप्ररंजन**–धर्म–विरोधी कर्मों से ही मनोरंजन करने वाला।

(७) **अधर्मशील समुदाचार**–अधर्माचरण करना ही जिसका शील, शैली, स्वभाव और व्यवहार था।

(८) **अधर्म वृत्ति**–अधर्म से (आजीविका) करने वाला।

(९) **हन छिन्द–भिन्द–विकर्तक**–इसे मारो, इसके टुकड़े–टुकड़े कर दो, इसको फाड़ डालो, इसको काट दो–इस प्रकार के त्रासदायक शब्दों का उच्चारण करने वाला।

इन विशेषणों से उसके अत्यन्त क्रूर स्वभाव और कठोर हिंसा प्रधान आचार व्यवहार का पता चलता है। (आचार्य श्री आत्माराम जी कृत हिन्दी टीका, पृ. १९६)

Elaboration—This aphorism contains some of the adjectives used to indicate the extreme cruelty of bandit Vijaya but there are some more as indicated by the phrase *'ahammiye java'* (irreligious and so on). Abhayadev Suri, the commentator has elaborated as follows—

(1) **Adharmi**—evil doer.

(2) **Adharmisht**—one who loves evil or irreligious activity.

(3) **Adhramakhyayi**—one who preaches others to indulge in irreligious conduct.

(4) **Adharmanujna**—one who supports activities devoid of or against religiosity.

(5) **Adharm praloki**—one who always concentrates on evil activities.

(6) **Adharmapraranjan**—one whose only entertainment is evil deeds.

(7) **Adharmasheel samudachar**—one whose morality, style, attitude, and behaviour merge with evil doing.

(8) **Adharma-vritti**—one who subsists only on evil doing.

(9) **Hun chhind-bhind-vikartak**—one who utters such dreadful words like 'kill', 'cut to pieces', 'tear apart', and 'slaughter'.

These adjectives reveal his extremely cruel, harsh, and violent conduct and behaviour. (*Hindi Tika* by Acharya Shri Atmaram ji M., p. 196)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. तत्थ णं से विजए चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयाण य संधिच्छेयाण य खंडपट्टाण य अन्नेसिं च बहूणं छिन्न–भिन्न बाहिराहियाणं कुडंगे यावि होत्था।

तए णं से विजए चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकोट्टेहि य खत्तखणणेहि य ओवीलेमाणे, विद्धंसेमाणे, तज्जेमाणे, तालेमाणे नित्थाणे निद्धणे निक्कणे करेमाणे विहरइ; महाबलस्स रण्णो अभिक्खणं अभिक्खणं कप्पायं गेण्हइ।

५. वह विजय चोरसेनापति अनेक चोरों, पारदारिकों–(परस्त्रीलम्पट), ग्रन्थिभेदकों–(गाँठ काटने वालों), सन्धिच्छेदकों–(दीवारों में सांध लगाने वालों), जुआरी, धूर्त वगैरह ऐसे लोग, कि जिनके पास पहनने के लिए वस्त्र का एक टुकड़ा भी न हो, तथा अन्य बहुत से हाथ आदि कटे हुए, लूले; नासिका आदि अवयवों से रहित नकटे, तथा शिष्ट समाज से बहिष्कृत व्यक्तियों के लिए उस बाँस के वन में आश्रय व शरणदाता बना हुआ था।

वह विजय चोरसेनापति पुरिमताल नगर में स्थित जनपद के अनेक गाँवों को नष्ट करता, अनेक नगरों का नाश करता, गाय आदि पशुओं को चुरा लेता; कैदियों का अपहरण करता,पथिकों को लूट लेता, सेंध लगाकर चोरी करता और उन्हें बार–बार उत्पीड़ित करता रहता, विध्वस्त करता रहता, तर्जना–डराता, धमकाता चाबुक आदि से पीटता रहता। घर आदि उजाड़कर स्थान रहित,धनरहित (दरिद्र) तथा धान्यादि से रहित कर भूख से तड़फाता हुआ तथा महाबल राजा के महसूल व लगान को भी बार–बार स्वयं ही ग्रहण (हड़प) करता रहता था।

5. Like a bamboo thicket bandit Vijaya provided protection and refuge in that bamboo forest to all sorts of branded and escaped criminals. These included thieves, womanizers (*paardariks*), bamboozlers (*granthibhedak*), housebreakers (*sandhicchedak*), wall-breakers (*kshatrakhanak*), gamblers, transgressors, destitute, deformed, disabled, and all sorts of outcasts.

In and around Purimtal city, that leader of bandits, Vijay, habitually indulged in activities like raiding villages, raiding towns, driving away cattle, kidnapping prisoners, looting and beating wayfarers, and house breaking. With these activities he tormented, wrecked, terrorized, thrashed people and deprived citizens of their wealth, means of subsistence and peaceful living. He also habitually looted and collected the taxes due to king Mahabal.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरी नामं भारिया होत्था, अहीण.। तस्स णं विजयचोरसेणावइस्स पुत्ते खंदसिरीए भारियाए अत्तए अभग्गसेणे नामं दारए होत्था, अहीण–पडिपुण्णपंचिंदियसरीरे विन्नायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते।

६. उस विजय चोरसेनापति की स्कन्दश्री नाम की रूपवती सुन्दर पत्नी थी। विजय चोरसेनापति का पुत्र एवं स्कन्दश्री का आत्मज अभग्नसेन नाम का एक बालक था, जो सुगठित सुन्दर शरीर वाला तथा परिपक्व बुद्धि वाला युवक था।

ABHAGNASEN : THE SON OF BANDIT VIJAYA

6. That bandit-chief Vijaya had a beautiful wife named Skandashri. Bandit-chief Vijaya and Skandashri had a son named Abhagnasen who was a young man with a beautiful and well-proportioned body as well as a mature mind.

भगवान महावीर का आगमन

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुरिमतालनयरे समोसढे। परिसा निग्गया। राया निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया य पडिगओ।

७. एक समय पुरिमताल नगर में श्रमण भगवान महावीर स्वामी पधारे। जनसमूह भगवान के दर्शन करने एवं धर्मदेशना सुनने के लिए गया, राजा भी गया। भगवान ने धर्मोपदेश दिया। धर्मोपदेश सुनकर राजा तथा जनता वापस अपने स्थान को चले गये।

ARRIVAL OF BHAGAVAN MAHAVIR

7. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Purimtal City. People came to pay homage. The king of the city also came to pay homage. *Bhagavan* gave his discourse to all, after which the king and the people returned home.

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी गोयमे जाव रायमग्गं समोगाढे। तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ, बहवे आसे, पुरिसे सन्नद्धबद्धकवए। तेसिं णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ अवओडयबंधणं जाव उग्घोसिज्जमाणं।

तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा पढमंसि चच्चरंसि निसीयावेंति, निसीयावेत्ता अट्ठ चुल्लपिउए अग्गओ घाएंति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं तालेमाणा तालेमाणा कलुणं कागणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणियं च पाएंति। तयाणंतरं च दोच्चंसि चच्चरंसि अट्ठ चुल्लमाउयाओ अग्गओ घाएंति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालेमाणा तालेमाणा कलुणं कागणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणियं च पाएंति। एवं तच्चे चच्चरे अट्ठमहापिउए, चउत्थे अट्ठ महामाउयाओ, पंचमे पुत्ते, छट्ठे सुण्हाओ, सत्तमे जामाउया, अट्ठमे धूयाओ, नवमे नत्तुया, दसमे नत्तुईओ, एक्कारसमे नत्तुयावई, बारसमे नत्तुइणीओ, तेरसमे पिउस्सियपइया. चोद्दसमे पिउस्सियाओ, पन्नरसमे माउस्सियापइया, सोलसमे माउस्सियाओ, सत्तरसमे मामियाओ, अट्ठारसमे अवसेसं मित्त–नाइ–नियग–सयण–संबंधि–परियणं अग्गओ घाएंति घाएत्ता कसप्पहारेहिं तालेमाणा तालेमाणा कलुणं कागणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणियं च पाएंति !

८. उस समय, श्रमण भगवान महावीर के ज्येष्ठ शिष्य गौतम स्वामी भिक्षा के लिए नगर भ्रमण कर लौटते हुए राजमार्ग पर पधारे। वहाँ उन्होंने बहुत से हाथियों, घोड़ों तथा राजपुरुषों को सैनिकों की भाँति शस्त्रों से सुसज्जित और कवच आदि पहने हुए देखा। उन सबके बीच **अवकोटक बन्धन**–(गर्दन मरोड़कर पीठ पीछे दोनों हाथों के साथ बाँधना) से बंधे एक पुरुष को देखा, जिसके सम्बन्ध में उद्‌घोषणा की जा रही थी। यह सब कथन दूसरे अध्ययन के सूत्र ६ में आये वर्णन के अनुसार समझें।

वे सैनिक उस पुरुष को चत्वर–(जहाँ चार मार्गों से अधिक मार्ग मिलते हों) पर बैठाकर उसके आगे उसके आठ लघुपिताओं–(चाचाओं) को मारते हैं, तथा चाबुक के प्रहारों से पीटते हैं। अतीव दयनीय दशा को प्राप्त हुए उस पुरुष को उसके ही शरीर में से काट-काट कर माँस के छोटे-छोटे टुकड़े खिलाते हैं और उसी का रुधिर पिलाते हैं। फिर दूसरे चौराहे पर लाकर उसकी आठ लघु माताओं (चाचियों को) को उसी के सामने पीटते हैं और माँस खिलाते तथा रुधिरपान कराते हैं। इसी तरह तीसरे चौराहे पर आठ महापिताओं–(पिता के ज्येष्ठ भ्राताओं–ताऊओं) को, चौथे चत्वर पर आठ महामाताओं–(पिता के ज्येष्ठ भ्राताओं की पत्नियों–ताइयों) को, पाँचवें पर पिता के पुत्रों (स्वयं के भाई) को, छट्ठे पर पिता की पुत्रवधुओं (स्वयं की भाभी) को, सातवें पर पिता के जामाताओं (स्वयं के बहनोई) को, आठवें पर पिता की लड़कियों (स्वयं की बहन) को, नवमें पर नप्ताओं–(पिता के पौत्रों व दोहित्रों) को, दसवें पर लड़के और लड़कियों की लड़कियों (पिता के पौत्रियों व दौहित्रियों) को, ग्याहरवें पर नप्तृकापतियों–(पिता की पौत्रियों व दौहित्रियों के पतियों) को, बारहवें पर पिता की नाप्ता-पत्नियों (पौत्रों व दौहित्रों की पत्नियों), तेरहवें पर पिता की बहनों के पतियों, (फूफाओं) को, चौदहवें पर पिता की बहनों–(बुआओं) को, पन्द्रहवें पर माता की बहनों के पतियों–(मौसाओं) को, सोलहवें पर माता की बहनों को–(मौसियों को), सत्रहवें पर मामा की स्त्रियों (मामियों) को, अठारहवें पर शेष मित्र, ज्ञाति, स्वजन सम्बन्धी और परिजनों को उस पुरुष के आगे मारते हैं तथा चाबुक के प्रहारों से पीटते हुए वे राजपुरुष करुणाजनक दशा प्राप्त उस पुरुष को उसके शरीर से काटे हुए माँस के छोटे-छोटे टुकड़े खिलाते और रुधिर का पान कराते हैं।

8. During that period of time, while returning after collecting alms in the city, Gautam Swami, the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, came to the main road. There he saw many elephants, horses and foot soldiers duly equipped with armours and weapons. Amongst them he saw a man tied in the *avakotak* bond (bending the neck and tying it with

hands already tied at the back). Announcement was being made about him. All details about this should be read as aphorism 6 of chapter 2.

Those soldiers forced that prisoner to sit at the first road crossing (of many roads) and before his eyes killed his eight *chachas* (father's younger brothers; uncles; *chullapiuye*). After that they thrashed him with whips and, in this miserable condition, made him eat small pieces of his own flash and drink his own blood. Then those soldiers brought him on the second road crossing (of many roads), before his eyes killed his eight *chachis* (wives of father's younger brothers; aunts; *chullamauyao*), thrashed him and fed him his own flash and blood. In the same way they killed his six *taus* (father's elder brothers; uncles; *mahapiuye*) on the third crossing, his six *tais* (wives of father's elder brothers; aunts; *mahamauyao*) on the fourth crossing, sons (of his father excluding himself; his brothers) on the fifth crossing, daughters-in-law (of his father; wives of his brothers) on the sixth crossing, sons-in-law (of his father; husbands of his sisters) on the seventh crossing, daughters (of his father; his sisters) on the eighth crossing, grandsons (of his father; his nephews) on the ninth crossing, granddaughters (of his father; his nieces) on the tenth crossing, husbands of granddaughters (of his father) on the eleventh crossing, wives of grandsons (of his father) on the twelfth crossing, husbands of his father's sisters (his uncles) on the thirteenth crossing, father's sisters (his aunts) on the fourteenth crossing, husbands of his mother's sisters (his maternal uncles) on the fifteenth crossing, mother's sisters (his aunts) on the sixteenth crossing, wives of mother's brothers on the seventeenth crossing, and other friends, kinfolk, and close and distant relatives on the eighteenth crossing before his eyes. After each of these instances the soldiers thrashed him and, in this miserable condition, made him eat small pieces of his own flash and drink his own blood.

गौतम की जिज्ञासा

९. तए णं से भगवं गोयमे तं पुरिसं पासइ पासित्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने जाव तहेव निग्गए एवं वयासी—'एवं खलु अहं णं भंते ! तं चेव जाव से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसी ? जाव विहरइ।'

९. (इस दृश्य को देखकर) भगवान गौतम के हृदय में विचार व चिन्तन उत्पन्न हुआ। वे नगर से बाहर निकले तथा भगवान के पास आकर निवेदन करने लगे—'भगवन् ! मैं आपकी आज्ञानुसार भिक्षा के लिए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नगर में गया, वहाँ मैंने एक पुरुष को इस दयनीय स्थिति में देखा है। भगवन् ! वह पुरुष पूर्वभव में कौन था ? जो इस तरह अपने कर्मों का फल पा रहा है।

GAUTAMS CURIOSITY

9. Bhagavan Gautam was thoughtful (on seeing all this). He came out of the city, went to Bhagavan Mahavir and said—"*Bhante* ! On getting your permission I went into the city to seek alms. There I saw a person in pathetic condition (as aforesaid). *Bhante* ! In his earlier birth, who was this person that now suffers such grave fruits of his *karmas* ?"

अभग्नसेन का पूर्वभव

१०. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे पुरिमताल नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थमियसमिद्धे। तत्थ णं पुरिमताले नयरे उदिए नामं राया होत्था, महया.। तत्थ णं पुरिमताले निन्नए नामं अंडयवाणिए होत्था। अड्ढे जाव अपरिभूए, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

तस्स णं निन्नयस्स बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं कुद्दालियाओ य पत्थियापिडए य गिण्हंति, गिण्हित्ता पुरिमतालस्स नगरस्स परिपेरंतेसु बहवे काइअंडए य घूइअंडए य पारेवइअंडए य टिट्टिभिअंडए य बगि--मयूरी--कुक्कुडिअंडए य अन्नेसिं च बहूणं जलयर--थलयर--खहयरमाईणं अंडाइं गेण्हंति, गेण्हेत्ता पत्थियापिडगाइं भरेंति, भरेत्ता जेणेव निन्नयए अंडवाणियए तेणामेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता निन्नयस्स अंडवाणियस्स उवणेतिं।

१०. हे गौतम ! उस काल तथा उस समय (जिस समय का यह वर्णन है) इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भारतवर्ष में पुरिमताल नामक विशाल समृद्धिशाली नगर था। उस पुरिमताल नगर में उदित नाम का राजा राज्य करता था। उस पुरिमताल नगर में निर्णय नाम का एक अण्डों का व्यापारी भी रहता था। वह बहुत धनी तथा बड़ा अधर्मी एवं परम असन्तोषी, दुष्कर्मों में ही आनन्द मानने वाला था।

निर्णय नामक अण्डवणिक के अनेक **दत्तभृतिभक्तवेतन**–(रुपया तथा भोजन के रूप में प्रतिदिन वेतन पाने वाले) नौकर रहते थे। वे प्रतिदिन कुदाल व बाँस की पिटारियों को लेकर पुरिमताल नगर के चारों ओर जाते। कौवी–(कौए की मादा) के अण्डों को, घूकी–(उल्लु की मादा) कबूतरी, टिटोड़ी , बगुली, मोरनी और मुर्गी आदि के अण्डों को तथा अनेक जलचर, स्थलचर व खेचर आदि जीवों के अण्डों को लेकर पिटारियों में भरते थे और भरकर निर्णय नामक अण्डों के व्यापारी के पास आते थे, आकर उस अण्डव्यापारी को अण्डों से भरी हुई पिटारियाँ देते थे।

PREVIOUS BIRTH OF ABHAGNASEN

8. (Narrating the story of previous birth of that person Shraman Bhagavan Mahavir said—) "Gautam ! During that period of time there was

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

a prosperous city called Purimtal in Bharatvarsh area in Jambu continent. A king named Udit was the ruler of that city. In that Purimtal city lived an egg trader named Nirnaya. He was very rich but irreligious and extremely discontented. He derived pleasure only in sinful deeds.

Nirnaya egg-trader had many servants who were given food and cash as daily wages (*dattabhritibhaktavetan*). Every day they would go out of Purimtal City in all directions. They would collect eggs of crows, owls, pigeons, *Titodis* (sandpipers), *Bagulas* (herons), peacocks, hen, and many other aquatic, terrestrial and aerial beings. After filling the baskets with these eggs they would return to Nirnaya egg-trader and hand over the egg filled baskets to him.

११. तए णं तस्स निन्नयस्स अंडवाणियस्स बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहवे काइअंडए जाव कुक्कुडिअंडए य अन्नेसिं च बहूणं जलयर–थलयर–खहयरमाईणं अंडयए तवएसु य कवल्लीसु य कंदुएसु य भज्जणएसु य इंगालेसु य तलेंति, भज्जेंति, सोल्लेन्ति, तलित्ता भज्जित्ता सोलेत्ता रायमग्गे अंतरावणंसि अंडयपणिएणं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति। अप्पणा वि यणं से निन्नयए अंडवाणियए तेहिं बहूहिं काइअंडएहि य जाव कुक्कुडिअंडएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं सीधुं च आसाएमाणे–४ विहरइ।

११. उस 'निर्णय' नामक अण्डवणिक् के वे अनेक वेतनभोगी पुरुष बहुत से कौवी यावत् कुकड़ी (मुर्गी) के अण्डों तथा अन्य जलचर, स्थलचर एवं खेचर आदि पूर्वोक्त जीवों के अण्डों को तवों पर, कड़ाहों पर, भाड़ में एवं अंगारों पर सेंकते, भूनते और पकाते थे। सेककर, तलकर, भूनकर एवं पकाकर राजमार्ग में लगी दुकानों पर तथा बाजार के भीतर लगी हाटों में अण्डों को बेचकर आजीविका करते थे। वह निर्णय नामक अण्डवणिक् स्वयं भी अनेक कौवी यावत् कुकड़ी के पकाये हुए, तले और भुने हुए अण्डों को खाता तथा सुरा, मधु, मेरक, सीधु आदि मदिराओं का पान करता रहता था।

11. Many such servants of Nirnaya egg-trader fried, roasted and cooked large numbers of eggs of crows... and so on up to... hen, and many other aquatic, terrestrial and aerial beings on cooking-plates, frying-pans, ovens, and grills. They earned their living by grilling, frying, roasting and cooking as well as selling eggs in shops and stalls on the main roads and markets in the streets. That Nirnaya egg-trader too ate such grilled, fried, roasted and cooked eggs of crows... and so on up to... hen and drank a variety of wines (*sura*), namely *madhu* (made from flowers or honey), *merak* (made from palm-fruit), *madya* (a kind of white wine), *seedhu* (made from mixture of jaggery and grains) etc.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. तए णं से निन्नए अंडवाणियए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एगं वाससहस्सं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा तच्चाए पुढवीए उक्कोसेणं सत्तसागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने। से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव सालाडवीए चोरपल्लीए विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरीए भारियाए कुच्छिसिं पुत्तत्ताए उववन्ने।

१२. वह निर्णय नामक अण्डवणिक् इस प्रकार के पापकर्मों को करने वाला घोर सघन पापकर्मों को उपार्जित करके एक हजार वर्ष की आयुष्य को पूरी कर मृत्यु के समय में मृत्यु को प्राप्त करके तीसरी नरक में नारक रूप से उत्पन्न हुआ। जहाँ सात सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति है। नरक आयुष्य पूर्ण कर वह निर्णय अण्डवणिक् विजय चोरसेनापति की स्कन्दश्री भार्या के उदर में पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ है।

THE PRESENT BIRTH OF ABHAGNASEN

12. Involved in these kinds of cruel acts that Nirnaya egg-trader accumulated intense demeritorious *karmas*. Completing his life span of one thousand years, he died at the destined moment of death and took rebirth as an infernal being in the third hell with a maximum life span of seven *Sagaropam*. On completing the life span in hell the soul that was Nirnaya egg-trader came in the womb of Skandashri, the wife of bandit-chief Vijaya.

स्कन्दश्री को दोहद

१३. तए णं तीसे खन्दसिरीए भारियाए अन्नया कयाइ तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए। 'धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं बहूहिं मित्त–नाइ–नियग–सयण–संबंधि–परियणमहिलाहिं अन्नाहि य चोरमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च मज्जं च आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागयाओ पुरिसनेवत्थिया सन्नद्धबद्धवम्मियकवइया जाव गहियाउहपहरणा भरिएहिं फलएहिं, निक्किट्ठाहिं असीहिं, अंसागएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लासियाहिं दामाहिं लंबियाहि य ओसारियाहिं उरुघण्टाहिं, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयं पिव करेमाणीओ सालाडवीए चोरपल्लीए सव्वओ समंता आलोएमाणीओ आलोएमाणीओ आहिंडमाणीओ दोहलं विणेंति।

तं जइ अहं पि जाव दोहलं विणिज्जामि' त्ति कट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि जाव सुक्का भुक्खा जाव अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियाइ।

१३. किसी अन्य समय लगभग तीन मास परिपूर्ण होने पर स्कन्दश्री को इस प्रकार का दोहद उत्पन्न हुआ–"वे माताएँ धन्य हैं, जो बहुत–सी मित्र, ज्ञाति, निजक,स्वजन, सम्बन्धियों और परिजनों की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महिलाओं तथा चोरपल्ली की अन्य महिलाओं को साथ लेकर स्नान आदि करके सर्व प्रकार के अलंकारों से अलंकृत हो, बहुत प्रकार के अशन, पान, खादिम, स्वादिम पदार्थों तथा सुरा, मधु आदि मदिराओं का स्वयं पान करती हैं, दूसरों को पिलाती हैं। तथा भोजन करके एकत्र होकर जिन्होंने पुरुष का वेष धारण किया है और दृढ़ बन्धनों से बंधे हुए कवच–लोहमय बख्तर आदि शरीर पर धारण किये हैं, तलवार, तीर आदि आयुध एवं प्रहरण शरीर पर बाँध रखे हैं तथा बांये हाथ में फलक–ढालों को धारण किये हुए म्यान से बाहर निकली हुई तलवारों से, कन्धे पर रखे हुए तरकशों से, ऊँचे किये हुए पाशों–जालों से, प्रत्यंचा युक्त धनुषों से, बाणों से सन्नद्ध है। जिनकी जँघाओं पर घण्टियाँ घनघना रही हैं। तथा क्षिप्रतूर्य नामक बाजा बज रहा है। ऐसी उत्कृष्ट–आनन्दमय महाध्वनि से समुद्र के गर्जारव के समान आकाशमण्डल को गुँजाती हुई शालाटवी चोरपल्ली के चारों ओर अवलोकन करती हुई, उसके चारों तरफ भ्रमण करती हुई अपना दोहद पूर्ण करती हैं।

क्या ही अच्छा हो, यदि मैं भी इसी भाँति अपना दोहद पूर्ण करूँ? ऐसा विचार उसके मन में आया। किन्तु वह दोहद पूर्ण न होने से उदास रहने लगी। दुबली पतली हो गई और जमीन पर नजर गड़ाए चिन्ताग्रस्त रहने लगी।

SKANDASHRI'S DOHAD

13. At some point of time, when about three months of the pregnancy period had passed, Skandashri had a *dohad* (pregnancy desire)—"Blessed are those mothers who, after bathing and embellishing themselves with all kinds of ornaments, enjoy tasting and eating, distributing and sharing with female friends, kinfolk, close and distant relatives and other women of the hideout, a variety of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savory food) and wines (*sura*), namely *madhu* etc. After this feast they dress themselves as males and tightly strap iron armours and equip themselves with swords, arrows, and other hand-wielding and launchable weapons. They move carrying shields in their left hands, brandishing drawn swords, quivers on their shoulders, raised nets, and bows with arrows drawn on strings. Bells fixed on their thighs ring. *Kshipraturya* trumpets keep blowing. Filling the sky with such exhilarating tumult, matching the thunder of the sea, they move all around the hideout viewing everything. And thus they fulfill their *dohad* (desires of a pregnant mother).

How pleasurable it would be if I am also able to fulfill my *dohad* in the same way ?" With this thought and not being able to fulfill her *dohad* she turned gloomy. In due course she became emaciated and habitually sat staring at the ground and brooding.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. तए णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरिं भारियं ओहयमणसंकप्पं जाव पासइ, पासित्ता एवं वयासी—'किं णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियासि ?'

तए णं सा खंदसिरी विजयचोरसेणावइं एवं वयासी—'एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम तिण्हं मासाणं जाव झियामि।'

तए णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरीए भारियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म खंदसिरिभारियं एवं वयासी—'अहासुहं देवाणुप्पिए !' त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ !

१४. विजय चोरसेनापति ने स्कन्दश्री को इस प्रकार चिन्ताग्रस्त आर्तध्यान मग्न देखकर पूछा—देवानुप्रिये ! तुम उदास हुई क्यों आर्तध्यान कर रही हो ?

स्कन्दश्री ने विजय चोरसेनापति से कहा—देवानुप्रिय ! मुझे गर्भ धारण किये हुए तीन मास हो चुके हैं। मुझे पूर्वोक्त प्रकार दोहद उत्पन्न हुआ है, उसकी पूर्ति न होने से मैं शोकाकुल एवं आर्तध्यान कर रही हूँ।

विजय चोरसेनापति ने अपनी स्कन्दश्री भार्या का उक्त कथन सुन और समझ कर उसे इस प्रकार कहा—देवानुप्रिये ! तुम अपनी इच्छा के अनुकूल इस दोहद की पूर्ति कर सकती हो, कुछ भी चिन्ता मत करो।

14. When bandit-chief Vijaya saw brooding and worrying Skandashri he asked—"Beloved of gods ! What makes you sad and brooding ?"

Skandashri replied to bandit-chief Vijaya—"Beloved of gods ! Three months are past since I conceived. I had the aforesaid *dohad*. As I am unable to fulfill it, I am sad and brooding."

Bandit-chief Vijaya heard and understood the aforesaid statement of his wife Skandashri and said—"Beloved of gods ! Don't worry. You can fulfill your said *dohad* precisely as you wish."

१५. तए णं सा खंदसिरिभारिया विजएणं चोरसेणावइणा अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठा तुट्ठा बहूहिं मित्त—नाइ—नियग—सयण—संबंधि—परियण—महिलाहिं जाव अन्नाहि य बहूहिं चोरमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हाया जाव विभूसिया विउलं असणं—४ सुरं च—५ आसाएमाणी—४ विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागया पुरिसनेवत्था सन्नद्धबद्ध. जाव आहिंडमाणी दोहलं विणेइ। तए णं सा खंदसिरिभारिया संपुण्णदोहला, संमाणियदोहला विणीयदोहला वोच्छिन्नदोहला संपन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ।

१५. पति के वचनों को सुनकर वह स्कन्दश्री मन में हर्षित हुई, संतोष का अनुभव करने लगी। फिर बहुत-सी पारिवारिक महिलाओं, सहेलियों एवं अन्य चोरमहिलाओं को साथ में लेकर स्नानादि से निवृत्त हो, अलंकारों से अलंकृत होकर विपुल अशन, पान, सुरा मदिरा आदि का मनचाहा आस्वादन करने लगी। सबके साथ भोजन करने के पश्चात् वह किसी उचित स्थान पर एकत्रित होकर पुरुषवेष पहनकर तथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोहमय कवच आदि शरीर पर धारण करके भ्रमण करती हुई अपने दोहद को पूर्ण करती है। इस प्रकार वह स्कन्दश्री दोहद के सम्पन्न व पूर्ण होने पर अपने गर्भ की परम सुखपूर्वक रक्षा करने लगी।

15. Skandashri was pleased and contented to hear these words of her husband. Later she took her female friends, kinfolk, close and distant relatives and other women of the hideout along. After bathing and embellishing themselves with all kinds of ornaments she started enjoying ample food and wines as much as she liked. After this feast they gathered at a suitable place, dressed up as males, and equipped themselves with armours and other aforesaid things. In their company she moved all around fulfilling her *dohad* (desires of a pregnant mother). Then having her *dohad* fulfilled and satiated she carried the fetus happily.

विवेचन—इस सूत्र में दोहद पूर्ति के सम्बन्ध में कुछ विशेष शब्द आये हैं जैसे—**संपुण्णदोहला, सम्माणियदोहला, विणीय दोहला, वोच्छिन्नदोहला, सम्पन्नदोहला,** इन पाँचों पदों के अपने स्वतंत्र अर्थ हैं। आचार्यश्री आत्माराम जी म. ने अभयदेवसूरि कृत टीका के आधार पर इनका अर्थ इस प्रकार किया है—

(१) **संपुण्णदोहला**—जिसका दोहद पूरा हो गया है।

(२) **संमाणियदोहला**—मन इच्छित वस्तु लाकर देने से दोहद का सम्मान किया गया।

(३) **विणीयदोहला**—दोहद सम्बन्धी अभिलाषा से निवृत्ति हो गई।

(४) **वोच्छिन्नदोहला**—इच्छित वस्तु की आसक्ति मन से छिन्न हो गई।

(५) **सम्पन्नदोहला**—इन्द्रिय विषयों की तृप्ति होने से मन भर गया। ये पाँचों अर्थ दोहदवती स्त्री की सूक्ष्म मनोदशा के क्रमिक उतार-चढ़ाव को व्यक्त करते हैं। *(टीका पृष्ठ २२५)*

Elaboration—In this aphorism some special terms have been used in context of fulfillment of *dohad*. The five terms used have specific meanings and nuances. On the basis of the commentary (*Tika*) by Abhayadev Suri, Acharya Shri Atmaram ji M. has interpreted these terms as follows—

(1) Sampunna dohala—one whose pregnancy-desire has been fulfilled.

(2) Sammaniya dohala—whose pregnancy-desire has been respected by providing the desired thing.

(3) Viniya dohala—who has become free of her pregnancy-desire

(4) Vochchhinna dohala—the craving for the desired thing has disappeared from her mind.

(5) Sampanna dohala—her mind is contented as a consequence of satiation of pregnancy-desire.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

These five terms convey the gradual changes in the state of mind of a woman with pregnancy-desire. *(Tika, p. 225)*

अभग्नसेन का जन्म

१६. तए णं सा चोरसेणावइणी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया। तए णं से विजए चोर सेणावई तस्स दारगस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं दसरत्तं ठिइवडियं करेइ। तए णं से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स एक्कारसमे दिवसे विउलं असणं–४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तनाइ. आमंतेइ, आमंतित्ता जाव तस्सेव मित्तनाइ. पुरओ एवं वयासी–'जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि समाणंसि इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए अभग्गसेणे नामेणं।'

तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचधाईपरिग्गहिए जाव परिवड्ढइ।

तए णं से अभग्गसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे यावि होत्था। अट्ठदारियाओ, जाव अट्ठओ दाओ। उप्पिं पासाए भुंजमाणे विहरइ।

१६. तत्पश्चात् चोर सेनापति की पत्नी स्कन्दश्री ने नौ महीने पूर्ण होने पर एक पुत्र को जन्म दिया। विजय चोरसेनापति ने भी दश दिन तक ऋद्धि–सत्कार पूर्वक–वस्त्र आभूषण आदि का दान एवं बड़ों का सम्मान करते हुए कुलक्रमागत रीति से पुत्र का जन्म उत्सव मनाया। बालक के जन्म के ग्यारहवें दिन बहुत–सा अशन, पान आदि तैयार कराया। मित्र, ज्ञाति जनों आदि को आमन्त्रित किया, फिर भोजन कराया और उनके सामने इस प्रकार कहा–' जिस समय यह बालक गर्भ में आया था, उस समय इसकी माता को एक दोहद उत्पन्न हुआ था। (मैंने उस दोहद को भग्न नहीं होने दिया। अतः माता को जो दोहद उत्पन्न हुआ वह अभग्न रहा।) वह निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। इसलिए इस बालक का 'अभग्नसेन' नामकरण किया जाता है।

क्रमशः वह अभग्नसेन बालक क्षीरधात्री आदि पाँच धायमाताओं के द्वारा सँभाला जाता हुआ वृद्धि को प्राप्त होने लगा।

अनुक्रम से कुमार अभग्नसेन ने बाल्यावस्था पार करके युवावस्था में प्रवेश किया। आठ कन्याओं के साथ उसका विवाह हुआ। विवाह में उसके माता–पिता ने आठ–आठ प्रकार की वस्तुएँ प्रीतिदान–दहेज में दीं, वह ऊँचे महलों में रहकर सानन्द उनका उपभोग करने लगा।

BIRTH OF ABHAGNASEN

16. Then after nine months of pregnancy Skandashri, the wife of bandit-chief Vijaya, gave birth to a son. For ten days bandit-chief Vijaya performed the birth ceremonies, following his family tradition, by offering feasts and gifts to invitees and honouring the elders. On the eleventh day after the birth he arranged for ample food (etc.) and invited his friends and relatives. After the feast he announced—"When this child was conceived his mother

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

had a *dohad*. That *dohad* was fulfilled without any problem. Therefore, I give this boy the name 'Abhagnasen' (*Abhagna* means unbroken. As the *dohad* was fulfilled and not shattered, the boy was named Abhagna.)"

Gradually that boy Abhagnasen grew in the care of five nursemaids including the milk-nursemaid.

In due course boy Abhagnasen crossed adolescence and attained youth. He was married to eight young women. His parents gave him eight sets of things as marriage gifts. He lived happily in lofty mansions enjoying all these gifts.

१७. तए णं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते।

तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे, कंदमाणे, विलवमाणे विजयस्स चोरसेणावइस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता, बहूइं लोइयाइं मच्चकिच्चाइं करेइ, करेत्ता केणइ कालेणं अप्पसोए जाये यावि होत्था।

१७. तत्पश्चात् किसी समय वह विजय चोरसेनापति कालधर्म (मरण) को प्राप्त हो गया।

उसकी मृत्यु पर कुमार अभग्नसेन ने पाँच सौ चोरों के साथ रोते हुए, आक्रन्दन करते हुए और विलाप करते हुए अत्यन्त ठाट के साथ, सत्कार सम्मान पूर्वक विजय चोरसेनापति का नीहरण–दाहसंस्कार किया। बहुत से लौकिक मृतककृत्य अर्थात् दाहसंस्कार से लेकर पिता के निमित्त किये जाने वाले दान भोजनादि कार्य किये। कुछ समय पश्चात् अभग्नसेन पितृ–शोक से निवृत्त हो गया।

17. Then at some point of time bandit-chief Vijaya died.

On his death, young Abhagnasen, crying, weeping and wailing performed the cremation rites of bandit-chief Vijaya with honour, respect and great pomp and show in presence of five hundred bandits. He also performed the worldly last rites for his deceased father, including charity and offering food. As time passed he emerged out of the grief of the loss of his father.

१८. तए णं ते चोरपंचसयाइं अन्नया कयाइ अभग्गसेणं कुमारं सालाडवीए चोरपल्लीए महया महया इड्ढीसक्कारेणं चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति। तए णं से अभग्गसेणे कुमारे चोरसेणावई जाये अहम्मिए जाव कप्पायं गिण्हइ।

१८. कुछ समय पश्चात् उन पाँच सौ चोरों ने मिलकर बड़े महोत्सव के साथ अभग्नसेन को शालाटवी चोरपल्ली में चोर सेनापति के पद पर स्थापित किया। सेनापति के पद पर नियुक्त हुआ वह अभग्नसेन, अधर्म का आचरण करता हुआ राजा के करों को भी स्वयं ही प्रजा से वसूल करने लगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

18. Some time later, those five hundred bandits ceremoniously conferred the title and position of bandit-chief on Abhagnasen. On being appointed bandit-chief, Abhagnasen commenced extorting from people the taxes due to the king.

पीड़ित प्रजा की पुकार

१९. तए णं ते जाणवया पुरिसा अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा बहुगामघायावणाहिं ताविया समाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

'एवं खलु, देवाणुप्पिया ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरिल्लं जणवयं बहूहिं गामघाएहिं जाव निद्धणं करेमाणे विहरइ। 'तं सेयं खलु, देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो एयमट्ठं विन्नवित्तए।'

तए णं ते जाणवया पुरिसा एयमट्ठं अन्नमन्नेणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे तेणेव उवागया, जेणेव महाबले राया तेणेव उवागया। महाबलस्स रण्णो तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेंति, उवणेत्ता करयलपरिग्गहियं मत्थए अंजलिं कट्टु महाबलं रायं एवं वयासी–

'एवं खलु सामी ! सालाडवीए चोरपल्लीए अभग्गसेणे चोर सेणावई अम्हे बहूहिं गामघाएहिं य जाव निद्धणे करेमाणे विहरइ। तं इच्छामो णं, सामी ! तुज्झं बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुवसग्गा सुहेणं परिवसित्तए' त्ति कुट्टु पायवडिया पंजलिउडा महाबलं रायं एयमट्ठं विन्नवेंति।

१९. इस प्रकार अभग्नसेन चोरसेनापति द्वारा बहुत ग्रामों का विनाश किये जाने से सन्तप्त व दुःखी लोगों ने एक-दूसरे को बुलाकर इस प्रकार कहा–

"देवानुप्रियो ! चोरसेनापति अभग्नसेन पुरिमताल नगर के उत्तर दिशा के बहुत से ग्रामों का विनाश करके वहाँ के लोगों को धन-धान्यादि लूटकर दीन-दरिद्र बना रहा है। इसलिए हे देवानुप्रियो ! हमें जाकर पुरिमताल नगर के महाबल राजा को इस बात की सूचना देना चाहिए।"

ऐसा विचार कर के एकत्रित सभी प्रजाजनों ने परस्पर इस बात को स्वीकार कर लिया और राजा को भेंट देने के लिए **महार्थ**-महान् कार्य को सिद्ध करने वाले, राजा को भेंट देने योग्य, बहुमूल्य उपहार आदि साथ लेकर जहाँ पर पुरिमताल नगर में महाबल राजा था वहाँ आये। दोनों हाथ जोड़कर मस्तक पर अंजलि करके महाराज को वह मूल्यवान् भेंट अर्पण की। फिर महाबल राजा से इस प्रकार निवेदन किया–

'हे स्वामिन् ! शालाटवी नामक चोरपल्ली का चोरसेनापति अभग्नसेन ग्राम और नगरों में घात मचाता हुआ हमें लूटकर निर्धन बनाता जा रहा है। हे नाथ ! हम चाहते हैं कि आपकी भुजाओं की छाया से संरक्षित होते हुए निर्भय और उद्वेग रहित होकर हम सुखपूर्वक निवास करें।' इस प्रकार कहकर, पैरों में पड़कर तथा दोनों हाथ जोड़कर उन नागरिकों ने महाबल नरेश से अपनी बात कही।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

THE CALL OF THE TORMENTED PEOPLE

19. Tortured and tormented by destruction of many villages by bandit-chief Abhagnasen, the people called a meeting and deliberated—

"Beloved of gods ! Bandit-chief Abhagnasen is destroying many villages north of Purimtal City and making them destitute by looting their wealth and grains. Therefore, O beloved of gods ! We should give this information to king Mahabal of Purimtal City."

After these deliberations the congregation of citizens accepted this proposal. They collected impressive (*maharth*) and valuable gifts suitable for a king and went into Purimtal City where king Mahabal resided. Touching their foreheads with joined palms (a gesture of offering respect) they presented the valuable gifts to the king. After that they submitted—

"O lord ! Bandit-chief Abhagnasen of Shalatavi hideout is plundering villages and cities, depriving us of our wealth and making us poor. Sire ! We wish to live happily, fearlessly and free from troubles in the protection and shelter of your arms." With these words those citizens emphasized their plight by joining their palms and falling at king Mahabal's feet.

दण्डनायक को आदेश

२०. तए णं महब्बले राया तेसिं जाणवयाणं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु दंडं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहि, विलुंपित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हाहि, गिण्हित्ता ममं उवणेहि।'

तए णं से दंडे 'तहे' त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ। तए णं से दंडे बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्धबद्धवम्मियकवएहिं जाव गहियाउह–पहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे मगइएहिं फलएहिं जाव छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया जाव उक्किट्ठं जाव करेमाणे पुरिमतालं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

२०. महाबल नरेश उन जनपदवासियों से उक्त वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त रुष्ट हुए; कुपित हुए और क्रोध से तमतमा उठे। क्रोध से दाँत पीसते हुए भौहें चढ़ाकर अर्थात् क्रोध की सजीव प्रतिमा बनकर कोतवाल को बुलाते हैं और बुलाकर कहते हैं–देवानुप्रिय ! तुम जाओ और शालाटवी नामक चोरपल्ली को लूट लो; नष्ट–भ्रष्ट कर दो और उसके चोरसेनापति अभग्नसेन को जीवित पकड़कर मेरे सामने उपस्थित करो !

दण्डनायक महाबल राजा की इस आज्ञा को विनयपूर्वक स्वीकार करता है। फिर, दृढ़ बंधनों से बँधे हुए लोहमय कसूलक आदि से युक्त कवच को धारण करता है। आयुधों और प्रहरणों से सुसज्जित अनेक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सैनिकों को साथ लेकर, हाथों में फलक-ढाल बाँधकर क्षिप्रतूर्य वाद्य विशेष को बजाकर उत्कृष्ट महाध्वनि एवं सिंहनाद आदि के द्वारा समुद्र की सी गर्जना करते हुए पुरिमताल नगर के मध्य से निकल कर शालाटवी चोरपल्ली की ओर जाने का निश्चय करता है।

ORDER TO THE POLICE CHIEF

20. Listening to the said details from those citizens king Mahabal got angry... and so on up to... red with rage. Gnashing his teeth in rage and raising his eyebrows (in other words, becoming embodiment of anger) he called the police chief and said—"Beloved of gods ! Go, raid that Shalatavi hideout, destroy it and after capturing that bandit-chief Abhagnasen alive, present him before me."

The police chief humbly accepted this order by king Mahabal. Then he tightly strapped iron armours with sharp projections. He decided to take along many soldiers equipped with hand-wielding and launchable weapons and shields tied to their hands and pass through the middle of Purimtal city blowing *Kshipraturya* trumpets filling the sky with tremendous tumult matching the thunder of the sea. He resolved to cross the city thus and go to that Shalatavi hideout of bandits.

गुप्तचरों ने खबर दी

२१. तए णं तस्स अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स चारपुरिसा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव सालाडवी चोरपल्ली, जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव परिग्गहियं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महाबलेण रण्णा महाभडचडगरेणं दंडे आणत्ते-'गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहि, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गेण्हाहि, गेण्हित्ता ममं उवणेहि। तए णं से दंडे महया भडचडगरेणं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

२१. उस समय अभग्नसेन चोरसेनापति के गुप्तचरों (मुखबिरों) को इस बात का पता चल गया। वे शालाटवी चोरपल्ली में, अभग्नसेन चोरसेनापति के पास आये और दोनों हाथ जोड़कर मस्तक पर अंजलि करके अभग्नसेन से इस प्रकार बोले-''देवानुप्रिय ! पुरिमतालनगर में महाबल राजा ने महान् सुभटों के समूह के साथ दण्डनायक-कोतवाल को बुलाकर आज्ञा दी है कि -'तुम लोग शीघ्र जाओ, जाकर शालाटवी चोरपल्ली को नष्ट-भ्रष्ट कर दो; लूट लो और उसके सेनापति अभग्नसेन को जीवित पकड़कर मेरे सामने उपस्थित करो।' राजा की आज्ञा को शिरोधार्य करके कोतवाल अनेक वीर योद्धाओं को साथ लेकर शालाटवी चोरपल्ली में आने के लिए प्रस्थान कर चुका है।''

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

21. At that time the spies of bandit-chief Abhagnasen came to know of this development. They approached bandit-chief Abhagnasen of Shalatavi hideout; touched their foreheads with joined palms, and submitted—"Beloved of gods ! In Purimtal city king Mahabal has called the police chief and brave soldiers and given this order—'Beloved of gods ! Go, raid that Shalatavi hideout, destroy it and present before me that bandit-chief Abhagnasen after capturing him alive.' Accepting the order of the king the police chief has left for Shalatavi hideout along with many brave soldiers."

२२. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तेसिं चारपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म पंचचोरसयाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महाबले जाव तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तं दंडं सालाडविं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव पडिसेहित्तए।'

तए णं ताइं पंचचोरसयाइं अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स 'तह' त्ति जाव पडिसुणेंति।

२२. तब वह अभग्नसेन चोर सेनापति अपने गुप्तचरों की बातों को सुनकर उस पर विचारकर तुरन्त अपने पाँच सौ चोरों को बुलाकर इस प्रकार कहता है–देवानुप्रियों ! पुरिमताल नगर के महाबल राजा की आज्ञा से दण्डनायक ने चोरपल्ली पर आक्रमण करने, तथा मुझे जीवित पकड़ने के लिए यहाँ आने का निश्चय कर लिया है, अतः उस दण्डनायक को सालाटवी चोरपल्ली पहुँचने से पहले ही मार्ग में रोक देना हमारे लिए उचित होगा।''

अभग्नसेन सेनापति के इस आदेश को 'तथेति' (बहुत ठीक, ऐसा ही होना चाहिए) कहकर पाँच सौ चोरों ने स्वीकार किया।

22. On hearing the news given by his spies, bandit-chief Abhagnasen called the five hundred bandits of his gang and said—"On getting the order from king Mahabal the police chief of Purimtal city has resolved to attack this hideout and capture me alive. Therefore, it would be to our benefit to stop that police chief on the way before he reaches Shalatavi hideout."

The five hundred bandits accepted bandit-chief Abhagnasen's order by uttering—"Yes ! We should do that."

२३. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं ण्हाए जाव पायच्छित्ते भोयणमंडवंसि तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च ५ आसाएमाणे ४ विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसूइभूए पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लं चम्मं दुरुहइ, दुरुहित्ता सन्नद्धबद्ध जाव पहरणेहिं मगइएहिं जाव रवेणं पुव्वावरण्हकालसमयंसि सालाडवीओ चोरपल्लीओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणे तं दंडं पडिवालेमाणे चिट्ठइ।

२३. तदनन्तर अभग्नसेन चोर सेनापति ने बहुत-सी अशन, पान आदि स्वादिष्ट भोजन सामग्री तैयार करवाई। तथा सभी पाँच सौ चोरों ने स्नानादि किया, अपना उद्दिष्ट कार्य पूरा करने के लिए मस्तक पर तिलक तथा अन्य मांगलिक कृत्य किये। सबने मिलकर भोजनशाला में बने विपुल अशनादि वस्तुओं तथा पाँच प्रकार की मदिराओं का यथारुचि आस्वादन करना आरम्भ किया।

भोजन के पश्चात् यथोचित स्थान पर आकर सबने आचमन (कुल्ला) किया, मुख पर लगे अन्न के लेपादि को दूर कर शुद्ध हुए और उन पाँच सौ चोरों के साथ आर्द्रचर्म (गीले चमड़े) पर आरोहण किया। पश्चात् दृढ़बन्धनों से बँधे हुए, लोहमय कसूलक आदि से युक्त कवच को धारण करके, आयुधों और प्रहरणों से सुसज्जित होकर, हाथों में ढालें बाँधकर प्रचण्ड सिंहनाद आदि शब्दों के द्वारा गर्जना करते हुए, आकाशमण्डल को शब्दायमान करते हुए अभग्नसेन ने शालाटवी चोरपल्ली से मध्यान्ह के समय प्रस्थान किया। प्रचुर भोजन सामग्री साथ लेकर विषम और दुर्ग-गहन वन में ठहरकर वह दण्डनायक के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

23. After that, bandit-chief Abhagnasen arranged for abundant *ashan, paan,* and *khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savory food). All five hundred bandits bathed and performed auspicious rituals including putting marks on their foreheads for the success of their mission. After that they started enjoying ample food and wines as much as they liked.

After meals they went to an allotted spot and washed and wiped their mouths clean of any bits and pieces of food. After cleansing they performed the ritual of *Ardracharm arohan* (riding over wet leather). Then they tightly strapped iron armours with sharp projections, equipped themselves with hand-wielding and launchable weapons and shields tied to their hands. Then filling the sky with tremendous roar and loud war cry, they left the Shalatavi hideout around noon. Carrying large quantities of food, they stopped at a fortified area in the dense jungle and awaited the arrival of the police chief.

विवेचन-आर्द्रचर्म पर आरोहण करने का क्या प्रयोजन है तथा वह क्या है? इस सम्बन्ध में आचार्य श्री आत्माराम जी म. ने विस्तृत चर्चा करते हुए लिखा है-

"इस सम्बन्ध में तीन मान्यताएँ प्रचलित हैं-(१) आचार्य श्री अभयदेव सूरि के मन्तव्यानुसार-आर्द्रचर्म पर आरोहण करना चोरों का अपना मांगलिक अनुष्ठान था। अभग्नसेन और उसके साथियों ने दण्डनायक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की सेना को मार्ग में रोकने में आ सकने वाले संभावित विघ्नों के विनाश की कामना से प्रस्थान से पूर्व यह मंगल-अनुष्ठान किया।

परम्परा का अनुसरण करने वाली (२) दूसरी मान्यता के अनुसार आर्द्र चर्म पर आरोहण करने का भावार्थ यह है कि अनुकूल-प्रतिकूल कैसी भी कठिन व विषम परिस्थिति में पाँव पीछे नहीं हटेगा। '**कार्यं वा साधयेयं, देहं वा पातयेयम्**' हर प्रयत्न से हम कार्य को सिद्ध करके ही विराम लेंगे, अन्यथा शरीर को छोड़ देंगे।" इस कठोर प्रतिज्ञा से बँध जाने का दृढ़तम संकल्प आर्द्रचर्म पर आरोहित होने से प्रतीत होता है।

(३) तीसरी मान्यता यह है कि जिस तरह आर्द्र चर्म फैलता रहता है, वृद्धि और विस्तार को प्राप्त होता है, उसी प्रकार इस पर आरोहण करने वाला भी धन-जनादि समृद्धि की वृद्धि रूप प्रसार को उपलब्ध करता है। इसी महत्त्वाकांक्षा रूप भावना को सन्मुख रखते हुए अभग्नसेन और उसके पाँच सौ साथियों ने आर्द्रचर्म पर आरोहण किया। *(हिन्दी टीका, पृ. २४८)*

Elaboration—*Ardracharm arohan* (riding over wet leather)—What is the purport of this term ? Acharya Shri Atmaram ji M. provides detailed information about this—

"There are three different popularly accepted beliefs in this context—(1) According to Acharya Shri Abhayadev Suri this *Ardracharm arohan* (riding over wet leather) was an auspicious ritual of bandits and thieves. Before launching their mission of waylaying the police chief, Abhagnasen and members of his gang performed this auspicious ritual with the wish of removing all possible hurdles.

(2) The second and traditional belief is that the ritual of riding over wet leather signifies and symbolizes the resolve of embracing death instead of retreating in face of any favourable or unfavourable situation, no matter how tough or complex it is. This ritual riding over wet leather conveys the bond of the unwavering resolve—'We will accomplish our mission no matter what it takes, otherwise we will abandon this body.'

(3) The third belief is that as wet leather expands, likewise one who rides over it achieves the enhancement of his wealth and power. With this wish of enhancing his wealth and power bandit-chief Abhagnasen and his five hundred companions performed the ritual. *(Hindi Tika, p. 248)*

युद्ध में दण्ड नायक की पराजय

२४. तए णं से दंडे जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था। तए णं अभग्गसेणे चोरसेणावई तं दंडं खिप्पामेव हयमहिय, जाव पडिसेहेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. उसके बाद वह दण्डनायक जहाँ पर अभग्नसेन चोरसेनापति था, वहाँ पर आता है और आकर अभग्नसेन चोर सेनापति के साथ युद्ध करने लगता है। परन्तु अभग्नसेन चोर सेनापति ने उस दण्डनायक को शीघ्र ही हतमथित कर दिया अर्थात् दण्डनायक की सेना के छक्के छुड़ा दिये, वीरों का घात किया, ध्वजापताका को नष्ट कर दिया और दण्डनायक का भी मानमर्दन कर दिया। उसे घायल कर पीट डाला। उसके साथियों को इधर–उधर भगा दिया।

DEFEAT OF THE POLICE CHIEF

24. Then that police chief came where bandit-chief Abhagnasen was waiting and engaged him in a battle. But soon bandit-chief Abhagnasen defeated the police chief, in other words the army lead by the police chief was trounced, its warriors were killed and its flag was destroyed. The police chief was subdued, wounded and beaten up and his company was made to run helter-skelter.

२५. तए णं से दंडे अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा हय. जाव पडिसेहिए समाणे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महाबले राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल–जाव एवं वयासी–'एवं खलु, सामी ! अभग्गसेणे चोरसेणावई विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणिए। नो खलु से सक्का केणइ सुबहुएणा वि आसबलेण वा हत्थिबलेण वा रहबलेण वा चाउरंगेण वि उरं उरेणं गिण्हित्तए।'

ताहे (महबले राया) सामेण य भेएण य उवप्पयायेण य विस्संभमाणेउं पयत्ते यावि होत्था। जे वि से अब्भिंतरगा सीसगभमा, मित्त–नाइ–नियग, सयण–संबंधि–परियणं तेवि य च विउलेण, धण–कणग–रयण–संतसार–सावएज्जेणं भिंदइ, अभग्गसेणस्स य चोरसेणावइस्स अभिक्खणं अभिक्खणं महत्थाइं महग्घाइं महरिहाइं रायरिहाइं पाहुडाइं पेसेइ, अभग्गसेणं चोरसेणावइं वीसंभमाणेइ।

२५. इस प्रकार वह दण्डनायक अभग्नसेन चोरसेनापति के द्वारा घायल कर भगा दिये जाने पर **अकाम**–मनोबल से हीन हो गया, **अबल**–शरीर से शिथिल हो गया, **अवीर्य**–आत्मबल या साहस टूट गया, **अपुरिसक्कार पराक्रम**–मैं वीर हूँ ऐसा स्वाभिमान भी खत्म हो गया और उसमें दुबारा शस्त्र उठाने की हिम्मत नहीं रही। तब उसे परास्त करना अशक्य मानकर पुरिमताल नगर में महाबल नरेश के पास लौट आया एवं दोनों हाथ जोड़कर नम्रतापूर्वक इस प्रकार कहने लगा–

"हे स्वामी ! चोरसेनापति अभग्नसेन ऊँचे, नीचे और विषम गहन वन में पर्याप्त खाद्य–पेय सामग्री का संग्रह करके बैठा है। अतः बहुत से अश्वबल, गजबल, योद्धाबल और रथबल, कहाँ तक कहूँ–चतुरंगिणी सेना के बल से भी वह जीते जी पकड़ा नहीं जा सकता है !"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दण्डनायक द्वारा ऐसा कहने पर महाबल राजा सामनीति, भेदनीति व उपप्रदान नीति–देने–लेने की नीति से उसे विश्वास में लाने के लिए प्रयत्नशील हुआ। इसलिए वह उसके (चोरसेनापति के) **सीसगभमा–** शिष्यभ्रम–शिष्य के समान सदा समीप में रहने वाले पुरुषों को, अथवा जिन अंगरक्षकों को वह रक्षा कवच के समान अत्यन्त विश्वस्त समझता था, उनको, तथा उसके मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन सम्बन्धी परिजनों को धन, सोना, रत्न और उत्तम सारभूत बहुत–सी मूल्यवान वस्तुओं के द्वारा लुभाकर तथा रुपयों पैसों का लोभ देकर उसके बीच भेद डालकर चोरसेनापति से जुदा करने का प्रयत्न करता है और अभग्नसेन चोरसेनापति को भी बार–बार बड़ा कार्य सिद्ध करने वाला; विशेष मूल्य वाला, बड़े लोगों को देने योग्य, यहाँ तक कि राजा को उपहार देने योग्य सुन्दर भेंटे भेजने लगा। इस तरह विविध उपहार भेजकर अभग्नसेन चोरसेनापति को अपने विश्वास में ले लेता है।

25. On being wounded and made to retreat by bandit-chief Abhagnasen, that police chief lost his confidence (*akaam*), he became physically weak (*abal*), he lost his courage (*avirya*), his pride that he was brave shattered and he was drained of the energy of even lifting his weapons. Thinking that it was impossible to defeat the bandit-chief, he returned to king Mahabal in Purimtal City and joining his palms submitted humbly—

"O Lord ! Bandit-chief Abhagnasen camps in a dense forest in a difficult terrain with complex fortification and abundance of food and water. Therefore, he cannot be captured alive by an army of horse riders or elephant riders or charioteers or foot soldiers, not even by all these four combined."

On getting this report from the police chief, king Mahabal started working on apprehending the bandit-chief by taking him into confidence through negotiations, diplomacy, and enticement. With this intent he started working on inspiring dissention among the personal companions, guards and followers as well as the friends, kinfolk, relatives, and family members of the bandit-chief by generously distributing cash, gold, gems and other valuables. He also started sending beautiful, impressive and valuable gifts suited for people of high status including kings. By sending a variety of such gifts he was able to take bandit-chief Abhagnasen in his confidence.

महाबल राजा की कूटनीतिक चाल

२६. तए णं से महाबले राया अन्नया कयाइ पुरिमताले नयरे एगं महं महइमहालयं कूडागारसालं करेइ; अणेग–खंभसयसन्निविट्ठं पासाईयं। तए णं से महाबले राया अन्नया कयाइ पुरिमताले नयरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उस्सुक्कं जाव दसरत्तं पमोयं उग्घोसावेइ, अग्घोसावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! सालाडवीए चोरपल्लीए। तत्थ णं तुब्भे अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयल जाव एवं वयह–

२६. इसके कुछ समय बाद महाबल राजा ने पुरिमताल नगर में एक बहुत सुन्दर सैकड़ों खम्भों वाली व अत्यन्त विशाल कूटाकारशाला बनवायी। जिसे देखते ही मन में हर्ष व उत्सुकता उत्पन्न हो जाती। उसके बाद महाबल नरेश ने किसी समय उस षड्यन्त्र के लिए बनवाई कूटाकारशाला के निमित्त **उच्छुल्क**–(जिसमें किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाय ऐसी टैक्स फ्री) ऐसे निःशुल्क दश दिन के **प्रमोद उत्सव** की उद्घोषणा कराई। कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर कहा कि–हे भद्रपुरुषों ! तुम शालाटवी चोरपल्ली में जाओ और वहा अभग्नसेन चोरसेनापति से दोनों हाथ जोड़कर इस प्रकार निवेदन करो–

KING MAHABALS TREACHERY

26. Some time later king Mahabal got a beautiful and huge *Kootakarashala* (a camouflaged house), with hundreds of pillars, constructed. It was very attractive and pleasing to look at. After that he announced a ten-day fete, free of any admission fees, in that Kootakarashala specially designed for intrigues. He then called his servants and instructed—Gentlemen ! Go to Shalatavi hideout and with joined palms convey this to bandit-chief Abhagnasen—

२७. एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महाबलस्स रन्नो उस्सुक्के जाव दसरत्ते पमोए उग्घोसिए। तं किं णं, देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फवत्थमल्लालंकारे य इह हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था ?

२७. "देवानुप्रिय ! पुरिमताल नगर में महाबल नरेश ने शुल्करहित आदि अनेक सुविधाओं वाला दश दिन पर्यन्त चलने वाला प्रमोद–उत्सव की घोषणा कराई है, तो क्या आपके लिए अशन, पान आदि तथा पुष्प, वस्त्र, माला अलंकार वगैरह यहीं पर लाकर उपस्थित करें अथवा आप स्वयं वहां इस प्रसंग पर उपस्थित होंगे ?"

27. "Beloved of gods ! King Mahabal has announced a ten-day fete with many facilities and free of any admission fees in Purimtal City. Should we bring here for you the festive food and drinks as also flowers, dresses, garlands, ornaments and other gifts or would you be kind enough to present yourself there on this occasion ?"

विवेचन–कूटाकारशाला का अर्थ है पर्वत की चोटी पर बना ऐसा भवन, जिसमें आने–जाने का एक ही मार्ग हो, जो चारों ओर से बन्द हो और जिसका शिखर गुम्बजनुमा बना हो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टीकाकार अभयदेवसूरि न उस्सुक्कं जाव, शब्द के साथ एक प्राचीन पाठ उद्धृत किया है जिसमें इस उत्सव (मेले) से सम्बन्धित १२ विशेष नियम बताये गये हैं। यह सुविधाएँ मेले को लोकप्रिय बनाने के लिए दी जाती है। प्राचीन भारत की उत्सव प्रिय संस्कृति और व्यवस्था प्रबन्धन का एक सुन्दर उदाहरण भी मिलता है। पाठकों की जानकारी हेतु उनका विशेष भाव यहाँ प्रस्तुत है।

(१) **उच्छुल्क**—जिस उत्सव में आई हुई किसी भी वस्तु पर राजकीय शुल्क–महसूल नहीं लिया जाता, उसे उच्छुल्क कहते हैं।

(२) **उत्कर**—जिस उत्सव में दुकानों के लिए ली गई जमीन का कर–भाड़ा तथा क्रय–विक्रय के लिए लाये गये गाय आदि पशुओं का कर–महसूल न लिया जाये, उसे उत्कर कहते हैं।

(३) **अभटप्रवेश**—जिस उत्सव में राजपुरुषों द्वारा किसी की भी तलाशी नहीं ली जा सकती और न ही वे किसी घर में प्रवेश कर सकते हैं।

(४) **अदण्डिम–कुदण्डिम**—न्यायानुसार दी जाने वाली सजा दण्ड कही जाती है और न्यूनाधिक सजा को कुदण्ड कहते हैं, उस दण्ड–कुदण्ड व्यवस्था का जिस उत्सव में अभाव हो।

(५) **अधरिम**—जिस उत्सव में किसी को कोई अपने पुराने ऋण के कारण कर्जदार को पीड़ित नहीं कर सकता है।

(६) **अधारणीय**—जिस उत्सव में दुकान आदि लगाने के लिए राजा की ओर से वापस नहीं लौटाई जाने वाली आर्थिक सहायता (सब्सिडी) दी जाय।

(७) **अनुद्धृत मृदंग**—जिसमें मृदंग बजाने वालों ने बजाने के लिए मृदंग ग्रहण रखें हों, तबलों को बजाने के लिए ठीक ढंग से ऊँचा कर लिया हो। अर्थात् मृदंग व तबला निरनार बजते हों।

(८) **अम्लान माल्यदाम**—जिसमें खिले हुए पुष्प एवं पुष्पमालाओं की सुव्यवस्था हो।

(९) **गणिका नाटकीय कलित**—जिस उत्सव में (मनोरंजन के लिए) नगर की प्रमुख गणिका और अच्छे नाटक करने वाले सम्मिलित हों।

(१०) **अनेक तालाचरानुचरित**—जिस उत्सव में ताल बजाकर नाचने वाले अपना कौशल दिखाते हों।

(११) **प्रमुदित प्रक्रीडिताभिराम**—जो उत्सव तमाशा दिखाने वालों तथा खेल दिखाने वालों से मनोहारी लगते हों।

(१२) **यथार्ह**—जिस उत्सव में सर्वप्रकार से योग्य व्यवस्थाएँ हों, तात्पर्य यह कि वह उत्सव अपने आपमें आदर्श एवं बेमिसाल हो। *(आचार्यश्री आत्माराम जी म. कृत हिन्दी टीका, पृ. २६१–६२)*

Elaboration—*Kootakarashala* (a camouflaged house) is a mansion built on a hilltop. It is closed from all sides and has just a single passage for entry and exit. It has a dome like top.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Abhayadev Suri, the commentator (*Tika*), has quoted an ancient verse in context of the term *'utsukkam java'*. This verse details twelve special conditions related to this fete or festival. These facilities were provided to make the fete popular. It provides a perfect example of the festivity loving ancient Indian culture as well as its management system. These conditions are given here in brief for the benefit of our readers:

(1) **Uchchhulk**—festival where no state tax, levy, or fees is charged on anything.

(2) **Utkar**—festival where no tax or rent is charged on the land taken for shops and stalls. Also where no tax is levied on the cattle brought for sale.

(3) **Abhat pravesh**—festival where state officers are not allowed to search or frisk anyone or enter any premises.

(4) **Adandim-kudandim**—festival that is free of any punitive measures. Dand is punishment awarded exactly according to the law. Kudand is less or more than the legally specified punishment.

(5) **Adharim**—festival where no one can be pressurized or forced for some old dues.

(6) **Adharaniya**—festival where a king provides establishment subsidy for stalls and other such things.

(7) **Anudhrit mridang**—festival where *mridang, tabla* and other musical instruments are carried and placed properly and played continuously.

(8) **Amlaan maalyadaam**—festival where there is proper and elaborate arrangement and decoration of blooming flowers and garlands.

(9) **Ganika natakiya kalit**—festival where prominent courtesans and theatre artists give regular performances for entertainment.

(10) **Anek taalacharanucharit**—festival where many dancers give dance performances on drum beats.

(11) **Pramudit prakeeditabhiram**—festival where acrobats and other performers draw crowds.

(12) **Yatharha**—festival that has all facilities and is well managed. In other words, an ideal and unique festival. *(Tika by Acharya Shri Atmaram ji M., pp. 261-62)*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८. तए णं ते कोडुम्बियपुरिसा महाबलस्स रण्णो करयल. जाव 'एवं सामि त्ति' आणाए वयणं पडिसुणेति पडिसुणेत्ता, पुरिमतालाओ नयराओ पडिणिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता नाइविकिट्ठेहिं अद्धाणेहिं सुहेहिं वसहिपायरासेहिं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयल जाव एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महाबलस्स रण्णो उस्सुक्के जाव उदाहु सयमेव गच्छित्था ?'

तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी–'अहं णं देवाणुप्पिया ! पुरिमतालनयरं सयमेव गच्छामि।' ते कोडुंबियपुरिसे सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ !

२८. तदनन्तर कौटुम्बिक पुरुषों ने महाबल नरेश की आज्ञा को दोनों हाथ जोड़कर 'ऐसा ही होगा' कहकर विनयपूर्वक स्वीकार किया और पुरिमताल नगर से बाहर निकल आये। छोटी–छोटी यात्राएँ करते हुए, तथा सुखजनक विश्राम स्थानों पर प्रातःकालीन नाश्ता भोजन आदि करते हुए जहाँ शालाटवी चोरपल्ली थी वहाँ पहुँचे। वहाँ पर अभग्नसेन चोरसेनापति से दोनों हाथ जोड़कर मस्तक पर अजुंलि करके इस प्रकार निवेदन करने लगे–

'देवानुप्रिय ! महाबल नरेश ने पुरिमताल नगर में शुल्क आदि से मुक्त दस दिनों का प्रमोद–उत्सव घोषित किया है, तो क्या आपके लिए अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्पमाला अलंकार आदि यहाँ पर ही लाये जायँ अथवा आप स्वयं वहाँ चलने की कृपा करेंगे ?

तब अभग्नसेन सेनापति ने कौटुम्बिक पुरुषों से इस प्रकार–'हे भद्र पुरुषों ! मैं स्वयं ही प्रमोद–उत्सव हेतु पुरिमताल नगर में आऊँगा।' तथा अभग्नसेन ने उनका उचित सत्कार–सम्मान करके विदा कर दिया।

28. Joining their palms, the servants humbly accepted king Mahabal's order uttering—"As you say, sire !" They came out of Purimtal City and came to Shalatavi hideout in short jaunts taking breakfasts and meals at comfortable resting-places. On reaching there, raising their joined palms to their heads they submitted before bandit-chief Abhagnasen—

"Beloved of gods ! King Mahabal has announced a ten-day fete with many facilities and free of any admission fees in Purimtal City. Should we bring here for you the festive food and drinks as also flowers, dresses, garlands, ornaments and other gifts or would you be kind enough to grace the occasion ?"

Bandit-chief Abhagnasen replied—"Gentlemen ! I will certainly come to Purimtal City for this fete." And he dismissed them with due honour and greetings.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्त जाव परिवुडे ण्हाए जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सालाडवीओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ। पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महाबले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, करयल. महाबलं रायं जएणं विजएणं बद्धावेइ, बद्धावेत्ता महत्थं जाव पाहुडं उवणेइ।

तए णं से महाबले राया, अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तं महत्थं जाव पडिच्छइ, अभग्गसेणं चोरसेणावइं सक्कारेइ, सम्माणेइ, पडिविसज्जेइ, कूडागारसालं च से आवसहं दलयइ। तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई महाबलेणं रण्णा विसज्जिए समाणे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ।

२९. तदनन्तर वह अभग्नसेन चोरसेनापति स्नानादि से निवृत्त हो मस्तक पर तिलक आदि मांगलिक अनुष्ठान करके विविध आभूषणों से अलंकृत हो, मित्र, ज्ञाति व स्वजन परिजनों को साथ लिए शालाटवी चोरपल्ली से निकलकर जहाँ पुरिमताल नगर था, जहाँ महाबल नरेश थे, वहाँ पर आया। आकर दोनों हाथ जोड़कर मस्तक पर अंजलि करके महाबल राजा को 'जय-विजय' शब्द से बधाई दी। बधाई देकर राजा के योग्य बहुमूल्य उपहार भेंट किये। महाबल राजा उस अभग्नसेन चोरसेनापति द्वारा भेंट किये गये उपहारों को स्वीकार करके उसे सत्कार सम्मानपूर्वक अपने पास से विदा करता है और कूटाकारशाला में उसे रहने के लिए स्थान देता है। अभग्नसेन चोरसेनापति महाबल राजा के द्वारा सत्कारपूर्वक विसर्जित होकर कूटाकारशाला में आकर ठहरता है।

29. Then that bandit-chief Abhagnasen got ready after his bath, performing auspicious rites including putting mark on his forehead, and embellishing himself with a variety of ornaments. He came out of the Shalatavi hideout along with his friends, kinfolk, relatives and family members and came to king Mahabal in Purimtal City. On arriving there, raising his joined palms to his head he greeted king Mahabal with hails of victory and presented rich gifts. King Mahabal accepted bandit-chief Abhagnasen's gifts and bid him farewell with honour and greetings and with a request to stay at the *Kootakarshala*. After this, bandit-chief Abhagnasen went and stayed in the *Kootakarshala*.

३०. तए णं से महाबले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी 'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं-४, सुरं च-५. सुबहुं पुप्फवत्थ-गंध-मल्लालंकारं च अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स कूडागारसालं उवणेह।

तए णं से कोडुंबियपुरिसा करयल जाव उवणेंति।

तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्तनाइ. सद्धिं संपरिवुडे ण्हाए जाव सव्वालंकारविभूसिए तं विउलं असणं-४ सुरं च ५, आसाएमाणे पमत्ते विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०. इसके बाद महाबल राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर कहा-तुम लोग विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम पुष्प, वस्त्र, गंधमाला अलंकार एवं पांचों प्रकार की सुरा आदि मदिराओं को तैयार कराओ और उन्हें कूटाकारशाला में चोरसेनापति अभग्नसेन की सेवा में पहुँचा दो।

कौटुम्बिक पुरुषों ने राजा की आज्ञा के अनुसार विपुल अशनादिक सामग्री वहाँ पहुँचा दी।

तदनन्तर अभग्नसेन चोरसेनापति स्नानादि से निवृत्त हो, समस्त आभूषणों को पहनकर अपने बहुत से मित्रों व ज्ञाति जनों आदि के साथ मिलकर उस विपुल अशनादिक तथा पंचविध मदिराओं का बार-बार सेवन करता हुआ प्रमत्त होकर रहने लगा।

30. Then king Mahabal called his servants and said—Get large quantities of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savory food), flowers, dresses, fragrant garlands, and ornaments; and five kinds of wines ready and take these to *Kootakarashala* for bandit-chief Abhagnasen.

According to the king's order the servants took all these things there.

Then that bandit-chief Abhagnasen took his bath embellished himself with all his ornaments and along with his friends, kinfolk, etc. started enjoying that abundant food and five kinds of wines again and again. Thus he spent his time getting intoxicated on them.

३१. तए णं से महाबले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेह, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हह, गिण्हित्ता ममं उवणेह।'

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल जाव पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेंति, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हंति, महाबलस्स रण्णो उवणेंति। तए णं से महाबले राया अभग्गसेणं चोरसेणावइं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

एवं खलु गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरापोराणाणं जाव विहरइ।

३१. (इस प्रकार अभग्नसेन चोरसेनापति को विश्वास में लेकर कूटाकारशाला में ठहराने और भोजन कराने तथा मदिरा आदि पिलाने के पश्चात्) महाबल राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर कहा-'हे देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और जाकर पुरिमताल नगर के सब दरवाजों को बन्द कर दो और अभग्नसेन चोरसेनापति को जीवित अवस्था में ही पकड़ लो और पकड़कर मेरे सामने उपस्थित करो !'

तब उन कौटुम्बिक पुरुषों ने राजा की यह आज्ञा हाथ जोड़कर शिरोधार्य की और पुरिमतालनगर के द्वारों को बन्द करके अभग्नसेन चोरसेनापति को राजा के सम्मुख उपस्थित किया। महाराजा ने इस विधि से-(हे गौतम, जैसा तुम देखकर आये हो) वध करने की आज्ञा प्रदान कर दी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण भगवान महावीर कहते हैं–हे गौतम ! इस प्रकार वह अभग्नसेन चोरसेनापति पहले किये हुए पापकर्मों के नरक तुल्य विपाकोदय के रूप में घोर वेदना एवं पीड़ा का अनुभव कर रहा है।

31. (After winning bandit-chief Abhagnasen's confidence, making him stay in *Kootakarashala* and offering him food and wines) King Mahabal called his servants and said "Beloved of gods ! You all go and close all gates of Purimtal City. Then capture bandit-chief Abhagnasen alive and present him before me."

The servants joined their palms and accepted the king's order. They captured bandit-chief Abhagnasen alive and brought him to king Mahabal. On getting bandit-chief Abhagnasen captured thus as an offender, King Mahabal ordered him to the gallows (as you witnessed).

Shraman Bhagavan Mahavir added—"Gautam ! In this way that bandit-chief Abhagnasen is suffering extreme pain and agony, like that in the hell, due to the fruition of demeritorious *karmas* acquired as a consequence of sinful deeds committed in the past.

अभग्नसेन का भविष्य

३२. अभग्गसेणे णं भंते ! चोरसेणावई कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

'गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई सत्ततीसं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।'

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता, एवं संसारो जहा पढमे जाव वाउ–तेउ–आउ–पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइस्सइ !

तओ उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए सूयरत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ सूयरिएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे–'एवं जहा पढमे, जाव अंतं काहिइ।'

॥ तइयं अज्झयणं समत्तं ॥

३२. गौतम स्वामी ने प्रश्न किया–भगवन् ! वह अभग्नसेन चोरसेनापति मृत्यु को प्राप्त करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान ने उत्तर दिया–हे 'गौतम ! अभग्नसेन चोरसेनापति ३७ वर्ष की परम आयुष्य को भोगकर आज ही दिनके तीसरे प्रहर–अपरान्ह काल में सूली पर चढ़ाये जाने से मृत्यु को प्राप्त होकर रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक में नारकी रूप से उत्पन्न होगा। वहाँ उसकी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम की होगी। फिर प्रथम नरक से निकलकर प्रथम अध्ययन में प्रतिपादित मृगापुत्र के संसारभ्रमण की तरह यह भी भव भ्रमण करता रहेगा। पृथ्वीकाय, अप्काय, वायुकाय, तेजस्काय आदि में लाखों बार उत्पन्न होगा।

वहाँ से निकलकर वाराणसी नगरी में शूकर के रूप में उत्पन्न होगा। वहाँ शिकारियों द्वारा उसका वध कर दिया जायेगा। तत्पश्चात् उसी वाराणसी नगरी के श्रेष्ठिकुल में पुत्र रूप से उत्पन्न होगा। वहाँ युवावस्था को प्राप्त होने पर प्रव्रजित होकर, संयमपालन करके, समस्त कर्मों का क्षय करके निर्वाण पद प्राप्त करेगा–जन्म–मरण का अन्त करेगा।

॥ तृतीय अध्ययन समाप्त ॥

FUTURE OF ABHAGNASEN

32. Gautam Swami asked—"*Bhagavan* ! Where will that bandit-chief Abhagnasen go after death ? Where will he be born ?"

Bhagavan replied—"Gautam ! After completing his life span of thirty-seven years this bandit-chief Abhagnasen will die in the gallows this afternoon and will reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha. His maximum life span there will be one *Sagaropam.* Getting out from the first hell he will continue to go around in cycles of rebirth like Mrigaputra, as mentioned in the first chapter... and so on up to... will be born millions of times as earth-bodied, water bodied, air-bodied, and fire-bodied beings.

Coming out from there he will be born as a boar in Varanasi City. After being killed by hunters he will reincarnate as a son in a merchant family of the same city. On crossing adolescence and attaining youth he will get initiated as an ascetic... and so on up to... he will shed all his *karmas*, attain nirvana and end the cycles of death and rebirth.

● END OF THE THIRD CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम श्रुतस्कन्ध : चतुर्थ अध्ययन
शकट (माँसाहारी, दुराचारी चण्डाल पुत्र)

उपोद्घात

यह कथा पशु-वध एवं माँसभक्षण जैसे दुष्कर्मों के पीड़ादायक कटु फलों का जीवन्त वर्णन प्रस्तुत करती है। यद्यपि छन्निक एक कसाई था, उसे पशुवध व माँसाहार में आनन्द प्राप्त होता था। वह व्यभिचार व चरित्रहीनता में भी रत था। इस सब का कटु फल उसे कई जन्मों तक भोगना पड़ा।

FIRST SHRUTSKANDH : FOURTH CHAPTER
SHAKAT (the non-vegetarian and debauch son of a *chandal*)

INTRODUCTION

This story lucidly details the agonising consequences of cruelty to animals and non-vegetarianism. Although a butcher by profession, Chhannik enjoys killing animals and eating meat. He also indulges in lascivious activities and adultery. He gravely suffers the consequences for many births.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थ अध्ययन
FOURTH CHAPTER

जम्बूस्वामी की जिज्ञासा

१. चउत्थस्स उक्खेवो। जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

तओ णं सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी–

१. चौथे अध्ययन की प्रस्तावना। जम्बूस्वामी ने प्रश्न किया–भन्ते ! निर्वाण को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने यदि तीसरे अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो चौथे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है?

तब सुधर्मा स्वामी ने से इस प्रकार कहा–

CURIOSITY OF JAMBU SWAMI

1. The foreword of the third chapter should be read as before. Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the aforesaid text and meaning of the third chapter, then what is the text and meaning of the fourth chapter as preached by him ?"

Sudharma Swami replied—

साहंजनी नगरी

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साहंजणी णामं नयरी होत्था। रिद्धत्थिमियसमिद्धा। तीसे णं साहंजणीए बहिया उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए देवरमणे णामं उज्जाणे होत्था। तत्थ णं अमोहस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, पोराणे। तत्थ णं साहंजणीए नयरीए महचंदे णामं राया होत्था, महया.। तस्स णं महचंदस्स रण्णो सुसेणे णामं अमच्चे होत्था। साम–भेय–दंड–उपप्पयाणनीतिसुपउत्तनयविहण्णू निग्गह–कुसले।

तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुदरसिणा णामं गणिया होत्था। वण्णओ।

२. हे जम्बू ! उस काल उस समय में साहंजनी नाम की एक समृद्धिशाली भवनादि की शोभा से सम्पन्न, स्वचक्र–परचक्र के भय से रहित तथा धन–धान्यादि से परिपूर्ण नगरी थी। उसके बाहर ईशानकोण में देवरमण नाम का एक उद्यान था। उस उद्यान में अमोघनामक यक्ष का एक प्राचीन यक्षायतन था। उस साहंजनी नगरी में महचन्द्र नाम का राजा राज्य करता था। वह हिमालय के समान महान् था। उस महचन्द्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरेश का सुषेण नाम का मंत्री था, जो सामनीति, भेदनीति, दण्डनीति और उपप्रदाननीति के प्रयोग को और न्याय-नीतियों की विधि को भली प्रकार से जानने वाला तथा दुष्ट जनों का निग्रह करने में कुशल था।

उस नगर में सुदर्शना नाम की एक सुप्रसिद्ध गणिका रहती थी। उसका वर्णन (द्वितीय अध्ययन में वर्णित कामध्वजा के समान) जान लेना चाहिए।

SAAHANJANI CITY

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Saahanjani which was beautiful, prosperous in all respects, and well secured. In the northeastern direction (*Ishan Kone*) outside this town was a garden named Devaraman. In that Devaraman garden there was an ancient temple of Amogh Yaksh. In that Saahanjani city ruled King Mahachandra. He was as majestic as the Himalayas. That King named Mahachandra had a minister named Sushen, who was well versed in four prongs of politics, namely *saam* (incantation), *bhed*, (guile), *dand* (threat), and *upapradan* (*daam* or bribery) as well as implementation of law. He was proficient in controlling anti-social elements. In Saahanjani city lived a courtesan named Sudarshana. Her description (should be read as that of Kamadhvaja courtesan as mentioned in chapter two.)

३. तत्थ णं साहंजीणे नयरीए सुभद्दे णामं सत्थवाहे परिवसइ। अड्ढे। तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा णामं भारिया होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा। तस्स णं सुभद्दसत्थवाहस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सगडे णामं दारए होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे।

३. उस साहंजनी नगरी में सुभद्र नाम का एक सार्थवाह रहता था। सुभद्र सार्थवाह की भद्रा नामक भार्या थी जो पाँचों इन्द्रियों से परिपूर्ण सुन्दर थी। सुभद्र सार्थवाह का पुत्र व भद्रा भार्या का आत्मज शकट नाम का बालक था। वह भी पंचेन्द्रियों से परिपूर्ण-सुन्दर शरीर से सम्पन्न था।

3. In Saahanjani city lived a caravan chief (*sarthavaha*) named Subhadra. The name of Subhadra Sarthavaha's wife was Bhadraa. She was beautiful and perfect in every way. Subhadra Sarthavaha and Bhadraa had a son named Shakat who was also endowed with perfect and beautiful body.

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा राया य निग्गए। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया, राया वि णिग्गओ।

४. उस काल, उस समय साहंजनी नगरी के बाहर देवरमण उद्यान में श्रमण भगवान् महावीर पधारे। भगवान् के दर्शनार्थ जनता और राजा नगर उद्यान में आये। भगवान् मे धर्मदेशना दी। धर्मदेशना सुनकर राजा और जन समूह अपने-अपने स्थान पर चले गये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

4. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Devaraman garden outside Saahanjani city. People and the king came to pay homage. *Bhagavan* gave his discourse to all after which the king and the people returned home.

शकट के पूर्वभव का वृत्तान्त

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव रायमग्गमोगाढे। तत्थ णं हत्थी, आसे बहवे पुरिसे पासइ। तेसिं च पुरिसाणं मज्झगए पासइ एगं सइत्थीयं पुरिसं अवओडयबंधणं उक्खित्तकण्णनासं जाव घोसिज्जमाणं। चिंता तहेव जाव भगवं वागरेइ।

५. उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर के प्रधान अन्तेवासी श्री गौतम स्वामी (पूर्ववत् भिक्षा ग्रहण करके) लौटते हुए राजमार्ग में पधारे। वहाँ उन्होंने हाथी, घोड़े और बहुतेरे पुरुषों को एकत्र देखा। उन पुरुषों के बीच में अवकोटक बन्धन (जिस बन्धन में दोनों हाथों को पीछे मोड़कर बाँधा जाता है) से युक्त कान और नाक कटे हुए स्त्री के साथ बँधे एक पुरुष को देखा। (राजपुरुष उन दोनों को कोड़ों से पीट रहे थे, अनेक प्रकार की यातनाएँ देते हुए उद्घोषणा कर रहे थे। गौतम स्वामी ने उनको उद्घोषणा करते देखा, सुना।) तब यह देखकर, सुनकर गौतम स्वामी ने पूर्ववत् विचार किया (यह पुरुष साक्षात् नारकीय वेदना भुगत रहा है, आदि) और भगवान् से आकर प्रश्न किया। भगवान् ने उत्तर में इस प्रकार कहा–

PAST BIRTH OF SHAKAT

5. During that period of time, while returning after collecting alms in the city, Gautam Swami, the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, came to the main road. There he saw many elephants, horses and foot soldiers duly equipped with armours and weapons. Amongst them he saw a man, accompanied by a woman, with his ears and nose cut off, tied in the *avakotak* bond (bending the neck and tying it with hands already tied at the back). Announcement was being made about him. Gautam Swami was thoughtful (on hearing the announcement, seeing all this, and the person in pathetic condition). He came to Bhagavan Mahavir and asked about it. In reply *Bhagavan* said—

६. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे छगलपुरे नामं नयरे होत्था । तत्थ सीहगिरी नामं राया होत्था, महया. तत्थ णं छगलपुरे नयरे छण्णिए नामं छागलिए परिवसइ। अड्ढे अहिम्मए जाव दुप्पडियाणंदे।

६. हे गौतम ! उस काल उस समय में इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष में छगलपुर नाम का एक नगर था। वहाँ सिंहगिरि नामक राजा था। वह हिमालय पर्वत के समान महान् था। उस नगर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में छन्निक नामक एक छागलिक–बकरों का माँस बेचकर आजीविका करने वाला कसाई रहता था, जो धनाढ्य था, साथ ही बड़ा अधर्मी दुष्कर्मी, पाप कर्मों में ही आनन्द मानने वाला था।

6. Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Chhagalpur in Bharatvarsh area in Jambu continent. A king named Simhagiri was the ruler of that city. He was as majestic as the Himalayas. In that city lived a *chhagalik* (a butcher selling goat meat) named Chhannik who was rich, irreligious and evil, and he derived enjoyment in sinful deeds only.

हिंसाकर्मी छन्निक

७. तस्स णं छण्णियस्स छागलियस्स बहवे अयाण य एलयाण य रोज्झाण य वसभाण य ससयाण य पसयाण य सूयराण य सिंघाण य हरिणाण य मयूराण य महिसाण य सयबद्धाण य सहस्सबद्धाण य जूहाणि वाडगंसि संनिरुद्धाइं चिट्ठंति।

अन्ने ये तत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहवे अए य महिसे य सारक्खेमाणा चिट्ठंति।

अन्ने य से बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहवे अए य जाव महिसे य जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवित्ता मंसाइं कप्पणीकप्पियाइं करेंति, करेत्ता छण्णियस्स छागलियस्स उवणेंति।

अन्ने य से बहवे पुरिसा ताइं बहुयाइं अयमंसाइं जाव महिसमंसाइं तवएसु य कवल्लीसु य कंदुएसु य भज्जणेसु य इंगालेसु य तलेंति य भज्जेंति य सोल्लेंति य, तलित्ता भज्जित्ता सोल्लेत्ता य तओ रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति।

अप्पणा वि य णं से छण्णिए छागलिए तेहिं बहुविहेहिं अयमंसेहिं जाव महिसमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च आसाएमाणे विहरइ।

७. उस छण्णिक छागलिक के अनेक अजों–बकरों, रोझों–नीलगायों, वृषभों–बैलों, शशकों–खरगोशों, मृग शिशुओं, शूकरों, सिंहों, हरिणों, मयूरों और महिषों के शतबद्ध तथा सहस्रबद्ध अर्थात् सौ–सौ तथा हजार–हजार पशु जिनमें बँधे रहते थे जैसे वाटक–यूथ बाड़े थे, उनमें पशुओं को रोककर रखा जाता था। वहाँ उसके अनेक आदमी जिनको वेतन के रूप में भोजन तथा रुपया पैसा दिया जाता था, वे उन बकरे व भैंसों आदि पशुओं का संरक्षण–संगोपन करते हुए उनकी रखवाली करते थे।

छण्णिक छागलिक के वे काम लेकर काम करने वाले अनेक नौकर सैकड़ों, तथा हजारों बकरा तथा भैंसों आदि को मारकर उनके माँसों को कैंची तथा छुरी से काट–काट कर छण्णिक छागलिक को दिया करते थे।

उसके अन्य अनेक नौकर पुरुष उन बहुत से बकरों आदि के माँसों को तवों पर, कड़ाहों में, हांडों में अथवा कड़ाहियों या लोहे के पात्रों में, भूनने के पात्रों में, अंगारों पर तलते, भूनते और शूल द्वारा पकाते हुए अपनी आजीविका चलाते थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-६

Illustration No. 6

छन्निक हिंसाकर्मी

दृश्य–१ (नीचे दाहिने)

एक समय भगवान शोभांजनी नगरी में पधारे। गणधर गौतम ने भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए नगर के चौराहे पर एक अपराधी पुरुष व स्त्री को कठोर बंधनों में बँधे देखा। उनके नाक–कान कटे हैं। जगह–जगह माँस कटा हुआ है। जिस पर राजपुरुष खोलता क्षार युक्त गर्म पानी डालते हैं और चाबुकों से पीटते हैं।

दृश्य–२ (ऊपर)

भगवान उसका पूर्व भव बताते हैं–छगलपुर में छन्निक नामक कसाई था। वह गाय–बैल–भैंस–भेड़–बकरियों आदि पशु–पक्षियों को पकड़कर बाड़ों व पिंजरों में बंद रखता था। उनकी हिंसा करके माँस। शराब बेचता था। घोर हिंसा कर्म करके नरक में गया।

दृश्य–३ (नीचे बायें)

नरक में छन्निक के जीव को घोर पीड़ा व यातना भुगतनी पड़ी। छन्निक कसाई का जीव क्रमशः यहाँ सार्थवाह का पुत्र वह बना। शकट मद्य–माँस का सेवन करता हुआ नगर की वेश्या के साथ आसक्त हो गया। भगवान कहते हैं–गौतम ! वही शकट उस वेश्या के साथ यहाँ बँधा है।

–श्रुतस्कन्ध १, अ. ४, सूत्र ५–१२

CHHANNIK BUTCHER

SCENE-1 (BOTTOM RIGHT)

Once *Bhagavan* came to Shobhanjani city. While collecting alms Gautam Swami saw shackled male and female criminals. There noses and earlobes are severed and bodies are wounded at many places. Guards are thrashing them and pouring boiling water on their bodies.

SCENE-2 (TOP)

Bhagavan tells about his past birth—In Chhagalpur lived a butcher named Chhannik. He caught and kept cows, oxen, buffaloes, sheep, goats, and other animals and birds in cages and yards. He butchered them and sold meat and wine. These sinful activities lead to his birth in hell.

SCENE-3 (BOTTOM LEFT)

In hell Chhannik suffers excruciating torture. The soul that was Chhannik has taken birth as Shakat, the son of a caravan chief. He habitually consumed meat and wine. He got infatuated with a courtesan. *Bhagavan* said—Gautam ! It is that Shakat and the courtesan who are shackled here.

—Sec. I, Ch. 4, Sutra : 5-12

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वह छण्णिक स्वयं भी उन अनेक प्रकार के माँसों के साथ सुरा आदि पाँच प्रकार के मद्यों का आस्वादन आदि करता हुआ वह जीवन बिताता था।

CHHANNIK IN OCCUPATION OF VIOLENCE

7. That Chhanik Chhagalik had many cattle-corrals which could accommodate hundreds and thousands of animals like goats, sheep, *Rojhas* (*Neelagaya* or black-buck), bulls, hares, young deer, pigs, lions, deer, peacocks and buffaloes. Such animals were stocked there. Numerous men were employed there on wages and food. They used to look after and protect these animals including goats... and so on up to... buffaloes.

Those numerous men, employed on wages and food, used to butcher thousands of these animals including goats... and so on up to... buffaloes, cut and chop their meat with knives and shears, and give it to Chhanik Chhagalik.

His many other servants earned their living by frying, baking, and roasting meat of those goats and other animals on metal and earthen plates, pans, and a variety of other cooking pots as well as with sticks on burning charcoal.

That Chhanik too spent his life enjoying aforesaid dishes of meat of goats (etc.) with five kinds of wine.

८. तए णं से छण्णिए छागलिए एयकम्मे, एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता सत्तवाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पुढवीए उक्कोसेणं दससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

८. उस छण्णिक छागलिक ने अजादि पशुओं के माँसों को बेचना एवं खाना तथा मदिराओं का पीना अपना नित्य कर्तव्य बना लिया था। इन्हीं पापपूर्ण प्रवृत्तियों में वह सदा संलग्न रहता था। वही प्रवृत्तियाँ उसके जीवन का विज्ञान बन गई थी और ऐसे ही पापपूर्ण कर्मों को उसने अपना सर्वोत्तम आचरण मान रखा था। अतएव वह क्लेशजनक और कलुषपूर्ण अत्यधिक पाप कर्मों का उपार्जन कर सात सौ वर्ष की पूर्ण आयु पालकर मृत्यु आने पर काल करके चतुर्थ नरक में, उत्कृष्ट दस सागरोपम की स्थिति वाले नारकियों में नारक रूप में उत्पन्न हुआ।

8. Chhanik Chhagalik had made it his daily duty to sell and eat meat of goats (etc.) and drink five kinds of wine. He was ever involved in these sinful activities. These activities had become his way and ideal of life and he had accepted all these sinful activities to be the best of conduct. As a consequence he acquired extremely malevolent and pain causing *karmas* in

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

abundance. After completing his life-span of seven hundred years, he died and reincarnated as an infernal being in the fourth hell where the maximum life span is ten *Sagaropam*.

शकट का वर्तमान भव

९. तए णं तस्स सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा भारिया जायनिंदुया यावि होत्था। जाया जाया दारगा विणिहायमावज्जंति। तए णं से छण्णिए छागलिए चउत्थीए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव साहंजणीए सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया। तए णं तं दारगं अम्मापियरो जायमेत्तं चेव सगडस्स हेट्ठाओ ठावेंति। दोच्चं पि गिण्हावेंति, अणुपुव्वेणं सारक्खेंति, संगोवेंति, संवड्ढेंति, जहा उज्झियए, जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्ते चेव सगडस्स हेट्ठा ठाविए, तम्हा णं होउ णं अम्हं एस दारए 'सगडे नामेणं। सेसं जहा उज्झियए।

सुभद्दे लवणसमुद्दे कालगए, माया वि कालगया। से वि सयाओ गिहाओ निच्छूढे। तए णं से सगडे दारए सयाओ गिहाओ निच्छूढे समाणे सिंघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था।

९. उस सुभद्र सार्थवाह की भद्रा नाम की भार्या जातनिन्दुका-(जिसके बच्च जन्म लेते ही मर जाते हों) थी। उसके बालक उत्पन्न होते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते छ। इधर छण्णिक नामक छागलिक-का जीव चतुर्थनरक से निकलकर सीधा इसी साहंजनी नगरी में सुभद्र सार्थवाह की भद्रा नाम की भार्या के गर्भ में पुत्ररूप में उत्पन्न हुआ।

लगभग नवमास परिपूर्ण हो जाने पर किसी समय भद्रा भार्या ने बालक को जन्म दिया। उत्पन्न होते ही माता-पिता ने उस बालक को शकट-छकड़े (गाड़े) के नीचे स्थापित कर दिया-रख दिया और फिर उठा लिया। उठाकर यथाविधि संरक्षण, संगोपन व संवर्द्धन किया।

[गाड़े के नीचे रखने का उद्देश्य यह हो सकता है, चूँकि उसकी सन्तान जीवित नहीं रहती थी। इसलिए उसने पुत्र को जन्म लेते ही गाड़े के नीचे रख दिया। इस प्रकार उसका पालन किया।-आचार्य श्री आत्मारामजी कृत टीका, पृ. २१६]

यथासमय उसके माता-पिता ने कहा-''उत्पन्न होते ही हमारा यह बालक छकड़े के नीचे स्थापित किया गया था, अतः इसका नामकरण 'शकट' किया है व यों उसका नाम शकट रख दिया। शकट का शेष जीवन उज्झित की ही तरह समझ लेना चाहिए।

इधर सुभद्र सार्थवाह (समुद्र यात्रा करती हुआ) लवण समुद्र में कालधर्म को प्राप्त हुआ और शकट की माता भद्रा भी शोक मग्न मृत्यु को प्राप्त हो गयी। तब शकट को राजपुरुषों के द्वारा घर से निकाल दिया गया। (लेनदारों को धन चुकाने के लिए राजपुरुषों ने उसका घर व सब सम्पत्ति नीलाम कर दी। शकट अनाथ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवस्था में असहाय घर से निकल गया) अपने घर से निकाले जाने पर शकट साहंजनी नगरी के शृंगाटक आदि स्थानों में भटकता रहा तथा जुआरियों के अड्डों (तथा शराबघरों में घूमने लगा।) किसी समय उसकी सुदर्शना गणिका के साथ प्रगाढ प्रीति हो गयी। (जैसी उज्झित की कामध्वजा के साथ हो गयी थी।)

THIS BIRTH OF SHAKAT

9. Bhadraa, the wife of Subhadra Sarthavaha was a *jatunandika* (a woman whose offspring die at birth). On leaving the fourth hell, the soul of that Chhanik Chhagalik was conceived as a son in the womb of Bhadraa, the wife of Subhadra Sarthavaha in Saahanjani city.

In due course, on completion of nine months, Bhadraa Sarthavahi gave birth to a son. Immediately after his birth the parents placed the child under a *shakat* (bullock cart) and then lifted it back. After that they fed, protected and gradually brought up the child.

[As her offspring did not survive, she placed her newborn son under a cart.—*Tika* by Acharya Shri Atmaram ji M. , p. 216]

In due course the parents named the child—"When this son of ours was born he was placed under a cart (*shakat*). As such, he should be popularly known by the name 'Shakat'." Rest of the story should be read as that of Ujjhitak.

Subhadra Sarthavaha met his death during a sea voyage in the Lavan Samudra. Soon grief stricken Bhadraa Sarthavahi also met her end. The city guards expelled young Shakat from his house. (They auctioned the house to repay loans to creditors and Shakat had to abandon his house). On being expelled from his house, young Shakat started roaming around the trisections, (etc.) in Saahanjani city and frequenting gambling houses (and bars). At one point of time he fell in love with courtesan Sudarshana. (As Ujjhit fell for Kamadhvaja.)

१०. तए णं से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारगं अन्नया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता सुदरिसणं गणियं अब्भिंतरियं ठवेइ, ठवेत्ता सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

१०. तदनन्तर महचन्द्र राजा का अमात्य–मंत्री सुषेण किसी समय उस शकट कुमार को सुदर्शना वेश्या के घर से निकलवा देता है और सुदर्शना गणिका को अपने घर में (किसी स्वतंत्र आवास पर) पत्नी के रूप में रख लेता है। इस तरह घर में पत्नी के रूप में रखी हुई सुदर्शना के साथ मनुष्य सम्बन्धी कामभोगों को यथारुचि उपभोग करता हुआ समय बिताता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

10. Later at some point of time king Mahachandra's minister Sushen got young Shakat expelled from the house of Kamadhvaja courtesan and kept her as mistress in an independent house. He started enjoying all human comforts and carnal pleasures with the courtesan kept as his mistress.

११. तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे सुदरिसणाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अण्णत्थ कत्थइ सुइं च रइं च धिइं च अलभमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए सुदरिसणाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं से सगडे दारए अन्नया कयांइ सुदरिसणाए गणियाए अंतरं लभेइ, लभेत्ता सुदरिसणाए गणियाए गिहं रहसियं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुदरिसणाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

११. सुदर्शना वेश्या के घर से निकाला गया शकट उस गणिका में मूर्च्छित, गृद्ध, अत्यन्त आसक्त होकर अन्यत्र कहीं भी सुख, चैन, रति, शान्ति नहीं पा रहा था। उसका चित्त, मन, लेश्या और अध्यवसाय उसी में रमा रहता था। वह सुदर्शना के विषय में ही सोचा करता, उसमें मन को लगाये रहता, उसी की भावना से भावित रहता। प्रतिक्षण उसके पास जाने की ताक में रहता और अवसर देखता रहता था। एक बार उसे अवसर मिल गया। वह सुदर्शना के घर में घुस गया और फिर उसके साथ मन इच्छित काम-भोग भोगने लगा।

11. On getting expelled from the house of Sudarshana courtesan, that young Shakat, being madly attached (*murchhit*) with Sudarshana courtesan, infatuated (*griddha*) with her, entrapped in her love (*grathit*), lost in her thoughts (*adyupapanna*), could not think of, love and derive mental peace in any other person or thing. Always thinking about her, making efforts to possess her, devoting his mind speech and body to her, impelled by his desire for her, he got himself involved in seeking an opportunity when the king did not come to courtesan Sudarshana's house, when no other royal person was there and when even an ordinary person was also not there. Once he got such an opportunity and he stealthily entered the house of Sudarshana courtesan. He then started enjoying all human comforts and carnal pleasures with her.

१२. इमं च णं सुसेणे अमच्चे ण्हाए जाव सव्वालंकारविभूसिए मणुस्सवग्गुराए परिक्खित्ते जेणेव सुदरिसणाए गणिकाए गेहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडं दारयं सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते जाव मिसमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहट्टु सगडं दारयं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि जाव महियं करेइ, करित्ता अवओडयबंधणं करेइ, करेत्ता जेणेव महचंदे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु सामी ! सगडे दारए मम अंतेउरंसि अवरद्धे।'

तए णं से महचंदे राया सुसेणं अमच्चं एवं वयासी—'तुमं चेव णं, देवाणुप्पिया ! सगडस्स दारगस्स दंडं वत्तेहि।'

तए णं से सुसेणे अमच्चे महचंदेणं रन्ना अब्भणुन्नाए समाणे सगडं दारयं सुदरिसणं च गणियं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

तं एवं खलु, गोयमा ! सगडे दारए पुरापोराणाणं दुच्चिण्णाणं जाव पच्चणुभवमाणे विहरइ।

१२. इधर एक दिन स्नान आदि करके तथा विविध आभूषण पहनकर अनेक मनुष्यों को साथ लिए सुषेण मंत्री सुदर्शना गणिका के घर पर आया। आते ही उसने सुदर्शना के साथ स्वच्छन्द रूप में कामभोगों का उपभोग करते हुए शकट कुमार को देखा। देखकर वह क्रोध के वश लाल-पीला हो, दांत पीसता हुआ मस्तक पर तीन भृकुटियाँ चढ़ा लेता है। शकट कुमार को अपने पुरुषों से पकड़वाकर लाठियों मुट्ठियों आदि से उसके शरीर को घायल कर अवकोटक बन्धन से जकड़वा लेता है। उसे महाराज महचन्द्र के पास ले जाकर हाथ जोड़कर इस प्रकार निवेदन करता है—'स्वामिन् ! इस शकट कुमार ने मेरे अन्तःपुर में प्रवेश करने का अपराध किया है।'

उत्तर में महाराज महचन्द्र सुषेण मंत्री से कहता है—'देवानुप्रिय ! तुम ही अपनी इच्छानुसार इसको दण्ड दे सकते हो।'

महाराज महचन्द्र से आज्ञा मिलने पर सुषेण मंत्री ने शकट कुमार और सुदर्शना गणिका को पूर्वोक्त विधि से (जिसे हे गौतम ! तुमने देखा है) वध करने की आज्ञा राजपुरुषों को दे दी।

हे गौतम ! इस प्रकार वह शकट कुमार अपने पूर्व कृत पापकर्मों का फल भोग रहा है।

12. Then one day minister Sushen, after taking his bath,... and so on up to... embellished fully with ornaments, and accompanied by a throng of people went to the house of Sudarshana courtesan. There he came across young Shakat enjoying all human comforts and carnal pleasures with Sudarshana courtesan. When he saw this he turned red with anger and raised his eyebrows. He got young Shakat caught by his guards and gave a thorough beating by hammering and tossing the body of Shakat with blows of stick, fist,... and so on up to... got him tied in the *avakotak* bond (bending the neck and tying it with hands already tied at the back). He took Shakat to king Mahachandra and submitted—"Sire this young Shakat has committed the crime of entering my private quarters (where women of the house live)."

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The king replied—"You are allowed to punish him as you like."

On getting permission from king Mahachandra, minister Sushen sentenced young Shakat and courtesan Sudarshana to death by aforesaid method (As you saw, Gautam !).

Gautam ! This way that young Shakat is suffering for the sinful deeds he committed in the past.

शकट का भविष्य

१३. सगडे णं भंते ! दारए कालगए कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! सगडे णं दारए सत्तावन्नं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे एगं महं अयोमयं तत्तं समजोइभूयं इत्थिपडिमं अवयासाविए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता रायगिहे नयरे मातंगकुलंसि जुगलत्ताए पच्चायाहिइ। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं गोण्णं नामधेज्जं करिस्संति-'तं होउ णं दारए सगडे नामेणं, होइ णं दारिया सुदरिसणा नामेणं।'

१३. शकट की दुर्दशा का कारण जानकर गौतम स्वामी ने पूछा-भंते ! शकट कुमार बालक यहाँ से काल करके कहाँ जायेगा और कहाँ पर उत्पन्न होगा ?

भगवान् ने उत्तर दिया-हे गौतम ! शकट दारक को ५७ वर्ष की परम आयु को भोगकर आज ही दिन के तीसरे पहर में उसे एक लोह की तपी हुई अग्नि के समान देदीप्यमान विशाल स्त्रीप्रतिमा से आलिंगित कराया जायेगा। उस साक्षात् अग्नि के समान प्रतिमा का आलिंगन करने पर मृत्यु प्राप्त कर रत्नप्रभा नाम की प्रथम नरक भूमि में नारक रूप में उत्पन्न होगा।

(शकट और सुदर्शना का जीव) नरक से निकलकर राजगृह नगर में मातंग-चाण्डाल कुल में युगल (जोड़े) रूप से उत्पन्न होगा। उस युगल के माता-पिता बारहवें दिन उनमें से बालक का नाम 'शकटकुमार' और कन्या का नाम 'सुदर्शना' रखेंगे।

THE FUTURE OF SHAKAT

13. Knowing the cause of Shakat's misery, Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After his death where will this young Shakat go ? Where will he be reborn ?

Bhagavan replied—Gautam ! After completing his life-span of fifty seven years, this afternoon young Shakat will be forced to embrace a large and fire-like red hot female statue made of iron. On embracing that fire-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

like statue he will die and will reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha.

Getting out of the hell they (the souls that are Shakat and Sudarshana) will take rebirth as twins in a *Chandal* (a low caste) family in Rajagriha city. The parents of the twins will name them as Shakat Kumar and Sudarshana.

शकट कुमार का भव

१४. तए णं से सगडे दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते भविस्सइ।

तए णं सा सुदरिसणा वि दारिया उम्मुक्कबालभावा जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि भविस्सइ। तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य मुच्छिए सुदरिसणाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ।

तए मं से सगडे दारए अन्नया सयमेव कूडग्गाहित्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सइ। तए णं से सगडे दारए कूडग्गाहे भविस्सइ अहम्मिए जाव दुप्पडियाणन्दे। एयकम्मे-४ सुबहुं पाकम्मं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्भाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। संसारो तहेव जाव पुढवीए।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तत्थ मच्छबन्धिएहिं वहिए तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। बोहिं, पव्वज्जा, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

निक्खेवो।

॥ चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥

१४. तदनन्तर शकट कुमार बचपन बीतने पर यौवन वय को प्राप्त करेगा। सुदर्शना कुमारी भी बाल्यावस्था पार करके विशिष्ट ज्ञानबुद्धि की परिपक्वता को प्राप्त करती हुई युवावस्था को प्राप्त होगी। वह रूप, यौवन व लावण्य में श्रेष्ठ व सुन्दर शरीर वाली होगी।

सुदर्शना के रूप, यौवन और लावण्य की सुन्दरता में मूर्च्छित होकर शकट कुमार अपनी बहिन सुदर्शना के साथ ही मनुष्य सम्बन्धी कामभोगों का सेवन करता हुआ जीवन व्यतीत करने लगेगा।

तत्पश्चात् किसी समय वह शकटकुमार स्वयमेव कूटग्राहित्व (कपट से जीवों को फँसाकर मारने का व्यवसाय) का कार्य करने लगेगा। वह कूटग्राह बना हुआ वह शकट महाअधर्मी एवं दुष्प्रत्यानन्द होगा। इन अधर्म-प्रधान कर्मों से बहुत भारी पापकर्मों को उपार्जित कर मृत्यु समय में मरकर रत्नप्रभा नाम प्रथम नरक में नारकी रूप से उत्पन्न होगा। उसका संसार-भ्रमण भी पूर्ववत् (एकाई उज्झित आदि के समान) जान लेना चाहिए यावत् वह पृथ्वीकाय आदि में लाखों-लाखों बार उत्पन्न होगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदनन्तर वहाँ से निकलकर वह सीधा वाराणसी नगरी में मत्स्य के रूप में जन्म लेगा। वहाँ पर मत्स्यघातकों के द्वारा वध किये जाने पर फिर उसी वाराणसी नगरी में एक श्रेष्ठिकुल में पुत्ररूप से उत्पन्न होगा। वहाँ सम्यक्त्व एवं अनगार धर्म को प्राप्त करके सौधर्म नामक प्रथम देवलोक में देव होगा। वहाँ से च्युत हो, महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेगा। वहाँ साधुवृत्ति का सम्यक्तया पालन करता हुआ अन्त में सिद्ध, बुद्ध होगा, समस्त कर्मों और दुःखों का अन्त करेगा।

॥ चतुर्थ अध्ययन समाप्त ॥

THE BIRTH AS SHAKAT KUMAR

14. In due course Shakat Kumar will cross his adolescence and attain youth. Sudarshana Kumari will also acquire exceptional wisdom and maturity while attaining youth. She will have exquisitely beautiful, charming, and youthful body.

Falling for the beauty, youth and charm of his own sister, Shakat Kumar will start passing his time enjoying all human comforts and carnal pleasures with Sudarshana.

At some point of time that Shakat Kumar will enter the profession of catching and killing animals. As a *kootagraha* that Shakat Kumar will become extremely irreligious and derive contentment in sinful deeds. As a consequence of these evil deeds he will acquire abundant demeritorious *karmas*. Having completed his life-span, at the time of death, he will die and take rebirth as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha. From there he will follow the cycles of rebirths as mentioned in context of Ekadi, Ujjhitak, and others... and so on up to... will be born millions of times as earth-bodied and other such beings.

Coming out from there he will be born as a fish in Varanasi city. After being killed by fishermen he will reincarnate as a son in a merchant family of the same Varanasi city. There he will gain righteousness (*samyaktva*) and get initiated as an ascetic. From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok. Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately. At last he will get enlightened and attain the status of *Siddha* shedding all his *karmas* and ending all misery.

● END OF THE FOURTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम श्रुतस्कन्ध : पंचम अध्ययन
बृहस्पतिदत्त (व्यभिचारी राजपुरोहित)

उपोद्घात

पूर्व अध्ययनों की भाँति इस पंचम अध्ययन में बृहस्पतिदत्त के कथानक द्वारा क्रूरता, हिंसा–कर्म, और व्यभिचार के दुष्परिणामों का कटु फल विपाक बताया है। बृहस्पतिदत्त ने राजपुरोहित होकर भी राजा के साथ मित्रद्रोह किया, उसकी रानी के साथ व्यभिचाररत हुआ। इस दुष्कर्म का कठोर दण्ड तो उसे उसी जन्म में मिल गया, किन्तु पिछले भवों व इस भव में किये गये हिंसा आदि अनेक कुकर्मों का फल लाखों जन्मों तक भोगना पड़ा। इसका लोमहर्षक वर्णन इस अध्ययन में है।

FIRST SHRUTSKANDH : FIFTH CHAPTER
BRIHASPATIDATT (the debauch priest)

INTRODUCTION

Like the preceding chapters this fifth chapter too informs about the grave consequences and bitter fruits of cruelty, sinful activity, and adultery. Even though Brihaspatidatt was the state priest, he deceived his friend, the king, and indulged in adultery with the queen. He not only got harsh punishment for this evil deed during the same life time but he had to suffer the consequences of many other violent and sinful deeds, committed during this and many past births, for millions of rebirths. This chapter contains hair-raising description of that.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचम अध्ययन
FIFTH CHAPTER

प्रस्तावना : जम्बू स्वामी की जिज्ञासा

पंचमस्स उक्खेवो–जइ णं भंते !

पाँचवें अध्ययन का उत्क्षेप–प्रस्तावना पूर्ववत् जानना चाहिए। (अर्थात् जम्बूस्वामी ने प्रश्न किया कि श्रमण भगवान महावीर ने दुःखविपाक के पाँचवें अध्ययन का क्या अर्थ कहा है?) तब सुधर्मा स्वामी ने कहा–

FOREWORD : CURIOSITY OF JAMBU SWAMI

The foreword of the fifth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the fifth chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?) Sudharma Swami replied—

१. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी णामं णयरी होत्था। रिद्धत्थिमियसमिद्धा। बाहिं चंदोतरणे उज्जाणे। सेयभद्दे जक्खे।

१. जम्बू ! उस काल उस समय में कौशाम्बी नाम की एक नगरी थी, जो विशाल भवनादि से युक्त; समृद्धि सम्पन्न थी। उस नगरी के बाहर चन्द्रावतरण नामक उद्यान में श्वेतभद्र नामक यक्ष का आयतन था।

1. Jambu ! During that period of time there was a city named Kaushambi which was beautiful and prosperous in all respects. Outside this town was a garden named Chandravataran in which was a temple of Shvetabhadra Yaksh.

२. तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सयाणीए नामं राया होत्था। महया.। मियावई देवी। तस्स णं सयाणीयस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए उदायणे नामं कुमारे होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे, जुवराया। तस्स णं उदायणस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था।

२. उस कौशाम्बी नगरी में शतानीक नाम का प्रतापी राजा था। उसके मृगादेवी नाम की रानी थी। मृगादेवी राजा चेटक की पुत्री थी। शतानीक राजा का पुत्र और रानी मृगादेवी का आत्मज उदयन नाम का एक कुमार था जो सर्वेन्द्रिय सम्पन्न और युवराज पद से अलंकृत था। उस उदयन कुमार की पत्नी का नाम पद्मावती था।

2. In that Kaushambi city ruled a majestic king named Shataneek. The name of his queen was Mrigadevi who was the daughter of king Chetak.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Shataneek and Mrigadevi had a son named Udayan who was perfectly proportioned and handsome. He was the crown prince of the kingdom. The name of prince Udayan's wife was Padmavati.

३. तस्स णं सयाणीयस्स सोमदत्ते नामं पुरोहिए होत्था, रिउव्वेय, यज्जुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेयकुसले। तस्स णं सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ता नामं भारिया होत्था। तस्स णं सोमदत्तस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए बहस्सइदत्ते नामं दारए होत्था। अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे।

३. उस शतानीक राजा के पुरोहित का नाम सोमदत्त था, जो ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का पूर्ण ज्ञाता था। उस सोमदत्त पुरोहित के वसुदत्ता नाम की भार्या थी, तथा सोमदत्त का पुत्र एवं वसुदत्ता का आत्मज बृहस्पतिदत्त नाम का एक सर्वांग सम्पन्न सुन्दर बालक था।

3. The name of the state priest of king Shataneek was Somadatt. He had mastery over *Rigveda, Yajurveda, Saamaveda,* and *Atharvaveda.* Priest Somadatt's wife was named Vasudatta. Somadatt and Vasudatta had a perfect and handsome son named Brihaspatidatt.

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीर समोसरिए। तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव जाव रायमग्गमोगाढे। तहेव पासइ हत्थी, आसे, पुरिसमज्झे पुरिसं। चिंता। तहेव पुच्छइ, पुव्वभवं। भगवं वागरेइ।

४. उस काल उस समय में श्रमण भगवान महावीर स्वामी कौशाम्बी नगरी के बाहर चन्द्रावतरण उद्यान में पधारे। उस समय भगवान गौतम पूर्ववत् कौशाम्बी नगरी में भिक्षाचरी करके लौटते हुए राजमार्ग पर पधारे। वहाँ हाथियों, घोड़ों और शस्त्र आदि से सुसज्जित अनेक पुरुषों को तथा उन पुरुषों के बीच एक वध्य पुरुष को बँधा हुआ देखा। (इसका वर्णन पिछले वर्णन के समान जानें) उनको देखकर मन में विचार करते हैं और अपने स्थान पर आकर भगवान से उसके पूर्व-भव के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं। भगवान उसके पूर्वभव का वर्णन इस प्रकार करते हैं।

4. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Chandravataran garden outside Kaushambi city. During that period of time while returning after collecting alms in Kaushambi city Bhagavan Gautam came to the main road as mentioned earlier. There he saw many elephants, horses and foot soldiers duly equipped with armours and weapons. Amongst them he saw a prisoner being taken to the gallows. Gautam Swami was thoughtful (on hearing the announcement, seeing all this and the person in pathetic condition). He came to Bhagavan Mahavir and asked about it. In reply *Bhagavan* said—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्वभव

५. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे सव्वओभद्दे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं सव्वओभद्दे नयरे जियसत्तू राया। तस्स णं जियसत्तुस्स रन्नो महेसरदत्ते नामं पुरोहिए होत्था, रिउव्वेय, यजुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेयकुसले यावि होत्था।

५. हे गौतम ! उस काल उस समय में इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप में स्थित भरतक्षेत्र में सर्वतोभद्र नाम का एक विशाल नगर था, जो भवन आदि से समृद्ध तथा धनधान्यादि से परिपूर्ण था। उस सर्वतोभद्र नगर में जितशत्रु राजा था। उस जितशत्रु राजा का महेश्वरदत्त नाम का एक पुरोहित था जो ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का पूर्ण ज्ञाता था।

PREVIOUS BIRTH

5. Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Sarvatobhadra in Bharatvarsh area in Jambu continent. A king named Jitashatru was the ruler of that city. King Jitashatru had a priest named Maheshvardatt who had mastery over *Rigveda, Yajurveda, Saamaveda,* and *Atharvaveda.*

राजा द्वारा शान्ति होम

६. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तुस्स रन्नो रज्ज-बलविवद्धणट्ठाए कल्लाकल्लिं एगमेगं माहणदारयं, एगमेगं खत्तियदारयं एगमेगं वइस्सदारयं, एगमेगं सुद्ददारयं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसिं जीवतंगाणं चेव हिययउंडए गिण्हावेइ गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रन्नो संतिहोमं करेइ।

तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमी-चउद्दसीसु दुवे-दुवे माहणखत्तिय-वइस्स-सुद्दारगे, चउण्हं मासाणं चत्तारि-चत्तारि, छण्हं मासाणं अट्ठ-अट्ठ संवच्छरस्स सोलस-सोलस।

जाहे जाहे वि य णं जियसत्तु राया परबलेण अभिजुंजइ, ताहे ताहे वि य णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसयं माहणदारगाणं, अट्ठसयं खत्तियदारगाणं अट्ठसयं वइस्सदारगाणं अट्ठसयं सुद्ददारगाणं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रन्नो संतिहोमं करेई। तए णं से परबले खिप्पामेव विद्धंसिज्जइ वा पडिसेहिज्जइ वा।

६. महेश्वरदत्त पुरोहित जितशत्रु राजा के राज्य के हित बल की वृद्धि के लिए प्रतिदिन एक-एक ब्राह्मण बालक, एक-एक क्षत्रिय बालक, एक-एक वैश्य बालक और एक-एक शूद्र बालक को पकड़वा लेता था और पकड़वा कर जीते जी उनके हृदयों के माँसपिण्डों को निकलवा लेता और बाहर निकलवाकर जितशत्रु राजा के निमित्त उनसे शान्ति-होम किया करता था। (टीकाकार ने शान्ति-होम का अर्थ किया है-किसी हिंसाप्रिय देवता के निमित्त मंत्र आदि पढ़कर घी-तिल जो आदि द्वारा अग्नि में हवन करना अथवा किसी क्रूर देवता को बलि पिण्ड आदि देना। इस प्रकार के हिंसात्मक होम से राजा की विजय का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्या सम्बन्ध हो सकता है। इस विषय पर विस्तृत चर्चा पढ़ें) *–(आचार्य श्री आत्माराम जी म. कृत हिन्दी टीका पृष्ठ १२५–२६)*

इसके अतिरिक्त वह पुरोहित प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशी के दिन दो–दो बालकों के, चार मास में चार–चार के, छह मास में आठ–आठ बालकों के और संवत्सर–वर्ष में सोलह–सोलह बालकों के हृदयों के माँसपिण्डों से शान्ति–होम किया करता था।

जब–जब जितशत्रु राजा का किसी शत्रु के साथ युद्ध होता तब–तब वह महेश्वरदत्त पुरोहित एक सौ आठ (१०८) ब्राह्मण बालकों, एक सौ आठ क्षत्रिय–बालकों, एक सौ आठ वैश्यबालकों और एक सौ आठ शूद्रबालकों को अपने पुरुषों द्वारा पकड़वा कर और जीते जी उनके हृदय के माँसपिण्डों को निकलवा कर जितशत्रु नरेश की विजय के निमित्त शान्ति–होम करता था। उसके प्रभाव से जितशत्रु राजा शीघ्र ही शत्रु का विध्वंस कर देता या शत्रु रण क्षेत्र से भागा जाता था।

PEACE-OFFERINGS BY THE KING

6. Everyday priest Maheshvardatt would get a boy each from a Brahmin family, a Kshatriya family, a Vaishya family, and a Shudra family captured and brought to him. He would then get the hearts out from their live bodies and perform sacrificial peace-offerings for the well-being of king Jitashatru. [The commentator (*Tika)* has interpreted *shanti-home* (peace offerings) as : to throw butter, oil, barley etc. or lumps of human or animal flesh in sacrificial fire accompanied by chanting of mantras as offerings to some violence loving deity. It is hard to conceive what relationship the victory or well-being of a king can have with such violent act. *(for detailed discussion refer to Hindi Tika by Acharya Shri Atmaram ji M. , pp. 125-126)]*

Besides this that priest would also perform the ritual peace-offerings of lumps of flesh from hearts of two sets of boys every eighth and fourteenth day of a fortnight, of four sets of boys every four months, of eight sets of boys every six months, and of sixteen sets of boys every year.

Whenever king Jitashatru fought a battle with some adversary, that priest Maheshvardatt would get one hundred eight boys each from Brahmin families, Kshatriya families, Vaishya families, and Shudra families captured and brought to him. He would then get the hearts out from their live bodies and perform sacrificial peace-offerings for the victory of king Jitashatru. This helped king Jitashatru destroy or trounce his enemy in the battle.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिंसा कर्म का दुष्परिणाम

७. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता तीसं वाससयं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा पंचमीए पुढवीए उक्कोसेण सत्तरससागरोवमट्ठिइए नरगे उववन्ने।

७. इस प्रकार क्रूर कर्मों का अनुष्ठान करने वाला, क्रूरकर्मों को प्रधानता देने वाला, इन्हीं क्रूर कर्मों को अपना सदाचरण मानने वाला महेश्वर दत्त अनेक प्रकार के घोर पापकर्मों का उपार्जन करता हुआ तीन हजार वर्ष का परम आयुष्य भोगकर पाँचवें नरक में उत्कृष्ट सत्रह सागरोपम की स्थिति वाले नारक के रूप में उत्पन्न हुआ।

KKKK

7. Ever involved in these sinful activities, accepting these activities to be ideal of his life and the best of conduct, Priest Maheshvardatt acquired extremely malevolent and pain causing *karmas* in abundance. After completing his life-span of three thousand years, he died and reincarnated as an infernal being in the fifth hell where the maximum life span is seventeen *Sagaropam* (a metaphoric unit of time).

वर्तमान भव

८. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव कोसंबीए नयरीए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ताए भारियाए पुत्तत्ताए उववन्ने। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं नामधेज्जं करेंति–'जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स पुत्ते, वसुदत्ताए अत्तए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए बहस्सइदत्ते नामेणं।'

तए णं से बहस्सइदत्ते दारए पंचधाइपरिग्गहिए जाव परिवड्ढइ। तए णं से बहस्सइदत्ते उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते विन्नयपरिणयमेत्ते होत्था। से णं उदायणस्स कुमारस्स पियबालवयस्सए यावि होत्था। सहजायए, सहवड्ढियए, सहपंसुकीलियए।

८. तदनन्तर महेश्वरदत्त पुरोहित का वह पापात्मा जीव पाँचवें नरक से निकलकर इसी कौशाम्बी नगरी में सोमदत्त पुरोहित की वसुदत्ता भार्या के उदर में पुत्ररूप से उत्पन्न हुआ। यहाँ उत्पन्न हुए इस बालक के माता-पिता ने जन्म से बारहवें दिन नामकरण संस्कार करते हुए कहा–"यह बालक सोमदत्त का पुत्र और वसुदत्ता का आत्मज होने के कारण बृहस्पतिदत्त नाम से पुकारा जायेगा।"

क्रमशः वह बृहस्पतिदत्त बालक पाँच धायमाताओं की देखरेख में पालन-पोषण के साथ वृद्धि को प्राप्त होता हुआ तथा बाल्यावस्था को पार करके युवावस्था में प्रवेश करता है। बुद्धि-ज्ञान आदि में परिपक्व होता हुआ वह उदयन राजकुमार का बाल्यकाल से ही प्रिय मित्र बन गया। क्योंकि ये दोनों एक साथ ही उत्पन्न हुए, एक साथ बढ़े और एक साथ ही खेले थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

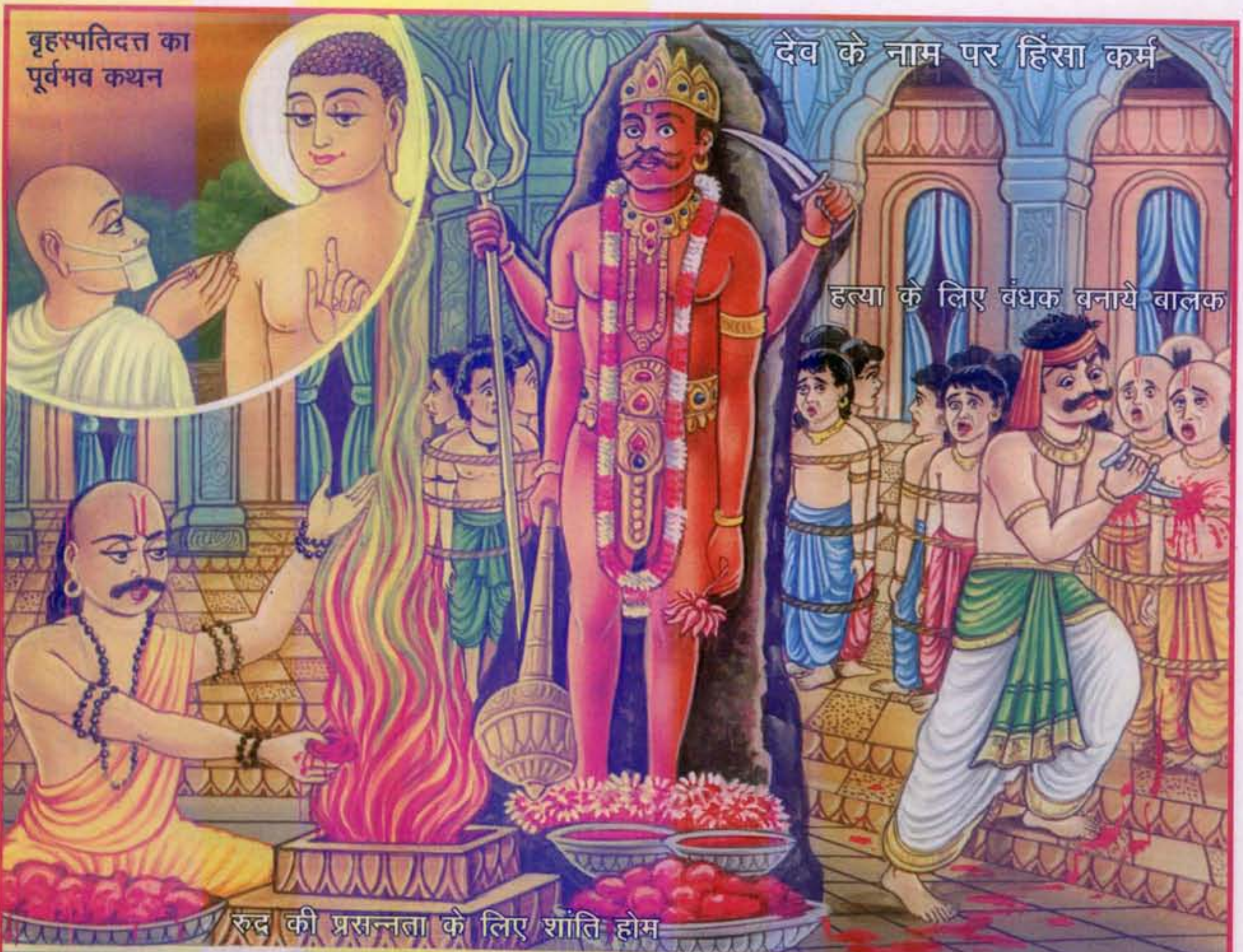

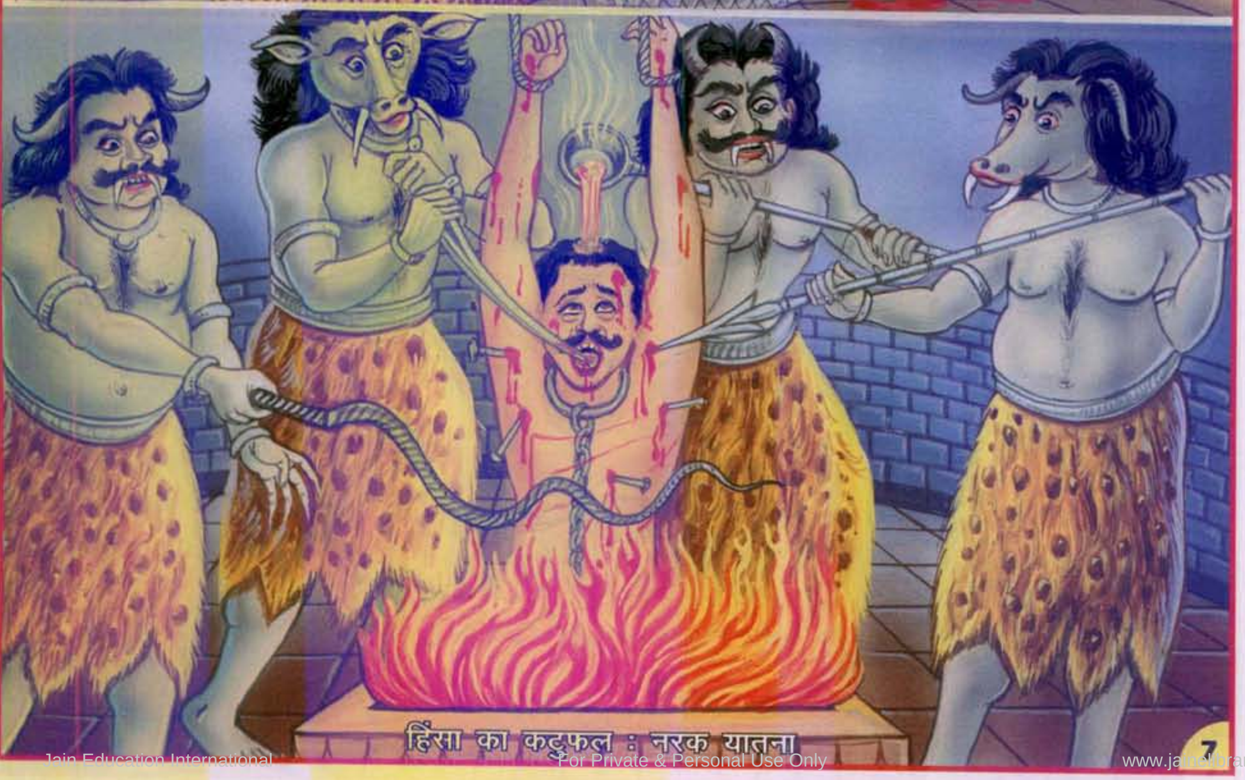

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-७

Illustration No. 7

हिंसाकर्मी महेश्वरदत्त

दृश्य-१

भगवान कौशाम्बी में पधारे। नगर में गणधर गौतम ने एक पुरुष को कठोर बन्धनों में बँधे अनेक प्रकार के मर्मान्तिक दण्ड पाते देखकर प्रभु से पूछा। भगवान ने बताया-यह उदयन राजा का राज पुरोहित पुत्र बृहस्पतिदत्त है। फिर भगवान उसका पूर्वभव बताते हैं-प्राचीन काल में सर्वतोभद्र नगर में जितशत्रु राजा का एक राजपुरोहित था महेश्वरदत्त। वह बड़ा क्रूर स्वभाव का था। याज्ञिक हिंसा में विश्वास करता था। राजा की विजय के लिए किसी हिंसाप्रिय रुद्रदेव के समक्ष प्रत्येक मास की अष्टमी-चतुर्दशी के दिन ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य व शूद्र जाति के बालकों के हृदय के माँस पिण्ड निकालकर शान्ति होम करता था।

दृश्य-२

महेश्वरदत्त का जीव नरक में गया। नरक कठोर यातनाएँ भोगता रहा। वहाँ से निकलकर महेश्वरदत्त का जीव उदयन राजा का राजपुरोहित बृहस्पतिदत्त बना है। यह राजा का अत्यन्त विश्वास पात्र था। राजा की रानी पद्मावती के साथ विषयानुरक्त हो गया। जिसका पता चलने पर राजा ने उसे यह कठोर दण्ड दिया है।

-श्रुतस्कन्ध १, अ. ५, सूत्र ७

CRUEL PRIEST MAHESHVARDATT

SCENE-1

Bhagavan came to Kaushambi. Gautam Swami saw a person shackled and suffering excruciating punishment. He asked *Bhagavan* and was informed—This is Brihaspatidatt, the son of the state priest of king Udayan. Then *Bhagavan* told about his past birth—In ancient times King Jitashatru of Sarvatobhadra city had a state priest named Maheshvardatt. He was very cruel and believed in religious violence. Every eighth and fourteenth day of a fortnight he performed peace-sacrifice before a violent deity, Rudradev, by removing hearts of children from Brahmin, Kshatriya, Vaishya, and Shudra families and offering them to the deity.

SCENE-2

The soul that was Maheshvardatt was born in hell. He suffered hellish torture there. Coming out of there he has reincarnated as Brihaspatidatt, the state priest of king Udayan. He was a confidante of the king. He fell for queen Padmavati and on knowing this, the king has sentenced him to this harsh punishment.

—Sec. I, Ch. 5, Sutra : 7

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

8. On leaving the fifth hell, the evil soul of that Priest Maheshvardatt was conceived as a son in the womb of Vasudatta, the wife of priest Somadatt in this Kaushambi city. On the twelfth day after his birth the parents named the child—"As the father of this boy is named Somadatt and the mother is named Vasudatta he should be popularly known by the name 'Brihaspatidatt'."

He was brought up under the care of five nursemaids. In due course he crossed adolescence and attained youth. While maturing in intelligence and wisdom he became a close friend of prince Udayan right since his childhood. This was because they were born at the same time and grew up playing together.

९. तए णं से सयाणीए राया अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते। तए णं से उदायणं कुमारे बहूहिं राईसर–तलवर–माडंबिय–कोडुंबिय–इब्भ–सेट्ठी–सेणावइ–सत्थवाहप्पभिइहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे, कंदमाणे, विलवमाणे सयाणीयस्स रन्नो महया इड्ढि–सक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूहिं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ।

तए णं ते बहवे राईसर जाव सत्थवाहा उदायणं कुमारं महया–महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति।

तए णं से उदायणं कुमारे राया जाये महया हिमवंत. !

९. तदनन्तर किसी समय महाराज शतानीक कालधर्म को प्राप्त हो गये। तब उदयनकुमार बहुत से राजा, तलवर, माडंबिक, कौटुंबिक, इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति और सार्थवाह आदि के साथ रोता हुआ, आक्रन्दन करता हुआ तथा विलाप करता हुआ शतानीक नरेश का राजकीय समृद्धि के अनुसार सम्मानपूर्वक नीहरण तथा मृतक सम्बन्धी समस्त लौकिक कृत्य करता है।

इसके पश्चात् उन राजा, ईश्वर, सार्थवाह आदि ने मिलकर बड़े समारोह के साथ उदयन कुमार का राज्याभिषेक किया।

उदयनकुमार हिमालय पर्वत के समान महान् पराक्रमी राजा बना।

9. At a certain time King Shataneek died. Crying, weeping, and sobbing, Prince Udayan performed the formal last rites and cremated his father, King Shataneek, with state honour and grandeur in presence of numerous kings, influential and rich persons (*ishvar*), knights of honour (*talavar*), landlords (*mandavik*), heads of large families (*kautumbik*), affluent people (*ibhya*), established merchants (*shreshti*), and caravan chiefs (*sarthavaha*) and other people.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

After that those numerous kings, influential and rich persons (*ishvar*),... and so on up to... caravan chiefs (*sarthavaha*) and other people joined the grand coronation ceremony and crowned prince Udayan.

Prince Udayan became a king as majestic as the Himalayas.

१०. तए णं से बहस्सइदत्ते दारए उदायणस्स रन्नो पुरोहियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु, सव्वभूमियासु, अंतेउरे य दिन्नवियारे जाव यावि होत्था। तए णं से बहस्सइदत्ते पुरोहिए उदायणस्स रन्नो अंतेउरंसि वेलासु य अवेलासु य, काले य अकाले य राओ य वियाले य पविसमाणे अन्नया कयाइ पउमावईए देवीए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था। पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

१०. तब वह बृहस्पतिदत्त कुमार उदयन नरेश का पुरोहित हो गया और पौरोहित्य कर्म करता हुआ सर्वस्थानों-(शयन-भोजन-मंत्रणा-आय-महसूल-आदि कामो में) सर्वभूमिकाओं-(राज सम्बन्धी सभी व्यवस्थाओं में) तथा अन्तःपुर-राजा के रनवास में भी इच्छानुसार बेरोक-टोक गमनागमन करने लगा।

तत्पश्चात् वह बृहस्पतिदत्त पुरोहित उदयन नरेश के अन्तःपुर में समय-असमय, काल-अकाल, प्रातः मध्याह्न तथा रात्रि एवं सन्ध्याकाल में स्वेच्छापूर्वक प्रवेश करने लगा। धीरे-धीरे पद्मावती देवी के साथ उसका अनुचित सम्बन्ध हो गया। तदनुसार पद्मावती देवी के साथ मनुष्य सम्बन्धी मन इच्छित काम-भोगों का सेवन करने लगा।

10. Then young Brihaspatidatt became king Udayan's priest and performing his duties as a priest started unrestricted movement at every place (bed chamber, dining hall, etc.) and getting involved in all activities (deliberations, meetings, state receipts including taxes, etc.) to the extant that he visited the private quarters of the king unchecked and at will.

Then that Brihaspatidatt priest started frequenting at will the inner quarters of king Udayan's palace timely and untimely, at suitable or odd hours including morning, noon, evening, and night. Gradually he developed illicit relationship with Padmavati Devi and consequently started enjoying all human comforts and carnal pleasures with her.

११. इमं च णं उदायणे राया ण्हाए जाव विभूसिए जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहस्सइदत्तं पुरोहियं पउमावइए देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु बहस्सइदत्तं पुरोहियं पुरिसेहिं गिण्हावेइ जाव एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

एवं खलु गोयमा ! बहस्सइदत्ते पुरोहिए पुरा पुराणाणं जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. इधर किसी समय उदयन राजा स्नानादि करके विविध आभूषणों से अलंकृत होकर पद्मावती देवी के महलों में आया। वहाँ पर उसने बृहस्पतिदत्त पुरोहित को पद्मावती देवी के साथ मनुष्य सम्बन्धी भोगोपभोग भोगते हुए देखा। देखते ही वह क्रोध से तमतमा उठा। मस्तक पर तीन भृकुटियाँ चढ़ाकर बृहस्पतिदत्त पुरोहित को पुरुषों द्वारा पकड़वाकर (अनेक प्रहारों से शरीर को क्षत-विक्षत करके, पीठ पीछे दोनों हाथ बँधवा कर) जैसा कि तुमने राजमार्ग में देखा है ऐसा कठोर दण्ड दे रहा है।

हे गौतम ! इस तरह बृहस्पतिदत्त पुरोहित अपने ही पूर्वकृत दुष्कर्मों के फल को प्रत्यक्षरूप से अनुभव कर रहा है।

11. Then one day king Udayan, after taking his bath,... and so on up to... embellished fully with ornaments came to queen Padmavati Devi's palace. There he came across priest Brihaspatidatt enjoying all human comforts and carnal pleasures with Padmavati Devi. When he saw this he turned red with anger and raised his eyebrows. He got priest Brihaspatidatt caught by his guards and... and so on up to... (he gave a thorough beating and got his hands tied at the back) sentenced him to death. He sentenced him to harsh punishment as you have seen on the road.

Gautam ! This way that priest Brihaspatidatt is suffering for the sinful deeds he committed in the past.

बृहस्पतिदत्त का भविष्य

१२. 'बहस्सइदत्ते णं भंते ! दारए इओ कालगए समाणे कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! बहस्सइदत्ते णं दारए पुरोहिए चउसट्ठिं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलिय-भिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिति। संसारो जहा पढमे जाव वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु।

तओ हत्थिणाउरे नयरे मिगत्ताए पच्चायाइस्सइ। से णं तत्थ वाउरिएहिं वहिए समाणे तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ, बोहिं, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

निक्खेवो।

॥ पंचम अज्झयणं समत्तं ॥

१२. गौतम स्वामी ने प्रश्न किया-भगवन् ! बृहस्पतिदत्त पुरोहित यहाँ से काल करके कहाँ जायेगा ? और कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान ने उत्तर दिया-गौतम ! बृहस्पतिदत्त पुरोहित ६४ वर्ष की आयु भोगकर दिन के तीसरे प्रहर में सूली से भेदन किया जाकर काल करके रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक में उत्कृष्ट एक सागर की स्थिति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाले नारकों में उत्पन्न होगा। वहाँ से निकलकर प्रथम अध्ययन में वर्णित मृगापुत्र की तरह सभी नरकों में, सब तिर्यंचों में तथा एकेन्द्रियों में लाखों-लाखों बार जन्म-मरण करेगा।

तत्पश्चात् हस्तिनापुर नगर में मृग के रूप में जन्म लेगा। वहाँ पर वागुरिकों-जाल में फँसाने का काम करने वाले व्याधों के द्वारा मारा जायेगा और इसी हस्तिनापुर में श्रेष्ठिकुल में पुत्ररूप से जन्म धारण करेगा।

वहाँ सम्यक्त्व को प्राप्त करेगा और काल करके सौधर्म नामक प्रथम देवलोक में उत्पन्न होगा। वहाँ से आयुष्य पूर्ण कर महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेगा। वहाँ पर संयम धारण कर, संयम की आराधना करके सब कर्मों का अन्त करेगा-सिद्धगति को प्राप्त करेगा।

निक्षेप--उपसंहार पूर्ववत् जान लेना चाहिए।

॥ पंचम अध्ययन समाप्त ॥

THE FUTURE OF SHAKAT

12. Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After his death where will this priest Brihaspatidatt go ? Where will he be reborn ?

Bhagavan replied—Gautam ! After completing his life-span of sixty four years, this afternoon priest Brihaspatidatt will die at the gallows and will reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha having a maximum life-span of one *Sagaropam* (a metaphoric unit of time). From there he will follow the cycles of rebirths as mentioned in the first chapter in context of Mrigaputra... and so on up to... will be born millions of times in all hells, as all animals, and as all one sensed beings.

Coming out from there he will be born as a deer in Hastinapur city. After being killed by animal trappers he will reincarnate as a son in a merchant family of the same Hastinapur city.

There he will gain righteousness (*samyaktva*) and get initiated as an ascetic. From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok. Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately. At last he will get enlightened and attain the status of *Siddha* shedding all his *karmas* and ending all misery.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE FIFTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम श्रुतस्कन्ध : षष्ठम अध्ययन

नन्दिवर्द्धन (अत्याचारी क्रूर अधिकारी)

उपोद्‌घात

छठे अध्ययन में नंदीवर्धन (नन्दीषेण) राजकुमार की अत्यन्त करुणाजनक, बीभत्स दुर्दशा का जो वर्णन है उसे पढ़–सुनकर हृदय काँप जाता है। गौतम स्वामी जैसे महान ज्ञानी का दिल भी द्रवित हो जाता है कि यह कितनी नारकीय यातनाएँ भोग रहा है।

इस यातना के निमित्त कर्मों पर गौतम स्वामी का ध्यान खींचते हुए भगवान फरमाते हैं–''नंदीवर्धन इस जन्म में तो पितृ–द्रोही बना है। पिता की घात कर उसका राज्य हड़पना चाहता था। इसी का दण्ड राजपुरुषों द्वारा दिया जा रहा है। किन्तु इसके मूल में पूर्व जन्मोपार्जित दुष्कर्म हैं, जब वह दुर्योधन नामक कारागार रक्षक होता है। कारागार रक्षक का कर्त्तव्य है दुष्टों, आततायियों से प्रजा की रक्षा करना तथा दुष्टों का निग्रह करना। परन्तु जब वह रक्षक मानवता से हीन हुआ, दानवी रूप अपना लेता है और दूसरों के साथ इतनी कठोर, दया विहीन दण्डनीति अपनाता है कि जिसे देखकर दानवता भी लज्जित हो जायें तो वह अपने राजधर्म तथा मानवधर्म से च्युत हो जाता है।'' दुर्योधन की अत्यन्त कठोर दण्ड व्यवस्था का चित्रण आगमकार ने बड़ा ही रोमांचक शैली में विस्तार पूर्वक किया है, जिसे पढ़–सुनकर ही हृदय काँप उठता है।

इसी क्रूरता व निर्दयता पूर्ण दुष्कर्म का फल–विपाक इस कथा में वर्णित है। इस वर्णन से अत्यन्त प्राचीन काल की कठोर दण्ड व्यवस्था का एक निम्नस्तरीय रूप प्रकट होता है।

सूत्र के प्रारम्भ में इस अध्ययन का नाम 'नंदी' बताया है, सूत्र २ में नन्दिवर्द्धन है, तथा सूत्र १० में नन्दीषेण है। यहाँ लिपिकारों की भूल प्रतीत होती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

FIRST SHRUTSKANDH : SIXTH CHAPTER
NANDIVARDHAN (the tyrant and cruel officer)

INTRODUCTION

The sixth chapter contains the heart-rending description of the pathetic and horrific condition of prince Nandivardhan (Nandishen). Even a great sage like Gautam Swami was touched when he saw the infernal tortures suffered by him.

Drawing the attention of Gautam Swami on the *karmic* cause of this torture *Bhagavan* says—"During this birth Nandivardhan goes against his father and wants to gain the kingdom by killing his father. He is being punished by the guards for this only. But at the root of all this are the bad *karmas* acquired during the past birth, when he was Duryodhan, the jailer. The duty of a jailer is to protect people from rogues and tyrants and subdue evil. But when that protector, bereft of humanity, transforms into a demon and employs a ruthless and pitiless punitive policy that puts even demons to shame, he disgraces his post as well as humanity." The extremely harsh system of punishment adopted by Duryodhan has been described in details in a hair-raising style by the author of this *Agam*. Shivers go through the spine while reading or listening to it.

This story describes the fruits of these cruel and ruthless evil acts. This description reveals the meanest point of the harsh ancient system of punishment.

At the beginning the title of this chapter is mentioned as Nandi, in aphorism 2 it as Nandivardhan, and in aphorism 10 as Nandishen. This appears to be a mistake committed by transcribes.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

षष्ठ अध्ययन
SIXTH CHAPTER

प्रस्तावना

१. उक्खेवो–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

तए णं सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी–

१. (उत्क्षेप) जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–भगवन् ! मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पाँचवें अध्ययन का यह अर्थ कहा, तो षष्ठ अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?

तब सुधर्मा अनगार जम्बू अनगार से इस प्रकार कहने लगे–

FOREWORD

1. Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the aforesaid text and meaning of the fifth chapter, then what is the text and meaning of the sixth chapter as preached by him ?"

Sudharma Swami replied to Jambu—

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं महुरा नामं नयरी होत्था। भंडीरे उज्जाणे। सुदंसणे जक्खे। सिरिदामे राया। बन्धुसिरी भारिया। पुत्ते नंदिवद्धणे कुमारे अहीण जाव जुवराया।

२. जम्बू ! उस काल उस समय में मथुरा नाम की नगरी थी। वहाँ भण्डीर नाम का एक उद्यान था। सुदर्शन नामक यक्ष का आयतन था। वहाँ श्रीदाम राजा राज्य करता था, उसकी रानी का नाम बन्धुश्री था। उनका आत्मज सर्वेन्द्रिय सम्पन्न युवराज पद से अलंकृत नन्दिवर्द्धन नाम का राजकुमार था।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Mathura which was beautiful and prosperous in all respects. Outside this town was a garden named Bhandir in which was a temple of Sudarshan Yaksh. In that Mathura city ruled a majestic king named Shridaam. The name of his queen was Bandhushri. Shridaam and Bandhushri had a son named Nandivardhan who was perfectly proportioned and handsome. He was the crown prince of the kingdom.

३. तस्स सिरिदामस्स सुबंधू नामं अमच्चे होत्था। साम–भेय–दंड.। तस्स णं सुबंधुस्स अमच्चस्स बहुमित्तापुत्ते नामं दारए होत्था, अहीण.। तस्स णं सिरिदामस्स रन्नो चित्ते नामं अलंकारिए होत्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरिदामस्स रण्णो चित्ते बहुविहं अलंकारियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिन्नवियारे यावि होत्था।

३. श्रीदाम नरेश का सुबन्धु नामक मंत्री था, जो साम, दण्ड, भेद आदि नीतियों में कुशल था। उस मंत्री का बहुमित्रापुत्र नामक सर्वांगसम्पन्न व रूपवान् बालक था। श्रीदाम नरेश का चित्र नामक अलंकारिक-(केशादि को अलंकृत करने वाला नाई) था। वह राजा का अनेकविध क्षौरकर्म करता हुआ विश्वासपात्र था। राजा की आज्ञा से सर्वस्थानों, सर्व भूमिकाओं तथा अन्तःपुर में भी बेरोक-टोक आना-जाना करता रहता था।

3. King Shridaam had a minister named Subandhu, who was well versed in four prongs of politics, namely *saam* (incantation), *bhed*, (guile), *dand* (threat), and *upapradan* (*daam* or bribery). The minister had a perfect and handsome son named Bahumitraputra. King Shridaam had a barber (*alankarik* or hair-styler). Besides performing all his duties as a beautician he was a confidante of the king. On king's order he had unrestricted access at every place and involvement in all activities to the extant that he visited the private quarters of the king's palace unchecked and at will.

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा निग्गया, राया निग्गओ जाव परिसा पडिगया।

४. उस काल उस समय में मथुरा नगरी में भगवान महावीर स्वामी पधारे। श्रोता परिषद् व राजा भगवान की धर्मदेशना श्रवण करने नगर से निकले, धर्मदेशना सुनकर वापिस चले गये।

4. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in Mathura city. The king and the people came out of the city to attend his discourse. After the discourse they returned home.

गौतम स्वामी का प्रश्न

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स जेट्ठे जाव रायमग्गमोगाढे तहेव हत्थी, आसे, पुरिसे, पासइ। तेसिं च पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ जाव नरनारिसंपरिवुडं। तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा चच्चरंसि तत्तंसि अयोमयंसि समजोइभूयसीहासणंसि निवेसावेंति। तयाणंतरं च णं पुरिसाणं मज्झगयं पुरिसं बहूहिं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइभूएहिं, अप्पेगइया तंबभरिएहिं, अप्पेगइया तउयभरिएहिं, अप्पेगइया सीसगभरिएहिं, अप्पेगइया कलकलभरिएहिं, अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं, महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति।

तयाणंतरं च णं तत्तं अयोमयं समजोइभूयं अयोमयसंडासएणं गहा य हारं पिणद्धंति। तयाणंतरं च णं अद्धहारं पिणद्धंति जाव पट्टं मउडं पिणद्धंति। चिंता तहेव जाव वागरेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. उस समय भगवान महावीर के ज्येष्ठ शिष्य गणधर गौतम भिक्षा के लिए नगरी में पधारे। लौटते हुए राजमार्ग पर आये। वहाँ उन्होंने (पिछले वर्णन की तरह) हाथियों, घोड़ों और पुरुषों को देखा, तथा उन पुरुषों के मध्य में बहुत से नर-नारियों से घिरे हुए एक पुरुष को देखा। राजपुरुष उस पुरुष को, चौराहे के बीच अग्नि के समान तपे हुए लाल-लाल लोहमय सिंहासन पर बैठाते हैं। बैठाकर कोई-कोई राजपुरुष उसको अग्नि के समान उष्ण लोहे से भरे, पिघले ताँबे से भरे, जस्ता-रांगा से भरे, पिघले सीसा से भरे, कल-कल शब्द करते हुए गर्म-गर्म पानी से भरे, क्षार मिले तैल से भरे, अग्नि के समान लाल-लाल तपे गर्म कलशों के द्वारा महान् राज्याभिषेक की तरह उसको अभिषेक-स्नान कराते हैं।

इसके पश्चात् उसे लोहमय संडासी से पकड़कर अग्नि के समान तपे हुए लोहे के अठारह लड़ियों वाले हार, नौ लड़ी वाले हार पहनाते हैं, मस्तक पर गर्म लोहे का पट्टा बाँधते हैं, एवं गर्म लोहे का बना आभूषण अथवा मुकुट पहनाते हैं।

यह भयावह दृश्य देखकर गौतम स्वामी का हृदय द्रवित हो उठता है। विचार करते हैं-यह पुरुष साक्षात् नारकीय वेदना भोग रहा है, आदि पूर्व के समान जिज्ञासा उत्पन्न होने पर गौतम स्वामी भगवान के पास आकर उस पुरुष का पूर्वभव सम्बन्धी वृत्तान्त पूछते हैं। भगवान उत्तर में इस प्रकार कहते हैं-

GAUTAM SWAMI'S CURIOSITY

5. During that period of time Bhagavan Mahavir's senior disciple Ganadhar Gautam came to the city to seek alms. While returning after collecting alms he came to the main road. There he saw many elephants, horses and foot soldiers duly equipped with armours and weapons. Amongst them he saw a prisoner surrounded by many men and women. In the middle of the crossing the state guards made him sit on a red hot throne made of iron. After making him sit on the throne, as if lavishly anointing him for coronation, they poured on him, from red hot urns, a variety of bubbling and scalding liquids including—molten iron, molten copper, molten zinc, molten lead and boiling water.

After that they embellished him with red hot eighteen and nine string necklaces on the neck, tied a red hot metal strap on his forehead and placed a crown and other ornaments of red hot iron on his head.

Gautam Swami was touched at this horrifying scene. He was thoughtful—This man is, indeed suffering infernal torture and pain... and so on up to... He came to Bhagavan Mahavir and asked about the past birth of that person. In reply *Bhagavan* said—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सीहपुरे नामं नयरे होत्था। रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं सीहपुरे नयरे सीहरहे नामं राया होत्था। तस्स णं सीहरहस्स रन्नो दुज्जोहणे नामं चारगपालए होत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

६. गौतम ! उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष में सिंहपुर नामक एक धन–भवनादि से समृद्ध नगर था। वहाँ सिंहरथ नाम का राजा राज्य करता था। उस राजा के दुर्योधन नाम का चारकपाल–कारागाररक्षक–(जेलर) था, जो महाअधर्मी यावत् पाप कर्मों से ही आनन्द मानने वाला था।

PREVIOUS BIRTH OF NANDIVARDHAN

6. Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Simhapur in Bharatvarsh area in Jambu continent. A king named Simharath was the ruler of that city. King Simharath had a jailer (*charak-paal*) named Duryodhan who was irreligious... and so on up to... enjoyed evil deeds only.

चारकपाल का घोर अत्याचार

७. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स इमेयारूवे चारगभंडे होत्था–

(१) बहवे अयकुंडीओ अप्पेगइयाओ तंबभरियाओ, अप्पेगइयाओ तउयभरियाओ, अप्पेगइयाओ सीसभरियाओ, अप्पेगइयाओ कलकलभरियाओ, अप्पेगइयाओ खारतेल्लभरियाओ अगणिकायंसि अद्दहियाओ चिट्ठंति।

(२) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारपालगस्स बहवे उट्टियाओ अप्पेगइयाओ आसमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ हत्थिमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ गोमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ महिसमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ उट्टमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ अयमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ एलमुत्तभरियाओ बहुपडिपुण्णाओ चिट्ठंति।

(३) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे हत्थंडुयाणं य पायंडुयाण य हडीण य नियलाण य संकलाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

(४) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे वेणुलयाण य वेत्तलयाण य चिंचालयाण य छियाण य कसाण य वायरासीण य पुंजा निगरा चिट्ठंति।

(५) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सिलाण य लउडाण य मोग्गराण य कणंगराण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(६) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे तंतीण य वरत्ताण य वागरज्जूण य वालय–सुत्तरज्जूण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

(७) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे असिपत्ताण य करपत्ताण य खुरपत्ताण य कलम्बचीरपत्ताण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

(८) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे लोहखीलाण य कडगसक्कराण य चम्मपट्टाण य अल्लपट्टाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

(९) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सूईण य डंभणाण य कोट्टिल्लाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

(१०) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे पच्छाण (सत्थाण) य पिप्पलाणय कुहाडाण य नहच्छेयणाण य दब्भतिणाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

७. दुर्योधन नामक उस चारकपाल के (अपराधियों को कठोर दण्ड देने के लिए) निम्न **चारकभाण्ड**–दण्ड देने के कारागार सम्बन्धी साधन–उपकरण थे। जैसे–

(१) लोहे की अनेक प्रकार की **कुण्डियाँ** थी, जो हर समय आग पर रखी रहती थीं। उनमें से कई एक ताँबे से भरी थी, कई एक त्रपु–रांगा जस्ता से भरी थी, कई एक सीसे से भरी थी तो कितनीक क्षार चूर्णमिश्रित जल (जिस जल का स्पर्श होते ही जलन उत्पन्न हो जाये) से भरी हुई थी और कितनीक क्षारयुक्त तैल से भरी थी।

(२) दुर्योधन नामक उस चारकपाल के पास **उष्ट्रिकाएँ**–ऊँट की पीठ के समान बड़े–बड़े आकार के बर्तन (मटके) थे–उनमें से किसी में अश्वमूत्र भरा हुआ था, किसी में हाथी का मूत्र भरा था, कितनेक उष्ट्रमूत्र से, कितनेक गोमूत्र से, कितनेक महिषमूत्र से, कितनेक बकरे के मूत्र से तो कितनेक भेड़ों के मूत्र से भरे हुए रहते थे।

(३) उस दुर्योधन चारकपाल के पास अनेक **हस्तान्दुक**–हाथ बाँधने के काष्ठ निर्मित बन्धन–हथकड़ी, **पादान्दुक**–पैर में बाँधने का बन्धन, **हडि**–काठ की बेड़ी, **निगड**–लोहे की बेड़ी और **शृंखला**–लोहे की जंजीर के **पुंज**–ऊँची चोटी वाले ढेर तथा **निकर**–चोटी रहित फैला हुआ ढेर बनाए हुए रखे थे।

(४) उस दुर्योधन चारकपाल के पास वेणुलताओं–बांस के चाबुकों, बेंत के चाबुकों, चिंचा–इमली के चाबुकों, कोमल चर्म के चाबुकों, सामान्य चर्मयुक्त चाबुकों, वल्कलरश्मियों–वृक्षों की त्वचा से निर्मित चाबुकों के पुंज व निकर बने हुए रखे थे।

(५) उस दुर्योधन चारकपाल के पास अनेक शिलाओं, लकड़ियों, मुद्गरों और कनंगरों–जल में चलने वाले जहाज आदि को स्थिर करने वाले यन्त्रविशेष (लंगर) के पुंज व निकर रखे रहते थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(६) उस दुर्योधन चारकपाल के पास अनेक प्रकार की चमड़े की रस्सियों, सामान्य रस्सियों, वृक्षों की छाल से निर्मित रस्सियों, केशररज्जुओं ऊनी रस्सियों और सूत्र रज्जुओं सूती रस्सियों के पुंज व निकर रखे रहते थे।

(७) उस दुर्योधन चारकपाल के पास असिपत्र–कृपाण करपत्र–आरा क्षुरपत्र–(उस्तरा) और कदम्बचीरपत्र (शस्त्र–विशेष) के भी पुंज व निकर रखे रहते थे।

(८) उस दुर्योधन चारकपाल के पास लोहे की कीलों, बाँस की सलाइयों, चमड़े के पट्टों व अल्लपट्ट–बिच्छू की पूँछ के आकार जैसे शस्त्र–विशेष के पुंज व निकर रखे रहते थे।

(९) उस दुर्योधन चारकपाल के पास अनेक सुइयों, दम्भनों–अग्नि में तपाकर जिनसे शरीर में दाग दिया जाता है, ऐसी सलाइयों तथा लघु मुद्गरों के पुंज व निकर रखे रहते थे।

(१०) उस दुर्योधन के पास अनेक प्रकार के शस्त्र, पिप्पल (छोटे छुरे) कुठार–कुल्हाड़ों, नखच्छेदक–नेहरनों एवं डाभ की नोंक से तीक्ष्ण हथियारों के पुंज व निकर रखे रहते थे।

EXCESSIVE TYRANNY OF THE JAILER

7. Jailer Duryodhan had numerous prison instruments (*charak bhaand*) for third degree torture of prisoners (listed as follows)—

(1) A variety of iron pots (*kundi*) placed on fire always. Many of these were filled with copper, many with zinc (*trapu*), many with lead, and many others with alkaline or acidic water and oil (that gives burning sensation on touch).

(2) That Jailer Duryodhan had many large pitcher-like pots shaped like hump of a camel (*ushtrika*). Some of these were filled with urine of horses, others with that of elephants, camels, cows, buffaloes, goats, and sheep.

(3) That Jailer Duryodhan had many wooden hand-cuffs (*hastanduk*), fetters for feet (*padanduk*), wooden shackles (*hadi*), iron shackles (*nigad*), and iron chains (*shrinkhala*). They were stored in stacks (*punj*) and bunches (*nikar*).

(4) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of a variety of whips made of bamboo creepers, cane creepers, tamarind creepers, soft leather, ordinary leather, and hemp and other barks (*valkal rashmi*).

(5) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of stone slabs, sticks, clubs or maces, and anchors (*kanangar*).

(6) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of ordinary ropes and those made of leather, hessian or other barks, woolen yarn, and cotton yarn.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(7) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of weapons like swords (*asipatra*), saw blades (*karapatra*), razor blades (*kshurapatra*), and *kadambachirapatra* (a kind of blade).

(8) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of iron nails, bamboo-pegs, leather straps, and hooks (*allapatt*).

(9) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of needles, rods (meant for hot piercing), and small maces.

(10) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of small weapons, small knives, axes, small chisels (nail-cutters), and other small tools with edges as sharp as a blade of grass.

८. तए णं से दुज्जोहणे चारगपालए सीहरहस्स रन्नो बहवे चोरे य पारदारिए य गंठिभेए य रायावयारी य अणहारए य बालघायए य विस्संभघायए य जूयगरे य खंडपट्टे य पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावित्ता—

(१) उत्ताणए पाडेइ, पाडेत्ता लोहदंडेणं मुहं विहाडेइ, विहाडित्ता अप्पेगइए तत्ततंबं पज्जेइ, अप्पेगइए तउयं पज्जेइ, अप्पेगइए सीसगं पज्जेइ, अप्पेगइए कलकलं पज्जेइ, अप्पेगइए खारतेल्लं पज्जेइ, अप्पेगइयाणं तेणं चेव अभिसेयगं करेइ।

(२) अप्पेगइए उत्ताणए पाडेइ, पाडित्ता आसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए हत्थिमुत्तं पज्जेइ, जाव एलमुत्तं पज्जेइ।

(३) अप्पेगइए हेट्ठामुहे पाडेइ, छडछडस्स वम्मावेइ, वम्मावित्ता अप्पेगइए तेणं चेव ओवीलं दलयइ।

(४) अप्पेगइए हत्थंदुयाइं बंधावेइ, अप्पेगइए पायंदुए बंधावेइ, अप्पेगइए हडिबंधणं करेइ, अप्पेगइए नियडबंधणं करेइ, अप्पेगइए संकोडियमोडियं करेइ, अप्पेगइए संकलबंधणं करेइ।

(५) अप्पेगइए हत्थछिन्नए करेइ जाव सत्थोवाडियं करेइ,

(६) अप्पेगइए वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि य हणावेइ।

(७) अप्पेगइए उत्ताणए कारवेइ, कारेत्ता उरे सिलं दलावेइ, तओ लउडं छुहावेइ, छुहावित्ता पुरिसेहिं उक्कंपावेइ।

(८) अप्पेगइए तंतीहि य जाव सुत्तरज्जुहि य हत्थेसु पाएसु य बंधावेइ, अगडंसि ओचूलयालगं पज्जेइ।

(९) अप्पेगइए असिपत्तेहि य जाव कलंबचीरयपत्तेहि य पच्छावेइ, पच्छावेत्ता खारतेल्लेणं अब्भिंगावेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१०) अप्पेगइए निडालेसु य अवदूसु य कोप्परेसु य जाणुसु य खलुएसु य लोहकीलए कडसक्कराओ य दवावेइ, अलिए भंजावेइ।

(११) अप्पेगइए सूईओ डंभणाणि य हत्थंगुलियासु य पायंगुलियासु य कोट्टिल्लएहि य आउडावेइ आउडावेत्ता भूमिं कंडूयावेइ।

(१२) अप्पेगइए सत्थेहि य जाव नहच्छेयणेहि य अंगं पच्छावेइ. दब्भेहि य कुसेहि य ओल्लबद्धेहि य वेढावेइ, वेढावेत्ता आयवंसि दलयइ, दलइत्ता सुक्के समाणे चडचडस्स उप्पावेइ !

८. वह दुर्योधन चारकपाल सिंहरथ राजा के अनेक चोर, परस्त्रीलम्पट, ग्रन्थिभेदक–गाँठकतरों, राज के अपकारी–दुश्मनों, ऋणधारक–ऋण लेकर वापिस नहीं करने वालों, बालघातकों, विश्वासघातियो जुआरियों और धूर्त पुरुषों को राजपुरुषों के द्वारा पकड़वाकर

(१) ऊर्ध्वमुख–सीधा–चित्त गिराता है और गिराकर लोहे के दण्डे से मुँह को खोलता है और खोलकर कितनेक को तपा हुआ गर्म–गर्म ताँबा पिलाता है, कितनेक को खोलता हुआ रांगा, सीसा, चूर्णादिमिश्रित जल अथवा कलकल शब्द करता हुआ अत्यन्त उष्ण जल और क्षारयुक्त तैल पिलाता है तथा कितनों को इन्हीं से अभिषेक–स्नान कराता है।

(२) कितनों को ऊर्ध्वमुख–सीधा गिराकर उन्हें अश्वमूत्र, हस्तिमूत्र यावत् भेड़ों का मूत्र पिलाता है।

(३) कितनों को अधोमुख गिराकर छड्–छड् शब्द पूर्वक वमन कराता है और कितनों को (उसी के सिर पर रखकर) पीड़ा देता है अथवा उसे ही उसका वमन पिला देता है।

(४) कितनों को हथकड़ियों, बेड़ियों से, हडिबन्धनों (हथकड़ियों) व निगडबन्धनों (बेड़ियों) से बाँधता है। कितनों के शरीर को सिकोड़ता व मरोड़ता है। कितनों को सांकलों से बाँधता है।

(५) कितनों का हस्तच्छेदन–हाथ काटता है यावत् शस्त्रों से चीरता–फाड़ता है।

(६) कितनों को वेणुलताओं–बाँस के चाबुकों, वृक्षत्वचा के चाबुकों आदि से पिटवाता है।

(७) कितनों को सीधा गिराकर उनकी छाती पर शिला व लक्कड़ रखवा कर राजपुरुषों द्वारा उत्कम्पन–ऊपर–नीचे कराता है कि जिससे हड्डियाँ तड्–तड् कर टूट जायें।

(८) कितनों के चर्मरज्जुओं–चमड़े की रस्सियों सूत की रस्सियों से हाथों और पैरों को बँधवाता है, बँधवाकर कुए में उल्टा लटकवाता है, लटकाकर गोते खिलाता है।

(९) कितनों का असिपत्रों–तलवारों यावत् कलम्बचीरपत्रों से छेदन कराता है और उस पर क्षार मिला तैल डालकर मर्दन कराता है।

(१०) कितनों के मस्तकों, कण्ठमणियों, घंटियों, कोहनियों, जानुओं तथा गुल्फों–गिट्टों में लोहे की कीलों को तथा बाँस की शलाकाओं को ठुकवाता है तथा वृश्चिककण्टकों–बिच्छु के काँटों को शरीर में प्रविष्ट कराता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-८

Illustration No. 8

जैसा किया; वैसा पाया

दृश्य–१

मथुरा नगरी में गोचरी हेतु भ्रमण करते गौतम स्वामी ने नगर चौराहे पर एक दृश्य देखा, एक पुरुष गर्म तपते लोहे के सिंहासन पर बैठा है। हाथ–पैर कठोर बन्धनों से बँधे हैं। सिर पर गर्म तवे सी लोहे की पट्टी बँधी है। राजपुरुषों ने उसके कान–नाक काट लिए हैं, शरीर में गर्म–गर्म भालों की नोंक चुभो रहे हैं। गर्म उबलता हुआ ताँबा उसके शरीर पर डाला जा रहा है। वह जोर–जोर से चीख–चिल्ला रहा है।

दृश्य–२

इस दयाजनक स्थिति को देखकर गणधर गौतम प्रभु से पूछते हैं भन्ते ! इसने ऐसा क्या क्रूर कर्म किया था ?

दृश्य–३

भगवान बताते हैं, पूर्व जन्म में यह सिंहपुर नगर के सिंहरथ राजा का दुर्योधन नाम का चारकपाल था। उसके पास बड़ी–बड़ी कुण्डियाँ, उबलते ताँबे–सीसे से भरी रहती थी। मिट्टी के घड़ों में घोड़ों, ऊँटों, गायों व मेंढ़ों आदि का मूत्र भरा रहता था। जब कभी किसी अपराधी को पकड़ता तो चार आदमी उसे पकड़ कर हाथ–पैर खींचते। कुछ आदमी गर्म उबलता सीसा, ताँबा, लोहा तथा गौ मूत्र आदि उसके मुँह में डालते। किसी के घुटने आदि संधि स्थानों पर लोहे की कीलें ठोंक दी जाती, किसी को चमड़े की गीली चाबुकों से पीटकर लहुलुहान किया जाता। दुर्योधन निर्दयतापूर्वक उनको असह्य यातना देकर तड़पा–तड़पाकर मारता।

इन क्रूर कर्मों के फलस्वरूप वह नरक यातनाएँ भोगता हुआ यहाँ मथुरा के श्रीदाम राजा का पुत्र बना है। यहाँ पर इसने राजलोभ में आकर अपने पिता की हत्या का षड्यन्त्र किया। राजा को षड्यंत्र का पता चल गया, तब उसे पितृद्रोह का यह कठोर दण्ड दिया है। *–श्रुतस्कन्ध १, अ. ६, सूत्र ६*

REAP AS YOU SOW

SCENE-1

While seeking alms in Mathura city Gautam Swami saw a horrifying scene on the crossing. A shackled person is sitting on a hot iron seat. His head is strapped in hot iron strip. Guards have severed his nose and earlobes. They are goading his body with hot lances. Molten copper is being poured on his body. He is shrieking and wailing loudly.

SCENE-2

On seeing his pathetic condition Gautam Swami asks—*Bhante* ! What cruel deed he committed ?

SCENE-3

Gautam ! In his past birth he was the jailer of king Simharath of Simhapur. He had large pots filled with molten copper and lead. He had earthen pots filled with urine of horses, camels, cows, sheep etc. Whenever he caught a criminal four guards held the prisoner and stretched his limbs. Some guards poured molten metals and urines of animals in his mouth. Some criminals he tortured by hammering pegs in their joints, others he got bloodied by thrashing with whips of wet leather. Duryodhan killed them after cruelly torturing them. As a consequence of these cruel deeds he suffered infernal tortures and was born as the son of king Shridaam of Mathura. Coveting for the kingdom he conspired to kill his father. The king came to know of it and has sentenced him to this harsh punishment.

—Sec. I, Ch. 6, Sutra : 6

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(११) कितनों के हाथ की अंगुलियों तथा पैर की अंगुलियों में मुद्गरों द्वारा सूइयाँ चुभाता है, तथा दम्भनों–दागने के शस्त्रविशेषों को प्रविष्ट कराकर भूमि को खुदवाता है।

(१२) कितनों का शस्त्रों व नेहरनों से अंग छिलवाता है और दर्भों–जड़ सहितकुशाओं, कुशाओं–जड़रहित कुशाओं तथा आर्द्र चर्मों–गीले चमड़ों द्वारा बँधवाता है। तदनन्तर धूप में गिराकर उनके सूखने पर इतनी जोर से उखाड़ लेता था कि–चड़–चड़ शब्द करती हुई चमड़ी फट जाती थी।

8. That Jailer Duryodhan would get captured, by king's police, different types of criminals including—thieves, adulterers, pick-pockets (*granthibhedak*), king's enemies, defaulters, killers of children, traitors, gamblers, and villains. He would then torture them many ways as follows—

(1) Making them lie on their back, face upward (*urdhvamukh*), and opening mouths with iron bars, he would force some of them to swallow molten copper, molten zinc, lead, hot and alkaline or acidic water and oil. And some he would force to take bath with these scalding liquids.

(2) Making many of them lie on their back, face upward, he would force some of them swallow urine of horses, elephants,... and so on up to... sheep.

(3) Making many of them lie on their belly, face downward, he would force some of them to vomit with sounds of 'chhad-chhad' (like sound of a whiplash), and some he would torment by forcing them swallow their own vomit.

(4) Many of them he would shackle with wooden hand-cuffs, fetters for feet, wooden shackles (*hadi*), and iron shackles (*nigad*). Some he would torture by squeezing and twisting. Some he would tie with iron chains.

(5) He would cut off hands of some. He would pierce and slit others with different types of weapons.

(6) He would get some of them beaten with whips made of bamboo creepers,... and so on up to... hemp and other barks.

(7) He would get some lie down on their backs and place heavy stone slabs or wooden logs on their chests. Having done that he would make policemen to heave the weights up and down in order to break the bones of the culprits.

(8) He would get hands and feet of some tied with ropes made of leather,... and so on up to... cotton yarn, suspend them upside down in a well, and dip them in water.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(9) He would get many pierced and slit with swords... and so on up to... and *kadambachirapatra* and get alkaline oil rubbed in.

(10) He would get nails and bamboo pegs hammered in heads, Adam's apples, elbows, knees, and heels of some and get hooks inserted in some.

(11) Using small clubs he would get needles and other pointed instruments thrust in the fingers and toes of some and force them to dig earth with these hands and feet.

(12) With numerous chisel-like instruments he would get various parts of the bodies of some scraped and get these parts wrapped with *darbh* (grass with roots), *kusha* (grass without roots) and wet leather. After that he would prostrate them in sun and pull out the wrappings when dry, in order to make the skin peal off with 'chad-chad' sound.

अत्याचार का दुष्परिणाम

९. तए णं से दुज्जोहणे चारगपालए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एगतीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

९. वह दुर्योधन चारकपाल इस प्रकार की निर्दयतापूर्ण प्रवृत्तियों को अपना कर्म, विशेष ज्ञान व सर्वोत्तम आचरण मानता हुआ अत्यधिक पापकर्मों का उपार्जन कर रहा था। इकतीससौ वर्ष की आयु पूरी करके मृत्यु प्राप्त करके छठे नरक में उत्कृष्ट २२ सागरोपम की स्थिति वाले नारकियों में नारक रूप में उत्पन्न हुआ।

BITTER FRUITS OF TYRANNY

9. Ever involved in these sinful activities, accepting these activities to be ideal of his life and the best conduct, Jailer Duryodhan acquired extremely malevolent and pain causing *karmas* in abundance. After completing his life-span of three thousand one hundred years, he died and reincarnated in the sixth hell among the infernal beings having a maximum life span of twenty two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time).

१०. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव महुराए नयरीए सिरिदामस्स रन्नो बंधुसिरीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने। तए णं बंधुसिरी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारगं पयाया। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्ते बारसाहे इमं एयारूवं नामधेज्जं करेंति–'होउ णं अम्हं दारगे नंदिसेणे नामेणं'।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से नंदिसेणे कुमारे पंचधाईपरिवुडे जाव परिवड्ढइ। तए णं नंदिसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे जाव विहरइ, जोव्वणगमणुप्पत्ते जुवराया जाए यावि होत्था।

तए णं से नंदिसेणे कुमारे रज्जे य जाव अंतेउरे य मुच्छिए इच्छइ सिरिदामं रायं जीवियाओ ववरोवेत्तए, सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे, पालेमाणे विहरित्तए। तए णं से नंदिसेणे कुमारे सिरिदामस्स रन्नो बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे विहरइ।

१०. उस दुर्योधन चारकपाल का जीव छट्ठे नरक से निकलकर सीधा इस मथुरा नगरी में श्रीदाम राजा की बन्धुश्री देवी की कुक्षि में पुत्ररूप से उत्पन्न हुआ। लगभग नव मास परिपूर्ण होने पर बन्धुश्री ने बालक को जन्म दिया। तत्पश्चात् बारहवें दिन माता-पिता ने नवजात बालक का नन्दिषेण नाम रखा।

पाँच धायमाताओं द्वारा सार-संभाल किया जाता हुआ नन्दिषेण कुमार वृद्धि को प्राप्त होने लगा। जब युवावस्था को प्राप्त हुआ तब युवराज पद से अलंकृत भी हो गया।

तत्पश्चात् राज्य और अन्तःपुर में अत्यन्त आसक्त हुआ नंदिषेण कुमार श्रीदाम राजा को मारकर स्वयं ही राज्यलक्ष्मी को भोगने एवं प्रजा पर शासन करने की इच्छा करने लगा। इसलिए नन्दिषेण कुमार श्रीदाम राजा के अनेक अन्तर-अवसर, छिद्र-जिस समय पारिवारिक व्यक्ति पास नहीं हों, अथवा विरह-कोई भी पास न हो, राजा अकेला ही हो, ऐसे अवसर की प्रतीक्षा करने लगा।

10. On leaving the sixth hell, the evil soul of that Jailer Duryodhan was conceived as a son in the womb of Bandhushri, the wife of king Shridaam in this Mathura city. On the twelfth day after his birth the parents named the child as Nandishen.

He was brought up under the care of five nursemaids. In due course he crossed adolescence and attained youth and was made the crown prince.

Having excessive craving for the kingdom and the harem, prince Nandishen was obsessed with the desire to kill king Shridaam and enjoy the royal wealth and power. Therefore, prince Nandishen got himself involved in seeking an opportunity when king Shridaam was alone, when no other royal person was there and when even an ordinary person was also not there.

पितृवध का दुःसंकल्प

११. तए णं से नंदिसेणे कुमारे सिरिदामस्स रन्नो अंतरं अलभमाणे अन्नया कयाइ चित्तं अलंकारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमीसु य अंतेउरे य दिन्नवियारे सिरिदामस्स रन्नो अभिक्खणं अभिक्खणं अलंकारियं कम्मं करेमाणे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहरसि। तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रन्नो अलंकारियं कम्मं करेमाणे गीवाए खुरं निवेसेहि। तो णं अहं तुम्हं अद्धरज्जयं करिस्सामि। तुमं अम्हेहिं सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्ससि।'

तए णं से चित्ते अलंकारिए नंदिसेणस्स कुमारस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ।

११. इतने पर भी, श्रीदाम नरेश की हत्या का अवसर प्राप्त नहीं होने से नन्दिषेण कुमार ने किसी अन्य समय चित्र नामक नाई को बुलाकर कहा–देवानुप्रिय ! तुम श्रीदाम नरेश के सर्वस्थानों, सर्वभूमिकाओं में अग्रणी हो, अन्तःपुर में स्वेच्छापूर्वक आ–जा सकते हो (उनके अत्यन्त विश्वासपात्र हो) और श्रीदाम नरेश का बारम्बार क्षौरकर्म करते हो। अतः यदि तुम श्रीदाम नरेश के क्षौरकर्म करने के अवसर पर उसकी गर्दन पर उस्तरा चला दो–इस प्रकार यदि तुम्हारे हाथों राजा की मृत्यु हो जाये तो मैं तुमको आधा राज्य दे दूँगा। तब तुम भी हमारे साथ मनचाहे श्रेष्ठ कामभोगों का उपभोग करते हुए सानन्द समय व्यतीत कर सकोगे।

चित्र नाई कुमार नन्दिषेण के उक्त कथन को सुनकर चुप रहा।

EVIL IDEA OF KILLING HIS FATHER

11. When he did not get any such opportunity to kill king Shridaam, one day he called Chitra barber and said—"Beloved of gods ! You have unrestricted access at every place, involvement in all activities, and you can visit even the private quarters of the king unchecked and at will (you are his close confidante). You regularly give him haircut and shave. As such, if while shaving king Shridaam you cut his throat and consequently the king dies, I will give you half the kingdom. Then, along with me, you will also be able to enjoy all the desirable and best of the pleasures and comforts and live happily ever after.

Chitra barber remained silent at this statement from prince Nandishen.

षड्यंत्र विफल : घोर कदर्थना

१२. तए णं तस्स चित्तस्स अलंकारियस्स इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–'जइ णं मम सिरिदामे राया एयमट्ठं आगमेइ, तए णं मम न नज्जइ केणइ असुभेणं कु–मारेणं मारिस्सइ त्ति कट्टु भीए जेणेव सिरिदामे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिदामं रायं रहस्सियगं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–

'एवं खलु सामी ! नंदिसेणे कुमारे रज्जे य जाव मुच्छिए इच्छइ तुम्हें जीवियाओ ववरोवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए।'

तए णं से सिरिदामे राया चित्तस्स अलंकारियस्स एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव साहट्टु नंदिसेणं कुमारं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावित्ता एएणं विहाणेणं आणवेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'तं एवं खलु गोयमा ! नंदिसेणे पुत्ते जाव विहरइ।'

१२. परन्तु कुछ ही समय के बाद चित्र नाई के मन में यह सन्देह व भय मिश्रित विचार उत्पन्न हुआ कि ''यदि किसी प्रकार से श्रीदाम नरेश को इस षड्यन्त्र का पता लग गया तो न मालूम वे मुझे किस कु-मौत से मारेंगे। इस विचार के आते ही वह भयभीत हो उठा और एकान्त में गुप्त रूप में महाराज श्रीदाम के पास आया। दोनों हाथ जोड़कर विनयपूर्वक इस प्रकार बोला-

'स्वामिन् ! निश्चय ही नन्दिषेण कुमार राज्य लोभ में फँसा राज्य प्राप्त करने को आतुर होकर आपका वध करके स्वयं ही राज्यलक्ष्मी को भोगना चाह रहा है।'

श्रीदाम नरेश ने चित्र अलंकारिक से इस बात को सुनकर उस पर विचार किया और अत्यन्त क्रोध में आकर नन्दिषेण को अपने अनुचरों द्वारा पकड़वाकर इस पूर्वोक्त प्रकार से मार डालने का राजपुरुषों को आदेश दिया है।

(भगवान कहते हैं) 'हे गौतम ! नन्दिषेण कुमार इस प्रकार अपने किये अशुभ पापमय कर्मों के फल को भोग रहा है।

CONSPIRACY FAILS : GRAVE CONSEQUENCES

12. However, a little later Chitra barber was plagued with a doubt and apprehension—"If somehow king Shridaam comes to know of this conspiracy, I do not know what ghastly death he will deal me." Terrified by this thought he furtively went to the king when alone, and joining his palms submitted humbly—

"My lord ! I know it for a fact that, overwhelmed by his greed for the kingdom, prince Nandishen is eager to possess the kingdom and enjoy the royal wealth by killing you."

King Shridaam listened to what the barber said, thought over it, got Nandishen captured by his guards and sentenced him to death as stated above.

Gautam ! This way that prince Nandishen is suffering for the sinful deeds he committed in the past.

नन्दिषेण का भविष्य

१३. 'नंदिसेणे कुमारे इओ चुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?'

'गोयमा ! नंदिसेणे कुमारे सट्ठिवासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए संसारो तहेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तओ हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तत्थ मच्छिएहिं वहिए समाणे तत्थेव सेट्ठिकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। बोहिं सोहम्मे कप्पे महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिइ। निक्खेवो।

॥ षष्ठम अज्झयणं समत्तं ॥

१३. गौतम स्वामी ने भगवान से पूछा–भगवन् ! नन्दिषेण कुमार मृत्यु के समय यहाँ से काल करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान ने उत्तर दिया–गौतम ! यह नन्दिषेण कुमार साठ वर्ष की परम आयु को भोगकर मृत्यु के समय मर कर रत्नप्रभा नामक प्रथम–नरक में उत्पन्न होगा। इसका शेष संसार भ्रमण मृगापुत्र के समान समझ लेना यावत् वह पृथ्वीकाय आदि सभी कायों में लाखों बार जन्म–मरण करता रहेगा।

पृथ्वीकाय से निकलकर हस्तिनापुर नगर में मत्स्य रूप में उत्पन्न होगा। वहाँ मच्छीमारों के द्वारा उसका वध किया जायेगा। फिर वहीं हस्तिनापुर नगर में एक श्रेष्ठि कुल में पुत्ररूप में उत्पन्न होगा। वहाँ पर संयम पालन करते हुए मृत्यु प्राप्त कर महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेगा। वहाँ पर चारित्र ग्रहण करेगा और उसका यथाविधि पालन कर उसके प्रभाव से सिद्ध होगा, बुद्ध होगा, मुक्त होगा और परम निर्वाण को प्राप्त कर सर्व प्रकार के दुःखों का अन्त करेगा।

॥ षष्ठ अध्ययन समाप्त ॥

THE FUTURE OF NANDISHEN

12. Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After his death where will this prince Nandishen go ? Where will he be reborn ?

Bhagavan replied—Gautam ! After completing his life-span of sixty years, prince Nandishen will die and will reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha having a maximum life-span of one *Sagaropam* (a metaphoric unit of time). From there he will follow the cycles of rebirths as mentioned in the first chapter in context of Mrigaputra... and so on up to... will be born millions of times in all hells, as all animals, and as all one sensed beings.

Coming out from there he will be born as a fish in Hastinapur city. After being killed by fishermen he will reincarnate as a son in a merchant family of the same Hastinapur city. There he will get initiated as an ascetic. From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok. Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately. At last he will get enlightened and attain the status of *Siddha* shedding all his *karmas* and ending all misery.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE SIXTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम श्रुतस्कन्ध : सप्तम अध्ययन
उम्बरदत्त (हिंसाकर्मी क्रूर वैद्य)

उपोद्घात

उम्बरदत्त नामक इस सप्तम अध्ययन में पूर्व जन्म कृत घोर हिंसात्मक क्रूरकर्मों का प्रत्यक्ष दुष्परिणाम बताया है। अन्य चरित्रों से इस चरित्र में एक भिन्न प्रकार की कथा है–

धन्वन्तरी वैद्य, जो अपनी अष्टांग चिकित्सा विधि में इतना कुशल व यशस्वी है कि उसका हाथ लगते ही रोगी नीरोग हो जाते हैं। यों तो वैद्य का कर्म- एक परोपकार का कर्म है। चिकित्सक अपनी विद्या से जन-जन के कष्टों व पीड़ाओं का निवारण करके पुण्योपार्जन कर सकता है, परन्तु उसी चिकित्सा कर्म में जब चिकित्सक, दया व करुणा विहीन होकर प्राणियों की हिंसाकर लोगों को माँस भक्षण व मद्य-सेवन का परामर्श देने लगे, उनकी हिंसा के लिए प्रोत्साहित करने लगे और स्वयं भी माँस-मद्य का सेवन कर उसमें आसक्त हो जाये तो वह अपने चिकित्सा धर्म से तो च्युत होता ही है, साथ ही क्रूर हिंसा कर्म करके घोर पापों का उपार्जन भी करता है और जन्म-जन्म तक अनेक जन्मों तक, उसका दुष्फल भोगता रहता है। यही कथ्य इस अध्ययन में व्यक्त हुआ है।

FIRST SHRUTSKANDH : SEVENTH CHAPTER
UMBARADATT (violent and cruel doctor)

INTRODUCTION

This seventh chapter too informs about the grave consequences and bitter fruits of violent and cruel deeds committed during the past birth. However, there is a variation in the theme of this story—

Dhanvantari is a renowned *Vaidya* (an Ayurvedic doctor) who is so proficient in his subject of *Ashtanga Chikitsa* (the eight limbed science of healing) that he cures patients by mere touch. The profession of a *Vaidya* is a profession of beneficence. A healer can acquire meritorious *karmas* by removing misery and pain of masses with the help of his knowledge and expertise. But devoid of the feelings of altruism and compassion while practicing his profession of healing, when a doctor starts advising his patients to consume meat and alcohol, and encouraging them to indulge in violence besides consuming meat and wine himself, he transgresses the ethics of his profession. Besides this he also acquires highly demeritorious *karmas* through such cruel and violent activity. He suffers the grave consequences of the same for many rebirths. This is what has been conveyed in this chapter.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्तम अध्ययन
SEVENTH CHAPTER

प्रस्तावना

१. 'जइ णं भंते !' उक्खेवो सत्तमस्स।

१. भगवन् ! यदि श्रमण भगवान महावीर ने दुःखविपाक के छट्ठे अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो भगवान ने सातवें अध्ययन का क्या अर्थ कहा है? (इस प्रकार सप्तम अध्ययन की प्रस्तावना पूर्ववत् जान लेनी चाहिए।)

FOREWORD

1. The foreword of the seventh chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the sixth chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of the seventh chapter ?)

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडलिसंडे नयरे। वणखंडे नामं उज्जाणे। उंबरदत्ते जक्खे। तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सिद्धत्थे राया।

तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सागरदत्ते सत्थवाहे होत्था, अड्ढे.। गंगदत्ता भारिया, तस्स सागरदत्तस्स पुत्ते गंगदत्ताए भारियाए अत्तए उम्बरदत्ते नामं दारए होत्था–अहीण.।

२. जम्बू ! उस काल उस समय में पाटलिखंड नाम का एक नगर था। वहाँ वनखण्ड नाम का उद्यान था। उस उद्यान में उम्बरदत्त नामक यक्ष का यक्षायतन था। इस नगर में सिद्धार्थ नामक राजा राज्य करता था।

पाटलिखण्ड नगर में सागरदत्त नामक एक धनाढ्य सार्थवाह रहता था। उसकी भार्या का नाम गंगदत्ता था। उस सागरदत्त का पुत्र व गंगदत्ता भार्या का आत्मज उम्बरदत्त नाम का एक पुत्र था। जो सम्पूर्ण पाँच इन्द्रियों वाला सर्वांग सुन्दर था।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Patalikhand. Outside this town was a garden named Vanakhand in which was a temple of Umbaradatt Yaksh.

In Patalikhand city lived a rich caravan chief (*sarthavaha*) named Sagardatt who had a wife named Gangadatta. Sagardatt and Gangadatta had a perfect and beautiful son named Umbaradatt. He was fully endowed, well proportioned and handsome.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ समोसरणं, जाव परिसा पडिगया।

३. उस काल उस समय श्रमण भगवान महावीर वहाँ पधारे। परिषदा दर्शनार्थ आई। धर्मोपदेश सुनकर राजा तथा परिषद् वापिस चले गये।

3. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in the city. People came to pay homage. *Bhagavan* gave his discourse after which the king and the people returned home.

उम्बरदत्त की दुर्दशा

४. तेणं कालेणं तेणं समणेणं भगवं गोयमे, तहेव जेणेव पाडसिलंडे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसइ, तत्थ णं पासइ एगं पुरिसं कच्छुल्लं कोढियं दाओयरियं, भगंदरियं अरिसिल्लं कासिल्लं सासिल्लं सोसिल्लं सुयमूहं सूयहत्थं सडियपायंगुलियं सडियकण्णनासियं रसियाए य पूएण य थिविथिवंतं–वणमुहकिमिउत्तरयंत पगलंत–पूयरुहिरं लालापगलंतकण्णनासं अभिक्खणं अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले य वममाणं, कट्ठाइं कलुणाइं विसराइं कूयमाणं, मच्छियाचडगरपहगरेणं अन्निज्जमाणमग्गं, फुट्टहडाहडसीसं दंडिखंडवसणं खंडमल्लय–खंडघडय–हत्थगयं गेहे–गेहे देहं बलियाए वित्तिं कप्पेमाणं पासइ।

तया भगवं गोयमे उच्च–नीय–मज्झिम–कुलाइं जाव अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ, गिण्हित्ता पाडलिसंडाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता भत्तपाणं आलोएइ, भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता समणेणं अब्भणुन्नाए समाणे जाव बिलमिवपन्नगभूएणं अप्पाणेणं आहारमाहारेइ, संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

४. उस काल उस समय भगवान गौतम स्वामी षष्ठतप–(बेले) के पारणे के निमित्त (दिन के तीसरे पहर में) भिक्षा के लिए पाटलिखण्ड नगर में जाते हैं। उस पाटलिखण्ड नगर में पूर्वदिशा के द्वार से प्रवेश करते हैं। वहाँ एक पुरुष को देखते हैं, जिसका वर्णन निम्न प्रकार है–

वह पुरुष कण्डू–खुजली के रोग से पीड़ित था। कोढ, जलोदर, भगन्दर तथा बवासीर रोग से ग्रस्त था। उसे खाँसी, श्वास व सूजन का रोग भी हो रहा था। उसका मुख सूजा हुआ था। हाथ और पैर भी सूजे–फूले हुए थे। हाथ और पैर की अंगुलियाँ सड़ी हुई थीं, नाक और कान गले हुए थे। व्रणों (घावों) से निकलते सफेद गन्दे पानी तथा पीव से वह 'थिव थिव' शब्द कर रहा था। (अथवा बिलबिलाते हुए) कृमियों से अत्यन्त ही पीड़ित था तथा उसके घाव से पीव और रुधिर झर रहा था। उसके कान और नाक क्लेदतन्तुओं–फोड़े के बहाव के तारों से गल चुके थे। बारबार वह मुख से पीव के कवलों–ग्रासों का, रुधिर के कवलों का तथा कृमियों के कवलों का वमन कर रहा था। अर्थात् उसके मुख से, कृमियों से भरी पीव–रुधिर की उलटियाँ हो रही थी, जिसमें रुधिर–पीव के कवल प्रमाण गोले निकल रहे थे। वह सुनने में कष्टोत्पादक, करुणाजनक एवं दीनतापूर्ण शब्द बोल रहा था। उसके पीछे–पीछे मक्षिकाओं के झुण्ड के झुण्ड

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चले जा रहे थे। उसके सिर के बाल अस्त-व्यस्त थे। उसने थिगली लगे वस्त्रखण्ड धारण कर रखे थे। भिक्षा के लिए फूटे हुए घड़े का टुकड़ा तथा जल के लिए टूटे हुए सिकोरे का टुकड़ा हाथ में लिए वह घर-घर के सामने भीख माँग रहा था।

इधर भगवान गौतम स्वामी ऊँच, नीच और मध्यम घरों में भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए और यथेष्ट भिक्षा प्राप्त कर पाटलिखण्ड नगर से निकलकर श्रमण भगवान महावीर के पास आये। आकर ईर्यापथ की आलोचना की और लाया हुआ आहार-पानी भगवान को दिखाया। उनकी आज्ञा मिल जाने पर बिल में प्रवेश करते हुए सर्प की भाँति-बिना रस लिए ही सहज भावपूर्वक आहार करते हैं; संयम तथा तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरते हैं।

THE MISERY OF UMBARADATT

4. During that period of time Bhagavan Gautam Swami went into Patalikhand city in the afternoon to seek alms for breaking his two-day fast. He entered the city from the eastern gate. There he saw a man described as follows—

He was suffering from *Kandu* or *khaaj* (Eczema) as well as *Kodh* (Leprosy), *Jalodar* (Dropsy), *Bhagandar* (fistula of the anus), and *Bavaseer* (bleeding piles). He was also suffering from diseases like *Khansi* (Bronchitis), *Shvas* (Asthma) and tumescence. His face was swollen and so were his hands and legs. His fingers, toes, nose and ears were in a state of decay. Dirty water and pus was oozing from the pulsating sores on his body. He was tormented by slithering worms in his wounds that were dripping blood and pus. His nose and ears had decayed into a fibrous ooze. He was vomiting and the vomit contained shreds of coagulated pus, blood and worms. He was uttering piercing, pathetic, and plaintive sounds and words. Swarms of flies were following him. His hair were disheveled. He was wearing rags. Carrying broken pitcher and broken earthen-cup in his extended hands, he was seeking alms from every house.

Seeking and collecting required alms from high, medium, and low caste families Bhagavan Gautam Swami left Patalikhand city and came to Shraman Bhagavan Mahavir. After critical review (*pratikraman*) of his movement for alms collection he showed the food to *Bhagavan*. On getting permission, he ate his food without enjoying its taste and only for sustenance, like a snake entering its hole. He then spent his time enkindling his soul with discipline and austerities.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. तए णं से भगवं गोयमे दोच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं जाव पाडलिसंडं नयरं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसइ, तं चेव पुरिसं पासइ—कच्छुल्लं तहेव जाव संजमेणं तवसा विहरइ।

५. उसके बाद भगवान गौतम ने दूसरी बार बेले के पारणे के निमित्त प्रथम प्रहर में स्वाध्याय किया। दूसरे पहर में ध्यान किया तथा तीसरे पहर में भिक्षार्थ गमन करते हुए पाटलिखण्ड नगर में दक्षिण दिशा के द्वार से प्रवेश किया तो वहाँ पर भी कंडू आदि रोगों से युक्त उसी पुरुष को उसी अवस्था में देखा। वे भिक्षा लेकर वापिस आये। यावत् तप व संयम से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

5. Then on a second occasion on the day of breaking his two-day fast Bhagavan Gautam Swami did studies during the first quarter of the day and meditation during the second quarter of the day. During the third quarter he moved out and entered Patalikhand city from the southern gate. There also he saw the same person suffering from Eczema and other ailments in the same condition. He returned after collecting alms... and so on up to... He then spent his time enkindling his soul with discipline and austerities.

६. तए णं से गोयमे तच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव जाव पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविसमाणे तं चेव पुरिसं पासइ कच्छुल्लं !

६. तत्पश्चात् गौतम स्वामी तीसरी बार बेले के पारणे के निमित्त उसी नगर में पश्चिम दिशा के द्वार से प्रवेश करते हैं, तो वहाँ पर भी वे पूर्व में देखे हुए उसी पुरुष को उसी प्रकार भिक्षा माँगते देखते हैं।

6. Then on a third occasion on the day of breaking his two-day fast Bhagavan Gautam Swami entered Patalikhand city from the western gate. There also he saw the same person seeking alms in the same condition.

पूर्वभव सम्बन्धी पृच्छा

७. भगवं गोयमे चउत्थं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरेण.।

इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पन्ने—'अहो णं इमे पुरिसे पुरापोराणाणं जाव एवं वयासी—एवं खलु अहं, भंते ! छट्ठ. रीयंते जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता पाडलिसंडे पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविट्ठे। तत्थ णं एगं पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव वित्तिं कप्पेमाणं। तए अहं दोच्च छट्ठखमणपारणगंसि दाहिणिल्लेणं दुवारेणं, तहेव। तच्चंपि छट्ठक्खमणपारणगंसि पच्चत्थिमेणं, तहेव। तए णं अहं चउत्थं वि छट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरदुवारेणं अणुप्पविसामि, तं चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ। चिंता ममं।' पुव्वभवपुच्छा। वागरेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. इसी प्रकार भगवान गौतम चौथी बार बेले के पारणे के लिए पाटलिखण्ड में उत्तरदिशा के द्वार से प्रवेश करते हैं। तब भी उन्होंने उसी पुरुष को वहाँ (उसी अवस्था में) देखा। उसे देखकर मन में यह चिन्तन व विचार उत्पन्न हुआ कि–''अहो ! यह पुरुष अपने पूर्वकृत अशुभ कर्मों के कटु–विपाक को भोगता हुआ अत्यन्त दुःखमय जीवन बिता रहा है।'' ऐसा सोचकर वापिस आकर उन्होंने भगवान से प्रश्न किया–

'भगवन् ! मैंने बेले के पारणे के निमित्त पाटलिखण्ड नगर की ओर प्रस्थान किया। नगर में पूर्व दिशा के द्वार से प्रवेश किया तो मैंने एक पुरुष को देखा जो कण्डूरोग आदि अनेक रोगों से आक्रान्त था। तथा भिक्षावृत्ति से आजीविका कर रहा था। फिर दूसरी बार पुनः षष्ट तप के पारणे के निमित्त भिक्षा के लिए उक्त नगर के दक्षिण दिशा के द्वार से प्रवेश किया तो वहाँ पर भी उसी पुरुष को उसी रूप में देखा। तीसरी बार पारणे के निमित्त पश्चिम दिशा के द्वार से प्रवेश किया तो वहाँ पर भी पुनः उसी पुरुष को उसी अवस्था में देखा और जब चौथी बार बेले के पारणे के निमित्त पाटलिखण्ड में उत्तर दिशा के द्वार से प्रविष्ट हुआ तो वहाँ पर भी कण्डूरोग से ग्रस्त भिक्षावृत्ति करते हुए उसी पुरुष को देखा। उसे देखकर मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि–''अहो ! यह पुरुष अपने पूर्वोपार्जित अशुभ कर्मों का फल भोग रहा है।'' इत्यादि।

प्रभो ! यह पुरुष पूर्वभव में कौन था ? जो इस प्रकार भीषण रोगों से आक्रान्त हुआ कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है ? भगवान महावीर स्वामी ने तब इस प्रकार उत्तर दिया।

CURIOSITY ABOUT THE PAST BIRTH

7. In the same way on a fourth occasion on the day of breaking his two-day fast Bhagavan Gautam Swami entered Patalikhand city from the northern gate. There also he saw the same person seeking alms in the same condition.

Looking at his condition Bhagavan Gautam Swami thoughtfully contemplated—"Oh ! This man leads a miserable life suffering the fruits of sin as a consequence of the sinful *karmas* he acquired due to evil deeds committed in the past." With these thoughts he returned and asked *Bhagavan*—

"*Bhagavan* I went to Patalikhand city to collect alms. I entered the city from the eastern gate and saw a man suffering from Eczema and many other diseases. He was living on alms. Then on a second occasion on the day of breaking my two-day fast I entered the city from the southern gate. There also I saw the same person in the same condition. Then on a third occasion on the day of breaking my fast I entered the city from the western gate and again saw the same person in the same condition. Finally on a fourth occasion on the day of breaking my fast I entered the city from the northern gate and once again saw the same person in the same condition. On seeing

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

him I thought 'Oh ! This man leads a miserable life suffering the fruits of sin as a consequence of the sinful *karmas* he acquired in the past.' (etc.)

"*Bhante* ! Who was this person, suffering the agony of such terrible ailments, in his past birth ?" Bhagavan Mahavir replied as follows.

पूर्वभव : धन्वन्तरि वैद्य

८. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे विजयपुरे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं विजयपुरे नयरे कणगरहे नामं राया होत्था। तस्स णं कणगरहस्स रन्नो धन्नंतरी नामं वेज्जे होत्था।

अट्ठंगाउव्वेयपाढए, तं जहा–कुमारभिच्चं सालागे सल्लहत्ते कायतिगिच्छा जंगोले भूयविज्जा रसायणे वाजीकरणे। सिवहत्थे सुहहत्थे लहुहत्थे।

८. गौतम ! उस समय (बहुत पूर्व काल) में इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भारतवर्ष में विजयपुर नाम का समृद्ध नगर था। उसमें कनकरथ नाम का राजा राज्य करता था। उस कनकरथ राजा का धन्वन्तरि नाम का वैद्य था जो आयुर्वेद के आठों अंगों का ज्ञाता था। आयुर्वेद के आठों अंगों के नाम इस प्रकार हैं–

(१) **कौमारभृत्य**–आयुर्वेद का वह अंग, जिसमें कुमारों, शिशुओं के पालन, पोषण व रोगों के उपशमन का वर्णन हो।

(२) **शालाक्य**–जिनमें नयन, नाक आदि ऊर्ध्वभागों के रोगों की चिकित्सा का विधान हो।

(३) **शाल्यहत्य**–आयुर्वेद का वह अंग, जिसमें शल्य–कण्टक, गोली आदि निकालने की विधि का वर्णन हो।

(४) **कायचिकित्सा**–शरीर सम्बन्धी रोगों की प्रतिक्रिया–इलाज का प्रतिपादक आयुर्वेद का एक अंग।

(५) **जांगुल**–आयुर्वेद का वह विभाग जिसमें सभी प्रकार के विषों की चिकित्सा का विधान हो।

(६) **भूतविद्या**–आयुर्वेद का वह भाग जिसमें भूत–निग्रह का तथा उनके शान्ति कर्म का विधान हो।

(७) **रसायन**–आयु को स्थिर रखने वाली व व्याधि–विनाशक औषधियों का विधान करने वाला प्रकरण विशेष।

(८) **बाजीकरण**–बल–वीर्यवर्द्धक औषधियों का विधायक आयुर्वेद का अंग।

वह धन्वन्तरि वैद्य **शिवहस्त**–जिसके हाथ से रोगियों की व्याधि शान्त हो जाती थी। **शुभहस्त**–जिसका हाथ शुभ अथवा सुख उपजाने वाला था तथा **लघुहस्त**–जिसका हाथ कुशलता से युक्त शल्य चिकित्सा आदि में सधा हुआ था।

PAST BIRTH : DHANVANTARI VAIDYA

8. Jambu ! During that period of time there was a prosperous city named Vijayapur in Bharatvarsh area in Jambu continent. In that

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Vijayapur city ruled a king named Kanakarath. King Kanakarath had a *Vaidya* (Ayurvedic doctor) named Dhanvantari who was a scholar of all the eight limbs of Ayurveda (Indian science of medicine and surgery). The names of these eight limbs of Ayurveda are as follows—

(1) **Kaumarabhritya**—The part of Ayurveda that deals with nursing, nutrition and cure of ailments of infants (Paediatrics).

(2) **Shalakya**—The part of Ayurveda that deals with the cure of diseases of eyes, nose and other parts of the upper half of the body.

(3) **Shalyahatya**—The part of Ayurveda that deals with the removal of thorns, cysts etc. or surgery.

(4) **Kayachikitsa**—The part of Ayurveda that deals with the symptoms and cure of diseases in general.

(5) **Jangul**—The part of Ayurveda that deals with the cure for poisons or toxicity.

(6) **Bhoot-vidya**—The part of Ayurveda that deals with warding off evil spirits and pacifying them.

(7) **Rasayan**—The part of Ayurveda that deals with the elixirs of life and other medicines.

(8) **Baajikaran**—The part of Ayurveda that deals with the medicines and tonics for maintaining and toning up sexual performance.

That Dhanvantari Vaidya had a healing touch (*shivahast*). He had a pious and lucky touch (*shubhahast*). He had a skilled touch (*laghuhast*). In other words he cured his patients to their entire satisfaction with his skilled handling and treatment.

९. तए णं से धन्नंतरी वेज्जे विजयपुरे नयरे कणगरहस्स रन्नो अंतेउरे य अन्नेसिं च बहूणं राईसर जाव सत्थवाहाणं अन्नेसिं च बहूणं दुब्बलाण य गिलाणाण य वाहियाण य रोगियाण य अणाहाण य सणाहाण य समणाण य माहणाण य भिक्खुयाण य करोडियाण य कप्पडियाण य आउराण य,

अप्पेगइयाणं मच्छमंसाइं उवदेसेइ, अप्पेगइयाणं कच्छपमंसाइं, अत्थेगइयाणं गोहामंसाइं, अप्पेगइयाणं मगरमंसाइं, अप्पेगइयाणं सुंसुमारमंसाइं, अप्पेगइयाणं वट्टक–लावक–कवोय–कुक्कुड–मयूर–मंसाइं अन्नेसिं च बहूणं जलयर–थलयर–खहयर–माईणं मंसाइं उवदेसेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पणा वि य णं से धन्नंतरी वेज्जे तेहिं बहूहिं मच्छमंसेहि य जाव मयूरमंसेहि य अन्नेहि य बहूहिं जलयर–थलयर–खहयर–मंसेहिं य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिए हि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च आसाएमाणे विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

९. वह धन्वन्तरि वैद्य विजयपुर नगर के महाराज कनकरथ के अन्तःपुर में निवास करने वाली रानियों को तथा अन्य बहुत से राजा, ईश्वर, सार्थवाहों आदि को तथा इसी तरह अन्य बहुत से दुर्बल, ग्लान–मानसिक चिन्ता से ग्रस्त रोगी, व्याधित या बाधित–गर्मी आदि रोगों से पीड़ित रुग्ण–ज्वरग्रस्त व्यक्तियों को एवं सनाथों, अनाथों, श्रमणों, ब्राह्मणों, भिक्षुकों, करोटिकों–कापालिकों–हाथ में खोपड़ी रखने वाले संन्यासी, कार्पटिकों–चीवर कन्थाधारी, भिक्षुकों अथवा भिखमंगों और आतुरों–जिन्हें अन्य वैद्यों ने चिकित्सा के अयोग्य बता दिया है। की चिकित्सा किया करता था।

उनमें से कितनों को मत्स्य माँस खाने का उपदेश देता था, कितनों को कछुओं के माँस का, कितनों को ग्राह–जलचरविशेष के माँस का, कितनों को मगरों के माँस का, कितनों को सुंसुमारों के माँस का, कितनों को बकरों के माँस खाने का उपदेश दिया करता था। इसी प्रकार भेड़ों, गवयों, शूकरों, मृगों, शशकों, गौओं और महिषों का माँस खाने का भी उपदेश करता रहता था। कितनों को तित्तरों के मांस का तो कितनों को बटेरों, लावकों, कबूतरों, कुक्कुटों व मयूरों के माँस का उपदेश देता। इसी भाँति अन्य बहुत से जलचरों, स्थलचरों तथा खेचरों आदि के माँस खाने का उपदेश करता था।

इतना ही नहीं, वह धन्वन्तरि वैद्य स्वयं भी उन अनेकविध मत्स्यमाँसों, मयूर–माँसों तथा अन्य बहुत से जलचर स्थलचर व खेचर जीवों के पकाये हुए, तले हुए, भूने हुए माँसों के साथ पाँच प्रकार की मदिराओं का **आस्वादन**–(थोड़ा–थोड़ा रसास्वाद लेना) व **विस्वादन**–(बार–बार या अधिक प्रमाण में रसास्वाद लेना) **परिभोजन**–(स्वयं भोगे तथा दूसरों को भी खिलाये या खूब अधिक मात्रा में खाता हुआ) एवं बार–बार उपभोग करता हुआ समय बिता रहा था।

9. That Dhanvantari Vaidya used to provide treatment to the queens residing in the inner quarters of king Kanakarath's palace. His patients included many kings, rich merchants, ... and so on up to... caravan chiefs; many other weak, mentally disturbed and ailing persons with or without guardians; *Shramans, Brahmins, Bhikshuks, Karotiks* (*Kapalik* or the mendicants who carried skull), *Karpatiks* (mendicants in rags), beggars, and critically sick persons.

To some of these he prescribed fish-meat, to some tortoise-meat, to some alligator-meat, to some crocodile-meat, to some *sumsumar*-meat, and to some goat-meat. In the same way he also prescribed flesh of sheep, black-bucks, pigs, deer, rabbits, cows, and buffaloes. To many he prescribed meat of partridge, quail (*lavak*), pigeon, hen, and peacock. In the same way he advised for flesh from a variety of aquatic, terrestrial, and avian beings.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Not only this, that Dhanvantari Vaidya himself spent his time tasting (*asvadan*), eating in larger quantity or enjoying (*visvadan*) and sharing (*paribhojan*) habitually a variety of cooked, fried, and roasted meat of fish, peacocks... and so on up to... aquatic, terrestrial, and avian beings. He did that with five kinds of wines.

१०. तए णं से धन्नंतरी वेज्जे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावं कम्मं समज्जिणित्ता बत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

१०. इस प्रकार वह धन्वन्तरि वैद्य इन्हीं पापकर्मों को करता हुआ। इसीप्रकार की विद्या में निपुण बने और ऐसा ही आचरण बनाये हुए, अत्यधिक पापकर्मों का उपार्जन करके बत्तीस सौ वर्ष की परम आयु को भोगकर काल मास में काल करके छट्ठी नरकपृथ्वी में उत्कृष्ट बाईस सागरोपम की स्थिति वाले नारकियों में नारक रूप से उत्पन्न हुआ।

10. Ever involved in these sinful activities, accepting these activities to be ideal of his life and the best of conduct, Dhanvantari Vaidya acquired extremely malevolent and pain causing *karmas* in abundance. After completing his life-span of three thousand two hundred years, he died and reincarnated as an infernal being in the sixth hell where the maximum life span is twenty two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time).

सन्तान प्राप्ति के लिए यक्ष–पूजा

११. तए णं सा गंगदत्ता भारिया जायनिंदुया यावि होत्था, जाया जाया दारगा विणिहायमावज्जंति। तए णं तीसे गंगदत्ताए सत्थवाहीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयं अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने–

'एवं खलु, अहं सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं सद्धिं बहूइं वासाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि। तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ, कयत्थाओ, कयपुण्णाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धेणं तासिं अम्मयाणं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जासिं मन्ने नियगकुच्छिसंभूयाइं थणदुद्धलुद्धयाइं महुरसमुल्लावगाइं मम्मणपंजप्पियाइं थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणयाइं मुद्धयाइं पुणो पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगे निवेसियाइं देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मंजुलप्पभणिए !

अहं णं अधन्ना अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगमवि न पत्ता। तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छित्ता सुबहुं पुप्फ–वत्थ–गंध–मल्लालंकारं गहाय बहुमित्त–नाइ–नियग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयण–संबंधि–परियणमहिलाहिं सद्धिं पाडलिसंडाओ नयराओ पडिनिक्खमित्ता बहिया जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छित्तए। तत्थ णं उंबरदत्तस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणं करित्ता जन्नुपायवडियाए ओयाइत्तए–

'जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा पयामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खनिहिं च अणुवड्ढइस्सामि।' त्ति कट्टु ओवाइयं ओवाइणित्तए।' एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी–एवं खलु अहं, देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं जाव न पत्ता। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया जाव ओवाइणित्तए।'

तए णं से सागरदत्ते गंगदत्तं भारियं एवं वयासी–'मम पि णं, देवाणुप्पिए ! एस चेव मणोरहे, कहं तुमं दारगं दारियं वा पयाइज्जसि।' गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणइ।

११. उस समय सागरदत्त की पत्नी गंगदत्ता जो जातनिन्दुका थी, अर्थात् उसके बालक उत्पन्न होने के साथ ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे, एक बार मध्यरात्रि में कुटुम्ब सम्बन्धी चिन्ता में जागती हुई उस गंगदत्ता सार्थवाही के मन में इस प्रकार का संकल्प उत्पन्न हुआ–"मैं बहुत समय से सागरदत्त सार्थवाह के साथ मनुष्य सम्बन्धी कामभोगों का सेवन करती आ रही हूँ परन्तु मुझे आज तक जीवित रहने वाले एक भी बालक अथवा बालिका को अपने उदर से जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है। वे माताएँ धन्य हैं तथा वे माताएँ ही कृतार्थ हैं, पुण्यवान हैं, उन्हीं का वैभव पाना सार्थक है और उन्होंने ही मनुष्य सम्बन्धी जन्म और जीवन को सफल किया है, जिनके अपने उदर से उत्पन्न हुए बालक या बालिकाएँ हैं। जो स्तनगत दूध में लुब्ध हुए, मधुरवाणी से अव्यक्त तथा तुतलाते वचन बोलते हुए, स्तनमूल प्रदेश से काँख तक अभिसरण करने (मचलकर सरक कर चलने) वाले हैं, तथा जिन्हें माताएँ कमल के सामन कोमल, सुकुमार हाथों से पकड़कर गोद में बिठाती हैं। तथा वे शिशु पुनः–पुनः सुमधुर कोमल–मंजुल वचन बोलते रहते हैं।

वास्तव में, मैं तो अधन्या हूँ, (धिक्कार योग्य हूँ) पुण्यहीन हूँ, मैंने पूर्वजन्म में पुण्योपार्जन नहीं किया है, क्योंकि मैं इस प्रकार की इन बालसुलभ चेष्टाओं वाली एक सन्तान को भी प्राप्त न कर सकी। अब मेरे लिए यही श्रेयस्कर है कि मैं कल प्रातःकाल, सूर्य उदय होते ही, सागरदत्त सार्थवाह से पूछकर विविध प्रकार के पुष्प, वस्त्र, गन्ध, माला और अलंकार लेकर, बहुत से ज्ञातिजनों, मित्रों, निजकों, स्वजनों, सम्बन्धीजनों और परिजनों की महिलाओं के साथ पाटलिखण्ड नगर से बाहर उद्यान में, जहाँ उम्बरदत्त यक्ष का यक्षायतन है, वहाँ जाकर उम्बरदत्त यक्ष की पुष्पार्चना करके और उसके चरणों में नतमस्तक हो इस प्रकार प्रार्थनापूर्ण याचना करूँ–

'हे देवानुप्रिय ! यदि मैं अब जीवित रहने वाले बालिका या बालक को जन्म दूँगी, तो मैं तुम्हरे **याग**–देव–पूजा, **दान**–(पर्व दिवसों में किया जाने वाला दान) भाग–(लाभ अंश) मन्दिर में चढ़ावा चढ़ाकर व **अक्षयनिधि**–देव भण्डार (देव द्रव्य) में वृद्धि करूँगी।' इस प्रकार उपयाचना–ईप्सित वस्तु की प्रार्थना करने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के लिए उसने निश्चय किया। निश्चय करके प्रातःकाल सूर्योदय होने के साथ ही जहाँ पर सागरदत्त सार्थवाह था, वहाँ पर आई, आकर सागरदत्त सार्थवाह से इस प्रकार कहने लगी–'हे स्वामिन् ! मैंने आपके साथ सांसारिक सुखों का पर्याप्त उपभोग करते हुए आज तक एक भी जीवित रहने वाले बालक या बालिका को प्राप्त नहीं किया। अतः मैं चाहती हूँ कि यदि आप आज्ञा दें तो मैं अपने मित्रों, ज्ञातिजनों, निजकों, स्वजनों, सम्बन्धीजनों और परिजनों की महिलाओं के साथ पाटलिखण्ड नगर से बाहर उद्यान में उम्बरदत्त यक्ष की महा मूल्यवान पुष्पार्चना कर पुत्र-प्राप्ति के लिए मनौती मनाऊँ।'

उत्तर में सागरदत्त सार्थवाह ने कहा–'भद्रे ! मेरी भी यही इच्छा है कि किसी प्रकार से तुम्हारे जीवित रहने वाले पुत्र या पुत्री उत्पन्न हों।' ऐसा कहकर उसने गंगदत्ता के उक्त प्रस्ताव का समर्थन करते हुए स्वीकृति प्रदान कर दी।

YAKSH WORSHIP FOR OFFSPRING

11. Gangadatta, the wife of Sagaradatt, was a *jatunandika* (a woman whose offspring die at birth). One day while Gangadatta was thinking about family matters around midnight, an aspiration surfaced—"I have been enjoying my married life with Sagaradatt Sarthavaha. However, I have not been lucky enough to have given birth even to a single surviving boy or girl. Fulfilled is the life as humans of those mothers and blessed, fortunate, and meritorious are those mothers who have surviving children born to them. Who breast-feed their own children that are eager to suckle, sweetly stutter, and in stupor shift from the base of the breasts toward the armpit; and who have lifted the baby with their lotus-like tender and loving hands, put it in the lap and enjoyed sweet and loving talk with the baby.

"I am, indeed, the wretched, ill-fated and unhappy one that has been deprived of any of these pleasures with even a single such offspring. Therefore it would be good for me that tomorrow at dawn after seeking permission from Sagaradatt Sarthavaha and, taking along numerous kinfolk, friends, near and far relatives and family members, I go to the temple of Umbaradatt Yaksh in the garden outside Patalikhand city carrying a variety of flowers, dresses, perfumes, garlands and ornaments. Arriving there I offer flowers and other things to Umbaradatt Yaksh, bow at his feet, and beg his favour thus—

'Beloved of gods ! If I give birth to a child who survives I will offer worship (*yaag*) and enhance your non-diminishing treasure (*akshayanidhi*) by gifts on auspicious days (*daan*), and share in profit (*bhaag*).' " She resolved thus to pray for the desired boon. Acting upon her resolve she went

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

to Sagaradatt Sarthavaha at dawn and said to him—"My lord ! I have been enjoying my married life with you. However, I have not given birth even to a single surviving boy or girl. Therefore, I want that if you give permission I will take along numerous kinfolk, friends, near and far relatives and family members, and go to the temple of Umbaradatt Yaksh in the garden outside Patalikhand city... and so on up to... perform highly beneficent flower-worship to get a son as boon."

Sagaradatt Sarthavaha replied—"Lady ! I also desire that somehow you give birth to a surviving son or a daughter." With these words he supported Gangadatta's proposal and gave her permission.

१२. तए णं सा गंगदत्ता भारिया सागरदत्तसत्थवाहेणं एयमट्ठं अब्भणुन्नाया समाणी सुबहुं पुप्फ वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय मित्त जाव महिलाहिं सद्धिं सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पाडलिखडं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं ठवेइ, ठवेत्ता, पुक्खरिणिं ओगाहेइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करित्ता जलकीडं करेमाणी ण्हाया कयकोउय-मंगलपायच्छित्ता उल्लपडसाडिया पुक्खरणीओ पच्चुत्तरइ पच्चुत्तरित्ता तं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव उम्बरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उम्बरदत्तस्स जक्खस्स आलोए पणामं करेइ, करित्ता लोमहत्थं परामुसइ, परामुसित्ता उम्बरदत्तं जक्खं लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खित्ता, पम्हलसुकुमालगंध-कासाइयाए गायलट्ठी ओलूहेइ, ओलूहित्ता सेयाइं वत्थाइं परिहेइ, परिहित्ता महरिगं पुप्फारुहणं, मल्लारुहणं, गंधारुहणं, चुण्णारुहणं करेइ, करित्ता धूवं डहइ, डहित्ता जन्नुपायवडिया एवं वयइ-'जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारयं दारियं वा पयामि तो णं जाव ओवाइणइ, ओवाइणित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

१२. तब सागरदत्त सार्थवाह की आज्ञा प्राप्त कर वह गंगदत्ता विविध प्रकार के पुष्प, वस्त्र, गंध, माला एवं अलंकार तथा विविध प्रकार की पूजा की सामग्री लेकर, मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी एवं परिजनों की महिलाओं के साथ अपने घर से निकल कर पाटलिखण्ड नगर के मध्य से होती हुई एक पुष्करिणी-बावड़ी के समीप आई। फिर पुष्करिणी के किनारे पुष्पों, वस्त्रों, गन्धों, मालाओं तथा अलंकारों को एक ओर रखकर पुष्करिणी में प्रवेश किया। वहाँ जलमज्जन (जल में गोते लगाना) एवं जलक्रीड़ा कर तिलक आदि लगाये, माँगलिक क्रिया करके गीली साड़ी पहने हुए पुष्करिणी से बाहर आई। बाहर आकर उक्त पुष्पादि पूजासामग्री को लेकर उम्बरदत्त यक्ष के यक्षायतन के पास पहुँची। यक्षप्रतिमा पर नजर पड़ते ही उसने यक्ष को नमस्कार किया। फिर लोमहस्तक-मयूरपिच्छ लेकर उसके द्वारा यक्षप्रतिमा का प्रमार्जन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किया। फिर जलधारा से उस यक्षप्रतिमा का अभिषेक किया, गेरु जैसे रंग से रंगे हुए सुगन्धित एवं सुकोमल वस्त्र से उसके अंगों को पोंछा। पोंछकर श्वेत वस्त्र पहनाया, पहिनाकर देवताओं के योग्य बहुमूल्य पुष्पार्पण, वस्त्रार्पण, गन्धार्पण, माल्यार्पण और चूर्णार्पण किया। धूप जलाई। फिर धूप लेकर यक्ष के सन्मुख घुटने टेककर, चरणों में गिरकर इस प्रकार निवेदन किया-'हे यक्ष देव ! जो मैं एक जीवित बालक या बालिका को जन्म दूँ तो आपके याग, दान एवं भण्डार की वृद्धि करूँगी।' इस प्रकार याचना करती हुई मान्यता मनाती है। मान्यता मनाकर वापस अपने स्थान को चली आती है।

12. On getting permission from Sagaradatt Sarthavaha, Gangadatta took along numerous kinfolk, friends, near and far relatives and family members and left her house carrying a variety of flowers, dresses, perfumes, garlands and ornaments. Crossing Patalikhand city she came near a *pushkarini* (*bavadi*; a deep and elaborate masonry tank or well with steps down to the water level). She placed the flowers, dresses, perfumes, garlands and ornaments at one side on the bank and entered the *bavadi*. After dipping and playing around in the water she performed auspicious rituals like putting mark on her forehead. She came out of the *pushkarini* in wet *sari* (Indian female dress) and went to the temple of Umbaradatt Yaksh with flowers and other worship material. As soon as she saw the *Yaksh* image she paid homage and cleansed the *Yaksh* image with a peacock feather broom. Then she anointed the image with water and wiped it dry with a saffron coloured perfumed soft cloth. After that she dressed the image in white garb and offered costly flowers, dresses, perfumes, garlands, incense powders suitable for deities. She then burned incense and with her knees on the ground bowed at the feet of the image. In this posture she submitted—"O divine *Yaksh* ! If I give birth to a child who survives I will offer worship (*yaag*) and enhance your non-diminishing treasure (*akshayanidhi*) by gifts on auspicious days (*daan*), and share in profit (*bhaag*)." With these words she begged the deity's favour and returned home.

१३. तए णं से धन्नंतरी वेज्जे ताओ नरयाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे पाडलिसंडे नयरे गंगदत्ताए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने।

तए णं तीसे गंगदत्ताए भारियाए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए-'धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव फले, जाओ णं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता बहूहिं मित्त. जाव परिवुडाओ तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं

च जाइं च सीधुं च पसण्णं च पुप्फं जाव गहाय पाडलिसंडं नयरं मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरिणिं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता ण्हाया जाव कयकोउयमंगलपायच्छित्ताओ, तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं बहूहिं मित्तनाइनियग. जाव सद्धिं आसाएंति, विसायंति परिभाएंति परिभुंजंति दोहलं विणेंति;

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—'धन्नाओ णं ताओ जाव विणेंति, तं इच्छामि णं जाव विणित्तए।'

तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणाइ।

१३. तदनन्तर वह धन्वंतरि वैद्य का जीव नरक से निकलकर इसी पाटलिखण्ड नगर में गंगदत्ता भार्या की कुक्षि में पुत्ररूप में उत्पन्न हुआ–(गर्भ में आया) लगभग तीन मास पूर्ण हो जाने पर गंगदत्ता भार्या को इस प्रकार का दोहद उत्पन्न हुआ।

"धन्य हैं वे माताएँ यावत् (पूर्ववत्) उन्होंने अपना जन्म और जीवन सफल किया है, जो विपुल अशन, पान आदि तैयार करवाती हैं और अनेक मित्र, ज्ञाति आदि की महिलाओं से परिवृत होकर पाटलिखण्ड नगर के मध्य में से निकलकर पुष्करिणी पर जाती हैं। वहाँ पुष्करिणी में प्रवेश कर जल स्नान करती है तथा मस्तक पर तिलक व अन्य मांगलिक कार्य करके उस विपुल अशनादिक का मित्र, ज्ञातिजन आदि की महिलाओं के साथ आस्वादनादि करती हुई दोहद को पूर्ण करती हैं।"

इस प्रकार विचार करके प्रातःकाल देदीप्यमान सूर्य के उदित हो जाने पर सागरदत्त सार्थवाह के पास आती है और आकर सागरदत्त सार्थवाह से (अपने दोहद के सम्बन्ध में) इस प्रकार कहती है–'स्वामिन् ! वे माताएँ धन्य हैं जो उक्त प्रकार से अपना दोहद पूर्ण करती हैं। मैं भी अपने दोहद को पूर्ण करना चाहती हूँ।'

तब सागरदत्त सार्थवाह भी दोहद पूर्ति के लिए गंगदत्ता भार्या को आज्ञा दे देता है।

13. The soul that was Dhanvantari Vaidya, coming out of the hell, was conceived as a son in the womb of Gangadatta in this Patalikhand city. After three months of pregnancy Gangadatta had a *dohad* (pregnancy-desire).

"Fulfilled is the life as humans of those mothers and blessed... and so on up to... are those mothers who get ample staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*) prepared; take along numerous kinfolk, friends, near and far relatives and family members and, crossing Patalikhand city, go to a *pushkarini* (*bavadi*; a deep and elaborate masonry tank or well with steps down to the water level). They enter the *bavadi*. After dipping in the water and performing auspicious rituals like

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

putting mark on forehead, they enjoy the food they brought along. And thus they fulfill their *dohad*."

Thinking thus, in the morning when the brilliant sun dawned, she came to Sagaradatt Sarthavaha and informed him about her *dohad*—"My lord ! Blessed are those mothers who satisfy their pregnancy-desire (*dohad*) (as aforesaid). I also want to satisfy my pregnancy-desire."

Then Sagaradatt Sarthavaha gave permission to wife Gangadatta to satisfy her *dohad*.

दोहद संपूर्ति

१४. तए णं सा गंगदत्ता सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं ४ सुरं च ६ सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं परिगिण्हावेइ परिगिण्हावेत्ता बहूहिं जाव ण्हाया कयबलिकम्मा जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खाययणे जाव धूवं डहेइ, डहेत्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ।

तए णं ताओ मित्त. जाव महिलाओ गंगदत्तं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसियं करेंति। तए णं सा गंगदत्ता भारिया ताहिं मित्तनाइहिं अन्नाहिं बहूहिं नगरमहिलाहिं सद्धिं तं विउलं असणं. आसाएमाणे दोहलं विणेइ, विणेत्ता, जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। सा गंगदत्ता सत्थवाही संपुण्णदोहला तं गब्भं सुहंसुहेण परिवहइ।

१४. सागरदत्त सार्थवाह से आज्ञा अनुमति प्राप्त कर गंगदत्ता पर्याप्त मात्रा में अशनादिक चतुर्विध आहार तैयार करवाती है। तैयार आहार एवं विविध प्रकार के मदिरादि पदार्थ तथा बहुत-सी पुष्पादि पूजा सामग्री को लेकर मित्र, ज्ञातिजन आदि की तथा अन्य महिलाओं को साथ लेकर पुष्करिणी में स्नान करती है, मस्तक पर तिलक व अन्य मांगलिक अनुष्ठान करती है, तत्पश्चात् उम्बरदत्त दक्ष के आयतन में आ जाती है। वहाँ पहले की ही तरह पूजा करती है व धूप जलाती है। तदनन्तर पुष्करिणी पर आ जाती है।

वहाँ पुष्करिणी पर साथ में आने वाली मित्र, ज्ञाति आदि महिलाएँ गंगदत्ता को सभी प्रकार के अलंकारों से विभूषित करती हैं, तत्पश्चात् उन मित्रादि महिलाओं तथा अन्य महिलाओं के साथ उस विपुल अशनादि तथा षड्विध सुरा आदि का आस्वादन करती हुई गंगदत्ता अपने दोहद को पूर्ण करती है। इस तरह दोहद को पूर्ण कर वापिस अपने घर आ जाती है। दोहद सम्पन्न होने पर प्रसन्न हुई वह गंगदत्ता उस गर्भ को सुखपूर्वक धारण करती है।

FULFILLMENT OF PREGNANCY-DESIRE

14. On getting permission from Sagaradatt Sarthavaha, Gangadatta gets ample staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*) prepared. She then collects the food so prepared,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

wines (etc.), flowers and other things needed for worship. Taking along numerous female kinfolk, friends, (etc.) and many other women she goes to a *pushkarini* (*bavadi*; a deep and elaborate masonry tank or well with steps down to the water level) and takes a dip. Performing auspicious rituals like putting mark on her forehead, she enters the temple of Umbaradatt Yaksh. There she performs worship as before and burns incense. Once that is done she returns to the *pushkarini*.

At the *pushkarini* the accompanying ladies embellish Gangadatta with all kinds of ornaments. Then Gangadatta enjoys the food and six kinds of wine they brought along and satisfies her *dohad*. She returns home once her *dohad* is satisfied. Pleased by the fulfillment of her *dohad*, Gangadatta carries the fetus happily.

पुत्र जन्म

१५. तए णं सा गंगदत्ता भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारगं पयाया। टिइवडिया जाव नामधेज्जं करेंति–'जम्हा णं इमे दारए उंबरदत्तस्स जक्खस्स ओवाइयलद्धए, तं होउ णं दारए उंबरदत्ते नामेणं।' तए णं से उंबरदत्ते दारए पंचधाईपरिग्गहिए परिवड्ढइ।

१५. नव मास परिपूर्ण हो जाने पर उस गंगदत्ता ने एक बालक को जन्म दिया। माता–पिता ने कुल परम्परा के अनुसार पुत्र जन्म सम्बन्धी विशेष उत्सव मनाया। फिर उसका नामकरण–संस्कार किया–'यह बालक क्योंकि उम्बरदत्त यक्ष की मान्यता मानने से जन्मा है, अतः इसका नाम भी 'उम्बरदत्त' ही हो। इस प्रकार उम्बरदत्त बालक पाँच धायमाताओं की देख–रेख में वृद्धि को प्राप्त होने लगा।

BIRTH OF A SON

15. After nine months of pregnancy, that Gangadatta gave birth to a son. Following their family tradition, the parents celebrated the birth of their son. Then they performed the naming ceremony—"As this child was born through the favour of Umbaradatt Yaksh he should be named Umbaradatt." And child Umbaradatt began to grow up in care of five nursemaids.

उम्बरदत्त की दुर्दशा

१६. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जहा विजयमित्ते कालधम्मुणा संजुत्ते, गंगदत्ता वि। उंबरदत्ते निच्छूढे जहा उज्झियए। तए णं तस्स उंबरदत्तस्स दारगस्स अन्नया कयाइ सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया। तं जहा–सासे, कासे जाव कोढे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से उंबरदत्ते दारए सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कच्छुल्ले जाव देहं बलियाए विर्ति कप्पेमाणे विहरइ। 'एवं खलु गोयमा ! उंबरदत्ते दारए पुरापोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे विहरइ।

१६. कुछ समय पश्चात् सागरदत्त सार्थवाह भी विजयमित्र की ही तरह (समुद्र में जहाज डूब जाने पर) कालधर्म को प्राप्त हुआ। क्रमशः गंगदत्ता भी कालधर्म को प्राप्त हुई। इधर उम्बरदत्त को भी उज्झित कुमार की तरह राजपुरुषों ने घर से निकाल दिया। उसका घर किसी अन्य को सौंप दिया।

(अनाथ-असहाय हुआ उम्बरदत्त भीख माँगकर गुजारा करने लगता है) किसी समय उम्बरदत्त के शरीर में एक ही साथ सोलह प्रकार के महा रोग उत्पन्न हो गये, जैसे कि, श्वास, कास यावत् कोढ़ आदि। इन सोलह प्रकार के रोगांतकों से पीड़ित हुआ उम्बरदत्त हाथ-पैर आदि अंग सड़ जाने से दुःखपूर्ण जीवन बिता रहा है।

भगवान कहते हैं-"हे गौतम ! उम्बरदत्त बालक अपने पूर्वकृत अशुभ कर्मों का यह भयंकर फल भोगता हुआ इस तरह अत्यन्त कष्ट में समय व्यतीत कर रहा है। जैसा तुमने अभी देखा है।"

KKKK

16. Some time later Sagaradatt Sarthavaha died (like Vijayamitra during a sea voyage). In due course Gangadatta also died. Like Ujjhitak Umbaradatt was also expelled from his house by state guards and his house was given to some other person.

(Helpless Umbaradatt starts living on alms.) At some point of time Umbaradatt was inflicted by sixteen diseases, namely Asthma, Bronchitis,... and so on up to... Leprosy. Suffering from these sixteen deadly diseases and with decayed limbs Umbaradatt leads a miserable life.

Bhagavan added—"Gautam ! This way that young Umbaradatt is biding his time in excruciating pain, suffering horribly for the sinful deeds he committed in the past. That is what you just saw."

विवेचन-इस सूत्र के प्रायः सभी वर्णनों में यह एक ही प्रकार की स्थिति बताई जाती है कि माता-पिता की मृत्यु होने पर उसके पुत्र को राजपुरुषों ने घर से निकाल दिया। टीकाकार का अनुमान है, उस समय में संभवतः यह परिस्थिति बनी हो कि सार्थवाह अन्य श्रेष्ठियों से व्यापार के निमित्त कर्जा लेकर व्यापार हेतु समुद्र यात्रा पर गया हो। समुद्र में जहाज डूब जाने से उसका सब धन नष्ट हो गया। तब अन्य लेनदारों ने अपना धन वसूल करने राजा से पुकार की हो, तब राजा उसका घर सम्पत्ति नीलाम करके उनका धन लौटाने के लिए उसके पुत्र को घर से निकालकर अन्य लोगों की लेनदारी चुकाई जाती हो। इस कारण कर्जदार पिता की सन्तान अनाथ-असहाय होकर घर-घर भीख माँगने लगी।

Elaboration—Almost all stories in this book describe a common situation that the son is expelled from the house by state officials on death of his parents. The commentator (*Tika*) surmises that at the time of going on a

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

sea voyage for trading, the seafaring merchant must have taken loans from other merchants. When the ship capsized he lost all his merchandise and wealth. The creditors must have appealed to the king for realization of their dues and the king must have ordered to auction the property after expelling the heirs. This could be the prevalent practice at that time. That must have been the reason for the sons of defaulters to go begging house to house for living.

उम्बरदत्त का भविष्य

१७. 'से णं उंबरदत्ते दारए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! उंबरदत्ते दारए बावत्तरिं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। संसारो तहेव जाव पुढवी।

तओ हत्थिणाउरे नयरे कुक्कुडत्ताए पच्चायाहिइ। जायमेत्ते चेव गोट्ठिल्लवहिए तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ। बोहिं, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। निक्खेवो।

॥ सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥

१७. तदनन्तर गौतमस्वामी ने भगवान महावीर से पूछा—भगवन् ! यह उम्बरदत्त काल करके कहाँ जायेगा ? और कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान ने उत्तर दिया—हे गौतम ! उम्बरदत्त बहत्तर वर्ष का परम आयुष्य भोगकर—मरण के समय मृत्यु प्राप्त कर इसी रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक में नारक रूप से उत्पन्न होगा। वह पूर्ववत् (मृगापुत्र के वर्णन अनुसार) संसार भ्रमण करता हुआ पृथिवी आदि सभी कायों में लाखों बार उत्पन्न होगा।

वहाँ से निकल कर हस्तिनापुर में कुर्कुट (मुर्गा) के रूप में उत्पन्न होगा। वहाँ जन्म लेने के साथ ही कुछ गोष्ठिकों--दुराचारियों द्वारा उसका वध कर दिया जायेगा। तब पुनः हस्तिनापुर में ही एक श्रेष्ठिकुल में उत्पन्न होगा। वहाँ सम्यक्त्व को प्राप्त करेगा। वहाँ से मरकर सौधर्म नामक प्रथम कल्प में जन्म लेगा। वहाँ से च्यवन कर महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगा। वहाँ अनगार धर्म को प्राप्त कर यथाविधि संयम की आराधना करता हुआ कर्मों का क्षय करके सिद्धि को प्राप्त करेगा।

निक्षेप—श्रमण भगवान महावीर ने सप्तम अध्ययन का यह अर्थ कहा है।

॥ सप्तम अध्ययन समाप्त ॥

UMBARADATT'S FUTURE

17. Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After his death where will this Umbaradatt go ? Where will he be reborn ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Bhagavan replied—Gautam ! After completing his life-span of seventy two years, Umbaradatt will die and reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha. From there he will follow the cycles of rebirths as mentioned in the first chapter in context of Mrigaputra... and so on up to... will be born millions of times in all hells, as all animals, and as all one sensed beings.

Coming out from there, he will be born as a cock in Hastinapur city. After being killed by some evil persons, he will reincarnate as a son in a merchant family of the same Hastinapur city. There he will gain righteousness (*samyaktva*). From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok. Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately. At last he will get enlightened and attain the status of *Siddha* shedding all his *karmas* and ending all misery.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE SEVENTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम श्रुतस्कन्ध : अष्टम अध्ययन
शौरिकदत्त (मत्स्य व्यापारी)

उपोद्‌घात

इस अष्टम अध्ययन में एक विशेष प्रकार के हिंसक व्यापार तथा उसके कटु फलों का वर्णन है, जो आज के युग में अधिक प्रासंगिक है। इस अध्ययन का केन्द्रित विषय मांस विक्रय एवं मांसाहार का कटु फल बताना है। श्रीयक रसोइया, अपने राजा के लिए अनेक प्रकार के पशु-पक्षियों को मारकर, उनकी हिंसा करवा कर तरह-तरह का स्वादिष्ट मांसाहारी भोजन बनाता था और स्वयं भी करता था। हिंसानुबन्धी इन संस्कारों के प्रभाव से दूसरे भव में वह शौरिकदत्त नामक मच्छीमार बनता है। शौरिकदत्त बहुत बड़ा मत्स्य व्यापार करता है। मत्स्यों को पकड़ने के लिए वह तालाबों व झीलों को भी सुखा देता है, उनका पानी जहरीला कर देता है।

इस प्रकार अनेक प्रकार से बड़ी क्रूरता के साथ मत्स्य व्यापार करता है और स्वयं भी माँसाहार में गृद्ध हो जाता है। इसका कटु फल वह इस भव में भी प्रत्यक्ष भोगता है तथा आगे अनेक-अनेक भवों तक उसके कटु फलों को भोगता, दुःख पाता है। इससे यह स्पष्ट होता है, न केवल मांसाहार करने वाला, अपितु मांसाहार तैयार करने वाला, मांस बेचने वाला, मांस खिलाने वाला भी उसी प्रकार हिंसा का भागी होता है।

FIRST SHRUTSKANDH : EIGHTH CHAPTER
SHAURIKADATT (the fish merchant)

INTRODUCTION

This eighth chapter describes a particular violent profession and its bitter fruits. It is more relevant in modern times. The central theme of this chapter is to describe the bitter fruits of sale and consumption of meat. Shriyak the cook killed or arranged to get killed a variety of animals and birds and prepared food for his master, the king. He too ate that food. As a result of this violence inspiring *karma*-programming he takes rebirth as Shaurikadatt Fisherman. He becomes a big fish-merchant. In order to catch fish he even poisons and dries ponds and lakes.

This way, employing extremely cruel means, he indulges in fish-trading. He develops an insatiable craving for non-vegetarian diet. He suffers bitter fruits of this act during this life and continues to suffer miserable consequences for many future births. This explicates that not only the meat eater but also the cook, the seller, and the provider of meat is equally responsible for the violence involved.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टम अध्ययन
EIGHTH CHAPTER

प्रस्तावना

१. 'जइ णं भंते' अट्ठमस्स उक्खेवो–

१. "भगवन् ! अष्टम अध्ययन का श्रमण भगवान् महावीर ने क्या अर्थ कहा है ?" इस प्रकार उत्क्षेप का कथन पूर्ववत् जान लेना चाहिए।

FOREWORD

1. The foreword of the eighth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the eighth chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?) Sudharma Swami replied—

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सोरियपुरं नयरं होत्था, सोरियवडिंसगं उज्जाणं सोरियो जक्खो। सोरियदत्ते राया।

२. हे जम्बू ! उस काल तथा उस समय में शौरिकपुर नाम का नगर था। वहाँ 'शौरिकावतंसक' नाम का एक उद्यान था। उसमें शौरिक नाम के यक्ष का यक्षायतन एवं शौरिकदत्त नामक राजा वहाँ राज्य करता था।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Shaurikapur. Outside this town was a garden named Shaurikavatansak, in which was a temple of Shaurik Yaksh. In that city ruled a king named Shaurikadatt.

शौरिकदत्त का वर्तमान भव

३. तस्स णं सोरियपुरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तत्थ णं एगे मच्छंधपाडए होत्था। तत्थ णं समुद्ददत्ते नामं मच्छंधे परिवसइ। अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे। तस्स णं समुद्ददत्तस्स समुद्ददत्ता नामं भारिया होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे। तस्स णं समुद्ददत्तस्स पुत्ते समुद्ददत्ताए भारियाए अत्तए सोरियदत्ते नामं दारए होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे।

३. उस शौरिकपुर नगर के बाहर ईशानकोण में मच्छीमारों का एक पाटक–पाड़ा–(मोहल्ला) था। वहाँ समुद्रदत्त नामक मच्छीमार रहता था। वह महाअधर्मी यावत् दुष्प्रत्यानन्द–पाप कर्मों में ही आनन्द मानने वाला था। उसकी समुद्रत्ता नाम की भार्या थी। समुद्रदत्त का पुत्र और समुद्रदत्ता भार्या का आत्मज शौरिकदत्त नामक बालक था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

PRESENT LIFE OF SHAURIKADATT

3. There was a settlement of fishermen in the northeastern direction outside Shaurikapur City. A fisherman named Samudradatt lived there. He was irreligious... and so on up to... enjoyed evil deeds only. He had a wife named Samudradatta. They had a son named Shaurikadatt whose body was fully and perfectly endowed.

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, जाव परिसा पडिगया।

४. उस समय में (शौरिकावतंसक उद्यान में) भगवान् महावीर स्वामी पधारे। परिषद् व राजा धर्मकथा सुनने आये। सुनकर वापिस अपने-अपने स्थान को चले गये।

4. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived (at Shaurikavatansak garden). People and the king came to attend his discourse. They returned home after the discourse.

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे सीसे जाव सोरियपुरे नयरे उच्चनीयमज्झिमकुले अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणं गहाय सोरियपुराओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तस्स मच्छंधवाडगस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे महइमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगयं एगं पुरिसं सुक्कं भुक्खं निम्मंसं अट्ठिचम्मावणद्धं किडिकिडियाभूयं नीलसाडगनियत्थं मच्छकंटएणं गलए अणुलग्गेणं कट्ठाइं कलुणाइं विस्सराइं उक्कूवमाणं अभिक्खणं अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमिकवले य वममाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए, कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पन्ने-'अहो णं इमे पुरिसे पुरापोराणाणं जाव विहरइ' एवं संपेहेइ, संपेहित्ता जेणेव भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ। पुव्वभवपुच्छा जाव वागरणं।

५. उस समय श्रमण भगवान् महावीर के ज्येष्ठ शिष्य गौतम स्वामी, षष्ठभक्त के पारणे के अवसर पर शौरिकपुर नगर में उच्च, नीच तथा मध्यम-सर्व सामान्य घरों में भिक्षाचरी के लिए भ्रमण करते हुए आवश्यक आहार लेकर शौरिकपुर नगर से बाहर निकलते हैं। तब उस मच्छीमार मुहल्ले के पास से निकलते हुए उन्होंने जनता की भीड़ के बीच एक ऐसे पुरुष को देखा, जो अत्यन्त भूखा (भूखा), माँसरहित व अतिकृश (अत्यन्त दुर्बल) होने के कारण जिसकी चमड़ी हड्डियों से चिपटी हुई है, उठते, बैठते हुए जिसकी हड्डियाँ किटिकिटि-कड़कड़-शब्द कर रही हैं, नीली धोती पहने हुए है एवं गले में मत्स्यकण्टक-मछली का काँटा फँसा होने के कारण कष्टात्मक-(शरीर की पीड़ा से कराहता हुआ), करुणाजनक-(मनो व्यथा से पूर्ण) एवं दीनतापूर्ण आक्रन्दन-(कर्णकटु रुदन) कर रहा है। वह खून के कुल्लों, पीव के कुल्लों और कीड़ों के कुल्लों का बारम्बार वमन कर रहा था। अर्थात् उसके मुँह से पीव, रुधिर के साथ कुलबुलाते कृमि कीड़े निकल रहे थे। उस दीन पुरुष को देख कर गौतम स्वामी के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ-"अहो ! यह पुरुष अपने पूर्व कृत अशुभकर्मों के फलस्वरूप नरकतुल्य यातना-वेदना भोग रहा है।" इस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकार विचार कर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास पहुँचे। भगवान् से उसके पूर्वभव के विषय में पृच्छा की। भगवान् महावीर उत्तर में इस प्रकार फरमाते हैं–

5. During that period of time, while returning after collecting alms from houses of high, low and medium castes in Shaurikapur city, for breaking his two-day fast, Bhagavan Gautam, the chief disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, came to the main road (as mentioned earlier). While passing by that settlement of fishermen he saw in the middle of a crowd a hungry, emaciated and lean skeleton-like person clad in blue. His bones crackled when he sat or stood up. On account of a fish-bone being stuck in his throat he was uttering piercing, pathetic, and plaintive sounds and words. He was vomiting and the vomit contained shreds of coagulated pus, blood and worms. Looking at his pathetic condition Bhagavan Gautam Swami thoughtfully contemplated—"Oh ! This man is suffering infernal agony due to the sinful *karmas* he acquired due to evil deeds committed in the past." With these thoughts he returned and asked Shraman Bhagavan Mahavir about the past birth of that person. In reply *Bhagavan* said—

पूर्वभव–कथा : श्रीयक रसोइया

६. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे नंदिपुरे नामं नयरे होत्था। मित्ते राया। तस्स णं मित्तस्स रन्नो सिरीए नामं महाणसिए होत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

६. हे गौतम ! उस (प्राचीन) समय में इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष में नन्दिपुर नाम का नगर था। वहाँ मित्र राजा राज्य करता था। उस मित्र राजा के श्रीयक नाम का एक रसोइया था। वह महाअधर्मी यावत् पापकर्मों में ही आनन्द मानने वाला था।

PREVIOUS BIRTH : SHRIYAK COOK

6. Gautam ! During that period of time there was a city called Nandipur in Bharatvarsh area in Jambu continent. A king named Mitra was the ruler of that city. King Mitra had a cook named Shriyak who was irreligious... and so on up to... enjoyed evil deeds only.

७. तस्स णं सिरीयस्स महाणसियस्स बहवे मच्छिया य वागुरिया य साउणिया य दिन्नभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं बहवे सण्हमच्छा य जाव पडागाइपडागे य, अए य जाव महिसे य, तित्तिरे य जाव मऊरे य जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवेत्ता सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति। अन्ने य से बहवे तित्तिरा य जाव मऊरा य पंजरंसि संनिरुद्धा चिट्ठंति। अन्ने य बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा ते बहवे तित्तिरे य जाव मऊरे य जीवंतए चेव निप्पक्खेंति, निप्पक्खेत्ता सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. उस रसोइये के अधीन ऐसे अनेक पुरुष रहते थे, जैसे–**मात्स्यिक**–मच्छीमार, **वागुरिक**–जाल डालकर मृगादि पशुओं को पकड़ने वाले शिकारी, **शाकुनिक**–पक्षियों को पकड़कर लाने वाले, व **श्लक्ष्णमत्स्यों**–कोमल चमड़ी वाली मछलियों यावत् **पताकातिपताकों**–मत्स्यविशेषों, तथा अजों (बकरों) महिषों एवं तित्तिरों तथा मयूरों का वध करके श्रीयक रसोइये को देते रहते थे। अन्य बहुत से तित्तिर, मयूर आदि पक्षी उसके यहाँ पिंजरों में बन्द किये हुए रहते थे। श्रीयक रसोइया के पास अन्य अनेक रुपया, पैसा, भोजनादि के रूप में वेतन लेकर काम करने वाले पुरुष भी थे, जो जीवित तित्तरों, मयूरों आदि को पक्ष रहित करके (पंख उखाड़ करके) उसे लाकर दिया करते थे।

7. That Shriyak cook had many assistants including—*matsyiks* (fishermen), *vaguriks* (animal trappers), and *shakuniks* (bird catchers). They used to kill small and soft as well as larger fish; goats... and so on up to... buffaloes; and partridges... and so on up to... peacocks and bring them to Shriyak cook. Many more partridges... and so on up to... peacocks were kept in cages. Shriyak cook also had many other employees, working on wages and food, who used to pluck out feathers of live partridges... and so on up to... peacocks and give him the bare bodies.

८. तए णं से सिरीए महाणसिए बहूणं जलयर–थलयर–खहयराणं मंसाइं कप्पणिकप्पियाइं करेइ, तं जहा–सण्हखंडियाणि य वट्टखंडियाणि य दीहखंडियाणि य रहस्सखंडियाणि य हिमपक्काणि य जम्मपक्काणि य वेगपक्काणि घम्मपक्काणि य मारुयपक्काणि य कालाणि य हेरंगाणि य महिट्ठाणि य आमलरसियाणि य मुद्दियारसियाणि य कविट्ठरसियाणि य दालिमरसियाणि य मच्छरसियाणि य तलियाणि य भज्जियाणि य सोल्लियाणि य उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता,

अन्ने य बहवे मच्छरसए य एणेज्जरसए य तित्तिररसए य जाव मयूररसए य, अन्नं च विउलं हरियसागं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्तस्स रन्नो भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए उवणेति।

अप्पणा वि य णं से सिरीए महाणसिए तेसिं च बहूहिं जाव जलयर–थलयर–खहयरमंसेहिं रसएहि य हरियसागेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ। तए णं से सिरीए महाणसिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता तेत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उववन्ने।

८. तत्पश्चात् वह श्रीयक रसोइया अनेक जलचर, स्थलचर व खेचर जीवों के माँसों को लेकर सूक्ष्म खण्ड–(छोटे टुकड़े) वृत्त–(गोल) खण्ड, दीर्घ–(लम्बे) खण्ड, तथा ह्रस्व–(छोटे, छोटे) खण्ड किया करता था। उन खण्डों में से कई एक को बर्फ से पकाता था, कई एक को अलग रख देता जिससे वे खण्ड स्वतः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपने आप ही पक जाते थे, कई एक को धूप की गर्मी से व कई एक को हवा (भाप) के द्वारा पकाता था। कई एक को कृष्ण वर्ण वाले तो कई एक को हिंगुल के जैसे लाल वर्ण वाले किया करता था। वह उन खण्डों को छाछ से संस्कारित करता; आँवले के रस से भावित करता, द्राक्षारस, कपित्थ तथा अनार के रस से भी संस्कारित करता था एवं मत्स्यरसों से भी भावित किया करता था। तदनन्तर उन माँसखण्डों में से कई एक को तैल से तलता, कई एक को आग पर भूनता तथा कई एक को शूलाप्रोत–शूल में पिरोकर पकाता था।

इसी प्रकार मत्स्यमाँसों के रसों को, मृगमाँसों के रसों को, तित्तिरमाँसों के रसों को यावत् मयूरमाँसों के रसों को तथा अन्य बहुत से हरे शाकों को तैयार करता था, तैयार करके (सजाकर) मित्र राजा के भोजनमण्डप में ले जाकर भोजन के समय उन्हें प्रस्तुत करता था। श्रीयक रसोइया स्वयं भी अनेक जलचर, स्थलचर एवं खेचर जीवों के माँसों, रसों को हरे शाकों के साथ, जो कि शूलपक्व होते, तले हुए होते, भूने हुए होते थे, छह प्रकार की सुरा आदि का आस्वादन करता रहता था।

रात–दिन इस प्रकार के कर्मों को करने वाला, इन्हीं कर्मों में अपनी प्रधानता, श्रेष्ठता रखने वाला, इन्हीं में विशेषज्ञता रखने वाला, तथा इन्हीं पापों को सर्वोत्तम आचरण मानने वाला वह रसोइया अत्यधिक पापकर्मों का उपार्जन कर तेत्तीस सौ वर्ष की परम आयु को भोग कर मृत्यु काल में मृत्यु प्राप्त करके छट्ठे नरक में उत्पन्न हुआ।

8. Then that Shriyak cook used to chop the meat of numerous terrestrial, aquatic, and avian beings into small pieces, round pieces, long pieces, and short pieces. Some of these he cooked with ice; some he just stored separately to get seasoned naturally; some he left in the sun; and some he cooked in hot air or steam. Some of these pieces he cooked black and others brown. Some of these pieces he seasoned with buttermilk, some with hog-plum juice, some with grape juice, some with wood-apple juice, some with pomegranate juice, and some with fish juice. After this he fried some in oil, roasted some in fire, and grilled some on sticks (*shulaprot*).

In the same way he also prepared soups from meat of fish, deer, partridge,... and so on up to... peacock. He also prepared salad of a variety of vegetables. After arranging all these dishes properly he took them to the dining place of king Mitra and offered to the king. Shriyak cook too frequently enjoyed the so cooked, roasted and grilled meat and soup of numerous terrestrial, aquatic, and avian beings with vegetables and six kinds of wine.

That Shriyak cook was ever involved in these sinful activities. These activities had become his way and ideal of life and he had accepted all these

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

sinful activities to be the best conduct. As a consequence he acquired extremely malevolent and pain causing *karmas* in abundance. After completing his life-span of thirty three hundred years he died and reincarnated as an infernal being in the sixth hell.

शौरिकदत्त का जन्म

९. तए णं सा समुद्ददत्ता भारिया जायनिंदुयावि होत्था। जाया जाया दारगा विणिहायमावज्जंति। जहा गंगदत्ताए चिंता, आपुच्छणा, ओवाइयं दोहला जाव दारगं पयाया, जाव 'जम्हा णं अम्हे इमे दारए सोरियस्स जक्खस्स ओवाइयलद्धे, तम्हा णं होउ अम्हं दारए सोरियदत्ते नामेणं। तए णं से सोरियदत्ते दारए पंचधाई जाव उम्मुक्कबालभावे विन्नयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमुणप्पत्ते यावि होत्था।

९. वह समुद्रदत्ता (मच्छीमार की पत्नी) मृतवत्सा थी। उसके बालक जन्म लेने के साथ ही मर जाया करते थे। उसने गंगदत्ता की ही तरह रात में कुटुम्ब जागरणा करते हुए विचार किया। पति की आज्ञा लेकर शौरिक यक्ष की मान्यता मनाई और गर्भवती हुई। दोहद की पूर्ति कर समुद्रदत्त बालक को जन्म दिया। "शौरिक यक्ष की मनौती मनाने के कारण हमें यह बालक उपलब्ध हुआ है' ऐसा कहकर माता-पिता ने उसका नाम 'शौरिकदत्त' रखा। वह शौरिकदत्त पाँच धायमाताओं की देख-रेख में बाल्यावस्था को पार कर तथा बुद्धि की परिपक्व अवस्था से सम्पन्न हो युवावस्था को प्राप्त हुआ।

BIRTH OF SHAURIKADATT

9. Samudradatta (wife of the fisherman) was a *jatunandika*. Her offspring died at birth. Like Gangadatta, she also had an idea while thinking about family matters around midnight. After seeking permission from her husband she sought boon from Shaurik Yaksh and got pregnant. After satisfying her *dohad* (pregnancy-desire) she gave birth to a son. In due course the parents named the child—"As this child was born as a favour by Shaurik Yaksh he should be named Shaurikadatt." And child Shaurikadatt began to grow up in care of five nursemaids. Crossing his adolescence he attained youth and maturity.

१०. तए णं से समुद्ददत्ते अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते। तए णं से सोरियदत्ते बहूहिं मित्त-नाइ रोयमाणे समुद्ददत्तस्स नीहरणं करेइ, लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ। अन्नया कयाइ सयमेव मच्छंधमहत्तरगत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं से सोरियदारए मच्छंधे जाए, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

१०. तदनन्तर किसी समय समुद्रदत्त कालधर्म को प्राप्त हो गया। रुदन आक्रन्दन व विलाप करते हुए शौरिकदत्त ने अनेक मित्र-ज्ञाति-स्वजन परिजनों के साथ समुद्रदत्त की अर्थी निकाल कर श्मशान ले गये;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वहाँ दाहकर्म व अन्य लौकिक क्रियाएँ की। इसके बाद किसी समय वह स्वयं ही मच्छीमारों का मुखिया बन गया। अब वह मच्छीमार हो गया जो महा अधर्मी यावत् दुष्प्रत्यानन्द था।

10. Some time later Samudradatt Fisherman died. Crying, wailing and weeping Shaurikadatt took the dead body to cremation ground in a funeral procession joined by many friends, kinfolk, and family members. There last rites and other formal rituals were performed. After this Shaurikadatt became the chief of the fishermen. Now he was a fisherman who had become irreligious... and so on up to... enjoyed evil deeds only.

शौरिकदत्त का हिंसक व्यवसाय

११. तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं एगड्डियाहिं जउणं महाणइं ओगाहेंति, ओगाहित्ता बहूहिं दहगालणेहि य दहमलणेहि य दहमद्दणेहि य दहमहणेहि य दहवहणेहि य दहपवहणेहि य अयंचुलेहि य पंचपुलेहि य मच्छंधलेहि य मच्छपुच्छेहि य जंभाहि य तिसिराहि य भिसिराहि य धिसराहि य विसराहि य हिल्लिरीहि य झिल्लिरीहि य लल्लिरीहि य जालेहि य गलेहि य कूडपासेहि य वक्कबंधेहि य सुत्तबंधणेहि य वालबंधणेहि य बहवे सण्हमच्छे जाव पडागाइपडागे य गिण्हंति,

गेण्हित्ता एगड्डियाओ भरेंति, भरित्ता कूलं गाहेंति, गाहित्ता मच्छखलए करेंति, करित्ता आयवंसि दलयंति। अन्ने य से बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा आयव--तत्तएहिं मच्छेहि सोल्लेहि य तलिएहि ए भज्जिएहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति। अप्पणा वि य णं से सोरियदत्ते बहूहिं सण्हमच्छेहि जाव पडागाइपडागेहि य सोल्लेहि य भज्जिएहि य तलिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

११. शौरिकदत्त मच्छीमार ने पैसा और भोजनादि का वेतन लेकर काम करने वाले अनेक वेतनभोगी पुरुष रखे थे, जो छोटी–छोटी नौकाओं द्वारा यमुना महानदी में प्रवेश करते, घूमते, ह्रद–गलन, ह्रद–मलन, ह्रद–मर्दन, ह्रद–मन्थन, ह्रद–वहन, ह्रद–प्रवहन–(अर्थात् जलाशय या झील में मछली आदि जीवों को पकड़ने के लिए चक्कर लगाकर सरोवर में से जल को निकालना या थूहर आदि का दूध डालकर जल को दूषित करना, जल का विलोडन करना जिससे भयभीत व स्थानभ्रष्ट मत्स्यादि सरलता से पकड़े जा सकें आदि विविध क्रियाओं से) तथा प्रपंचुल, प्रपंपुल, मत्स्यपुच्छ, जृम्भा, त्रिसरा, भिसरा, विसरा, द्विसरा, हिल्लिरि, झिल्लिरि, लल्लिरि, जाल, गल, कूटपाश, वल्कबन्ध, सूत्रबन्ध और बालबन्ध–(ये सब मत्स्यादिकों को पकड़ने के विविध साधन–उपकरणों के नाम हैं) आदि के द्वारा कोमल चमड़ी वाले मत्स्यों यावत् पताकातिपताक नामक मत्स्यों को पकड़ते, पकड़कर उनसे नौकाएँ भरते हैं। भरकर नदी के किनारे पर लाते हैं, लाकर बाहर एक स्थल पर ढेर लगा देते हैं। तत्पश्चात् उनको वहाँ धूप में सूखने के लिए रख देते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसी प्रकार उसके अन्य वेतनभोगी पुरुष धूप से सूखे हुए इन मत्स्यों के माँसों को शूलाप्रोत कर पकाते, तलते और भूनते तथा उन्हें राजमार्गों में विक्रयार्थ रखकर आजीविका करते थे। शौरिकदत्त स्वयं भी उन शूलाप्रोत किये हुए, भुने हुए और तले हुए मत्स्य माँसों के साथ विविध प्रकार की सुरा, सीधु आदि मदिराओं का सेवन करता रहता था।

THE VIOLENT PROFESSION OF SHAURIKADATT

11. That Shriyak cook had employed many assistants, working on wages and food, who used to enter the great river Yamuna in small boats. They used to move around and scoop (*hrid-galan*), contaminate (*hrid-malan*), agitate (*hrid-mardan*), churn (*hrid-manthan*), drain (*hrid-vahan*) and discharge (*hrid-pravahan*) the river water in order to terrify and displace fish to facilitate hauling the same. Besides this they used a variety of means and equipment including *prapanchul, prapampul, matsyapuchchha. jrimbha, trisara, bhisara, visara, dvisara, hilliri, jhilliri, lalliri, jaal, gal, kootapash, valkal-bandh, sutra-bandh,* and *baal-bandh* (these are names of different types and designs of fishing nets). Thus they caught small and soft... and so on up to... large and stout fish and filled their boats. With the haul they returned to the river-bank, unloaded it in a heap, and left it to dry in the sun.

Many other employees, working on wages and food, fried, roasted, and grilled this sun-dried fish-meat in order to earn their living by selling the same on roadside. Shaurikadatt too frequently enjoyed the cooked roasted and grilled fish-meat with six kinds of wine.

क्रूर कर्मों का कठोर दण्ड

१२. तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स अन्नया कयाइ ते मच्छसोल्ले य तलिए य भज्जिए य आहारेमाणस्स मच्छकंटए गलए लग्गे यावि होत्था। तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे महयाए वेयणाए अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सोरियपुरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु य महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयह—'एवं खलु देवाणुप्पिया ! सोरियदत्तस्स मच्छकंटे गले लग्गे। तं जो णं इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ तेगिच्छियपुत्तो वा सोरियमच्छियस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, तस्स णं सोरियदत्ते विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव उग्घोसेंति।

१२. किसी अन्य समय उन शूल द्वारा पकाये गये, तले गये व भूने गये मत्स्य-माँसों का आहार करते समय उस सौरिकदत्त मच्छीमार के गले में मत्स्य का काँटा फँस गया। इसके कारण वह असाध्य असह्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेदना का अनुभव करने लगा। अत्यन्त दुःखी हुए शौरिक ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर कहा– 'देवानुप्रियो ! शौरिकपुर नगर के चौराहे–तिराहे आदि मार्गों व सामान्य मार्गों पर जाकर ऊँचे शब्दों से इस प्रकार उद्घोषणा करो कि–देवानुप्रियो ! शौरिकदत्त के गले में मत्स्य–कंटक–मछली का काँटा फँस गया है, यदि कोई वैद्य या वैद्यपुत्र इस उपाय का जानकार या जानकार का पुत्र, चिकित्सक या चिकित्सकपुत्र उस मत्स्य–कंटक को निकाल देगा तो, शौरिकदत्त उसे बहुत–सा मुँह माँगा धन देगा।'' कौटुम्बिक पुरुषों–अनुचरों ने उसकी आज्ञानुसार सारे नगर में उद्घोषणा कर दी।

HARSH PUNISHMENT FOR EVIL DEEDS

12. At a certain time while eating the cooked roasted and grilled fish-meat, a fish bone got stuck in Shaurikadatt Fisherman's throat causing excruciating pain to him. Tormented by this, Shaurikadatt called his servants and instructed, "Beloved of gods ! Go and make this announcement loudly at every corner, crossings where three, four or more roads meet, main road and streets in Shaurikapur City—'O Beloved of gods ! Shaurikadatt has a fish bone stuck in his throat. Any *Vaidya* (qualified Ayurvedic doctor) and junior *Vaidya*, senior and junior *Jnayak* (those who learned and practiced the art of healing through their own experience), and senior and junior *Chikitsak* (those who practiced medicine and surgery) who is able to remove this fish bone will be amply and richly rewarded by Shaurikadatt.' The servants made the announcement as told.

१३. तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता या जाणुया या जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता या इमेयारूवं उग्घोसणं उग्घोसिज्जमाणं निसामेंति, निसामित्ता जेणेव सोरियदत्तस्स गेहे, जेणेव सोरियमच्छंधे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बहूहिं उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य बुद्धीहिं परिणामेमाणा परिणामेमाणा वमणेहि य सड्डणेहि य, ओवीलणेहि य कवलग्गाहेहि य सल्लुद्धरणे हि विसल्लकरणेहि य इच्छंति सोरियमच्छंधस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए। नो चेव णं संचाएंति नीहरित्तए वा। तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता या जाणुया या जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति सोरियस्स मच्छकंटगं गलाओ नीहरित्तिए, ताहे संता जाव जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे वेज्जपडियारनिव्विण्णे तेणं महया दुक्खेणं अभिभूए समाणे सुक्के जाव विहरइ। एवं खलु गोयमा ! सोरिए पुरापोराणाणं जाव विहरइ।

१३. तब बहुत से वैद्य, वैद्यपुत्र आदि उपर्युक्त उद्घोषणा को सुनते हैं और सुनकर शौरिकदत्त का जहाँ घर था और जहाँ पर शौरिक मच्छीमार रहता था वहाँ पर आते हैं। आकर बहुत–सी औत्पत्तिकी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

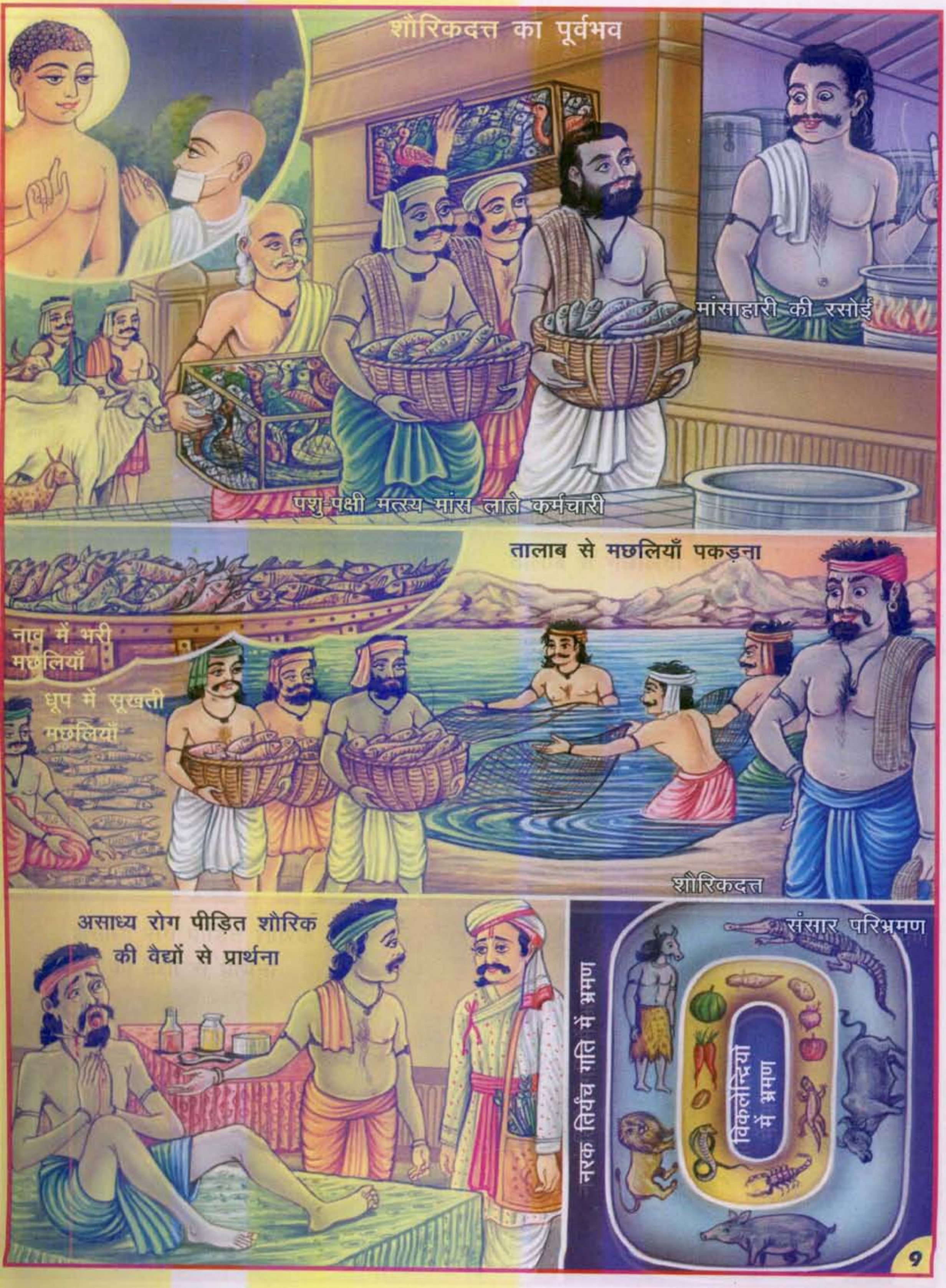

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-९

Illustration No. 9

शौरिकदत्त के कष्टों की कहानी

दृश्य-१

सोरियपुर में गौतम गणधर ने एक ऐसे दीन-पुरुष को देखा, जो शरीर में सूखा काँटा जैसा दुर्बल, क्षीण था। और जोर-जोर से बड़ी आर्त पुकार कर रहा था। गौतम स्वामी के पूछने पर भगवान ने बताया-पूर्वजन्म में यह श्रीयक नामक राजा का रसोइया था। राजा को नित्य मत्स्य-माँस का स्वादिष्ट भोजन देने के लिए उसने अनेक नौकरों को पशु-पक्षियों को पकड़कर लाने, मछलियाँ लाने आदि का काम सौंप रखा था।

दृश्य-२

हिंसाकर्मी श्रीयक इस नगर में शौरिकदत्त नामक मत्स्य व्यापारी बना। तालाबों से मछलियाँ पकड़ने के लिए वह जाल डालता। तालाबों के पानी में थूहर का दूध डालकर मछलियों को बाहर भागने पर मजबूर करता। फिर उन्हें पकड़कर सुखाता, छाबड़ियों में भर-भरकर बेचता। वह स्वयं भी उनको तल-भूनकर खाता था।

दृश्य-३

एक बार शौरिकदत्त के गले में मछली का काँटा फँस गया। उस कारण वह अत्यन्त पीड़ा भुगतने लगा। कोई भी वैद्य उसका काँटा नहीं निकाल सका। पीड़ा से पीड़ित वही शौरिकदत्त अब चौराहे पर पड़ा है जिसे तुमने देखा है।

दृश्य-४

उसका भावी जीवन बताते हुए भगवान ने कहा-यह निगोद में, विकलेन्द्रियों में; फिर नरक-पशु-पक्षी, जलचर आदि गतियों में भ्रमण करेगा।

-श्रुतस्कन्ध १, अ. ८, सूत्र ७-८

THE STORY OF SHAURIKADATT'S PAIN

SCENE-1

In Shaurikpur Gautam Swami saw a person who was lean, weak and emaciated and was shrieking and wailing loudly. On being asked *Bhagavan* informed—In his last birth he was Shriyak, the royal cook. To offer tasty dishes of fish and meat he had appointed many servants to haul fish and catch animals and birds.

SCENE-2

Cruel Shriyak reincarnated as Shaurikdatt, the fish trader. He would throw nets in lakes to catch fish. He would poison the water of lakes for the same purpose. He would then dry and fill fish in baskets for selling. He ate them too after frying and roasting.

SCENE-3

Once a fish bone got stuck in Shaurikdatt's throat. He suffered excruciating pain due to that. No doctor could remove that bone from his throat. Suffering this agony that Shaurikdatt lies on the crossing, as you have seen.

SCENE-4

Telling about his future *Bhagavan* said—He will go through cycles of rebirth and be born millions of times in all hells, as all animals, and as all one sensed beings

—Sec. I, Ch. 8, Sutra : 7-8

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बुद्धि (स्वाभाविक प्रतिभा), वैनयिकी, कार्मिकी तथा पारिणामिकी बुद्धियों से (निदान आदि को समझते हुए) वमनों, छर्दनों–(वमन कराना), अवपीड़नों–(दबाना) कवलग्राहों (मुख की मालिश करने के लिए दाढ़ों के नीचे लकड़ी का टुकड़ा रखना) शल्योद्धारों–(यन्त्र–प्रयोग से काँटों को निकालना) विशल्य–करणों–(औषध द्वारा काँटा निकालना) आदि विविध उपचारों से शौरिकदत्त के गले में से काँटे को निकालने का तथा पीड़ा को बन्द करने का भरसक प्रयत्न करते हैं, परन्तु उसमें वे सफल नहीं हो सके अर्थात् शौरिकदत्त के गले का काँटा निकाला नहीं जा सका, और नहीं पीव व रुधिर बन्द हो सका। तब वे थके–हारे निराश व उदास होकर वापिस अपने–अपने स्थान पर चले गये।

इस तरह वैद्यों के इलाज से निराश हुआ शौरिकदत्त उस असह्य प्राणांतक वेदना को भोगता हुआ सूखकर अस्थिपिंजर मात्र शेष रह गया। वह दुःखपूर्वक समय बिता रहा है।

भगवान् फरमाते हैं कि–हे गौतम ! इस प्रकार वह शौरिकदत्त (जिसको तुमने देखा है) अपने पूर्वकृत अत्यन्त अशुभ कर्मों का फल भोग रहा है।

13. Hearing and understanding this announcement many healers (etc.) came to the residence of Shaurikadatt. They did the diagnosis by employing their four kinds of wisdom, namely—*autpattiki buddhi* (intuitive wisdom), *vainayiki buddhi* (acquired wisdom), *karmaja buddhi* (practical wisdom), and *parinamiki buddhi* (deductive wisdom). Then they tried their best to give relief to Shaurikadatt by making efforts to remove the fish bone by using various procedures, such as—making him vomit, by giving him expectorants (*chhardan*), by giving massage or compression (*avapidan*), by placing wooden pieces between molars to force open the mouth (*kavalagraha*), by using surgical instruments (*shalyoddhar*), and by applying medicines. But they failed to remove the fish bone from Shaurikadatt's throat and stop the flow of blood and pus. When these healers got exhausted (*shraant*), confused or mentally tired (*tant*), and disappointed (*paritant*) they returned from where they came.

Disappointed with the treatment given by the healers and suffering excruciating and intolerable pain, Shaurikadatt has become emaciated and has been reduced to a mere skeleton. He spends his time in misery.

Bhagavan added—"Gautam ! Thus that Shaurikadatt is suffering (as you have seen) the fruits of the extremely bad *karmas* acquired in the past."

शौरिकदत्त का भविष्य

१४. 'सोरिए णं भंते ! मच्छंधे इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! सत्तरिवासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए। संसारो तहेव, जाव पुढवीए। तओ हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तओ मच्छिएहिं जीवियाओ ववरोविए तत्थेव सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ, बोही, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। निक्खेवो।

॥ अट्ठम अज्झयणं समत्तं ॥

१५. गौतम स्वामी ने पूछा–भंते ! शौरिकदत्त मच्छीमार यहाँ से काल करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान् ने उत्तर दिया–गौतम ! वह सत्तर वर्ष की परम आयु को भोगकर मृत्यु आने पर मरकर रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक में उत्पन्न होगा। उसका शेष संसार–भ्रमण पूर्ववत् पूर्व अध्ययनों की तरह समझ लेना चाहिए। वह पृथ्वीकाय आदि में लाखों बार उत्पन्न होगा। वहाँ से निकलकर हस्तिनापुर में मत्स्य होगा। वहाँ मच्छीमारों के द्वारा मारा जाकर वहीं हस्तिनापुर में एक श्रेष्ठिकुल में जन्म लेगा। वहाँ उसे सम्यक्त्व की प्राप्ति होगी। वहाँ से मरकर सौधर्म देवलोक में देव होगा। वहाँ से च्यव कर महाविदेह क्षेत्र में जन्मेगा, चारित्र ग्रहण कर उसकी सम्यक् आराधना करके सिद्ध पद को प्राप्त करेगा।

उपसंहार पिछले अध्ययन के समान समझें।

॥ अष्टम अध्ययन समाप्त ॥

THE FUTURE OF SHAURIKADATT

14. Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After his death where will this Shaurikadatt Fisherman go ? Where will he be reborn ?"

Bhagavan replied—Gautam ! After completing his life-span of seventy years, Shaurikadatt Fisherman will die at the destined time of his death and will reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha having a maximum life-span of one *Sagaropam*. From there he will follow the cycles of rebirths as mentioned in the first chapter in context of Mrigaputra... and so on up to... will be born millions of times in all hells, as all animals, and as all one sensed beings. Coming out from there he will be born as a fish in Hastinapur city. After being killed by fishermen he will reincarnate as a son in a merchant family of the same Hastinapur city. There he will gain righteousness (*samyaktva*) and get initiated as an ascetic. From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok. Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately. At last he will get enlightened and attain the status of *Siddha*, shedding all his *karmas* and ending all misery.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE EIGHTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम श्रुतस्कन्ध : नवम अध्ययन
देवदत्ता (एक निर्दय नारी)

उपोद्घात

इस नवम अध्ययन में एक निर्दय नारी की दिल दहला देने वाली कथा है। पिछले अध्ययनों में पशु-पक्षियों-मत्स्य आदि की क्रूर हिंसा करने वाले कठोर हृदय पुरुषों का चरित्र बताया है, किन्तु इसमें एक ऐसा चरित्र है, जो नारी होकर, नारी की बहू होकर अपनी सास की क्रूर हत्या करती है। पूर्वजन्म में उसका जीव सिंहसेन राजा था, वह अपनी प्रमुख रानी के उकसाने-बहकाने पर चार सौ सोतों की माताओं को बुलाकर धोखे से उन्हें एक कूटाकारशाला में बन्दकर रात में सोये हुए आग लगाकर उन्हें जला देता है; इतना क्रूर निर्दय कर्म करने वाला निर्दयता के संस्कार लिए मरकर देवदत्ता नामकी कन्या बनता है। देवदत्ता ने शारीरिक सुन्दरता तो पायी, परन्तु मन उसका अत्यन्त मलिन-कुरूप-बीभत्स था। अपने स्वतंत्र सुख-भोग के लिए उसने मातृभक्त पति की मासूम माता को अत्यन्त निर्दयता पूर्वक मार डाला।

इन क्रूर कर्मों के कटु विपाक बताने वाला यह वर्णन सुनते-पढ़ते ही रोम-रोम काँप उठता है और हिंसा से मन में सहज ग्लानि होने लगती है।

FIRST SHRUTSKANDH : NINTH CHAPTER
DEVADATTA (a cruel woman)

INTRODUCTION

This ninth chapter contains the horrifying story of a cruel woman. The preceding chapter contained the description of a callous male characters who killed and tortured animals, birds, and fish; but this chapter describes a female character who mercilessly kills her own mother-in-law. In her earlier birth she was king Simhasen, a male. Instigated by his chief queen he imprisons the mothers of his other four hundred wives in a camouflaged house through deception and then burns them alive while they were asleep. The perpetrator of such cruel deed dies with cruel attitude and reincarnates as girl Devadatta. Although endowed with physical beauty, Devadatta had a perverted, ugly, and despicable mind. For her unrestricted enjoyment of mundane pleasures she mercilessly killed the mother of his husband, a devotee of his mother.

Reading or listening to the grave consequences of such cruel deeds makes one shiver, and abhor violence.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवम अध्ययन
NINTH CHAPTER

प्रस्तावना

१. 'जइ णं भंते !' उक्खेवो नवमस्स।

१. 'भंते ! श्रमण भगवान् महावीर ने अष्टम अध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो नवम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है?' जम्बू स्वामी के प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी ने इस प्रकार उत्तर दिया–

FOREWORD

1. The foreword of the eighth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the eighth chapter, what is the text and meaning of the ninth chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?) Sudharma Swami replied—

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रोहीडए नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे ! पुढविवडिंसए उज्जाणे। धरणे जक्खे। वेसमणदत्तो राया। सिरीदेवी। पूसनंदी कुमारे जुवराया।

२. हे जम्बू ! उस काल उस समय में रोहीतक नाम का समृद्ध नगर था। वहाँ पृथिवी–अवतंसक नामक उद्यान था। उसमें धरण नामक यक्ष का यक्षायतन था। उस नगर में वैश्रमणदत्त नाम का राजा था, जिसके श्रीदेवी नामक रानी थी। युवराज पद से अलंकृत पुष्पनन्दी नामक कुमार था।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Rohitak. Outside this town was a garden named Prithvi-avatansak in which there was a temple of Dharan Yaksh. In that city ruled a king named Vaishramanadatt. The name of his queen was Shridevi and that of his son, who was the crown prince, was Pushpanandi.

३. तत्थ णं रोहीडए नयरे दत्ते नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे। कण्हसिरी भारिया। तस्स णं दत्तस्स धूया कण्हसिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा।

३. उस रोहीतक नगर में दत्त नाम का एक गाथापति व्यापारी रहता था। वह बड़ा धनी और नगर में सम्माननीय था। उसकी पत्नी का नाम कृष्णश्री था। उस दत्त गाथापति की दुहिता–पुत्री तथा कृष्णश्री की आत्मजा देवदत्ता नाम की बालिका–कन्या थी; जो निर्दोष इन्द्रियों वाली सुन्दर शरीर सम्पन्न थी।

3. In that Rohitak city lived a merchant named Datt Gathapati who was very rich and respected. The name of his wife was Krishnashri. Datt

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Gathapati and Krishnashri had a daughter named Devadatta who was perfectly endowed and beautiful.

शूली पर चढ़ी स्त्री

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे; जाव परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव जाव रायमग्गमोगाढे हत्थी आसे पुरिसे पासइ। तेसिं पुरिसाणं मज्झगयं पासइ एगं इत्थियं; अवओडगबंधणं उक्खित्त-कण्णनासं (नेह-तुप्पियगत्तं वज्झकर-कडिजुयनियच्छं कंठे गुणरत्तमल्लदामं चुण्णगुंडियगातं चुण्णयं वज्झपाणीयं) जाव सूले भिज्जमाणं पासइ, पासित्ता इमे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने, तहेव निग्गए, जाव एवं वयासी-'एसा णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसी ?'

४. उस समय में वहाँ पृथ्वी अवतंसक उद्यान में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी पधारे। उनकी धर्मदेशना सुनकर राजा व नगरजन वापस चले गये।

उस समय भगवान् के ज्येष्ठ शिष्य गौतम स्वामी षष्ठखमण-बेले के पारणे के निमित्त भिक्षार्थ नगर में गये (भिक्षा ग्रहण करके लौटते हुए) राजमार्ग में पधारे। वहाँ पर सुसज्जित हाथी, घोड़ा और पुरुषों को देखते हैं और उन सबके बीच अवकोटक बन्धन से बँधी हुई, कटे कान तथा कटे नाक वाली स्त्री को देखा। (जिसके शरीर पर चिकनाई पुती है, जिसके हाथों और कमर पर वध्य पुरुष के योग्य वस्त्र पहिनाए गये हैं, हाथों में हथकड़ियाँ हैं, गले में लाल फूलों की माला पहिनाई गयी है, गेरू के चूर्ण से जिसका शरीर पोता गया है) वह शूली पर टँगी हुई थी। उस स्त्री को देखकर गौतम स्वामी के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यह साक्षात् नरकतुल्य वेदना भोग रही है।

भिक्षा लेकर नगर से निकले। भगवान के पास आकर इस प्रकार निवेदन करने लगे-भंते ! यह स्त्री पूर्वभव में कौन थी ?

WOMAN IN GALLOWS

4. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Prithvi-avatansak garden. *Bhagavan* gave his discourse to all, after which the king and the people returned home. During that period of time, while returning after collecting alms in the city, Gautam Swami, the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, came to the main road. There he saw many elephants, horses and foot soldiers duly equipped with armours and weapons. Amongst them he saw a woman, with her ears and nose cut off, tied in the *avakotak* bond (bending the neck and tying it with hands already tied at the back) and impaled on the gallows. (Oil was smeared on her body. On her hands and waist she wore the garb of a person sentenced

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

to death. She was handcuffed and wore garland of red flowers on her neck. Her body was also smeared with chalk.) Gautam Swami thought that this woman was, indeed, suffering infernal agony.

After collecting alms he left the city, came to Bhagavan Mahavir and asked—"*Bhante* ! Who was this woman in her last birth ? In reply *Bhagavan* said—

पूर्वभव

५. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुपइट्ठे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। महासेणे राया। तस्स णं महासेणस्स रन्नो धारिणीपामोक्खाणं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था। तस्स णं महासेणस्स रन्नो पुत्तो धारिणीए देवीए अत्तए सीहसेणे नामं कुमारे होत्ता, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे, जुवराया।

५. हे गौतम ! उस काल उस समय इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष में सुप्रतिष्ठ नाम का एक समृद्ध नगर था। वहाँ पर महासेन नाम का प्रतापी राजा राज्य करता था। उसके अन्तःपुर में धारिणी आदि एक हजार रानियाँ थीं। महाराज महासेन का पुत्र और महारानी धारिणी का आत्मज सिंहसेन नामक राजकुमार था जो सर्वांग पूर्ण सुन्दर शरीर वाला व युवराज 'पद' पर अभिषिक्त था।

PAST BIRTH

5. Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Supratishth in Bharatvarsh area in Jambu continent. A majestic king named Mahasen was the ruler of that city. He had one thousand queens including Dharini in the inner quarters of his palace. King Mahasen and queen Dharini had a perfectly endowed and handsome son named Simhasen who was made the crown prince.

६. तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अन्नया कयाइ पंच पासायवडिंसयसयाइं करेंति, अब्भुगयमूसियाइं। तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अन्नया कयाइ सामा पामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नगसयाणं एगदिवसे पाणिं गिण्हाविंसु। पंचसयओ दाओ। तए णं से सीहसेणे कुमारे सामापामोक्खाहिं पंचसयाहिं देवीहिं सद्धिं उप्पिं जाव विहरइ।

६. (युवा होने पर) उस सिंहसेन राजकुमार के माता-पिता ने एक बार किसी समय उसके लिए पाँच सौ सुविशाल श्रेष्ठ महल बनवाये। तत्पश्चात् उन्होंने सिंहसेन राजकुमार का श्यामा आदि पाँच सौ सुन्दर राजकन्याओं के साथ एक ही दिन में उसका विवाह कर दिया। सभी को हिरण्य-सुवर्ण आदि की पाँच सौ पाँच-सौ वस्तुओं का प्रीतिदान दिया। राजकुमार सिंहसेन श्यामा आदि उन पाँच सौ राजकन्याओं के साथ ऊँचे प्रासादों में सानन्द समय व्यतीत करने लगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

6. At a certain time the parents got constructed five hundred large and exclusive mansions for prince Simhasen (when he attained youth). After this prince Simhasen was married to five hundred beautiful princesses including Shyama in a single day. Each of these brides were given sets of five hundred things in gold, silver (etc.) in dowry. He lived happily in lofty mansions enjoying all these gifts with the five hundred princesses including Shyama.

७. तए णं से महासेणे राया अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते। नीहरणं। राया जाए।

७. कुछ समय पश्चात् राजा महासेन कालधर्म को प्राप्त हुए। राजकुमार सिंहसेन ने निःसरण-(शवयात्रा) क्रियाएँ कीं। तत्पश्चात् सिंहसेन राजा बन गया।

7. After some time king Mahasen died. Prince Simhasen performed the last rites including cremation and ascended the throne.

सपत्नियों का षड्यंत्र

८. तए णं से सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अवसेसाओ देवीओ नो आढाइ, नो परिजाणाइ। अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ।

तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं, देवीसयाणं एगूणाइं पंचमाईसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं समाणाइं 'एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाइ, नो परिजाणाइ, अणाढायमाणे, अपरिजाणमाणे विहरइ। तं सेयं खलु अम्हं सामं देविं अग्गिप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा, सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए, एवं संपेहेंति, संपेहित्ता सामाए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ विहरंति।

८. तब वह सिंहसेन राजा श्यामादेवी (प्रमुख रानी) में अत्यन्त प्रेमासक्त हुआ रात-दिन उसी के ध्यान में पागल-सा बना अन्य रानियों को न तो आदर करता है और न ही उनका ध्यान रखता है। इसके विपरीत उनका अनादर करके विस्मृत जैसा करके सानन्द समय बिता रहा था।

तब उन एक कम पाँच सौ रानियों की माताओं को जब इस वृत्तान्त का पता चला कि-'राजा सिंहसेन श्यामादेवी में मूर्च्छित व आसक्त होकर हमारी कन्याओं का न तो आदर करता और न ध्यान ही रखता है, अपितु उनका अनादर व उपेक्षा कर रहा है; तब उन्होंने परस्पर मिलकर निश्चय किया कि हमारे लिए यही उचित है कि हम श्यामादेवी को किसी प्रकार अग्नि-प्रयोग से, विष-प्रयोग से अथवा शस्त्र-प्रयोग से मार डालें। इस तरह विचार करके वे उसे अकेली व हत्या का अवसर मिलने की ताक में रहने लगीं।

CONSPIRACY BY CO-WIVES

8. Then that king Simhasen, highly enamoured of Shyama Devi, spent his time madly engrossed in her thoughts and without caring for or

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

honouring other queens. On the contrary he spent his time happily neglecting and forgetting them all.

Then the mothers of these four hundred ninety nine queens came to know of the fact that—'King Simhasen, highly enamoured of Shyama Devi, spent his time madly engrossed in her thoughts without caring or honouring their daughters. On the contrary he spent his time happily neglecting and forgetting them all.' On getting aware of this, they jointly decided that it would be to their benefit to somehow kill Shyama Devi by means of fire, poison, or weapons. With this thought they awaited the opportunity to find her alone and murder her.

९. तए णं सा सामादेवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी एवं वयासी–'एवं खलु, एगूणगाणं पंचण्हं सवत्तीसयाणं एगूणगाइं पंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं समाणाइं अन्नमन्नं एवं वयासी–'एवं खलु, सीहसेणे–जाव पडिजागरमाणीओ विहरंति। तं न नज्जइ णं मम केणइ कु–मारेण मारिस्संति, त्ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया जाव जेणेव कोवघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ।

९. इधर श्यामादेवी को भी इस षड्यन्त्र का पता लग गया। जब उसे यह वृत्तान्त मालूम हुआ तब वह इस प्रकार विचार करने लगी–'मेरी एक कम पाँच सौ सपत्नियों (सौतों) की माताओं को यह पता चला है कि–'महाराजा सिंहसेन, श्यामा में अत्यन्त आसक्त होकर हमारी पुत्रियों का आदर नहीं करते, उनकी पूर्ण उपेक्षा कर रहे हैं। अतः किसी 'अग्नि, शस्त्र या विष के प्रयोग से श्यामा के जीवन का अन्त कर देना ही हमारे लिए श्रेष्ठ है' ऐसा विचार कर वे अवसर की ताक में रहने लगी हैं। जब ऐसा है तो न जाने वे किस कुमौत से मुझे मार डालेंगी। ऐसा विचार कर वह श्यामा **भीत**–मन में डर गई, **त्रस्त**–मेरे प्राण लूट लिये जायेंगे, यह सोचकर घबराई, **उद्विग्न**–भय से हृदय काँपने लगा, **संजातभय**–भय से शरीर के अंग भी काँपने लगे और जहाँ कोपभवन था वहाँ आई। आकर मानसिक संकल्प–विकल्प की उथल–पुथल से निराश–हताश होकर आर्त्तध्यान करके लगी।

9. Somehow Shyama Devi got to know of this conspiracy. When aware of all this, she thought—"The mothers of my four hundred ninety nine co-wives have come to know of the fact that—'King Simhasen, highly enamoured of Shyama Devi, spent his time madly engrossed in her thoughts without caring for our daughters. On the contrary he completely neglects them all. Therefore, it would be to our benefit to somehow kill Shyama Devi by means of fire, poison, or weapons.' With this thought they look forward to an opportunity to find me alone and murder me. In this situation I do not know when, how and what wretched death they will deal

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

me." These thoughts made her afraid, terrified, and agitated. Every part of her body trembled with fear and she came to the *copebhavan* (the room where an angry and displeased person spends time). There she spent her time brooding gloomily in a state of mental turmoil swinging between hope and despair.

श्यामादेवी द्वारा राजा को सूचना

१०. तए णं से सीहसेणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कोवघरे, जेणेव सामा देवी, तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता सामं देविं ओहयमणसंकप्पं जाव पासइ, पासित्ता एवं वयासी–"किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियासि ?"

तए णं सा सामा देवी सीहसेणेण रन्ना एवं वुत्ता समाणी उप्फेणउप्फेणियं सीहसेणं रायं एवं वयासी–

'एवं खलु सामी ! मम एगूणपंचसवत्तिसयाणं एगूण–पंचमाइसयाणं इमीसे कहाए लद्धट्ठाणं समाणाणं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी–'एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए उवरिं मुच्छिए अम्हं धूयाओ नो आढाइ, नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ, तं सेयं खलु, अम्हं सामं देविं अग्गिप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए।' एवं संपेहेंति, संपेहित्ता मम अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ विहरंति। तं न नज्जइ णं सामी ! ममं केणइ कु–मारेण मारिस्संति त्ति कट्टु भीया जाव झियामि।

१०. तब सिंहसेन राजा को श्यामा देवी के इस वृत्तान्त की सूचना मिली तो, तत्काल जहाँ कोपगृह था, जहाँ श्यामादेवी थी वहाँ पर आया। आकर भय आदि से त्रस्त व हताश–निराश हुई चिन्ताग्रस्त निस्तेज श्यामादेवी को देखकर पूछा– देवानुप्रिये ! तू क्यों इस तरह **अपहतमनःसंकल्पा–**दिल तोड़कर दुःखी व चिन्तित हो रही हो ?

सिंहसेन राजा के द्वारा इस प्रकार पूछने पर दूध के उफान के समान क्रोध में उफनती हुई क्रोधयुक्त वचनों से सिंहसेन राजा से इस प्रकार बोली–

–हे स्वामिन् ! मेरी एक कम पाँच सौ सपत्नियों (सौतों)की एक कम पाँच सौ माताएँ इस वृत्तान्त को (कि आप मुझमें अनुरक्त हैं) जानकर इकट्ठी होकर एक दूसरे को इस प्रकार कहने लगीं–महाराज सिंहसेन श्यामादेवी में अत्यन्त आसक्त व प्रेम–पाश में बँधे हुए हमारी कन्याओं का आदर सत्कार नहीं करते हैं। उनका ध्यान भी नहीं रखते हैं; प्रत्युत उनका अनादर व उपेक्षा कर रहे हैं; इसलिए अब हमारे लिए यही समुचित है कि अग्नि–प्रयोग, विष–प्रयोग या किसी घातक शस्त्र के द्वारा श्यामा का अन्त कर डालें। तदनुसार वे मेरे अन्तर–(एकान्त) छिद्र–(असावधानी) विवर–(जब आप उपस्थित न हों) उस अवसर की प्रतीक्षा कर रही हैं। हे स्वामी ! न जाने मुझे किस कुमौत से मार डाले ! इसकारण भयाक्रान्त हुई मैं कोपभवन में आकर शोक में डूबी हुई हूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SHYAMA DEVI INFORMS THE KING

10. When king Simhasen got the information about Shyama Devi's condition, he at once came to Shyama Devi in the *copebhavan*. Seeing her hapless and brooding gloomily in a state of mental turmoil swinging between hope and despair, he asked—"Beloved of gods ! Why are you so worried and heart-broken ?"

Seething in anger, like boiling milk, Shyama Devi responded with angry words—

"My lord ! On being aware of the fact (that you are infatuated with me), the mothers of my four hundred ninety nine co-wives met at a place and deliberated—'Infatuated with Shyama Devi, king Simhasen does not respect our daughters. On the contrary he completely neglects them all. Therefore, it would be to our benefit to somehow kill Shyama Devi by means of fire, poison, or weapons.' Accordingly they await the opportunity to find me alone when you are not present and I am without any protection. My lord ! I do not know what wretched death they will deal me. Terrified by this I came to the *copebhavan* (the room where an angry and displeased person spends time) and started brooding gloomily."

११. तए णं से सीहसेणे सामं देविं एवं वयासी–'मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि। अहं णं तहा जत्तिहामि जहा णं तव नत्थि कत्तो वि सरीरस्स आवाहे पवाहे वा भविस्सइ' त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव समासासेइ।

समासासित्ता तओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी– 'गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! सुपइट्ठस्स नयरस्स बहिया एगं महं कूडागारसालं करेह, अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पासादीयं करेह, ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।'

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सुपइट्ठनयरस्स बहिया पच्चत्थिमे दिसीविभाए एगं महं कूडागारसालं जाव करेंति अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पासाइयं, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

११. (रानी की यह बात सुनकर) राजा सिंहसेन ने श्यामादेवी से कहा–'हे देवानुप्रिय ! तू इस प्रकार उत्साहहीन उदास होकर आर्तध्यान मत कर। निश्चय ही मैं ऐसा कोई उपाय करूँगा कि तुम्हारे शरीर को कहीं से भी किसी प्रकार आबाधा–थोड़ी भी पीड़ा तथा प्रबाधा–हानि नहीं पहुँच सकेगी।

इस प्रकार श्यामा देवी को इष्ट, प्रिय व मधुर वचनों से आश्वासन व सान्त्वना देता है और वहाँ लौट आता है। तदनन्तर कौटुम्बिक अनुचरों को बुलाता है और उनसे कहता है–तुम लोग जाओ और जाकर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुप्रतिष्ठ नगर से बाहर एक बड़ी कूटाकारशाला बनाओ जो सैकड़ों खम्भों से युक्त हो, मन को भाने वाली हो, महारानी के रहने योग्य तथा देखने में अत्यन्त सुन्दर रमणीय हो।

वे कौटुम्बिक पुरुष दोनों हाथ जोड़ कर सिर पर अंजलि रखकर आदर विनयपूर्वक इस राजाज्ञा को शिरोधार्य करते हुए चले जाते हैं। जाकर सुप्रतिष्ठ नगर के बाहर पश्चिम दिशा में एक विशाल व अनेक स्तम्भों वाली प्रासादिक, अत्यन्त मनोहर कूटाकारशाला तैयार करवाते हैं, तैयार करवा कर महाराज सिंहसेन को कूटाकारशाला यथायोग्य रूप से तैयार हो जाने की सूचना करते हैं।

11. King Simhasen reassured Shyama Devi—"Beloved of gods ! Stop brooding gloomily in a hapless state of despair. I will certainly make arrangements to the effect that you are not caused even slightest of physical discomfort, pain or harm.

Consoling and reassuring Shyama Devi thus, with loving and sweat words, king Simhasen returned. He then called his servants and instructed—"Go outside Supratishth city and construct a large *kootakarashala* (camouflaged house) with hundreds of pillars, which is very beautiful, charming, attractive and fit to be a queen's residence.

Those servants left after raising their joined palms to their heads and humbly accepting the king's order. Going in the northeastern direction outside Supratishth city, they constructed a large and beautiful *kootakarashala* with hundreds of pillars. Once that was done they informed king Simhasen about the desired *kootakarashala* being ready.

१२. तए णं से सीहसेणे राया अन्नया कयाइ एगूणागाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंचमाइयसयाइं आमंतेइ। तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंचमाइसयाइं सीहसेणेणं रन्ना आमंतियाइं समाणाइं सव्वालंकारविभूसियाइं जहाविभवेणं जेणेव सुपइट्ठे नयरे, जेणेव सीहसेणे राया, तेणेव उवागच्छंति। तए णं से सीहसेणे राया एगूणगाणं पंचदेवीसयाणं एगूणगाणं पंचमाइसयाणं कूडागारसालं आवासं दलयइ।

१२. तदनन्तर राजा सिंहसेन किसी समय उन चार सौ निन्यानवें रानियों की माताओं को आमंत्रित करता है। सिंहसेन राजा का आमंत्रण पाकर वे सबकी माताएँ सर्वप्रकार से वस्त्रों एवं आभूषणों से सुसज्जित हो, अपने-अपने वैभव के अनुसार सुप्रतिष्ठ नगर में राजा सिंहसेन के वहाँ आ जाती हैं। सिंहसेन राजा भी उन सभी देवियों की माताओं को निवास के लिए कूटाकारशाला में स्थान दे देता है।

12. Then at an opportune moment king Simhasen invited the mothers of those four hundred ninety nine queens. Getting king Simhasen's invitation, those mothers of the queens got ready embellished fully with dresses and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ornaments according to their respective status and came to king Simhasen in Supratishth city. King Simhasen provided them lodging in the said *kootakarashala*.

कूटाकारशाला का दहन

१३. तए णं से सीहसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेह, सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च कूडागारसालं साहरह।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव साहरंति

तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाइं पंचमाईसयाइं सव्वालंकारविभूसियाइं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च पसण्णं च आसाएमाणाइं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगीयमाणाइं उवगीयमाणाइं विहरंति।

१३. उसके पश्चात् सिंहसेन राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर कहा-'देवानुप्रियो ! तुम जाओ और बहुत-सी भोजन सामग्री वहाँ ले जाओ तथा अनेक प्रकार के पुष्पों, वस्त्रों, सुगन्धित पदार्थों, मालाओं और अलंकारों को कूटाकारशाला में पहुँचाओ।

कौटुम्बिक पुरुष भी राजा की आज्ञा के अनुसार सभी सामग्री पहुँचा देते हैं।

तत्पश्चात् सर्व प्रकार के अलंकारों से विभूषित उन चार सौ निन्यानवें देवियों की माताओं ने मिलकर उस विपुल भोजन सामग्री और सुरादिक पेय पदार्थों का आस्वादन किया-यथारुचि उपभोग किया और गान्धर्वों (गाने वाले व्यक्तियों) तथा नाटकों-(नृत्य करने वाला) नर्तकों द्वारा किये गये गान-नृत्य का आनन्द लेने लगीं। अर्थात् भोजन तथ मद्यपान करके नाच-गान में मस्त हो गईं।

KOOTAKARASHALA SET AFIRE

13. Then king Simhasen called his servants and said—Take large quantities of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food), flowers, dresses, fragrant garlands, and ornaments to the *Kootakarashala*.

According to the king's order the servants took all these things there.

Then those four hundred ninety nine mothers of queens embellished themselves with all kinds of ornaments and started enjoying that abundant food and wines as well as music and dance (by musicians and dancers). In other words, got engrossed in enjoying food, wines, dance and music.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-१०

Illustration No. 10

कर्म विपाक की करुण कहानी

दृश्य–१

रोहितक नगर में भिक्षाचरी करते हुए गणधर गौतम ने नगर के चौराहे पर एक हृदय द्रावक दृश्य देखा, एक सुन्दर स्त्री शूली पर लटक रही है। हाथ पीछे बँधे हैं, कान–नाक कटे हुए हैं और बड़ा करुण विलाप कर रही है।

दृश्य–२

जिज्ञासु गौतम भगवान से पूछते हैं–इसने ऐसा क्या क्रूर कर्म किया था जिसका फल भोग रही है ?

दृश्य–३

पूर्व जीवन की कथा सुनाते हुए प्रभु फरमाते हैं–प्राचीन समय में सिंहसेन राजा की पाँच सौ रानियाँ थी, जिनमें श्यामा पटरानी थी। पाँच सौ सौतों व उनकी माताओं ने मिलकर श्यामा को मारने का षड्यंत्र रचा। पता लगने पर राजा अत्यन्त कुपित हुआ। उन पाँच सौ रानियों व उनकी माताओं को राजा ने एक कूटाकारशाला में आमंत्रित कर नृत्य–गान–मद्य–माँस आदि की दावत दी। रात में सभी मेहमान माताएँ नृत्य आदि में मस्त हो रही थीं।

दृश्य–४

राजा ने कूटाकारशाला का द्वार बन्द करवा दिया और चारों तरफ से अग्नि लगा दी। आग लगने पर सभी स्त्रियाँ अत्यन्त करुण विलाप आर्त पुकार करती हुईं, सभी उसी में जलकर भस्म हो गईं।

सिंहसेन का जीव दुर्गतियों में भ्रमण करता हुआ यहाँ देवदत्ता नाम की सुन्दर श्रेष्ठी कन्या बनी। देवदत्ता का विवाह यहाँ के राजकुमार पूष्यनंदी के साथ हुआ। पूष्यनंदी मातृभक्त था। देवदत्ता ने पूष्यनंदी की माता को दुर्दशा करके मार डाला। जिससे क्षुब्ध–क्रुद्ध होकर राजा ने देवदत्ता को यह कठोर दण्ड दिया है।

वही देवदत्ता आज शूली पर लटक रही है। *–श्रुतस्कन्ध १, अ. ९, सूत्र १०–१२*

PATHETIC STORY OF FRUITION OF KARMAS

SCENE-1

While seeking alms in Rohitak city Gautam Swami saw that a beautiful woman was hanging on gallows. Her hands are tied at her back and her nose and earlobes have been severed. She is wailing and moaning pitifully.

SCENE-2

Gautam asks *Bhagavan—Bhante* ! What cruel deed she committed for which she suffers now ?

SCENE-3

Bhagavan narrates the story of the past birth—In ancient times King Simhasen had five hundred queens, Shyama being the chief among them. The other queens and their mothers hatched a conspiracy to kill Shyama. When the king came to know of it he got angry. He invited the five hundred queens and their mothers to a dance, drinks and dinner party in a camouflaged house. During the night all these women are enjoying the party.

SCENE-4

The king got the gates of that house closed and set it to fire from all sides. All the women, crying for help and wailing in pain, were burnt alive.

Passing through cycles of rebirth in lower genuses, he has been reborn as Devadatta, the beautiful daughter of a merchant. It is that Devadatta that hangs on gallows.

—Sec. I, Ch. 9, Sutra : 10-12

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. तए णं से सीहसेणे राया अद्धरत्तकालसमयंसि बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता, कूडागारसालाए दुवाराइं पिहेइ, पिहित्ता कूडागारसालाए सव्वओ अगणिकायं दलयइ।

तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाइं पंचमाइसयाइं सीहसेणेण रन्ना आलिवियाइं समाणाइं रोयमाणाइं कंदमाणाइं विलवमाणाइं अत्ताणाइं असरणाइं कालधम्मुणा संजुत्ताइं।

१४. तत्पश्चात् सिंहसेन राजा अर्द्धरात्रि के समय अनेक राजपुरुषों को साथ लेकर जहाँ कूटाकारशाला थी वहाँ पर आया। आकर उसने कूटाकारशाला के सभी दरवाजे बन्द करवा दिये। बन्द करवाकर कूटाकारशाला को चारों तरफ से आग लगवा दी।

राजा सिंहसेन के द्वारा जलाई गईं, त्राण व शरण (आश्रय) से रहित हुई उन एक कम पाँच सौ रानियों की माताएँ रुदन–(रोना), क्रन्दन (चिल्लाना, कर्ण कटु शब्दों में रोना) व विलाप–(आर्तस्वर से छाती पीटकर पुकारना) करती हुईं कालधर्म को प्राप्त हो गईं।

14. Around midnight king Simhasen came to the *kootakarashala* with many attendants. He got all the gates of the *kootakarashala* closed and then set it ablaze from all directions.

Set afire by king Simhasen those four hundred ninety nine mothers of queens failed to find any shelter or protection. They died crying, wailing, and sobbing in despair.

देवदत्ता का जन्म

१५. तए णं से सीहसेणे राया एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता चोत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइयेसु नेरइयत्ताए उववन्ने। से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव रोहीडए नयरे दत्तस्स सत्थवाहस्स कण्हसिरीए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए उववन्ने।

१५. इस प्रकार के (घोर–दारुण) पाप कर्म करने वाला, ऐसी विद्या–बुद्धि वाला, ऐसा दुष्ट आचरण करने वाला सिंहसेन राजा अत्यधिक पापकर्मों का उपार्जन करके ३४ सौ वर्ष की परम आयु भोगकर काल करके उत्कृष्ट २२ सागरोपम की स्थिति वाली छट्ठी नरकभूमि में नारक रूप से उत्पन्न हुआ। वही सिंहसेन राजा का जीव नरक स्थिति समाप्त होने पर वहाँ से निकलकर इसी रोहीतक नगर में दत्त सार्थवाह की कृष्णश्री भार्या की कुक्षि में बालिका के रूप में उत्पन्न हुआ।

BIRTH OF DEVADATTA

15. Ever involved in such sinful activities, accepting these activities to be ideal of life and the best conduct, king Simhasen acquired extremely

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

malevolent and pain causing *karmas* in abundance. After completing his life-span of three thousand four hundred years, he died and reincarnated as an infernal being in the sixth hell where the maximum life span is twenty two *Sagaropam*. The soul that was king Simhasen, coming out of the hell, was conceived as a daughter in the womb of Krishnashri, the wife of Datt Sarthavaha in this Rohitak city.

१६. तए णं सा कण्हसिरी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारियं पयाया सुउमालपाणिपाया जाव सुरूवा। तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहियाए विउलं असणं जाव मित्त–नाइ–नियग–सयण–संबंधि–परियणस्स पुरओ नामधेज्जं करेंति तं होउ णं दारिया देवदत्ता नामेणं, तए णं सा देवदत्ता दारिया पंचधाईपरिग्गहिया जाव परिवड्ढइ।

१६. तब उस कृष्णश्री ने नव मास परिपूर्ण होने पर एक कन्या को जन्म दिया। वह कन्या अत्यन्त कोमल हाथ–पैरों वाली तथा बहुत रूपवती थी। कन्या के माता–पिता ने बारहवें दिन बहुत–सी खाद्य सामग्री तैयार कराकर मित्र, ज्ञाति सम्बन्धी तथा परिजनों को निमन्त्रित किया एवं भोजनादि से निवृत्त हो लेने पर कन्या का नामकरण संस्कार करते हुए कहा–'हमारी इस कन्या का नाम देवदत्ता रखा जाता है, क्रमशः वह देवदत्ता पाँच धायमाताओं के संरक्षण में वृद्धि को प्राप्त होने लगी।

16. After nine months of pregnancy, that Krishnashri gave birth to a daughter. That girl was very delicate and beautiful. On the twelfth day after birth, the parents arranged for abundant food and invited their friends, relatives and kinfolk. After the feast they performed the naming ceremony—"Our daughter is hereby named Devadatta." And girl Devadatta began to grow up in care of five nursemaids.

१७. तए णं सा देवदत्ता दारिया उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण य रूवेण लावण्णेण य अईव–अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था।

तए णं सा देवदत्ता दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया जाव विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता उप्पिं आगासतलगंसि कणगतिंदूसेणं कीलमाणी विहरइ।

१७. तदनन्तर वह देवदत्ता बालिका बाल्यावस्था को पारकर यौवन, रूप व लावण्य से अत्यन्त उत्तम व उत्कष्ट शरीर वाली हो गई।

एक बार वह देवदत्ता स्नान करके विविध प्रकार के आभूषणों से विभूषित होकर बहुत–सी कुब्जा आदि दासियों के साथ अपने भवन के ऊपर की छत पर सोने की गेंद से क्रीड़ा कर रही थी।

17. In due course girl Devadatta crossed her adolescence and became a beautiful, charming, and well proportioned young woman.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

One day, after taking her bath and adorning herself with a variety of ornaments, Devadatta, surrounded by numerous maids including hunchbacks, was playing on the rooftop of her mansion with a golden ball.

१८. इमं च णं वेसमणदत्ते राया ण्हाए जाव विभूसिए आसं दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे आसवाहिणियाए निज्जायमाणे दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयइ। तए णं से वेसमेणे राया जाव वीइवयमाणे देवदत्तं दारियं उप्पिं आगासतलगंसि कणगतिंदूसेणं कीलमाणिं पासइ, पासित्ता देवदत्ताए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी--कस्स णं देवाणुप्पिया ! एसा दारिया ? किं वा नामधेज्जेणं ?

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा वेसमणं रायं करयल जाव एवं वयासी--'एस णं सामी ! दत्तस्स सत्थवाहस्स धूया, कण्हसिरीए भारियाए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठसरीरा।'

१८. इधर स्नानादि से निवृत्त होकर आभूषण आदि पहनकर राजा वैश्रमणदत्त घोड़े पर बैठकर बहुत से राजपुरुषों के साथ घिरा हुआ, अश्ववाहनिका–अश्वक्रीड़ा के लिए जाता हुआ दत्त गाथापति के घर के कुछ पास से निकलता है। अचानक वह वैश्रमणदत्त राजा देवदत्ता कन्या को सोने की गेंद से खेलती हुई देखता है और देखकर देवदत्ता दारिका के रूप, यौवन व लावण्य से विस्मित होता है। फिर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर पूछता है–'हे देवानुप्रियो ! यह बालिका किसकी है ? और इसका क्या नाम है ?'

तब वे कौटुम्बिक पुरुष हाथ जोड़कर इस प्रकार कहते हैं–'स्वामिन् ! यह कन्या दत्त गाथापति की पुत्री और कृष्णश्री की आत्मजा है जो रूप, यौवन तथा लावण्य से उत्तम तथा उत्कृष्ट शरीर वाली है।'

18. Around that time, after taking his bath, adorning himself with ornaments (etc.), surrounded by many attendants, and mounted on a horse, king Vaishramanadatt was going for horse-riding. He passed in the vicinity of Datt Gathapati's mansion. All of a sudden king Vaishramanadatt saw Devadatta playing with a golden ball. He was astonished at the beauty, charm and youth of Devadatta. He summoned his attendants and asked—"Beloved of gods ! Whose daughter is this ? What is her name ?"

The attendants joined their palms and informed—"Sire ! This beautiful, charming, and well proportioned young woman is Devadatta, the daughter of Datt Gathapati and Krishnashri."

१९. तए णं से वेसमणे राया आसवाहिणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--'गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! दत्तस्स धूयं कण्हसिरीए भारियाए अत्तयं देवदत्तं दारियं पुस्सनंदिस्स जुवरन्नो भारियत्ताए वरेह, जइ वि सा सयंरज्जसुक्का।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. राजा वैश्रमणदत्त अश्वक्रीड़ा से वापिस आकर अपने आभ्यन्तर स्थानीय-अन्तरंग विश्वस्त पुरुषों को बुलाता है और उनको इस प्रकार कहता है-

-देवानुप्रियो ! तुम जाओ और जाकर सार्थवाह दत्त की पुत्री और कृष्णश्री भार्या की आत्मजा देवदत्ता नाम की कन्या की युवराज पुष्यनन्दी के लिए भार्या रूप में माँग करो। यदि वह पूर्ण राज्य के बदले भी प्राप्त की जा सके तो भी प्राप्त करने के योग्य है। (अथवा वह राज्य की पटरानी बनना चाहे तो भी हमें स्वीकार है।)

19. On his return from horse-riding, king Vaishramanadatt summoned his officials of confidence and said—

"Beloved of gods ! Please go and seek the hand of Devadatta, the daughter of Datt Gathapati and Krishnashri, in marriage for crown prince Pushyanandi. She is worth getting even in exchange of our kingdom. (In other words, she is acceptable even if she wants to be the chief queen of the kingdom.)

२०. तए णं ते अब्भिंतरठाणिज्जा पुरिसा वेसमणेणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल जाव एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ण्हाया जाव सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं पवरपरिहिया जेणेव दत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छित्था। तए णं से दत्ते सत्थवाहे ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे, आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गए आसणेणं उवनिमंतेइ, उवनिमंतित्ता ते पुरिसे आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी-'संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किं आगमणप्पओयणं ?'

तए णं ते रायपुरिसा दत्तं सत्थवाहं एवं वयासी-'अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं कण्हसिरीए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसनंदिस्स जुवरन्नो भारियत्ताए वरेमो। तं जइ णं जाणासि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो, दिज्जउ णं देवदत्ता भारिया पूसनंदिस्स जुवरन्नो। भण, देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्कं ?

तए णं से दत्ते अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी-'एयं चेव देवाणुप्पिया ! मम सुक्कं जं णं वेसमणे राया मम दारियानिमित्तेणं अणुगिण्हइ।

ते अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे विउलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ, संमाणेइ सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं ते अब्भिंतरठाणिज्जपुरिसा जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वेसमणस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेंति।

२०. तब वे अन्तरंग व्यक्ति राजा वैश्रमण की इस आज्ञा को सम्मानपूर्वक स्वीकार कर, हर्षित हुए। फिर स्नानादि क्रिया करके तथा राजसभा में प्रवेश करने योग्य उत्तम वस्त्र पहनकर जहाँ दत्त सार्थवाह का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घर था, वहाँ आये। दत्त सार्थवाह भी उन्हें आता देखकर बड़ी प्रसन्नता के साथ आसन से उठकर उनके सम्मान के लिए सात–आठ कदम सामने अगवानी करने गया। उनका स्वागत कर उचित आसन पर बैठने की प्रार्थना की। तदनन्तर आश्वस्त–(मार्ग चलने का श्रम दूर होने पर) विश्वस्त–(मानसिक दृष्टि से स्थिर हो जाने पर) आने वाले राजपुरुषों से कहा–देवानुप्रियो ! आज्ञा दीजिए, आपके शुभागमन का क्या प्रयोजन है ?

दत्त सार्थवाह के पूछने पर आगन्तुक राजपुरुषों ने कहा–'हे देवानुप्रिय ! हम आपकी पुत्री और कृष्णश्री की आत्मजा देवदत्ता नाम की कन्या की युवराज के लिए भार्या रूप से मँगनी करने आये हैं। यदि हमारी यह माँग आपको उपयुक्त; अवसर के अनुकूल, श्लाघनीय तथा वरवधू की जोड़ी के अनुरूप जान पड़ती हो तो देवदत्ता को युवराज, पुष्यनन्दी के लिए दीजिए और बतलाइये कि इसके लिए आपको क्या शुल्क–उपहार दिया जाय ?

उन आभ्यन्तरस्थानीय पुरुषों के इस कथन को सुनकर दत्त सार्थवाह बोले–'देवानुप्रियो ! मेरे लिए यही बड़ा शुल्क है कि महाराज वैश्रमणदत्त–(अपने पुत्र के लिए) मेरी इस बालिका को ग्रहण कर मुझे अनुगृहीत कर रहे हैं।'

इसके पश्चात् दत्त गाथापति ने उन अन्तरंग राजपुरुषों का पुष्प, गंध, माला तथा अलंकारादि से यथोचित सत्कार–सम्मान किया और सत्कार–सम्मान पूर्वक विसर्जित किया। वे आभ्यन्तर स्थानीय पुरुष जहाँ वैश्रमणदत्त राजा था वहाँ आये और उन्होंने वैश्रमण राजा को उक्त सारा वृत्तान्त कह सुनाया।

20. The officials formally joined their palms and humbly and happily accepted king Vaishramanadatt's order. After taking their bath and putting on their best court dresses they went to Datt Sarthavaha's mansion. Datt Sarthavaha was pleased to see them coming. He got up from his seat and went ahead seven-eight steps to welcome them. After greeting them he offered them suitable seats. When the officials took there seats and made themselves comfortable Datt Sarthavaha asked, "Beloved of gods ! Tell me what gives me the honour of your visit ?"

On being asked thus by Datt Sarthavaha; the king's officials said, "Beloved of gods ! We have come to seek the hand of your and Krishnashri's daughter Devadatta in marriage for our crown prince. Beloved of gods ! If you feel that the match is seemly, appropriate, desirable, commendable and worth a union, please give your consent to marry Krishnashri to crown prince Pushyanandi. If you agree to our proposal please tell us the desired dowry ?"

On hearing the proposal from the king's officials Datt Sarthavaha replied, "Beloved of gods ! By asking the hand of my daughter king

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Vaishramanadatt has bestowed honour on me and, that is more than any dowry."

After this he sent them away after offering them food and honouring them with flowers, apparels, perfumes, garlands, and ornaments. The messengers returned to king Vaishramanadatt and informed him the aforesaid details (about the acceptance of the proposal).

देवदत्ता का विवाह

२१. तए णं से दत्ते गाहावई अन्नया कयाइ सोहणंसि तिहि–करण–दिवस–नक्खत्त–मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त–नाइ–नियग–सयण–सम्बंधिपरियणं आमंतेइ। ण्हाए जाव पायच्छित्ते सुहासणवरगए तेणं मित्त० सद्धिं संपरिवुडे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे विहरइ। जिमियभुत्तत्तरागए वि य णं आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्तनाइनियगसयण–संबंधिपरियणं विउलेणं पुप्फ–वत्थ–गंध–मल्लालंकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ,

सक्कारित्ता सम्माणेत्ता देवदत्तं दारियं ण्हायं जाव विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहेइ, दुरुहेत्ता सुबहुमित्त जाव सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाए नाइयरवेणं रोहीडयं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव वेसमणरन्नो गिहे, जेणेव वेसमणे राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावेत्ता वेसमणस्स रन्नो देवदत्तं दारियं उवणेइ।

२१. (राजपुरुषों से समाचार जानकर) किसी अन्य समय दत्त गाथापति शुभ तिथि–(चन्द्र दिवस), करण–(बालव आदि ११ करण होते हैं) दिवस–(दोष रहित शुभ दिन), नक्षत्र–(दो घड़ी का समय) व मुहूर्त्त में अशनादिक–(मिठाईयाँ आदि) सामग्री तैयार करवाता है और करवाकर मित्र, ज्ञाति, निजक स्वजन सम्बन्धी तथा परिजनों को आमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक व अन्य मांगलिक कार्य करके सुखप्रद आसन पर स्थित हो उस विपुल अशनादिक का मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी व परिजनों के साथ उपभोग करता है। अनन्तर उचित स्थान पर बैठ (आचमन–कुल्ला करके) मुँह को शुद्ध–स्वच्छ करके परम शुद्ध होकर मित्र, ज्ञाति, स्वजन–सम्बन्धियों का विपुल पुष्प, माला, गन्ध, वस्त्र, अलंकार आदि से सत्कार करता है, सम्मान करता है।

सत्कार व सम्मान करने के पश्चात् देवदत्ता नामक अपनी पुत्री को स्नान करवाकर विविध प्रकार के आभूषणों द्वारा उसके शरीर को विभूषित कर एक हजार पुरुषों से उठाई जाने वाली शिविका–पालखी में बिठलाता है। फिर बहुत से मित्र व ज्ञातिजनों आदि को साथ लेकर सर्व प्रकार के उपहार आदि साथ लिए, बाजे–गाजे के साथ रोहीतक नगर के बीच होकर जहाँ वैश्रमण राजा था, वहाँ आया और आकर हाथ जोड़कर उसे बधाया। बधा कर वैश्रमण राजा को देवदत्ता कन्या अर्पण कर दी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

DEVADATTA'S MARRIAGE

21. (After getting this information from the king's officials) On an auspicious *tithi* (date of the lunar calendar), *karan* (a division of the day, there being eleven in number including *balav*), *divas* (auspicious day), *nakshatra* (lunar mansion), and *muhurta* (moment) Datt Sarthavaha got plenty of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food) ready. He then invited his friends, kinfolk, family members, near and far relatives and other people. After performing auspicious rituals including putting mark on his forehead, he took a comfortable seat and enjoyed that food with the guests. Having done that he sat at a place to wash his mouth and face clean. He then honoured friends, kin folk, family members, near and far relatives and other people with liberal gifts of flowers, garlands, perfumes, dresses, ornaments (etc.).

After this he got his daughter adorned with a variety of ornaments, when she had taken her bath, and seated her in a palanquin lifted by one thousand persons. Carrying all kinds of gifts and accompanied by all his friends and relatives, he moved in a procession with all pomp and show including dance and music. Crossing Rohitak City he arrived at king Vaishramanadatt's palace and greeted him by joining his palms. There he presented his daughter before king Vaishramanadatt.

२२. तए णं से वेसमणे राया देवदत्तं दारियं उवणीयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त नाइ. आमंतेइ, जाव सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पूसनंदिकुमारं देवदत्तं च दारियं पट्टयं दुरुहेइ, दुरुहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता वर नेवत्थाइं करेइ, अग्गिहोमं करेइ, करेत्ता पूसनंदिकुमारं देवदत्ताए दरियाए पाणिं गिण्हावेइ।

तए णं से वेसमणे राया पूसनंदिस्स कुमारस्स देवदत्तं दारियं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं पाणिग्गहणं कारेइ, कारेत्ता देवदत्ताए दारियाए अम्मापियरो मित्त जाव परियणं च विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेण वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेइ जाव पडिविसज्जेइ।

तए णं पूसनंदी कुमारे देवदत्ताए सद्धिं उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धनाडएहि उवगिज्जमाणे जाव विहरइ।

२२. तब वैश्रमणदत्त राजा अर्पण की गई उस देवदत्ता दारिका को देखकर बहुत हर्षित हुए, हर्षित होकर विपुल अशनादिक तैयार कराया और मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी व परिजनों को आमंत्रित कर उन्हें भोजन कराया। उनका पुष्प, वस्त्र, गंध, माला व अलंकार आदि से सत्कार–सम्मान–किया। तदनन्तर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमार पुष्यनन्दी और कुमारी देवदत्ता को चौकी (पाट) पर बैठाकर श्वेत व पीत अर्थात् चाँदी और सोने के कलशों से स्नान कराते हैं, सुन्दर वेशभूषा से सुसज्जित कराते हैं। अग्निहोम–हवन कराते हैं। हवन कराने के बाद कुमार पुष्यनन्दी को कुमारी देवदत्ता के साथ पाणिग्रहण–(हस्त मिलाप) कराते हैं। तत्पश्चात् वह वैश्रमणदत्त नरेश पुष्यनंदी व देवदत्ता का सम्पूर्ण ऋद्धि (समृद्धि के अनुरूप) यावत् महान् वाद्य–ध्वनियाँ और ऋद्धिसमुदाय (वस्त्र अलंकारादि सम्पत्ति) व सन्मानसमुदाय–(सत्कार–सम्मान व मधुर वचन) के साथ विवाह रचाते हैं। इस प्रकार विधिपूर्वक बड़े समारोह के साथ कुमार पुष्यनंदी और कुमारी देवदत्ता का विवाह सम्पन्न हो जाता है।

पश्चात् (राजा वैश्रमणदत्त) देवदत्ता के माता–पिता तथा उनके साथ आने वाले अन्य उनके मित्रजनों, सम्बन्धिजनों और परिजनों का भी विपुल अशनादिक तथा वस्त्र, गन्ध, माला और अलंकारादि से सत्कार करते हैं, सन्मान करते हैं; सत्कार व सन्मान करने के बाद उन्हें विदा करते हैं।

राजकुमार पुष्यनंदी श्रेष्ठिपुत्री देवदत्ता के साथ उत्तम प्रासाद में जहाँ पर विविध प्रकार के वाद्य व मृदंग बज रहे थे, मधुर संगीत गाये जा रहे थे, ३२ प्रकार के नाटकों का प्रदर्शन किया जा रहा था, उनको सुनते देखते, आनन्द लेते हुए मनुष्य सम्बन्धी भोग भोगते हुए समय बिताने लगे।

22. When king Vaishramanadatt saw Devadatta as a bride he was very pleased. Then he got plenty of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food) ready. He then invited his friends, kinfolk, family members, near and far relatives and other people and offered them food. After the feast he honoured them with liberal gifts of flowers, garlands, perfumes, dresses, ornaments (etc.). Having done that he seated prince Pushyanandi and bride Devadatta on a platform anointing them with water poured from gold and silver urns. The bridal couple was then adorned with beautiful dresses and ornaments. Offerings were made into the sacred fire and the ritual of the bridegroom accepting the hand of the bride (*panigrahan*) was performed. At last with all grandeur, music and dance, rich gifts (dresses and ornaments) and exchange of greetings the marriage-ritual of prince Pushyanandi and Devadatta was ceremoniously performed.

After the marriage ceremony king Vaishramanadatt liberally offered food and gifts (dresses, perfumes, garlands, ornaments etc.) to Devadatta's parents and their family members, relatives and friends and bade them farewell.

Then in his exclusive palace prince Pushyanandi along with merchant's daughter Devadatta passed his time seeing, listening to, and enjoying sweet music of a variety of musical instruments including drums, thirty

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

two kinds of dramas, other such performances and all other human comforts and pleasures.

२३. तए णं से वेसमणे राया अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते। नीहरणं जाव राया जाव पूसनंदी।

२३. कुछ समय बाद राजा वैश्रमण कालधर्म को प्राप्त हो गये। उनकी मृत्यु पर शोकग्रस्त पुष्यनन्दी ने बड़े राजकीय समारोह के साथ उनकी निस्सरण (शवयात्रा) आदि सभी क्रियाएँ की। शोक निवृत्त होकर राज सिंहासन पर आरूढ़ हुए। युवराज से राजा बन गये।

23. After some time king Vaishramanadatt died. On his death grief stricken Pushyanandi performed his last rites and other formal rituals with state honour. After the mourning Pushyanandi ascended the throne. From crown prince he became the king.

राजा की मातृ भक्ति

२४. तए णं से पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्तए यावि होत्था। कल्लाकल्लिं जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए पायवडणं करेइ, करित्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भिंगावेइ। अट्ठिसुहाए, मंससुहाए, तयासुहाए, रोमसुहाए चउव्विहाए संवाहणाए संवाहावेइ संवाहावेत्ता सुरभिणा गंधवट्टएणं उव्वट्टित्तावेइ, उव्वट्टावेत्ता तिहिं उदएहिं मज्जावेइ, तंजहा-उसिणोदएणं सीओदएणं गन्धोदएणं। विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं भोयावेइ। सिरीए देवीए ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए जाव जिमियभुत्तुत्तरागयाए तए णं पच्छा ण्हाइ वा भुंजइ वा, उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

२४. पुष्यनन्दी राजा अपनी माता श्रीदेवी का परम भक्त था। माता श्रीदेवी जहाँ भी हों वहाँ प्रतिदिन आकर श्रीदेवी के चरणों में प्रणाम करता और प्रणाम करके शतपाक और सहस्रपाक-(सौ औषधों तथा हजार औषधों के सम्मिश्रण से बने) तैलों की मालिश करवाता था। अस्थियों को सुख देने वाले, माँस को सुख पहुँचाने वाले, त्वचा को और रोमों को सुखकारी ऐसी चार प्रकार की संवाहना-अंगमर्दन क्रिया से सुखशान्ति पहुँचाता था। तदनन्तर सुगन्धित गन्धवर्तक-सुगन्धित चूर्ण का उबटन करवाता अर्थात् उबटना मलवाता। उसके पश्चात् उष्ण, शीत और सुगन्धित यों तीन प्रकार के जल से स्नान करवाता, फिर विपुल अशनादि चार प्रकार का भोजन कराता। इस प्रकार श्रीदेवी के नहा लेने; तिलक व अन्य मांगलिक कार्य करके भोजन कर लेने के पश्चात् अपने स्थान पर आकर कुल्ला तथा मुखगत लेप को दूर कर परम शुद्ध हो सुखासन पर बैठ जाने के बाद ही पुष्यनन्दी स्वयं स्नान करता, भोजन करता था। तथा फिर मनुष्य सम्बन्धी सुख-भोग के अन्य कार्य करता था।

DEVOTION FOR MOTHER

24. King Pushyanandi was greatly devoted to his mother Shridevi Every morning he would go to mother Shridevi, wherever she was, and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

touch her feet. Then he would get her body massaged with *shatpaak* and *sahasrapaak* medicated and perfumed oils and pastes (made with mixtures of one hundred and one thousand herbs). He would also give her comfort and relaxation through four types of body-massage—bone stimulating, muscle stimulating, skin stimulating, and hair stimulating. After that he would get her body cleansed by applying and rubbing perfumed powders. Then he would let her bathe with three kinds of water—lukewarm, cold, and fragrant. Once all this was done he would offer her enough food of four kinds. He would take his bath and food only after Shridevi had taken her bath, performed auspicious rituals, eaten her food, washed her mouth and face and reclined on her seat. Then he would commence his other daily activities including enjoying human comforts and pleasures.

२५. तए णं तीसे देवदत्ताए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पन्ने-'एवं खलु पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते समाणे जाव विहरइ। तं एएणं वक्खेवेणं नो संचाएमि पूसनंदिणा रण्णा सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए। तं सेयं खलु ममं सिरिं देविं अग्गिप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए, ववरोवेत्ता पूसनंदिणा रन्ना सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीए विहरित्तए' एवं संपेहेइ संपेहित्ता सिरीए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणी विहरइ।

२५. किसी समय मध्यरात्रि में कुटुम्ब सम्बन्धी चिन्ताओं में उलझी हुई (जागती हुई) देवदत्ता के हृदय में यह संकल्प उत्पन्न हुआ कि 'यह पुष्यनन्दी राजा अपनी माता श्रीदेवी का परम भक्त बना हुआ है। उसी की सेवा में लगा रहता है। इस अवक्षेप-विघ्न के कारण मैं पुष्यनन्दी राजा के साथ पर्याप्त रूप से मनचाहे मनुष्य सम्बन्धी विषयभोगों का उपभोग नहीं कर पाती हूँ। इसलिए अब मुझे यही करना योग्य है कि किसी प्रकार अग्नि, शस्त्र, विष अथवा मंत्र के प्रयोग से श्रीदेवी का प्राणान्त कर महाराज पुष्यनन्दी के साथ मनुष्य सम्बन्धी विषयभोगों का मन इच्छित रूप में उपभोग करूँ।' ऐसा विचार कर वह श्रीदेवी को मारने के लिए अन्तर-(जिस समय राजा का आगमन न हो), छिद्र-(राजपरिवार के किसी सदस्य की जिस समय उपस्थिति न हो) और विवर-(जिस समय श्रीदेवी बिल्कुल अकेली हो ऐसे अवसर) की प्रतीक्षा करने लगी।

25. Once around midnight, engrossed in family problems, Devadatta thought—"King Pushyanandi is very much devoted to his mother Shridevi and spends all his time taking her care. This distraction does not allow me to enjoy human comforts and conjugal pleasures with king Pushyanandi fully and to the desired extant. Therefore, it is better that I kill Shridevi somehow by means of fire, weapon, poison, or mantra and enjoy human

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

comforts and conjugal pleasures with king Pushyanandi fully and to my entire satisfaction." With these thoughts she looked forward to an opportunity to kill Shridevi when the king did not visit, when no other royal person was there and when even an ordinary person was also not there (she was absolutely alone).

देवदत्ता का षड्यंत्र

२६. तए णं सा सिरीदेवी अन्नया कयाइ मज्जाइया विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्ता जाया यावि होत्था। इमं च णं देवदत्ता देवी जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सिरिं देविं मज्जाइयं विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्तं पासइ, पासेत्ता दिसालोयं करेइ, करेत्ता जेणेव भत्तधरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोहदंडं परामुसइ, परामुसित्ता लोहदंडं तावेइ, तत्तं समजोइभूयं फुल्लकिंसुयसमाणं संडासएणं गहाय जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए अवाणंसि पक्खिवइ।

तए णं सा सिरीदेवी महया-महया सद्देणं आरसित्ता कालधम्मुणा संजुत्ता।

२६. किसी समय स्नान आदि करके श्रीदेवी एकान्त में अकेली अपनी शय्या पर सुखपूर्वक सो रही थी। इधर मौका पाकर देवदत्ता देवी भी जहाँ श्रीदेवी थी वहाँ पर आती है। श्रीदेवी को एकान्त में शय्या पर सुखपूर्वक सोई हुई देखती है। देखकर दिशा का अवलोकन करती है अर्थात् कोई मुझे देख तो नहीं रहा है, यह निश्चय करने के लिए चारों तरफ देखती है। उसके बाद जहाँ भक्तगृह-रसोई थी, वहाँ पर जाती है और जाकर लोहे का डण्डा लेती है। लोहे के उस डण्डे को तपाती है, तपाकर अग्नि के समान जाज्वल्यमान या खिले हुए किंशुक-केसू के फूल के समान लाल अग्नि रूप बने हुए उस लोहे के दण्ड को संड़ासी से पकड़कर जहाँ श्रीदेवी सोई थी वहाँ आती है। आकर श्रीदेवी के अपान-गुदास्थान में प्रविष्ट करा देती है। तब श्रीदेवी बड़े भयंकर आर्त स्वर से चिल्लाती हुई मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

DEVADATTA'S CONSPIRACY

26. Once after her bath Shridevi was sleeping comfortably in her bed alone and in solitude. Availing the opportunity, Devadatta came to the room and found Shridevi sleeping comfortably in her bed. She looked around to ensure that no one was there to see her. Then she went to the kitchen, picked up an iron rod and heated it. When it was red hot like *Kimshuk* flower (Butea frondosa) and fire she picked it with a pair of tongs and came where Shridevi was sleeping. Here she thrust the red hot iron rod into Shridevi's anus. With a terrible pathetic shriek Shridevi died.

२७. तए णं तीसे सिरीए देवीए दासचेडीओ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्तं देविं तओ अवक्कममाणिं पासंति, पासेत्ता जेणेव सिरीदेवी तेणेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सिरिं देविं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजढं पासंति, पासित्ता 'हा हा अहो अकज्जं' इति कट्टु रोयमाणीओ कंदमाणीओ विलवमाणीओ जेणेव पूसनंदी राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पूसनंदि रायं एवं वयासी--'एवं खलु, सामी ! सिरीदेवी देवदत्ताए देवीए अकाले चेव जीवियाओ ववरोविया।'

तए णं से पूसनंदी राया तासिं दासचेडीणे अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म महया माइसोएण अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्ते विव चंपग वरपायवे धसत्ति धरणियलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिए।

२७. श्रीदेवी की दासियाँ उस भयानक चीत्कार शब्दों को सुनकर दौड़ती है। जहाँ श्रीदेवी थी वहाँ आती हैं, तब वहाँ से देवदत्ता देवी को निकलती हुई–वापिस जाती देखती हैं। देखकर जिधर श्रीदेवी सोई हुई थी वहाँ आती हैं, वहाँ पर श्रीदेवी को प्राणरहित, चेष्टा रहित मृत अवस्था में देखती हैं। देखकर–'हा ! हा ! अहो ! बड़ा अनर्थ हुआ' इस प्रकार कहकर रुदन, आक्रन्दन तथा विलाप करती हुई, जहाँ पर पुष्यनंदी राजा था वहाँ पर जाती हैं। जाकर महाराज पुष्यनंदी से इस प्रकार निवेदन करती हैं–हे स्वामिन् ! श्रीदेवी को देवदत्ता देवी ने अकाल मौत से मार डाला है।'

पुष्यनंदी राजा उन दासियों से इस वृत्तान्त को सुन/समझ कर महान् मातृशोक से विह्वल होकर परशु से काटे हुए चम्पक वृक्ष की भाँति धड़ाम से भूमि पर गिर पड़ा।

27. Hearing the terrible shriek Shridevi's maids rushed to her room and saw Devadatta leaving. The maids came to Shridevi's bed and found her lifeless, still and dead. After seeing this they went to king Pushyanandi crying and wailing, and sobbing—"Oh ! Oh ! Alas ! Great misfortune has befallen us." They informed king Pushyanandi—"Sire ! Queen Devadatta has killed mother Shridevi."

Hearing and understanding what the maids told him, king Pushyanandi, grief stricken due to the loss of his mother, fell on the ground like an axed *Champak* tree.

२८. तए णं से पूसनंदी राया मुहुत्तंतरेण आसत्थे वीसत्थे समाणे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहेहिं मित्त जाव परियणेणं सद्धिं रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सिरीए देवीए महया इड्ढी सक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे देवदत्तं देविं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, एतेणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

'तं एवं खलु, गोयमा ! देवदत्ता देवी पुरापोराणाणं जाव विहरइ।'

२८. तदनन्तर कुछ समय के पश्चात् वह पुष्यनन्दी राजा आश्वस्त हुआ, होश में आया। चित्त को शान्त किया। तब अनेक राजा, सार्थवाह तथा मित्रों परिजनों के साथ रुदन, आक्रन्दन कर ऊँचे स्वर से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोता है। विलाप (आर्तस्वर में हाय हाय) करता हुआ श्रीदेवी का महान् ऋद्धि तथा सत्कार सम्मान के साथ निष्कासन कृत्य-(मृत्यु-संस्कार) करता है। तत्पश्चात् क्रोध के आवेश में रुष्ट, कुपित, अतीव क्रोधाविष्ट व रौद्ररूप धारण कर तथा लाल-पीला होता हुआ देवदत्ता देवी को राजपुरुषों से पकड़वाता है। पकड़वाकर इस पूर्वोक्त प्रकार से (जिसे तुम देखकर आये हो) 'यह वध्या-हंतव्या है' ऐसी राजपुरुषों को आज्ञा देता है।

इस प्रकार निश्चय ही, हे गौतम ! देवदत्ता देवी अपने पूर्वकृत अशुभ पापकर्मों का फल पा रही है।

28. After some time king Pushyanandi regained his consciousness and composure. In the company of many kings... and so on up to... caravan chiefs, friends and relatives he wept, wailed and sobbed loudly. Sobbing thus he performed the last rites of Shridevi with all state honour. Having done all this his anger surfaced with great intensity, giving him a terrifying look. Gnashing his teeth he got Devadatta caught by guards. He then sentenced her to death—"She is to be taken to gallows and killed." (As you have seen.)

Thus, Gautam ! Devadatta ! suffers the fruits of the extremely bad *karmas* acquired in the past.

देवदत्ता का भविष्य

२९. देवदत्ता णं भंते ! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! असीइं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। संसारो। वणस्सई। तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता गंगपुरे नयरे हंसत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ साउणिएहिं वहिए समाणे तत्थेव गंगपुरे नयरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ। बोही। सोहम्मे। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। निक्खेवो।

॥ नवम अज्झयणं समत्तं ॥

२९. (यह सब वृत्तान्त सुनकर) गौतम स्वामी ने प्रश्न किया-अहो भगवन् ! देवदत्ता देवी यहाँ से काल करके कहाँ जायेगी ? कहाँ उत्पन्न होगी ?

भगवान महावीर ने कहा-हे गौतम ! देवदत्ता देवी ८० वर्ष की पूर्ण आयु भोग कर काल करके इस रत्नप्रभा नामक प्रथम पृथिवी-नरक में नारक पर्याय में उत्पन्न होगी। प्रथम अध्ययन में कहे अनुसार अनेक योनियों में संसारभ्रमण करती हुई यावत् वनस्पति, निम्ब आदि कटु-वृक्षों तथा कटुदुग्ध वाले अर्कादि पौधों में लाखों बार उत्पन्न होगी। तदनन्तर वहाँ से निकलकर गंगपुर नगर में हंस रूप से उत्पन्न होगी। वहाँ शाकुनिकों-पक्षियों का शिकार करने वालों द्वारा वध किये जाने पर वह उसी गंगपुर में ही श्रेष्ठिकुल में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्ररूप में जन्म लेगी, वहाँ उसका जीव सम्यक्त्व बोधि को प्राप्त करेगा। वहाँ से सौधर्म नामक प्रथम देवलोक में उत्पन्न होगा। वहाँ से च्युत होकर महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगा। वहाँ चारित्र ग्रहण कर यथावत् पालन कर सिद्धि को प्राप्त करेगा। सर्व कर्मों से मुक्त होगा।

निक्षेप–श्री सुधर्मा स्वामी ने उपसंहार करते हुए कहा–हे जम्बू ! निर्वाण-प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने नौवें अध्ययन का यह अर्थ कहा है।

॥ नवम अध्ययन समाप्त ॥

DEVADATTA'S FUTURE

17. (Hearing these details) Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After her death where will this Devadatta go ? Where will she be reborn ?

Bhagavan replied—Gautam ! After completing her life-span of eighty years, Devadatta will die and reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha. From there she will follow the cycles of rebirths as mentioned in the first chapter in context of Mrigaputra... and so on up to... will be born millions of times in all hells, as all animals, and as all plants including the bitter ones. Coming out from there she will be born as a swan in Gangapur city. After being killed by some bird catchers she will reincarnate as a son in a merchant family of the same Gangapur city. There he will gain righteousness (*samyaktva*). From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok. Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately. At last he will get enlightened and attain the status of Siddha, shedding all his *karmas* and ending all misery.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE NINTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम श्रुतस्कन्ध : दशम अध्ययन
अंजू (दुराचारिणी नारी)

उपोद्घात

इस अध्याय में दुराचारिणी स्त्री के मुक्त दुष्चरित्र के कटु फलों का वर्णन है। कथा संक्षिप्त होते हुए भी दुराचरण के त्याग की प्रभावी प्रेरणा प्रदान करती है।

FIRST SHRUTSKANDH : TENTH CHAPTER
ANJU (a corrupt woman)

INTRODUCTION

This chapter narrates the bitter fruits of unchecked licentious activities of a corrupt woman. This is a brief but effective story providing inspiration to avoid lechery.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशम अध्ययन
TENTH CHAPTER

प्रस्तावना

१. दसमस्स उक्खेवो–'जइ णं भंते !'

१. भंते ! श्रमण भगवान महावीर ने दशम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है, इत्यादि, उत्क्षेप–प्रस्तावना पूर्ववत् जानना चाहिए। सुधर्मा स्वामी बोले–

FOREWORD

1. The foreword of the eighth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the ninth chapter, what is the text and meaning of the tenth chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?) Sudharma Swami replied—

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वद्धमाणपुरे नामं नयरे होत्था, अड्ढे ! पियंगू नामं भारिया ! अंजू दारिया जाव उक्किट्ठसरीरा। समोसरणं, परिसा जाव पडिगया।

२. हे जम्बू ! उस काल तथा उस समय में वर्द्धमानपुर नाम का एक नगर था। वहाँ विजयवर्द्धमान नामक उद्यान था। उसमें मणिभद्र यक्ष का यक्षायतन था। वहाँ विजयमित्र नामक राजा राज्य करता था। धनदेव नामक एक सार्थवाह रहता था, जो धनाढ्य और प्रतिष्ठित था। उसके प्रियंगु नाम की भार्या थी। उनकी सुन्दर शरीरवाली अंजू नामक एक बालिका थी। उस समय विजयवर्द्धमान नामक उद्यान में श्रमण भगवान महावीर स्वामी पधारे। परिषद् धर्मदेशना सुनने आई और धर्मोपदेश सुनकर वापिस चली गयी।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Vardhamanapur. Outside this town was a garden named Vijayavardhan in which was a temple of Manibhadra Yaksh. In that city ruled a king named Vijayamitra. In Vardhamanapur city lived a merchant named Dhanadev Gathapati who was very rich and respected. The name of his wife was Priyangu. They had a daughter named Anju who was perfectly endowed and beautiful. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Vijayavardhan garden. People came and *Bhagavan* gave his discourse to all after which the masses returned home.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे जाव अडमाणे जाव विजयमित्तस्स रन्नो गिहस्स असोगवणियाए अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे पासइ एगं इत्थियं सुक्कं, भुक्खं निम्मंसं, किडिकिडियाभूयं, अट्ठिचम्मावणद्धं नीलसाडगनियत्थं कट्ठाइं कलुणाइं विस्सराइं कूवमाणिं पासइ, पासित्ता चिंता तहेव, जाव एवं वयासी–'सा णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसी ?' वागरणं !

३. उस समय भगवान महावीर के ज्येष्ठ शिष्य श्री गौतमस्वामी भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए विजयमित्र राजा के घर की अशोकवाटिका के समीप से जा रहे थे। तब वहाँ एक स्त्री को देखा, जो शरीर से सूखी, भूखी, निर्मांस (जिसके शरीर का माँस सूख गया हो) किटि–किटि शब्द करती हुई (जिसकी शरीर–अस्थियाँ कड़कड़ शब्द कर रही हों) वह दुर्बल व कृश काय इतनी थी कि उसकी चमड़ी हड्डियों से चिपटी हुई जैसी लगती थी तथा नीली साड़ी पहने हुए, कष्टमय, करुणोत्पादक, दीनतापूर्ण वचन बोलकर पुकार रही थी। यह करुण दृश्य देखकर गौतम स्वामी विचार करते हैं, उनके मन में चिन्तन उठता है, ''यह ऐसी नारकीय वेदना क्यों भोग रही है'' ? गौतम स्वामी भगवान के निकट आकर पूछते हैं–'भगवन् ! यह स्त्री पूर्वभव में कौन थी ?' इसके उत्तर में भगवान महावीर स्वामी कहने लगे–

PRESENT BIRTH OF ANJU

3. During that period of time, while going to collect alms, Gautam Swami, the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, was passing in the vicinity of the garden outside the palace of king Vijayamitra. There he saw a woman who was lean, famished, emaciated (devoid of flesh), producing rattling sound (having rattling skeleton), and so weak and cadaverous that her bones appeared to be covered with skin alone. She wore a blue dress and was uttering distressful, pathetic and plaintive sounds and words. Seeing this pathetic scene Gautam Swami thought—"Why she is suffering such infernal agony ?" He came to Bhagavan Mahavir and asked—"*Bhante* ! Who was this woman in her last birth ? In reply *Bhagavan* said—

अंजू का पूर्वभव : पृथ्वी श्री गणिका

४. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे इंदपुरे नामं नयरे होत्था। तत्थ णं इंददत्ते राया। पुढविसिरी नामं गणिया होत्था। वण्णो। तए णं सा पुढिविसिरी गणिया इंदपुरे नयरे बहवे राई–सर जाव प्पभिइओ बहूहिं चुण्णप्पओगेहि य जाव अभिओगेत्ता उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ।

४. हे गौतम उस काल (प्राचीन काल) में इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारत वर्ष में इन्द्रपुर नाम का एक नगर था। वहाँ इन्द्रदत्त नाम का राजा राज्य करता था। इसी नगर में पृथ्वीश्री नाम की एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणिका रहती थी। उसका वर्णन कामध्वजा गणिका की ही तरह जान लेना चाहिए। इन्द्रपुर नगर में वह पृथ्वीश्री गणिका अनेक ईश्वर, तलवर यावत् सार्थवाह आदि लोगों को अपनी सुन्दरता, हाव-भाव, अंग प्रदर्शन, कला दिखाकर अपनी ओर आकृष्ट करती थी। यदि कोई इनसे बच जाता तो उसे वशीकरण सम्बन्धी चूर्णादि के प्रयोगों से अपने वश में करके मनुष्य सम्बन्धी मनचाहे काम-भोगों का यथेष्ट रूप में उपभोग करती हुई जीवन व्यतीत कर रही थी।

PAST BIRTH OF ANJU : PRITHVISHRI COURTESAN

4. Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Indrapur in Bharatvarsh area in Jambu continent. A king named Indradatt was the ruler of that city. In that city lived a courtesan named Prithvishri (description to be read as that of Kamadhvaja courtesan). In Indrapur city that Prithvishri courtesan enticed many kings... and so on up to... caravan chiefs by means of her beauty, gestures, display of body-parts, and her art. Where she failed, she used magical powers and powders for seduction. She spent her time enjoying all human and carnal pleasures fully and as she desired.

५. तए णं सा पुढिवीसिरी गणिया एयकम्मा एयप्पहाणा एयविज्जा एयसमायारा सुबहुं पावं कम्मं समज्जिणित्ता पणतीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ना।

५. इसप्रकार के कर्म, इसप्रकार की विद्या एवं इसप्रकार के आचार वाली वह पृथ्वीश्री गणिका (अत्यन्त कामासक्ति के कारण) अत्यधिक पापकर्मों का उपार्जन कर ३५ सौ वर्ष की आयुष्य भोगकर कालमास में काल करके छट्ठी नरकभूमि में २२ सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति वाले नारकियों में नारक रूप से उत्पन्न हुई।

5. Considering this kind of acts to be her duty, giving importance to, being well versed in, and being engrossed in such deeds that Prithvishri courtesan (due to lechery) continued to accumulate intense malevolent *karmas*. Completing her life span of three thousand five hundred years she died and took rebirth as an infernal being in the sixth hell with a maximum life span of twenty two *Sagaropam*.

वर्तमान भव

६. सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेह वद्धमाणपुरे नयरे धणदेवस्स सत्थवाहस्स पियंगु भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए उववन्ना। तए णं सा पियंगु भारिया नवण्हं मासाणं दारिया पयाया। नामं अंजुसिरी। सेसं जहा देवदत्ताए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. वहाँ से निकलकर इसी वर्धमानपुर नगर में वह धनदेव नामक सार्थवाह की प्रियंगु भार्या की कोख से कन्या रूप में उत्पन्न हुई। तदनन्तर उस प्रियंगु भार्या ने नव मास पूर्ण होने पर उस कन्या को जन्म दिया और उसका नाम अंजुश्री रखा। उसका शेष वर्णन (नौवें अध्ययन में वर्णित) देवदत्ता की तरह जान लेना चाहिए।

PRESENT LIFE

6. On leaving the second hell, her soul was conceived as a daughter in the womb of Priyangu, the wife of Dhanadev Sarthavaha in this Vardhamanapur city. On completion of nine months Priyangu gave birth to a daughter who was named Anjushri. All other details should be read as in case of Devadatta.

७. तए णं से विजये राया आसवाहणियाए जहा वेसमणदत्ते तहा अंजु पासइ। नवरं अप्पणो अट्ठाए वरेइ, जहा तेयली जाव अंजूए भारियाए सद्धिं उप्पिं जाव विहरइ।

७. किसी समय महाराज विजयमित्र अश्वक्रीड़ा के लिए जाते हुए अंजुश्री के रूप लावण्य को देखकर राजा वैश्रमणदत्त की भाँति ही मुग्ध हो जाते हैं और फिर अपने लिए तेतलीपुत्र अमात्य (ज्ञातासूत्र में वर्णन) की तरह उसकी माँग करते हैं। यावत् वे अंजुश्री के साथ विवाह करके प्रासादों में सानन्द विहरण करते हैं।

7. Once while king Vijayamitra was going for horse-riding he saw the beauty and charm of Anjushri. He was attracted to her like king Vaishramanadatt. He then sought her hand in marriage like minister Tetaliputra (*Jnata Sutra*)... and so on up to... He married Anjushri and lived happily in his palace.

८. तए णं तीसे अंजूए देवीए अन्नया कयाइ जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था। तए णं से विजये राया, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी--'गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! वद्धमाणपुरे नयरे सिंघाडग जाव एवं वयह--'एवं खलु, देवाणुप्पिया ! विजयस्स रन्नो अंजूए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए ! जो णं इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा अंजूए देवीए जोणीसूले उवसामित्तए। तस्स णं विजए राया विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव उग्घोसेंति।

८. किसी समय अंजुश्री रानी के शरीर में योनिशूल नामक रोग उत्पन्न हो गया। पता लगने पर विजय नरेश ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर कहा--'तुम लोग वर्धमानपुर नगर में जाओ और जाकर त्रिपथ, चतुष्पथ यावत् सामान्य मार्गों पर यह उद्घोषणा करो कि देवी अंजुश्री को योनिशूल रोग उत्पन्न हुआ है। अतः जो कोई वैद्य या वैद्यपुत्र, जानकार या जानकार का पुत्र, चिकित्सक या उसका पुत्र उस रोग को उपशान्त कर देगा, राजा विजयमित्र उसे विपुल धन-सम्पत्ति प्रदान करेंगे।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कौटुम्बिक पुरुष राजाज्ञा से उक्त उद्घोषणा करते हैं।

8. Once queen Anjushri was afflicted with acute vaginal pain. When king Vijaya came to know of this he called his attendants and said—"Beloved of gods ! Go and make this announcement loudly at every corner, crossings where three, four or more roads meet, main road and streets in Vardhamanapur City that queen Anjushri is suffering from acute vaginal pain. Any *Vaidya* (qualified Ayurvedic doctor) and junior *Vaidya*, senior and junior *Jnayak* (those who learned and practiced the art of healing through their own experience), and senior and junior *Chikitsak* (those who practiced medicine and surgery) who is able to cure that diseases will be amply and richly rewarded by king Vijayamitra.

The servants made the announcement as told.

९. तए णं ते बहवे वेज्जा वा ६ इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म जेणेव विजये राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अंजूए देवीए बहूहिं उप्पत्तियाहिं वेणइयाहिं कम्मियाहिं पारिणामियाहिं बुद्धीहिं परिणामेमाणा इच्छंति अंजूए देवीए जोणिसूलं उवसामित्तए, नो संचाएंति उवसामित्तए। तए णं ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो संचाएंति अंजुए देवीए जोणिसूलं उवसामित्तए ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

तए णं सा अंजू देवी ताए वेयणाए अभिभूया समाणी सुक्का भुक्खा निम्मंसा कट्ठाइं कलुणाइं विस्सराइं विलवइ।

एवं खलु गोयमा ! अंजू देवी पुरा पोराणाणं जाव विहरइ।

९. राजपुरुषों द्वारा की गयी इस प्रकार की उद्घोषणा को सुनकर नगर के बहुत से अनुभवी वैद्य, वैद्यपुत्र चिकित्सक, विजयमित्र आदि राजा के पास आते हैं। अपनी औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी और पारिणामिकी बुद्धियों के द्वारा निरीक्षण–परीक्षण और निदान आदि करते हुए विविध प्रयोगों के द्वारा देवी अंजूश्री के रोग को उपशान्त करने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु उसके उपायों से अंजूश्री का रोग शान्त नहीं हो सका। जब वे अनुभवी वैद्य आदि अंजूश्री के रोग को शमन करने में विफल हो गये, तब खिन्न, श्रान्त एवं हतोत्साह होकर अपने–अपने घर को लौट गये।

तत्पश्चात् देवी अंजूश्री उस योनिशूलजनित वेदना से अत्यन्त पीड़ित हुई सूकने लगी, भूखी रहने लगी और मांस रहित होकर कष्ट कारक, करुणोत्पादक और दीनतापूर्ण शब्दों में विलाप करती हुई समय बिताने लगी।

भगवान कहते हैं–हे गौतम ! इस प्रकार तुमने जिसे देखा है, वह रानी अंजूश्री अपने पूर्वोपार्जित पाप कर्मों के फल भोगती हुई जीवन व्यतीत कर रही है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

9. Hearing this announcement by the state officials many healers (etc.) came to king Vijayamitra. They did the diagnosis by employing their four kinds of wisdom, namely—*autpattiki buddhi* (intuitive wisdom), *vainayiki buddhi* (acquired wisdom), *karmaja buddhi* (practical wisdom), and *parinamiki buddhi* (deductive wisdom). Then they tried their best to cure ailing Anjushri by using various procedures. However, they failed to do so. When these healers got exhausted (*shraant*), confused or mentally tired (*tant*), and disappointed (*paritant*) they returned from where they came.

Suffering from that excruciating vaginal pain, queen Anjushri went lean, famished, emaciated (devoid of flesh), and cadaverous. She spent her time in this state uttering distressful, pathetic and plaintive sounds and words.

Bhagavan added—Thus, Gautam ! Anju ! suffers the fruits of the extremely bad *karmas* acquired in the past (as you have seen).

भविष्य वृत्तान्त

१०. "अंजू णं भंते ! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ।'

'गोयमा ! अंजू णं देवी नउइं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। एवं संसारो जहा पढमे तहा नेयव्वं जाव वणस्सई। सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सव्वओभद्दे नयरे मयूरत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ साउणिएहिं वहिए समाणे तत्थेव सव्वओभद्दे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिइ। पव्वज्जा। सोहम्मे।

"से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे जहा पढमे जाव सिज्झिहिइ, जाव अंतं काहिइ।

एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते।

सेवं भंत। सेवं भंते ! त्ति बेमि।

१०. गौतम स्वामी ने प्रश्न किया-भगवन् ! अंजू देवी यहाँ से मृत्यु प्राप्त करके कहाँ जायेगी ? कहाँ उत्पन्न होगी ?

भगवान ने उत्तर दिया-हे गौतम ! अंजू देवी ९० वर्ष की पूरी आयु भोगकर काल मास में काल करके इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के नारकों में नारकी रूप से उत्पन्न होगी। उसका शेष संसार-परिभ्रमण प्रथम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्ययन की तरह जानना चाहिए। यावत् वनस्पति आदि में लाखों बार उत्पन्न होगी। वहाँ की भव-स्थिति को पूर्ण कर इसी सर्वतोभद्र नगर में मयूर के रूप में जन्म लेगी। वहाँ वह मोर, शिकारियों द्वारा मारा जाने पर सर्वतोभद्र नगर के ही एक श्रेष्ठिकुल में पुत्र रूप से उत्पन्न होगा। वहाँ बालभाव को पार कर युवावस्था प्राप्त होने पर वह तथारूप स्थविरों से बोधिलाभ-सम्यक्त्व को प्राप्त करेगा। प्रव्रज्या-दीक्षा ग्रहण कर मृत्यु के बाद सौधर्म देवलोक में उत्पन्न होगा।

गौतम-भगवन् ! देवलोक की आयु तथा स्थिति पूर्ण हो जाने के बाद वह जीव कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान-गौतम ! वह महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेगा। फिर दीक्षा लेकर सिद्ध बुद्ध होकर सब दुःखों का अन्त करेगा।

हे जम्बू ! इस प्रकार श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने दुःखविपाक नामक दशम अध्ययन का यह अर्थ प्रतिपादन किया है।

जम्बू-भगवन् ! आपका यह कथन सत्य है। जैसा आपने कहा वह यथार्थ है।

ANJU'S FUTURE

10. (Hearing these details) Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After his death where will this Anju go ? Where will she be reborn ?"

Bhagavan replied—Gautam ! After completing her life-span of ninety years, Anju will die and reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha. From there she will follow the cycles of rebirth as mentioned in the first chapter in context of Mrigaputra... and so on up to... will be born millions of times in all hells, as all animals, and as all plants. Coming out from there she will be born as a peacock in Sarvatobhadra city. After being killed by some hunters she will reincarnate as a son in a merchant family of the same Sarvatobhadra city. There he will gain righteousness (*samyaktva*). From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok.

Gautam—"*Bhante* ! After completing the life and state of Devlok where will that soul go ? Where will he be born ?"

Jambu ! Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately. At last he will get enlightened and attain the status of *Siddha* shedding all his *karmas* and ending all misery.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Sudharma Swami concluded, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the tenth chapter of *Duhkha-vipaak*. So I state."

Jambu—"*Bhante* ! What you say is, indeed, true. What you said is a fact."

उपसंहार

भगवान महावीर की वाणी का एक शाश्वत सत्य है–**सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं**–प्राणियों के शुभ–अशुभ उपार्जित सभी कर्म सफल हैं–वे अपना फल अवश्य देते हैं। **दुचिण्णा कम्मा दुहफल विवाग संजुत्ता भवंति। सुचिण्णा कम्मा सुह फल विवाग संजुत्ता भवंति**–हिंसा, असत्य, चोरी, व्यभिचार, धन–लोभ आदि प्रवृत्तियों से बँधे अशुभकर्म–सदा अशुभ और दुःखदायी फल देते हैं। तप–त्याग–संयम, दान–सेवा आदि वृत्तियों का आचरण शुभकर्म है और इनसे बँधे शुभकर्म सदा सुख देने वाले होते हैं।

भगवान महावीर के उक्त वचन **सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं** का सम्यग् सोदाहरण प्रतिपादन इस विपाक श्रुत आगम में प्रथम दुःखविपाक तथा दूसरा सुख विपाक नामक श्रुत स्कन्धों में हुआ है।

संसार में जिस प्रकार प्रकाश का महत्त्व अंधकार के कारण से है, उसी प्रकार सुख का महत्त्व भी दुःख के कारण से है। दुःख है, तभी तो जीव उससे घबराकर सुख की लालसा करता है और सुख पाने का प्रयत्न करता है। मृत्यु है, तभी उससे बचने के प्रयत्न में अमरता की खोज की जाती है। इसलिए प्रस्तुत आगम विपाक श्रुत में अशुभ एवं शुभ कर्मों के फलों का दिग्दर्शन कराया गया है। इसमें पहले अशुभ कर्मों के कटु फलों का एक से एक बढ़कर रोमांचकारी वर्णन है, जिसे पढ़–सुनकर ही हृदय काँप उठता है। दुःख विपाक श्रुत का यह वर्णन समाप्त हुआ। अब अगले श्रुतस्कंध सुख विपाक में शुभ कर्मों के शुभ फलों का वर्णन है।

॥ दशम अध्ययन सम्पूर्ण ॥

॥ दुःखविपाक का प्रथम श्रुतस्कन्ध समाप्त ॥

CONCLUSION

There is an all pervading truth in Bhagavan Mahavir's sermon—All good or bad *karmas* acquired by beings, essentially bear fruits. Bad *karmas* acquired through violence, falsity, stealing, lechery, greed, and other base attitudes and indulgences always bear bad and painful fruits. Austerities, detachment, discipline (self-control), charity, service and other noble attitudes and indulgences cause acquisition of good *karmas* that always bear good and happiness causing fruits.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In the two parts of this *Agam Vipaak Shrut—Duhkha-vipaak* and *Sukha-vipaak*—Bhagavan Mahavir has established the aforesaid statement and elaborated it with examples.

In this world darkness emphasizes the importance of light. In the same way sorrow emphasizes the importance of happiness. Because sorrow exists, a being gets afraid of it and desires for happiness, endeavours for availing happiness. Because death exists, a being searches for immortality to avoid death. That is the reason that in this *Agam, Vipaak Shrut,* the fruits of good and bad *karmas* have been revealed. It first of all states hair raising description of the bitter fruits of bad *karmas*. It sends shivers through the spine while reading or listening to it. The narration of *Duhkha-vipaak* concludes here. Now the second part *Sukha-vipaak* details the fruits of good karmas.

● END OF THE TENTH CHAPTER ●

● END OF DUHKHA-VIPAAK, THE FIRST SHRUTSKANDH ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीय श्रुतस्कन्ध : सुखविपाक
सुबाहुकुमार : प्रथम अध्ययन

उपोद्घात

दुःख विपाक के दस अध्ययनों में हिंसा, असत्य, व्यभिचार आदि दुष्कर्मों के दारुण फलों का दिग्दर्शन कराकर उनसे विरत होने की प्रेरणा है। दुःखों से मुक्ति की कामना में सुख की कामना स्वयं ही निहित होती है। सुख का मूल कारण है, शुभ कर्मों का उपार्जन। शुभ कर्मों का उपार्जन धर्म के द्वारा किया जाता है। अतः यह माना जाता है कि सुख का मूल धर्म ही है।

शास्त्र में धर्म के चार प्रकार बताये हैं, दान, शील, तप और भावना। इनमें पहला मार्ग है दान। दान के दस भेदों में मुख्य है धर्मदान। धर्मदान का एक अंग है–सुपात्रदान। अर्थात् उच्च भावों के साथ त्यागी, तपस्वी आत्माओं को शुद्ध दान देना। इस दान की अपूर्व महिमा है। दान के फलस्वरूप अनेकों आत्माओं ने, जीवन में सुख, सौभाग्य, समृद्धि और धर्ममय जीवन की साधना का सुअवसर प्राप्त किया हैं, प्रस्तुत सुखविपाक सूत्र के दस अध्ययनों में मुख्य रूप में, दानधर्म की महिमा का कथन है। दान के प्रभाव से जीवन में कितना सुख–सौभाग्य प्राप्त होता है। इसके जीवंत उदाहरण है यह दसों अध्ययन।

इनमें प्रथम अध्ययन का नाम है सुबाहुकुमार। सुबाहुकुमार को जीवन में इतनी सुन्दरता, रमणीयता, लोकप्रियता, वैभव और सुख–सौभाग्य की प्राप्ति हुई कि जिसे देखकर गणधर गौतम जैसे महाज्ञानी महातपस्वी को भी आश्चर्य हुआ और उन्होंने भगवान से इसका कारण पूछा। भगवान महावीर ने सुबाहुकुमार के सुख–सौभाग्य के कारणों पर प्रकाश डालकर प्रत्येक भव्य आत्मा को धर्म आराधना की प्रेरणा दी है। यही इस सुखविपाक श्रुत का सन्देश है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SECOND SHRUTSKANDH : SUKHA-VIPAAK
SUBAHU KUMAR : FIRST CHAPTER

INTRODUCTION

The ten chapters of *Duhkha-vipaak* have stories that inspire us to avoid violence, falsity, corruption and other such evil activities by vividly describing their terrible consequences. The desire for happiness is inherent within the wish to be rid of sorrows. The basic source of happiness is acquisition of good *karmas* which in turn is done through *dharma* (righteousness and piety). That is the reason for the belief that *dharma* is the source of happiness.

Four kinds of *dharma* have been mentioned in the scriptures—*daan* (charity), *sheel* (morality), *tap* (austerity), and *bhaavana* (pious attitude). Of these the first path is charity. Most important among the ten kinds of charity is *dharma-daan* (pious charity). One of the limbs of pious charity is *supatra daan* (charity to the deserving). This specifically means 'to offer pure things or services with noble feelings to the lofty individuals who have renounced the world and are practicing austerities'. The greatness of this charity is unparalleled. As a result of such charity many people have gained happiness, good fortune, and wealth as well as an opportunity to lead a pious and righteous life. In the ten chapters of this *Sukha-vipaak* the glory of pious charity been elaborated. These ten chapters present lively examples of the extant of happiness and good fortune gained through charity.

Of these the first chapter is titled Subahu Kumar. This person gained so much beauty, charm, popularity, wealth, happiness and good luck in life that astonished even a great sage and spiritualist like Ganadhar Gautam. So much so that he asked about its reason from Bhagavan Mahavir. Throwing light on the source of Subahu Kumar's happiness and good luck, *Bhagavan* provided inspiration for every pious soul to follow the path of *dharma*. This, indeed, is the message of *Sukha-vipaak Shrut*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम अध्ययन
FIRST CHAPTER

प्रस्तावना

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सुहम्मे समोसढे। जंबू जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, सुहविवागाणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबुं अणगारं एवं वयासी–'एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा–

सुबाहू भद्दनंदी य, सुजाए य सुवासवे।
तहेव जिणदासे य धणवई य महब्बले॥
भद्दनंदी महच्चंदे वरदत्ते तहेव य॥

१. उस काल उस समय राजगृह नगर के समीप गुणशील नामक चैत्य था। गणधर आर्य सुधर्मा स्वामी पधारे। उनकी सेवा में संलग्न आर्य जंबू स्वामी ने पूछा–भंते ! मोक्ष को संप्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने दुःखविपाक का यह (पूर्वोक्त) अर्थ कहा है, तो सुखविपाक का क्या अर्थ–भाव बताया है ?

आर्य जम्बू की जिज्ञासा के उत्तर में श्रीसुधर्मा स्वामी बोले–हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने सुखविपाक के दस अध्ययन प्रतिपादित किये हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं–

(१) सुबाहु, (२) भद्रनंदी, (३) सुजात, (४) सुवासव, (५) जिनदास, (६) धनपति (७) महाबल, (८) भद्रनंदी, (९) महचंद्र, और (१०) वरदत्त।

FOREWORD

1. During that period of time there was a city called Rajagriha near which was a *chaitya* named Gunasheelak. Ganadhar Arya Sudharma Swami arrived there. Jambu Swami, involved in his service, asked—"*Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the aforesaid text and meaning of *Duhkha-vipaak* then what according to him is the text and meaning of *Sukha-vipaak* ?"

In reply Sudharma Swami said—"Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has preached ten chapters of *Sukha-vipaak*. They are—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(1) Subahu, (2) Bhadranandi, (3) Sujaat, (4) Suvasava, (5) Jinadas, (6) Dhanapati, (7) Mahabal, (8) Bhadranandi, (9) Mahachandra, and (10) Varadatt."

२. 'जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबुं अणगारं एवं वयासी–

२. हे भन्ते ! श्रमण भगवान महावीर ने सुखविपाक के सुबाहुकुमार आदि दश अध्ययन कहे हैं तो प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?

उत्तर में श्रीसुधर्मा स्वामी ने इस प्रकार कहा–

2. *Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir has preached ten chapters of *Sukha-vipaak*, including Subahu Kumar, then what is the text and meaning of the first chapter ?

Arya Sudharma replied—

३. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नामं नयरे होत्था–रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं हत्थिसीसस्स नयरस्स बहिया उत्तर–पुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं पुप्फकरंडए नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउय–पुप्फ–फल–समिद्धे। तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, दिव्वे.।

तत्थ णं हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था, महया तस्स णं अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीपामोक्खा देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था।

३. हे जम्बू ! उस काल उस समय में हस्तिशीर्ष नाम का एक बड़ा विशाल भवनादि युक्त, स्वचक्र–परचक्र के भय से मुक्त, धन–धान्यादि से परिपूर्ण एवं व्यापारिक दृष्टि से समृद्ध नगर था।

उस नगर के ईशान कोण में सभी ऋतुओं में फलने–फूलने वाले फल–पुष्पादि से युक्त पुष्पकरण्डक नाम का एक उद्यान था। उस उद्यान में कृतवनमालप्रिय नामक यक्ष का यक्षायतन था। जो सुन्दर और बहुजन मान्य था।

उस नगर में अदीनशत्रु नामक राजा राज्य करता था, जो राजाओं में प्रभावशाली था। अदीनशत्रु नरेश के अन्तःपुर में एक हजार रानियाँ थी, जिनमें मुखिया पटरानी थी–धारिणी देवी।

3. Jambu ! During that period of time there was a large city named Hastishirsha. It was rich, prosperous and secured with respect to buildings, wealth, trade and governance.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In the north-eastern direction (*Ishan Kone*) outside this city was a garden named Pushpakarandak having trees bearing all season flowers and fruits. In that garden there was a temple of Kritavanamalapriya Yaksh. It was beautiful and very popular.

That city was ruled by king Adeenashatru who was highly influential among kings. He had one thousand queens in his inner palace. Chief among them was queen Dharini Devi.

सुबाहु का गृहस्थजीवन

४. तए णं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि सीहं सुमिणे। जहा मेहस्स जम्मणं तह भाणियव्वं जाव सुबाहुकुमारे अलंभोगसमत्थे यावि होत्था।

तए णं सुबाहुकुमारं अम्मापियरो बावत्तरिकलापंडियं जाव अलंभोगसमत्थं वा वि जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं कारवेंति अब्भुग्गयमूसियपहसियाइं। एगं च णं महं भवणं कारेंति एवं जहा महाबलस्स रन्नो णवरं पुप्फचूला पामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नसयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति। तहेव पंचसइओ दाओ, जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं जाव विहरइ।

४. किसी एक समय राजा की महारानी के योग्य वासभवन-(महल) में शयन करती हुई धारिणी देवी ने सिंह का स्वप्न देखा। ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र में जिस प्रकार मेघकुमार के जन्म का वर्णन है, उसी प्रकार सुबाहु के जन्म आदि का वर्णन भी जान लेना चाहिए। (जन्म महोत्सव, कला अध्ययन आदि का सभी वर्णन मेघकुमार की तरह जानना चाहिए।) सुबाहुकुमार युवा हुआ, सांसारिक कामभोगों का उपभोग करने में समर्थ हो गया।

जब सुबाहुकुमार के माता-पिता ने उसे बहत्तर कलाओं में कुशल तथा भोग भोगने में समर्थ (शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से योग्य) हुआ जाना, तब उन्होंने पाँच सौ प्रासादावतंसक-(जिस प्रकार आभूषणों में मुकुट सर्वोत्तम आभूषण होता है, उसी प्रकार महलों में जो महल उत्तम-कलापूर्ण होता है उसे प्रासादावतंसक कहा जाता है) उत्तम पाँच सौ महलों का निर्माण करवाया जो अत्यन्त ऊँचे, भव्य एवं सुन्दर थे। उन प्रासादों के मध्य में एक विशाल भवन बनवाया। महाबल की ही तरह उसका विवाह हुआ। सुबाहुकुमार के विवाह में विशेषता यह थी कि पुष्पचूला आदि पाँच सौ श्रेष्ठ राजकन्याओं के साथ एक ही दिन में उसका विवाह कर दिया गया। इसी तरह माता-पिता द्वारा पाँच सौ वस्तुओं का प्रीतिदान-दहेज-(उपहार) उसे विवाहोपलक्ष्य में दिया गया। (इन उपहारों में श्रेष्ठ आभूषण, वस्त्र आदि से लेकर प्रतिदिन उपयोग की छोटी-छोटी वस्तुएँ भी रहती हैं।) सुबाहुकुमार उन सुन्दर प्रासादों में निवास करता था। जहाँ हर समय मृदंग बजाये जा रहे थे, नाट्य-संगीत आदि हो रहे थे। वह मानव जीवन के सुखों का उपभोग करता हुआ सुखपूर्वक रहता था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

FAMILY LIFE OF SUBAHU

4. Once while sleeping in her regal palace, Dharini Devi saw a lion in her dream. The story of the birth of Subahu should be read as that of Meghakumar mentioned in *Jnatadharmakathanga Sutra*. (So should be read the description of his birth ceremony, education, etc.). Subahu Kumar attained youth and became capable of enjoying worldly and carnal pleasures.

When his parents realized that Subahu Kumar had become proficient in seventy two arts and had attained desired maturity to enjoy all the pleasures of life, they got constructed five hundred *Prasadavatamsak* (most exclusive, as the crown is among ornaments) palaces, which were lofty, grand, and beautiful. In the middle of these palaces he got constructed a gigantic palace. Like Mahabala, Subahu Kumar was also married. The unique thing about Subahu Kumar's marriage was that he was married to five hundred very beautiful princesses in one day. Following the same tradition, the parents gave five hundred sets of things as dowry. (These gifts included exclusive ornaments, garments, and other large and small household things.) Subahu Kumar resided in these beautiful palaces that reverberated with sound of drums and music as well as dramas. He lived happily enjoying all human pleasures and comforts.

सुबाहु का धर्म–श्रवण

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं, समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा निग्गया। अदीणसत्तू जहा कूणिओ निग्गओ सुबाहू वि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए, जाव धम्मो कहिओ। राया परिसा गया।

५. किसी एक समय विहार करते हुए श्रमण भगवान महावीर हस्तिशीर्ष नगर में पधारे। नगर की जनता धर्मदेशना सुनने के लिए आई। जैसे राजा कूणिक निकला था, उसी प्रकार अदीनशत्रु राजा भी बड़े समारोह के साथ भगवद्दर्शन तथा देशना श्रवण करने के लिए निकला। सुबाहुकमार भी जमालिकुमार की भाँति भगवान् के दर्शनार्थ रथ में बैठकर गया। भगवान् ने धर्म का प्रतिपादन किया। परिषद् और राजा धर्म देशना सुनकर वापस लौट गये।

SUBAHU ATTENDS DISCOURSE

5. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in Hastishirsha city. People of the city came to attend his discourse. Like king Kunik, king Adeenashatru also came out to pay homage and attend the discourse with great pomp and show. Like Jamali Kumar, Subahu Kumar also went to pay homage to *Bhagavan* riding a chariot. *Bhagavan* gave his sermon, after which the king and the people dispersed.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

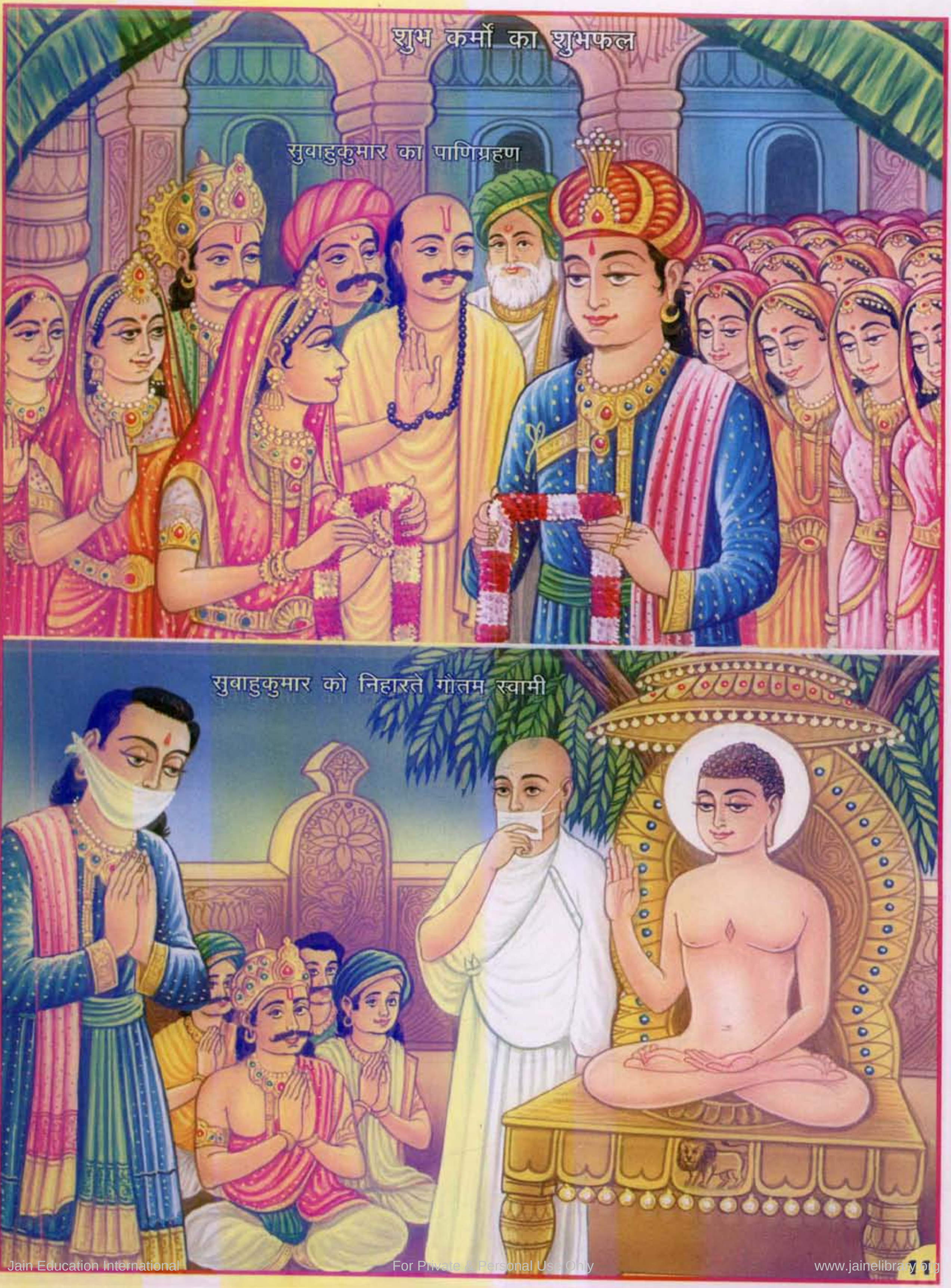

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-११

Illustration No. 11

पुण्यशाली सुबाहुकुमार

दृश्य–१

हस्तिशीर्ष नगर के राजकुमार सुबाहु का रूप अत्यन्त रमणीय तथा सबका मन–मोहने वाला था। पाँच सौ राजकुमारियों के साथ उसका विवाह होता है।

दृश्य–२

एक समय भगवान महावीर हस्तिशीर्ष नगर में पधारे। सुबाहुकुमार भगवान की वन्दना करने आता है। देशना सुनकर उसने प्रभु से श्रावक धर्म ग्रहण किया।

गणधर गौतम सुबाहकुमार को देखकर सोचते हैं–यह राजकुमार अत्यन्त इष्ट, प्रिय–वल्लभ दर्शनीय लगता है। इसका रूप–लावण्य अद्‌भुत है। वाणी अत्यन्त मधुर प्रियकारी है। सब लोक इसको आदर मान दे रहे हैं। ऐसी विशिष्ट मानवीय ऋद्धि–सौन्दर्य–पुण्याई इसे किन शुभ कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त हुई? अवश्य ही इसने पूर्व जन्म में कोई विशेष सत्कर्म किये होंगे?

गणधर गौतम भगवान से पूछते हैं।

–श्रुतस्कन्ध १, २, अ. १, सूत्र ४

MERITORIOUS SUBAHU KUMAR

SCENE-1

Subahu, the prince of Hastisheersh city, was very handsome and charming. He got married to five hundred princesses.

SCENE-2

Once Bhagavan Mahavir came to Hastisheersh city. Subahu Kumar came to pay homage to *Bhagavan*. After the discourse he accepted *Shravak Dharma*.

Seeing Subahu Kumar, Gautam Swami thinks—This prince is very beautiful, adorable and attractive. He is astonishingly beautiful and charming. His voice is very sweet and enticing. Every one is giving him respect and honour. What pious deeds have resulted in such grand human opulence ? He must have done some highly meritorious deeds in his past birth.

Gautam Swami asks Bhagavan Mahavir.

—Sec. II, Ch. 1, Sutra : 4

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ, वंदित्ता नमंसइ, नमंसित्ता एवं वयासी—'सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर जाव प्पभिईओ मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए; अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जामि।''

''अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह।''

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ। पडिवज्जित्ता तमेव रहं दुरूहइ, दुरूहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।

६. वह सुबाहुकुमार श्रमण भगवान् महावीर के पास धर्मकथा सुनकर तथा उस पर मनन करके अत्यन्त प्रसन्न हुआ। सुबाहुकुमार उठा, उठकर श्रमण भगवान महावीर को वन्दन, नमस्कार करके कहने लगा–'भगवन् ! मैं निर्ग्रंथ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ यावत् जिस तरह आपके श्रीचरणों में अनेकों राजा, ईश्वर सार्थवाह आदि मुण्डित होकर तथा गृहस्थावस्था त्याग कर अनगार धर्म में दीक्षित हुए हैं, अर्थात् राजा, ईश्वर आदि ने पंच महाव्रतों को स्वीकार किया है, वैसे मैं मुण्डित होकर घर त्याग कर अनगार अवस्था धारण करने में समर्थ नहीं हूँ। अतः मैं आप द्वारा प्ररूपित पाँच अणुव्रतों तथा सात शिक्षाव्रतों वाले बारह प्रकार के गृहस्थ धर्म को अंगीकार करना चाहता हूँ।''

भगवान् ने कहा–''देवानुप्रिय ! जैसे तुमको सुख हो वैसे करो, किन्तु इस शुभ कार्य में विलम्ब या विघ्न मत करो।''

तब सुबाहुकुमार ने श्रमण भगवान महावीर के समक्ष पाँच अणुव्रतों और सात शिक्षाव्रतों वाले बारह प्रकार के गृहस्थधर्म को स्वीकार किया। फिर उसी रथ पर सवार हुआ और सवार होकर अपने घर की दिशा में वापस चला गया।

ACCEPTING THE HOUSEHOLDER'S CODE

6. Listening to and contemplating on the discourse of Shraman Bhagavan Mahavir, that Subahu Kumar was very happy. Subahu Kumar stood up and, after paying homage and obeisance, said—"*Bhante* ! I have faith in the word of the *Nirgranth* (one who is free of all knots, inner and outer). At your pious feet many kings, influential and rich persons (*ishvar*)... and so on up to... and caravan chiefs (*sarthavaha*) have been initiated into the *Anagar Dharma* (the religion of the homeless ascetics;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain religion) after renouncing their households and tonsuring their heads. In other words, they have accepted the code of five great vows (*Panch Mahavrat*). But I am not capable enough to renounce my household, tonsure my head and embrace asceticism. Therefore I want to accept the householder's code (*Grihasth Dharma*) of twelve vows including five minor vows (*Anuvrats*) and seven instructive or complimentary vows of spiritual discipline (*Shikshavrats*).

Bhagavan said—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed."

Then Subahu Kumar accepted the householder's code (*Grihasth Dharma*) of twelve vows including five minor vows (*Anuvrats*) and seven instructive or complimentary vows of spiritual discipline (*Shikshavrats*) before Bhagavan. After that he returned home riding his chariot.

गौतम की सुबाहुविषयक जिज्ञासा

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई जाव एवं वयासी—"अहो णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे, इट्ठरूवे,कंते, कंतरूवे, पिये, पियरूवे, मणुन्ने, मणुन्नरूवे, मणामे, मणामरूवे, सोमे, सोमरूवे, सुभगे, सुभगरूवे, पियदंसणे सुरूवे। बहुजणस्स वि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे जाव सुरूवे। साहुजणस्स वि य णं भंते सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे जाव सुरूवे।

सुबाहुणा भंते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धि किन्ना लद्धा ? किन्ना पत्ता ? किन्ना अभिसमन्नागया ? के वा एस आसी पुव्वभवे ?" जाव (किं नामए वा किं वा गोत्तेणं ? कयरंसि गामंसि वा संनिवेसंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं वयणं सोच्चा निसम्म सुबाहुणा कुमारेण इमा एयारूवा माणुसिड्ढी लद्धा पत्ता) अभिसमन्नागया ?

७. उस समय श्रमण भगवान महावीर के ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति गौतम अनगार ने इस प्रकार पूछा–'अहो भगवन् ! यह सुबाहुकुमार बड़ा ही इष्ट, इष्टरूप, कान्त, कान्तरूप, प्रिय, प्रियरूप, मनोज्ञ,मनोज्ञरूप, मनोम, मनोमरूप, सौम्य, सुभग, प्रियदर्शन और सुरूप–सुन्दर रूप वाला है। यह सुबाहुकुमार बहुत लोगों को और साधुजनों को भी इष्ट, इष्टरूप यावत् सुरूप लगता है।

भंते ! सुबाहुकुमार ने इस प्रकार की अपूर्व मानवीय समृद्धि कैसे उपलब्ध की ? कैसे प्राप्त की; और कैसे उसके सन्मुख उपस्थित हुई ? सुबाहुकुमार पूर्वभव में कौन था ? (इसका नाम और गोत्र क्या था ? किस ग्राम अथवा बस्ती में उत्पन्न हुआ था ? क्या दान देकर, क्या उपभोग कर। रूखा–सूखा नीरस आहार लेकर और कैसे आचार (मुनि धर्म या श्रावक धर्म) का पालन करके और किस श्रमण या माहन के एक भी धर्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वचन को श्रवण कर सुबाहुकुमार को ऐसी यह ऋद्धि मिली है। प्राप्त हुई है-(स्वयं उपार्जित की है, किस कारण यह समृद्धि इसके सन्मुख उपस्थित हुई है एवं उसका उपभोग करने में समर्थ हुआ है)

GAUTAM'S CURIOSITY ABOUT SUBAHU

7. During that period of time Indrabhuti Gautam Anagar, the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavir asked—"*Bhante* ! This Subahu Kumar is beloved (of all) having lovable appearance, attractive having attractive appearance, adorable having adorable appearance, enchanting having enchanting appearance, serene having serene appearance, good-looking, and pretty. *Bhante* ! To many people and even ascetics he appears to be beloved... and so on up to... and pretty.

"*Bhante* ! How this Prince Subahu Kumar got and availed this human opulence ? How it appeared before him ? [What was his name and caste ? In which village or settlement was he born ? What charity, indulgence, blend and dry food, conduct (ascetic or householder's) and the sermon of which Shraman or Brahmin has helped him attain this opulence ? Has he been blessed with this or acquired himself ? What is the cause of his acquiring and enjoying this ?]

विवेचन–सुबाहुकुमार के सम्बन्ध में आगमकार ने इष्ट इष्टरूप आदि १४ विशेषणों का प्रयोग किया है, तथा आगे कहा है, वह बहुजन समाज को भी प्रिय लगता है और साधु जनों को भी प्रिय व मनोज्ञ लगता है। यह दो विशेषण उसकी जीवन जीने की अद्‌भुत कला के सूचक है। कुछ लोग जो समाज के लिए सेवा, दान आदि करते हैं, सबके साथ मधुर भाषण व अनुकूल व्यवहार करते हैं, वे लोकप्रिय तो बन जाते हैं, उनकी नैतिकता व सामाजिकता उत्कृष्ट होती है, परन्तु धार्मिक जीवन की साधना में वे इतने सफल नहीं होते। त्याग-तप-व्रत-नियम आदि की आराधना में पीछे रह जाते हैं। कुछ लोग धार्मिक जीवन में बड़े आदर्श होते हैं, परन्तु व्यवहारिक जीवन में कुशल नहीं होते हैं। धर्म और नीति में, स्वार्थ और परमार्थ साधना में, निवृत्ति और प्रवृत्तिमय दोनों जीवन में जिसकी समान उत्कृष्टता और उच्च आदर्श हो ऐसा व्यक्ति बहुजन प्रिय और साधुजन प्रिय होता है। सुबाहुकुमार की इस उत्कृष्ट व्यावहारिकता व धार्मिकता से प्रसन्न व अभिभूत होकर गौतम जैसे महाज्ञानी, महातपस्वी योगीराज भगवान से पूछते हैं। इसका अर्थ है,वह कुछ अद्‌भुत व्यक्तित्व का धनी होगा। सूत्र में उसके चौदह विशेषण बताये हैं। ये विशेषण भले ही समानार्थक प्रतीत होते हैं, परन्तु इनके निहितार्थ संकेत अलग-अलग भावों के सूचक हैं-टीकाकार अभयदेवसूरि की व्याख्यानुसार आचार्यश्री आत्माराम जी म. ने इनका स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है।

(१) **इष्ट**–जिसका व्यवहार व व्यापार सबके अनुकूल हों, जिसे सभी चाहते हैं, सभी जिसकी इच्छा करते हैं वह इष्ट होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) **इष्टरूप**–किसी की चाह उसके विशेष काम को लेकर भी सम्भव है, परन्तु इष्टरूप वह होता जिसकी आकृति भी ऐसी हो कि वह देखने में ही इष्ट लगता है।

(३) **कान्त**–इष्टरूपता भी अनेक कारणों से हो सकती है, किन्तु वह इष्ट होने के साथ कान्त–रमणीय, मन भावना था।

(४) **कान्तरूप**–उसका सुन्दर स्वभाव था। (सुबाहु की इष्टता में उसका सुन्दर स्वभाव कारण था।)

(५) **प्रिय**–सुन्दर स्वभाव होने पर भी कर्म के प्रभाव से प्रेम उत्पन्न करने में असमर्थ रह सकता है, अतः जो प्रेम का उत्पादक हो वह प्रिय है।

(६) **प्रियरूप**–जिसका रूप प्रिय–प्रीतिजनक हो।

(७–८) **मनोज्ञ–मनोज्ञरूप**–आन्तरिक वृत्तियों से जिसकी शोभनता अनुभव में आती हो वह मनोज्ञ तथा उसके रूप वाला मनोज्ञरूप कहलाता है।

(९–१०) **मनोम, मनोमरूप**–किसी की मनोज्ञता तात्कालिक या क्षणिक भी हो सकती है, अतः मनोम विशेषण से उसकी स्थायी मनोज्ञता, सूचित की गई है, जो गहरे मन में बसी हो और जिसकी सुन्दरता का स्मरण बार–बार होता रहे, तथा जिसकी सुन्दरता का स्थायी प्रभाव हो।

(११) **सोम**–रुद्रतारहित व्यक्ति सोम; जिसके चेहरे व आँखों में शान्ति व प्रसन्नता झलकती हो। जिसे देखने पर दूसरों को भी शान्ति अनुभव होती है। सोम रूप–सौम्य स्वभाव वाला होता है।

(१२) **सुभग**–वल्लभता; जिसको देखना भी सौभाग्य वर्धक हो।

(१३) **सुरूप**–जिसका आकार सुन्दर तथा स्वभाव भी सुन्दर वह सुरूप कहा जाता है।

(१४) **प्रियदर्शन**–प्रेम का जनक। जिसको देखने पर मन में प्रेम उत्पन्न होता हो।

इन सभी विशेषणों को अनेक उदाहरणों सहित आचार्यश्री ने हिन्दी टीका में समझाया है। पाठक पृष्ठ ६०७–६०८ देखें।

लद्धा, पत्ता, अभिसमन्नागया–तीनों शब्दों में अर्थ व अभिप्राय का अन्तर बताते हुए कहा है–पूर्वजोपार्जित सम्पत्ति का मिलना लब्ध है, अपने पुरुषार्थ द्वारा उपार्जित करना प्राप्त है, तथा लब्ध–प्राप्त सम्पत्ति का उपभोग करना अभिसमन्वागत है। अर्थात् ये विशेषण सूक्ष्म रूप में लाभान्तराय और भोगान्तराय सम्बन्धी क्षयोपशम के सूचक हैं।

Elaboration—The author of this *Agam* has used fourteen adjectives including *isht* and *ishtaroop* to describe Subahu Kumar. He has mentioned further that ' to many people and even ascetics he appears to be beloved... and so on up to... and pretty.' This last statement emphasizes his proficiency in art of living. Some people gain popularity through their social service, charity and congenial speech and behavior. Their morality and social

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

behaviour are excellent but they are not so successful in their religious and spiritual life. They lag behind in the practice of detachment, austerities, vows and self-control. Some people have ideal religious life but they are inept in their social life. Only a person with equal excellence and lofty ideals in every facet of life including religion and ethics, service of the self and others, detachment and indulgence is popular among masses as well as sages. A great sage, hermit, and yogi like Gautam Swami was so pleased and impressed with the social behaviour and religious conduct of Subahu Kumar that he presented his curiosity before *Bhagavan*. This indicates that Subahu Kumar must have had a unique personality. The aphorism under reference states fourteen adjectives in this regard. These words appear to be synonyms but, in fact, they vary in their nuances and connotations. On the basis of the elaborations by Abhayadev Suri, the commentator (*Tika*), Acharya Shri Atmaram ji M. has explained these terms as follows—

(1) Isht (adorable)—One whose behaviour and action is congenial for all, who is liked and adored by all is called *isht*.

(2) Isht roop—Adoration may be due to some specific work or accomplishment of a person. But *isht-roop* is a person having adorable appearance.

(3) Kaant—Adorable appearance could also be for many reasons. But at the same time, he was desirable (*kaant*) as well.

(4) Kaant roop—He was good natured. (Subahu's good nature was the reason he was adorable.)

(5) Priya—In spite of loving nature a person can fail in invoking love. But one who inspires love is *priya* (beloved).

(6) Priya roop—One whose appearance inspires love is *priya roop* (lovable).

(7-8) Manojna and manojna roop—Whose inner feelings or attitudes make him appear beautiful is called *manojna* (beautiful). One having that appearance is *manojna roop*.

(9-10)—Manom and manom roop—The quality of being *manojna* (beautiful) could be momentary and transitory. The adjective *manom* indicates its permanence. The quality that inspires a profound and memorable experience of beauty makes a person *manom*. What leaves a lasting imprint of beautiful appearance is *manom roop*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(11) **Soma**—A person devoid of rage or anger, whose face and eyes are serene and happy, and whose looks inspire peace in others is *soma*. One with serene nature is *soma roop.*

(12) **Subhag**—auspicious; beholding whom enhances good luck.

(13) **Suroop**—whose appearance is pretty and nature is friendly.

(14) **Priyadarshan**—love inspiring; one whose mere look invokes love.

Laddha, patta, and abhisamannagaya—explaining the difference in the meaning and purport of these three terms it has been mentioned that—to inherit wealth earned by ancestors is *'labdh'(laddha);* to earn wealth through one's own efforts is *'prapt' (patta);* and to enjoy the *labdh/prapt* wealth is *abhisamnvagat* (*abhisamannagaya*). These adjectives subtly convey the *kshayopasham* (extinction-cum-pacification) of *labhantaraya* (gain hindering) and *bhogantaraya* (enjoyment hindering) *karmas*.

सुबाहुकुमार का पूर्वभव

८. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे।

८. (गौतम के प्रश्न पर भगवान सुबाहुकुमार के पूर्वभव का वृत्तान्त बताते हैं) गौतम ! उस काल उस समय में जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष में हस्तिनापुर नाम का एक समृद्ध नगर था। वहाँ सुमुख नाम का धनाढ्य गाथापति रहता था।

PAST BIRTH OF SUBAHU KUMAR

8. (On being asked by Gautam, narrating the story of previous birth of Subahu Kumar Shraman Bhagavan Mahavir said—) "Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Hastinapur in Bharatvarsh area in Jambu continent. A rich merchant named Sumukh lived there.

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाइसंपन्ना जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे, जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

९. उस काल उस समय धर्मघोष नाम के स्थविर थे। वे उत्तम जाति (मातृपक्ष) और उत्तम कुल (पितृपक्ष) से सम्पन्न पाँच सौ श्रमणों के साथ क्रमपूर्वक विहार करते हुए तथा ग्रामानुग्राम विचरते हुए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हस्तिनापुर नगर के सहस्राम्रवन उद्यान में पधारे। वहाँ **यथाप्रतिरूप**–अनगार मर्यादा के अनुकूल अवग्रह (आश्रयस्थान) को ग्रहण करके संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरण करने लगे।

9. During that period of time Dharmaghosh Sthavir (senior ascetic) was living. He belonged to a prominent *jati* (maternal caste) and *kula* (paternal caste). Wandering from one village to another, along with his five hundred disciples, he arrived at the Sahasramravan garden in Hastinapur city. After seeking formal permission he camped there and commenced enkindling his soul with discipline and austerities.

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते नामं अणगारे उराले जाव तेउलेस्से मासंमासेण खममाणे विहरइ। तए णं से सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेई, जहा गोयमसामी तहेव, धम्मघोसे थेरे आपुच्छइ, जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गेहे अणुप्पविट्ठे।

१०. उस काल उस समय में धर्मघोष स्थविर के अन्तेवासी सुदत्त नाम के अनगार थे। वे उत्कृष्ट आचार वाले तथा तेजोलेश्या को संक्षिप्त किये हुए–(घोर तप से प्राप्त होने वाली अनेक योजनप्रमाण क्षेत्र में स्थित वस्तुओं को क्षणमात्र में भस्म कर देने की सामर्थ्य वाली तेजोलेश्या को अपने में संक्षिप्त–गुप्त किये हुए) थे। वे सुदत्त अनगार एक मास का तप करते हुए अर्थात् एक–एक मास के उपवास के बाद पारणा करते हुए विचर रहे थे। वे सुदत्त अनगार मास–क्षमण पारणे के दिन प्रथम प्रहर में स्वाध्याय करते हैं, दूसरे प्रहर में ध्यान करते हैं और तीसरे प्रहर में जैसे भगवान महावीर से भिक्षार्थ गमन के लिए गौतम स्वामी पूछते हैं, वैसे ही वे अपने आचार्य धर्मघोष स्थविर आचार्य से भिक्षार्थ जाने के लिए आज्ञा लेकर भिक्षा के लिए भ्रमण करते हुए सुमुख गाथापति के घर में प्रवेश करते हैं।

10. During that period of time Dharmaghosh Sthavir had a disciple named Sudatt ascetic. He observed noble conduct. He had ingested *Tejoleshya* after toning it down (*Tejoleshya* being the firepower acquired through rigorous austerities and having intensity to burn things in a wide range of many *Yojans* within a moment). He was observing a series of month-long fasts interspersed with a day of meals. On the day of fast-breaking, that Sudatt ascetic spent first quarter of the day in studies and second quarter of the day in meditation. During the third quarter, like Gautam Swami had sought Bhagavan Mahavir's permission to go to seek alms, he sought Dharmaghosh Sthavir's permission to go to seek alms. After that, wandering around he entered the house of Sumukh Gathapati to seek alms.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. तए णं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करित्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयहत्थेणं विउलेणं असणपाणेणं पडिलाभिस्सामि त्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिए वि तुट्ठे !

११. उस समय वह सुमुख गाथापति सुदत्त अनगार को आते हुए देखता है, देखकर अत्यन्त हर्षित और प्रसन्न होकर आसन से उठता है। आसन से उठकर पाद–पीठ–सिंहासन, भद्रासन आदि आसन से नीचे उतरता है। उतरकर पादुकाओं को छोड़ता है, जूते उतारता है। फिर एकशाटिक–एक कपड़ा (यह उत्तरासंग मुख की यतना के लिए किया जाता है जो बीच में बिना सिला हुआ दुपट्टा जैसा होता है) लेकर, उससे इस प्रकार का उत्तरासंग–(उत्तरीय वस्त्र को शरीर पर रखता) करता है; उत्तरासंग करने के पश्चात् सुदत्त अनगार के सत्कार के लिए सात–आठ कदम सामने जाता है। सामने जाकर तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिणा करता है, वंदना करता है, नमस्कार करके जहाँ अपना भक्तगृह–भोजनालय था वहाँ आता है। अपने हाथ से विपुल अशन पान आहार का दान दूँगा अथवा दान का लाभ प्राप्त करूँगा, इस विचार से अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करता है। वह दान देते समय भी प्रसन्न होता है और आहार दान देने के पश्चात् भी प्रसन्नता का अनुभव करता है।

11. When Sumukh Gathapati saw Sudatt ascetic approaching, he was pleased and delighted. He rose from his seat, stepped on the foot-rest and got down. He then put off his slippers and took an *ekashatika* (a long scarf-like non-stitched piece of cloth, also called *uttariya*). He placed this *uttariya* on his shoulders (for covering his mouth). As a mark of respect, he took seven to eight steps ahead to greet Sudatt ascetic. He then went around the ascetic three times clockwise and paid him homage and obeisance. After this he proceeded to his kitchen. He was overjoyed with the idea of getting the opportunity to give ample food as alms to the visiting ascetic. He was pleased at the time of giving charity as well as after giving charity.

१२. तए णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए, मणुस्साउए निबद्धे। गेहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा–

१. वसुहारा वुट्ठा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

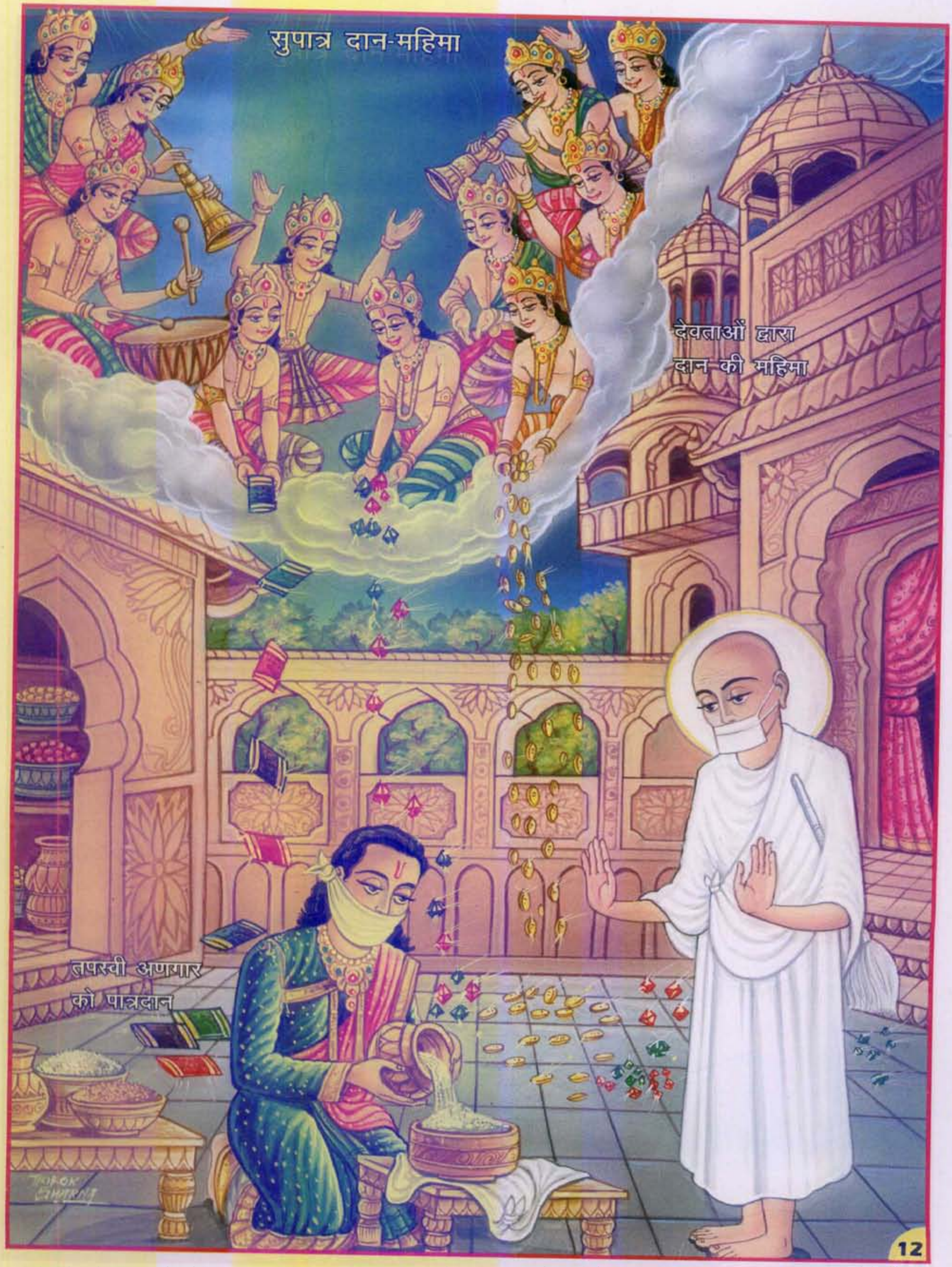

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय-१२

Illustration No. 12

पात्रदान का महान फल

सुबाहुकुमार के कृत पुण्यों की कहानी सुनाते हुए भगवान कहते हैं–प्राचीन समय में हस्तिनापुर नगर में सुमुख नामक गाथापति रहता था।

नगर में एक बार धर्मघोष स्थविर पधारे। उनके साथ एक महान उग्र तपस्वी सुदत्त नामक अणगार भी थे। वे मास–मास क्षपण का तप करते थे। अनेक प्रकार की विशिष्ट ऋद्धियों से सम्पन्न थे।

मासक्षपण तप का पारणा लेने सुदत्त अनगार भ्रमण करते हुए सुमुख गाथापति के घर पर पधारते हैं। सुमुख ने मुनिवर को अत्यन्त भाव–भक्ति पूर्वक वन्दना की और उत्कृष्ट परिणामों में शुद्ध एषणीय आहार का दान अपने हाथों से दिया। दान देकर वह अत्यन्त आनन्द अनुभव करने लगा। इस पात्र दान की महिमा करने आकाश में देवताओं ने पाँच दिव्य प्रकट किये--(१) सुवर्ण की वृष्टि, (२) पाँच वर्ण के फूलों की वर्षा, (३) दिव्य वस्त्रों की वृष्टि, (४) देव दुंदुभि नाद, (५) और अहोदानं--अहोदानं कहकर सुमुख गाथापति के दान की महिमा की।

–श्रुतस्कन्ध १, २, अ. १, सूत्र ७

GREAT FRUIT OF DONATION TO THE DESERVING

Narrating the story of the meritorious deeds of Subahu Kumar *Bhagavan* said—Gautam ! In ancient times a merchant named Sumukh lived in Hastinapur city.

Once Dharmaghosh Sthavir came there. He had a disciple named Sudatt ascetic who observed rigorous austerities. He was observing a series of month-long fasts. He was endowed with special powers. Wandering around to seek alms he entered the house of Sumukh Gathapati. The host paid homage to the ascetic with great devotion and, with his own hands, offered pure food with pious feelings to the ascetic. He felt elated after giving this charity. In order to commend this donation to the deserving five divine things were caused by gods in the sky—(1) Shower of gold, (2) shower of flowers of five colours, (3) falling of clothes, (4) sounding of divine drums, and (5) divine pronouncement of *'Ahodanam'* (Great Charity !).

—Sec. II, Ch. 1, Sutra : 7

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. दसद्धवण्णे कुसुमे निवाडिए

३. चेलुक्खेवे कए

४. आहयाओ देवदुन्दुभीओ

५. अंतरा वि य णं आगासे 'अहो दाणं अहो दाणं' घुट्ठे य।

हत्थिणाउरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खइ ४–'धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई जाव तं धन्ने ५।'

१२. उस सुमुख गाथापति के त्रिविध शुद्ध–(१) शुद्ध द्रव्य, (२) शुद्ध पात्र एवं (३) शुद्ध दाता तथा त्रिकरण शुद्धि से अर्थात् मन, वचन और काया की सहज उदारता, सरलता एवं निर्दोषता से सुदत्त अनगार के प्रतिलम्भित होने पर अर्थात् सुदत्त अनगार को विशुद्ध भावना द्वारा शुद्ध आहार दान से अत्यन्त प्रसन्नता को प्राप्त हुए सुमुख गाथापति ने संसार को (जन्म–मरण की परम्परा को) बहुत कम कर दिया और मनुष्य आयुष्य का बन्ध किया। उसके घर में पाँच दिव्य प्रकट हुए। जैसे–(१) सुवर्णवृष्टि, (२) पाँच रंगों के फूलों की वर्षा, (३) वस्त्रों का उत्क्षेप–फेंकना (४) देवदुन्दुभियों का बजना तथा (५) आकाश में 'अहोदानं' इस दिव्य उद्घोषणा का होना।

हस्तिनापुर के त्रिपथ यावत् सामान्य मार्गों में अनेक मनुष्य एकत्रित होकर आपस में एक दूसरे से कहने लगे–हे देवानुप्रियो ! धन्य है सुमुख गाथापति ! उसका जीवन सफल हो गया।

12. By giving three-way-pure charity (pure food, pure seeker, pure donor) through three-way-pure means (natural altruism, simplicity, and purity of mind, speech and body) to Sudatt ascetic (in other words, by giving pure food as alms with pious feelings to Suddatt ascetic) Sumukh Gathapati was overwhelmed with joy. Through this pious deed he considerably reduced the extant of the cycles of rebirth and acquired the bondage of *karmas* responsible for a birth as a human being. Five divine things appeared in his house—(1) Shower of gold, (2) shower of flowers of five colours, (3) falling of clothes, (4) sounding of divine drums, and (5) divine pronouncement of *'Ahodanam'* (great charity).

On the crossing of three roads... and so on up to... and streets people gathered and talked to each other—"Beloved of gods ! Blessed is Sumukh Gathapati ! His life has become meaningful."

विवेचन–भावनाशील और सरलचेता दाता को दान देते हुए तीन बार हर्ष का अनुभव होता है–(१) आज मैं दान दूँगा, आज मुझे सद्भाग्य से दान देने का स्वर्णावसर उपलब्ध हुआ है, विचार से प्रथम हर्ष ! (२) फिर दान देने के समय उसके रोंये–रोंये में आनन्द उभरता है, यह कृत्य से दूसरा हर्ष !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) और दान देने के पश्चात् अन्तरात्मा में संतोष व आनन्द वृद्धिंगत होता रहता है, यह तीसरा अनुभव से हर्ष।

त्रिविध–शुद्धि–(१) **देय शुद्ध**–निर्दोष आहार, (२) **दाता शुद्ध** (भावनाशील देने वाले) व (३) **प्रतिग्राहक शुद्ध** (त्यागी श्रमण) पात्र, ये तीनों ही शुद्ध हों तो वह दान जन्म–मरण के बन्धनों को तोड़ने वाला और संसार को परित्त–संक्षिप्त–कम करने वाला होता है।

पाँच दिव्य प्रकट होने का अभिप्राय है, कि वह इतना उत्कृष्ट आदर्शदान था कि उसकी अनुमोदना व प्रभावना करने के लिए देवताओं ने आकाश से स्वर्णादि की वृष्टि की। (१) देवकृत सुवर्ण–वृष्टि को ही वसुधारा कहते हैं। (२) कृष्ण, नील, पीत, श्वेत और रक्त पाँच रंग पुष्पों में पाये जाते हैं। देवों द्वारा बरसाए गये ये पुष्प वैक्रिय–लब्धिजन्य हैं, अतः अचित्त होते हैं। (३) **चेलोत्क्षेप**–चेल–वस्त्र, उसका उत्क्षेप–फेंकना चेलोत्क्षेप कहा जाता है। दिव्यवस्त्र आकाश से वर्षते हैं। (४) देवदुन्दुभिनाद–देव–दुन्दुभियों का बजना। (५) आश्चर्य उत्पन्न करने वाले दान की 'अहो दानं' संज्ञा है। जिस दान के प्रभाव से आकर्षित हो देवता स्वयं ऐसा कहते हों उसे 'अहोदान' शब्द से कहना युक्तिसंगत ही है।

Elaboration—While donating, a sentimental and guileless donor experiences joy three times—(1) The first instance of joy comes with the thought, 'I will donate today. I am fortunate to get the golden opportunity of giving charity today.' (2) The second instance is when every pore of his body is filled with joy during the act of giving. (3) And the third instance is when his joy and contentment continues to enhance with the remembrance of the act of donating.

Trividh-shuddhi (three-way-purity)—(1) *Deya shuddha*—pure food or alms. (2) *Data shuddha*—pure donor; sincere and guileless donor. (3) *Patra shuddha*—pure seeker, such as a detached *Shraman*. When a donation has such three-way-purity or triple purity it becomes the cause of breaking the bonds of *karmas* and reducing the extant of the cycles of rebirth.

Appearance of five divine things indicates that the charity was so ideal and lofty that gods effected showers of gold (etc.) in order to commend and popularize the act. (1) Divine shower of gold is called *vasudhara*. (2) Shower of flowers of five colours—black, blue or green, yellow, white and red. As these divine flowers are created through the power of transmutation or transformation, they are lifeless (*achit*). (3) *Chelotkshep*—*chela* means clothes and *utkshep* means throwing. There is a shower of clothes from the sky, (4) Sounding of divine drums. (5) Divine pronouncement of '*Ahodanam*' (great charity). An astonishing charity is called *Ahodanam*. When a charity

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

attracts gods and forces them to exclaim—*'Ahodanam'* (Great charity !), it is, indeed, a great charity.

१३. तए णं से सुमुहे गाहावई बहूहिं वाससयाइं आउयं पालेइ, पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने।

तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी तहेव सीहं पासइ, सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासाए विहरइ।

तं एवं खलु, गोयमा ! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया।

१३. इसके पश्चात् वह सुमुख गाथापति सैकड़ों वर्षों की दीर्घ आयु का उपभोग कर यथा समय मृत्यु प्राप्त कर इसी हस्तिशीर्ष नगर में अदीनशत्रु राजा की धारिणी देवी की कुक्षि में पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ। तब वह धारिणी देवी किंचित सोई और किंचित जागती हुई स्वप्न में सिंह को देखती है। शेष वर्णन पहले किया जा चुका है। इसप्रकार वह उन्नत प्रासादों में मानव सम्बन्धी भोगों का यथेष्ट उपभोग कर रहा है।

भगवान ने कहा–हे गौतम ! सुबाहुकुमार को उपर्युक्त महादान के प्रभाव से इस तरह की मानव–समृद्धि उपलब्ध तथा प्राप्त हुई है।

13. Then that Sumukh Gathapati enjoyed a long life of hundreds of years. After his death at the destined moment he descended as a son into the womb of Dharini Devi, the consort of king Adeenashatru of Hastishirsha city. Queen Dharini Devi saw a lion in her dream in her state of partial slumber. Other details have already been stated. This way he is fully enjoying the human pleasures and comforts in his lofty mansions.

Bhagavan added—Gautam ! As a consequence of the aforesaid great charity Subahu Kumar availed and acquired this human opulence.

१४. "पभू णं भंते ! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?"

'हंता पभू'।

तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं से समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ हत्थिसीसाओ नयराओ पुप्फकरंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालजक्खाययणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खिमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणए विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. सुबाहुकुमार का पूर्वभव सुनकर गौतम स्वामी ने पूछा–भंते ! सुबाहुकुमार आपश्री के पास मुण्डित होकर, गृहस्थावास को त्याग कर अनगार धर्म को ग्रहण करने में समर्थ है ?

भगवान–हाँ गौतम ! वह प्रव्रजित होने में समर्थ है।

भगवान गौतम ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दना व नमस्कार किया। तथा संयम एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरण करने लगे।

कुछ समय पश्चात् श्रमण भगवान महावीर ने हस्तिशीर्ष नगर के पुष्पकरण्डक उद्यानगत कृतवनमाल नामक यक्षायतन से विहार किया और अन्य देशों में विचरने लगे।

इधर सुबाहुकुमार श्रमणोपासक–देशविरत श्रावक हो गया। जीव अजीव आदि तत्त्वों का ज्ञाता बना। सुपात्रदान का लाभ प्राप्त करता हुआ समय व्यतीत करने लगा।

14. After listening to the story of the past birth of Subahu Kumar Gautam Swami asked—"*Bhante* ! Is Subahu Kumar capable of getting initiated by you into ascetic religion by renouncing his household and tonsuring his head ?"

Bhagavan—"Yes, Gautam ! He is capable of getting initiated."

Bhagavan Gautam paid homage and obeisance and resumed enkindling his soul with discipline and austerities.

Some time later Shraman Bhagavan Mahavir left the temple of Kritavanamalapriya Yaksh in Pushpakarandak garden in Hastishirsha city and resumed his wanderings in other states.

Here that Subahu Kumar became a *Shramanopasak* (a devotee of ascetics). He acquired the knowledge of fundamentals including being (soul) and non-being (matter). He spent his time availing every opportunity of donation to the deserving.

सुबाहुकुमार की धर्म आराधना

१५. तए णं से सुबाहुकुमारे अन्नया कयाइ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमिज्जत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं संथरइ संथरित्ता दब्भसंथारं दुरुहइ, दुरुहित्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ।

१५. श्रावक व्रतों का पालन करता हुआ वह सुबाहुकुमार किसी समय चतुर्दशी, अष्टमी, उद्दिष्ट–अमावस्या और पूर्णमासी, इन पर्व तिथियों में जहाँ पौषधशाला थी (पौषधव्रत करने का स्थान–विशेष था) वहाँ आता है। पौषधशाला का प्रमार्जन (अच्छी प्रकार निरीक्षण व सफाई) करता है, प्रमार्जन कर उच्चार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्रवणभूमि–मल मूत्र विसर्जन के स्थान की प्रतिलेखना–(निरीक्षण) करता है। दर्भसंस्तार–सूखे घास पुआल का बिछौना करता है। उस पर आरूढ़ होता है और अट्ठमभक्त–तीन दिन का लगातार उपवास ग्रहण करता है। पौषधशाला में पौषधिक–पौषधव्रत धारण किया हुआ वह, अष्टमभक्त के साथ धर्म जागरणा करता है।

SUBAHU KUMAR'S SPIRITUAL PRACTICES

15. Observing the vows of a *shravak* (Jain layman), Subahu Kumar used to go to the *paushadhashala* (place for observing partial ascetic vow or *paushadh-vrat*) on every auspicious day of a fortnight—fourteenth, eighth, fifteenth (both dark or *amavasya* and bright or *purnima*). There he would properly inspect and clean (*pramarjan*) the *paushadhashala* and inspect the place for disposing excreta. He would then make a bed of hay, sit on it and take the vow of a three day fast (avoiding eight meals or *ashtam-bhakt*). Having taken the partial ascetic vow (*paushadh-vrat*) and observing a three day fast he would remain awake and alert absorbed in spiritual contemplation.

शुभ भावना

१६. तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए–समुप्पज्जित्था–धन्ना णं ते गामागर जाव सन्निवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ।

धन्ना णं ते राईसर. जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयंति।

धन्ना णं ते राईसरतलवर. जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जंति।

धन्ना णं ते राईसरतलवर. जाव जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सुणेंति।

ते जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा जाव विहरिज्जा, तए णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्से अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा।

१६. एक बार पौषधव्रत के समय मध्य रात्रि में धर्मजागरणा करते हुए सुबाहुकुमार के अन्तर् मन में यह संकल्प उठा कि–वे ग्राम, नगर और सन्निवेश धन्य हैं जहाँ पर श्रमण भगवान महावीर स्वामी विचरते हैं।

वे राजा, ईश्वर आदि भी धन्य हैं जो श्रमण भगवान महावीर स्वामी के समीप मुण्डित होकर प्रव्रज्या ग्रहण करते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वे राजा, ईश्वर आदि भी धन्य हैं, जो श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास पाँच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकार के गृहस्थ धर्म को अंगीकार करते हैं।

वे राजा ईश्वर आदि भी धन्य हैं, जो श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास धर्म का श्रवण करते हैं।

सो यदि श्रमण भगवान महावीर स्वामी पूर्वानुपूर्वी-गमन करते हुए, ग्रामानुग्राम विचरते हुए, यहाँ पधारें तो मैं भी गृह त्याग कर श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास मुण्डित होकर प्रव्रजित हो जाऊँ।

PIOUS FEELINGS

16. Once while absorbed in spiritual contemplation during his partial ascetic vow a thought surfaced in his mind—

Blessed are those villages, cities, and settlements where Shraman Bhagavan Mahavir visits.

Also blessed are those kings, nobles (etc.) who, in presence of Shraman Bhagavan Mahavir, get initiated after tonsuring their heads.

Also blessed are those kings, nobles (etc.) who, in presence of Shraman Bhagavan Mahavir, accept the householder's code (*Grihasth Dharma*) of twelve vows including five minor vows (*Anuvrats*) and seven instructive or complimentary vows of spiritual discipline (*Shikshavrats*).

Also blessed are those kings, nobles (etc.) who listen to the sermon of Shraman Bhagavan Mahavir.

Therefore, in case, wandering from one village to another, Shraman Bhagavan Mahavir arrives here, I will also renounce my home and get initiated in his presence after tonsuring my head.

विवेचन–सुबाहु के चिन्तन के साथ पाँच अन्य विशेषण भी हैं, सबका भावार्थ इस प्रकार है–(१) **अज्झत्थिए**–आत्मा की गहराई में भाव उठना, (२) **कप्पिए**–कल्पना की ऊँचाई पर पहुँचना, (३) **चिंतिए**–चित्त में बार-बार उसी विचार का उठना, (४) **पत्थिए**–बार-बार उसी बात की प्रार्थना करना, कामना करना, (५) **मणोगए**–जो विचार अभी मन में है, शब्दों से प्रगट नहीं हुआ है, (६) **संकप्पे**–भावना का सुदृढ़ संकल्प का रूप धारण करना।

योगशास्त्र में माना गया है, जब कोई चिन्तन-मनन में एकाग्र हो जाता है, तब उसका श्वास, उसकी भावना और प्राणधारा सुषुम्ना नाड़ी में प्रवाहित होता है, उस अवस्था में किया गया विचार संकल्प शीघ्र ही सफल होता है।

Elaboration—The number of adjectives used with Subahu Kumar's contemplation is six. They are—**(1) Ajjhatthiye**—surfacing of thoughts from the depths of soul. **(2) Kappiye**—to reach the heights of imagination.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) Chintiye—repeated surfacing of the same idea in mind. **(4) Patthiye**—to wish and pray again and again for a specific thing. **(5) Manogaye**—the idea that is still in mind and not expressed in words. **(6) Sankappe**—crystallization of an idea into a resolve.

According to *Yogashastra* when a person fully concentrates on his thoughts, his breath, feelings, and life force flows through the *Sushumna* (the channel of the spinal cord). In that state the thought or resolve materializes soon.

भगवान का पदार्पण

१७. तए णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

परिसा, राया निग्गया। तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया जणसद्दं वा जणसण्णिवायं वा जहा जमाली तहा निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया पडिगया।

१७. श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने सुबाहुकुमार के इस प्रकार के मानसिक संकल्प को जाना, तदनुसार ग्रामानुग्राम विचरते हुए हस्तिशीर्षनगर में जहाँ पुष्पकरण्डक नामक उद्यान था और जहां कृतवनमालप्रिय यक्ष का यक्षायतन था, वहाँ पधारे। अनगार मर्यादा के अनुकूल स्थान आदि का अवग्रह ग्रहण कर संयम व तप से आत्मा को भावित करते हुए अवस्थित हुए।

भगवान का आगमन सुनकर नगर की जनता व राजा दर्शनार्थ आये। सुबाहुकुमार भी पूर्व की तरह समारोह के साथ (जमाली की भाँति)भगवान् की सेवा में उपस्थित हुआ। भगवान ने उस विशाल परिषद् तथा सुबाहुकुमार को धर्म का उपदेश दिया। परिषद् और राजा धर्मदेशना सुनकर वापिस चले गये।

ARRIVAL OF BHAGAVAN

17. Shraman Bhagavan Mahavir became aware of Subahu Kumar's resolve. Wandering from one village to another he arrived at the temple of Kritavanamalapriya Yaksh in Pushpakarandak garden in Hastishirsha city. Following the ascetic norms he sought for a suitable place of stay and commenced enkindling his soul with discipline and austerities.

On getting the news of *Bhagavan's* arrival people of the city and the king came to pay their homage. Subahu Kumar also came ceremoniously to *Bhagavan* (like Jamali). *Bhagavan* gave his sermon to the large gathering and Subahu Kumar. After which the king and the people dispersed.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. तए णं सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ. जहा मेहो तहा अम्मापियरो आपुच्छइ। निक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाव इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।

१८. सुबाहुकुमार ने श्रमण भगवान् महावीर के श्रीमुख से धर्म का श्रवण किया। फिर उस पर मनन करता हुआ वैराग्य प्राप्त कर दीक्षा के लिए श्रेणिक राजा के पुत्र मेघकुमार की तरह अपने माता-पिता से अनुमति लेता है। अनुमति मिलने पर सुबाहुकुमार का निष्क्रमण-अभिषेक मेघकुमार की भाँति किया जाता है। यावत् वह अनगार हो जाता है, ईर्यासमिति का पालक यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बन जाता है।

18. Subahu Kumar listened to the sermon by Shraman Bhagavan Mahavir. While contemplating over it he got detached and sought permission from his parents to get initiated as an ascetic, as Megh Kumar, King Shrenik's son, did. On getting permission his pre-renouncing lustration was performed like that of Megh Kumar... and so on up to... He became an ascetic, observed the codes of *Irya samiti* (care of movement)... and so on up to... he became completely celibate.

१९. तए णं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम-तवोवहाणेहिं अप्पाणं भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने।

१९. दीक्षा लेने के पश्चात् सुबाहु अनगार श्रमण भगवान महावीर के तथारूप स्थविरों के पास से सामायिक (आचारांग) आदि एकादश अंगों का अध्ययन करते हैं। अनेक उपवास, बेला, तेला आदि विविध प्रकार के तपों के आचरण से आत्मा को भावित करके अनेक वर्षों तक श्रमणपर्याय का पालन कर अन्त में एक मास की संलेखना के द्वारा अपनी आत्मा की आराधना कर साठ भक्तों-भोजनों का अनशन द्वारा छेदन कर अर्थात् २९ दिन का अनशन कर आलोचना व प्रतिक्रमणपूर्वक समाधि को प्राप्त होकर कालमास में काल करके सौधर्म देवलोक में देव रूप से उत्पन्न हुए।

19. He studied all the eleven *Angas* (canons) including *Samayik* from the senior ascetics of Shraman Bhagavan Mahavir's order. Enkindling his soul by observing numerous austerities including fasting for one, two, three, and more days, he immaculately followed the ascetic code for many years. In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of one month duration. At the conclusion of the month long fast (avoiding sixty meals) at the destined moment of death he embraced meditational death after doing critical review (*pratikraman*). He reincarnated as a god in the Saudharma kalp (a dimension of gods).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, टिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लहिहिइ, लहिहित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, बुज्झिहित्ता तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे जाव पव्वइस्सइ। से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णं पाउणिहिइ, पाउणिहित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिंपत्ते कालगए सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं ताओ देवलोगाओ माणुस्सं, पव्वज्जा बंभलोए। माणुस्सं। तओ महासुक्के। तओ माणुस्सं, आणए देवे। तओ माणुस्सं, आरणे। तओ माणुस्सं, सव्वट्ठसिद्धे।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाइं अड्ढाइं जहा दढपइन्ने, सिज्झिहिइ।

२०. सुबाहुकुमार का जीव सौधर्म देवलोक की पूर्ण आयु भोगकर वहाँ से **आयु** (आयुष्य कर्म के दलिकों का) **भव** (देवगति सम्बन्धी कर्म दलिकों का) और **स्थिति** (आयुष्य कर्म की स्थिति का) का क्षय होने पर देव शरीर को छोड़कर सीधा मनुष्य शरीर को प्राप्त करेगा। बोधि को प्राप्त करेगा, बोधि उपलब्ध कर तथारूप स्थविरों के पास मुण्डित होकर साधुधर्म में प्रव्रजित हो जायेगा। वहाँ वह अनेक वर्षों तक श्रमण पर्याय का पालन करता हुआ अन्त में आलोचना तथा प्रतिक्रमण कर समाधि को प्राप्त होगा। काल धर्म को प्राप्तकर सनत्कुमार नामक तीसरे देवलोक में देवता के रूप से उत्पन्न होगा।

वहाँ से पुनः मनुष्य भव प्राप्त करेगा। दीक्षित होकर महाशुक्र नामक देवलोक में उत्पन्न होगा। वहाँ से च्यव कर फिर मनुष्य-भव में जन्म लेगा और पूर्व की ही तरह दीक्षित होकर आनत नामक नवम देवलोक में उत्पन्न होगा। वहाँ की भवस्थिति को पूर्ण कर मनुष्य-भव में आकर दीक्षित हो आरण नाम के ग्यारहवें देवलोक में उत्पन्न होगा। वहाँ से च्यव कर मनुष्य-भव को धारण करके अनगार-धर्म का आराधन कर देह त्याग पर सर्वार्थसिद्ध नामक विमान में उत्पन्न होगा। वहाँ से च्यवकर सुबाहुकुमार का वह जीव व्यवधानरहित महाविदेह क्षेत्र में सम्पन्न कुलों में से किसी कुल में उत्पन्न होगा। वहाँ दृढ़प्रतिज्ञ कुमार की भाँति चारित्र प्राप्त कर सिद्धपद को प्राप्त करेगा।

FUTURE DESCRIPTION

20. Completing the age, state and life by *ayukshaya* (shedding the life span determining *karma* particles), *bhavakshaya* (shedding the divine state determining *karma* particles), and *sthitikshaya* (shedding the *karma* particles determining the extant of life span), the soul that was Subahu Kumar will abandon his divine body and reincarnate as a human being. He will get enlightened. Then after tonsuring his head, will get initiated as an ascetic by *sthavirs* (senior ascetics). Following the ascetic code for many years he will embrace meditational death after doing critical review (*pratikraman*). He will reincarnate as a god in the Sanatkumar kalp (the third heaven).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

From there he will again reincarnate as a human being. After getting initiated (etc.) he will reincarnate in the Mahashukra Devlok (divine dimension). Descending from there he will again take birth as a human being and get initiated as before. Then he will reincarnate in the ninth Devlok called Anat. Completing the state and life there, he will again take birth as a human being and get initiated as before. Then he will reincarnate in the eleventh Devlok called Aran. Descending from there he will once again reincarnate as a human being, get initiated and after death reincarnate in the Sarvarthsiddha Viman. Descending from there the soul that is Subahu Kumar will at once take rebirth as a human being in one of the wealthy families in Mahavideh area. He will get initiated like Dridhapratijna Kumar and attain the status of a Siddha.

उपसंहार

२१. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

२१. आर्य सुधर्मा स्वामी कहते हैं–हे जम्बू ! मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने सुखविपाकश्रुत के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ प्रतिपादित किया है। ऐसा मैं कहता हूँ।

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

CONCLUSION

21. Sudharma Swami concluded, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Sukha-vipaak*. So I state."

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीय अध्ययन
SECOND CHAPTER

भद्रनन्दी कुमार

१. विइयस्स उक्खेवो।

१. द्वितीय अध्ययन की प्रस्तावना पूर्ववत् समझ लेनी चाहिए।

जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–भंते ! श्रमण भगवान महावीर ने सुखविपाक के दूसरे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? उत्तर में सुधर्मा स्वामी कहते हैं–

BHADRANANDI KUMAR

1. The foreword of the second chapter should be read as before.

(Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the second chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे नयरे। थूभकरंडगउज्जाणं। धन्नो जक्खो। धणावहो राया। सरस्सई देवी।

सुमिणदंसणं, कहणं, जम्मं, बालत्तणं, कलाओ य।
जोव्वणं पाणिग्गहणं दाओ पासाय भोगा य।

जहा सुबाहुस्स। नवरं भद्दनंदी कुमारे। सिरिदेवी पामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं सामिस्स समोसरणं। सावगधम्मं। पुव्वभवपुच्छा।

महाविदेहे वासे पुंडरीकिणी नयरी। विजय कुमारे। जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए। मणुस्साउए निबद्धे। इहं उप्पन्ने। सेसं जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ। निक्खेवो।

२. उस काल उस समय में ऋषभपुर नाम का नगर था। वहाँ स्तूपकरण्डक नामक उद्यान था। धन्य नामक यक्ष का यक्षायतन था। वहाँ धनावह नाम का राजा राज्य करता था। उसकी सरस्वती देवी नाम की रानी थी। महारानी का स्वप्न–दर्शन। पति से स्वप्न–वृत्तान्त–कथन, समय आने पर बालक का जन्म, बालक का बाल्यावस्था में कलाएँ सीखकर यौवन को प्राप्त होना, माता–पिता के द्वारा दहेज देना और ऊँचे प्रासादों में सुख भोगना आदि सभी वर्णन सुबाहुकुमार की तरह जानना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसमें अन्तर केवल इतना ही है कि सुबाहुकुमार के स्थान पर बालक का नाम 'भद्रनन्दी' था। उसका श्रीदेवी प्रमुख पाँच सौ देवियों के साथ विवाह हुआ। महावीर स्वामी का पदार्पण हुआ। भद्रनन्दी ने श्रावकधर्म अंगीकार किया। गौतम स्वामी द्वारा उसके पूर्वभव सम्बन्धी प्रश्न करने पर भगवान ने इस प्रकार उत्तर दिया–

(पूर्वभव) महाविदेह क्षेत्र में पुण्डरीकिणी नगरी में विजय नामक कुमार था। विजय ने युगबाहु तीर्थंकर को प्रतिलाभित किया–दान दिया, उससे मनुष्य आयुष्य का बन्ध हुआ, वहाँ से आयुष्य पूर्ण कर यहाँ भद्रनन्दी के रूप में जन्म लिया, यह सब वर्णन सुबाहुकुमार ही की तरह जान लेना चाहिए। यावत् वह महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर सिद्ध होगा, बुद्ध होगा, मुक्त होगा, निर्वाण पद को प्राप्त करेगा एवं सर्व दुःखों का अन्त करेगा।

निक्षेप–उपसंहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Rishabhapur. It had a garden named Stupakarandak. In it was a temple of Dhanya Yaksh. That city was ruled by king Dhanaavaha. His queen was named Saraswati Devi. The dream of the queen, telling the king about the dream, birth of a son, growing of the child, education, maturing, marriage, dowry, and enjoying pleasures in lofty mansions, all these details should be read as those about Subahu Kumar (Chapter-1).

The only difference being that the name is Bhadranandi Kumar instead of Subahu Kumar and he was married to five hundred girls, chief among them being Shridevi. Bhagavan Mahavir arrived. Bhadranandi accepted *Shravak Dharma* (householder's code). On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) He was a prince named Vijaya in Pundarikini city in Mahavideh area. Vijaya gave alms donation to Tirthankar Yugabahu and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining *karma*) to be a human being. Completing his life span there, he has reincarnated as Bhadranandi. All these details should be read as those about Subahu Kumar... and so on up to... He will take rebirth in Mahavideh area and at last will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE SECOND CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीय अध्ययन
THIRD CHAPTER

सुजातकुमार

१. तच्चस्स उक्खेवो।

१. तृतीय अध्ययन की प्रस्तावना भी पूर्व अध्ययन की तरह जान लेना चाहिए।

SUJAT KUMAR

1. The foreword of the third chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the third chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. वीरपुरं नयरं। मणोरमं उज्जाणं। वीरकण्हमित्ते राया। सिरिदेवी। सुजाए कुमारे। बलसिरीपामोक्खाणं पंचसयकन्नगाणं पाणिग्गहणं। सामीसमोसरणं। पुव्वभवपुच्छ।

उसुयारे नयरे। उसभदत्ते गाहावई। पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए। माणुस्साउए निबद्धे। इह उप्पन्ने जाव महाविदेहवासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।

निक्खेवो।

२. (संक्षेप में तृतीय अध्ययन का वर्णन इस प्रकार है) वीरपुर नामक नगर था। वहाँ मनोरम नाम का उद्यान था। महाराज वीरकृष्णमित्र राज्य करते थे। श्रीदेवी नामक उनकी रानी थी। सुजात नाम का कुमार था। बलश्री प्रमुख ५०० राज कन्याओं के साथ सुजातकुमार का पाणिग्रहण हुआ। श्रमण भगवान महावीर स्वामी पधारे। सुजातकुमार ने श्रावक-धर्म स्वीकार किया। श्री गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव विषयक जिज्ञासा की। श्रमण भगवान महावीर ने इस तरह पूर्वभव का वृत्तान्त कहा-

(पूर्वभव) इक्षुसार नामक नगर था। वहाँ ऋषभदत्त गाथापति रहता था। उसने पुष्पदत्त अनगार को निर्दोष आहार दान दिया, फलतः शुभ मनुष्य आयुष्य का बन्ध हुआ। आयु पूर्ण होने पर यहाँ सुजातकुमार के रूप में उत्पन्न हुआ आदि महाविदेह क्षेत्र में चारित्र ग्रहण कर सिद्ध पद को प्राप्त करेगा।

2. (The story in brief is—) There was a city named Virapur. It had a garden named Manoram. That city was ruled by king Virakrishnamitra. His queen was named Shridevi. They had a son named Sujat Kumar. He was married to five hundred girls, chief among them being Balashri. Bhagavan Mahavir arrived. Sujat accepted *Shravak Dharma* (householder's code). On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(In past birth) There was a city named Ikshusara. Rishabhdatt Gathapati lived there. He gave faultless food as alms to ascetic Pushpadatt and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining *karma*) to be a human being. Completing his life span there, he has reincarnated as Sujat Kumar... and so on up to... He will take rebirth in Mahavideh area, get initiated and at last will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery.

विवेचन–दूसरे अध्ययन की तरह तीसरे अध्ययन का भी समग्र वर्णन प्रथम अध्ययन के ही समान है। केवल नाम व स्थान मात्र का भेद है। अतः सारा वर्णन सुबाहुकुमार की ही तरह समझ लेना चाहिए।

निक्षेप–उपसंहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ तृतीय अध्ययन समाप्त ॥

Elaboration—The details of the third chapter are same as those in the second chapter. The only difference is in name and place. Therefore all the details should be read as those about Subahu Kumar.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE THIRD CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थ अध्ययन
FOURTH CHAPTER

सुवासवकुमार

१. चउत्थस्स उक्खेवो

१. चतुर्थ अध्ययन की प्रस्तावना भी पिछले अध्ययनों की तरह समझ लेनी चाहिए।

SUVASAV KUMAR

1. The foreword of the fourth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the fourth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. विजयपुरं नयरं। नन्दणवणं उज्जाणं। असोगो जक्खो। वासवदत्ते राया। कण्हादेवी। सुवासवे कुमारे। भद्दापामोक्खाणं पंचसयाणं रायवर कन्नगाणं जाव पुव्वभवे।

कोसंबी नयरी। धणपाले राया। वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए। इहं उववन्ने। जाव सिद्धे। निक्खेवो।

२. सुधर्मा स्वामी ने कहा-हे जम्बू ! विजयपुर नाम का एक नगर था। वहाँ नन्दनवन नाम का उद्यान था। उस उद्यान में अशोक नामक यक्ष का एक यक्षायतन था। विजयपुर नगर के राजा का नाम वासवदत्त था। उसकी कृष्णादेवी नाम की रानी थी। सुवासवकुमार नामक राजकुमार था। भद्रा-प्रमुख पाँच सौ राजाओं की श्रेष्ठ कन्याओं के साथ विवाह हुआ। श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पधारने पर सुवासवकुमार ने श्रावकधर्म स्वीकार किया। गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव का वृत्तान्त पूछा। उत्तर में भगवान ने फरमाया-

(पूर्वभव) कौशाम्बी नगरी थी। वहाँ धनपाल राजा था। उसने वैश्रमणभद्र अनगार को निर्दोष आहार का दान दिया, उसके प्रभाव से मनुष्य आयुष्य का बन्ध हुआ यावत् यहाँ सुवासवकुमार के रूप में जन्म लिया, यावत् इसी भव में सिद्धगति को प्राप्त करेगा।

निक्षेप—उपसंहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ चतुर्थ अध्ययन समाप्त ॥

2. (The story in brief is—) There was a city named Vijayapur. It had a garden named Nandanavan. In that garden was a temple of Ashoka Yaksh. That city was ruled by king Vasavadatt. His queen was named

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Krishnadevi. They had a son named Suvasav Kumar. He was married to five hundred girls, chief among them being Bhadraa. Bhagavan Mahavir arrived. Suvasav accepted *Shravak Dharma* (householder's code). On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Kaushambi. King Dhanapal ruled there. He gave faultless food as alms to ascetic Vaishramanabhadra and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining *karma)* to be a human being. Completing his life span there, he has reincarnated as Suvasav Kumar... and so on up to... At last at the end of this very life he will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE FOURTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचम अध्ययन
FIFTH CHAPTER

जिनदास

१. पंचमस्स उक्खेवो।

१. पंचम अध्ययन की प्रस्तावना भी पूर्ववत् जान लेनी चाहिए।

JINADAS

1. The foreword of the fifth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the fifth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. सोगंधिया नयरी। नीलासोए उज्जाणे। सुकालः जक्खो। अप्पडिहओ राया। सुकण्हा देवी। महाचंदे कुमारे। तस्स अरहदत्ता भारिया। जिणदासो पुत्तो। तित्थयरागमणं।

जिणदासपुव्वभवो। मज्झमिया नयरी। मेहरहो राया। सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे। निक्खेवो।

२. (पंचम अध्ययन का वर्णन इस प्रकार है) सौगन्धिका नाम की नगरी थी। वहाँ नीलाशोक नाम का उद्यान था। उसमें सुकाल नाम के यक्ष का यक्षायतन था। उक्त नगरी में अप्रतिहत नामक राजा था। सुकृष्णा नाम की रानी थी। उनके पुत्र का नाम महाचन्द्रकुमार था। उसकी अर्हदत्ता नाम की भार्या थी। महाचन्द्र के जिनदास नाम का पुत्र था। किसी समय श्रमण भगवान महावीर का पदार्पण हुआ। जिनदास ने भगवान से बारह व्रत युक्त गृहस्थ धर्म स्वीकार किया। गौतम स्वामी ने जिनदास के पूर्वभव की जिज्ञासा की और भगवान ने इसके उत्तर में इस प्रकार बताया–

(पूर्वभव) माध्यमिका नाम की नगरी थी। महाराज मेघरथ वहाँ के राजा थे। सुधर्मा अनगार को महाराज मेघरथ ने भावपूर्वक निर्दोष आहार दान दिया, उससे मनुष्य भव के आयुष्य का बन्ध किया और यहाँ पर जन्म लेकर यावत् इसी जन्म में सिद्ध होगा।

2. (The story in brief is—) There was a city named Saugandhika. It had a garden named Nilashoka. In that garden was a temple of Sukaal Yaksh. That city was ruled by king Apratihat. His queen was named Sukrishna. They had a son named Mahachandra Kumar. The name of his wife was Arhadatta. Mahachandra had a son named Jinadas. Bhagavan Mahavir

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

arrived. Jinadas accepted *Shravak Dharma* (householder's code). On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Madhyamika. King Megharath ruled there. He gave faultless food as alms to ascetic Sudharma and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining *karma*) to be a human being. Completing his life span there, he has reincarnated as Jinadas... and so on up to... At last at the end of this very life he will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery.

विवेचन—प्रस्तुत अध्ययन में जिनदास के जीवन-वृत्तान्त के संकलन में केवल इतनी ही विशेषता है कि इसके पितामह अप्रतिहत राजा और पितामही सुकृष्णा देवी का भी इसमें उल्लेख है, जो प्रायः अन्य किसी अध्ययन के जीवनवृत्तों में उपलब्ध नहीं है। शेष कथावस्तु सुबाहुकुमार के समान ही है। विशिष्टता है तो इतनी ही कि इसी भव में (इसी जन्म में) यह मोक्ष को प्राप्त हुआ।

निक्षेप—उपसंहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ पंचम अध्ययन समाप्त ॥

Elaboration—In this chapter the only unusual thing in the story of Jinadas is that it has the mention of his grand parents Apratihat and Sukrishna. Almost all other stories do not mention that. All other details should be read as those about Subahu Kumar. The only other variation being that Jinadas will get liberated at the end of this life only.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE FIFTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

षष्ठ अध्ययन
SIXTH CHAPTER

धनपति

१. छट्ठस्स उक्खेवो।

१. छठे अध्ययन का भाव इस प्रकार है।

DHANAPATI

1. The foreword of the sixth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the sixth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. कणगपुरं नयरं। सेयासोयं उज्जाणं। वीरभद्दो जक्खो। पियचंदो राया। सुभद्दा देवी। वेसमणे कुमारे जुवराया। सिरीदेवी पमोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं। तित्थयरागमणं।

धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवो। मणिवया नयरी। मित्तो राया। संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

निक्खेवो।

२. कनकपुर नाम का नगर था। वहाँ श्वेताशोकनामक एक उद्यान था। वहाँ वीरभद्र नाम के यक्ष का यक्षायतन था। कनकपुर का राजा प्रियचन्द्र था, उसकी रानी का नाम सुभद्रादेवी था। युवराज पदासीन पुत्र का नाम वैश्रमण कुमार था। श्रीदेवी प्रमुख ५०० श्रेष्ठ राजकन्याओं के साथ उसका विवाह हुआ। किसी समय तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी पधारे। युवराज के पुत्र धनपति कुमार ने भगवान से श्रावकों के व्रत ग्रहण किये यावत् गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव की पृच्छा की। उत्तर में भगवान ने कहा–

(पूर्वभव) धनपति कुमार पूर्वभव में मणिपदा नगरी का राजा था मित्र। उसने संभूतिविजय नामक अनगार को शुद्ध आहार से प्रतिलाभित किया यावत् इसी जन्म में वह सिद्धगति को प्राप्त होगा।

2. (The story in brief is—) There was a city named Kanakapur. It had a garden named Shvetashoka. In that garden was a temple of Virabhadra Yaksh. That city was ruled by king Priyachandra. His queen was named Subhadraadevi. They had a son named Vaishraman Kumar, who was the crown prince. He was married to five hundred girls, chief among them being Shridevi. Bhagavan Mahavir arrived. Dhanapati, the son of the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

crown prince, accepted *Shravak Dharma* (householder's code). On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Manipada. King Mitra ruled there. He gave faultless food as alms to ascetic Sambhutivijaya and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining karma) to be a human being. Completing his life span there, he has reincarnated as Dhanapati... and so on up to... At last at the end of this very life he will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery.

विवेचन—इस भव व पूर्वभव में नामादि की भिन्नता के साथ-साथ सुबाहुकुमार व धनपति कुमार के जीवन में इतना ही अन्तर है कि सुबाहुकुमार देवलोकों में जाता हुआ और मनुष्य-भव प्राप्त करता हुआ अन्त में महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होगा जबकि धनपति कुमार इसी जन्म में निर्वाण को उपलब्ध होगा।

निक्षेप—उपसंहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ षष्ठ अध्ययन समाप्त ॥

Elaboration—All other details should be read as those about Subahu Kumar. The only variation being that whereas Subahu Kumar will reincarnate in divine realms before taking birth as a human being in Mahavideh area and getting liberated, Dhanapati will get liberated at the end of this life only.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE SIXTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्तम अध्ययन
SEVENTH CHAPTER

महाबल

१. सत्तमस्स उक्खेवो।

१. सातवें अध्ययन का भाव इस प्रकार है।

MAHABAL

1. The foreword of the seventh chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the seventh chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. महापुरं नयरं। रत्तासोगं उज्जाणं। रत्तपाओ जक्खो। बले राया। सुभद्दा देवी। महब्बले कुमारे। रत्तवईपामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं। तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो। मणिपुरं नयरं। नागदत्ते गाहावई। इन्दंदत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे। निक्खेवो।

२. महापुर नामक नगर था। वहाँ रक्ताशोक नाम का उद्यान था। उसमें रक्तपाद यक्ष का आयतन था। महाराज बल वहाँ के राजा थे। सुभद्रा देवी नाम की रानी थी। महाबल नामक राजकुमार था। रक्तवती प्रभृति ५०० राजकन्याओं के साथ उसका विवाह किया गया।

उस समय तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी पधारे। महाबल राजकुमार ने भगवान से श्रावकधर्म अंगीकार किया, गणधर इन्द्रभूति ने भगवान से पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न किया। तथा भगवान ने प्रतिपादन करते हुए कहा–

(पूर्वभव) गौतम ! मणिपुर नाम का नगर था। वहाँ नागदेव नाम का गाथापति रहता था। उसने इन्द्रदत्त नाम के अनगार को पवित्र भावनाओं से निर्दोष आहार का दान देकर प्रतिलाभित किया तथा उसके प्रभाव से मनुष्य आयुष्य का बन्ध करके यहाँ पर महाबल के रूप में उत्पन्न हुआ। इसी भव में श्रमणदीक्षा स्वीकार कर सिद्धगति को प्राप्त करेगा।

निक्षेप–उपसंहार भी पूर्ववत् समझना।

॥ सप्तम अध्ययन समाप्त ॥

2. (The story in brief is—) There was a city named Mahapur. It had a garden named Raktashoka. In that garden was a temple of Raktapad Yaksh. That city was ruled by king Bala. His queen was named

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Subhadraadevi. They had a son named Mahabal Kumar. He was married to five hundred girls, chief among them being Raktavati.

Bhagavan Mahavir arrived. Prince Mahabal accepted *Shravak Dharma* (householder's code). On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Manipur. Naagdev Gathapati lived there. He gave faultless food as alms to ascetic Indradatt and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining karma) to be a human being. Completing his life span there, he has reincarnated as Mahabal... and so on up to... At last at the end of this very life he will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE SEVENTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टम अध्ययन
EIGHTH CHAPTER

भद्रनन्दी

१. अट्ठमस्स उक्खेवो।

१. अष्टम अध्ययन का वर्णन भी इस प्रकार किया है।

BHADRANANDI

1. The foreword of the eighth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the eighth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. सुघोसं नयरं। देवरमणे उज्जाणे वीरसेणो जक्खो। अज्जुणो राया। तत्तवई देवी। भद्दनन्दी कुमारे। सिरिदेवी पामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं जाव पुव्वभवे। महाघोसे नयरे। धम्मघोसे गाहावई। धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे। निक्खेवो।

२. सुघोष नगर था। वहाँ देवरमण उद्यान था। उसमें वीरसेन यक्ष का यक्षायतन था। सुघोष नगर में अर्जुन नामक राजा राज्य करता था। उसके तत्त्ववती नाम की रानी थी और भद्रनन्दी नाम का राजकुमार था। उसका श्रीदेवी आदि ५०० श्रेष्ठ राजकन्याओं के साथ पाणिग्रहण हुआ।

किसी समय श्रमण भगवान महावीर स्वामी का वहाँ पदार्पण हुआ। भद्रनन्दी ने भगवान की देशना से प्रभावित होकर श्रावकधर्म अंगीकार किया। गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव के सम्बन्ध में पृच्छा की, तब भगवान ने उत्तर देते हुए फरमाया–

(पूर्वभव) हे गौतम ! महाघोष नगर में धर्मघोष गाथापति रहता था। उसने धर्मसिंह मुनिराज को निर्दोष आहार के दान से प्रतिलाभित कर मनुष्य–भव के आयुष्य का बन्ध किया और यहाँ पर उत्पन्न हुआ। यावत् साधुधर्म का यथाविधि अनुष्ठान करके भद्रनन्दी अनगार बँधे हुए कर्मों का आत्यंतिक क्षय कर इसी भव में मोक्ष पद को प्राप्त करेगा।

निक्षेप–उपसंहार पूर्ववत समझना चाहिए।

॥ अष्टम अध्ययन समाप्त ॥

2. (The story in brief is—) There was a city named Sughosh. It had a garden named Devaraman. In that garden was a temple of Virasen Yaksh. That city was ruled by king Arjun. His queen was named Tattvavati. They

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

had a son named Bhadranandi Kumar. He was married to five hundred girls, chief among them being Shridevi.

Bhagavan Mahavir arrived. Prince Bhadranandi accepted *Shravak Dharma* (householder's code). On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Mahaghosh. Dharmaghosh Gathapati lived there. He gave faultless food as alms to ascetic Dharmasimha and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining karma) to be a human being. Completing his life span there, he has reincarnated as Bhadranandi... and so on up to... At last he will immaculately follow the ascetic code and at the end of this very life become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE EIGHTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवम अध्ययन
NINTH CHAPTER

महाचन्द्र

१. नवमस्स उक्खेवो।

१. नवम अध्ययन का उत्क्षेप भी पूर्ववत् जान लेना चाहिए।

MAHACHANDRA

1. The foreword of the ninth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the ninth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. चंपा नयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। पुण्णभद्दो जक्खो। दत्ते राया। रत्तवईदेवी। महचंदे कुमारे जुवराया। सिरीकंतापामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं जाव पुव्वभवो। तिगच्छिया नयरी। जियसत्तू राया। धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे। निक्खेवो।

२. चम्पा नाम की नगरी थी। वहाँ पूर्णभद्र नामक सुन्दर उद्यान था। उसमें पूर्णभद्र यक्ष का यक्षायतन था। वहाँ के राजा का नाम दत्त था और रानी का नाम रक्तवती था। उनके युवराज के पद पर आसीन महाचन्द्र नामक राजकुमार था। श्रीकान्ता प्रमुख ५०० राजकन्याओं के साथ उसका पाणिग्रहण हुआ।

एक दिन पूर्णभद्र उद्यान में श्रमण भगवान महावीर स्वामी का आगमन हुआ। महाचन्द्र ने धर्मदेशना सुनकर श्रावकों के बारह व्रतों को ग्रहण किया। गणधर गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव के सम्बन्ध में जिज्ञासा की। भगवान महावीर स्वामी ने उत्तर देते हुए पूर्वभव इस प्रकार बताया–

(पूर्वभव) चिकित्सिका नाम की नगरी थी। महाराज जितशत्रु वहाँ राज्य करते थे। उसने धर्मवीर्य अनगार को प्रासुक–निर्दोष आहार का दान दिया, फलतः मनुष्य–आयुष्य का बन्धकर यहाँ उत्पन्न हुआ। यहाँ पर श्रमण–धर्म का यथाविधि अनुष्ठान करके महाचन्द्र मुनि बन्धे हुए कर्मों का समूल क्षय कर परमपद को प्राप्त करेगा।

निक्षेप–उपसंहार–पूर्ववत् समझ लेना चाहिए।

॥ नवम अध्ययन समाप्त ॥

2. (The story in brief is—) There was a city named Champa. It had a garden named Purnabhadra. In that garden was a temple of Purnabhadra Yaksh. That city was ruled by king Datt. His queen was named Raktavati.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

They had a son named Mahachandra Kumar, who was the crown prince. He was married to five hundred girls, chief among them being Shrikanta.

Bhagavan Mahavir arrived. Prince Mahachandra accepted *Shravak Dharma* (householder's code). On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Chikitsika. King Jitashatru ruled there. He gave faultless food as alms to ascetic Dharmavirya and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining karma) to be a human being. Completing his life span there, he has reincarnated as Mahachandra. ... and so on up to... At last he will immaculately follow the ascetic code and at the end of this very life become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery.

Conclusion should be read as before.

● END OF THE NINTH CHAPTER ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशम अध्ययन
TENTH CHAPTER

वरदत्त

१. दसमस्स उक्खेवो।

१. दशम अध्ययन की प्रस्तावना पूर्व की भाँति ही जाननी चाहिए।

VARADATT

1. The foreword of the tenth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the tenth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. एवं खलु, जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साएयं नाम नयरे होत्था। उत्तर कुरू उज्जाणे। पासमिओ जक्खो। मित्तनन्दी राया। सिरिकंता देवी। वरदत्ते कुमारे। वरसेणापामोक्खाणं पंचदेवीसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं। तित्थगरागमणं। सावगधम्मं।

पुव्वभवपुच्छा। सयदुवारे नयरे। विमलवाहणे राया। धम्मरुई नामं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता पडिलाभिए समाणे मणुस्साउए निबद्धे। इहं उप्पन्ने।

सेसं जहा सुबाहुस्स कुमारस्स। चिंता जाव पव्वज्जा। कप्पंतरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे। तओ महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिइ।

'एवं खलु, जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते।'

सेवं भंते ! सेवं भंते ! सुहविवागा।

२. सुधर्मा स्वामी कहते हैं–हे जम्बू ! उस काल उस समय में साकेत नगर था। वहाँ उत्तरकुरु उद्यान था। उसमें पाशमृग यक्ष का यक्षायतन था। उस नगर का राजा मित्रनन्दी था। उनकी श्रीकान्ता रानी थी। (उनका) वरदत्त राजकुमार था। कुमार वरदत्त का वरसेना आदि ५०० सुन्दर राजकन्याओं के साथ पाणिग्रहण–संस्कार हुआ। किसी समय उत्तरकुरु उद्यान में श्रमण भगवान महावीर स्वामी का पदार्पण हुआ। वरदत्त ने देशना श्रवण कर भगवान से श्रावकधर्म अंगीकार किया। गणधर गौतम स्वामी के पूछने पर भगवान महावीर ने वरदत्त के पूर्वभव का वृत्तान्त इस प्रकार फरमाया–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पूर्वभव) हे गौतम ! शतद्वार नामक नगर में विमलवाहन नामक राजा राज्य करता था। उसने एकदा धर्मरुचि अनगार को आते हुए देखकर उत्कट भक्तिभावों से निर्दोष आहार का दान कर प्रतिलाभित किया। उसके पुण्य प्रभाव से शुभ मनुष्य आयुष्य का बन्ध किया। वहाँ की भवस्थिति को पूर्ण करके इसी साकेत नगर में महाराज मित्रनन्दी की रानी श्रीकान्ता की कुक्षि से वरदत्त के रूप में उत्पन्न हुआ।

शेष वृत्तान्त सुबाहुकुमार की तरह की समझ लेना चाहिए। अर्थात् भगवान के विहार कर जाने के बाद पौषधशाला में पौषधोपवास किया, भगवान के पास दीक्षित होने वालों को पुण्यशाली बतलाया और भगवान के पुनः पधारने पर दीक्षित होने का संकल्प किया। यह सब वर्णन सुबाहुकुमार व वरदत्त कुमार दोनों के जीवन में समान ही है। तदनन्तर दीक्षित होकर संयमव्रत का पालन करते हुए मनुष्य-भव से देवलोक और देवलोक से मनुष्य भव, देवलोकों में भी बीच-बीच के एक-एक देवलोक को छोड़कर-सुबाहु के समान ही गमनागमन करते हुए अन्त में सुबाहुकुमार की तरह महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर, वहाँ पर चारित्र की सम्यक् आराधना से कर्मरहित होकर दृढ़ प्रतिज्ञ की तरह मोक्षगमन करेगा।

हे जम्बू ! इस प्रकार मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने सुखविपाक के दशम अध्ययन का अर्थ कहा है, ऐसा मैं कहता हूँ।

जम्बू स्वामी-भगवन् ! यह सुखविपाक का कथन, जैसे कि आपने फरमाया है, वैसा ही है, वैसा ही सत्य है।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Saket. It had a garden named Uttarakuru. In that garden was a temple of Paashamriga Yaksh. That city was ruled by king Mitranandi. His queen was named Shrikanta. They had a son named Varadatt Kumar. He was married to five hundred girls, chief among them being Varasena. Bhagavan Mahavir arrived. Prince Varadatt accepted *Shravak Dharma* (householder's code). On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Shatadvar. King Vimalavahan ruled there. He saw ascetic Dharmaruchi coming and with great devotion he offered faultless food as alms to the ascetic. As a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining *karma*) to be a human being. Completing his life span there, he has reincarnated as Varadatt the son of King Mitranandi and queen Shrikanta.

Remaining details should be read as those about Subahu Kumar. Like— After *Bhagavan's* departure he went to *paushadhashala* and observed fasts. Considered those who got initiated in presence of *Bhagavan* to be lucky. Resolved to get initiated when *Bhagavan* visited again. All these

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

details are similar both for Subahu Kumar and Varadatt Kumar. Then after getting initiated and observing ascetic code he will move alternatively from human dimension to divine dimension and so on. Then like Subahu Kumar he will take rebirth in Mahavideh area and at last will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery like Dridhpratijna.

Sudharma Swami concluded, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the tenth chapter of *Sukha-vipaak*. So I state."

Jambu—"*Bhante* ! What you say is, indeed, true. What you said is a fact."

उपसंहार

नमो सुयदेवयाए। विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा—दुहविवागो य सुहविवागो य।

तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति। एवं सुहविवागे वि। सेसं जहा आयारस्स। एक्कारसमं अंगं समत्तं।

श्रुतदेवता को नमस्कार हो। विपाकश्रुत के दो श्रुतस्कंध हैं। जैसे कि–(१) दुःखविपाक और (२) सुखविपाक।

दुःखविपाक के दश अध्ययन हैं जो कि दस दिनों में प्रतिपादन किये जाते हैं। इनका वाचन दसदिन में ही पूर्ण किया जाता है। इसी तरह सुखविपाक के विषय में भी जानना चाहिए अर्थात् उसके भी दस अध्ययन एक जैसे हैं और दस दिनों में वर्णन किये जाते हैं। शेष वर्णन आचारांग सूत्र की भाँति समझ लेना चाहिए। यह ग्यारहवां अंग विपाक श्रुत समाप्त हुआ।

(उपसंहार का यह पाठ आगम प्रकाशन समिति ब्यावर की प्रति में नहीं है। आचार्य श्री आत्माराम जी म. की टीका में एवं घासीलालजी म. की प्रतियों में उपलब्ध है।)

निक्षेप—उपसंहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ दशम अध्ययन समाप्त ॥

॥ सुखविपाक समाप्त ॥

॥ विपाकश्रुत समाप्त ॥

CONCLUSION

My salutations to *Shrut Devata* (the divine scripture). There are two *Shrutskandhs* of *Vipaak Shrut*—(1) *Duhkha-vipaak* and (2) *Sukha-vipaak*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Duhkha-vipaak has ten chapters that are read and recited in ten days. Same is true for *Sukha-vipaak*, that is, *Sukha-vipaak* also has ten chapters that are read and recited in ten days. Here the remaining details should be read as in *Acharanga Sutra*. (Here ends the eleventh *Anga* called *Vipaak Shrut*)

[*This text of conclusion is not included in the edition published by Agam Prakashan Samiti Beawar. It is available in the Tika by Acharya Shri Atmaram ji M. and that by Ghasilal ji M.*]

● END OF THE TENTH CHAPTER ●

● END OF THE SUKHA-VIPAAK ●

● END OF THE VIPAAK SHRUT ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट
APPENDIX

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-१

आगमों का अनध्यायकाल

(स्व. आचार्यप्रवर श्री आत्माराम जी महाराज द्वारा सम्पादित नन्दीसूत्र से उद्धृत)

स्वाध्याय के लिए आगमों में जो समय बताया गया है, उसी समय शास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए। अनध्यायकाल में स्वाध्याय वर्जित है।

मनुस्मृति आदि स्मृतियों में भी अनध्यायकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक लोग भी वेद के अनध्यायों का उल्लेख करते हैं। इसी प्रकार अन्य आर्ष ग्रन्थों का भी अनध्याय माना जाता है। जैनागम भी सर्वज्ञोक्त, देवाधिष्ठित तथा स्वर-विद्या संयुक्त होने के कारण, इनका भी शास्त्रों में अनध्यायकाल वर्णित किया गया है।

स्थानांगसूत्र के अनुसार, दस आकाश से सम्बन्धित, दस औदारिक शरीर से सम्बन्धित, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदा की पूर्णिमा और चार सन्ध्या। इस प्रकार बत्तीस अनध्यायकाल माने गए हैं, जिनका संक्षेप में निम्न प्रकार से वर्णन है।

दसविहे अंतलिक्खिए असज्झाए पण्णत्ते, तं जहा--उक्कावाते, दिसिदाघे, गज्जिते, विज्जुते, निग्घाते, जुवते, जक्खालित्ते, धूमिता, महिता, रयउग्घाते।

दसविहे ओरालिए असज्झाए, तं जहा--अट्ठी, मंसं, सोणिते, असुतिसामंते, सुसाणसामंते, चंदोवराते, सूरोवराते, पडणे, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे।

--स्थानांगसूत्र, स्थान १०

नो कप्पति निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करित्तए, तं जहा--आसाढपाडिवए, इंदमहपाडिवए, कत्तिअपाडिवाए सुगिम्हपाडिवए।

नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा, चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए, तं जहा--पढिमाते, पच्छिमाते, मज्झण्हे, अड्ढरत्ते।

कप्पइ निग्गंथाणं वा निग्गंथीण वा, चाउक्कालं सज्झायं करेत्तए, तं जहा--पुव्वण्हे अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे।

--स्थानांगसूत्र, स्थान ४, उद्देशक २

आकाश सम्बन्धी दस अनध्याय

१. उल्कापात--तारापतन--यदि महत् तारापतन हुआ है तो एक प्रहर पर्यन्त शास्त्र-स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. **दिग्दाह**—जब तक दिशा रक्तवर्ण की हो अर्थात् ऐसा मालूम पड़े कि दिशा में आग-सी लगी है, तब भी स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

३. **गर्जित**—बादलों के गर्जन पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

४. **विद्युत्**—बिजली चमकने पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

किन्तु गर्जन और विद्युत् का अस्वाध्याय चातुर्मास में नहीं मानना चाहिए। क्योंकि वह गर्जन और विद्युत् प्रायः ऋतु-स्वभाव से ही होता है। अतः आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र पर्यन्त अनध्याय नहीं माना जाता।

५. **निर्घात**—बिना बादल के आकाश में व्यन्तरादिकृत घोर गर्जना होने पर दो प्रहर तक अस्वाध्यायकाल है।

६. **यूपक**—शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया को सन्ध्या की प्रभा और चन्द्रप्रभा के मिलने को यूपक कहा जाता है। इन दिनों प्रहर रात्रि पर्यन्त स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

७. **यक्षादीप्त**—कभी किसी दिशा में बिजली चमकने जैसा, थोड़े-थोड़े समय पीछे जो प्रकाश होता है वह यक्षादीप्त कहलाता है। अतः आकाश में जब तक यक्षाकार दीखता रहे तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

८. **धूमिका-कृष्ण**—कार्तिक से लेकर माघ मास तक का समय मेघों का गर्भमास होता है। इसमें धूम्र वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुंध पड़ती है। वह धूमिका-कृष्ण कहलाती है। जब तक वह धुंध पड़ती रहे, तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

९. **मिहिकाश्वेत**—शीतकाल में श्वेत वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुंध मिहिका कहलाती है। जब तक यह गिरती रहे, तब तक अस्वाध्यायकाल है।

१०. **रज-उद्घात**—वायु के कारण आकाश में चारों ओर धूल छा जाती है। जब तक यह धूल फैली रहती है, स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

औदारिक शरीर सम्बन्धी दस अनध्याय

११-१३. **हड्डी, माँस और रुधिर**—पंचेन्द्रिय, तिर्यंच की हड्डी, माँस और रुधिर यदि सामने दिखाई दें, तो जब तक वहाँ से यह वस्तुएँ उठाई न जाएँ, तब तक अस्वाध्याय है। वृत्तिकार आसपास के ६० हाथ तक इन वस्तुओं के होने पर अस्वाध्याय मानते हैं।

इसी प्रकार मनुष्य सम्बन्धी अस्थि, माँस और रुधिर का भी अनध्याय माना जाता है। विशेषता इतनी है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाथ तक तथा एक दिन-रात का होता है। स्त्री

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के मासिक धर्म का अस्वाध्याय तीन दिन तक तथा बालक एवं बालिका के जन्म का अस्वाध्याय क्रमशः सात एवं आठ दिन पर्यन्त का माना जाता है।

१४. **अशुचि**—मल-मूत्र सामने दिखाई देने तक अस्वाध्याय है।

१५. **श्मशान**—श्मशान भूमि के चारों ओर सौ-सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय माना जाता है।

१६. **चन्द्रग्रहण**—चन्द्रग्रहण होने पर जघन्य आठ, मध्यम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

१७. **सूर्यग्रहण**—सूर्यग्रहण होने पर भी क्रमशः आठ, बारह और सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्यायकाल माना गया है।

१८. **पतन**—किसी बड़े मान्य राजा अथवा राष्ट्र-पुरुष का निधन होने पर जब तक उसका दाह-संस्कार न हो, तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए अथवा जब तक दूसरा अधिकारी सत्तारूढ़ न हो, तब तक शनैः-शनैः स्वाध्याय करना चाहिए।

१९. **राजव्युद्ग्रह**—समीपस्थ राजाओं में परस्पर युद्ध होने पर जब तक शान्ति न हो जाए, तब तक और उसके पश्चात् भी एक दिन-रात्रि स्वाध्याय नहीं करे।

२०. **औदारिक शरीर**—उपाश्रय के भीतर पंचेन्द्रिय जीव का वध हो जाने पर जब तक कलेवर पड़ा रहे, तब तक तथा १०० हाथ तक यदि निर्जीव कलेवर पड़ा हो तो स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

२१-२८. **चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा**—आषाढ़-पूर्णिमा, आश्विन-पूर्णिमा, कार्तिक-पूर्णिमा और चैत्र-पूर्णिमा ये चार महोत्सव हैं। इन पूर्णिमाओं के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहते हैं। इनमें स्वाध्याय करने का निषेध है।

२९-३२. **प्रातः, सायं, मध्याह्न और अर्ध-रात्रि**—प्रातः सूर्य उगने से एक घड़ी पहले तथा एक घड़ी पीछे। सूर्यास्त होने से एक घड़ी पहले तथा एक घड़ी पीछे। मध्याह्न अर्थात् दोपहर में एक घड़ी पहले और एक घड़ी पीछे एवं अर्ध-रात्रि में भी एक घड़ी पहले तथा एक घड़ी पीछे स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

इस प्रकार अस्वाध्यायकाल टालकर दिन-रात्रि में चार काल का स्वाध्याय करना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Appendix-1

INAPPROPRIATE TIME FOR STUDY OF AGAMS

(Quoted from Nandi Sutra edited by Late Acharya Pravar Shri Atmaramji M.)

Scriptures should be studied only at the appropriate time as prescribed in the *Agams*. Study of scriptures at a 'time inappropriate for studies' (*anadhyaya kaal*) is prohibited.

Detailed description of *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in *Smritis* (the corpus of *Sanatan Dharmashastra*) like *Manusmriti*. Vedic people also mention about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) of the *Vedas*. This rule is applicable to other Aryan holy books. As Jain *Agams* are sermons of the Omniscient, ensconced by the *devas*, and phonetically composed, discussion about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in the scriptures. For example :

According to *Sthananga Sutra* there are thirty two slots of time defined as *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies)—ten related to sky, ten related to the gross physical body (*audarik sharira*), four relating to *mahapratipada* (the date following a specific full moon night), four relating to the date of the said full moon night, and four relating to *sandhya* (the four junctions of parts of the day, viz. morning, noon, evening, and midnight). They are briefly described as follows :

RELATING TO SKY

1. **Ulkapat or Tarapatan**—If a falling star or a comet is visible in the sky, scriptures should not be studied for three hours following the incident.

2. **Digdaha**—As long as the sky looks crimson in any direction, as if there was a fire, then study of scriptures should not be done.

3. **Garjit**—For three hours following thunder of clouds such studies are prohibited.

4. **Vidyut**—For three hours following lightening such studies are prohibited.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

However, the prohibition related to thunder and lightening is not applicable during the four months of monsoon. This is because frequent thunder and lightening is an essential attribute of that season. Thus this prohibition is relaxed starting from *Ardra* till *Svati Nakshatra* (lunar mansion or 27/28 divisions of the ecliptic on the path of the moon).

5. Nirghat—For six hours following thunder without clouds (demonic or otherwise) such studies are prohibited.

6. Yupak—The conjunction of solar and lunar glows at twilight hour on first second and third days of the bright half of a month (*Shukla Paksha*) is called *Yupak*. During these dates such studies are prohibited during the first quarter of the night.

7. Yakshadeepti—Some times there is a lightning like intermittent glow visible in the sky. This is called *Yakshadeepti*. As long as such glow is visible in the sky such studies are prohibited.

8. Dhoomika-krishna—The months from *Kartik* to *Maagh* are months of cloud formation. During this period smoky fog of suspended water particles is a frequent phenomenon. This is called *Dhoomika-krishna*. As long as this fog exists such studies are prohibited.

9. Mihikashvet—The white mist during winter season is called *Mihikashvet*. As long as this exists such studies are prohibited.

10. Raj-udghat—High speed wind causes dust storm. This is called *Raj-udghat*. As long as the sky is filled with dust such studies are prohibited.

RELATING TO GROSS PHYSICAL BODY

11-13. Bone, flesh and blood—As long as bone, flesh and blood of five sensed animals are visible and not removed from sight such studies are prohibited. According to the commentator (*Vritti*) if such things are lying up to a distance of 60 yards the prohibition is effective.

This rule is applicable to human bones, flesh and blood with the amendment that the distance is 100 cubits and the effective period is one day and night. The period prohibited for studies is three days in

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

case of a women in menstruation, seven days in case of male-child birth and eight days in case of a female-child birth.

14. Ashuchi—As long as excreta is visible and not removed from sight such studies are prohibited.

15. Smashan—Up to a distance of hundred yards in any direction from a cremation ground such studies are prohibited.

16. Chandra grahan—At the time of lunar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve, or sixteen hours.

17. Surya grahan—At the time of solar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve, or sixteen hours.

18. Patan—On the death of a king or some other nationally eminent person such studies are prohibited as long as he is not cremated. Even after that, the period of study is kept limited as long as his successor does not take over.

19. Raaj-vyudgraha—During a war between neighbouring states such studies are prohibited as long as peace does not prevail. Studies should be resumed only 24 hours after peace is established.

20. Audarik Sharir—In case a five sensed animal dies or is killed in an *upashraya* (place of stay for ascetics) such studies are prohibited as long as the dead body is not removed. This prohibition also applies if a dead body is lying within 100 yards of the place of stay.

21-28. Four Mahotsavas and four Mahapratipada—*Ashadh, Ashvin, Kartik*, and *Chaitra purnimas* (the full moon days of these four months) are called great festival days. The days after these festival days are called *Mahapratipada*. On all these days such studies are prohibited.

29-32. Sandhya—During the twenty four minutes preceding and following the four junctions of parts of the day, viz. morning, noon, evening, and midnight such studies are prohibited.

Studies of scriptures or other holy books should be done avoiding all these *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Appendix-2

Technical Terms
NIRAYAVALIKA SUTRA

The alphabetical index of technical terms according to aphorism number

(A)

aayudh = countering weapons (Nir. I/33. a)

abhakshya = unacceptable (Nir. III/14)

Abhaya Kumar = (Nir. I/11. b)

Abhiyogik Devs = servant-gods (Nir. III/2, 29)

Acharya Siddharth = (Nir. V/12)

Achyut kalp = (Nir. II/5, V/19)

ahar = food (Nir. III/5)

ajjhatthiye (adhyatmik) = aspiration (Nir. III/31)

Amrashaalvan = (Nir. III/14)

Amrashalavan Chaitya = (Nir. III/30)

Anadrit = (Nir. III/1, 63)

anagar = homeless ascetic (Nir. II/2, III/4)

Anagar Varadatt = (Nir. V/12)

Anand Shravak = (Nir. II/1, III/3)

***Anangasen** = (Nir. V/8)*

Angas = the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts (Nir.II/3, III/5, 53, 57, V/14, 18)

Angati = (Nir. III/3)

Angul = (Nir. III/44)

Antakriddashanga Sutra = (Nir. I/1, I/34, II)

Anuttar Vimans = (Nir. I/34)

Anuttaraupapatik Sutra = (Nir. I/22, 34)

anuvrat = minor vows (Nir. III/23, 24)

Apsaras = (Nir. V/6)

Arani = a type of wood (Nir. III/18)

Arya Sudharma Anagar = (Nir. I/2)

aryaa = female ascetic (Nir. III/4, 32, 49, IV/7)

aryikas = female ascetics (Nir. III/33, 49, 50)

ashan = staple food (Nir. III/16. a)

ashan, paan, khadya, svadya ahaar = staple food, liquids, general food, and savoury food (Nir. III/33, 49)

Ashoka tree = (Nir. I/1, III/21)

Aupapatik Sutra = (Nir. I/1, 5, III/16. b, V/7, 10)

autpattiki buddhi = instantaneous wisdom (Nir. I/13)

Avadhi Jnana = extrasensory perception of the physical dimension, something akin to clairvoyance (Nir.III/2, 29, 57)

avasanna = indulging in base activities (Nir. III/44)

***avasannavihari** = disgraceful (Nir. III/44)*

avashyak = essential duties (Nir. III/14)

Avashyak Churni = (Nir. I/24, 34)

(B)

Bahuputrik Vimaan = celestial vehicle (Nir. III/29, 44)

bahuputrika = having many offsprings (Nir. III/45. a)

Bahuputrika Devi = (Nir. III/1, 29, IV/5)

Bala = (Nir. III/1, 63)

Baldev = (Nir. V/8)

Bhadra = (Nir. II/1, III/30)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Bhagavati Sutra = (Nir. I/11. b, 33. b, III/4, 14, 18, 39, 57, IV/7)

Bhagavati Tika = (Nir. I/22)

bhakshya = edible; usable; acceptable (Nir. III/14)

bhanja = nephew; sister's son (Nir.III/46)

Bharateshvar-Bahubali Vritti = (Nir. I/22)

Bharatvarsh = (Nir. I/5, III/45. b)

bhasha-man = speech and mind (Nir. III/5, 57, IV/9)

bhed = guile (Nir. I/11. b)

Bhikshu = (Nir. I/34)

Bhoota = (Nir. IV/5)

Bhoota Darika = Miss Bhoota (Nir. IV/6)

Bijahari = those who subsist on seeds (Nir. III/16. a)

Bil-vasi = those who dig holes and live in them (Nir. III/16. a)

Bilva = Bel; timb; Aegle marmelos (L.) (Nir. III/15)

Brahmalok Kalp = a divine dimension (Nir. II/5, V/14, 15)

Buddha = enlightened (Nir. V/20)

Buddhi Viman = (Nir. IV/11)

Buddhidevi = (Nir. IV/2)

(C)

chaitya = garden (Nir. III/2, 11); temple complex (Nir. III/61, 63, IV/5, 11)

Chakravaks = Brahminy duck; Anas casarca (Nir. V/6)

Chamarendra = (Nir. I/33. b)

Champa city = (Nir. I/1, 21. b)

champak tree = (Nir. I/21. a)

Chandana city = (Nir.III/63)

Chandra = (Nir. III/1, 5, 57)

Chandra Jyotishk god = (Nir. III/5)

Chandravatansak Viman = celestial vehicle (Nir. III/2, 5)

Charans = (Nir. V/6)

Chelana = (Nir. I/11. b)

Chetak = (Nir. I/6)

Chincha = Imli; tamarind (Nir. III/15)

Chitta Sarathi = (Nir. V/11)

cough = phlegm (Nir. III/14)

(D)

daam = bribery (Nir. I/11. b)

Dakshin-koolak = those who live on the southern bank of the Ganges (Nir. III/16. a)

Dakshinardha Bharat = (Nir. V/8)

dand = threat (Nir. I/11. b)

Dantodukhalik = those who remove husk from grain with their teeth before eating (Nir. III/16. a)

Dashadhanva = (Nir. V/2)

Dashar clan = (Nir. V/6)

Dasharath = (Nir. V/2)

Dashashrutaskandh = (Nir. I/34)

Datt = (Nir.III/63)

Datta = (Nir. III/1)

Devananda = (Nir. IV/7)

Dhanush = an ancient linear measure (Nir. V/9)

Dharmakathanuyoga = (Nir. III/4)

Dhriti Viman = (Nir. IV/11)

Dhritidevi = (Nir. IV/2)

dhvaj = flag (Nir. III/2)

dhyan = meditation (Nir. III/14)

Disha-chakraval practice = (Nir. III/16. b)

Dishaprokshi or Dishaprokshiks = those who sprinkle water in all directions for worship (Nir. III/16. a, b)

dohad = desires of a pregnant mother (Nir. I/12. a, 12. c, 13, 14. a, 14. b, 14. c, 20. b)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Dridharath = (Nir. V/2)

Dvaravati = Dvarika (Nir. V/5)

(G)

gamanugamam = moving from one village or city to another (Nir. I/2)

Gandh Hasti = (Nir. I/34)

Gandhadevi = (Nir. IV/2)

Gang-datt = (Nir. III/4, 57)

Garud Vyuha = eagle shaped battle formation (Nir. I/6, 33. a, b)

gathapati = householder (Nir. III/3, 8, 57, 61, IV/5)

Ghan Mridang = (Nir. III/2)

Graiveyak Vimans = (Nir. V/19)

greeshma = summer (Nir. V/12)

Gunasheelak Chaitya = (Nir. I/1, III/2, 8)

gupta brahmacharini = woman practicing celibacy with nine fences (Nir. III/32)

guptindriya = complete restraint over sense organs (Nir. III/32)

guptis = restraints (Nir. III/32, 34, 39, 52)

(H)

Hastinapur city = (Nir.III/18, 63)

Hastitapas = those who subsist on elephant-meat (Nir. III/16. a)

Hemabh Narak = name of a specific area in the infernal world (Nir. I/11. a, b)

hemant = winter (Nir. V/12)

Himavan parvat = the Himalayas (Nir. I/11. b)

Hotrak = those who do offerings at fire sacrifice (Nir. III/16. a)

Hri Viman = (Nir. IV/11)

Hridevi = (Nir. IV/2)

Humbauttha = jungle dwelling ones (Nir. III/16. a)

(I)

Iladevi = (Nir. IV/2)

indriya = sense organs (Nir. III/5)

indriya yaapaniya = restraint over senses (Nir. III/14)

Irya samiti = regulation of movement (Nir. III/34, 41, IV/8)

Ishan kalp = a dimension of gods (Nir. II/4, 5, V/19)

Ishan Kone = north-east direction (Nir. I/5, IV/7)

(J)

Jain Tattvadarsh = (Nir. I/33. b)

Jal-bhakshi = those who subsist only on water (Nir. III/16. a)

Jal-vasi = those who live in water (Nir. III/16. a)

Jamali = (Nir. IV/7, V/13)

Jambu Anagar = (Nir. I/3)

Jambudveep continent = (Nir. I/5, III/2, 45. b, V/20)

Jitshatru = (Nir. IV/5)

Jnata Dharma Katha Sutra = (Nir. I/5, 17. c, 34, III/14)

Jyoti = (Nir. V/2)

Jyotishk Rajas = kings of the stellar gods (Nir. III)

Jyotishk Vimans = the stellar celestial vehicles (Nir. II/3)

(K)

Kaal Kumar = (Nir. I/1)

Kaali Devi = (Nir. I/5)

kaarmiki buddhi = wisdom confirmed through experience (Nir. I/13)

kaasth mudra = a small strip of wood having tie-holes at both ends to cover one's mouth when taking a vow of strict silence. (Nir. III/18)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Kakandi city = (Nir.III/63)

Kalp Vimans = celestial vehicles (Nir. II)

Kalpavatansika (Kappavadinsiya) = name of an Upanga (Nir. I/1,3)

Kalpik (Kappiya) = name of an Upanga (Nir. I/1)

kamandalu = gourd-bowl (Nir. III/17)

Kandahari = those who subsist on bulbous roots (Nir. III/16. a)

kantak = small thorn (Nir. I/33. b)

karod (crore) = ten million (Nir. I/33. b)

Kartik = (Nir. III/4)

Kautrik = those who sleep on the ground (Nir. III/16. a)

Kavittha = Kaith; Feronia limonia (Nir. III/15)

Keshi Kumar Shraman = (Nir. I/2, V/12)

khadya = general food (Nir. III/16. a)

kheer = a pudding made of rice and milk (Nir. III/40)

King Prasenjit = (Nir. I/34)

King Shrenik = (Nir. I/11. b)

Kirti Viman = (Nir. IV/11)

Kirtidevi = (Nir. IV/2)

kodi = koti; crore or ten million; a group of soldiers like company, battalion or brigade; a count of 20; a noun coined for some specific number (Nir. I/33. b)

Kooladhma = those who take their meals on the bank after shouting loudly (Nir. III/16. a)

Koshthak Chaitya = (Nir. III/3)

Kraunch = the Demoiselle crane (Nir. V/6)

Krishna = (Nir. I/4)

Krishna Vasudev = (Nir. V/8)

kubja = hunchbacks (Nir. I/8)

Kulattha = Kulathi; horse-bean; Dolichos biflorus L. (Nir. III/14)

kulattha = noble woman (Nir. III/14)

Kunik = (Nir. I/5)

kunik = one with a cut finger (Nir. I/17. c)

Kutagar-shala or Kutagar = camouflaged house (Nir. III/2, 11, 30)

(L)

Lakshmidevi = (Nir. IV/2)

Lantak kalp = (Nir. II/5)

Lavana sea = (Nir. V/8)

(M)

Maan-bhadra = (Nir. III/1)

maas = month; measure of gold or silver (Nir. III/14)

Maash = Udad; a kind of pulse; Phaseolus mungo L. (Nir. III/14)

madhu = a variety of wine (Nir. I/12. a)

madya = a variety of wine (Nir. I/12. a)

Magadh = (Nir. I/1)

Mahabal Kumar = (Nir. I/11. b, V/8)

Mahadhanva = (Nir. V/2)

Mahakaal = (Nir. I/4)

Mahakrishna = (Nir. I/4)

Mahapadma = (Nir. II/1)

mahaprasthan = the great journey; the vow of rigorous conduct accepted with the purpose of embracing death (Nir. III/18)

Mahasen-krishna = (Nir. I/4)

mahashila = great boulder (Nir. I/33. b)

Mahashilakantak = war-machines (tank-like) (Nir. I/33. b)

Mahashilakantak battle = (Nir. I/33. b)

Mahashukra kalp = (Nir. II/5)

mahattarika goddesses = teacher goddesses who taught ethics and morality (Nir. III/29, IV/5)

Mahavideh area = a mythical area (Nir. I/34, 36, II/3, 4, III/6, 8, 26, 54, 57, 61, IV/9, 11, 20)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mahendra kalp = (Nir. II/5)

Manibhadra god = (Nir.III/61)

Manibhadra Viman = celestial vehicle (Nir.III/61)

Manidatt Yaksh = (Nir. V/12)

Manipadika city = (Nir.III/57)

manogaye (manogat) = notion (Nir. III/31)

Manoram Viman = celestial vehicle (Nir. V/14)

Matali = (Nir. V/2)

Matuling = Bijaura, a kind of lemon (Nir. III/15)

Megh Kumar = (Nir. I/5)

Meghavan = a garden (Nir. V/12)

merak = a variety of wine (Nir. I/12. a)

Mithila city = (Nir.III/63)

Moolahari = those who subsist on roots only (Nir. III/16. a)

Mrigalubdhak = those who subsist on deer-meat (Nir. III/16. a)

Munisuvrat = (Nir. III/4)

myna = a type of Asian starling (Nir. V/6)

(N)

naarak = infernal being (Nir. I/11. a)

nairayik = infernal being (Nir. I/11. a, 33. b)

Nalinigulma = (Nir. II/1)

Nanda = (Nir. I/11. b)

Nandan = (Nir. II/1)

Nandan Kanan = the divine garden (Nir. V/7)

Nandanvan = a garden (Nir. V/7)

narak = infernal world (Nir. I/1)

Nimajjak = those who remain under water for some time (Nir. III/16. a)

Nirgranth = the Omniscient (Nir.III/50)

Nirgranth Shramanis = female ascetics (Nir. III/34, 41, IV/8)

Nirgranth Shramans = detached ascetics (Nir. III/14)

Nirgranth-pravachan = Tirthankar's sermon (Nir. V/11)

Niryavalika (Narakavalika) = the first Upanga, it is also known as Kappiya (Nir. I/1)

Niryavalika Tika = (Nir. I/22)

Nishadh = (Nir. V/2, 8)

niyam = codes (Nir. III/14)

noindriya yaapaniya = restraint other than that over senses (Nir. III/14)

(P)

paan = liquids (Nir. III/16. a)

paarinamiki buddhi = wisdom enriched through imagination, logic, and example (Nir. I/13)

Padma = (Nir. II/1)

Padmabhadra = (Nir. II/1)

Padmagulma = (Nir. II/1)

Padmasen = (Nir. II/1)

Padmavati = (Nir. I/5, V/12)

padopagaman anashan = lifelong fasting keeping the body motionless like a fallen tree (Nir. II/3)

Pagata = (Nir. V/2)

Palyopam = (Nir. III/6, 9, 26, 45. a)

Pankaprabha Prithvi = the fourth hell (Nir. I/11. a, 33. b)

paryapti = state of full development (Nir. III/5, 25, 44, 57, IV/9)

pasatth-vihari = lax in his or her ascetic conduct (Nir. III/44)

pasattha = distancing herself from ascetic virtues (Nir. III/44)

Patrahari = those who subsist on leaves (Nir. III/16. a)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

patthiye (prarthit) = expectation (Nir. III/31)

paushadh shala = place of stay for ascetics (Nir. I/33. b); place of meditation (Nir. V/16)

paushadh vrata = partial ascetic vow under which a householder lives like an initiated ascetic for a specific period (Nir. V/16)

pavas = monsoon (Nir. V/12)

Pitrasen-krishna = (Nir. I/4)

pitta = bile (Nir. III/14)

Potrak = the clad ones (Nir. III/16. a)

Prabhavati = (Nir. I/11. b)

Pradyumna = (Nir. V/8)

praharan = attacking weapons (Nir. I/33. a)

prajnapti = detailed explanations (Nir. III/37)

Pranat kalp = (Nir. II/5)

prasanna = a variety of wine (Nir. I/12. a)

prasuk vihar = defined movement and stay (Nir. III/14)

pratikraman = critical review (Nir. II/3, III/5, 8, 25, 53, 57, 61, V/14, 18, 19)

Priya = (Nir. IV/5)

Purnabhadra god = (Nir.III/57)

Purnabhadra Viman = celestial vehicle (Nir.III/57)

Purnabhadra Yaksha = (Nir. I/5)

Purushadaniya Arhat Parshva = (Nir. III/4, 13, IV/6)

Pushp-chulika = (Pupphachuliya) = name of an Upanga (Nir. I/1)

Pushpahari = those who subsist on flowers (Nir. III/16. a)

Pushpika (Pupphiya) = name of an Upanga (Nir. I/1)

(R)

Raivatak mountain = (Nir. V/7)

Rajagriha = (Nir. I/1)

Ramakrishna = (Nir. I/4)

Rasadevi = (Nir. IV/2)

Rashtrakoot = (Nir.III/46)

Rath-musal = war-machines (tank like) (Nir. I/33. b)

Rath-musal war = (Nir. I/1)

Rayapaseniya Sutra = (Nir. I/11. b, 25. b, 34, III/2, III/29)

Revati Devi = (Nir. V/8)

Rohitak city = (Nir. V/12)

Rukmini = (Nir. V/8)

(S)

saadhvi = female ascetic (Nir. I/34)

saam = incantation (Nir. I/11. b)

Sadhu vrat = ascetic-code (Nir. III/27)

Sagaropam = a metaphoric unit of time (Nir. I/11. a)

Sahasrara kalp = (Nir. II/5)

Sakth = an instrument (Nir. III/17)

sallekhana = ultimate vow (Nir. II/3, III/5, 53, 57, 61, V/14, 18, 19, 20)

samachaturasra samsthan = the anatomical structure of a human being where parallel lines drawn from the extremities of a body sitting cross-legged form a square and where all the parts of body above and below the navel are of standard dimensions (Nir. I/3)

Samanik = of equal status (Nir.III/53)

Samavasaran = divine assembly of a **Tirthankar** = (Nir. I/8, II/2, III/29)

Samayik = (Nir. II/3, 5, III/53, 57, V/14, 18)

samitis = self regulations (Nir. III/32)

Sammajjak = those who wash their hands and feet repeatedly (Nir. III/16. a)

Samprakshalak = those who cleanse their body by rubbing sand or clay (Nir. III/16. a)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

samsakt = to keep contact with householders (Nir. III/44)

samsaktavihari = gregarious (Nir. III/44)

Samudanik trumpet = a trumpet on hearing which people start gathering (Nir. V/9)

Samudravijaya = (Nir. V/6)

samyaktva = righteousness (Nir. I/33. b)

samyam = discipline (Nir. III/14)

Sanatkumar kalp = (Nir. II/5)

sangrahani Gatha = collective verse (Nir. V/20)

sanjnapti = narration of examples and incidents (Nir. III/37)

sankappe (sankalp) = intention (Nir. III/31)

Saptadhanva = (Nir. V/2)

Saptaparna tree = (Nir. III/20)

sarisava (sadrashvaya) = of same age (Nir. III/14)

Sarisava = Sarason or mustard (Nir. III/14)

sarthavaha = caravan chief (Nir. III/30)

Sarus = crane (Nir. V/6)

Sarva Sangh ke Samast Acharya Sanghayan = (Nir. I/33. b)

Sarvarthasiddha Viman = celestial vehicle (Nir. V/19)

Saudharm = (Nir. V/19)

Saudharma Kalp Devlok = divine dimension (Nir. II/3, 5, III/44, 57, IV/5, 9)

sechanak = one who waters plants (Nir. I/34)

seedhu = a variety of wine (Nir. I/12. a)

Shailak Rajarshi = (Nir. III/14)

Shaivalabhakshi = those who subsist on moss or grass only (Nir. III/16. a)

shakat = chariots (Nir. I/33. b)

shakat vyuha = cart shaped battle formation (Nir. I/33. a, b)

Shakra = the king of gods = in the first heaven (Nir.III/45. a, 53)

Shakrendra = (Nir. I/33. b)

Shamb = (Nir. V/8)

Shankhadhma = those who take their meals after blowing conch-shell (Nir. III/16. a)

sharad = autumn (Nir. V/12)

Sharak = a type of wood (Nir. III/18)

sharir-bakushika = a woman having an attitude that spoils ascetic-discipline as a consequence of over indulgence in beautification of the body; over indulgent in beautification of the body (Nir. IV/8, 11)

sharira = body (Nir. III/5)

Shatadhanva = (Nir. V/2)

shayya-bhaand = bed and utensils (Nir. III/17)

shikshavrats = instructive or complimentary vows of spiritual discipline (Nir. III/23, /24)

Shiva = (Nir. III/1, 63)

Shiva Rajarshi = (Nir. III/18)

Shraaddhakin = those who perform rituals for the benefit of deceased relatives (Nir. III/16. a)

Shraman = (Nir. III/2)

shraman = male ascetic (Nir. I/34, III/4)

Shramanis = female ascetics (Nir. I/34)

Shramanopasak = a male devotee of Shramans (Nir. I/9, III/25, V/15)

Shramanopasika = a female devotee of Shraman (Nir. I/9, III/35, 52)

Shravak dharma = Jain code for laity (Nir.III/23, 24, 35, 52, V/11)

Shravak vrat = the code for laity (Nir. III/14, 27)

Shravasti = (Nir. I/25. b, III/3, III/8)

Shrenik = (Nir. I/1, III/8)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Shri Avatansak Vimaan = celestial vehicle (Nir. IV/5, 9)

Shridevi = (Nir. IV/2)

Shrutskandh = part (Nir. V/21)

Shukra = (Nir. III/1)

Shukra Mahagraha = great planet; the king of Shukra Jyotishk gods (Nir. III/11, 25)

Shukravatansak Viman = celestial vehicle (Nir. III/11, 25)

shvasochhavas = breathing (Nir. III/5)

Siddha = liberated soul (Nir. II/5)

Siddha-state = (Nir. I/3)

Soma = (Nir.III/45. b)

Somil = (Nir. III/13)

Sthaalakin = those who carry plate or thaali and other pots (Nir. III/16. a)

sthaan = aasan; seat or mattress (Nir. III/17)

Sthavir Bhagavants = senior ascetics (Nir.III/57)

Subhadra = (Nir. II/1, III/30)

Sudarshan = (Nir. IV/5)

Sudharma Sabha = divine assembly (Nir. III/29, 57, IV/5)

Sudharma Swami = (Nir. I/2)

suhamsuhenam = to move comfortably (Nir. I/2)

Sukaal = (Nir. I/4)

Sukrishna = (Nir. I/4)

Supratishtha = (Nir. III/8)

sura = a variety of wine (Nir. I/12. a)

Suradevi = (Nir. IV/2)

Surapriya Yaksh = (Nir. V/7)

Surya = (Nir. III/1, 8)

Surya Jyotishk Dev = (Nir. III/8)

Surya viman = (Nir. III/8)

Suryabh Dev = (Nir.III/2, 29, 57)

Suryabh viman = (Nir. III/2)

Suvrata = (Nir. III/32, 49)

svadhyaya = self-study (Nir. III/14)

svadya = savoury food (Nir. III/16. a)

Swami = Shraman Bhagavan Mahavir (Nir. III/29, IV/5)

(T)

taalput-vish = a deadly poison (Nir. I/21. a)

tap = austerities (Nir. III/14)

tapas = hermit (Nir. III/16. a, b)

Tarakeern = a garden (Nir.III/57)

tilak = auspicious mark (Nir. I/20. a)

Trutit = (Nir. III/2)

Tvachahari = those who subsist on bark of a plant (Nir. III/16. a)

(U)

Uddandak = those who move about raising their staff (Nir. III/16. a)

Udumbar = Gular; the wild fig; Ficus glomerata (Nir. III/23)

Ugrasen = (Nir. V/8)

Unmajjak = those who bathe by taking just one dip in water (Nir. III/16. a)

Unnak city = (Nir. V/20)

Upangas = the auxiliary explanatory works to the twelve Angas or the main corpus of the Jain canonical texts (Nir. I/1,4)

upapat = to reincarnate instantaneously (Nir. III/5, 25, 57, IV/9)

Upapat-hall = (Nir. III/5)

upashraya = place of stay for ascetics (Nir. III/38, 43, 52, IV/8)

Uttar-koolak = those who live on the northern bank of the Ganges (Nir. III/16. a)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(V)

vaat = air (Nir. III/14)

Vaha = (Nir. V/2)

Vahe = (Nir. V/2)

vaikriya sharira = transmuted body (Nir. III/29)

vainayiki buddhi = wisdom acquired with modesty (Nir. I/13)

Vaishali city = (Nir. I/24)

Vaishraman = the guardian angel of the north (Nir. III/17)

Vaitadhya mountain = (Nir. V/8)

valkal = bark garment (Nir. III/17)

Valkavasi = the bark-clad (Nir. III/16. a)

Vaman = emesis (Nir. III/33)

Vanavyantar = interstitial (Nir. I/34)

Vanijyagram = (Nir. III/14)

Vankachula necklace = A divine eighteen **string necklace** = (Nir. I/34)

Varanasi = (Nir. III/13, 30)

varg = section (Nir. V/21)

varsha = monsoon (Nir. V/12)

Varun = the guardian angel of the west (Nir. III/17)

vasant = spring (Nir. V/12)

Vastikarma = common enema (Nir. III/33)

Vayubhakshi = those who subsist only on air (Nir. III/16. a)

Veena = (Nir. III/2)

Vibhanga Jnana = pervert knowledge (Nir. III/18)

Vibhel village = (Nir.III/45. b)

Vidyadhars = (Nir. V/6)

vijnapti = persuasions (Nir. III/37)

vimaan = (Nir. III/2)

Vindhyachal = (Nir.III/45. b)

vipul tejoleshya = great radiant energy (Nir. I/3)

Virakrishna = (Nir. I/4)

Virangad = (Nir. V/12)

virechan = purgation (Nir. III/33)

Virsen = (Nir. V/8)

Visheshavati = (Nir. I/33. b)

Vrikshamoolak = those who live under trees (Nir. III/16. a)

Vrishnidasha (Vanhidasa) = name of an Upanga (Nir. I/1)

Vyakhya Prajnapti = Bhagavati Sutra (Nir. III/14)

(Y)

yaapaniya = restraints (Nir. III/14)

Yajnik = those who perform yajna or ritual sacrifice (Nir. III/16. a)

yoga = associations (Nir. III/14)

Yojan = an ancient measure of distance (Nir. III/29, V/5)

yupas = ritual pillar in a yajna (Nir. III/15)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Appendix-3

Technical Terms

VIPAAK SUTRA

The alphabetical index of technical terms according to aphorism number. For space restrictions the terms that very frequently recur have been referred to only at their first use. *e.g.* Jambu continent.

(A)

Aaigare (Aadikar) = the first propagator of dharma (Vip. I/Ch.1/6)

abal = became physically weak (Vip. I/Ch.3/25)

abhagna = unbroken (Vip.I/Ch.3/16)

Abhagnasen = (Vip. I/Ch.1/6, 3/6)

abhat . pravesh (-utsava) = A festival where state officers are not allowed to search or frisk anyone or enter any premises (Vip. I/Ch.3/27)

Abhayadev Suri = (Vip. I/Ch.3/23), II/Ch.1/7)

abhisamannagaya (abhisamnvagat) = to enjoy the inherited and acquired wealth (Vip. II/Ch.1/7)

abhyangan = application of medicinal pastes (Vip. I/Ch.1/23)

Acharanga Sutra = (Vip. II/Ch.10/2)

achit = lifeless (Vip. II/Ch.1/12)

adandim-kudandim (-utsava) = A festival which is free of any punitive measures (Vip. I/Ch.3/27)

Adeenashatru = (Vip. II/Ch.1/3)

adharaniya (-utsava) = A festival where a king provides establishment subsidy for stalls and other such things (Vip. I/Ch.3/27)

adharim (-utsava) = A festival where no one can be pressurized or forced for some old dues (Vip. I/Ch.3/27)

adharm praloki = one who always concentrates on evil activities (Vip. I/Ch.3/4)

adharma-vritti = one who subsists only on evil doing (Vip. I/Ch.3/4)

adharmanujna = one who supports activities devoid of or against religiosity (Vip. I/Ch.3/4)

adharmapraranjan = one whose only entertainment is evil deeds (Vip. I/Ch.3/4)

adharmasheel samudachar = one whose morality, style, attitude, and behaviour merge with evil doing (Vip. I/Ch.3/4)

adharmi = evil doer (Vip. I/Ch.3/4)

adharmisht = one who loves evil or irreligious activity (Vip. I/Ch.3/4)

adhramakhyayi = one who preaches others to indulge in irreligious conduct (Vip. I/Ch.3/4)

adyupapanna = (Vip. I/Ch.4/11)

Agni Kone = south-east direction (Vip. I/Ch.1/20)

ahodanam = great charity (Vip. II/Ch.1/12)

ajeern = indigestion (Vip. I/Ch.1/22)

ajjhatthiye = surfacing of thoughts from the depths of soul (Vip. II/Ch.1/16)

ajjhovavanne (adhypapanna) = having obsessive involvement in possessing something (Vip. I/Ch.2/22)

akaam = lost his confidence (Vip. I/Ch.3/25)

akshi vedana = pain in the eyes (Vip. I/Ch.1/22)

alankarik = barber or hair-styler (Vip. I/Ch.6/3)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

allapatt = hooks (Vip. I/Ch.6/7)

amlaan maalyadaam (-utsava) = A festival where there is proper and elaborate arrangement and decoration of blooming flowers and garlands (Vip. I/Ch.3/27)

Amogh Yaksh = (Vip. I/Ch.4/2)

Amoghadarshan = (Vip. I/Ch.3/2)

Amoghadarshi Yaksh = (Vip. I/Ch.3/2)

Anagar Dharma = the religion of the homeless ascetics; Jain religion (Vip. II/Ch.1/6)

Anat = ninth Devlok (Vip. II/Ch.1/20)

anek taalacharanucharit (-utsava) = A festival where many dancers give dance performances on drum beats (Vip. I/Ch.3/27)

Anga = The primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts. This consists of twelve treatises, eleven of which are extant according to the Shvetambar tradition (Vip. I/Ch.1)

Anju = (Vip. I/Ch.1/6, 10/2)

Anka Dhatri = lap-nurse-maid or the one who took charge of keeping the baby in her lap (Vip. I/Ch.2/17)

anudhrit mridang (-utsava) = A festival where mridang, tabla and other musical instruments are carried and placed properly and played continuously (Vip. I/Ch.3/27)

anuvasana = enema of medicated oils (Vip. I/Ch.1/23)

anuvrat = minor vows (Vip. II/Ch.1/6)

Anuyogadvar = (Vip. I/Ch.1/3)

apasnan = washing with medicated water (Vip. I/Ch.1/23)

Apratihat = (Vip. II/Ch.5/2)

Aran = eleventh Devlok (Vip. II/Ch.1/20)

ardracharm arohan = riding over wet leather (Vip. I/Ch.3/23)

Arhadatta = (Vip. II/Ch.5/2)

Arjun = (Vip. II/Ch.8/2)

arsh (bavasir) = bleeding piles (Vip. I/Ch.1/22)

artt = mentally tormented (Vip. I/Ch.1/24)

ashan, paan, khadya, svadya = staple food, liquids, general food, and savoury food (Vip.I/Ch.1/16)

Ashoka Yaksh = (Vip. II/Ch.4/2)

ashtam-bhakt = avoiding eight meals (Vip. II/Ch.1/15)

Ashtanga Chikitsa = the eight limbed science of healing (Vip.I/Ch.7)

asipatra = swords (Vip. I/Ch.6/7)

asvadan = tasting (Vip. I/Ch.7/9)

Atharvaveda = (Vip. I/Ch.5/3, 5)

audarik = gross physical (Vip. I/Ch.1/32)

Aupapatik Sutra = (Vip. I/Ch.1/1, 7, 8)

aushadh = medicines of vegetable origin and single ingredient (Vip. I/Ch.1/23)

autpattiki buddhi = intuitive wisdom (Vip. I/Ch.8/13, 10/9)

avadahan = cauterizing with hot metal (Vip. I/Ch.1/23)

avakotak bond = bending the neck and tying it with hands already tied at the back) (Vip.I/Ch.2/23)

avapidan = give massage or compression (Vip. I/Ch.8/13)

avirya = lost his courage (Vip. I/Ch.3/25)

ayudhs = hand carried weapons held like sword (Vip. I/Ch.2/6.a)

ayukshaya = shedding the life span determining karma particles (Vip. II/Ch.1/20)

Ayurveda = Indian science of medicine and surgery (Vip. I/Ch.7/8)

Ayushya karma = life span determining karma (Vip. II/Ch.2/2)

(B)

Baajikaran = The part of Ayurveda that deals with the medicines and tonics for maintaining and toning up sexual performance (Vip. I/Ch.7/8)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

baal bhaava = childhood (Vip. I/Ch.1/32)

baal-bandh = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

Bagulas = herons (Vip. I/Ch.3/10)

Bahumitraputra = (Vip. I/Ch.6/3)

bahya bhaandasar = deposits made in presence of a witness (Vip. I/Ch.2/18)

Bala = (Vip. II/Ch.7/2)

Balashri = (Vip. II/Ch.3/2)

Bandhushri = (Vip. I/Ch.6/2)

bavaseer = bleeding piles (Vip. I/Ch.7/4)

bhaag = share in profit (Vip. I/Ch.7/11)

bhaavana = pious attitude (Vip. II/Ch.1)

Bhadraa = (Vip. II/Ch.4/2)

Bhadranandi = (Vip. II/Ch.1/1, 2/2, 8/2)

bhagandar = fistula of the anus (Vip. I/Ch.1/22, 7/4)

Bhagavati Sutra = (Vip. I/Ch.2/6.a)

Bhaishajya = medicines with many ingredients including those of metallic and mineral origin

Bhandir = (Vip. I/Ch.6/2)

Bharatvarsh = (Vip. I/Ch.1/20)

bhasmak = a disease in which food is digested quickly (Vip.I/Ch.1/27)

bhavakshaya = shedding of the divine state determining karma particles (Vip. II/Ch.1/20)

bhed = guile (Vip. I/Ch.4/2, 6/3)

Bheem = (Vip. I/Ch.2/9)

Bhikshuks = (Vip. I/Ch.7/9)

bhisara = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

bhogantaraya = enjoyment hindering (Vip. II/Ch.1/7)

bhojan-aruchi = loss of appetite (Vip. I/Ch.1/22)

Bhoot-vidya = The part of Ayurveda that deals with warding off evil spirits and pacifying them (Vip. I/Ch.7/8)

bhuj-parisarp = limbed reptilian (Vip. I/Ch.1/32)

Brihaspati = (Vip. I/Ch.1/6)

Brihaspatidatt = (Vip. I/Ch.5/3)

Buddha = enlightened (Vip. II/Ch.2/2)

(C)

chachas (chullapiuye) = father's younger brothers; uncles (Vip. I/Ch.3/8)

chachis (chullamauyao) = wives of father's younger brothers; Champa city (Vip. I/Ch.1/1)

Champa tree = (Vip. I/Ch.2/17)

Chandal = a low caste (Vip. I/Ch.4/13)

Chandanapadap = (Vip. I/Ch.1/7, 10)

Chandravataran = (Vip. I/Ch.5/1)

charak bhaand = prison instruments (Vip. I/Ch.6/7)

charak paal = jailer (Vip. I/Ch.6/6)

Charak Samhita = (Vip. I/Ch.1/8)

chela = clothes (Vip. II/Ch.1/12)

chelotkshep = shower of clothes from the sky (Vip. II/Ch.1/12)

Chetak = (Vip. I/Ch.5/2)

chhaal = medicinal use of bark of trees (Vip. I/Ch.1/23)

chhagalik = a butcher selling goat meat (Vip. I/Ch.4/6)

Chhagalpur = (Vip. I/Ch.4/6)

Chhannik = (Vip. I/Ch.4/6)

chhardan = give expectorants (Vip. I/Ch.8/13)

chikitsak = those who practice medicine and surgery (Vip. I/Ch.1/22, 8/12, 10/8)

Chikitsika = (Vip. II/Ch.9/2)

chintiye = repeated surfacing of the same idea in mind (Vip. II/Ch.1/16)

Chitra = (Vip.I/Ch.6/11)

copebhavan = the room where an angry and displeased person spends time (Vip.I/Ch.9/9)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(D)

daaha = burning sensation (Vip. I/Ch.1/22)

daan = gifts on auspicious days (Vip. I/Ch.7/11); charity (Vip. II/Ch.1)

dand = punishment awarded exactly according to the law (Vip. I/Ch.3/27); threat (Vip. I/Ch.4/2, 6/3)

darbh = grass with roots (Vip. I/Ch.6/8)

data shuddha = pure donor; sincere and guileless donor (Vip. II/Ch.1/12)

Datt Gathapati = (Vip. I/Ch.9/2)

dattabhritibhaktavetan = servants who were given food and cash as daily wages (Vip. I/Ch.3/10)

Devadatta = (Vip. I/Ch.1/6, 9/3, 10/6)

Devaraman = (Vip. I/Ch.4/2, II/Ch.8/2)

deya shuddha = pure food or alms (Vip. II/Ch.1/12)

Dhanavaha = (Vip. II/Ch.2/2)

Dhanadev Gathapati = (Vip. I/Ch.10/2)

Dhanapal = (Vip. II/Ch.4/2)

Dhanapati = (Vip. I/Ch.1/20, II/Ch.1/1)

Dhanvantari = (Vip. I/Ch.7/8)

Dhanya Yaksh = (Vip. II/Ch.2/2)

Dharan Yaksh = (Vip. I/Ch.9/2)

dharim = goods that are sold by weight, such as sugar, butter, oil, etc (Vip. I/Ch.2/18)

Dharini = (Vip. I/Ch.9/5)

Dharini Devi = (Vip. II/Ch.1/3)

dharma = righteousness and piety (Vip. II/Ch.1)

dharma-daan = pious charity (Vip. II/Ch.1)

Dharmaghosh Gathapati = (Vip. II/Ch.8/2)

Dharmaghosh Sthavir = (Vip. II/Ch.1/9)

Dharmaruchi = (Vip. II/Ch.10/2)

Dharmasimha = (Vip. II/Ch.8/2)

Dharmavirya = (Vip. II/Ch.9/2)

divas = auspicious day (Vip. I/Ch.9/21)

dohad = pregnancy desire (Vip. I/Ch.2/9, 3/13, 7/13, 8/9)

Dridhapratijna = (Vip. I/Ch.1/32, 2/17, II/Ch.10/2)

drishti shool = Glaucoma (Vip. I/Ch.1/22)

duhkhart = physically tortured (Vip. I/Ch.1/24)

dushchirna = karmas acquired by intentionally committed evil deeds (Vip. I/Ch.1/19)

dushpratikrant = karmas that are not easily destroyed (Vip. I/Ch.1/19)

dushprtyanandi = a person who enjoys evil deeds or who is so discontented that it is difficult to please him (Vip. I/Ch.1/20)

Dutipalash = (Vip. I/Ch.2/2)

Dutipalash Chaitya = (Vip.I/Ch.2/5)

dvisara = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

(E)

Ekadi (Ikkai) = (Vip. I/Ch.1/20, 4/14)

ekashatika = a long scarf-like non-stitched piece of cloth, also called uttariya (Vip.II/Ch.1/11)

eyakamme = indulging in such (wicked and cruel) deeds (Vip. I/Ch.1/21)

eyappahane = considering such (deceitful) activities to be his prime duty (Vip. I/Ch.1/21)

eyasamayare = accepting such (willful) action to be good conduct (Vip. I/Ch.1/21)

eyavijje = gaining expertise in such (tormenting people) activities (Vip. I/Ch.1/21)

(G)

gaalana = to dissolve and throw out (Vip. I/Ch.1/26)

gadhiye (grathit) = entrapped in bonds of love (Vip. I/Ch.2/22)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

gal = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

gandharva = dance drama (Vip. I/Ch.2/3)

Gangadatta = (Vip. I/Ch.7/2, 8/9)

Gangapur city = (Vip. I/Ch.9/29)

Ganges = (Vip. I/Ch.1/32)

ganika natakiya kalit (-utsava) = A festival where prominent courtesans and theater artists give regular performances for entertainment (Vip. I/Ch.3/27)

ganim = goods that are sold in numbers, such as coconut (Vip. I/Ch.2/18)

geet = singing and music (Vip. I/Ch.2/3)

giddhe (griddha) = a licentious person; one who pounces like a vulture; infatuated (Vip. I/Ch.2/22)

Gitika = use of pills or tablets (Vip. I/Ch.1/23)

gotras = one who terrifies cows (Vip.I/Ch.2/13)

granthibhedak = bamboozlers (Vip. I/Ch.3/5,); pick-pockets (Vip. I/Ch.6/8)

grathit = (Vip. I/Ch.4/11)

griddha = (Vip. I/Ch.4/11)

grihasth Dharma = householder's code (Vip. II/Ch.1/16)

Gunasheelak = (Vip. II/Ch.1/1)

(H)

hadi = wooden shackles (Vip. I/Ch.6/7)

hastanduk = wooden hand-cuffs (Vip. I/Ch.6/7)

Hastinapur city = (Vip. I/Ch.2/8)

Hastishirsha city = (Vip. II/Ch.1/3)

hastnikshep = deposits without any witness (Vip. I/Ch.2/18)

hilliri = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

Himalayas = (Vip. I/Ch.2/8)

hrid-galan = to scoop river water (Vip. I/Ch.8/11)

hrid-malan = to contaminate river water (Vip. I/Ch.8/11)

hrid-manthan = to churn river water (Vip. I/Ch.8/11)

hrid-mardan = to agitate river water (Vip. I/Ch.8/11)

hrid-pravahan = to discharge river water (Vip. I/Ch.8/11)

hrid-vahan = to drain river water (Vip. I/Ch.8/11)

hun chhind-bhind-vikartak = one who utters such dreadful words like kill, cut to pieces, tear apart, slaughter

hund-samsthan = a body constitution where almost every part of the body is deformed and disfigured (Vip. I/Ch.1/8)

(I)

ibhya = (Vip. I/Ch.2/18, 5/9)

Ikshusara = (Vip. II/Ch.3/2)

Indradatt = (Vip. I/Ch.10/4, II/Ch.7/2)

Indrapur = (Vip. I/Ch.2/24, 10/4)

irya samiti = care of movement (Vip.I/Ch.1/13, 1/32, II/Ch.1/18)

Ishan Kone = north-eastern direction (Vip. I/Ch.1/7)

isht = adorable (Vip. II/Ch.1/7)

isht roop = (Vip. II/Ch.1/7)

ishvar = influential and rich persons (Vip. I/Ch.1/21, 2/18, 5/9, II/Ch.1/6)

(J)

jaal = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

jalachar-panchendriya tiryanch-yonik = aquatic five-sensed animal (Vip. I/Ch.1/32)

Jalodar = dropsy (Vip. I/Ch.1/22, 7/4)

Jamali Kumar = (Vip. II/Ch.1/5)

Jambu continent = (Vip. I/Ch.1/20)

Jangul = The part of Ayurveda that deals with the cure for poisons or toxicity (Vip. I/Ch.7/8)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

janmandh = congenital blind (Vip.I/Ch.1/12)

janmandh roop = person does not even have fully formed eyes (Vip.I/Ch.1/12)

jati = a class of beings (Vip. I/Ch.1/32); maternal caste (Vip. II/Ch.1/9)

jatunandika = a woman whose offspring die at birth (Vip.I/Ch.2/16, 4/9, 8/9)

java = to read description from some other place (Vip. I/Ch.1/7)

jhilliri = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

jhool = caparisons (Vip. I/Ch.2/6.a)

Jinadas = (Vip. II/Ch.1/1, 5/2)

Jitashatru = (Vip. I/Ch.5/5, II/Ch.9/2)

Jnatadharmakathanga Sutra = (Vip. I/Ch.1/3, 10/7, II/Ch.1/4)

jnayak = those who learned and practiced the art of healing through their own experience (Vip. I/Ch.1/22, 8/12, 10/8)

jovvanaganupatte = to attain youth (Vip. I/Ch.1/32)

jrimbha = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

jvar = fever (Vip. I/Ch.1/22)

(K)

kaant = (Vip. II/Ch.1/7)

kaant roop = (Vip. II/Ch.1/7)

kaas = bronchitis (Vip. I/Ch.1/22)

kadambachirapatra = a kind of blade (Vip. I/Ch.6/7)

Kakini = a small coin (Vip.I/Ch.2/6.b)

kala = arts (Vip. I/Ch.2/3)

Kama Sutra = (Vip. I/Ch.2/3)

Kamadhvaja = (Vip. I/Ch.2/3, 4/2, 10/4)

Kamashastra = (Vip. I/Ch.2/3)

kambal = dewlaps (Vip. I/Ch.2/10)

Kanakapur = (Vip. II/Ch.6/2)

Kanakarath = (Vip. I/Ch.7/8)

kanangar = anchors (Vip. I/Ch.6/7)

Kandu (khaaj) = Eczema (Vip. I/Ch.7/4)

kappiye = to reach the heights of imagination (Vip. II/Ch.1/16)

karan = a division of the day, there being eleven in number including *balav* (Vip. I/Ch.9/21)

karapatra = saw blades (Vip. I/Ch.6/7)

karmaja buddhi = practical wisdom (Vip. I/Ch.8/13, 10/9)

karna vedana = pain in the ears (Vip. I/Ch.1/22)

Karnirath = (Vip. I/Ch.2/3)

Karotiks = Kapalik or the mendicants who carried skull (Vip. I/Ch.7/9)

Karpatiks = mendicants in rags (Vip. I/Ch.7/9)

Kaumarabhritya = The part of Ayurveda that deals with nursing, nutrition and cure of ailments of infants (Paediatrics) (Vip. I/Ch.7/8)

Kaushambi = (Vip. I/Ch.5/1, 4/2)

kautumbik = heads of large families (Vip. I/Ch.1/21, 2/18, 5/9)

kavalagraha = place wooden pieces between molars to force open the mouth (Vip. I/Ch.8/13)

Kayachikitsa = The part of Ayurveda that deals with the symptoms and cure of diseases in general (Vip. I/Ch.7/8)

khansi = Bronchitis (Vip. I/Ch.7/4)

khechar = aerial beings (Vip. I/Ch.1/32)

khet = a settlement surrounded by a temporary mud wall; borough (Vip. I/Ch.1/20)

khujali = eczema (Vip. I/Ch.1/22)

Kimshuk flower = Butea frondosa (Vip.I/Ch.9/26)

Kodh = Leprosy (Vip. I/Ch.7/4)

kootagraha = trapper (Vip. I/Ch.2/9, 4/14)

kootakarashala = a camouflaged house (Vip.I/Ch.3/26, 9/11)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

kootapash = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

Kridayan Dhatri = play-nurse- maid or the one who took charge of playing with the baby (Vip. I/Ch.2/17)

Krishnadevi = (Vip. II/Ch.4/2)

Krishnashri = (Vip. I/Ch.9/3)

Kritavanamalapriya Yaksh = (Vip. II/Ch.1/3)

kshatrakhanak = wall-breakers (Vip. I/Ch.3/5)

Kshatriya = (Vip. I/Ch.1/8,.5/6)

kshayopasham = extinction-cum-pacification (Vip. II/Ch.1/7)

Kshipraturya trumpet = (Vip. I/Ch.3/13)

Kshir Dhatri = milk-nurse-maid or the one who took charge of feeding (Vip. I/Ch.2/17)

kshurapatra = razor blades (Vip. I/Ch.6/7)

kudand = less or more than the legally specified punishment (Vip. I/Ch.3/27)

kukshi shool = stomach ache (Vip. I/Ch.1/22)

kukud = humps (Vip. I/Ch.2/10)

kula = a sub-class of beings; species (Vip. I/Ch.1/32, paternal caste (Vip. II/Ch.1/9)

kulakoti = sub-group of a class of beings (Vip. I/Ch.1/32)

kundi = iron pots (Vip. I/Ch.6/7)

Kunik = (Vip. II/Ch.1/5)

kusha = grass without roots (Vip. I/Ch.6/8)

kusht roag = leprosy (Vip. I/Ch.1/22)

(L)

labhantaraya = gain hindering (Vip. II/Ch.1/7)

laddha (labdh) = to inherit wealth earned by ancestors (Vip. II/Ch.1/7)

laghuhast = skilled touch (Vip. I/Ch.7/8)

lalliri = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

lavak = quail (Vip. I/Ch.7/9)

Lavan Samudra = (Vip. I/Ch.2/18)

(M)

maarana = to kill (Vip. I/Ch.1/26)

madhu = wine made from flowers or honey (Vip. I/Ch.2/10, 3/11)

Madhyamika = (Vip. II/Ch.5/2)

madya = a kind of white wine (Vip. I/Ch.2/10, 3/11)

Mahabal = (Vip. I/Ch.3/2, II/Ch.1/1, 7/2)

Mahachandra = (Vip. I/Ch.4/2, II/Ch.1/1, 5/2)

Mahaghosh = (Vip. II/Ch.8/2)

Mahapur = (Vip. II/Ch.7/2)

maharth = impressive (Vip.I/Ch.3/19)

Mahasen = (Vip. I/Ch.9/5)

Mahashukra Devlok = divine dimension (Vip. II/Ch.1/20)

Mahavideh = (Vip. I/Ch.1/32)

Maheshvardatt = (Vip. I/Ch.5/5)

Majjan Dhatri = bath-nurse-maid or the one who took charge of giving a bath (Vip. I/Ch.2/17)

Mandan Dhatri = dress-nurse-maid or the one who took charge of putting on dress and ornaments (Vip. I/Ch.2/17)

mandavik = landlords (Vip. I/Ch.1/21, 2/18, 5/9)

Manibhadra Yaksh = (Vip. I/Ch.10/2)

Manipad = (Vip. II/Ch.6/2)

Manipur = (Vip. II/Ch.7/2)

manogaye = the idea that is still in mind and not expressed in words (Vip. II/Ch.1/16)

manojna = (Vip. II/Ch.1/7)

manojna roop = (Vip. II/Ch.1/7)

manom = (Vip. II/Ch.1/7)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

manom roop = (Vip. II/Ch.1/7)

manoram = (Vip. II/Ch.3/2)

mastak shool = headache (Vip. I/Ch.1/22)

Mathura = (Vip. I/Ch.6/2)

mati, shrut, avadhi and manahparyav jnana = sensory knowledge, scriptural knowledge, extrasensory perception of the physical dimension, and extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings (Vip. I/Ch.1/2)

matsyapuchchha = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

matsyiks = fishermen (Vip. I/Ch.8/7)

Megh Kumar = (Vip. II/Ch.1/18)

Megharath = (Vip. II/Ch.5/2)

merak = wine made from palm-fruit (Vip. I/Ch.2/10, 3/11)

meya = goods that are sold by measurement, such as cloth, tape etc (Vip. I/Ch.2/18)

Mitra = (Vip. I/Ch.2/2, 8/6, II/Ch.6/2)

Mitranandi = (Vip. II/Ch.10/2)

Mool kand = use of radish, carrot, potato and other roots (Vip. I/Ch.1/23)

Mriga Devi = (Vip.I/Ch.1/12, 5/2)

Mrigagram = (Vip. I/Ch.1/7)

Mrigaputra = (Vip. I/Ch.1/6, 2/25, 8/14, 9/29, 10/10)

muchchhiye (murchchhit) = irrational state of mind; madly attached (Vip. I/Ch.2/22, 4/11)

muhurta = moment (Vip. I/Ch.9/21)

Mukta = liberated (Vip. II/Ch.2/2)

(N)

Naagdev Gathapati = (Vip. II/Ch.7/2)

nabvangasuttapadibohiya = her nine latent sense organs were animated (two ears, two eyes, two nose-holes, one tongue, one skin or organ of touch and one mind) (Vip. I/Ch.2/3)

nakshatra = lunar mansion (Vip. I/Ch.9/21)

Nandanavan = (Vip. II/Ch.4/2)

Nandipur = (Vip. I/Ch.8/6)

Nandivardhan = (Vip. I/Ch.1/6, 6/2)

nigad = iron shackles (Vip. I/Ch.6/7)

nikar = bunches (Vip. I/Ch.6/7)

Nilashoka = (Vip. II/Ch.5/2)

Nirgranth = one who is free of all knots, inner and outer (Vip. II/Ch.1/6)

Nirnaya = (Vip. I/Ch.3/10)

Niruha = to cause sweating by applying medicated oil (Vip. I/Ch.1/23)

nritya = dance (Vip. I/Ch.2/3)

(O)

oodhas = udders (Vip. I/Ch.2/10)

(P)

paardariks = womanizers (Vip. I/Ch.3/5)

paaricchedya = goods that are sold in pieces after testing, such as diamond, emerald, etc (Vip. I/Ch.2/18)

Paashamriga Yaksh = (Vip. II/Ch.10/2)

paatana = to abort in one piece (Vip. I/Ch.1/26)

padanduk = fetters for feet (Vip. I/Ch.6/7)

Padmavati = (Vip. I/Ch.5/2)

Panch Mahavrat = five great vows (Vip. II/Ch.1/6)

panigrahan = the ritual of the bridegroom accepting the hand of the bride (Vip. I/Ch.9/22)

paribhajan = distributing (Vip. I/Ch.2/10)

paribhog = sharing with their friends (Vip. I/Ch.2/10)

paribhojan = sharing (Vip. I/Ch.7/9)

parinamiki buddhi = deductive wisdom (Vip. I/Ch.8/13, 10/9)

paritant = disappointed (Vip. I/Ch.1/23, 8/13, 10/9)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Patalikhand = (Vip. I/Ch.7/2)

patra shuddha = pure seeker, such as a detached Shraman (Vip. II/Ch.1/12)

patta (prapt) = to earn wealth through one's own efforts (Vip. II/Ch.1/7)

patthiye = to wish and pray again and again for a specific thing (Vip. II/Ch.1/16)

paushadh-vrat = partial ascetic vow (Vip. II/Ch.1/15)

paushadhashala = place for observing partial ascetic vow or paushadh-vrat (Vip. II/Ch.1/15, 10/2)

praharans = weapons that can be launched or thrown like arrow (Vip. I/Ch.2/6.a)

Prajnapana Sutra Vritti = (Vip. I/Ch.1/32)

pramarjan = inspect and clean (Vip. II/Ch.1/15)

pramudit prakeeditabhiram (-utsava) = A festival where acrobats and other performers draw crowds (Vip. I/Ch.3/27)

prapampul = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

prapanchul = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

prasadavatamsak = most exclusive, as the crown is among ornaments (Vip. II/Ch.1/4)

prasanna = wine made from grapes (Vip. I/Ch.2/10)

Prashna Vyakaran = (Vip. I/Ch.1/4)

pratikraman = critical review and expiation (Vip. I/Ch.1/32)

pravakshan = cutting of the epidermis using special micro-instruments (Vip. I/Ch.1/23)

Prithviavatansak = (Vip. I/Ch.9/2)

Prithvishri = (Vip. I/Ch.10/4)

priya = (Vip. II/Ch.1/7)

priya roop = (Vip. II/Ch.1/7)

Priyachandra = (Vip. II/Ch.6/2)

Priyadarshan = (Vip. II/Ch.1/7)

Priyangu = (Vip. I/Ch.10/2)

Priyasen = (Vip. I/Ch.2/24)

Pundarikini city = (Vip. II/Ch.2/2)

punj = stacks (Vip. I/Ch.6/7)

Purimtal = (Vip. I/Ch.3/2)

Purnabhadra = (Vip. II/Ch.9/2)

Purnabhadra Chaitya = (Vip. I/Ch.1/1)

Purnabhadra Yaksh = (Vip. I/Ch.1/7, II/Ch.9/2)

Purvas = subtle canon (Vip. I/Ch.1/2)

pushkarini = bavadi; a deep and elaborate masonry tank or well with steps down to the water level (Vip. I/Ch.7/12)

Pushpadatt = (Vip. II/Ch.3/2)

Pushpakarandak = (Vip. II/Ch.1/3)

Pushpanandi = (Vip. I/Ch.9/2)

Putpaak = use of cooked medicines (Vip. I/Ch.1/23)

(R)

raja = regional kings (Vip. I/Ch.1/21)

Rajagriha = (Vip. II/Ch.1/1)

Raktapad Yaksh = (Vip. II/Ch.7/2)

Raktashoka = (Vip. II/Ch.7/2)

Raktavati = (Vip. II/Ch.7/2, 9/2)

Rasayan = The part of Ayurveda that deals with the elixirs of life and other medicines (Vip. I/Ch.7/8)

rashtrakoot = a governor (Vip. I/Ch.1/20)

rati = sex play (Vip. I/Ch.2/3)

Ratnaprabha Prithvi = the first hell (Vip. I/Ch.1/24)

Rigveda = (Vip. I/Ch.5/3)

Rishabhapur = (Vip. II/Ch.2/2)

Rishabhdatt Gathapati = (Vip. II/Ch.3/2)

Rohita = (Vip. I/Ch.9/2)

Rojhas = Neelagaya or black-buck (Vip.I/Ch.4/7)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(S)

Saahanjani = (Vip. I/Ch.4/2)

saam = incantation (Vip. I/Ch.4/2, 6/3)

Saamaveda = (Vip. I/Ch.5/3)

Sagardatt = (Vip. I/Ch.7/2)

Sagaropam = (Vip. I/Ch.1/24)

Sahasramravan garden = (Vip. II/Ch.1/9)

sahasrapaak = medicated and perfumed oils and pastes made with mixtures of one thousand herbs (Vip.I/Ch.9/24)

Saket = (Vip. II/Ch.10/2)

sallekhana = ultimate vow (Vip. II/Ch.1/19)

Samavasaran = (Vip.I/Ch.1/10)

Samayik = (Vip. II/Ch.1/19)

Sambhutivijaya = (Vip. II/Ch.6/2)

sammaniya dohala= whose pregnancy-desire has been respected by providing the desired thing (Vip. I/Ch.3/15)

sampanna dohala = her mind is contented as a consequence of satiation of pregnancy-desire (Vip. I/Ch.3/15)

sampunna dohala = one whose pregnancy-desire has been fulfilled (Vip. I/Ch.3/15)

samyaktva = righteousness (Vip. I/Ch.2/25)

Sanatkumar kalp = the third heaven (Vip. II/Ch.1/20)

sandhicchedak = housebreakers (Vip. I/Ch.3/5)

sankappe = crystallization of an idea into a resolve (Vip. II/Ch.1/16)

Saraswati Devi = (Vip. II/Ch.2/2)

sari = Indian female dress (Vip. I/Ch.7/12)

sarthavaha = caravan chiefs (Vip. I/Ch.1/21)

Sarvarth Siddha Viman = (Vip. II/Ch.1/20)

Sarvatobhadr = (Vip. I/Ch.5/5)

Sarvatobhadra city = (Vip. I/Ch.10/10)

Saudharma Devlok = (Vip. I/Ch.1/32)

Saudharma kalp = a dimension of gods (Vip. II/Ch.1/19)

Saugandhika = (Vip. II/Ch.5/2)

seedhu = wine made from mixture of jaggery and grains (Vip. I/Ch.2/10, 3/11)

shaatana = to disintegrate and throw out in pieces (Vip. I/Ch.1/26)

Shakat = (Vip. I/Ch.1/6, 4/3)

shakat = bullock cart (Vip. I/Ch.4/9)

shakuniks = bird catchers (Vip. I/Ch.8/7)

Shalakya = The part of Ayurveda that deals with the cure of diseases of eyes, nose and other parts of the upper half of the body (Vip. I/Ch.7/8)

Shalatavi = (Vip. I/Ch.3/3)

Shalyahatya = The part of Ayurveda that deals with the removal of thorns, cysts etc. or surgery (Vip. I/Ch.7/8)

shalyoddhar = use surgical instruments (Vip. I/Ch.8/13)

shanti-home = peace offerings (Vip. I/Ch.5/6)

shashthakhaman tap = two day fast (Vip. I/Ch.2/6.a)

Shatadvar = (Vip. I/Ch.1/20, 10/2)

Shatani = (Vip. I/Ch.5/2)

shatpaak = medicated and perfumed oils and pastes made with mixtures of one hundred herbs (Vip.I/Ch.9/24)

Shaurik Datt = (Vip. I/Ch.1/6, 8/2)

Shaurik Yaksh = (Vip. I/Ch.8/2)

Shaurikapur = (Vip. I/Ch.8/2)

Shaurikavatansak = (Vip. I/Ch.8/2)

sheel = morality (Vip. II/Ch.1)

Shikshavrats = instructive or complimentary vows of spiritual discipline (Vip. II/Ch.1/6)

Shilika = herbal medicines like Chirayata (Vip. I/Ch.1/23)

Shiravedh = bleeding toxic blood by cutting nervefend (Vip. I/Ch.1/23)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Shirovasti = covering head with leather bag filled with medicated oil or other such liquid (Vip. I/Ch.1/23)

shivahast = healing touch (Vip. I/Ch.7/8)

shraant = exhausted (Vip. I/Ch.1/23, 8/13, 10/9)

Shraman = (Vip. II/Ch.1/7)

Shramanopasak = a devotee of ascetics (Vip.II/Ch.1.14)

shravak = Jain layman (Vip. II/Ch.1/15)

Shravak Dharma = householder's code (Vip. II/Ch.2/2)

Shrenik = (Vip. II/Ch.1/18)

shreshti = established merchants (Vip. I/Ch.1/21, 2/18, 5/9)

Shri = (Vip. I/Ch.2/2)

Shridaam = (Vip. I/Ch.6/2)

Shridevi = (Vip. I/Ch.9/2, II/Ch.2/2, 3/2, 6/2, 8/2)

Shrikanta = (Vip. II/Ch.9/2, 10/2)

shrinkhala = iron chains (Vip. I/Ch.6/7)

Shriyak = (Vip. I/Ch.8/6)

Shrut Devata = the divine scripture (Vip. II/Ch.10/2)

shrutskandhs = parts of a book (Vip. I/Ch.1)

shubhahast = pious and lucky touch (Vip. I/Ch.7/8)

Shudra = (Vip. I/Ch.5/6)

shulaprot = grilled on sticks (Vip.I/Ch.8/8)

shvas = asthma (Vip. I/Ch.1/22, 7.4)

Shvetabhadra Yaksh = (Vip. I/Ch.5/1)

Shvetashoka = (Vip. II/Ch.6/2)

Shyama = (Vip.I/Ch.9/6)

Siddha = perfect (Vip. II/Ch.2/2)

Siddha-state = (Vip. I/Ch.1/4)

Simhagiri = (Vip. I/Ch.4/6)

Simhapur = (Vip. I/Ch.6/6)

Simharath = (Vip. I/Ch.6/6)

Simhasen = (Vip. I/Ch.9/5)

Skandashri = (Vip. I/Ch.3/6)

Snehapan = giving medicated oils (Vip. I/Ch.1/23)

soma = (Vip. II/Ch.1/7)

soma roop = (Vip. II/Ch.1/7)

Somadatt = (Vip. I/Ch.5/3)

sthasak = plumed belly-band and other ornaments (Vip. I/Ch.2/6.a)

sthavirs = senior ascetics (Vip. II/Ch.1/20)

sthitikshaya = shedding the karma particles determining the extant of life span (Vip. II/Ch.1/20)

Stupakarandak = (Vip. II/Ch.2/2)

Subahu = (Vip. II/Ch.1/1, 2/2, 10/2)

Subandhu = (Vip. I/Ch.6/3)

Subhadra = (Vip. I/Ch.2/4, 4/3)

Subhadraadevi = (Vip. II/Ch.6/2, 7/2)

Subhag = (Vip. II/Ch.1/7)

Sudarshan Yaksh = (Vip. I/Ch.6/2)

Sudarshana = (Vip. I/Ch.4/2)

Sudatt = (Vip. II/Ch.1/10)

Sudharma = (Vip. II/Ch.5/2)

Sudharma Yaksh = (Vip. I/Ch.1/7, 2/2)

Sughosh = (Vip. II/Ch.8/2)

Sujaat = (Vip. II/Ch.1/1)

Sujat Kumar = (Vip. II/Ch.3/2)

Sukaal Yaksh = (Vip. II/Ch.5/2)

Sukha-vipaak = fruits of good or noble karmas (Vip. I/Ch.1)

Sukrishna = (Vip. II/Ch.5/2)

Sunand = (Vip. I/Ch.2/8)

Sunsumar = (Vip. I/Ch.1/32)

supatra daan = charity to the deserving (Vip. II/Ch.1)

Supratishth = (Vip. I/Ch.9/5)

Supratishthapur city = (Vip. I/Ch.1/32)

sura = wines (Vip. I/Ch.2/10, 3/11)

Suroop = (Vip. II/Ch.1/7)

Sushen = (Vip. I/Ch.4/2)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Sushumna = the channel of the spinal cord (Vip. II/Ch.1/16)

sutra-bandh = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

Suvasav = (Vip. II/Ch.1/1, 4/2)

Swedan = perspiring (Vip. I/Ch.1/23)

(T)

tabbhavanabhaviye (tadbhaavana bhaavit) = devoting all mental efforts to a goal (Vip. I/Ch.2/22)

tachchitte (tadchitta) = obsessed state of psyche (Vip. I/Ch.2/22)

tadajjavasane (tadadhyavasaya) = engaged in owning some thing (Vip. I/Ch.2/22)

tadappiyakarane (tadarpit karan) = devoting all physical efforts to a goal (Vip. I/Ch.2/22)

tadatthovautte (tadarthopayukt) = carefully engaged in fulfilling one's desires (Vip. I/Ch.2/22)

taijas and karman shariras = fiery and karmic bodies (Vip. I/Ch.1/32)

tais (mahamauyao) = wives of father's elder brothers; uncles (Vip. I/Ch.3/8)

Takshan = scraping of the epidermis with knife or other such instrument (Vip. I/Ch.1/23)

talavar = knights of honour (Vip. I/Ch.1/21, 2/18, 5/9)

tallese (tadleshya) = obsessed state of soul (Vip. I/Ch.2/22)

tammane (tadman) = obsessed state of mind (Vip. I/Ch.2/22)

tant = confused or mentally tired (Vip. I/Ch.1/23, 8/13, 10/9)

tap = austerity (Vip. II/Ch.1)

Tarpan = pouring of medicated oils (Vip. I/Ch.1/23)

Tattvavati = (Vip. II/Ch.8/2)

taus (mahapiuye) = father's elder brothers; uncles (Vip. I/Ch.3/8)

Tejoleshya = firepower (Vip. II/Ch.1/10, 2/6.a)

Tetaliputra = (Vip. I/Ch.10/7)

Tirthankar Yugabahu = (Vip. II/Ch.2/2)

tithi = date of the lunar calendar (Vip. I/Ch.9/21)

Titodis = sandpipers (Vip. I/Ch.3/10)

Titthagare (Tirthankar) = the religious ford-maker (Vip. I/Ch.1/6)

trapu = zinc (Vip. I/Ch.6/7)

trisara = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

trividh-shuddhi = three-way-purity (Vip. II/Ch.1/12)

(U)

uchchhulk (-utsava) = A festival where no state tax, levy, or fees is charged on anything (Vip. I/Ch.3/27)

Udayan = (Vip. I/Ch.5/2)

Udit = (Vip. I/Ch.3/10)

Udvartan = rubbing with medicinal pastes (Vip. I/Ch.1/23)

Ujjhitak = (Vip. I/Ch.1/6, 2/4, 4/14)

ujjhitak = the discarded one (Vip. I/Ch.2/17)

Umbaradatt Yaksh = (Vip. I/Ch.7/2)

Umbardatt = (Vip. I/Ch.1/6)

upapradan (daam) = bribery (Vip. I/Ch.4/2, 6/3)

ur-parisarp = non-limbed reptilian (Vip. I/Ch.1/32)

urdhvamukh = face upward (Vip. I/Ch.6/8)

ushtrika = pitcher-like pots shaped like hump of a camel (Vip. I/Ch.6/7)

utkar (-utsava) = A festival where no tax or rent is charged on the land taken for shops and stalls. Also where no tax is levied on the cattle brought for sale (Vip. I/Ch.3/27)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

utkshep = to throw (Vip. II/Ch.1/12)

Utpala = (Vip. I/Ch.2/9)

Utsedhangul units = standard of fragmentary units of angul or the breadth of finger (Vip. I/Ch.1/3)

Uttar Kanchuk = a special additional armour plate (Vip. I/Ch.2/6.a)

Uttarakuru = (Vip. II/Ch.10/2)

(V)

vaat = one of the body humours (Vip. I/Ch.1/8)

vaat-roag = rheumatism (Vip. I/Ch.1/8)

vaguriks = animal trappers (Vip. I/Ch.8/7)

Vaidya = Ayurvedic doctor (Vip. I/Ch.1/22, 7/8, 8/12, 10/8)

vaikriya = transmutable (Vip. I/Ch.1/32)

vainayiki buddhi = acquired wisdom (Vip. I/Ch.8/13, 10/9)

Vaishraman Kumar = (Vip. II/Ch.6/2)

Vaishramanabhadra = (Vip. II/Ch.4/2)

Vaishramanadatt = (Vip. I/Ch.9/2)

Vaishya = (Vip. I/Ch.5/6)

Vaitadhya mountain = (Vip. I/Ch.1/32, 2/24)

valkal rashmi = whips made of hemp and other barks (Vip. I/Ch.6/7)

valkal-bandh = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

Vaman = emesis (Vip. I/Ch.1/23)

Vanakhand = (Vip. I/Ch.7/2)

Vanijyagram = (Vip. I/Ch.2/2)

vannao (varnan) = description (Vip. I/Ch.1/7)

Varadatt = (Vip. II/Ch.1/1, 10/2)

Varanasi = (Vip. I/Ch.3/32, 4/14)

Varasena = (Vip. II/Ch.10/2)

Vardhamanapur = (Vip. I/Ch.10/2)

Vasavadatt = (Vip. II/Ch.4/2)

vashart = enslaved by sense organs (Vip. I/Ch.1/24)

Vastikarma = common enema (Vip. I/Ch.1/23)

Vasudatta = (Vip. I/Ch.5/3)

Vatsyayan = (Vip. I/Ch.2/3)

Vijaya = (Vip. I/Ch.1/8, 2/2, 3/4)

Vijayamitra = (Vip. I/Ch.2/4, 10/2)

Vijayapur = (Vip. I/Ch.7/8, II/Ch.4/2)

Vijayavardhaman borough = (Vip. I/Ch.1/20)

Vijayavardha = (Vip. I/Ch.10/2)

Vimalavahan = (Vip. II/Ch.10/2)

viniya dohala = who has become free of her pregnancy-desire (Vip. I/Ch.3/15)

vinnaya = one who can differentiate between good and bad; sagacious (Vip. I/Ch.1/32)

vipaak = the fruits of the good and bad karmas acquired by a soul (Vip. I/Ch.1)

Virabhadra Yaksh = (Vip. II/Ch.6/2)

Virakrishnamitra = (Vip. II/Ch.3/2)

Virapur = (Vip. II/Ch.3/2)

Virasen Yaksh = (Vip. II/Ch.8/2)

Virechan = purgation (Vip. I/Ch.1/23)

visara = a kind of fishing net (Vip. I/Ch.8/11)

visvadan = enjoyed (Vip. I/Ch.7/9)

vochchhinna dohala = the craving for the desired thing has disappeared from her mind (Vip. I/Ch.3/15)

vrishan = testicles (Vip. I/Ch.2/10)

(Y)

yaag = offering worship (Vip. I/Ch.7/11)

Yajurveda = (Vip. I/Ch.5/3)

Yamuna = (Vip. I/Ch.8/11)

Yatharha (-utsava) = A festival that has all facilities and is well managed (Vip. I/Ch.3/27)

Yogashastra = (Vip. II/Ch.1/16)

yoni = the place of origin (genus (Vip. I/Ch.1/32)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादन में सहयोगी-उपयोगी आगम : आभार दर्शन
GRATITUDE FOR REFERENCE WORKS USED IN THIS BOOK

★ **निरयावलिका सूत्र (संस्कृत टीका)** *टीकाकार* : श्रीचन्द्र सूरि (पार्श्व देवगणि)	**Nirayavalika Sutra (Sanskrit Tika)** *by* Shrichand Suri (Parshvadev Gani)
★ **निरयावलिका सूत्र** *हिन्दी–व्याख्याकार* : आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. *सम्पादिका* : उपप्रवर्तनी साध्वी स्वर्णकान्ता जी म.	**Nirayavalika Sutra** ***Hindi commentator*** : Acharya Samrat Shri Atmaram ji M. ***Editor*** : Up-pravartini Sadhvi Svarnakanta ji M.
★ **निरयावलिका सूत्र** *संस्कृत–हिन्दी–गुजराती व्याख्या सहित* : आचार्यश्री घासीलाल जी म.	**Nirayavalika Sutra** ***with Sanskrit-Hindi-Gujarati commentary*** : Acharya Shri Ghasilal ji M.
★ **निरयावलिका सूत्र** *प्रधान सम्पादक* : युवाचार्य श्री मधुकर मुनि	**Nirayavalika Sutra** ***Editor-in-chief*** : Yuvacharya Shri Madhukar Muni
★ **विपाक सूत्र** *संस्कृत टीका* : आचार्य अभयदेवसूरि	**Vipaak Sutra** ***Sanskrit Tika*** : Acharya Abhay Dev Suri
★ **विपाक सूत्र** *हिन्दी व्याख्या* : आचार्यसम्राट् श्री आत्माराम जी म.	**Vipaak Sutra** ***Hindi commentary*** : Acharya Samrat Shri Atmaram ji M.
★ **विपाक सूत्र** *संस्कृत–हिन्दी–गुजराती व्याख्या सहित* : आचार्यश्री घासीलाल जी म.	**Vipaak Sutra** ***with Sanskrit-Hindi-Gujarati commentary*** : Acharya Shri Ghasilal ji M.
★ **विपाक सूत्र** *प्रधान सम्पादक* : युवाचार्य श्री मधुकर मुनि	**Vipaak Sutra** ***Editor-in-chief*** : Yuvacharya Shri Madhukar Muni

उक्त पुस्तकों के सम्पादक–प्रकाशक सभी के प्रति हार्दिक आभार।

Heartfelt gratitude for editors and publishers of aforesaid books.

विशेष : *आचार्य देवेन्द्र मुनि शोध संस्थान,* उदयपुर से सम्पादन हेतु आवश्यक सभी प्रकार की पुस्तकें प्राप्त कराने में श्री दिनेश मुनि जी तथा वहाँ के अधिकारियों के प्रति विशेष आभार।

Special reference : Special indebtedness for Shri Dinesh Muni ji and management of **Acharya Devendra Muni Shodh Samsthan,** Udaipur for making available all needed reference books.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

प्रस्तुत सूत्र के सम्पादक श्री अमर मुनि जी, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणसंघ के एक तेजस्वी संत हैं। आपकी वाणी में जादू है। श्रोता जब आपश्री के मुख से जिनवाणी का रसास्वाद करते हैं तो झूमने लग जाते हैं।

जिनवाणी के परम उपासक गुरुभक्त श्री अमर मुनि जी का जन्म वि. सं. १९९३ भादवा सुदि ५ (सन् १९३६), क्वेटा (बलूचिस्तान) के मल्होत्रा परिवार में हुआ।

११ वर्ष की लघुवय में आप जैनागम रत्नाकर आचार्यसम्राट श्री आत्माराम जी महाराज की चरण-शरण में आये और आचार्यदेव ने अपने प्रिय शिष्यानुशिष्य भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज को इस रत्न को तराशने/सँवारने का दायित्व सौंपा। गुरुदेव श्री भण्डारी जी महाराज ने अमर को सचमुच अमरता के पथ पर बढ़ा दिया। आपने संस्कृत-प्राकृत-आगम-व्याकरण-साहित्य आदि का अध्ययन करके एक ओजस्वी प्रवचनकार, तेजस्वी धर्म-प्रचारक तथा जैन आगम साहित्य के अध्येता और व्याख्याता के रूप में जैन समाज में प्रसिद्धि प्राप्त की।

आपश्री ने भगवती सूत्र (४ भाग), प्रश्नव्याकरण सूत्र (२ भाग), सूत्रकृतांग सूत्र (२ भाग) आदि अनेक आगमों की सुन्दर विस्तृत व्याख्याएँ की हैं। आगम साहित्य का सचित्र प्रकाशन करने की अभिनव अद्वितीय संकल्पना की है।

UP-PRAVARTAK SHRI AMAR MUNI

The editor-in-chief of this Sutra, is a brilliant ascetic affliated with Shri Vardhaman Sthanakvasi Jain Shraman Sangh. He is endowed with a maganetic style of oration. When masses listen to the tenets of Jina they are spellbound.

A great worshiper of the tenets of Jina and a devotee of his Guru, Shri Amar Muni Ji was born in a Malhotra family of Queta (Baluchistan) on Bhadva Sudi 5th in the year 1993 V.

He took refuge with Jainagam Ratnakar Acharya Samrat Shri Atmaram Ji M. at an immature age of eleven years. Acharya Samrat entrusted his dear grand-disciple, Bhandari Shri Padmachandra Ji M. with the responsibility of cutting and polishing this raw gem. Gurudev Shri Bhandari Ji M. indeed, put Amar (immorta) on the path of immortality. He studied Sanskrit, Prakrit, Agams, Grammar and Literature to gain fame in the Jain society as an eloquent orator, an effective religions preacher and a scholar and interpreter of Jain Agam literature.

He has written nice and detailed commentaries of Bagavati Sutra (in four parts), Prashnavyakaran Sutra (in two parts), Sutrakritanga Sutra (in two parts) and some other Agams. He is the one who came out with the unique concept of the publication of Ilustrated Agam literature.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विश्व में पहली बार जैन साहित्य के इतिहास में एक नया शुभारम्भ

सचित्र आगम : हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के साथ

For the first time in the history of Jain Literature a unique beginning Illustrated Agams With Hindi and English Translations

सचित्र उत्तराध्ययनसूत्र *(Illustrated Uttaradhyayan Sutra)* — ***Rs. 500.00***
भगवान महावीर की अन्तिम वाणी अत्यन्त शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्द्धक जीवन सन्देश।
The last sermon of Bhagavan Mahavir. Inspiring and enlightening teachings.

सचित्र अन्तकृद्दशासूत्र *(Illustrated Antakriddasha Surtra)* — ***Rs. 500.00***
अष्टम अंग। ९० मोक्षगामी आत्माओं का तप-साधना पूर्ण रोचक जीवन वृत्तान्त।
The eighth Jain canon (Anga). Inspiring stories of the spiritual pursuits of 90 great men destined to be liberated.

सचित्र कल्पसूत्र *(Illustrated Kalpa-Sutra)* — ***Rs. 500.00***
पर्युषण पर्व में पठनीय २४ तीर्थंकरों का जीवन-चरित्र व स्थविरावली आदि का वर्णन। रंगीन चित्रमय।
Most suited for study during the Paryushan Parva. The biographies of the 24 Tirthankars along with the chronological list of the Sthavirs of the post Mahavir Jain tradition. Multicolored illustrations.

सचित्र ज्ञाता धर्म कथांगसूत्र (भाग १, २) — ***Rs. 1000.00***
(Illustrated Jnata Dharma Kathang Sutra, Part 1 & 2)
भगवान महावीर द्वारा कथित बोधप्रद दृष्टान्त एवं रूपकों आदि को सुरम्य चित्रों द्वारा सरल सुबोध शैली में प्रस्तुत किया गया है।
Famous inspiring and enlightening tales told by Bhagavan Mahavir presented with colorful illustrations in this unique and attractive edition of the sixth Jain canon.

सचित्र दशवैकालिकसूत्र *(Illustrated Dashavaikalik Sutra)* — ***Rs. 500.00***
जैन श्रमण की सरल आचार संहिता : जीवन में पद-पद पर काम आने वाले विवेकयुक्त, संयत व्यवहार, भोजन, भाषा, विनय आदि की मार्गदर्शक सूचनाएँ। आचार विधि को रंगीन चित्रों के माध्यम से आकर्षक और सुबोध बनाया गया है।
The simple rule book of Shraman conduct rendered vividly with the help of colorful illustrations. Useful at every step in life, even for common man, as a guide book for good behavior, balanced conduct, and norms of etiquette, food and speech.

सचित्र श्री नन्दीसूत्र *(Illustrated Sri Nandi Sutra)* — ***Rs. 500.00***
मतिज्ञान-श्रुतज्ञान आदि पाँच ज्ञान का सर्वांग पूर्ण विवेचन चित्रों सहित।
All enveloping discussion of the five facets of knowledge including Mati-Jnana and Sruta Jnana.

सचित्र आचारांग सूत्र (भाग १, २) *(Illustrated Acharanga Sutra-Part 1&2)* — ***Rs. 1000.00***
आचारांग सूत्र भगवान महावीर के दर्शन का आधारभूत प्रथम अंग सूत्र है।
Acharanga Sutra is the first Anga Sutra, the foundation of Bhagavan Mahavir's philosophy.

सचित्र उपासक दशा एवं अनुत्तरौपपातिक दशा सूत्र
(Illustrated Upasak Dasha and Anuttaraupapatik-Dasha Sutra) — ***Rs. 500.00***
१० श्रावकों तथा ३३ श्रमणों की तपःसाधना का वर्णन।
Description of Spiritul and ascetic practices of 10 Shravaks and 33 Shramans.

सचित्र रायपसेणिय सूत्र *(Illustrated Raipaseniya Sutra)* — ***Rs. 500.00***
राजा प्रदेशी और केशीकुमार श्रमण के बीच हुई आध्यात्मिक चर्चा।
The spiritual discussions between Keshi Kumar Shraman and King Pradeshi.

सभी सचित्र आगमों के सम्पादक **वाणी भूषण उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org